बहुभाषिक

सयपत्री

(राष्ट्रिय भाषा, साहित्य र संस्कृतिसँग सम्बन्धित रचनाको सँगालो)

वर्ष : ४ मैथिली विशेषाङ्क, २०५५

यस अङ्कमा

भाषा			
मैथिली भाषा : पृष्ठभूमि आर विशेषता	...	योगेन्द्रप्रसाद यादव	... १
मैथिली भाषा : पृष्ठभूमि र विशेषता (अनु.)	...	योगेन्द्रप्रसाद यादव	... १९
मैथिलीक भाषिक वैविध्य : औपभाषिक ओ मानक स्वरूप	...	रामावतार यादव	... ३४
मैथिलीको भाषिक वैविध्य : औपभषिक र मानक स्वरूप (अनु.)	...	चन्द्रेश्वर शाह	... ४१
नेपालमे मैथिली भाषाप्रति सेन राजालोकनिक दृष्टिकोण	...	हरिकान्तलाल दास	... ६८
नेपालमा मैथिली भाषाप्रति सेन राजाहरूको दृष्टिकोण (अनु.)	...	हरिकान्तलाल दास	... ७६
इतिहास/संस्कृति			
मिथिलाक किछु पूर्वाञ्चलीय लोक गायकी विवेचना	...	धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'	... ८३
मिथिलाका केही पूर्वाञ्चलीय लोकगायकीको विवेचना (अनु.)	...	रोशन/रमेश	... ९६
मिथिलाक इतिहास आ कला परम्परासबहक परिचय	...	रामनिवास पाण्डे	... ११०
मिथिलाको इतिहास र कला परम्पराहरूको परिचय (अनु.)	...	विजयकुमार रौनियार	... १२०
मिथिलाक कर्णाटकीय राजवंशी राजा रामसिंहदेव	...	तारानन्द मिश्र	... १३०
मिथिलाका कर्णाटवंशी राजा रामसिंहदेव (अनु.)	...	तारानन्द मिश्र	... १४४
विद्यापति आ नेपाल	...	नमोनारायण झा	... १५४
विद्यापति र नेपाल (अनु.)	...	रञ्जन	... १५७
सलहेस गाथा : मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदा	...	चन्द्रेश्वर शाह	... १६१
सलहेसगाथा : मिथिलाको सांस्कृतिक सम्पदा(अनु.)	...	चन्द्रेश्वर शाह	... १७०
जट-जटीन तराईक समृद्ध लोक नाट्य	...	श्यामसुन्दर शशि	... १७९
जट-जटीन तराईको समृद्धशाली लोकनाट्य (अनु.)	...	श्यामसुन्दर शशि	... १८७
समालोचना			
विद्यापतिक उगना	...	महेन्द्र मलंगिया	... १९५
विद्यापतिको उगना (अनु.)	...	धीरेन्द्र प्रेमर्षि	... २०१
पण्डित रमाकान्त झा आ हुनक मैथिली महाकाव्य *व्यथा*	...	राजेश्वर नेपाली	... २०७
पण्डित रमाकान्त झा र मैथिली महाकाव्य *व्यथा*	...	राजेश्वर नेपाली	... २१२
प्रतिभाक धनी साहित्यकार पं. सुन्दर झा 'शास्त्री'	...	पशुपतिनाथ झा	... २१७
प्रतिभाका धनी साहित्यकार पं. सुन्दर झा 'शास्त्री' (अनु)	...	रञ्जन	... २२३
जनमिते जनपक्षीय : नेपालक मैथिली कथा-साहित्य	...	धीरेन्द्र प्रेमर्षि	... २२९
जन्मिँदै जनपक्षीय : नेपालको मैथिली कथा-साहित्य (अनु.)	...	धीरेन्द्र प्रेमर्षि	... २३५
कथा/एकाङ्की/निबन्ध			
चान अशोथकित अछि	...	रा.ना सुधाकर	... २४०
चन्द्रमा थचक्किएको छ (अनु.)	...	रोशन जनकपुरी	... २४३
पाषाण-पुष्प	...	सुरेन्द्र लाभ	... २४६
पाषाण-पुष्प (अनु)	...	रोशन जनकपुरी	... २५१
शक्ति रूपेण संस्थिता	...	प्रदीप बिहारी	... २५६
शक्तिरूपेण संस्थिता (अनु.)	...	रोशन जनकपुरी	... २६५
आ बौधु बाजि उठल	...	रामभरोस कापडि 'भ्रमर'	... २७४
अनि बौधुको बक फुट्यो (अनु.)	...	विनोद मिश्र	... २८७
मलङ्का यात्रा	...	रेवतीरमण लाल	... ३०१
मलङ्का यात्रा (अनु.)	...	रञ्जन	... ३०८
पुस्तक परिचय			
ए रेफरेन्स ग्रामर अफ मैथिली (रामावतार यादव)	...	चन्द्रेश्वर शाह	... ३१५
इस्यूज इन मैथिली सिन्ट्याक्स : एक सङ्ग्रहणीय पुस्तक (योगेन्द्र यादव)	...	धर्मेन्द्र विह्वल	... ३१९

नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान

कमलादी, काठमाडौं

बहुभाषिक

सयपत्री

(राष्ट्रिय भाषा, साहित्य र संस्कृतिसँग सम्बन्धित रचनाको सँगालो)

वर्ष : ४ मैथिली विशेषाङ्क, २०५५

धुस्वाँ सायमी
प्रधान सम्पादक

सम्पादक-मण्डल
डा. योगेन्द्रप्रसाद यादव
वैरागी काइँला

गणेशबहादुर प्रसाई
सम्पादक

रमेश रञ्जन
अतिथि सम्पादक

अनुक्रमराज शर्मा
सहयोगी सम्पादक

प्रकाशक
नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान
कमलादी, काठमाडौं

लेखमा व्यक्त विचारका लागि लेखक स्वयं उत्तरदायी रहनेछन् ।

सम्पादक मण्डल

यस अङ्कको मूल्य रू. ६०।-

आवरण : **शशिविक्रम शाह**

विषय-सूची

भाषा

मैथिली भाषा : पृष्ठभूमि आर विशेषता	...	योगेन्द्रप्रसाद यादव	... १
मैथिली भाषा : पृष्ठभूमि र विशेषता (अनु.)	...	योगेन्द्रप्रसाद यादव	... १९
मैथिलीक भाषिक वैविध्य : औपभाषिक ओ मानक स्वरूप	...	रामावतार यादव	... ३४
मैथिलीको भाषिक वैविध्य : औपभषिक र मानक स्वरूप (अनु.)	...	चन्देश्वर शाह	... ५१
नेपालमे मैथिली भाषाप्रति सेन राजालोकनिक दृष्टिकोण	...	हरिकान्तलाल दास	... ६८
नेपालमा मैथिली भाषाप्रति सेन राजाहरूको दृष्टिकोण (अनु.)	...	हरिकान्तलाल दास	... ७६

इतिहास / संस्कृति

मिथिलाक किछु पूर्वाञ्चलीय लोक गायकी विवेचना	...	धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'	... ८३
मिथिलाका केहीं पूर्वाञ्चलीय लोकगायकीको विवेचना (अनु.)	...	रोशन / रमेश	... ९६
मिथिलाक इतिहास आ कला परम्परासबहक परिचय	...	रामनिवास पाण्डे	... ११०
मिथिलाको इतिहास र कला परम्पराहरूको परिचय (अनु.)	...	विजयकुमार रौनियार	... १२०

	...	तारानन्द मिश्र	... १३०
मिथिलाक कर्णाटकीय राजवंशी राजा रामसिंहदेव	...	तारानन्द मिश्र	... १४४
मिथिलाका कर्णाटवंशी राजा रामसिंहदेव (अनु.)	...	नमोनारायण झा	... १५४
विद्यापति आ नेपाल	...	रञ्जन	... १५७
विद्यापति र नेपाल (अनु.)	...		
सलहेस गाथा : मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदा	...	चन्देश्वर शाह	... १६१
सलहेसगाथा : मिथिलाको सांस्कृतिक सम्पदा(अनु.)	...	चन्देश्वर शाह	... १७०
जट-जटीन तराईक समृद्ध लोक नाट्य	...	श्यामसुन्दर शशि	... १७९
जट-जटीन तराईको समृद्धशाली लोकनाट्य (अनु.)	...	श्यामसुन्दर शशि	... १८७

समालोचना

विद्यापतिक उगना	...	महेन्द्र मलंगिया	... १९५
विद्यापतिको उगना (अनु.)	...	धीरेन्द्र प्रेमर्षि	... २०१
पण्डित रमाकान्त झा आ हुनक मैथिली महाकाव्य *व्यथा*	...	राजेश्वर नेपाली	... २०७
पण्डित रमाकान्त झा र मैथिली महाकाव्य *व्यथा*	...	राजेश्वर नेपाली	... २१२
प्रतिभाक धनी साहित्यकार पं. सुन्दर झा 'शास्त्री'	...	पशुपतिनाथ झा	... २१७
प्रतिभाका धनी साहित्यकार पं. सुन्दर झा 'शास्त्री' (अनु.)	...	रञ्जन	... २२३
जनमिते जनपक्षीय : नेपालक मैथिली कथा-साहित्य	...	धीरेन्द्र प्रेमर्षि	... २२९
जन्मिँदै जनपक्षीय : नेपालको मैथिली कथा-साहित्य (अनु.)	...	धीरेन्द्र प्रेमर्षि	... २३५

कथा / एकाङ्की / निबन्ध

चान अशोयकित अछि	...	रा.ना सुधारकर	... २४०
चन्द्रमा थड्यिलिएको छ (अनु.)	...	रोशन जनकपुरी	... २४३
पाषाण-पुष्प	...	सुरेन्द्र लाभ	... २४६
पाषाण-पुष्प (अनु.)	...	रोशन जनकपुरी	... २५१
शक्ति रूपेण संस्थिता	...	प्रदीप बिहारी	... २५६
शक्तिरूपेण संस्थिता (अनु.)	...	रोशन जनकपुरी	... २६५
आ बौधु बाजि उठल	...	रामभरोस कापडि 'भ्रमर'	... २७४
अनि बौधुको बक फुट्यो (अनु.)	...	विनोद मिश्र	... २८७
मलक्का यात्रा	...	रेवतीरमण लाल	... ३०१
मलक्का यात्रा (अनु.)	...	रञ्जन	... ३०८

पुस्तक परिचय

ए रेफरेन्स ग्रामर अफ मैथिली (रामावतार यादव)	...	चन्देश्वर शाह	... ३१५
इस्यूज इन मैथिली सिन्ट्याक्स : एक सङ्ग्रहणीय पुस्तक (योगेन्द्र यादव)	...	धर्मेन्द्र विह्वल	... ३१९

मैथिली भाषाः पृष्ठभूमि आर विशेषता

योगेन्द्र प्रसाद यादव

१. पृष्ठभूमि

मैथिली दक्षिण एशियाक दूगोट सन्निकट राष्ट्र– भारत आ नेपाल-मे प्रचलित एकटा स्वतंत्र संभ्रान्त भाषा थिक, यद्यपि *तिरहुतिया, देहाती* आदि पर्यायवाची नामक प्रयोग सेहो एहि भाषाकलेल कथंकदाचित पाएल जाइत अछि। जेना एकर नामाकरणसँ स्पष्ट होएत अछि, मैथिली यथार्थमे *मिथिलाक* भाषा थिक, जे राजा जनकसँ शासित प्रागऐतिहासिक प्राचीन राज्य तथा हुनक पुत्री आर रामक पत्नी सीता (जानकी)क जन्मस्थल मानल जाइत अछि। प्राचीन कालमे मिथिला एकटा प्रसिद्ध बौद्धिक केन्द्रकें रूपमे स्थापित छल। एहि केन्द्रमे भारतवर्षक समस्त भागसँ विद्वान्लोकनि तर्कशास्त्र तथा दर्शनशास्त्रक क्षेत्रमे प्रशिक्षण प्राप्त करबाकलेल अबैत रहैछ छलाह। एहि केन्द्रद्वारा मानवीय चिन्तनक इतिहासमे किछु उच्चतम बौद्धिक अन्तरक्रियाक आतिथ्य प्रदान कएल गेल तथ्यक उल्लेख पाएल जाइत अछि। मिथिलाकें *तैरभुक्ति* नामसँ सेहो जानल जाइत छल जे भारतक विहार प्रान्तअन्तर्गत दरभंगा आर मुज्जफरपुर जिल्ला सम्मिलित *तिरहुत* प्रखण्डक प्राचीन नाम थिक। यद्यपि आधुनिक मिथिला दूगोट पृथक स्वतन्त्र राष्ट्र (भारत तथा नेपाल)क बीच राजनैतिक रूपसँ विभाजित अछि, तथापि ई दूनू राष्ट्रक मैथिली-भाषी समुदायक बीच भौगोलिक समकक्षता आर नियमित सम्पर्ककें कारणें एकगोट अविभाज्य सांस्कृतिक अस्तित्वकें रूपमे अद्यावधि विद्यमान अछि।

मैथिली भाषा मुख्यतः विहार प्रान्त (भारत)क उत्तर-पूर्वी आर नेपाल तराईक पूर्वी क्षेत्रमे करीब तीन करोड जनसंख्यासँ मातृभाषाक रूपमे बोलल जएबाक अनुमान कएल गेल अछि। एहि भाषाक प्रयोग किछु अंशमे पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश आदि निकटवर्ती क्षेत्रमे सेहो पाओल जाइत अछि। नेपालमे मैथिली भाषा-भाषीसभक जनसंख्या देशक कुल जनसंख्याक करीब १२ प्रतिशत (२३,०,०००) बताओल गेल अछि (जनसंख्या तथ्याङ्क, १९९१) आर भाषा-भाषीक जनसंख्याक आधारपर ई नेपालक दोसर प्रमुख भाषाक रूपमे अछि।

नेपाल आर भारत दूनू राष्ट्रमे शिक्षाक क्षेत्रमे स्कूलसँ विश्वविद्यालय तहधरि मैथिलीक पठन-पाठन होइत अछि। भारतमे शिक्षाक माध्यमक रूपमे प्रयोग करबाक हेतु सरकारी स्वीकृतिक अभावमे मैथिली भाषाकें हानि भ' रहल अछि। नेपालमे हालांकि वस्तुस्थितिमे किछु (विशेष नहि त) सामान्य अन्तर अवश्य देखल जाइत अछि। सम्प्रति नेपालमे मैथिलीसहित अन्य मातृभाषासभकें प्राथमिक शिक्षाक माध्यमकें रूपमे प्रयोग करबाक संवैधानिक प्रावधान भेल अछि। नेपालक संविधान आर स्थानीय स्वशासन ऐन अंतरगत सेहो विभिन्न स्थानीय भाषाक संरक्षण, सम्वर्द्धन आर प्रयोगक अभिभारा स्थानीय निकायकें सौंपल गेल अछि। निश्चित रूपमसँ कोनो भाषाक सम्बर्द्धनक वास्ते ई एकटा प्रशंसनीय प्रयास अछि, अपितु, सरकारी तत्परता तथा पठन-पाठन सामग्री आर प्रशिक्षित जनशक्तिक अभावमे एहि प्रयासमे आशातीत सफलता नहि उपलब्ध भ' सकल अछि। यद्यपि प्रयासक बावजूदो भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिली भाषा अद्यावधि सम्मिलित नहि भ' सकल अछि, किन्तु साहित्य अकादमीद्वारा एकरा सोरहम भारतीय भाषाक रूपमे मान्यता प्राप्त भ' चुकल अछि।

मैथिली एकगोट पृथक इन्डो-आर्यन भाषा थिक। ई भाषा इन्डो-आर्यन भाषा परिवारक पूर्वी समूहमे पड़ैत अछि। एहि दृष्टिकोणसँ, ई पश्चिमी समूहक हिन्दी भाषासँ स्वतः भिन्न देखल जायत अछि। भोजपुरी आर मगहीक संगे मैथिली एकटा उपसमूह बनबैत अछि। भाषिक दृष्टिकोणसँ ई हिन्दी आर नेपाली भाषासभसँ बेसी भिन्न आर असमी, बङ्गाली आर उडिया भाषाक अति निकट पाओल जाइत अछि। तदर्थ, हर्नले (१८८० ई.) सदृश अन्य विदेशी भाषाशास्त्रीसभ तथा हिन्दीक अन्धप्रेमीसभकद्वारा मैथिलीकें हिन्दीक *विहारी* अथवा पूर्वी भाषिकाकें रूपमें प्रचारित करब सर्वथा भ्रामक थिक।[1]

पूर्वमे, मैथिलीक अपन लिपि *मिथिलाक्षर* वा *तिरहुता* छल, जकर उद्गम ओ विकास बङ्गाली लिपिक माध्यमसँ *ब्राह्मी* लिपि (ईशापूर्व तेसर शताब्दीक अशोकक अभिलेखसभपर आधारित) सँ भेल अछि।[2] एहि लिपिक प्रयोग मैथिलीक पूर्वलिखित साहित्यमे पाएल जाइत अछि। मिथिलाक्षरक अतिरिक्त *कैथी* लिपिक प्रयोग कायस्थलोकनिद्वारा सरकारी आर निजी स्तरपर रेकर्ड रखबाक लेल कएल गेल। सम्प्रति ई दूनू लिपिक प्रायः (अति सिमित प्रयोगकें छोडि) लोप भ' गेल अछि। एकर स्थान आब हिन्दी, नेपाली आर किछु अन्य इन्डो-आर्यन तथा भोट-बर्मेली भाषासभमें प्रचलित *देवनागरी* लिपि ग्रहण कएने अछि। मैथिलीमे देवनागरी लिपिक प्रचलन भाषा सिखब, छपाई मे सुविधा तथा सम्भवतः हिन्दीक लेख्य परम्पराक प्रभावक कारणें भेल अछि। एहि लिपिमे अधिकांश अक्षरसभ भेदक आर वार्णिक (distinctive and phonemic) होइतहुँ किछु अक्षरसभ एहन नहि अछि। उदाहरणक लेल देवनागरी लिपिमे लघु तथा दीर्घ स्वर वर्णक व्यतिरेक होइत अछि (*इ/ई, उ/ऊ,* आदि) किन्तु नेपाली भाषासदृश मैथिलीमे ई व्यतिरेक नहि पाओल जाएत अछि। कहबाक तात्पर्य जे मैथिलीमे लघु स्वर वर्णमात्र होइत अछि, दीर्घ नहि।

२. साहित्य

भारत आर नेपाल दूनू राष्ट्रमे मैथिलीक लिखित साहित्यिक परम्परा अत्यधिक पैघ तथा समृद्ध रहल अछि। मैथिलीक सबसँ पुरान लिखित प्रमाणकें रूपमे *वर्ण रत्नाकर*कें

मानल जाइत अछि। ई ग्रन्थ ज्योतिरीश्वर कवि शेखराचार्यद्वारा चौधम शताब्दीमे लिखल गेल अछि। मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ लेखक विद्यापति ठाकुरकेँ मानल जायल छैन्हि, जे कवि कोकिल महाकवि विद्यापतिक नामसँ प्रसिद्ध छथि। संस्कृत भाषामे लेखनक अतिरिक्त, ओ मैथिलीमे *विद्यापति पदावली* नामक कवितासभक रचना कयलथि। एहि कृतिक लेल ओ अद्यावधि लोकप्रिय तथा अमर रहल छथि।

मल्लकालमे काठमान्डू उपत्यकामे सेहो मैथिली दरबारक भाषाक रूपमे विकसित आर प्रचलित भेल। काठमान्डूस्थित राष्ट्रिय अभिलेखालयमे अनेक साहित्यिक कृति (विशेषत: नाटक आर गीतसभ) एखनोधरि संरक्षित अछि, जकर पूर्ण अध्ययनक लेल मैथिली भाषा-साहित्यमें रुचि रखानिहार अन्वेषकलोकनिक ध्यान जाएब अत्यन्त आवश्यक महसूस कएल जाइत अछि।

आधुनिक सन्दर्भमे मैथिली साहित्यक प्राय: हरेक विधामे भारतीय तथा नेपाली साहित्यकारद्वारा लिखित कृतिसभ उपलब्ध अछि। साहित्यक अतिरिक्त, संस्कृति, इतिहास, भाषा-विज्ञान, पत्रकारिता आदि अन्य प्राज्ञिक क्षेत्रमे यथेष्ट कार्य भेल अछि।

मैथिली लोक साहित्यक परम्पराक सेहो एकटा विशिष्ट स्थान अछि। गद्य/पद्य, लोकनृत्य/गीतक रूपमे (यथा– सलहेस नाच, रासलीला आदि) लोकगाथाक असीमित भण्डार मैथिलीमे उपलब्ध अछि। एहिमे बहुत थोडक अध्ययन भेल अछि, किन्तु अनेको लोकगाथाक लोप होएबाक पूर्व एकर लिपिबद्ध आर विश्लेषण हएब अपरिहार्य देखल जाइत अछि।

३. भाषावैज्ञानिक अध्ययनक सर्वेक्षण

मैथिली भाषाक भाषावैज्ञानिक अध्ययनक परम्परा करीब एक शताब्दीसँ किछु बेसी रहल अछि। *मैथिली* (वा *तिरहुतिया*) शब्दक सबसँ पुरान उल्लेख बेलीगट्टीक भारतीय भाषासभक सूचि सन्निहित कृति (१७७१ ई.) क अमाडुज्जीद्वारा लिखिल प्राक्कथनमे पाएल गेल अछि। तत्पश्चात्, कोलब्रुक (१८०१ ई.) प्रथम विद्वान् छलाह जे मैथिलीकेँ एकटा पृथक भाषाकेँ रूपमे निर्धारण कएलथि। सम्प्रेषणक सुविधाकेँ ध्यानमे राखि मैथिलीक विषयमे अद्यावधि कयल गेल भाषावैज्ञानिक अध्ययनकेँ ई उपशीर्षक अन्तर्गत प्रस्तुत कएल गेल अछि– व्याकरण, ध्वनि विज्ञान, शब्दकोश-निर्माण, ऐतिहासिक/तुलनात्मक भाषाविज्ञान, तथा समाजभाषाविज्ञान।

३.१ व्याकरण

मैथिली व्याकरण परम्पराक प्रवर्त्तक हर्नलेकेँ मानल जा सकैत अछि। व्याकरणीय रूपसभक किछु दृष्टान्तक आधारपर हर्नले (१८८० ई.) मैथिलीकेँ हिन्दीसँ भिन्न भाषिकाकेँ रूपमे स्थापित कएलक, यद्यपि मैथिली व्याकरणक गहन अध्ययन श्रेय ग्रिएर्सन (१८८१ ई.)केँ देल जा सकैत अछि। अपन ग्रन्थमे ग्रिएर्सन मैथिली भाषाक तत्कालीन स्तरीय भाषिकाक बृहत् व्याकरण प्रस्तुत कएने छथि। एहि अवधिमे अन्यप्रमुख कृतिसभ ग्रिएर्सन (१८८३ ई., ज्ञ९०३ ई.) तथा केलौग (१८९३ ई.) द्वारा लिखल गेल अछि।

मैथिली-भाषी विद्वान्सँ मैथिलीक सबसँ पुरान व्याकरण दिनबन्धु झा (सम्भवत: १९४६ ई.) द्वारा लिखल गेल। एहि कृतिमे व्याकरणीय नियमसभ संस्कृत व्याकरणक पाणिनीयशैलीमे सूत्रक रूपमे लिखल गेल अछि। एकर पश्चात्, गोविन्द झा (१९७९ ई.)

मैथिलीक आधुनिक व्याकरण लिखलथि जाहिमे मैथिली भाषाकेँ आधुनिक भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोकणसँ विश्लेषण करबाक प्रयास कएल गेल अछि.।

आधुनिक भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोणक आधारपर डेभिस (१९७३ ई.) आर विलियम्स (१९७३ ई.) क अध्ययनकेँ महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि। ईलोकनि नेपालक तराई क्षेत्रसँ स्थलगत निरीक्षणद्वारा मैथिली वाक्यसभक सङ्कलन कएलथि आर भाषाविज्ञानक टैग्मेमीक सिद्धान्त (Tagmemic Model)क आधारपर ओकर विश्लेषण कएलथि। हालमे, मैथिली वाक्यसभक रूपान्तर-प्रजनक व्याकरण (Transformational-Generative Grammar) क ढाँचा अन्तर्गत विश्लेषण करबाक प्रयास सेहो भेल अछि। एहि सन्दर्भमे पहिल काज सिंह (१९७९ ई.) द्वारा भेल अछि। ओ रूपान्तर व्याकरणक सम्बन्धपरक व्याकरण (Relational Grammar) क ढाँचा अनुसार मैथिली वाक्यसभक वर्णन प्रस्तुत कएने छथि। एकर अतिरिक्त, योगेन्द्र प्रसाद यादव (१९८३ ई, १९९८ ई.) मैथिलीक वाक्यात्मक पक्षसभकेँ अन्वेषण कए विश्वक सर्वाधिक प्रभावशाली भाषावैज्ञानिक नोम चौम्स्कीद्वारा प्रतिपादित रूपान्तर-प्रजनक व्याकरणक नवीनतम सिद्धान्त 'शासन-बन्धन' सिद्धान्त Government-Binding Theory)पर एकर प्रभावकेँ खोज करबाक प्रयास कएने छथि। मैथिली व्याकरणक सन्दर्भमे बर्गहार्ट (१९९२ ई.)क योगदान महत्त्वपूर्ण रहल अछि। अपन (अद्यावधि अप्रकाशित) कृतिमे विभिन्न सामाजिक परिवेशमे प्रयुक्त मौखिक मैथिली भाषाक बृहत वर्णन प्रस्तुत कएने छथि। ई कृतिक भाषावैज्ञानिक उपयोगकेँ साथैँ विदेशीकेँ मैथिली सिखैबाक प्रयोजनसँ लिखल गेल अछि। हालमे, रामावतार यादव (१९९६ ई.) क 'मैथिलीक सन्दर्भ व्याकरण' प्रकाशित भेल अछि। एहि ग्रन्थमे मैथिली भाषाक वर्णव्यवस्था, रूपव्यवस्था तथा वाक्य संरचनालगायत अन्य सम्बन्धित विषयसभक विस्तृत वर्णन प्रस्तुत कएल गेल अछि।

३.२ ध्वनि विज्ञान

मैथिली भाषाक वर्ण व्यवस्थाक तथा एकर ऐतिहासिक विकासक अध्ययन करबाक प्रथम श्रेय सुभद्र झा (१९४१ ई.) केँ जाइत छैन्ह। गोबिन्द झा (१९७४ ई.) सेहो एहि विषयक अध्ययन प्रस्तुत कएलथि। एहि सन्दर्भमे, प्रजनक-ध्वनि विज्ञान Generative phonology)क सिद्धान्तक आधारपर मैथिलीक वर्ण व्यवस्थाक प्रथम अध्ययन रामावतार यादव (१९८४ ई.) कएलथि। एहि कार्यकेँ सुनील कुमार झा (१९८४ई.) तथा मिथिलेश मिश्र (१९९६ ई.) और अगाडि बढौने छथि।

३.३ शब्दकोश-निर्माण

मैथिली भाषाक शब्दकोश-निर्माणक परम्परा बहुत पैघ रहल अछि र एहि क्षेत्रमे *वर्णरत्नाकरकेँ* प्रथम प्रयास मानल जाइत अछि।ई कृति प्रथम शब्दकोश मात्रै नहि अपितु चौधम शताब्दीमे ज्योतिरीश्वर कविशेखराचार्यद्वारा लिखित प्रथम लिखित सामग्री थिक।

एहि कृतिक बहुत पश्चात् ग्रिएर्सन मैथिली भाषाक शब्दकोश-निर्माणक कार्य पुनः आरम्भ कएलथि। सन् १८८२ ई. मे ओ मैथिली भाषाक शब्दावली (vocabulary) प्रकाशित कएलथि। ग्रिएर्सन एहि कार्यकेँ आर अगाडि बढौलथि आर 'बिहारक किसानक जीवन' (Bihar's Peasant Life) सन् १८८५ ई. मे प्रकाशित कएलथि। एहि ग्रन्थमे विहारक किसानद्वारा प्रयोगमेँ लाओलगेल शब्द-सूची अछि। एहि कृतिक पश्चात् हर्नले

आर ग्रिएर्सन (१८८५ ई., १८८९ ई.), संयुक्त रूपसँ बिहारी भाषाक तुलनात्मक शब्दकोश (A Comparative Dictionary of the Bihari Langauge) नामक पुस्तक तैयार कएलथि, जकर दूटा भाग मात्रे प्रकाशनमे आएल अछि।

एकर अतिरिक्त, दीनबन्धु झा (१९५० ई.)क मैथिली शब्दकोश एहि क्षेत्रमे एकटा महत्त्वपूर्ण योगदान मानल जायत अछि। १९७३ ई. मे मैथिली शब्दकोश-निर्माणमे दूगोट प्रयास भेल अछि। प्रथम त ट्रेल (१९७३ ई.)क मैथिलीक शब्द सन्निहित विभिन्न भाषाक शब्दक तुलनात्मक सूची अछि आर दोसर जयकान्त मिश्र (१९७३ ई.)क व्युत्पत्तिमूलक शब्दकोश। जयकान्त मिश्रक शब्दकोश मैथिली भाषाक अध्ययनक क्षेत्रमे एकटा उल्लेखनीय योगदान मानल जाइत अछि। ई कृति अक्सफोर्ड इङ्गलिश डिक्शनरीक ढाँचाक आधारपर ऐतिहासिक सिद्धान्तअनुसार व्युत्पत्तिमूलक शब्दकोश थिक, जकर अद्यावधि तीन खण्डमात्रे प्रकाशित भेल अछि। डेभीस (१९८४ ई.)क आधारभूत शब्दकोशमे मैथिली शब्द तथा ओकर नेपाली आर अङ्ग्रेजी पर्यायवाची शब्दसभकेँ राखल गेल अछि। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानद्वारा तैयार कएल गेल पर्यायवाची शब्दकोशमे सेहो मैथिली लगायत नेपालक विभिन्न भाषाक पर्यायवाची शब्दसभ सम्मिलित कएल गेल अछि। हालमे योगेन्द्र प्र. यादवद्वारा नेपाली-मैथिली-अंग्रेजी बहुभाषिक शब्दकोशक तैयारी नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक भाषा विभाग अन्तर्गत भ' रहल अछि।

३.४ ऐतिहासिक तुलनात्मक भाषाविज्ञान

सुभद्र झा (१९५८ ई.) मैथिली भाषाक विकासक विस्तृत वर्णन प्रस्तुत कएने छथि। अपन महत्त्वपूर्ण कृतिमे ओ कथ्य आर लिखित मैथिलीक प्रचुर उदाहरणसभक आधारपर देखौने छथि जे कोना पूर्व इन्डो-आर्यन कालसँ वर्तमान काल धरि मैथिली भाषाक क्रमिक विकास भेल अछि। मैथिली भाषाक इतिहासक अध्ययनक सन्दर्भमे दोसर महत्त्वपूर्ण कार्य गोविन्द झा (१९६८ ई.) द्वारा भेल अछि।

अन्य इन्डो-आर्यन भाषासभक तुलनामे मैथिलीक चर्चा सर्वप्रथम कोलब्रुक (१८०१ ई.) कएने छथि। मसीका (१९९१ ई.) द्वारा लिखित 'इन्डो-आर्यन भाषासभ' (The Indo-Aryan Langauges) मैथिली लगायत अन्य इन्डो-आर्यन भाषासभक समकालीन संग -संगे ऐतिहासिक अध्ययनक क्षेत्रमे एकगोट विशिष्ट कृति अछि।

३.५ समाज भाषाविज्ञान

मैथिलीक समाजभाषावैज्ञानिक क्षेत्रमे बहुत कम अध्ययन भेल अछि। अपन अनुसन्धानात्मक पत्रमे सिंह (१९८९ ई.) सूत्रात्मक ढङ्गसँ दर्शौने छथि जे कोन तरहेँ मैथिली भाषामे क्रिया मेलक चयन वक्ता-श्रोताक बीच रहल सम्बन्धद्वारा निर्धारित कएल जाइत अछि। एकगोट दोसर कृतिमे श्रीकृष्ण यादव (१९८९ ई.) मैथिली लगायत नेपालक अन्य मुख्य भाषासभक प्रयोग क्षेत्रक विश्लेषण कए नेपालक सन्दर्भमे उपयुक्त भाषा नीतिक सुझाव पेश कएने छथि। एकर अतिरिक्त, मैथिली भाषाक सामाजिक सन्दर्भ बुझबाक लेल बर्गहार्ट (१९९२ ई., १९९६ ई.)क कृतिसभ अत्यन्त उपयोगी देखल गेल अछि।

एहि विषयसँ सम्बन्धित एकटा पृथक अध्ययन विकेल आदि (१९९९ ई.) द्वारा कयल गेल अछि, जाहिमे ई देखाओल गेल अछि जे मैथिली क्रियाक जटिल मेलप्रक्रिया

नियमित अछि। मैथिली समुदायमे मानवीय अन्तरक्रियाक दूगोट व्यावहारिक सिद्धान्त अछि– अनुहार (face) आर भाव (empathy) एहि अध्ययनक अनुसार मैथली क्रियाक मेल व्यवस्था एहि दूगोट सिद्धान्तद्वारा नियंत्रित भेल अछि।

४. मुख्य भाषिक विशेषता

एहि खण्डमे विभिन्न भाषिक स्तरपर मैथिली भाषाक मुख्य विशेषताका उल्लेख कयल गेल अछि। ई देखैबाक हेतु जे मैथिली अन्य (खासकेँ इन्डो-आर्यन भाषासभसँ कोन रूपमे मिलैत आर फरक अछि, उपरोक्त व्याकरणीय विशेषतासभकेँ तुलनात्मक ढङ्गसँ प्रस्तुत कएल गेल अछि।

४.१ वर्णव्यवस्था

मैथिली भाषामे २६ व्यञ्जन तथा १० मौखिक स्वर वर्ण पाओल जायत अछि। एहि वर्णसभकेँ निम्न तालिकामे प्रस्तुत कएल गेल अछि :

उच्चारण स्थान→ उच्चारण प्रयत्न ↓	द्वयोष्ठ्य	मूर्धन्य	दन्त	तालव्य	कण्ठ्य	स्वरयंत्रमुखी
स्पर्श	प फ ब भ	ट ठ ड ढ	त थ द ध		क ख ग घ	
स्पर्शसंघर्षी				च छ ज झ		
नासिक्य	म	न				
कम्पित		र				
संघर्षी		स	(ष)	(श)		ह
पार्श्विक		ल				
अर्द्धस्वर	(व)			(य)		

तालिका १ : मैथिली व्यञ्जन

जीभक भाग → जीभक उचाइ ↓	अग्र	मध्य	पश्च
संवृत	इ		उ

अर्धसंवृत	ओ		
अर्धविवृत		अ	
विवृत		आ	

तालिका २ : मैथिली स्वरवर्ण

देखू जे देवनागरी लिपिमे ह्रस्व आर दीर्घ स्वरक अन्तर उपस्थित रहितहुँ मैथिलीमे ई अन्तर नहि पाओल जाइत अछि। एहि सन्दर्भमे मैथली नेपाली सदृश तथा हिन्दीसँ भिन्न अछि। एकर अतिरिक्त, तालिका २ मे उल्लेखित आठो स्वरवर्ण नासिकीकृत (nasalized) भ' सकैत अछि; एहि प्रकारसँ आठटा नासिकृत स्वर वर्ण (nasalized vowels) मैथिलीमे होइत अछि। एहि तरहैं, मैथिलीमे व्यञ्जन वर्ण तथा मौखिक आर अनुनासिक स्वरवर्ण सब मिलाकैं ४२ टा वर्ण पाओल जाइत अछि। एहि भाषामे किछु संयुक्त स्वरवर्ण (dipthongs and tripthongs) सेहो पाओल जाइत अछि, जकर उल्लेख एहि ठाम नहि कएल गेल अछि।[३]

४.२ रूप व्यवस्था

४.२.१ **क्रिया संगति** : मैथिली व्याकरणक सबसँ अधिक आकर्षक पक्ष क्रियाक अत्यन्त जटिल रूप अछि। अन्य इन्डो-आर्यन भाषासभजकाँ, मैथिलीक क्रिया रूपावली (paradigm) बहुरूपिमिक (polymorphomic) होइत अछि। ई अनेक रूपिमसभसँ बनैत अछि जे प्रायः क्रियाक धातुक दहिना भागमे लगैत अछि (मसीका, १९९१ ई: २५७)। एकर संरचनाकैं निम्न रूपमे राखल जा सकैत अछि:

(१) क्रिया → धातु (पक्ष) (प्रत्यय *रह*) (पक्ष प्रत्यय) (स.क्रि.) काल मेल$_1$ (गेल$_2$) (मेल$_3$)

एहि संरचनाक उदाहरणक रूपमे निम्न वाक्यपर विचार करु :

(२) हरी-जी दौड़- ऐत रह-ऐत छ - ल - आह
हरी-३ आ धातु- पक्ष रह - प्र.प. स.क्रि. -भू.का. - ३आ

किन्तु क्रिया संगतिक मामलामे मैथिली अन्य इन्डो-आर्यन भाषासँ भिन्न देखल जाइत अछि। एहि भाषामे अत्यन्त जटिल संगति व्यवस्था पाओल जाइत अछि। एहि भाषामे कर्ता (subject) मात्रे नहि, अपितु कर्म, अन्य मुख्य संज्ञापद तथा गौण तीनटा संज्ञापदधरिकैं क्रिया संगति ग्रहण क' सकैत अछि। उदाहरण (३क-ग) मे असगर, दोबर आर तेबर संगतिकैं देखाओल गेल अछि।

(३) क. हम सुत - ल - औंह
१क. क्रि. - भू.का. - १क
'हम सुतलौंह।'

ख. हम हुन - का मदत कर - ल - इ - ऐन्ह
१ कर्ता ३आ.-कर्म संज्ञा क्रि. - भू.का. १क. - ३ आ. कर्म

'हम हुनका मदन करलिऐन्हि ।'

ग. हम तो-रा हुनू-अक किताव दे - ल - ई - औ-
१कर्ता २ म.आ.- कर्म ३ आ.-संबन्ध संज्ञा क्रि.-भू.क्र. १कर्ता-२म.आ. कर्म
न्ह
-३आ.सम्बन्ध
'हम तोरा हुनक किताब देलिऔन्ह ।'

क्रिया संगतिक तिन प्रकारमे नियन्त्रक विधेयक युक्ति (arguments) तथा सम्बन्धवाचक (possessor) मात्रे नहि अपितु संज्ञायोगी पदावलीक संज्ञा तथा एहि अन्तर्गत ग्रहण कर्ताक साथ-साथे संकधनमे निर्देशीसंकतेक (deictic referents in discourse) सेहो भ' सकैत अछि, यथा:

(४) क. तौं हुन - क्र - लेल कज कै - ल - अह -
२ म. आ. कर्ता ३ आ.-तिर्यक - सं.यो. संज्ञा क्रि. - भू.क्र. - २ म. आ. कर्ता
उन्ह
३ आ. तिर्यक
'तौं हुनकालेल काज कैलहुन्ह ।'

ख. हम तोह्-अर घर - पर गेल घ - ल- इ- अह
१ कर्ता २म.आ.-सं. संज्ञा - संयो. क्रि. - म.क्रि. भू.क्र. - १ कर्ता-२ म. आ.सं.
'हम तोहर घरपर गेल छलिअह ।'

ग. हम ओ - करा मार - ल - इ - अह
१ कर्ता ३ अना. - कर्म क्रि. - भू.क्र - १ कर्ता - २ म. आ.
'हम ओकरा मारलिअह (जे तोरा सँ सम्बन्धित छह्र, इत्यादि)।

हालांकि क्रिया संगतिक ई जटिलता खासकें ब्राह्मणेतर मैथिली भाषिकामे आंशिक रूपसँ न्यून पाओल जायत अछि ।

क्रिया संगतिमे सन्निहित कोटिक प्रकार सभ होइत अछि – तीन प्रकारक पुरुष (प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय), प्रथम पुरुषकें छोडि अन्य पुरुषसभक चारि प्रकारक आदरार्थी तह आर तृतीय पुरुषक मात्र स्त्रीलिङ्ग/पुलिङ्ग, सन्निहित/असन्निहित तथा केन्द्रित (in focus)/अकेन्द्रित (out of focus)। हालांकि यी कोटिसभ सम्भावित जोड़क समान रूपसँ प्रतिनिधित्व नहि होइत अछि आर ओकर तटस्थीकरण (neutralization) क अनेको उदाहरण पाओल जाइत अछि ।[४]

४.२.२ सर्वनाम लोप तथ्य (Pro-drop phenomenon)

मैथिलीमे क्रिया संगतिसँ सम्बन्धिक एकटा पक्ष अछि सर्वनाम-लोप (pro-drop)। एकर अर्थ होइत अछि जे कोनो उपवाक्यमे सर्वनामक लोप भ' सकैत अछि। अधिकांश इन्डो-आर्यन आर भोट-वर्मेली भाषासभजकाँ मैथिली सेहो सर्वनाम लोप भाषा थिक। किन्तु मैथिलीमे सर्वनामिक कर्तामात्रे नहि अपितु सर्वनामिक कर्म आर

सम्बन्धवाचक सेहो लोप भ' सकैत अछि । कारण जे मैथिलीक क्रिया संगतिमे कर्तासमेत कर्म आर सम्बन्धवाचक व्याकरणीय विशेषतासभ सन्निहित रहि सकैत अछि ।

एहि सन्दर्भमे, निम्न उदाहरणपर ध्यान देल जा सकैत अछि–

(५) क. हम तोरा मार -ब - औ ।
१ कर्ता २ अना. कर्म क्रि. -भविष्य का. १ कर्ता - २ अना. कर्म
ख. ∅ तोरा मारबौ ।
ग. हम ∅ मारबौ ।
घ. ∅ ∅ मारबौ ।

(६) क. ई हुनक घर छ - इ - ऐन्हि
३ आ क्रि. - वर्तमान - ३ आ.
ख. ई हुनक घर छिऐन्हि ।
ई ∅ घर छिऐन्हि ।

४.२.३ प्रेरणार्थक क्रिया

मैथिलीक प्रेरणार्थ क्रियाक संरचना हिन्दीक सदृश आर नेपालीसँ भिन्न पाओल जायत अछि । मैथिलीमे दू प्रकारसँ प्रेरणार्थक क्रिया बनाओल जाइत अछि, यथा 'काट' – (१) 'कटा' (दोसरसँ कटौनाई) आर (२) 'कटबा' (ककरोद्वारा दोसरसँ कटौनाई):

(७) क. राम गाछ काटलक । [सकर्मक क्रिया]
ख. राम जनसँ गाछ कटौलक [प्रेरणार्थक क्रिया (१)]
ग. राम हरिद्वारा जनसँ गाछ कटबौलक [प्रेरणार्थक क्रिया (२)]

प्रथम प्रेरणार्थ क्रिया 'कटा' सकर्मक क्रिया 'काट' सँ बनाओल गेल अछि, जे सकर्मक क्रिया स्वयं अकर्मक क्रिया 'कट' सँ बनल अछि, यथा:

(८) गाछ कटैत अछि ।

४.२.४ संयुक्त क्रिया

अन्य दक्षिण एसियाई भाषासभक सदृश, मैथिलीमे सेहो क्रियाक विस्तार दोसर प्रक्रिया सँ भ' सकैत अछि । ई प्रक्रिया थिक 'संयुक्त क्रिया' अथवा 'क्रमिक क्रिया संरचना' (Serial Verb Construction) । संयुक्त क्रियामे एकटा मुख्य क्रिया संयुक्त कृदन्त (conjunctive participle) क रूपमे रहैत अछि आर एकटा 'आतिथ्यकार' (host) रहैत अछि । सहायक क्रिया पक्ष, काल, आ संगतिकलेल रूपायत (inflect) होइत समापिक कालित (finite) रूपमे रहैत अछि आर एकरा 'क्षीण क्रिया' (light verb) कहल जाइत अछि, यथा :

(९) हरि किताब पढ इ ले - ल - ऐथि
३ आ संज्ञा मु.क्रि. ... स. क्रि. मूका. - संगति

'हरि किताब पढि लेलैथ ।'

उदाहरण (९) मे पक्षीय कार्य निर्दिष्ट करबाक अतिरिक्त, क्रमिक क्रिया अन्य अर्थमे सेहो प्रयोग होइत अछि, खासकें गतिशीलता आर कर्ताद्वारा कार्यक नियन्त्रण तथा वक्ताक भावनाक अर्थमे ।

प्रेरणार्थक आर क्रमिक क्रियाक अतिरिक्त, मैथिलीमे दोसर प्रकारक जटिल विधेय सेहो विद्यमान अछि। उदाहरणक लेल, क्रिया कोनो नाम अथवा विशेषणसंगे मिलकें जटिल क्रिया बनैत अछि, यथा :

(१०) हरि भगवानक नाम स्मरण कएलक। (संज्ञा+क्रिया)

(११) हरि घर साफ कएलक। (विशेषण+क्रिया)

४.२.५ सर्वनाम

क्रिया संगतिक रूप व्यवस्थाजँका, मैथिलीक सर्वनाममे पुरुष, आदरार्थी भाव, दूरी तथा कारकक आधारपर भिन्नता पाओल जाइत अछि, जकर सारांश तालिका ३ मे प्रस्तुत कएल गेल अछि :–

कारक → पुरुष ↓	कर्त्ता	कर्म	सम्बन्धवाचक
प्रथम	हम	हमरा	हमर
द्वितीय अनादरार्थी	तुँ	तोरा	तोहर
द्वितीय मध्यादारार्थी	तोँ	तोरा	तोहर
द्वितीय आदरार्थी	अहाँ	अहाँकेँ	अहाँक
द्वितीय उच्च आदरार्थी	अपने	अपनेकेँ	अपनेक
तृतीय अनादारार्थी (सन्निकट)	इ	एकरा	एकर
तृतीय अनादारार्थी (दूर)	उ	ओकरा	ओकर
तृतीय आदरार्थी/उच्च आदरार्थी (सन्निकट)	ओ	हिनका	हिनक
तृतीय आदरार्थी/उच्च आदरार्थी (दूर)	ओ	हुनका	हुनक

तालिका नं. ३ : मैथिली सर्वनाम

अधिकांश कोटिक सम्बन्धमे सर्वनाममे क्रियात्मक (inflections) सँ कम रूपायत अन्तर/भिन्नता पाओल जायत अछि। उदाहरणार्थ, क्रियाक रूपमे आदरार्थी/उच्च आदरवाचक भिन्नता देखल गेल अछि, जेना– *ऐथ- अथिन्ह*, किन्तु आदरार्थीक दूनु प्रकारमे एकेटा सर्वनाम (*ओ*)क प्रयोग होइत अछि;

(१२) क. ओ ई किताब पढलैथ।

ख. ओ ई किताब पढलथिन्ह।

एकर अतिरिक्त, यदि तृतीय पुरुष सर्वनाम निकटता देखवैत अछि, त सब आदरवाचक भिन्नताक एकेटा रूप (इ) होयत अछि। द्वितीय पुरुष सर्वनाम आर क्रियात्मक रूपमे समानता देखल जाइत अछि, किन्तु *अहाँ* और *अपने* (उच्च आदरार्थी) क क्रियात्मक रूपमे भिन्नता पाओल जाइत अछि; *अहाँ* कलेल रूपायत (inflection) मुदा *अपने* कलेल विस्तारित रूप (कर्मवाच्यजकाँ) रूप प्रयोग कएल जाइत अछि–

(१३) क. अहाँ पढलौंह।

ख. अपने पढल गेलैक।

मध्य आदरार्थी द्वितीय पुरुषकलेल क्रमशः *तुँ* आर *तों* सर्वनामक प्रयोगमे भिन्नता रहितहुँ अनौपचारिक वार्तालापमे ई भिन्नताक लोप भ' एकेटा रूप *तुँ* क प्रयोग देखल जाइत अछि।

४.२.६ व्यक्तिवाचक संज्ञा आर आदरसूचक निपात

आदरवाचक तहक भिन्नता सर्वनामेमे मात्र नहि अपितु व्यक्तिवाचक संज्ञामे सेहो देखल जाइत अछि। व्यक्तिवाचक संज्ञामे आदरार्थी *-जी, -बाबु,* इत्यादि आर अनादरार्थी भिन्नता एहि तरहे देखल जाइत अछि।

	आदरार्थी		अनादरार्थी
(१५) क.	छौरा	–	बौआ
ख.	छौरी	–	दैया, इत्यादि।

वचन

संज्ञासंगे प्रयुक्त होएबला दोसर व्याकरणीय विशेषता वचन अछि, किन्तु ई कोटि संज्ञासंगे पूर्णरूपसँ व्याकरणीय कोटि नहि बनि सकल अछि। बहुवचन प्रत्यय *-सभ* या *-लोकनी* (आदरार्थीसंगे) पाओल जाइत अछि (सिंह १९८९, ८८)। एहि सन्दर्भमे ध्यान देबाक बात ई जे *सभ* क प्रयोग 'सब' क अर्थमे स्वतन्त्र रूपिमक रूपमे सेहो प्रयोग भेनाइ जारी अछि आर पूर्णरूपसँ वचन प्रत्यय नहि बनि सकल अछि (रामवतार यादव, १९९६ ई.: ६९)। एकर अतिरिक्त, क्रिया संगतिमे वचनक भिन्नता परिलक्षित नहि होइत अछि। मैथिली एहि विषयमे हिन्दी आर नेपाली भाषासभसँ भिन्न देखल गेल अछि। मैथिलीक वचनक संबन्धमे कहल गेल ई तथ्य अमूर्त वचन भिन्नताकेँ आदरसूचक भिन्नताक रूपमे पुनरविश्लेषणक प्रतिफल थिक।

लिङ्ग

मैथिली संज्ञामे व्याकरणीय लिङ्ग रूपिम आर वाक्यात्मक दूनू कोटिक रूपमे अत्यधिक सीमित अछि। *-ई* ('छौड़ा/छौड़ी'), *-आइन* ('गुरु/गुरुआइन'), आदि प्रत्यय जातिवाचक संज्ञाकेँ पुलिङ्गसँ स्त्रीलिङ्ग बनेबामे प्रयोग होइत अछि, किन्तु ई प्रत्ययसभ बहुत थोडे संज्ञासंगे प्रयुक्त होइत अछि आर एकर व्यापक रूपसँ प्रयोग नहि देखल गेल अछि। मैथिली भाषाक सर्वनामसभमे लिङ्गक विभेदक पूर्णतया शून्य अछि, यद्यपि उच्च

औपचारिक स्थितिमे मैथिली क्रियाक मेल भूत आर भविष्यत कालमे तृतीय पुरुष आदरार्थी संज्ञा आर सर्वनामसँ सम्बन्धित स्त्रीलिङ्गसंगे होइत अछि, यथा :

(१६) क. ओ दौड़लीह/दौड़तहि ।

ख. ओ दौड़लैथ/दौड़ताह ।

किन्तु एहि सन्दर्भमे ई उल्लेख करबाक अछि जे सम्बन्धवाचक विशेषण/परिवर्तक (modifiers) क भेद संज्ञाक लिङ्गसंगे नहि होएत अछि :

(१७) ओकर पति/पत्नी

एहि परिप्रेक्ष्यमे मैथिली हिन्दी आर नेपाली भाषासँ भिन्न देखल जायत अछि। किन्छु परिवर्तक विशेषण भेलापर मानवीय संज्ञा लिङ्गसंगे मेल होइत अछि।

(१८) ओकर पहुलका बेटा/पहुलकी बेटी

कारक

अन्य दक्षिण एसियाई भाषासभक सदृश, मैथिलीक संज्ञाक कारकीय व्यवस्था समृद्ध पाओल जाइत अछि। एहि भाषामे तीन प्रकारक कारक विभक्ति होइत अछि – धातु रूप, आबद्ध रूपिम (clitics) आर *(अ)*क + परसर्ग (postpositions)। एकर विवरण निम्न अनुसार प्रस्तुत कएल गेल अछि।

धातु रूप

मैथिली भाषामे दूटा कारक - कर्ता आर गैर मानवीय संज्ञासंगे कर्म – मे धातुरूपक प्रयोग होइत अछि, यथा :

(१९) क. *उ* दौड़लक (कर्ता)

ख. *उ* *किताब* किनलक। (कर्ता/कर्म)

एहि प्रसङ्गमे ई उल्लेख करब आवश्यक अछि जे हिन्दी आर नेपाली लगायत कतिपय इन्डो-आर्यन भाषासभसँ भिन्न मैथिली भाषामे तीर्यक कारक विभक्तिक प्रयोग नहि पाओल जाइत अछि। एहि भाषामे कर्ता कारकसंगे सदैव शून्य-विभक्ति लगैत अछि।

आबद्ध रूपिम (Clitics)

(अ) कर्म : – *कें*

(२०) क. राम *छौड़ाकें* मारलक। (कर्म)

ख. *हरिकें* भूख लागल। (सम्प्रदान)

(आ) सम्बन्ध : – (अ)–*क* (संज्ञा तथा आदरार्थी सर्वनामसंगे)। - अर गैर आदरार्थी सर्वनामसंगे

(२१) क. हम रामजीक घर देखलिऐन्हि। (संज्ञा)

ख. हम *अहाँक* घर देखलौंह। (आदरार्थी सर्वनाम)

(आ)- *अर* (गैरआदरार्थी सर्वनामसंगे)

(२२) क. *हमर* घर दूर अछि। (गैरआदरार्थी सर्वनाम)

(इ) अपादान/स्रोत : – *सँ*

(२३) क. हरि *पेन्सिलसँ* लिखलक।
ख. हरिजी अपन *गामसँ* ऐलाह।

(ई) अधिकरण : –मे/पर

(२४) क. हरिजी *घरमे* छथि।
ख. किताब टेबुलपर अछि।

(अ) क + परसर्ग

(२५) क. हम *किताबकलेल* आएल छी।

विश्वक भाषासभमे कारक तथा क्रिया संगतिक बीच निस्संदेह सम्बन्ध अछि। किन्तु मैथिलीक सम्बन्धमे ई आकर्षक तथ्य देखल गेल अछि जे एहि भाषाक क्रिया संगतिमे कर्ता-गैरकर्ता भिन्नता पाओल जाइत अछि। कहबाक तात्पर्य ई जे मैथिलीमे क्रिया सङ्गतिक दूगोट समुच्चय (set) होइत अछि – कर्ता सम्मुचय (set)आर गैरकर्ता सम्मुचय (set)। कर्ता सम्मुचय कर्ता कारक आर गैर कर्ता सम्मुचय (set) गैर कर्ता बाहेक अन्य कारकमे रहल संज्ञाकलेल प्रयुक्त होइत अछि (एहि सम्बन्धमे उदाहरण २६ क-च देखू)। एहि तरहें कारकीय दृष्टिकोणसँ संज्ञामे क्रिया संगतिक तुलनामे अधिक भिन्नता पाओल जायत अछि।

नेपाली, हिन्दी तथा अन्य कतिपय दक्षिण एसियाई भाषासभक सदृश, मैथिलीमे सेहो कारक तथा व्याकरणीय सम्बन्धबीच एक-सँ-एक समानता (one-to-one correspondence) नहि पाओल जाइत अछि। उदाहरणार्थ, कोनो वाक्य या उपवाक्य उदेश्य (subject) कर्ता कारकमे रहल संज्ञामात्रे नहि अपितु गैरकर्ता कारक (यथा: सम्प्रदान, करण, सम्बन्ध तथा अधिकरण कारक)मे रहल संज्ञा सेहो भ' सकैत अछि।

(२६) क. *हुनका* भूख लगलैन्हि। (सम्प्रदान कारक)
ख. *हुनका* चिट्ठी लिखैकेँ छलैन्ह। (सम्प्रदान कारक)
ग. *हुनकासँ* ई किताब पढल नहि भेलैन्हि। (करण कारक)
घ. *हुनका* पैसा हरा गेलैन्ह। (सम्बन्ध कारक)
ङ. *हुनकामे* साफे दया नहि छैन्हि। (अधिकरण कारक)
च. *हुनकासँ* ई चिट्ठी लिखल गेलैन्हि। (करण कारक)

४.३ वाक्य संरचना

मैथिली (सकर्मक) वाक्यमे घटक-क्रम सामान्यत: कर्ता-कर्म-क्रिया होइत अछि, यथा :

(२७) राम किताब किनत ।

किन्तु ई घटक सभक क्रममे परिवर्तन भ' सकैत अछि । सामान्य क्रमकेँ ध्यानमे राखि अन्य दक्षिण एसियाइ भाषासभक सदृश मैथिली शिर्ष-अंत (head-final) भाषा थिक; अर्थात् कोनो पदावली या वाक्यांशक प्रधान पद आश्रित पद पछाड़ि अबैत अछि। एहि प्रकारेँ क्रिया पदावलीक प्रधान पद क्रिया आश्रित पदक पछाड़ि, परसर्ग पदावलीक प्रधान पद परसर्ग आश्रित पद कर्मक पछाड़ि, आर संज्ञा पदावलीक प्रधान पद संज्ञा आश्रित पद सम्बन्ध वाचक संज्ञाक पछाडि अबैत अछि, यथा :

(२८) क. [क्रि.प. हरिकेँ मारलक]

ख. [सं.प. रामक किताब]

विश्वक अधिकांश भाषासभसँ भिन्न मैथिलीमे एकगोट रोचक नियम देखल गेल अछि, जे अंग्रेजीक 'उद्देश्य-सँ-उद्देश्य उत्थापन' (Subject-to subjcect raising) क सदृश मानल जाइत अछि। एहि नियमक अनुसार कालित (tensed) आश्रित उपवाक्यक उद्देश्य उठिकेँ प्रधान उपवाक्यक उद्देश्यक स्थान ग्रहण करैत अछि, यथा :

(२९) क. लगैत अछि जे *अहाँ* आई घर नहि जा सकब ।

ख. *अहाँ* लगैत छी जे ∅; आई घर नहि जा सकब ।

ई असामान्य नियम अंग्रेजी नियमसँ भिन्न अछि, जाहि अनुसार उत्थापन कालिक आश्रित उपवाक्यसँ नहि अपितु अकालिक (tenseless) आश्रित उपवाक्यसँ भ' सकैत अछि, यथा:

(३०) क. It seems that John will come today.

ख. John seems ∅ to come today

ग. * John seems that ∅ to come today.

ई नियम मैथिलीमे एहि अवस्थामे लागू भ' सकैत अछि जखन सम्बन्धित वाक्यमे 'उत्थापन विधेय' (raising predicate) रहैत अछि। एहि भाषामे उत्थापन विधेयक अन्तरगत *लगनाइ, बुझेनाई, प्रतीत भेनाइ* इत्यादि पाओल जाइत अछि ।

५. निष्कर्ष

उपर उल्लेख भेल अनुसार मैथिली भाषा लिखित साहित्य भण्डार तथा भाषावैज्ञानिक अध्ययनमे समृद्ध पाओल जाइत अछि। एहि भाषाक विकास तथा सम्बर्द्धनक हेतु पर्याप्त शर्तसभ विद्यमान अछि। एकर अतिरिक्त, एहि भाषाक वक्तासभ अपन भाषाप्रति आबद्ध देखल जायत अछि, जे कोनो भाषाक संरक्षण आर संबर्द्धनकलेल अपरिहार्य होइत अछि; भारत आर नेपाल दूनू राष्ट्रमें मैथिली भाषीलोकनि अपन मातृभाषाक हितक उत्थान करबाकलेल तत्पर देखल गेल अछि। उदाहरणार्थ, मैथिली भाषाकेँ भारतीय संविधानक आठम अनुच्छेदमे सामिल करबाक हेतु कतिपय प्रयास होइत रहल अछि। तहिना, नेपालमे सेहो मैथिली भाषीलोकनि अन्य अल्पसंख्यक भाषाभाषीलोकनिसंगे स्थानीय प्रशासनक नेपालीक अतिरिक्त वैकल्पिक कामकाजक

भाषाकें रूपमे प्रयोग होएबाक लेल मैथिली लगायत अन्य भाषाकलेल एकगोट संयुक्त प्रयास आरम्भ कएने छथि। किन्तु ई बात अवश्य स्वीकार्य होयबाक चाही जे मैथिलीक विकासक मार्गमे किछु बाधक तत्त्व सभ विद्यमान अछि, यथा : प्रशासन आर शिक्षामे माध्यमक रूपमे प्रयोगक अभाव, अशिक्षा, हिन्दी तथा नेपाली भाषासभसँगे प्रतियोगिता, भाषाकें कोनो वर्ग/जाति-विशेषसँ जोडनाई आदि।[६]

पाद टिप्पणी

१. मैथिली हिन्दीक भाषिका नहि अपितु पृथक भाषा थिक/एहि संदर्भमे ग्रियर्सन (१८८१:२) देखू।

२. मसीका (१९९१ : १४३)मे उल्लेख भेल अनुसार प्रोटो-बंगाली मैथिली, उड़िया, मणिपुरी तथा नेवारी लिपिक स्रोत मानल गेल अछि।

३. विशेष जानकारीकलेल, रामावतार यादव (१९८४, १९९६), सुभद्र झा (१९५८), एस. के. झा (१९८४), आर एम.मिश्र (१९९६) देखू।

४. एहि विषयक विस्तृत जानकारीकलेल ग्रियर्सन (१९०९), सुभद्र झा (१९५८), विलीयम्स (१९७३), सिंह (१९७९), रामावतार यादव (१९९६) आर योगेन्द्र प्र. यादव (१९९६) देखू। एहि तथ्यक व्यावहारिक पक्षक विवरणक लेल बिकेल (१९९७ ई.) आदि देखू।

५. शासन-बंधन सिद्धान्तअंतरगत एहि विषयक विस्तृत अध्ययनकलेल योगेन्द्र प्र. यादव (१९९८, १९९९) तथा यादव आर ग्लोभर (१९९९)देखू।

६. विस्तृत अध्ययनकलेल ब्रास (१९७४) देखू।

सन्दर्भ ग्रन्थ

Amaduzzi. 1771. 'Preface' to Beligatti's *Alphabetum Brammmhanicum.*

Bickel, Balthasar, Walter Bisang and Yogendra P. Yadava. 1997 'Face vs. Empathy: the Social Foundation of Maithili Verb Agreement', a paper presented at Himalayan Languages Conference, Paris and Conference on Agreement, University of Delhi. To appear in *Linguistics.*

Bickel, B. and Y.P. Yadava 'Grammatical Relations in Indo-Aryan Languages' Ms., Johnnes-Guttenberg Univrsität, Mainz.

Brass, P. R. 1974. *Language, Religion and Politics in North India*. Cambridge, Cambridge University Press.

Brown, Penelope and S.C. Levinson 1987[1978] *Politeness: some Universals in Language Use.* Cambridge, Cambridge University Press.

Burghart, R. 1992. *Introduction to Spoken Maithili in Social Context* Parts 1-3, Universität Heidelberg, Südasien-Institut Abteilung für Ethnologue, MS.

CBS, 1991. *Population Report.* Kathmandu, Central Bureau of Statistics, HMG/Nepal.

Colebrooke, H.T. 1801 "On the Sanskrit and Pracit Languages", *Asiatic Researches* 7: 199- 231.

Davis, A.I. 1973. "Maithili Sentences", in Hale, A. (ed.), *Clause, Sentences and Discourse Patterns*, Vol. 1, Kathmandu, SIL Tribhuvan University Press.

Davis, A.I. 1984. *Basic Colloquial Maithili - A Maithili-Nepali- English Dictionary*. Delhi, Motilal Banarsidass.

Grierson, G. A. 1903. *A Linguistic Survey of India 5/2* [reprinted 1968], Delhi: Motilal Banarsidass.

Grierson, G. A. 1881. *An Introduction to the Maithili Dialect of the Bihari Language as Spoken in Bihar, Part I : Grammar,* Calcutta : The Asiatic Society of Bengal [Reprinted in 1909].

Grierson, G. A. 1885. *Bihar Peasant Life.* [second and revised edition 1926] Patna, Superintendent, Government Printing, Bihar and Orissa.

HMG 1991. *The Constitution of the Kkingdom of Nepal.* Kathmandu, HMG/Nepal.

Hoernle, A.F.R. 1880. *A Comparative Grammar of the Gaudian Languages.* London , Trübner and Company.

Hoernle, A.F.R. and G. A. Grierson 1885. *A Comparative Dictionary of the Bihari Language 1.* Calcutta, Bengal Secretariat Press.

Hoernle, A. F. R. and G. A. Grierson 1889. *A Comparative Dictionary of the Bihari Language 2.* Calcutta, Bengal Secretariat Press,.

Jha, D. 1946. *Maithili-bhaṣa Vidyotana* ('Maithili Grammar'). Darbhanga, Maithili Sahitya Parishad.

Jha, D. 1950. *Maithili bhasa Koṣa* ('The Dictionary of Maithili language'). Patna, Sri Rambhajan Press.

Jha, G. 1968. *Maithili Udgam o Vikas* ('The Origin and Development of Maithili'). Calcutta, Maithili Prakashan Samiti.

Jha, G. 1979. *Uccatara Maithili Vyakaraṇ* ('Higher Maithili Grammar'). Patna, Maithili Academy.

Jha, S. 1965. 'Maithili Phonetics'. *Indian Linguistics*, 2, 435-459.

Jha, S. 1958. *The Formation of the Maithili Language*, London: Luzac & Co.

Jha, S. K. 1984. 'A Study of some Phonetic and Phonological Aspects of Maithili', unpublished doctoral dissertation. University of Essex.

Kellog, S.H. 1893. *A Grammar of the Hindi Language* [Second edition]. London, Routledge and Kegan Paul.

Kuno, Susumo. 1987. *Functional Grammar,* Chicago: University of Chicago Press

Masica, C. P. 1991. *The Indo-Aryan Languages*, London: Cambridge University Press.

Mishra, J. 1973. *Bṛhat Maithili Sabdkoṣa* ('A Comprehensive Maithili Dictionary'). Simla, Indian Institute of Advanced Study.

Mishra, M. 1996. 'Aspects of Maithili Phonology', unpublished doctoral dissertation, Urbana, Illinois, University of Illinois.

Singh, U.N. 1979. 'Some Aspects of Maithili Syntax: a Transformational-Generative Approach', unpublished doctoral dissertation, Delhi, University of Delhi.

Singh, U.N. 1989. 'How to Honor someone in Maithili'. *International Journal of the Sociology of Language* 75. 87-107.

Trail, R. L. 1973. *Word Lists.* Kathmandu, SIL Tribhuvan University Press,.

Williams, J. 1973. 'Clause Patterns in Maithili.' In Trail, ed. *Patterns in Clause, Sentence, and Discourse in Selected Languages of Nepal and India,* Oklahoma: SIL.

Yadav, R. 1984. *Maithili Phonetics and Phonology.* Mainz, Selden and Tamm.

Yadav, R. 1996. *A Reference Grammar of Maithili,* Berlin & New York: Mouton de Gruyter.

Yadav, S.K. 1989. 'Language Use in Nepal', unpublished doctoral dissertation, Jaipur, University of Jaipur,.

Yadava, Y.P. 1982. 'Maithili Sentences: a Transformational Analysis', *Indian Linguistics,* 7- 28.

Yadava, Y. P. 1983. 'Movement Rules in Maithili and English: their Implications for the Theory of Government and Binding', unpublished

doctoral dissertation. Hyderabad, Central Institute of English and Foreign Languages.

Yadava, Y.P. 1996. 'Verb Agreement in Maithili.' *Journal of Nepalese Studies,* 1.1: 109-121.

Yadava, Y.P. 1998 *Issues in Maithili Syntax*: a Government-Binding Approach, München: Lincom Europa.

Yadava, Y.P. 1999. 'The Complexity of Maithili Verb Agreement', in Singh,R. (ed.), *The Yearbook of South Asian Languages and Linguistics,* Vol.2., Delhi, The Sage Publications.

Yadava, Y.P. (ed.). 1999. *Readings in Maithili Language, Literature and Culture,* Kathmandu : Royal Nepal Academy.

Yadavaa, Y.P. and Warren W. Glover (eds.). 1999. *Topics in Nepalese Linguistics,* Kathmandu : Royal Nepal Academy.

प्राध्यापक, तथा केन्द्रीय भाषाविज्ञान विभाग
त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कीर्तिपुर, काठमाण्डू

मैथिली भाषाः पृष्ठभूमि र विशेषता

पृष्ठभूमि

मैथिली दक्षिण एसियाको दुई सन्निकट राष्ट्र (भारत र नेपाल)मा प्रचलित एउटा स्वतन्त्र, संभ्रान्त भाषा हो। यो भाषाका लागि *तिरहुतिया, देहाती* आदि पर्यायवाची नाउँको प्रयोग भएको पनि कहिलेकाहीं पाइन्छ। यो भाषाको नामकरणबाट नै प्रष्ट हुन्छ मैथिली यथार्थमा *मिथिला*को भाषा हो। मिथिलालाई राजा जनकबाट शासित प्राग्ऐतिहासिक प्राचीन राज्य र उनकी पुत्री तथा रामकी पत्नी सीता (जानकी)को जन्मस्थल मानिएको छ। प्राचीन कालमा मिथिला एउटा प्रसिद्ध बौद्धिक केन्द्रको रूपमा स्थापित थियो। यो केन्द्रमा भारतवर्षको सम्पूर्ण भागबाट विद्वान्हरू त्यस अवधिमा उपलब्ध तर्कशास्त्र तथा दर्शनशास्त्रको क्षेत्रमा प्रशिक्षण प्राप्त गर्न आइरहन्थे। यो केन्द्रद्वारा मानवीय चिन्तनको इतिहासमा केही उच्चतम बौद्धिक अन्तरक्रियाको आतिथ्य प्रदान गरिएको तथ्यको उल्लेख पाइएको छ। मिथिला *तैरभुक्ति* नाउँले पनि जानिन्थ्यो जो भारतको विहार प्रान्तअन्तर्गत दरभङ्गा र मुज्जफरपुर जिल्ला सम्मिलित *तिरहुत* प्रखण्डको प्राचीन नाउँ हो। आधुनिक मिथिला राजनैतिक रूपमा दुई पृथक स्वतन्त्र राष्ट्र (भारत र नेपाल)मा विभाजित देखिए तापनि दुवै राष्ट्रका मैथिली भाषा-भाषी समुदायका बीच भौगोलिक समकक्षता र नियमित सम्पर्कले गर्दा एउटा अविभाज्य सांस्कृतिक अस्तित्वको रूपमा अहिलेसम्म विद्यमान देखिन्छ।

मैथिली भाषा मुख्यतः विहार प्रान्त (भारत)को उत्तर-पूर्वी र नेपाल तराईको पूर्वी क्षेत्रमा करिब तीन करोड जनसङ्ख्याले मातृभाषाको रूपमा बोलिन्छ भन्ने एक सर्वेक्षणले अनुमान गरेको छ। यस भाषाको पश्चिम बङ्गाल, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश आदि निकटवर्ती जोडिएको क्षेत्रमा पनि केही अंशमा प्रयोग भएको पाइन्छ। नेपालमा मैथिली भाषा-भाषीहरूको जनसङ्ख्या देशको कुल जनसङ्ख्याको करिब १२ प्रतिशत (२३,००,०००) भएको पाइन्छ (जनसङ्ख्या तथ्याङ्क १९९१ ई.) र यसको अधारमा मैथिली भाषा नेपालको दोस्रो प्रमुख भाषा हो।[1]

नेपाल र भारत दुवै राष्ट्रमा शिक्षाको क्षेत्रमा विद्यालयदेखि विश्वविद्यालय तहसम्म मैथिलीको पठन-पाठन भएको पाइन्छ। भारतमा शिक्षाको माध्यमको रूपमा प्रयोग गर्नका लागि सरकारी स्वीकृतिको अभावमा मैथिली भाषालाई हानी भइरहेको छ। नेपालमा मैथिलीलाई शिक्षामा प्रयोगको स्थितिमा केही (बढी न भए पनि) सामान्य अन्तर अवश्य देखिएको छ। हाल नेपालमा मैथिलीलगायत अन्य मातृभाषाहरूलाई प्राथमिक शिक्षाको माध्यमको रूपमा प्रयोग गर्ने संवैधानिक प्रावधान भएको छ। नेपालको संविधान तथा स्थानीय स्वशासन सम्बन्धी ऐनमा पनि मातृभाषाहरूको संरक्षण, संवर्द्धन र प्रयोगको अभिभारा स्थानीय निकायलाई सुम्पिएको छ। निश्चित रूपमा कुनै भाषाको संवर्द्धनका निमित्त यो एउटा प्रशंसनीय प्रयास हो, तर सरकारी तत्परता र पठन-पाठन सामग्री र प्रशिक्षित जनशक्तिको अभावमा आशातीत सफलता प्रायः शून्य जस्तै पाइएको छ। भारतमा अनेकौं प्रयास भए तापनि भारतीय संविधानको अष्टम अनुसूचीमा मैथिली भाषा अहिलेसम्म सम्मिलित हुन सकेको छैन, तर साहित्य अकादमीद्वारा यसलाई सोह्रौं भारतीय भाषाको रूपमा मान्यता प्राप्त भइसकेको छ।

मैथिली एउटा पृथक इन्डो-आर्यन भाषा हो। यो भाषा इन्डो-आर्यन भाषा परिवारको पूर्वी समूहमा पर्दछ। यस दृष्टिकोणले, यो पश्चिमी समूहमध्येमा पर्ने हिन्दी भाषाभन्दा स्वतः भिन्न देखिएको छ। भोजपुरी र मगहीसँगसँगै मैथिली एउटा उपसमूहमा पर्दछ। भाषिक दृष्टिकोणले यो भाषा हिन्दी र नेपाली भाषाहरूभन्दा बढी भिन्न र असमी, बङ्गाली र उडिया भाषाको अति निकट पाइएको छ। तसर्थ हर्नले (१८८० ई.)ले सदृश अन्य विदेशी भाषाशास्त्रीहरू र हिन्दीका अन्धप्रेमीहरूद्वारा मैथिलीलाई हिन्दीको *विहारी* अथवा *पूर्वी भाषिका* को रूपमा प्रचारित गर्नु सर्वथा भ्रामक हो।

अघि मैथिलीको आफ्नो लिपि *मिथिलाक्षर* वा *तिरहुतिया* थियो जसको उद्गम र विकास बङ्गाली लिपि हुँदै *ब्राह्मी* लिपि (ईशापूर्व तेस्रो शताब्दीको अशोक अभिलेखहरूमा आधारित) बाट भएको छ।[२] यस लिपिको प्रयोग मैथिलीको पूर्वलिखित साहित्यमा पाइन्छ। मिथिलाक्षरको अतिरिक्त *कैथी* लिपिको प्रयोग कायस्थ जातिका शिक्षित व्यक्तिहरूबाट सरकारी र निजी स्तरको अभिलेख राख्नका लागि गरिएको पाइन्छ। वर्तमान समयमा यी दुवै लिपि प्रायः (अति सीमित प्रयोगबाहेक) लोप भइसकेका छन्। यसको स्थान अहिले हिन्दी, नेपाली र केही अन्य भारोपेली तथा भोट-बर्मेली भाषाहरूमा प्रचलित *देवनागरी* लिपिले ग्रहण गरेको छ। मैथिलीमा देवनागरी लिपिको प्रचलन भाषा सिकाई र टङ्कण सुविधा सम्भवतः हिन्दीको लेख्य परम्पराको प्रभावले गर्दा भएको हुन सक्छ। यो लिपिमा अधिकांश अक्षरहरू भेदक र वार्णिक (distinctive and phonemic)भए पनि केही यस्ता हुँदैनन्। उदाहरणका लागि, देवनागरी लिपिमा लघु तथा दीर्घ स्वर वर्णको व्यतिरेक (*इ/ई, उ/ऊ* इत्यादि) उपलब्ध भए तापनि नेपाली भाषाजस्तै मैथिलीमा त्यस्तो लघु/दीर्घ स्वरवर्णहरूको व्यतिरेक पाइँदैन। अर्थात् मैथिलीमा लघु स्वर वर्णमात्र पाइन्छ, दीर्घ होइन।

२. साहित्य

नेपाल र भारत दुवै राष्ट्रमा मैथिली लिखित साहित्यको परम्परा अत्यधिक समृद्ध रहेको पाइन्छ। मैथिलीमा सबभन्दा पुरानो लिखित प्रमाणको रूपमा *वर्णरत्नाकर* मानिएको हो। यो ग्रन्थ ज्योतिरीश्वर कवि शेखराचार्यद्वारा चौधौं शताब्दीमा लेखिएको

हो। विद्यापति ठाकुरलाई मैथिलीको सर्वश्रेष्ठ लेखकको रूपमा मानिएको छ। उनी कवि कोकिल विद्यापतिको नाउँले प्रसिद्ध छन्। संस्कृत भाषामा लेखनको अतिरिक्त उनले मैथिलीमा *विद्यापति पदावली* शीर्षक भएको कविताहरूको रचना गरे। यो कृतिका लागि उनी अहिलेसम्म लोकप्रिय तथा अमर रहिआएका छन्।

मल्लकालमा काठमाडौं उपत्यकामा पनि मैथिली दरबारको भाषाको रूपमा विकसित र प्रचलित भयो। काठमाडौंस्थित राष्ट्रिय अभिलेखालयमा अनेकौं साहित्यिक कृतिहरू (विशेषत: नाटक र गीतहरू) अहिलेसम्म संरक्षित छन्, जसको पूर्ण अध्ययनका निमित्त मैथिली भाषा-साहित्यमा अभिरुचि राख्ने अन्वेषकहरूको ध्यान जानु अति आवश्यक भएको महसुस गरिएको छ।

आधुनिक सन्दर्भमा मैथिली साहित्यको प्राय: प्रत्येक विधामा नेपाली र भारतीय साहित्यकारहरूद्वारा लिखित कृतिहरू उपलब्ध छन्। साहित्यको अतिरिक्त, संस्कृति, इतिहास, भाषा-विज्ञान, पत्रकारिता आदि अन्य प्राज्ञिक क्षेत्रमा यथेष्ट कार्य भएको पाइन्छ।

मैथिली लोकसाहित्यको परम्पराको पनि एउटा विशिष्ट स्थान छ। यसमा गद्य, पद्य, लोकनृत्य/गीत रूपमा (जस्तो, सलहेस नाँच, रासलीला, आदि) असीमित भण्डार उपलब्ध छन्। यस क्षेत्रमा धेरै न्यून अध्ययन भएको पाइन्छ, तर अनेकौं लोकगाथाहरू लोप हुनु अगावै तिनलाई लिपिबद्ध र विश्लेषण गर्नु अपरिहार्य देखिएको छ।

३. भाषावैज्ञानिक अध्ययनको सर्वेक्षण

मैथिली भाषाको भाषावैज्ञानिक अध्ययनको परम्परा एक शताब्दीभन्दा अलिकति बढी नै रहिआएको छ। *मैथिली* (अथवा *तिरहुतिया*) को उल्लेख सर्वप्रथम बेलीगट्टीको भारतीय भाषाहरूको सूची सन्निहित कृति (१७७१ ई.) मा रहेको अमाडुज्जीद्वारा लिखित 'प्राक्कथन' मा पाइन्छ। त्यसपछि कोलब्रुक (१८०१ ई.) प्रथम विद्वान् थिए जसले मैथिलीलाई एउटा पृथक भाषाको रूपमा निर्धारण गरे। सम्प्रेषणको सुविधालाई ध्यानमा राखी मैथिलीको विषयमा अहिलेसम्म गरिएको भाषावैज्ञानिक अध्ययनलाई निम्न उपशीर्षकअन्तर्गत प्रस्तुत गरिएको छ– व्याकरण, ध्वनि-विज्ञान, शब्दकोश-निर्माण, ऐतिहासिक/तुलनात्मक भाषाविज्ञान तथा समाज-भाषाविज्ञान।

३.१. व्याकरण

मैथिली व्याकरणका प्रवर्तक हर्नलेलाई मान्न सकिन्छ। व्याकरणीय रूपहरूको केही दृष्टान्तको आधारमा हर्नले (१८८० ई.) ले मैथिलीलाई हिन्दीभन्दा भिन्न भाषिकाको रूपमा स्थापित गरे, यद्यपि मैथिली व्याकरणको गहन अध्ययनको श्रेय ग्रिएर्सन (१८८३ ई.) लाई दिन सकिन्छ। आफ्नो ग्रन्थमा ग्रिएर्सनले मैथिली भाषाको तत्कालीन स्तरीय भाषिकाको बृहत् व्याकरण प्रस्तुत गरेका छन्। यो अवधिमा मैथिली व्याकरणसम्बन्धी अन्य महत्त्वपूर्ण कृतिहरू ग्रिएर्सन (१८८३ ई., १९०३ ई.) र केलौग (१८९३ ई.) द्वारा लेखिएका छन्।

मैथिलीभाषी विद्वान्द्वारा मैथिलीको सबभन्दा पुरानो व्याकरण दिनबन्धु झा (सम्भवत: १९४६ ई.) द्वारा लेखियो। यो कृतिमा व्याकरणीय नियमहरू संस्कृत व्याकरणको पाणिनि शैलीमा सूत्रको रूपमा प्रस्तुत गरिएका छन्। त्यसपछि, गोविन्द झा

(१९७९ ई.) द्वारा मैथिली भाषालाई आधुनिक भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोणले विश्लेषण गर्ने प्रयास गरिएको छ ।

आधुनिक भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोणको आधारमा डेभिस (१९७३ ई.) र विलियम्स (१९७३ ई.) का कृतिहरूलाई महत्त्वपूर्ण मानिएको छ । उनीहरूले नेपालको तराई क्षेत्रको स्थलगत निरीक्षणबाट मैथिली वाक्यहरूको सङ्कलन गरी भाषाविज्ञानको टैग्मेमीक ढाँचा (Tagmemic Model)को आधारमा तिनको विश्लेषण गरे । त्यसपछि, मैथिली वाक्यहरूको रूपान्तर-प्रजनक व्याकरण (Transformational-Generative Grammar)को ढाँचाअन्तर्गत विश्लेषण गर्ने प्रयास पनि भएको छ । यो सन्दर्भमा पहिलो कृति सिंह (१९७९ ई.)द्वारा तयार गरिएको छ । उनले रूपान्तर व्याकरणको सम्बन्धपरक व्याकरण (Retational Grammar)को ढाँचाअनुसार मैथिली वाक्यहरूको वर्णन प्रस्तुत गरेका छन् । यसबाहेक, योगेन्द्रप्रसाद यादव (१९८३ ई., १९९८ ई.) ले मैथिलीका वाक्यात्मक पक्षहरूको अन्वेषण गरी विश्वको सर्वाधिक प्रभावशाली भाषावैज्ञानिक नोम चौम्स्कीद्वारा प्रतिपादित रूपान्तर-प्रजनक व्याकरणको नवीनतम 'शासन-बन्धन सिद्धान्त' (Government–Binding Theory)मा यसको प्रभावलाई खोज गर्ने प्रयास गरेका छन् । मैथिली व्याकरणको सम्बन्धमा बर्गहार्ट (१९९२ ई.)को योगदान महत्त्वपूर्ण रहेको छ । आफ्नो (अहिलेसम्म अप्रकाशित) कृतिमा उनले विभिन्न सामाजिक परिवेशमा प्रयुक्त मौखिक मैथिली भाषाको बृहत् वर्णन प्रस्तुत गरेका छन् । यो कृति भाषावैज्ञानिक उपयोग सँगसँगै विदेशीहरूलाई मैथिली भाषा सिकाउने प्रयोजनबाट लेखिएको छ । भरखरै रामावतार यादव (१९९६ ई.) को *मैथिलीको सन्दर्भ व्याकरण* (A Reference Grammar of Maithili) प्रकाशित भएको छ । यो ग्रन्थमा मैथिली भाषाको वर्णव्यवस्था, रूप व्यवस्था तथा वाक्य-संरचना लगायत अन्य सम्बन्धित विषयहरूको विस्तृत वर्णन गरिएको छ ।

३.२ ध्वनि विज्ञान

मैथिली भाषाको वर्ण व्यवस्था र यसको ऐतिहासिक विकासको अध्ययन गर्ने प्रथम श्रेय सुभद्र झा (१९४१ ई.) लाई जान्छ । गोविन्द झा (१९७४ ई.)ले पनि यो विषयको अध्ययन प्रस्तुत गरे । यस सन्दर्भमा, प्रजनक ध्वनिविज्ञान (Generative phonology) को सिद्धान्तको आधारमा मैथिलीको वर्ण व्यवस्थाको पहिलो अध्ययन रामावतार यादव (१९८४ ई.) ले गरे । उनको योगदानलाई सुनीलकुमार झा (१९८४ ई.) र मिथिलेश मिश्र (१९९६ ई.) ले अझ अगाडि बढाएका छन् ।

३.३ शब्दकोश-निर्माण

मैथिली भाषामा शब्दकोश-निर्माणको लामो परम्परा रहेको पाइन्छ । यो क्षेत्रमा *वर्णरत्नाकर*लाई पहिलो प्रयास मानिएको छ । यो प्रथम शब्दकोश मात्रै नभएर चौधौँ शताब्दीमा ज्योतिरीश्वर कवि शेखराचार्यद्वारा लिखित प्रथम कृति पनि हो ।

यो कृति लेखिएको धेरै पछि ग्रिएर्सनले मैथिली भाषाको शब्दकोश-निर्माण गर्ने कार्यको पुनः थालनी गरे । सन् १८८२ ई. मा उनले मैथिली भाषाको शब्दावली (vocabulary) प्रकाशित गरे । यो ग्रन्थमा विहारका किसानहरूद्वारा प्रयोगमा ल्याइने शब्द-सूची पाइन्छ । यो कृति पछि हर्नले र ग्रिएर्सन (१८८५ ई., १८८९ ई.) ले संयुक्त

रूपमा 'विहारी भाषाको तुलनात्मक शब्दकोश' (A Comparative Dictionary of the Bihari Language) शीर्षक भएको पुस्तक तयार गरे, जसका दुइवटा भागमात्रै प्रकाशनमा आएका छन् ।

यसका अतिरिक्त, दीनबन्धु झा (१९५० ई.) को मैथिली शब्दकोश यो क्षेत्रमा एउटा महत्त्वपूर्ण योगदान मानिएको छ। १९७३ ई. मा मैथिली शब्दकोश-निर्माणमा दुइवटा प्रयास भएका छन्– पहिलो ट्रेल (१९७३ ई.)को मैथिलीलगायत विभिन्न भाषाहरूका शब्दहरूको तुलनात्मक सूची तथा दोस्रो जयकान्त मिश्र (१९७३ ई.) को व्युत्पत्तिमूलक शब्दकोश ।

जयकान्त मिश्रको शब्दकोश मैथिली भाषाको अध्ययनमा एउटा उल्लेखनीय योगदान मानिएको छ। यो कृति 'अक्सफोर्ड अङ्ग्रेजी शब्दकोश, (Oxford English Dictionary)मा आधारित ऐतिहासिक सिद्धान्तअनुसार व्युत्पत्तिमूलक शब्दकोश हो, जसको अहिलेसम्म तीनवटा खण्ड मात्रै प्रकाशित भएका छन्। डेभीस (१९८४ ई.) को आधारभूत मैथिली शब्दकोशमा मैथिली शब्दहरू तथा तिनको नेपाली र अङ्ग्रेजी पर्यायवाची शब्दहरू राखिएका छन्। नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानद्वारा तयार गरिएको *पर्यायवाची शब्दकोश*मा पनि मैथिलीलगायत नेपालका केही अन्य भाषाहरूको पर्यायवाची शब्दहरू सम्मिलित गरिएका छन्। हालमा योगेन्द्रप्रसाद यादवद्वारा नेपाली-मैथिली-अङ्ग्रेजी बहुभाषिक शब्दकोशको तयारी नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानको भाषा विभागअन्तर्गत भइरहेको छ ।

३.४ ऐतिहासिक तुलनात्मक भाषाविज्ञान

सुभद्र झा (१९५८ ई.) मैथिली भाषाको विकासको विस्तृत वर्णन प्रस्तुत गरेका छन्। आफ्नो महत्त्वपूर्ण कृतिमा उनले कथ्य र लिखित मैथिलीका प्रचुर उदाहरणहरूको आधारमा पूर्व-इन्डो-आर्यन कालदेखि वर्तमान समयसम्म मैथिली भाषाको क्रमिक विकासको वर्णन प्रस्तुत गरेका छन्। मैथिली भाषाको इतिहासको अध्ययनको सन्दर्भमा दोस्रो महत्त्वपूर्ण कार्य गोविन्द झा (१९६८ ई.) द्वारा भएको छ ।

अन्य भारोपेली भाषाहरूको तुलनामा मैथिलीको चर्चा सर्वप्रथम कोलब्रुक (१८०१ ई.) ले गरेका छन्। मसीका (१९९१ ई.)द्वारा लिखित 'इन्डो-आर्यन भाषाहरू' (The Indo-Aryan Languages) मैथिली लगायत अन्य इन्डो-आर्यन भाषाहरूको समकालीन र ऐतिहासिक अध्ययनको क्षेत्रमा एउटा विशिष्ट कृति मानिन्छ।

३.५ समाजभाषाविज्ञान

मैथिलीको समाजभाषावैज्ञानिक क्षेत्रमा धेरै न्यून अध्ययन भएको पाइन्छ। आफ्नो अनुसन्धानात्मक कार्यपत्रमा सिंह (१९८९ ई.) ले कुन किसिमले मैथिली भाषामा क्रिया मेलको चयन वक्ता-श्रोताको बीच रहेको सम्बन्धबाट निर्धारित गरिन्छ भन्ने कुरा सूत्रात्मक ढङ्गबाट निर्दिष्ट गरेका छन्। एउटा अर्को कृतिमा श्रीकृष्ण यादव (१९८९ ई.) ले मैथिली लगायत नेपालमा बोलिने अन्य प्रमुख भाषाहरूको प्रयोग-क्षेत्रको विश्लेषण गरी नेपालको सन्दर्भमा उपयुक्त भाषा-नीतिसम्बन्धी सुझाव पेश गरेका छन्। यस अतिरिक्त, मैथिली भाषाको सामाजिक सन्दर्भ बुझ्नका लागि बर्गहार्ट (१९९२ ई., १९९६ ई.) का कृतिहरू अत्यन्त उपयोगी भएका पाइन्छन्।

यो विषयसँग सम्बन्धित एउटा पृथक अध्ययन बिकेल आदि (१९९९ ई.) बाट गरिएको छ, जसमा के देखाइएको छ भने मैथिली क्रियाको जटिल मेल-प्रक्रिया मनपरी नभई नियमित हो। मैथिली समुदायमा मानवीय अन्तरक्रियाका दुइवटा व्यावहारिक सिद्धान्तहरू विद्यमान भएका पाइन्छन्– अनुहार र भाव। मैथिली क्रियाको मेल व्यवस्था यिनै दुइवटा सिद्धान्तहरूबाट नियन्त्रित भएको छ।

४. मुख्य भाषिक विशेषता

यो खण्डमा विभिन्न भाषिक स्तरमा मैथिली भाषाका मुख्य विशेषताहरूको उल्लेख गरिएको छ। मैथिली भाषा अन्य (खास गरेर इन्डो-आर्यन) भाषाहरूबाट कुन रूपमा समान र फरक देखिन्छ भन्ने कुरा देखाउन, यसका व्याकरणीय विशेषताहरूलाई तुलनात्मक ढङ्गबाट प्रस्तुत गरिएको छ।

४.१ वर्णव्यवस्था

मैथिली भाषामा २६ वटा व्यञ्जन र १० वटा मौखिक स्वर वर्णहरू पाइएका छन्। यी वर्णहरू तलका तालिकाहरूमा प्रस्तुत गरिएका छन् :

उच्चारण स्थान→ उच्चारण प्रयत्न ↓	द्व्योष्ठ्य	मूर्धन्य	दन्त	तालव्य	कण्ठ्य	स्वरयंत्रमुखी
स्पर्श	प फ ब भ	ट ठ ड ढ	त थ द ध		क ख ग घ	
स्पर्शसंघर्षी				च छ ज झ		
नासिक्य	म	न				
कम्पित		र				
संघर्षी		स	(ष)	(श)		ह
पार्श्विक		ल				
अर्द्धस्वर	(व)			(य)		

तालिका १ : मैथिली व्यञ्जन

जिब्रोको भाग → जिब्रोको उचाइ ↓	अग्र	मध्य	पश्च
संवृत	इ		उ
अर्धसंवृत	ओ		
अर्धविवृत		अ	
विवृत		आ	

तालिका २ : मैथिली स्वरवर्ण

देवनागरी लिपिमा ह्रस्व र दीर्घ स्वरको अन्तर रहे पनि मैथिलीमा यो अन्तर पाइँदैन। यस सन्दर्भमा मैथिली नेपाली सदृश तथा हिन्दीदेखि भिन्न छ। यसको अतिरिक्त, तालिका २ मा प्रस्तुत आठैवटा स्वर वर्णहरू नासिकीकृत (nasalized)हुन सक्छन्। मैथिलीमा आठवटा मौखिक स्वरवर्णको अतिरिक्त आठवटा नासिकीकृत स्वर वर्णहरू पनि छन्। यसप्रकार, मैथिलीमा व्यञ्जन र मौखिक तथा नासिकीकृत स्वरवर्णहरू सबै मिलाएर ४२ वटा वर्णहरू पाइन्छन्। यो भाषामा केही संयुक्त स्वरवर्ण (diphthongs/triphthongs) पनि पाइन्छन्, जसको उल्लेख गर्नु यस संक्षिप्त विवरणमा आवश्यक ठानिएन।

४.२ रूप व्यवस्था

४.२.१ क्रिया संगति

मैथिली व्याकरणको सबभन्दा बढी आकर्षक पक्ष यसको क्रियाको अत्यन्त जटिल रूप हो। अन्य इन्डो-आर्यन भाषाहरूजस्तो मैथिलीको क्रिया रूपावली (paradigm) बहुरुपिमिक (polymorphomic) हुन्छ। यो अनेकौं रुपिमहरूबाट बनेको हुन्छ जो प्रायः क्रियाको धातुका देब्रेपट्टि जोडिएका हुन्छन् (मसीका, १९९१ ई.: २५७)। यसको संरचनालाई निम्न नियमको रूपमा प्रस्तुत गर्न सकिन्छ :

(१) क्रिया धातु (पक्ष) (प्रत्यय *रह*) (पक्ष प्रत्यय) (स.क्रि.) काल मेल$_१$ (मेल$_२$) (मेल$_३$)

यससंरचनाको उदाहरणको रूपमा निम्न वाक्यमाथि विचार गरौं:

(२) हरी-जी दौड़- ऐत रह-ऐत छ - ल - आह
हरी-३ आ धातु- पक्ष रह - प्र.प. स.क्रि. -भू.का. - ३आ

तर क्रिया संगतिको कुरामा मैथिली अन्य भारोपेली भाषाहरूभन्दा भिन्न पाइएको छ। यो भाषामा अत्यन्त जटिल क्रिया संगति पाइन्छ। यो भाषामा क्रियाका कर्ता नामपद मात्रै होइन, बरु अकर्ता नामपदहरू (जस्तो – कर्म, अन्य मुख्य लुप्त नामपदहरू) पनि एकदेखि तीनवटा नामपदहरूसम्म क्रिया संगतिका नियन्त्रक हुन सक्छन्। उदाहरणहरू (३क-ग) मा एक्लो, दोबर र तेबर क्रिया संगतिलाई देखाइएको छ :

(३) (क) हम सुत - ल - औंह
१कर्त्ता क्रि. - भू.का. - १कर्त्ता
'हम सुतलौंह'

(ख) हम हुन - का मदत कर - ल - इ - रेन्ह
१ कर्ता ३आ.-कर्म संज्ञा क्रि. - भू.का.-१कर्त्ता - ३ आ. कर्म

(ग) हम तो-रा हुन्-अक किताव दे - ल - ई - औ-न्ह
१कर्ता २ म.आ.- कर्म ३ आ.-संबन्ध संज्ञा क्रि.-भू.का. १कर्ता-२म.आ. कर्म ३आ.सम्बन्ध
'हम तोरा हुनक किताबं देलिऔन्ह।'

क्रिया संगतिका तीन प्रकारअन्तर्गत नियन्त्रक विधेयक युक्ति (arguments) तथा सम्बन्धवाचक (possessor) मात्रै होइन, बरु नामयोगी पदावलीको नाम तथा यसअन्तर्गत ग्रहण कर्ताको सँग-सँगै संकथनमा निर्देशीसङ्केतक (deictic referents in discourse) पनि हुन सक्छन् । उदाहरणका लागि तलका वाक्यहरूलाइ हेरौं:–

(४) क. तौं हुन - क - लेल काज कै - ल - अह -

२ म. आ. कर्ता ३ आ.-तिर्यक - सं.यो. संज्ञा क्रि. - भू.क्र. - २ म. आ. कर्ता

उन्ह

३ आ. तिर्यक

'तौं हुनकालेल काज कैलहुन्ह ।'

ख. हम तोह्-अर घर - पर गेल छ - ल- इ- अह

१ कर्ता २म.आ.-सं. संज्ञा - संयो. क्रि. - म.क्रि. भू.क्र. - १ कर्ता २ म. आ.सं.

'हम तोहर घरपर गेल छलिअह ।'

ग. हम ओ - करा मार - ल - इ - अह

१ कर्ता ३ अना. - कर्म क्रि. - भू.क्र - १ कर्ता - २ म. आ. कर्म

हुन त क्रियासंगतिको यो जटिलता विशेषतः ब्राह्मणेतर मैथिली भाषिकामा आंशिक रूपमा न्यून पाइन्छ ।

क्रिया संगतिमा सन्निहित कोटिका प्रकारहरू हुन्छन्– तीन प्रकारको पुरुष (प्रथम, द्वितीय र तृतीय), प्रथम पुरुषबाहेक अन्य दुई पुरुषमा चार प्रकारका आदरार्थी तह र तृतीय पुरुषमात्रैको स्त्रीलिङ्ग/ पुलिङ्ग, सन्निहित/असन्निहति तथा केन्द्रित (in focus)/ अकेन्द्रित (out of focus)। यसमा ध्यान दिनुपर्ने कुरा के हो भने यी कोटिहरूको सम्भावित जोडको समान रूपमा प्रतिनिधित्व हुँदैन र तिनको तटस्थीकरण (neutralization)का थुप्रै उदाहरणहरू पाइन्छन् ।

४.२.२ सर्वनाम–लोप तथ्य (Pro-drop phenomenon)

मैथिलीमा क्रिया संगतिसँग सम्बन्धित एउटा पक्ष हो सर्वनाम लोप । यसको अर्थ के हो भने कुनै वाक्य उपवाक्यमा सर्वनामको लोप हुन सक्छ । धेरै इन्डो-आर्यन र भोट-बर्मेली भाषाहरूजस्तै मैथिली पनि सर्वनाम लोप भाषा हो । तर मैथिलीमा सार्वनामिक कर्ता मात्रै नभएर सार्वनामिक कर्म र सम्बन्धवाचक नामपद पनि लोप हुन सक्छन् । कारण के हो भने मैथिलीको क्रिया सङ्गतिमा कर्तालगायत कर्म र सम्बन्धवाचक नामपदका व्याकरणीय विशेषताहरू सन्निहित हुन सक्छन् । यस सन्दर्भमा निम्न उदाहरणमाथि विचार गरौं :

(५) क. हम तोरा मार - ब - औ

१ कर्ता २ अना. कर्म क्रि. - भविष्य का. (१) कर्ता - २ अना. कर्म

ख.	∅	तोरा	मारबौ ।
ग.	हम	∅	मारबौ
घ.	∅	∅	मारबौ

(६) क.	ई	हुनक	घर	छ - इ	- ऐन्ह	
		३ आ.		क्रि. - वर्तमान	- ३ आ.	
ख.		ई	हुनक	घर	छिऐन्हि	
ग.		ई	∅	घर	चिऐन्हि	

४.२.३ प्रेरणार्थक क्रिया

मैथिली प्रेरणार्थक क्रियाको संरचना हिन्दीजस्तो र नेपालीभन्दा भिन्न पाइन्छ। मैथिलीमा दुई किसिमले प्रेरणार्थक क्रियाको निर्माण हुन्छ, जस्तो 'काट' – (१) 'कटा' (अरूबाट कटाउनु र (२) 'कटबा' (कुनै व्यक्तिद्वारा अन्य व्यक्तिबाट कटाउनु) :

(७) क. राम गाछ काटलक । (सकर्मक क्रिया)
ख. राम जनसँ गाछ कटौलक (प्रेरणार्थक क्रिया (१)
ग. राम हरिद्वारा जनसँ गाछ कटबौलक (प्रेरणार्थक क्रिया (२)

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया 'कटा' सकर्मक क्रिया 'काट' बाट बनेको छ, जुन सकर्मक क्रिया आफै अकर्मक क्रिया 'कट' बाट बनेको छ, जस्तो:

(८) गाछ कटैत अछि ।

४.२.४ संयुक्त क्रिया

संयुक्त क्रिया अन्य दक्षिण एशियाली भाषाहरूजस्तै मैथिलीमा पनि क्रियाको विस्तार अर्को प्रक्रियाबाट हुन सक्छ। यो प्रक्रिया हो 'संयुक्त क्रिया संरचना, अथवा 'क्रमिक क्रिया संरचना' (Serial Verb Construction)। संयुक्त क्रियामा एउटा मुख्य क्रिया संयुक्त कृदन्त (conjunctive participle)को रूपमा रहन्छ र यसलाई'आतिथ्यकार' (host) भन्न सकिन्छ। सहायक क्रिया पक्ष, काल र संगतिका लागि रूपायत (inflect) हुँदै समापिक कालित (finite) रूपमा रहन्छ र यसलाई 'क्षीण क्रिया' (light verb) भन्न सकिन्छ ।

(९) हरि किताब पढ-इ ले ल - ऐथ
३ आ संज्ञा मु.क्रि. ... स. क्रि. भूका. - संगति
'हरि किताब पढि लेलैथ ।'

उदाहरण (९) मा पक्षीय कार्य निर्दिष्ट गर्नु अतिरिक्त, क्रमिक क्रिया अन्य अर्थमा पनि प्रयोग हुन्छ, विशेषत: गतिशीलता र कर्ताद्वारा कार्यको नियन्त्रण तथा वक्ताको भावना अभिव्यक्तगर्न ।

प्रेरणार्थक र क्रमिक बाहेक, मैथिलीमा अर्को किसिमको जटिल विधेय पनि पाइन्छ। उदाहरणका लागि, क्रिया कुनै नाम अथवा विशेषणसँग मिलेर मिश्रित क्रिया बन्छ। जस्तो :

(१०) हरि भगवानक नाम *स्मरण कएलक*। (संज्ञा+क्रिया)

(११) हरि घर *साफ कएलक*। (विशेषण+क्रिया)

४.२.५ सर्वनाम

क्रिया संगतिको रूप व्यवस्थाजस्तो, मैथिलीको सर्वनाममा पुरुष, आदरार्थी भाव, दूरी तथा कारकको आधारमा भिन्नता पाइएको छ, जसको सारांश तालिका ३ मा प्रस्तुत गरिएको छ :

कारक → पुरुष ↓	कर्त्ता	कर्म	सम्बन्धवाचक
प्रथम	हम	हमरा	हमर
द्वितीय अनादरार्थी	तूँ	तोरा	तोहर
द्वितीय मध्यादारार्थी	तौं	तोरा	तोहर
द्वितीय आदरार्थी	अहाँ	अहाँकेँ	अहाँक
द्वितीय उच्च आदरार्थी	अपने	अपनेकेँ	अपनेक
तृतीय अनादारार्थी (सन्निकट)	इ	एकरा	एकर
तृतीय अनादारार्थी (दूर)	उ	ओकरा	ओकर.
तृतीय आदरार्थी/उच्च आदरार्थी (सन्निकट)	ओ	हिनका	हिनक
तृतीय आदरार्थी/उच्च आदरार्थी (दूर)	ओ	हुनका	हुनक

तालिका नं. ३ : मैथिली सर्वनाम

अधिकांश कोटिको सम्बन्धमा सर्वनाममा क्रियात्मक रूपायन (inflections) भन्दा कम अन्तर/भिन्नता पाइन्छ। उदाहरणका लागि, क्रियाको रूपमा आदरार्थी/उच्च आदरार्थी भिन्नता पाइएको छ, जस्तो *ऐन-अथिन्ह*, तर आदरार्थीका दुवै प्रकारमा एउटै सर्वनाम (*ओ*) को प्रयोग हुन्छ, जस्तो :

(१२) क. ओ ई किताब पढलैथ।

ख. ओ ई किताब पढलथिन्ह।

यस अतिरिक्त तृतीय पुरुष सर्वनामले निकटता दर्शाउँछ भने सबै आदरवाचक भिन्नताको एउटै रूप (ई) हुन्छ। द्वितीय पुरुष सर्वनाम र क्रियात्मक रूपमा समानता पाइन्छ, तर *अहाँ* र *अपने* (उच्च आदरार्थी)को क्रियात्मक रूपमा भिन्नता पाइन्छ; *अहाँ*

का लागि रूपायन (inflection) तर *अपने* का लागि कर्मवाच्यजस्तो विस्तारित रूप (periphrastic form) को प्रयोग गरिन्छ :

(१३) क. अहाँ *पढलौंह*।
ख. अपने *पढल गेलैक*।

मध्य आदरार्थी द्वितीय पुरुषका लागि क्रमशः तुँ र *तों* सर्वनामको प्रयोगमा भिन्नता भए पनि अनौपचारिक वार्तालापमा यो भिन्नताको लोप भएर एउटै रूप *तुँ*को प्रयोग पाइन्छ ।

४.२.६ व्यक्तिवाचक नाम र आदरसूचक निपात

आदरवाचक तहको भिन्नता सर्वनाममा मात्रै सीमित नभएर व्यक्तिवाचक नाममा पनि पाइन्छ । व्यक्तिवाचक नाममा आदरार्थी *-जी, -बाबु* र अनादरार्थी भिन्नता निम्न किसिमले पाइन्छ :

(१४) क. छौरा – बौआ

ख. छौरी – दैया, इत्यादि ।

वचन

नामसँग प्रयुक्त हुने अर्को व्याकरणीय विशेषता वचन हो, तर यो कोटि नामसँग पूर्णरूपले व्याकरणीय कोटि बन्न पाएको छैन । बहुवचन प्रत्यय *-सभ* वा-*लोकनि* (आदरार्थी नामसँग) पाइन्छ (सिंह १९८९ ई.: ८८) । यो सन्दर्भमा ध्यान दिने कुरा यो हो कि *-सभ*को प्रयोग *-सब* ('सबै') को अर्थमा स्वतन्त्र रुपिमको रूपमा पनि गरिन्छ र पूर्णरूपले वचन प्रत्यय बन्न सकेको छैन (रामावतार यादव, १९९६ ई.: ६९) । यसबाहेक, क्रिया संगतिमा वचनको भिन्नता परिलक्षित भएको देखिँदैन । यस विषयमा हिन्दी र नेपालीभन्दा मैथिली भिन्न पाइन्छ । मैथिलीको वचन सम्बन्धमा भनिएको यो कुरा अमूर्त वचन भिन्नतालाई आदरसूचक भिन्नताको रूपमा पुनर्विश्लेषणको प्रतिफल हो ।

लिङ्ग

मैथिली नाममा व्याकरणीय लिङ्ग रुपिम र वाक्यात्मक दुवै कोटिमा अत्यधिक सीमित भएको पाइन्छ । -ई (*छौंडा/छौंडी*), *-आइन* ('गुरु/गुरुआइन'), आदि प्रत्यय जातिवाचक नामलाई पुलिङ्गबाट स्त्रीलिङ्गमा परिवर्तन गर्दा प्रयोग गरिन्छ, तर यी प्रत्ययहरू धेरै कम नामसँग प्रयुक्त हुन्छन् र व्यापक रूपमा प्रयोग हुँदैनन् । मैथिली भाषाका सर्वनामहरूमा लिङ्गको विभेदक पूर्णतया शून्य पाइन्छ, हुन त अति औपचारिक स्थितिमा मैथिली क्रियाको संगति भूत र भविष्यत कालमा तृतीय पुरुष आदरार्थी नाम र सर्वनामसँग सम्बन्धित रहेको लिङ्गसँग हुन्छ, जस्तो :

(१५) क. ओ दौड़लीह/दौड़तीह ।
ख. ओ दौड़लैथ/दौड़ताह ।

तर यहाँनिर कुन कुरा उल्लेख गर्नुपर्छ भने सम्बन्धवाचक विशेष/परिवर्त्तक (modifiers)को भेद नामको लिङ्गसँग हुँदैन :

(१६) ओकर पति/पत्नी

यस परिप्रेक्ष्यमा मैथिली, हिन्दी र नेपाली भाषाभन्दा भिन्न पाइन्छ। केही परिवर्तक विशेषण हुँदा मानवीय नामको लिङ्गसँग मेल हुन्छ :

(१७) ओकर पहिलका बेटा/पहिलकी बेटी

कारक

अन्य दक्षिण एसियाली भाषाहरूजस्तै मैथिलीको नामको कारकीय व्यवस्था समृद्ध पाइन्छ। यो भाषामा तीन प्रकारका कारक विभक्ति हुन्छन् :– धातु रूप, आबद्ध रुपिम (clitics) र *(अ)क* +परसर्ग (postposition)। यिनको विवरण निम्न अनुसार प्रस्तुत गरिएको छ :

धातु रूप

मैथिली भाषामा दुइवटा कारक– कर्ता र गैर-मानवीय कर्म– मा धातु रूप मात्रै आउँछ। अर्थात् कारक विभक्तिको रूपमा शून्य रहन्छ, जस्तो :

(१९) क. उ दौड़लक (कर्ता)
ख. उ *किताब* किनलक। (कर्ता/कर्म)

यस प्रसङ्गमा कुन कुरा उल्लेख गर्नु आवश्यक देखिन्छ भने हिन्दी र नेपाली लगायत कतिपय इन्डो-आर्यन भाषाहरूभन्दा भिन्न मैथिली भाषामा तीर्यक कारक (ergative case)को प्रयोग हुँदैन। यो भाषामा कर्ता कारकको साथ सदैव शून्य-विभक्ति लाग्छ।

आबद्ध रुपिम (clitics)

(अ) कर्म : – *कें*

(२०) क. राम *छौंड़ाकें* मारलक। (कर्म)
ख. *हरिकें* भूख लागल। (सम्प्रदान)

(आ) सम्बन्ध : – *(अ)क* (संज्ञा तथा आदरार्थी सर्वनामसंगे)। - *आर* (गैरआदरार्थी सर्वनामसंगे)

(२१) क. हम रामजीक घर देखलिऐन्हि। (संज्ञा)
ख. हम *अहाँक* घर देखलौंह। (आदरार्थी सर्वनाम)

(२२) क. *हमर* घर दूर अछि। (गैरआदरार्थी सर्वनाम)

(इ) अपादान/स्रोत : – *सँ*

(२३) क. हरि *पेन्सिलसँ* लिखलक।
ख. हरिजी अपन *गामसँ* ऐलाह।

(ई) अधिकरण : *–मे/पर*

(२४) क. हरिजी घरमे छथि ।
ख. किताब टेबुलपर अछि ।

– (अ) *क* + परसर्ग

(२५) क. हम *किताबकलेल* आएल छी ।

विश्वका भाषाहरूमा कारक र क्रिया-संगतिको बीच निस्सन्देह सम्बन्ध रहेको छ । तर मैथिलीको बारेमा यो आकर्षक तथ्य पाइएको छ कि यो भाषाको क्रिया संगतिमा कर्ता/गैरकर्ता भिन्नता पाइन्छ । अर्थात् मैथिलीमा क्रिया संगतिका दुइवटा समुच्चय (set) हुन्छन्– कर्ता सम्मुचय तथा गैरकर्ता सम्मुचय । कर्ता सम्मुचय कर्ता कारक र गैरकर्ता सम्मुचय कर्ताबाहेक अन्य कारकहरू (कर्म, करण, सम्प्रदान, सम्बन्ध आदि) मा रहेका नामका लागि प्रयुक्त हुन्छ (यस सन्दर्भमा उदाहरण :

(२६) क. *हुनका* भूख लगलैन्हि । (सम्प्रदान कारक)
ख. *हुनका* चिट्ठी लिखैकें छलैन्ह । (सम्प्रदान कारक)
ग. *हुनका*सँ ई किताब पढल नहि भेलैन्हि । (करण कारक)
घ. *हुनका* पैसा हरा गेलैन्ह । (सम्बन्ध कारक)
ङ. *हुनका*मे साफे दया नहि छैन्हि । (अधिकरण कारक)
च. *हुनका*सँ ई चिट्ठी लिखल गेलैन्हि । (करण कारक)

यसप्रकार कारकीय दृष्टिकोणबाट संज्ञामा क्रिया-संगतिको तुलनामा बढी भिन्नता पाइन्छ ।

नेपाली, हिन्दी लगायत अन्य कतिपय दक्षिण एसियाली भाषाहरूजस्तै मैथिलीमा पनि कारक र व्याकरणीय सम्बन्धबीच एउटा-सँग-एउटा समानता (one-to-one correspondence) पाइँदैन । उदाहरणका लागि, कुनै वाक्य अथवा उपवाक्यमा उद्देश्य (subject) कर्ता कारकमा भएको नाममात्रै होइन बरु गैरकर्ता कारक (जस्तो– सम्प्रदान, करण, सम्बन्ध, अधिकरण कारक आदि) मा भएको नाम पनि हुन सक्छ ।

४.३ वाक्य-संरचना

मैथिली (सकर्मक) वाक्यमा घटक-क्रम सामान्यतः कर्ता-कर्म-क्रिया रहन्छ, जस्तो :

(२७) राम किताब किनत ।

तर यी घटकहरूको क्रममा परिवर्तन हुन सक्छ ।

सामान्य क्रमलाई ध्यान राखी अन्य दक्षिण एसियाली भाषाहरू जस्तै मैथिली शीर्ष-अंत (head-final) भाषा हो; अर्थात् कुनै पदावली अथवा वाक्यांशको प्रधान पद (head) आश्रित पद (dependent) पछि आउँछ । यसप्रकार, क्रिया पदावलीको प्रधान पद क्रिया आश्रित पदकर्म पछि, परसर्ग पदावलीको प्रधान पद परसर्ग आश्रित पद

कर्मपछि र नाम पदावलीको प्रधान पद नाम आश्रित पद सम्बन्धवाचक नाम पछि आउँछ, जस्तो:

(२८) क. [क्रि.प. हरिकेँ मारलक]

ख. [सं.प. रामक किताब]

विश्वका अधिकांश भाषाहरूभन्दा भिन्न मैथिलीमा एउटा रोचक नियम पाइएको छ, जसलाई 'उद्देश्य-देखि-उद्देश्य उत्थापन' (Subject-to Subject Raising) नियम भनिन्छ। यो नियमअनुसार कालित (tensed) आश्रित उपवाक्यको उद्देश्य उठेर प्रधान उपवाक्यको उद्देश्यको स्थान ग्रहण गर्छ, जस्तो :

(२९) क. लगैत अछि जे *अहाँ* आई घर नहि जा सकब।

ख. *अहाँ* लगैत छी जे ∅; आई घर नहि जा सकब।

यो असामान्य नियम अङ्ग्रेजी नियमभन्दा भिन्न छ, जसअनुसार उत्थापन-कालिक आश्रित उपवाक्यबाट होइन बरु अकालिक (tenseless) आश्रित उपवाक्यबाट हुन सक्छ, जस्तो :

(३०) क. It seems that John will come today.

ख. John seems ∅ to come today

ग. * John seems that ∅ to come today.

यो नियम मैथिलीमा यस्तो अवस्थामा लागू हुन सक्छ जब सम्बन्धित वाक्यमा 'उत्थापन विधेय' (raising predicate) रहन्छ। यो भाषामा उत्थापन विधेयअन्तर्गत *लगनाई, बुझेनाई, प्रतीत भेनाइ* आदि पर्दछन्।

५. निष्कर्ष

माथि उल्लेख भएअनुसार मैथिली भाषा लिखित साहित्य भण्डार र भाषावैज्ञानिक अध्ययनमा समृद्ध रहेको पाइन्छ। यो भाषाको विकास र सम्वर्द्धनका निमित्त पर्याप्त शर्तहरू विद्यमान रहेका पाइन्छन्। यस अतिरिक्त, यो भाषाका वक्ताहरू आफ्नो भाषाप्रति आबद्ध भएका पाइन्छन्, जुन कुरा कुनै भाषाको संरक्षण र सम्वर्द्धनका लागि अपरिहार्य हुन्छ। भारत र नेपाल दुवै राष्ट्रहरूमा मैथिलीभाषीहरू आफ्नो मातृभाषाको हित र उत्थानका निमित्त तत्पर भएका देखिन्छन्। उदाहरणका लागि, मैथिली भाषालाई भारतीय संविधानको आठौं अनुसूचीमा सामिल गराउन कतिपय प्रयासहरू हुँदै आएका छन्। त्यस्तै, नेपालमा पनि मैथिलीभाषीहरूले अन्य अल्पसङ्ख्यक भाषाभाषीहरूसँगै मिलेर स्थानीय प्रशासनको (नेपालीका अतिरिक्त) वैकल्पिक काम काजको भाषाको रूपमा प्रयोग गर्नका लागि एउटा संयुक्त प्रयासको थालनी गरेका छन्। तर मैथिलीको विकासको मार्गमा केही बाधक तत्त्वहरू विद्यमान छन् भन्ने तथ्य अवश्य स्वीकार गर्नुपर्छ, जस्तो– प्रशासन र शिक्षाको माध्यमको रूपमा प्रयोगको अभाव, अशिक्षा, हिन्दी र नेपाली भाषाहरूसँग प्रतियोगिता, भाषालाई कुनै खास वर्ग/जातिसँग जोड्नु आदि।

पाद-टिप्पणी

१. मैथिली हिन्दीको भाषिका नभएर पृथक भाषा भएको सम्वन्धमा ग्रिएर्सन (१८८१:२) हेर्नुस् ।

२. मसीका (१९९१:१४३) मा उल्लेख भएअनुसार, प्रोटो-बङ्गाली मैथिली र उडियालगायत मणीपुरी र नेवारी लिपिको स्रोत हो ।

३. बढी जानकारीका लागि, रामावतार यादव (१९८४, १९९६), सुभद्र झा (१९५८), एस.के. झा (१९८४) एम. मिश्र (१९९६) हेर्नुस् ।

४. यस विषयको विस्तृत जानकारीका लागि, ग्रियर्सन (१९०९), सुभद्र झा (१९५८), विलीयम्स (१९७३), सिंह (१९७९), रामावतार यादव (१९९६) र योगेन्द्र प्र. यादव (१९९६) हेर्नुस् । यस अतिरिक्त, यो तथ्यको व्यावहारिक वर्णनका लागि बिकेल आदि (प्रेसमा) हेर्नुस् ।

५. शासन-बन्धन सिद्धान्तअन्तर्गत यस विषयको विस्तृत अध्ययनका लागि योगेन्द्र प्र. यादव (१९९९ तथा यादव र ग्लोभर) हेर्नुस् ।

६. विस्तृत अध्ययनका लागि ब्रास (१९७४) हेर्नुस् ।

अनुवादक : योगेन्द्रप्रसाद यादव

मैथिलीक भाषिक वैविध्य: औपभाषिक ओ मानक स्वरूप

रामावतार यादव

(क) When it comes to linguistic form, Plato walks with the Macedonian swineherd, Confucius with the head-hunting savages of Assam.

Edward Sapir 1921

(ख) आब वक्तव्य जे मिथिला भाषामे शुद्धता की थीक जकर आधार शब्द साधु मानल जाए तथा यदनुसार व्याकरणसँ शब्दसभ देखाओल जाए। व्याकरणसँ सिद्धत्वरूप शुद्धता नहि कहि सकैत छी, कारण जे व्याकरणक निर्माणसँ पूर्वहुँ शब्दमे शुद्धत्व रहबाक चाही। ओ जाहिसँ अर्थक बोध हो से शुद्ध थीक, इहो नहि, कारण, *देखैंए देखलौं* इत्यादि– अहुसँ अर्थक अवगति होइत अछि किन्तु शुद्ध नहि थीक, *देखैत अछि, देखलहुँ* इत्यादिए शुद्ध थीक। तस्मात् जाहि शब्दक श्रवणोत्तर ककरहु अनौचित्यक भान ओ वक्तृवैगुण्यक भावना नहि हो से शब्द शुद्ध थीक, अर्थात् अनौचित्य-प्रयुक्तवक्तृवैगुण्यभावनानुद्भावकत्वे भाषाशब्दमे शुद्धता थीक। *ऐ ठिमा बेरसतिकें चौरचन होइए* एहि वाक्यक श्रवणोत्तर प्रवीण लोकक मनमे एहन भावना होइत अछि जे ई अनुचित शब्द थीक, एकर वक्ता भाषापटु नहि छथि, तस्मात् ओ वाक्य सर्वथा अशुद्ध थीक। अथवा केन्द्रस्थानीयपटुजनव्यवहृतत्वरूप शुद्धत्व कही। एतादृशे शुद्धता आनहु देशभाषामे मन्तव्य थीक।

दीनबन्धु झा १९४६

(ग) हमारे साहित्यकारों को आज भी यह उदार दृष्टि नहीं मिली है कि साहित्य के मन्दिर में किसी भी भाषा का औपभाषिक

> स्वरूप भी उतना ही पवित्र, उतना ही प्रभावकारी और उतना ही उपादेय है जितना केन्द्रीय या परिनिष्ठित स्वरूप ।

गोविन्द झा १९७४

१. प्राक्कथन

मैथिली भाषाक जटिल भाषिक वैविध्यक समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन नहि भेला सन्ताँ आइसँ एक सय सोरह वर्ष पूर्व मैथिली भाषाक स्वतन्त्र सत्ताक प्रख्यापक एवं एहि भाषाक अप्रतिम सेवक, अनन्य साधक ओ प्रबल पृष्ठपोषक सर जौर्ज एब्राहम ग्रियर्सन विचलित भए एहि भाषाक एकगोट पदकोटिक मादे अपन पक्षपातपूर्ण अवधारणा निम्नानुसार व्यक्त कएलैन्हि – जे आइधरि मैथिलीक विद्वान्सभकेँ खिन्न कएने अछि :

> The *Maithil* [Maithili] verb delights in a redundancy of forms. Like all partially cultivated languages, it has few parts of which there are no two or three optional forms. These optional forms are not local peculiarities, but are all used by the same speaker as his fancy or as the rhythm of the sentence dictates. I cannot find out that they represent any different shades of meaning.

(Grierson 1881: 50)

स्पष्टतः ग्रियर्सन हुसि गेलाह; हुनका बुझल होएबाक चाही छलैन्हि जे संसारक कोनहु भाषा अर्थात् प्राकृतिक भाषा वा भाषिक समुदाय एकरंगाह नहि होइत अछि। वैविध्यपूर्ण ओ बहुरंगी होएब प्राकृतिक भाषाक वा कोनहु भाषिक समुदायक सामान्य विशेषता मानल जाइत अछि। जेना, दक्षिण लण्डनक मानक अङरेजी, बी.बी.सी. सम्वाददातासभक अङरेजी, लण्डन शहरक कौकनी अङरेजी, ब्ल्याक अङरेजी, कानूनी भाषाक अङरेजी, कौकटेल पार्टीक अङरेजी, क्रिकेट खेलक प्रत्यक्ष प्रसारणक अङरेजी– की ई सभ अङरेजी नहि ? की ई सभ अङरेजीक विविध स्वरूपक प्रतिरूप नहि ? तहिना, केओ, अर्थात् कोनहु भाषाक कोनहु बजनिहार, सदिखन एकहि ढंगसँ नहि बजैत छथि, अपितु ओ विभिन्न प्रयोजनक हेतु अपन कौशल ओ दक्षता अनुरूप भाषाक विविध रूपक प्रयोग करैत छथि । तखन मैथिली भाषा अपवाद किएक ? ओ एहि भाषामे व्याप्त भाषिक वैविध्यक बाहुल्य कोनो अवस्तरीय भाषाक परिचायक किएक ? बरु, एहि भाषाक वैविध्यक समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन कए मैथिली भाषिक समुदायमे व्याप्त सामाजिक शृंखला ओ भाषिक संरचनामे विद्यमान तादात्म्यक सही निरूपण करब बेस होएत ।

प्रारम्भहिमे एकगोट आओर बातक स्मरण कराएब उचित बुझैत छी । ग्रियर्सनक प्रसिद्ध *भारतवर्षक भाषा सर्वेक्षण* (जे १८९० क दशकमे सम्पन्न कएल गेल ओ १९०३-१९२७ मध्य प्रकाशित भेल) पछाति वर्तमान धरि मैथिली भाषाक उपभाषासभक कोनहु आधिकारिक भाषिक सर्वेक्षण नहि कएल गेल अछि। ग्रियर्सनक मैथिली उपभाषाक वर्गीकरण सम्प्रति गोविन्द झा (१९७४: ४४-५२, १९७८ 'भूमिका') द्वारा आलोचित भेल अछि। ताहि हेतुएँ मैथिली भाषाक कोनहु उपभाषाक मादे -- मानक उपभाषा ओ अन्यान्य--विशुद्ध भाषावैज्ञानिक दृष्टिएँ किछुओ कहि सकब कठिनाह प्रतीत होइत अछि।

एहि आलेखक प्रारूप निम्न प्रकारेँ होएत: खण्ड दुईमे मानक मैथिलीक मादे किछु प्रचलित अवधारणासभक वर्णन-विश्लेषण तथा मूल्याङ्कन कएल जाएत, खण्ड तीनिमे मैथिलीक भाषिक वैविध्यक वर्णन प्रस्तुत कएल जाएत ओ खण्ड चारिमे, उपसंहार रूपेँ, निष्कर्षवत् किछु कहल जाएत ।

२. मानक मैथिली : किछु अवधारणा

ई बात सर्वविदित अछि जे मैथिली भाषा विकासोन्मुख होइतहुँ एकगोट प्रामाणिक वा परिनिष्ठित वा शिष्ट वा मानक वा स्टैण्डर्ड भाषाक रूपमे प्रतिष्ठापित नहि भ' सकल अछि । पौल ब्रासक कथन छैन्हि जे भारतक बिहार राज्यमे १९६० क दशकमे चलल 'मैथिली आन्दोलन'क असफलताक ई एकगोट प्रमुख कारक तत्त्व सिद्ध भेल छल । हुनकहिँ शब्दमे :

> The failure to standardize the Maithili language is a most serious impediment to the long-term success of the movement. Individual scholars have made efforts in this direction, but it remains true that Maithili has developed much more slowly than the other major languages of India, that students have been afraid to study Maithili because they can never be certain if the form of the language taught to them will be the same form used by the out-side examiner, and that Maithili-speakers generally consider their language inferior for discourse outside the home.
>
> (Brass 1974: 68)

एहना स्थिति रहितहुँ, सामान्यत: भारतवर्षक बिहार राज्यक उत्तरी दड़िभंगा, खास क' मधुबनी[1], क्षेत्रक मैथिली उपभाषाकेँ मानक (साहित्यिक/औपचारिक/विशुद्ध/ परिशुद्ध) उपभाषा मानब प्रचलनमे अछि । ई प्रामाणिक वा मानक मैथिली कोनहु बजनिहारक मातृभाषा अछि वा नहि -- एहि विषयपर विवाद ओहिना सम्भव अछि जेना एहि प्रश्नपर जे अङरेजीक मानक रूप आर.पी. (Received Pronunciation) कोनहु अङरेजक मातृभाषा अछि वा नहि आ तहिना प्रामाणिक अमेरिकन अङरेजीसँ की अभिप्राय अछि । एहि समस्याक बाबजूदहु, मानक मैथिलीक संकल्पनाक प्रचलन ने त असम्भव अछि आ ने त्याज्य । एहि प्रचलनक आधार भाषावैज्ञानिक नहि भ' सामाजिक ओ भाषावैज्ञानिकेतर अछि । जाति, शिक्षा, पारिवारिक/सामाजिक पृष्ठभूमि, सामाजिक मनोवृत्ति आदि सन भाषावैज्ञानिकेतर कारक तत्त्वक पृष्ठभूमिमे एहि मानक मैथिलीक आधारशिला स्थापित भेल अछि ओं खास क' ब्राह्मण ओ (कर्ण) कायस्थ जातिद्वारा अपना अपना बोलीकेँ उत्तम, स्तरीय, ओ विशुद्ध मैथिली बुझि अभिमान करब एहि मानक मैथिलीक विशेषता मानल जाइत अछि । आन शब्देँ कही त' ब्राह्मण ओ कायस्थ जातिक मैथिली बजनिहारलोकनि एक प्रकारक कृत्रिम *we-they* भिन्नताक सृजन कए प्रचण्ड रूपेँ *we-ness* सँ ग्रसित छथि । बिहारक मैथिली आन्दोलनक असफलता एहि दुहू जातिक *we-ness* बला संकीर्ण दृष्टिकोणक परिणति अछि से बात ब्रासक अनुसन्धानसँ स्पष्ट रूपेँ परिलक्षित होइत अछि । पुन: ब्रासहिक शब्दमे :

> Maithil Brahmans and Kayasthas in North Bihar form an elite, similar to the *bhadralok* of Bengal, devoted to the language, culture, and traditions of Mithila and concerned with maintenance of the distinctiveness of their Maithil character and genealogical purity. However, elite Maithil castes have been ineffective in transmitting their sense of regional identity to the mass of the Maithili-speaking people, largely for three reasons. First, their orientation toward the distinctiveness of Maithili culture has placed less emphasis on the separateness of Maithili culture from other cultures in India than on its distinctive purity and devotion to all-India culture, particularly to Sanskrit education and orthodox Hinduism. Second, and partly, for this reason, the cultural gap between the elite castes and the rest of the population of Mithila has been very sharp. Third, the elite castes of the region have maintained the cultural gap by pursuing a policy of caste exclusiveness and adherence to principles of caste hierarchy and orthodoxy. These differences in social structure do not alter the objective facts that Maithils of all castes speak Maithili, but they do prevent the forging of the bonds of community necessary to the building of a common Maithili consciousness.

(Brass 1974: 114-115)

ब्रासक अध्ययनक एकैस वर्ष पश्चात्, अर्थात् १९९५ ई. मे, बिहारमे मैथिली आन्दोलन एक बेर फेर सुगबुगाएल अछि ओ सभक नजरि मानक मैथिलीक स्वरूप ओ संरचना दिसि पुनः केन्द्रित भेल अछि। एहि प्रसंगे दीपक कुमार गुप्ताक (१९९५) विचार अत्यन्त मननीय अछि :

> मानक मैथिली की संरचना और उसके प्रति ब्राह्मण-कायस्थ के शुद्धतावादी नजरिये के कारण मैथिली खुद अपनी ही बोलियों से दो फांक है, जब कि बोलियों की इतनी विविधता शायद ही किसी भाषा को प्राप्त हो। यह विविधता भाषा की जीवंतता और गहरे जन-जुड़ाव की शक्ति का परिचायक होती है। मगर मानक मैथिली की संरचना और मानदंड ब्राह्मण-कायस्थ परिवार की बोली के आधार पर ही तय की गयी और अन्य तमाम बोलियों को प्रकारान्तर से कहा गया कि यह मैथिली नहीं, भ्रष्ट भाषा है। इस तरह जनभाषा मैथिली को जन से काट दिया गया, क्योंकि मैथिली शिक्षक सिर्फ ब्राह्मण-कायस्थ ही होते हैं, अन्य जाति अपवाद के तौर पर आज भी है।

ब्रासहिक जकाँ गुप्ताक (१९९५) अभिमत छैन्हि जे :

मानक मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृति और अर्थव्यवस्था के मद्येनजर मैथिली बुद्धिजीवियों/भाषाजीवियों की भूमिका के विश्लेषण के वगैर न तो मैथिली आन्दोलन पर विचार किया जा सकता है न ही लोक चिन्ता, लोक रुचि और राष्ट्रिय मुख्यधारा को केन्द्र मे रखे बगैर मैथिली आन्दोलन की सफलता की कल्पना की जा सकती है। इसके दावे पर अविलंब पुनर्विचार की जरूरत है। जातीय आन्दोलन के स्वरूप और ब्राह्मण-कायस्थ के अलावा बृहत्तर समुदाय की भागीदारी के बिना मैथिली आन्दोलन के साथ जन दबाब बन पाना न तो कतइ संभव है न ही उचित।

सँगहिँ, मैथिलीक ई तथाकथित मानक उपभाषा हमरा जनितेँ मैथिली भाषाक परिशुद्ध ऐतिहासिक-भाषावैज्ञानिक ओ खास क' ध्वनिवैज्ञानिक अध्ययनमे कोनहुना हितकर नहिं सिद्ध होइत अछि– कारण जे ई मानक मैथिलीक स्वरूप तँ लिखित शब्दक निर्माणार्थ देवनागरी लिपिक वर्णसभक साक्षात् ध्वन्यात्मक प्रतिरूप अछि जे हूबहू क्रमिक रूपेँ एकक पाछाँ दोसर जोड़ल गेल सन प्रतीत होइत अछि। यादवक (1984 b: 157) मतेँ:

> Furthermore, the 'standard' ('formal'/'literary') dialect of Maithili renders itself both uninteresting and unilluminating for serious phonetic and phonological research for the simple reason that it is in essence a direct phonteic characterization of Devanagari orthographic symbols as they appear in concatenation to form written words in Maithili.

इएह कारण थिक जे शिक्षित ब्राह्मण ओ कायस्थ जातिक वक्तालोकनिक कथ्य भाषा पर्यन्त अति संस्कृतमय, ग्रन्थिल, पाण्डित्यग्रस्त, ओ अस्वाभाविक सुनबामे अबैत अछि।

अन्ततः, एहि मानक मैथिलीक प्रसङ्गे किछु एहन भ्रामक ओ नकली विशेषतासभ जोड़ि देल गेल अछि जकर कोनहु विश्वसनीय भाषावैज्ञानिक आधार नहि अछि। एकहिटा उदाहरण प्रशस्त होएत। मैथिली भाषाक शब्दान्तक ध्वनिविज्ञान द' सुभद्र झा हठपूर्वक दावा कएलैन्हि जे :

> In Mai, (i.e. Maithili) no word can end in a consonant.[2]

(S. Jha 1958: 119)

तत्पश्चात्, समकालीन मैथिलीमे पदान्त *अ* केर स्वनसंरक्षण द' अमेरिकी विद्वान् रौबर्ट जेफर्स सेहो लिखलैन्हि जे :

> OIA final vowels have been retained in Bihari. Maithili and Magahi show those vowels in contemporary langauge.

(Jeffers 1976: 222)

सुभद्र झा ओ रौबर्ट जेफर्सक कथनकेँ अति प्रामाणिक ओ अकाट्य मानि जर्मन विदुषी मोनिका थील-होर्ष्टमान सेहो हुनका दुहूक हूबहू अनुकरण करैत लिखलैन्हि जे :

Maithili phonetic words must never end in a consonant. Thus Hindi *hath* v.. Maithili *hath^*, the last vowel being non-syllabic (and therefore raised above the line).

(Thiel-Horstmann 1978: 66)

गोविन्द झा पर्यन्त लिखलैन्हि जे :

हिन्दी आदि भाषामे पदान्त *अ* केर उच्चारण नहि होइत अछि ओ अकारान्त शब्द हलन्त-जेकाँ वाजल जाइत अछि। परन्तु मैथिलीमे एकर उच्चारण, भलहिँ मन्द वा ह्रस्वतर हो, होइत अवश्य अछि। मैथिलीक शुद्ध उच्चारणक इहो एकटा विशेषता थिक। मिलाउ हिन्दी *हम्,* मैथिली *हम।* हिन्दीमे *हम्* शब्दक उच्चारणक अन्तमे दुनू ठोर बन्दे रहि जाइत अछि, किन्तु मैथिलीमे अन्तमे मुख खोलि देल जाइत अछि, एही मुख खोललासँ अन्तिम स्वरध्वनिक स्फोटन होइत अछि।

(गोविन्द झा १९७९: ९)

उपर उल्लिखित कथनसभक सूक्ष्म परीक्षण पश्चात् हमरा मनमे निम्नलिखित विचार उत्पन्न होइत अछि :

पहिल, सुभद्र झा (आ ताहिलेल रौबर्ट जेफर्स, मोनिका थील-होर्ष्टमान, ओ गोविन्द झा) असत्य तथ्यक पृष्ठपोषणक दोषी छथि। सत्य तँ ई अछि जे मैथिलीक शब्दसभ ध्वनिवैज्ञानिक रूपेँ स्पष्टतः व्यञ्जनान्त भ' सकैत अछि। विशद् वर्णनक हेतु देखू: यादव (1984a,b; 1996) तथा सुनील कुमार झा (1984)।

दोसर, पदान्त *अ* केर स्वनसंरक्षण वा स्वनलोपन संकोचनकेँ मानदण्ड बनाए मैथिलीकेँ मानक ओ अमानक/औपभाषिक मानबाक पद्धति जे मोनिका थील होर्ष्टमान (1978: 69, Table 3) ओ गोविन्द झा (1974: 53; 1979: 9) कायम कएलैन्हि अछि से मूल रूपेँ बलधकेल ओ अवैज्ञानिक अछि।

तेसर, पदान्त *अ* केर स्वनलोपन भ' गेलास' *अ* कें अनुपस्थितहि मानलासँ मैथिली ध्वनिविज्ञानक स्पष्ट, अद्वयार्थक, विश्वसनीय ओ सन्तोषजनक वर्णन-विश्लेषण भ' सकैत अछि। आजुक समयमे मानक कथ्य मैथिलीमे पर्यन्त *घर* शब्दकेँ *घ' र',* काल शब्दकेँ *का'ल', बाभन* शब्दकेँ *बा' भ' न', यादव* शब्दकें *या' द' व'* ओ *माछ* शब्दकें *मा'छ'* उच्चारण करब अति कृत्रिम, ग्रन्थिल, पाण्डित्यग्रस्त ओ हास्यास्पद होएत। स्मरणीय अछि जे नेपाली भाषामे धरि अद्यावधि *घर* शब्दक उच्चारण *घ' र', गर* शब्दक उच्चारण *ग'र* कएल जाइत अछि ओ पदान्त *अ केर* स्वनसंरक्षण होइत अछि।

३. मैथिलीक भाषिक वैविध्य

एहि खण्डमे मैथिली भाषामे विद्यमान तीनि प्रकारक वैविध्यक संक्षिप्त चर्चा कएल जाएतः (i) आन्तरिक वैविध्य[३], (ii) भौगोलिक/क्षेत्रीय वैविध्य, ओ (iii) सामाजिक वैविध्य।

३.१ आन्तरिक वैविध्य

मैथिली भाषा समुचित रूपेण प्रामाणिक नहि होएबाक अधिकतम दृष्टान्त एहि भाषाक वर्तनीसँ प्राप्त होइत अछि : अर्थात् एहि भाषाक उच्चारण ओ वर्तनीमे प्रशस्त आन्तरिक विविधता दृष्टिगोचर होइत अछि। एकर प्रमुख कारण ई अछि जे मैथिलीक परम्परागत वर्तनी ध्वन्यात्मक नहि अछि।

विशेष रूपें उल्लेख्य अछि मैथिलीक निम्न अग्र अवर्तुल स्वर ध्वनि (low front unrounded vowel [æ] -- जकर आलेखन-वैविध्य दिसि नजरि देलासँ अभिज्ञात होइत अछि जे एहि भाषाक लैखिक वैशिष्ट्य ओ औच्चारिक वैशिष्ट्यमे तादात्म्यक सर्वथा अभाव अछि। आन शब्दें कही त, मैथिली भाषाक आन्तरिक भाषिक वैविध्य एहि भाषाक औच्चारिक वैशिष्ट्यकें प्रचलित देवनागरी वर्णमालामे आलेखित क' सकबाक असक्षमताक प्रतिफल थिक। ई कोनो आश्चर्यक गप नहि: अङरेजी भाषाकलेल प्रयुक्त रोमन लिपिक एकेगोट वर्ण <a> एहि भाषाक कतेकहु ध्वनिकें प्रतिनिधित्व करैत अछि, जेना [ə] 'ago'; [ei] 'name'; [a] 'father'; [æ] 'bat'; [i] 'spinach'; तहिना, अङरेजी भाषाक एकेगोट ध्वनि [ou] रोमन लिपिक विभिन्न वर्णगुच्छसँ प्रतिनिधित्व होइत अछि, जेना 'go'; 'throw'; 'sew'; 'beau'; 'though'। मैथिलीक किछु उदाहरण देखू :

(क) निम्न अग्र अवर्तुल स्वर [æ] एवं एहिलेल प्रयुक्त विविध वर्तनी व्यवस्था

आए ~ आय
माए ~ माय; खाएत ~ खायत
आए/य ~ याए/य ~ पियाएब
पिआएब ~ पिआयब ~ पियायब
इए/य ~ इयै ~ इयैह ~ ऐ ~ यै
इएह ~ इयह ~ ऐह ~ यैह
अए/य ~ ऐ/ ै
पएर ~ पयर ~ पैर; कएटा ~ कयटा ~ कैटा

आन्तरिक विविधताक किछु आन उदाहरणसभ नीचाँ देखू :

(ख) ए ~ य ~ ऐ/ ै
जएताह ~ जयताह ~ जैताह; अएलाह ~ अयलाह ~ ऐलाह; कए ~ कय ~ कै

(ग) अ ~ य आ ~ या औ/अउ ~ यौ
दिअ ~ दिय धीआ ~ धीया कहिऔक ~ कहिअउक ~ कहियौक
पीअर ~ पीयर बीआ ~ बीया अनिऔन्ह ~ अनिअउन्ह ~ अनियौन्ह

(घ) ौ / औ ~ अओ
धरौलैन्हि / धरओलैन्हि ~ धरौलनि /धरओलनि

(ङ) आ ~ वा

बउआ ~ बउवा /वौवा; खोआ ~ खोवा ; नूआ ~ नूवा

जूआ ~ जूवा; कौआ ~ कौवा

अ ~ व/ब ~ म	अउ/ ौ ~ व
होअ ~ होव ~ होब' ~ होम'	पउलहुँ /पौलहुँ ~ पवलहुँ

(च)

व ~ ओ	व ~ ब	य ~ ज
वकील ~ ओकील	नव ~ नब	यश ~ जश/जस
वजन ~ ओजन	विद्या ~ बिद्या	यदि ~ जदि
वजह ~ ओजह	यादव ~ यादब	चर्या ~ चर्जा
		यादव ~ जादव/जादव

(छ)

ण ~ न	श ~ स
वाण ~ बान	आकाश ~ आकास/अकास
गुण ~ गुन	शावास ~ साबास

ड़ ~ र

छौंड़ा ~ छौंरा

छौंड़ी ~ छौंरी

गड़बड़ ~ गरबर

(ज) ष ~ ख ~ स

षष्ठी ~ खस्ठी ~ सस्ठी

~ *खख्ठी

~ *सख्ठी

~ *षख्ठी

दोष ~ दोख ~ दोस

किछु आओर उदाहरणसभ नीचाँ देल गेल अछि :

(झ) सन्त ~ संत

कम्पन ~ कंपन

चञ्चल ~ चंचल

कङगन ~ कंगन

(ञ) बाजैथि ~ बाजथि ~ बाजैथ

(ट) कहलैन्हि ~ कहलन्हि ~ कहलैन्ह ~ कहलनि

छिऐन्हि ~ छिऐन्ह ~ छिऐन ~ छिअनि

कनैत ~ कनइत ~ कनयित

छथि ~ छैथ

रहथि ~ रहैथ

अछि ~ ऐछ

गेलहुँ ~ गेलौं ~ गेलऊँ

देख लेलैथि ~ देखि लेलैथि ~ देखि लेलथि ~ देखि लेलैथ

कीन लेलैन्हि ~ कीनि लेलैन्हि ~ कीनि लेलैन्ह ~ कीनि लेलनि ~ कीनि लेलैन, आदि ।

३.२ भौगोलिक/क्षेत्रीय वैविध्य

कोनहु प्रामाणिक भाषामे क्षेत्रीय उपभाषासभक सृजन होएब आश्चर्यजनक नहि मानल जाइत अछि। कोनहु भाषिक समुदायक एक स्थलमे कोनहु भाषिक वैशिष्ट्यक सृजन भए ओकर क्षेत्रीय स्तरमे विस्तार होएब ओ पछाति ओहि स्थलगत वैशिष्ट्यकें क्षेत्रविशेषक वैशिष्ट्यक रूपमे परिचित होएब सामान्य भाषिक परिवर्तन मानल जाइत अछि। अङरेजीमे त' मान्य स्कौटिश अङरेजी, मान्य वेल्श अङरेजी, ओ मान्य अमेरिकन अङरेजी पर्यन्त सर्वविदित अछि।

उपर कहि चुकल छी जे मैथिली भाषाक क्षेत्रीय उपभाषासभक अद्यावधिक ओ विश्वसनीय भाषावैज्ञानिक/समाजभाषावैज्ञानिक सर्वेक्षण/अनुसन्धान/क्षेत्रानुसन्धान अद्यावधि अप्राप्त अछि (ओना देखू गोविन्द झा १९७४: ४८-५२; १९७८ : ड-ढ); ताहि हेतुएँ एहि मादे आधिकारिक रूपैं किछु कहि सकब कठिन अछि। तथापि, नेपालक पूर्वी तराई प्रदेशक सप्तरी ओ मोरंग एवं एहिसँ जुटल भारतवर्षक पूर्वी बिहारक जिला आदि क्षेत्रमे एक विशेष प्रकारक भाषिक नवीनताक (innovation) सृजन भेल अछि तथा ई क्षेत्र एहि स्थलगत भाषिक विशेषताकलेल प्रसिद्ध भ' गेल अछि। वस्तुतः ई क्षेत्र "æ -area" कहल जाए लागल अछि। किछु उदाहरण नीचा देल गेल अछि :

(ठ)	a-æ	:	खा लेलहुँ ~ खाएलेलहुँ ~ खाय लेलहुँ	[khæleləhu]
(ड)	ə-æ	:	भ' गेल ~ भए गेल ~ भय गेल	[bhægel]
			क' सकैत छी ~ कए/कय सकेत छी	[kæsəkəit chi]
(ढ)	e-æ	:	गेल ~ गाएल ~ गायल	[gæl]
			भेल ~ भाएल ~ भायल	[bhæl]

३.३ सामाजिक वैविध्य

जहिना क्षेत्रीय उपभाषा भूगोल-केन्द्रित अछि तहिना सामाजिक उपभाषा वर्ग वा समुदाय-केन्द्रित अछि। अर्थात्, कोनहु भाषाक सामाजिक उपभाषा ताहि भाषाक बजनिहारलोकनिक सामाजिक स्तर, शिक्षा, जाति, धर्म, आर्थिक समृद्धि, जीवन शैली आदिक द्योतक भए सकैत अछि एवं एक वर्ग ओ जातिक बजनिहारकें दोसर वर्ग ओ जातिक बजनिहारसँ पृथक कए सकैत अछि। समाजभाषावैज्ञानिकलोकनि एहन पृथकत्व स्थापित करएबला भाषिक तत्त्वसभक, विश्लेषण कए ओहि भाषिक भेदकसभक (linguistic variables) सूची तैयार करैत छथि: अर्थात् कोन भाषिक वैशिष्ट्य कोन वर्ग

(जेना: उच्च, मध्य, निम्न) ओ जातिक (मुख्यत: ब्राह्मण/कायस्थ ओ ब्राह्मणेतर) द्योतक अछि तकर निरपेक्ष निरूपण करबामे प्रयत्नशील रहैत छथि ।

मैथिली भाषिक समुदायमे जाति एकगोट प्रमुख भेदक तत्त्व अछि जे सामाजिक उपभाषाक प्रकृति ओ स्वरूपक स्पष्ट द्योतक पर्यन्त अछि। सूक्ष्म भाषिक विश्लेषण पश्चात् ई तथ्य प्रगट होइत अछि जे मैथिली भाषिक समुदायकें जातिगत आधारपर मूलत: ब्राह्मण ओ ब्राह्मणेतर एहि दुहू सामाजिक भाषिकाक (sociolects) वक्ताक रूपमे वर्गीकृत कएल जा सकैत अछि। ओना, बजनिहारक शिक्षा एकगोट एहन सबल ओ समदर्शी भेदक तत्त्व अछि जे ई जातिकें उछटि कए ब्राह्मणेतर-मुदा-शिक्षित वक्ताक कथ्य मैथिलीकें पर्यन्त शिक्षित ब्राह्मणक मानक कथ्य मैथिली सादृश बना दैत अछि। ओना, ई विषय अनुसन्धेय अछि जे ब्राह्मणेतर-मुदा-शिक्षित वक्ताक मैथिली ओ शिक्षित ब्राह्मणक बोलीमे, अथवा ब्राह्मणेतर-मुदा-शिक्षित वक्ताक मैथिली ओ शिक्षित ब्राह्मणक मैथिलीमे की सादृश ओ भिन्नता अछि। एकर निरूपण गम्भीर क्षेत्रानुसन्धान (field research) पश्चात् मात्र कएल जा सकैत अछि। अनुसन्धेत्सु मैथिली भाषाशास्त्रीकलेल ई एकगोट उपयुक्त अनुसन्धानक विषय होएत ।

३.३.१ ब्राह्मण-भाषिका

ब्राह्मण-भाषिकाक -- जे मानक/शिष्ट/औपचारिक/साहित्यिक/विशुद्ध/ परिशुद्ध भाषिकाक सादृश मानल जाइत अछि आ जकर औच्चारिक रूप लेख्य रूप समरूप होइत अछि -- किछु विशेषतासभ नीचाँ देल गेल अछि ।

ब्राह्मणक सामाजिक भाषिकाकें (sociolect) पृथक सत्ता देबाक प्रमुख *श्रेय होएब* क्रियाक एकगोट वैकल्पिक रूप *थिक* कें अछि :[४]

(ण) ई रेडियो नेपाल थिक ।
ई की थिक ?
ओ के थिकाह /थिकथि ?
नेपालक राजधानी काठमाण्डू थिक ।
अहाँ ओकर के थिकिऐक ?
तोँ हुनकर के थिकहुन्ह ?

ब्राह्मणक सामाजिक भाषिकाक आन प्रमुख विशेषता अछि कारक विभक्ति, परसर्ग, ओ मध्यमपुरुष अनादरार्थी सर्वनाम *तोँ* सँगैं क्रियापदमे समानाधिकरण चिह्न रूपें नासिक्य ध्वनिक बहुल प्रयोग :

(त) (अहाँ) मोहनकें बजाउ ।
हम काकाकें सोर पाड़लिऐन्हि ।
बाबुकें बोखार लागि गेलैन्हि ।
माए सितुआसँ आम सोहलैन्हि ।
पण्डितसँ पुराण सुनु ।
ओ सबसँ जेठ छथि ।
हम पाएरें अएलहुँ ।

कोन कारणें अएलहुँ अछि ?

तों हमरा देखलें ?

तों के छें ?

ब्राह्मण-भाषिकामे अनिश्चयार्थक विशेषण ओ भूत कृदन्तसँ बनल विशेषणसभक पुलिङ ओ स्त्रीलिङ[५] दुहू रूप विद्यमान अछि :

(थ)	**पुलिङ**	**स्त्रीलिङ**
	गोर मर्द	गोरि माउगि
	तीन पुरुष	तीनि स्त्री
	सुन्नर बालक	सुन्नरि बालिका
	सुतल पुरुष	सुतलि स्त्री
	मुइल पितामह	मुइलि पितामही
	जागल बालक	जागलि कन्या

परिमाणबोधक सार्वनामिक रूपसभमे *a* तथा *e* स्वर जकाँ *æ* उच्चारित होइत अछि :

(द)	a~æ	:	etba~etbæ
		:	otba~otbæ
		:	kətba~katbæ
	e~ æ	:	etbe ~ etbæe
			otbe ~ otbæe

ब्राह्मण-भाषिकामे (आ आजुकाल्हि शिक्षित भाषिकामे पर्यन्त) पति-पत्नी एक दोसरकेँ सम्बोधनार्थ मध्यमपुरुष आदरार्थी सर्वनाम *अहाँ* क प्रयोग करैत छथि । तहिना पिता-पुत्र, काका-भतीजा, जेठ भाइ-छोट भाइ आदि सेहो एक दोसरकेँलेल *अहाँ* सर्वनामक प्रयोग करैत छथि । एतबहि नहि, छोट बच्चाकलेल पर्यन्त (जनिकालेल सम्मान-प्रदर्शन सामान्यतः अनिवार्य नहि अछि) आदरार्थी रूप *अहाँ* सर्वनामक प्रयोग कएल जाइत अछि ।

अन्ततः, अत्यन्त विचारणीय वस्तु तँ ई अछि जे सर्वनामक चयन ओ जातिगत अहंकार, सामूहिकता (solidarity), तथा स्वनामधन्य श्रेष्ठता -- एहि दुहूक सम्बन्ध तखन सुस्पष्ट होइत अछि जखन ई देखबामे अबैत अछि जे अधिकांश ब्राह्मण वक्ता (शिक्षित वा अशिक्षित दुहू) अधेड़-तथा-शिक्षित-ब्राह्मणेतर वक्ताकलेल पर्यन्त मध्यमपुरुष मध्य-आदरार्थी सर्वनाम *तों* ओ मध्य-आदरार्थी सम्बोधन निपात *हओ* क प्रयोग करैत छथि तथा असामान्य परिस्थितिमे अधेड़-तथा-शिक्षित-ब्राह्मणेतर व्यक्ति विशेषकेँ मात्र मध्यमपुरुष आदरार्थी सर्वनाम *अहाँ* ओ अति आदरार्थी सर्वनाम *अपनेसँ* सम्बोधन करैत छथि ।

निष्कर्षवत्, ई कहल जा सकैत अछि जे मैथिली भाषाक ब्राह्मण-भाषिकाक एहि तथाकथित "उच्च", साहित्यिक ओ ग्रन्थस्थ स्वरूपकेँ ब्राह्मणेतर मैथिली-भाषी छात्र-छात्रालोकनि "द्वितीय भाषा" रूपेँ सिखैत छथि आ हुनकालोकनिकेँ एहि कार्यमें प्रशस्त असौकर्य होइत छैन्हि ।

३.३.२ ब्राह्मणेतर-भाषिका

मैथिलीक भाषिक वैविध्यक असल स्वरूप तखन परिलक्षित होएत जखन मैथिली भाषा-भाषी विभिन्न जातिक बोलीसभक क्षेत्रानुसन्धान कए ओकर समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन-अनुशीलन होएत। मुदा वर्तमानमे से सम्भव नहि। ताहि हेतुएँ ब्राह्मणेतर सामाजिक उपभाषाक किछु प्रमुख विशेषतासभक संक्षिप्त वर्णन-विश्लेषण नीचाँ कएल गेल अछि।

ब्राह्मणेतर सामाजिक भाषिकाक एकगोट प्रमुख विशेषता अछि 'थिक' सहायक क्रियाक प्रयोगक सर्वथा अभाव। उपहासस्वरूप, ब्राह्मणक बोलीकेँ "थिकाथिकी" अकारण नहि कहल जाइत अछि। हमर एकगोट प्रकाशोन्मुख आलेखक शीर्षक अछि : "ई रेडियो नेपाल थिक : आब थिकाथिकीमे समाचार सुनु।"

ब्राह्मण-भाषिकाक विपरीत ब्राह्मणेतर भाषिकामे कारक विभक्ति, परसर्ग, ओ मध्यमपुरुष अनादारार्थी सर्वनाम *तोँ* सँगेँ क्रियापदमे समानाधिकरण चिह्न रूपेँ नासिकय ध्वनिक सर्वथा अभाव होइत अछि। तुलना करू:

(ध)	**ब्राह्मण-भाषिका**	**ब्राह्मणेतर-भाषिका**
	नोकरकेँ बजाउ॥	नोकरके बजाउ।
	बाबुकेँ बोखार लागि गैलैन्हि।	बाउके बोखार लाइग गेलै।
	माए चक्कूसँ आम सोहैत छथि।	माए चक्कूस' आम सोहै हइ।
	बाभनसँ पूजा कराउ।	बाभनस' पूजा कराउ।
	तोँ हमरा देखलेँ ?	तोँ हमरा देखले ?
	तोँ के छेँ रौ ?	तोँ के छे रौ ?

तहिना, मध्यमपुरुष मध्य-आदरार्थी सर्वनाम *तोँ* तथा मध्य-आदरार्थी सम्बोधन निपात *हओ/हौ* सँगेँ क्रियापदमे समानाधिकरण चिह्नक रूपेँ-*अह* क प्रयोग नहि भ' -*आ* क प्रयोग होइत अछि। तुलनीय अछि :

(न)	**ब्राह्मण-भाषिका**	**ब्राह्मणेतर-भाषिका**
	तोँ कत' जाइ(त) छह ?	तोँ कत' जाइ छा ?
	हओ के छह ?	हौ के छा ?

अधिकांश ब्राह्मणेतर मैथिली बजनिहार अशिक्षित भेला सन्ताँ स्पष्टतः एहि भाषिकामे "उच्च शब्दावली" (high vocabulary) क प्रयोग न्यूनतम रूपेँ होइत अछि। सँगहिँ, ब्राह्मण भाषिकामेँ प्रयुक्त आदरार्थी बाहुल्यक तुलनामे सम्प्रति एहि भाषिकामे आदरार्थीक प्रयोग ह्रासोन्मुख देखना जाइत अछि :

(प)	(अहाँक) बाबुजी छथि ?	(ब्राह्मण-भाषिका)
	घरमे नइ हइ।	(ब्राह्मणेतर-भाषिका)

ब्राह्मणेतर-भाषिकाक एकगोट प्रमुख विशेषता इहो अछि जे अधेड़ उमेरक अशिक्षित मैथिली बजनिहार एखनहुँ पत्नीकेँ *अहाँ* सर्वनामसँ सम्बोधन नहि कए अन्यपुरुष निकट-निर्देशक अनादरार्थी सर्वनाम *ई* तथा एहिसँ साधित अन्य रूपसभक बहुल प्रयोग करैत छथि। सँगहिँ, एहि भाषिकामे पति-पत्नी संवादमे *होएब* सहायक क्रियाक छ-रूपक

स्थानमे *ह*-रूपक प्रयोग सर्वसाधारण मानल जाइत अछि ओ क्रियापदमे समानाधिकरण चिह्नक रूपैं *ऐ/अइ* क प्रयोग होइत अछि, जेना :

(फ) ई कत' हइ ?
ई कहिआ जैतै ?

पति-पत्नी संवादमे अनुरोधात्मक/आज्ञात्मक वाक्यमे- *अउक/औक* क प्रयोग सामान्य अछि :

(ब) ई जाउक।
अबौक ने।
बजौक ने।

अन्तत :, ब्राह्मणेतर-भाषिकामे *ग' जे बलू* क प्रयोग सेहो सामान्य अछि :

(भ) बाउ कहलकै ग' जे बलू आइ इस्कूल नइ जो। भैंसीए चरा दही।

ब्राह्मणेत्तर "निम्न" वर्गीय ग्रामीण तथा अशिक्षित सांय-बहुक गप्प-सप्पक भाषिकाक विशद् वर्णनक हेतु देखू : यादव (१९९५)।

४. उपसंहार

प्रश्न उठैत अछि : मैथिली भाषामे व्याप्त विस्तृत भाषिक वैविध्य दए की कएल जाए ? की औपभाषिक वैविध्यकें -- जे एहि भाषाकें अति समृद्धिशाली बनाए प्रशस्त जन-जुड़ाव पर्यन्त स्थापित कएने अछि -- अन्त करबाक हेतु समग्र उपभाषाकें नष्ट (eliminate) कए देल जाए ? की मैथिली अकादमी सन संस्था आन समग्र उपभाषाक प्रयोगक बहिष्कारक नारा दए मात्र मानक भाषाक प्रयोगक आह्वान प्रारम्भ करए ? आ कि आने कोनो निदानक खोजी होअए ?

एहि मादे भाषाविज्ञान-साहित्यमे मूलत: तीनिगोट निदानक जिक्र उपलब्ध अछि। पहिल निदान तँ ई प्रस्तुत भेल अछि जे समग्र उपभाषाकें नष्ट कए मात्र मानक मैथिलीक प्रयोग बांछनीय होएत। औपभाषिक अथवा अमानक अथवा अपरिनिष्ठित मैथिली भाषाकें जड़िसँ उखाड़ि फेकबाक सबल प्रयास विद्यालय-स्तरीय मैथिलीक पठन-पाठनमे परिलक्षित होइत अछि जाहि ठाम शिक्षकलोकनि (अधिकांश ब्राह्मण, कायस्थ जातिक) नेनाकें तथाकथित अवस्तरीय मैथिली भाषा बाजबासँ निरुत्साहित करैत छथि ओ एहन मैथिलीकें स्पष्ट रूपैं अशुद्ध, ठेठ, गवाँर आदि पक्षपातपूर्ण विशेषणसँ बेहिचक विभूषित करैत छथि। सँगहिँ, ग्रन्थस्थ ओ परिनिष्ठित मैथिली बाजएबला नेनासभकें उत्साहित कए हुनक उत्कर्षक मार्ग प्रशस्त करैत छथि।

भाषावैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीलोकनिक धारणा छैन्हि जे एहन प्रवृत्ति कतिपय कारणसँ घातक सिद्ध भए सकैत अछि। प्रथमत:, ई प्रवृत्ति मनोवैज्ञानिक दृष्टिएँ घातक अछि कारण जे भाषा केवल संप्रेषणक माध्यम नहि भए कोनहु समाज वा समुदायक सदस्यता ओ ओकर पहिचानक तथा ओकर अस्मिता पर्यन्तक प्रमुख द्योतक अछि। कोनहु बाल-बालिकाकें ओकर भाषिक लक्षण 'निम्नस्तरीय' होएबाक बोध कराएब ओहि बाल-बालिकाकें निम्नस्तरीय कहब थिक। एहिसँ ओहि बाल-बालिकाकें विद्यालय तथा विद्यालयीय मान्यताकें परित्याग (reject) करबाक प्रवृत्तिमे आ सँगहिँ अपना समुदायकें घृणा करबाक प्रवृत्तिमे सेहो वृद्धि होइत छैक -- जे मनोवैज्ञानिक दृष्टिएँ स्पष्टत: अहितकर अछि। द्वितीयत:, ई प्रवृत्ति सामाजिक दृष्टिकोणसँ सेहो घातक सिद्ध भए सकैत अछि,

कारण जे एहिसँ ई आभासित होइत अछि जे कोनहु एक समुदाय आन कोनहु एक समुदायसँ 'कम' महत्त्वपूर्ण अछि। ई पक्ष विशेष रूपेँ उल्लेख्य एहूलेल अछि जे भाषाक आधार पर जनिका कम महत्त्वपूर्ण कहल जा रहल छैन्हि से छथि सामान्यतः निम्नवर्गीय तथा ब्राह्मणेतर भाषिक समुदायक बाल-बालिकालोकनि आ जे एहि वर्गक भाषाकेँ अवस्तरीय कहि रहल छथि से छथि सामान्यतः ब्राह्मण-कायस्थ जातिक अधेड़ शिक्षकलोकनि। तृतीयतः, ई प्रवृत्ति व्यावहारिक दृष्टिएँ सेहो अहितकर अछि कारण जे अधिकांश वक्तालोकनि अपना भाषाकेँ/बोलीकेँ (idiolects) परिवर्तन नहि करए चाहैत छथि, अर्थात् हुनक जातिगत अथवा समुदायगत अथवा समूहगत पहिचानक मजबूत कड़ीकेँ ओ क्षीण नहि करए चाहैत छथि। बाल-भाषा-शिक्षणक अनुसन्धानसँ ई परिलक्षित होइत अछि जे वस्तुतः बाल-बालिका अपना माए-बाप जेकाँ बजैत नहि बढ़ैत छथि आ शिक्षक जेकाँ बजैत तँ नहिए बढ़ैत छथि , वरन् ओ अपना समूहक सँगी-साथी (peer group) जेकाँ बजैत बढ़ैत छथि। तेँ, जँ अपन भाषिक अवस्तरीयताकलेल कोनहु भाषिक समुदायक बाल-बालिकाक विकास अवरुद्ध भए जाए तँ कि ताहि उपभाषाकेँ वा आन समग्र उपभाषाकेँ नष्ट कए देब एकर समाधान होएतैक, कथमपि नहि।

दोसर निदान ई प्रस्तुत कएल गेल अछि जे वक्ताकेँ अपन भाषिकाक (भलहिँ ओ तथाकथित अवस्तरीय भाषिका होअओ) प्रयोग अपना घर-आङनमे, संगीसाथी सँगेँ, तथा विद्यालयक किछु क्रियाकलापमे पर्यन्त करबाक चाही आ विद्यालय-स्तरीय पठन-पाठनक कार्य-सम्पादनक हेतु स्तरीय भाषा सिखाओल जएबाक चाही। एहिसँ स्तरीय तथा अवस्तरीय भाषिकाकेँ दूगोट फूट एवं स्वतन्त्र रूप दए एहि दुहूक मध्य विद्यमान भिन्नताक स्पष्ट परिचय होएत। उद्देश्य ई अछि जे एहिसँ बाल-बालिकासभ अपना-अपना भाषिकाकेँ जायज, पवित्र एवं मर्यादापूर्ण भाषाक एक प्रकारक रूपेँ प्रतिष्ठापित करताह ओ स्तरीय भाषिकाक प्रयोग अपन कौशल, आवश्यकता ओ वांछनीयता अनुरूप कए सकबाक क्षमताक विकास कए दुनु भाषिकाकेँ अदल बदल (Code-Switching) करताह। अर्थात्, परिस्थिति विशेषमे ओ कखनहु अपन भाषिकाक प्रयोग करताह त कखनहु स्तरीय भाषिकाक -- श्रद्धेय स्वर्गीय पंडित श्री हरिदेव मिश्र जेकाँ हुनका बारीमे काज कएनिहार नेवार ज्यापू सँगेँ ओ अति संस्कृतमय तथा ग्रन्थिल नेपाली/हिन्दीमे वार्तालाप नहि करताह।

तेसर निदान जे प्रस्तुत कएल गेल अछि से ई जे कोनहु भाषाक बजनिहारलोकनि ओहि भाषामे व्याप्त भाषिक विविधताकेँ समुचित रूपमे समादर करथि।[६] कहबाक तात्पर्य ई जे जौँ कोनहु बाल-बालिका अपन अवस्तरीय भाषिकाक कारणेँ समाजमे आगाँ नहि बढ़ि पाबि रहल अछि तँ एकर प्रमुख कारण ओहि समाजक ओ ओहि भाषाक शिक्षकक त्रुटिपूर्ण भावना ओ मनोवृत्ति अछि, आ एहि त्रुटिपूर्ण भावना ओ मनोवृत्तिमे परिवर्तन होएब नितान्त आवश्यक अछि, भाषामे नहि। अर्थात्, कोनहु, भाषिका प्रति उदारवादी, पक्षपातरहित, एवं सहिष्णुतापूर्ण अवधारणाक विकासक आवश्यकता अछि तथा समाजकेँ एहि मार्गमे प्रशिक्षित करब सेहो वाञ्छनीय अछि।

मैथिली भाषाक औपभाषिक स्वरूपसभकेँ ग्राह्य ओ समादृत करबाक एकगोट उचित प्रयास इहो होएत जे एहि भाषाक शब्दकोश वा शब्दसंग्रहसभमे प्रयुक्त मूल प्रविष्टिक सँगहिँ एहि प्रविष्टिक आन्तरिक, क्षेत्रीय, ओ सामाजिक वैविध्यकेँ प्रतिनिधित्व करएबला समरूपसभ कि त' सहायक प्रविष्टि रूपेँ आ कि त' कोष्ठक मध्य राखि

उल्लिखित होएबाक चाही। एहिसँ एहि भाषाक प्रयोक्तालोकनिकेँ औपभाषिक स्वरूप ओतबहि पवित्र ओ उपादेय अछि तकर अभिज्ञान होएतैन्हि, सँगहिँ हुनकालोकनिकेँ एहि स्वरूपसभकेँ प्रयोग करबाक साहसमे सेहो अभिवृद्धि होएतैन्हि। एहि प्रयासक परिणति ई होएत जे एहि भाषाक कथ्य रूप सेहो परिनिष्ठित होइत जाएत ओ परिणामतः एहू भाषामे बङला भाषा सदृश्य मानक लेख्य रूपक सँगहिँ मानक कथ्य रूपक सृजन होएत। अर्थात्, एहि भाषामे कथ्यस्थ ओ ग्रन्थस्थ दुहू रूपक सृजन होएत– जाहिसँ मैथिली भाषा-साहित्यकेँ समृद्ध होएबामे प्रशस्त संबल प्राप्त होएत। अन्ततः, एहिसँ मैथिली भाषाक बौद्धिकीकरण (intellectualization) होएत; अर्थात् एहि माध्यमेँ मैथिली भाषाक वार्तालापीय स्तरसँ लए वैज्ञानिक स्तर धरिक भाषिक संप्रेषण-क्षमताक विकासमे अभिवृद्धि होएत।

टिप्पणी

१. मधुबनीक मैथिलीक पदोन्नति कोना एकगोट संयोग मात्र छल तकर विलक्षण वर्णन रमानाथ झा (पाठक १९९५: ३५) निम्नानुसार करैत छथि :

> तत्कालीन मधुबनी सबडिवीजनक भाषा जे साहित्यिक मान्यता प्राप्त कएल तकर कारण ई छल जे विद्यापति, गोविन्द दास, मनबोध, चन्दा झा, म.म. मुरलीधर झा, डा. गंगानाथ झा, महावैयाकरण दीनबन्धु झा, महाकवि लाल दास, भोला लाल दास, सब मधुबनी सबडिवीजनक अथवा सन्निहित भूभागक वासी छलाह। आइ जँ प्रेमचन्द सन केओ प्रतिभाशाली व्यक्ति वेतियाक बोलीमे लघु-कथा लिखए लागथि, शरद्चन्द सन असाधारण लेखक भागलपुरक बोलीमे उपन्यास लिखथि तँ स्वतः ओ बोली सब साहित्यिक मान्यता प्राप्त कए लेत। मुदा भ्रष्ट मैथिली कहि ओकरा लोकनिक बोली केँ जँ लांछित कए देबैक तँ की ओहि जनसमुदायक भावनाकेँ ठेस नहि पहुँचतैक ?

२. स्मरणीय अछि जे सुभद्र झाक १९५८ क कृतिक प्रकाशनसँ ४१ वर्ष पूर्वहिँ ग्रियर्सन लिखने छलाह जे :

> Moreover, in Maithili a final short vowel is quite commonly omitted in ordinary speech.
>
> (Grierson 1917: 27)

३. मैथिली-लेखन क्षेत्रमे व्याप्त आन्तरिक वैविध्य/अव्यवस्था देखि रमानाथ झा (पाठक १९९५: ३५-३६) उद्घोष कएलैन्हि जे:

> हम ई नहि मानैत छी जे जँ मैथिली हमर मातृभाषा थिक, हम मैथिली अहोरात्र बजैत छी तँ जे लिखब, जेना लिखब सएह साहित्यिक मैथिली होएत। जे कहैत छथि जे जहिना बजैत छी तहिना लिखब, तँ मैथिलीक स्वरूप अनन्त भए जाएत। हमरा ई विश्वास दृढ़ अछि जे मैथिलीकेँ जँ राजनीतिक मान्यता प्राप्त होएतैक तँ ताहिसँ पूर्व एकरा साहित्यिक मान्यता करबए पड़त ओ

साहित्यिक मान्यता कोना मैथिलीकेँ प्राप्त होएतैक जँ मैथिलीक कोन एक गोट स्वरूप स्थिर नहि रहतैक ।

४. सहायक क्रिया 'थिक' मादे यादवक मत निम्नानुसार छैन्हि:

thik, a characteristic of the Brahmanic speech, is a full form of the verb 'to be' in Maithili. In affected styles, *thik* is optionally used as a copula in present tense forms. However, it is a highly marked form, and its use is on the decline now; *thik* is systematically replaced by *aich* and *ch-* in all educated styles of speech.

(Yadav 1996: 219)

५. ओना स्त्रीलिङ विशेषण रूपसभक प्रयोग ह्रासोन्मुख अछि । ग्रियर्सनक शब्दमे:

As a matter of fact the distinction of gender is observed but loosely: except to *paṇḍits* grammatical gender, as distinct from natural gender, is almost unknown; that is to say, adjectives only become feminine when applied to female living creatures, ...

(Grierson 1881: 17)

सुभद्र झाक कथन सेहो छैन्हि जे:

There is already the growing tendency of doing away with the feminine affix *-i* from such cases in the speech of the people of the younger generation ...

(S. Jha 1958: 355-356)

६. ठीक इएह अभिमत अनेकहु वर्ष पूर्व रमानाथ झा (पाठक १९९५: ४१) सेहो अभिव्यक्त कएने छलाह :

... हमरा लोकनि जे केन्द्र मिथिलाक कहबैत छी ओ ऐतिहासिक कारणसँ अपन भाषाकेँ विशुद्ध मिथिला भाषा मानैत छी, अनकहु मानए कहैत छिऐक, तनिकहु लोकनिक कर्तव्य थिक जे मिथिला भाषाक जे भिन्न-भिन्न विभाषा छैक, जकरा बोली कहैत छिऐक, तकर अस्तित्व स्वीकार कए ओकरा सबकेँ मैथिलीक अंग मानि ली ओ तखन ओकर बजनिहारकेँ ई गौरव अनुभव करए दिऐक जे ओहो सब मिथिला भाषा सएह बजैत अछि, मिथिला भाषा-भाषी अछि ।

सन्दर्भ

गुप्ता, दीपक कुमार १९९५ 'मैथिली आन्दोलन बनाम मैथिल', *हिन्दुस्तान,* पटना, शनिवार, २९ अप्रिल १९९५ ।

झा, गोविन्द १९७४ *मैथिली भाषा का विकास,* पटना: बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी ।

झा, गोविन्द १९७८ 'भूमिका', कुलानन्द मिश्र एवं मोहन भारद्वाज (अनुवादक), १९७८, (ग्रियर्सनक) *भारतक भाषा सर्वेक्षण ५:२ (मैथिली),* पटना: मैथिली अकादमी, क-ढ ।

झा, गोविन्द १९७९ *उच्चतर मैथिली व्याकरण,* पटना: मैथिली अकादमी ।

पाठक, अमरेश १९९५ *रमानाथ झा,* दिल्ली: साहित्य अकादमी ।

यादव, रामावतार १९९५ 'साँय-बहुमें गप्प-सप्प कोना करी: महेन्द्र मलंगियाक नाटकक सन्दर्भमे', *सयपत्री* (नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठान) १:२, १३१-१४२ ।

Brass, Paul R. 1974 *Language, Religion and Politics in North India,* Cambridge: Cambridge University Press.

Grierson, George A. 1881 *An Introduction to the Maithili Language of North Bihār,* Part I, 'Grammar', Calcutta: Asiatic Society of Bengal.

Grierson, George A. ed & trns. 1917 *The Parijāta-Haraṇa of Umāpati Upādhyāya.. The Journal of the Bihar and Orissa Research Society* 3:1, 20-98.

Jeffers, Robert J. 1976 'The Position of the Bihārī Dialects in Indo-Aryan, *Indo-Iranian Journal* 18: 3-4, 215-225.

Jha, Subhadra 1958 *The Formation of the Maithilī Language,* London: Luzac & Company.

Jha, Sunil Kumar 1984 A Study of Some Phonetic and Phonological Aspects of Maithili. Unpublished Ph.D. Thesis, University of Essex.

Thiel-Horstmann, Monika 1978 'On R.J. Jeffers: The Position of the Bīhārī Dialects in Indo-Aryan– A Phonological Reconsideration', *Indo-Iranian Journal:* 20, 68-82.

Yadav, Ramawatar 1984a. *Maithili Phonetics and Phonology*, Mainz (Germany): Selden und Tamm.

Yadav, Ramawatar 1984b. 'Maithili Phonology Reconsidered', *Studien Zur Indologie Und Iranistik*: 10, 155-168.

Yadav, Ramawatar 1996 *A Reference Grammar of Maithili* (Trends in Linguistics: Documentation 11), Berlin & New York: Mouton de Gruyter.

शिक्षा मन्त्रालय
३३११३६

मैथिलीको भाषिका वैविध्यः औपभाषिक र मानक स्वरूप

(क) When it comes to linguistic form, Plato walks with the Macedonian swineherd, Confucius with the head-hunting savages of Assam.

(ख) आब वक्तव्य जे मिथिला भाषामे शुद्धता की थीक जकर आधार शब्द साधु मानल जाए तथा यदनुसार व्याकरणसँ शब्दसभ देखाओल जाए। व्याकरणसँ सिद्धत्वरूप शुद्धता नहि कहि सकैत छी, कारण जे व्याकरणक निर्माणसँ पूर्वहुँ शब्दमे शुद्धत्व रहबाक चाही। ओ जाहिसँ अर्थक बोध हो से शुद्ध थीक, इहो नहि, कारण, *देखैंए देखलौं* इत्यादि– अहुसँ अर्थक अवगति होइत अछि किन्तु शुद्ध नहि थीक, *देखैत अछि, देखलहुँ* इत्यादिए शुद्ध थीक। तस्मात् जाहि शब्दक श्रवणोत्तर ककरहु अनौचित्यक भान ओ वक्तृवैगुण्यक भावना नहि हो से शब्द शुद्ध थीक, अर्थात् अनौचित्य-प्रयुक्तवक्तृवैगुण्यभावनानुद्भावकत्वे भाषाशब्दमे शुद्धता थीक। *ऐ ठिमा बेरसतिकें चौरचन होइए* एहि वाक्यक श्रवणोत्तर प्रवीण लोकक मनमे एहन भावना होइत अछि जे ई अनुचित शब्द थीक, एकर वक्ता भाषापटु नहि छथि, तस्मात् ओ वाक्य सर्वथा अशुद्ध थीक। अथवा केन्द्रस्थानीयपटुजनव्यवहृतत्वरूप शुद्धत्व कही। एतादृशे शुद्धता आनहु देशभाषामे मन्तव्य थीक।

दीनबन्धु झा १९४६

(ग) हमारे साहित्यकारों को आज भी यह उदार दृष्टि नहीं मिली है कि साहित्य के मन्दिर में किसी भी भाषा का औपभाषिक

स्वरूप भी उतना ही पवित्र, उतना ही प्रभावकारी और उतना ही उपादेय है जितना केन्द्रीय या परिनिष्ठित स्वरूप ।

गोविन्द झा १९७४

१. प्राक्कथन

मैथिली भाषाको जटिल भाषिक वैविध्यको समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन नभएकोले आजभन्दा ११६ वर्ष पूर्व मैथिली भाषाको स्वतन्त्र सत्ताको प्रख्यापक एवं यस भाषाका अप्रतिम सेवक, अनन्य साधक र प्रबल पृष्ठपोषक सर जार्ज एब्राहम ग्रिअर्सनले विचलित भएर यस भाषाको एक पदकोटि सम्बन्धमा आफ्नो पक्षपातपूर्ण अवधारणा निम्नानुसार व्यक्त गरे जसले आजसम्म मैथिलीका विद्वान्हरूलाई खिन्न पारेको छ :

> The *Maithil* [Maithili] verb delights in a redundancy of forms. Like all partially cultivated languages, it has few parts of which there are no two or three optional forms. These optional forms are not local peculiarities, but are all used by the same speaker as his fancy or as the rhythm of the sentence dictates. I cannot find out that they represent any different shades of meaning.

(Grierson 1881: 50)

स्पष्टतः ग्रियर्सन झुकिए: उनलाई थाहा हुनुपर्ने हो कि संसारको कुनै पनि भाषा अर्थात् प्राकृतिक भाषा वा भाषिक समुदाय एकै रङ्गको हुँदैन । वैविध्यपूर्ण र बहुरङ्गी हुनु प्राकृतिक भाषा वा कुनै पनि भाषिक समुदायको सामान्य विशेषता मानिन्छ । जस्तै– दक्षिण लण्डनको मानक अङ्ग्रेजी, बी.बी.सी. संवाददाताहरूको अङ्ग्रेजी, लण्डन शहरको कौकनी अङ्ग्रेजी, ब्ल्याक अङ्ग्रेजी, कानूनी भाषाको अङ्ग्रेजी, कौकटेल पार्टीको अङ्ग्रेजी, क्रिकेट खेलको प्रत्यक्ष प्रसारणको अङ्ग्रेजी– के यिनीहरू अङ्ग्रेजी होइनन् ? के यिनीहरू अङ्ग्रेजीको विविध स्वरूपको प्रतिरूप होइनन् ? त्यस्तै, कोही अर्थात् कुनै भाषाको कोही वक्ता सधैं एकै ढङ्गले बोल्दैन, बरु उसले विभिन्न प्रयोजनको लागि आफ्नो कौशल र दक्षता अनुरूप भाषाको विविध रूपको प्रयोग गर्दछ । अनि मैथिली भाषा अपवाद किन ? र यस भाषामा व्याप्त भाषिक वैविध्यको बाहुल्य कुनै अवस्तरीय भाषाको परिचायक किन ? बरु यस भाषाको वैविध्यको समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन गरी मैथिली भाषिक समुदायमा व्याप्त सामाजिक शृङ्खला र भाषिक संरचनामा विद्यमान तादात्म्यको सही निरूपण गर्नु राम्रो हुनेछ ।

शुरुमै एउटा अर्को कुराको स्मरण गराउनु उचित लागेको छ । ग्रियर्सनको प्रसिद्ध *भारतवर्षको भाषा सर्भेक्षण* (जो १८९० को दशकमा सम्पन्न भयो र १९०३-१९२७ मध्य प्रकाशित भयो) पछि अहिलेसम्म मैथिली भाषाका उपभाषाहरूको कुनै आधिकारिक भाषिक सर्वेक्षण गरिएको छैन । ग्रियर्सनको मैथिली उपभाषाको वर्गीकरण हाल गोविन्द झा (१९७४: ४४-५२, १९७८ 'भूमिका') द्वारा आलोचित भयो । तसर्थ मैथिली भाषाको

कुनै उपभाषाको सम्बन्धमा– मानक उपभाषा र अन्यान्य– विशुद्ध भाषावैज्ञानिक दृष्टिबाट केही भन्नु कठिन प्रतीत हुन्छ ।

यस आलेखको प्रारूप निम्न अनुसार हुनेछ : खण्ड दुईमा मानक मैथिली सम्बन्धमा केही प्रचलित अवधारणाहरूको वर्णन-विश्लेषण तथा मूल्याङ्कन गरिनेछ, खण्ड तीनमा मैथिलीको भाषिक वैविध्यको वर्णन प्रस्तुत गरिनेछ र खण्ड चारमा उपसंहारको रूपमा निष्कर्षवत् केही भनिनेछ ।

२. मानक मैथिली: केही अवधारणा

यो कुरा सर्वविदित छ कि मैथिली भाषा विकासोन्मुख भएपनि एउटा प्रामाणिक वा परिनिष्ठित वा शिष्ट वा मानक वा स्टैण्डर्ड भाषाको रूपमा प्रतिष्ठापित हुन सकेको छैन । पौल ब्रासको भनाइ छ कि भारतको बिहार राज्यमा १९६० को दशकमा चलेको 'मैथिली आन्दोलन' को असफलताको लागि यो एउटा प्रमुख कारक तत्त्व सिद्ध भएको थियो । उनकै शब्दमा:

> The failure to standardize the Maithili language is a most serious impediment to the long-term success of the movement. Individual scholars have made efforts in this direction, but it remains true that Maithili has developed much more slowly than the other major languages of India, that students have been afraid to study Maithili because they can never be certain if the form of the language taught to them will be the same form used by the out-side examiner, and that Maithili-speakers generally consider their language inferior for discourse outside the home.
>
> (Brass 1974: 68)

यस स्थितिमा पनि, सामान्यत: भारतवर्षको बिहार राज्यको उत्तरी दरभङ्गा, खास गरी मधुबनी[1] क्षेत्रको मैथिली उपभाषालाई मानक (साहित्यिक/औपचारिक/विशुद्ध/परिशुद्ध) उपभाषा मान्ने प्रचलन रहेको छ। यो प्रामाणिक वा मानक मैथिली कसैको मातृभाषा छ वा छैन– यस विषयमा विवाद उत्तिकै सम्भव छ जति यस प्रश्नमा कि अङ्ग्रेजीको मानक रूप आर.पी. (Received Pronunciation) कुनै अङ्ग्रेजको मातृभाषा छ कि छैन र त्यस्तै प्रामाणिक अमेरिकन अङ्ग्रेजीको अभिप्राय के हो ? यस्तो समस्या भए पनि मानक मैथिलीको सङ्कल्पनाको प्रचलन नत असम्भव छ नत त्याज्य । यस प्रचलनको आधार भाषावैज्ञानिक नभएर सामाजिक एवं भाषा- वैज्ञानिकेतर रहेको छ। जाति, शिक्षा, पारिवारिक/सामाजिक पृष्ठभूमि, सामाजिक मनोवृत्ति आदि जस्ता भाषावैज्ञानिकेतर कारक तत्त्वको पृष्ठभूमिमा यस मानक मैथिलीको आधारशिला स्थापित भएको छ र खासगरी ब्राह्मण एवं (कर्ण) कायस्थ जातिद्वारा आ-आफ्नो बोलीलाई उत्तम, स्तरीय र विशुद्ध मैथिली ठानी अभिमान गर्नु यस मानक मैथिलीको विशेषता मानिन्छ । अर्को शब्दमा, ब्राह्मण एवं कायस्थ जातिका मैथिली बोल्नेहरू एक प्रकारको कृत्रिम *we-they* भिन्नताको सृजना गरी प्रचण्ड रूपमा *we-ness* बाट ग्रसित छन् । बिहारको मैथिली आन्दोलनको असफलता यस दुई जातिको *we-ness* को संकीर्ण दृष्टिकोणको परिणति हो भन्ने कुरा ब्रासको अनुसन्धानबाट स्पष्ट रूपमा परिलक्षित हुन्छ । पुन: ब्रासकै शब्दमा :

> Maithil Brahmans and Kayasthas in North Bihar form an elite, similar to the *bhadralok* of Bengal, devoted to the language, culture, and traditions of Mithila and concerned with maintenance of the distinctiveness of their Maithil character and genealogical purity. However, elite Maithil castes have been ineffective in transmitting their sense of regional identity to the mass of the Maithili-speaking people, largely for three reasons. First, their orientation toward the distinctiveness of Maithili culture has placed less emphasis on the separateness of Maithili culture from other cultures in India than on its distinctive purity and devotion to all-India culture, particularly to Sanskrit education and orthodox Hinduism. Second, and partly, for this reason, the cultural gap between the elite castes and the rest of the population of Mithila has been very sharp. Third, the elite castes of the region have maintained the cultural gap by pursuing a policy of caste exclusiveness and adherence to principles of caste hierarchy and orthodoxy. These differences in social structure do not alter the objective facts that Maithils of all castes speak Maithili, but they do prevent the forging of the bonds of community necessary to the building of a common Maithili consciousness.
>
> (Brass 1974: 114-115)

ब्रासको अध्ययनको २१ वर्ष पश्चात् अर्थात् १९९५ ई. मा बिहारमा मैथिली आन्दोलन एकचोटि पुन: सगबगायो र सबैको आँखा मानक मैथिलीको स्वरूप र संरचनातिर पुन: केन्द्रित भयो। यस प्रसङ्गमा दीपककुमार गुप्ताको (१९९५) विचार अत्यन्त मननीय छ :

> मानक मैथिली की संरचना और उसके प्रति ब्राह्मण-कायस्थ के शुद्धतावादी नजरिये के कारण मैथिली खुद अपनी ही बोलियों से दो फांक है, जब कि बोलियों की इतनी विविधता शायद ही किसी भाषा को प्राप्त हो। यह विविधता भाषा की जीवंतता और गहरे जन-जुड़ाव की शक्ति का परिचायक होती है। मगर मानक मैथिली की संरचना और मानदंड ब्राह्मण-कायस्थ परिवार की बोली के आधार पर ही तय की गयी और अन्य तमाम बोलियों को प्रकारान्तर से कहा गया कि यह मैथिली नहीं, भ्रष्ट भाषा है। इस तरह जनभाषा मैथिली को जन से काट दिया गया, क्योंकि मैथिली शिक्षक सिर्फ ब्राह्मण-कायस्थ ही होते हैं, अन्य जाति अपवाद के तौर पर आज भी है।

ब्रासजस्तै गुप्ताको (१९९५) अभिमत छ कि :

मानक मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृति और अर्थव्यवस्था के मद्येनजर मैथिली बुद्धिजीवियों/भाषाजीवियों की भूमिका के विश्लेषण के वगैर न तो मैथिली आन्दोलन पर विचार किया जा सकता है न ही लोक चिन्ता, लोक रुचि और राष्ट्रिय मुख्यधारा को केन्द्र मे रखे बगैर मैथिली आन्दोलन की सफलता की कल्पना की जा सकती है। इसके दावे पर अविलंब पुनर्विचार की जरूरत है। जातीय आन्दोलन के स्वरूप और ब्राह्मण-कायस्थ के अलावा बृहत्तर समुदाय की भागीदारी के बिना मैथिली आन्दोलन के साथ जन दबाब बन पाना न तो कतइ संभव है न ही उचित।

साथै, मैथिलीको यो तथाकथित मानक उपभाषा मैले जानेबुझेसम्म मैथिली भाषाको परिशुद्ध ऐतिहासिक-भाषावैज्ञानिक र खासगरी ध्वनिवैज्ञानिक अध्ययनमा कुनै किसिमले हितकर सिद्ध हुँदैन– किनकि यो मानक मैथिलीको स्वरूप त लिखित शब्दको निर्माणार्थ देवनागरी लिपिका वर्णहरूको साक्षात् ध्वन्यात्मक प्रतिरूप हो जो जस्तोको त्यस्तै क्रमिक रूपमा एक पछि अर्को जोडिएको जस्तो प्रतीत हुन्छ। यादवको (1984b: 157) मतानुसार:

> Furthermore, the 'standard' ('formal'/'literary') dialect of Maithili renders itself both uninteresting and unilluminating for serious phonetic and phonological research for the simple reason that it is in essence a direct phonteic characterization of Devanagari orthographic symbols as they appear in concatenation to form written words in Maithili.

यसैले शिक्षित ब्राह्मण र कायस्थ जातिका वक्ताहरूको कथ्य भाषा पनि अति संस्कृतमय, ग्रन्थिल, पाण्डित्यग्रस्त र अस्वाभाविक सुनिन्छ।

अन्ततः यस मानक मैथिलीको प्रसङ्गमा केही यस्ता भ्रामक एवं नक्कली विशेषता जोडिएको छ जसको कुनै विश्वसनीय भाषावैज्ञानिक आधार छैन। एउटै उदाहरण प्रशस्त हुनेछ। मैथिली भाषाको शब्दान्तको ध्वनिविज्ञानको सम्बन्धमा सुभद्र झाले हठपूर्वक दाबी गरेका छन् कि:

> In Mai, (i.e. Maithili) no word can end in a consonant.2

(S. Jha 1958: 119)

तत्पश्चात् समकालीन मैथिली पदान्त *अ* को स्वनसंरक्षण सम्बन्धमा अमेरिकी विद्वान् रौबर्ट जेफर्सले पनि लेखेका छन् कि :

> OIA final vowels have been retained in Bihari. Maithili and Magahi show those vowels in contemporary langauge.

(Jeffers 1976: 222)

सुभद्र झा र रौबर्ट जेफर्सको कथनलाई अति प्रामाणिक र अकाटच मानी जर्मन विदुषी मोनिका थील-होर्ष्टमानले पनि उहाँहरूको जस्ताको तस्तै अनुकरण गरी लेखेकी छिन् कि :

> Maithili phonetic words must never end in a consonant. Thus Hindi *hath* v.. Maithili *hath^*, the last vowel being non-syllabic (and therefore raised above the line).
>
> (Thiel-Horstmann 1978: 66)

गोविन्द झाले समेत लेखेका छन् कि:

> हिन्दी आदि भाषामे पदान्त *अ* केर उच्चारण नहि होइत अछि ओ अकारान्त शब्द हलन्त-जेकाँ बाजल जाइत अछि। परन्तु मैथिलीमे एकर उच्चारण, भलहिँ मन्द वा ह्रस्वतर हो, होइत अवश्य अछि। मैथिलीक शुद्ध उच्चारणक इहो एकटा विशेषता थिक। मिलाउ हिन्दी *हम्*, मैथिली *हम*। हिन्दीमे *हम्* शब्दक उच्चारणक अन्तमे दुनू ठोर बन्दे रहि जाइत अछि, किन्तु मैथिलीमे अन्तमे मुख खोलि देल जाइत अछि, एही मुख खोललासँ अन्तिम स्वरध्वनिक स्फोटन होइत अछि।
>
> (गोविन्द झा १९७९: ९०

उपरोक्त कथनहरूको सूक्ष्म परीक्षणबाट मेरो मनमा निम्नलिखित विचार उत्पन्न हुन्छ :

पहिलो, सुभद्र झा (र त्यस्तै रौबर्ट जेफर्स, मोनिका थील-होर्ष्टमान र गोविन्द झा) असत्य तथ्यको पृष्ठपोषणका दोषी छन्। सत्य त यो छ कि मैथिलीका शब्दहरू ध्वनिवैज्ञानिक रूपमा स्पष्टतः व्यञ्जनान्त हुन सक्दछ। विशद् वर्णनका लागि हेरौं: यादव (1948 a.b; 1996) तथा सुनीलकुमार झा (1984)।

दोस्रो, पदान्त *अ* को स्वनसंरक्षण वा स्वनलोपन/सङ्कोचनलाई मानदण्ड बनाई मैथिलीलाई मानक र अमानक/औपभाषिक मान्ने पद्धति जो मोनिका थील-होर्ष्टमान (1978:69. Table3) र गोविन्द झाले (1974:53: 1979: 9) कायम गरेका छन् त्यो मूल रूपमा जबर्जस्ती र अवैज्ञानिक छ।

तेस्रो, पदान्त *अ* को स्वलोपन भएकोले *अ* लाई अनुपस्थित माने पछि मैथिली ध्वनिविज्ञानको स्पष्ट, अद्वयार्थक, विश्वसनीय र सन्तोषजनक वर्णन-विश्लेषण हुन सक्दछ। आजको समयमा मानक कथ्य मैथिलीमा समेत *घर* शब्दलाई घ' र', *काल* शब्दलाई *का' ल'*, बाभन शब्दलाई *बा' भ' न'*, यादव शब्दलाई *या' द' व'* एवं *माछ* शब्दलाई *मा' छ'* उच्चारण गर्नु अति कृत्रिम, ग्रन्थिल, पाण्डित्यग्रस्त र हास्यास्पद हुनेछ। स्मरणीय छ कि नेपाली भाषामा पनि अद्यावधि *घर* शब्दको उच्चारण *घ' र'*, *गर* शब्दको उच्चारण ग' र' गरिन्छ र पदान्त *अ* को स्वनसंरक्षण हुन्छ।

३. मैथिलीको भाषिक वैविध्य

यस खण्डमा मैथिली भाषामा विद्यमान तीन प्रकारको वैविध्यको संक्षिप्त चर्चा गरिनेछ : (i) आन्तरिक वैविध्य[३], (ii) भौगोलिक/क्षेत्रिय वैविध्य, र (iii) सामाजिक वैविध्य ।

३.१ आन्तरिक वैविध्य

मैथिली भाषा समुचित रूपमा प्रामाणिक नभएको अधिकतम दृष्टान्त यस भाषाको बर्तनी (मात्रा) बाट प्राप्त हुन्छ: अर्थात् यस भाषाको उच्चारण र बर्तनीमा प्रशस्त आन्तरिक विविधता दृष्टिगोचर हुन्छ। यसको प्रमुख कारण यो छ कि मैथिलीको परम्परागत बर्तनी ध्वन्यात्मक छैन ।

विशेष उल्लेख्य रहेको छ ; मैथिलीको निम्न अग्र अवर्तुल स्वर ध्वनि (low front unrounded vowel) [æ] जसको आलेखन वैविध्यतिर हेर्दा अभिज्ञात हुन्छ कि यस भाषाको लैखिक वैशिष्ट्य र औच्चारिक वैशिष्ट्यमा तादात्म्य छैन । अर्को शब्दमा मैथिली भाषाको आन्तरिक भाषिक वैविध्य यस भाषाको औच्चारिक वैशिष्ट्यलाई प्रचलित देवनागरी वर्णमालामा आलेखित गर्न सक्ने असक्षमताको प्रतिफल हो। यो कुनै आश्चर्यको कुरा होइन: अङ्ग्रेजी भाषाको लागि प्रयुक्त रोमन लिपिको एउटै वर्ण <a> यस भाषाको अनेकौं ध्वनिको प्रतिनिधित्व गर्दछ। जस्तै [ə] 'ago'; [ei] 'name'; [a] 'father'; [æ] 'bat'; [i] 'spinach'; त्यस्तै अङ्ग्रेजी भाषाको एउटा ध्वनिं [ou] रोमन लिपिको विभिन्न वर्णसमूहबाट प्रतिनिधित्व हुन्छ। जस्तै 'go', 'throw'; 'sew'; 'beau'; 'though' । मैथिलीको केही उदाहरण हेर्नुस् :

(क) निम्न अग्र अवर्तुल स्वर [æ] एवं एहिलेल प्रयुक्त विविध वर्तनी व्यवस्था

आए ~ आय
माए ~ माय; खाएत ~ खायत
आए/य ~ याए/य ~ पियाएब
पिआएब ~ पिआयब ~ पियायब
इए/य ~ इयै ~ इयैह ~ ऐ ~ यै
इएह ~ इयह ~ ऐह ~ यैह
अए/य ~ ऐ/ै
पएर ~ पयर ~ पैर; कएटा ~ कयटा ~ कैटा

आन्तरिक विविधताका केही अन्य उदाहरणहरू तल हेर्नुस् :

(ख) ए ~ य ~ ऐ/ै
जएताह ~ जयताह ~ जैताह; अएलाह ~ अयलाह ~ ऐलाह; कए ~ कय ~ कै

(ग) अ ~ य   आ ~ या   औ/अउ ~ यौ
दिअ ~ दिय   धीआ ~ धीया   कहिऔक ~ कहिअउक ~ कहियौक

पीअर ~ पीयर   बीआ ~ बीया   अनिऔन्ह ~ अनिअउन्ह ~ अनियौन्ह

(घ) ै / औ ~ अओ

धरौलैन्हि / धरओलैन्हि ~ धरौलनि /धरओलनि

(ङ) आ ~ वा

बउआ ~ बउवा /बौवा; खोआ ~ खोवा ; नूआ ~ नूवा

जूआ ~ जूवा; कौआ ~ कौवा

अ ~ व/ब ~ म   अउ/ ौ ~ व

होअ ~ होव ~ होब' ~ होम'   पउलहुँ /पौलहुँ ~ पवलहुँ

(च)

व ~ ओ	व ~ ब	य ~ ज
वकील ~ ओकील	नव ~ नब	यश ~ जश/जस
वजन ~ ओजन	विद्या ~ बिद्या	यदि ~ जदि
वजह ~ ओजह	यादव ~ यादब	चर्या ~ चर्जा
		यादव ~ जादव/जादब

(छ)

ण ~ न	श ~ स
वाण ~ बान	आकाश ~ आकास/अकास
गुण ~ गुन	शावास ~ साबास

ड़ ~ र

छौंड़ा ~ छौंरा

छौंड़ी ~ छौंरी

गड़बड़ ~ गरबर

(ज) ष ~ ख ~ स

षष्ठी ~ खस्ठी ~ सस्ठी

~ *खख्ठी

~ *सख्ठी

~ *षख्ठी

दोष ~ दोख ~ दोस

केही अरू उदाहरणहरू तल दिइएका छन् ।

(झ) सन्त ~ संत

कम्पन ~ कंपन

चञ्चल ~ चंचल

कङगन ~ कंगन

(ञ) बाजैथि ~ बाजथि ~ बाजैथ'

(ट) कहलैन्हि ~ कहलन्हि ~ कहलैन्ह ~ कहलनि
छिऐन्हि ~ छिऐन्ह ~ छिऐन ~ छिअनि
कनैत ~ कनइत ~ कनयित
छथि ~ छैथ
रहथि ~ रहैथ
अछि ~ ऐछ
गेलहुँ ~ गेलौं ~ गेलऊँ
देख लेलैथि ~ देखि लेलैथि ~ देखि लेलथि ~ देखि लेलैथ
कीन लेलैन्हि ~ कीनि लेलैन्हि ~ कीनि लेलैन्ह ~ कीनि लेलनि ~ कीनि लेलैन, आदि ।

३.२ भौगोलिक/क्षेत्रीय वैविध्य

कुनै पनि प्रामाणिक भाषामा क्षेत्रीय उपभाषाहरूको निर्माण हुनु आश्चर्यजनक मानिँदैन । कुनै भाषिक समुदायको एक स्थलमा कुनै भाषिक वैशिष्ट्यको निर्माण भई त्यसको क्षेत्रीय स्तरमा विस्तार हुनु र पछि गएर सो स्थलगत वैशिष्ट्य क्षेत्रविशेषको वैशिष्ट्यको रूपमा परिचित हुनु सामान्य भाषिक परिवर्तन मानिन्छ। अङ्ग्रेजीमा मान्य स्कौटिश अङ्ग्रेजी, मान्य वेल्स अङ्ग्रेजी र मान्य अमेरिकन अङ्ग्रेजी समेत सर्वविदित छ ।

माथि उल्लेख भै सकेको छ कि मैथिली भाषाको क्षेत्रीय उपभाषाहरूको अद्यावधिक एवं विश्वसनीय भाषावैज्ञानिक/समाजभाषावैज्ञानिक सर्वेक्षण/अनुसन्धान/ क्षेत्रानुसन्धान अद्यावधि अप्राप्त छ। (हेर्नुस्, गोविन्द झा १९७४: ४८-५२; १९७८: ड ढ) त्यसैले यस सम्बन्धमा आधिकारिक रूपमा केही भन्नु कठिन छ। तथापि, नेपालको पूर्वी तराई प्रदेशको सप्तरी र मोरङ एवं यससँग जोडिएको भारतवर्षको पूर्वी बिहारको जिल्ला आदि क्षेत्रमा एउटा विशेष प्रकारको भाषिका नवीनताको (innovation) निर्माण भएको छ र यो क्षेत्र यस स्थलगत भाषिक विशेषताका लागि प्रसिद्ध भैसकेको छ। वस्तुत: यो क्षेत्र "æ -area" भनिन थालेको छ । केही उदाहरण तल दिइएको छ:

(ठ)	a-æ	:	खा लेलहुँ ~ खाएलेलहुँ ~ खाय लेलहुँ	[khæleləhu]
(ड)	ə-æ	:	भ' गेल ~ भए गेल ~ भय गेल	[bhægel]
			क' सकैत छी ~ कए/कय सकेत छी	[kæsəkəit chi]
(ढ)	e-æ	:	गेल ~ गाएल ~ गायल	[gæl]
			भेल ~ भाएल ~ भायल	[bhæl]

३.३ सामाजिक वैविध्य

जसरी क्षेत्रीय उपभाषा भूगोल-केन्द्रित छ त्यस्तै सामाजिक उपभाषा वर्ग वा समुदाय-केन्द्रित छ। अर्थात् कुनै भाषाको सामाजिक उपभाषा त्यस भाषाको प्रयोक्ताको

सामाजिक स्तर, शिक्षा, जाति, धर्म, आर्थिक समृद्धि, जीवन शैली आदिको द्योतक हुन सक्दछ एवं एक वर्ग र जातिको बोल्नेलाई अर्को वर्ग र जातिको बोल्ने मानिसबाट पृथक गर्न सक्दछ। समाजभाषावैज्ञानिकहरू यस्तो पृथकत्व स्थापित गर्ने भाषिक तत्त्वहरूको विश्लेषण गरी त्यस भाषिक भेदकहरूको (linguistic variables) सूची तयार गर्दछन्, अर्थात् कुन भाषिक वैशिष्ट्य कुन वर्ग (जस्तै : उच्च, मध्य, निम्न) र जातिको (मुख्यत: ब्राह्मण/कायस्थ र ब्राह्मणेतर) द्योतक हो त्यसको निरपेक्ष निरूपण गर्न प्रयत्नशील हुन्छन्।

मैथिली भाषिक समुदायमा जाति एउटा प्रमुख भेदक तत्त्व रहेको छ जो सामाजिक उपभाषाको प्रकृति र स्वरूपको स्पष्ट द्योतकसमेत रहेको छ। सूक्ष्म भाषिक विश्लेषण पश्चात् यो तथ्य प्रकट हुन्छ कि मैथिली भाषिक समुदायलाई जातिगत आधारमा मूलत: ब्राह्मण र ब्राह्मणेतर गरी दुई सामाजिक भाषिकाको (Sociolects) वक्ताको रूपमा वर्गीकृत गर्न सकिन्छ। यद्यपि बोल्नेको शिक्षा एउटा यस्तो सबल औ समदर्शी तत्त्व हो जो यस जातिलाई उछिनेर ब्राह्मणेतर तर शिक्षित वक्ताको कथ्य मैथिलीलाई समेत शिक्षित ब्राह्मणको मानक कथ्य मैथिली सदृश बनाइदिन्छ। यद्यपि यो विषय अनुसन्धेय रहेको छ कि ब्राह्मणेतर तर शिक्षित वक्ताको मैथिली औ अशिक्षित ब्राह्मणको बोलीमा अथवा ब्राह्मणेतर तर शिक्षित वक्ताको मैथिली औ शिक्षित ब्राह्मणको मैथिलीमा के सादृश्य र भिन्नता छ, यसको निरूपण गम्भीर क्षेत्रानुसन्धान (field research) पश्चात् मात्र गर्न सकिन्छ। अनुसन्धेत्सु मैथिली भाषाशास्त्रीका लागि यो एउटा उपयुक्त अनुसन्धानको विषय हुनेछ।

३.३.१ ब्राह्मण-भाषिका

ब्राह्मण-भाषिकाको– जुन मानक/शिष्ट/औपचारिक/साहित्यिक/विशुद्ध/ परिशुद्ध सादृश्य मानिन्छ र जसको औच्चारिक रूप लेख्य रूप समरूप हुन्छन्– त्यसका केही विशेषताहरू तल दिइएका छन्।

ब्राह्मणको सामाजिक भाषिकालाई (Sociolect) पृथक सत्ता दिने प्रमुख श्रेय *होएब* क्रियाको एउटा वैकल्पिक रूप *थिक*लाई छ[४]

(ण) ई रेडियो नेपाल थिक।
ई की थिक ?
ओ के थिकाह /थिकथि ?
नेपालक राजधानी काठमाण्डू थिक।
अहाँ ओकर के थिकिऐक ?
तोँ हुनकर के थिकहुन्ह ?

ब्राह्मणको सामाजिक भाषिकाका अन्य प्रमुख विशेषताहरू छन् कारक, विभक्ति, परसर्ग र मध्यमपुरुष अनादरार्थी सर्वनाम *तोँ* सँगै क्रियापदमा समानाधिकरण चिह्नको रूपमा नासिक्य ध्वनिको अधिक प्रयोग:

(त) (अहाँ) मोहनकेँ बजाउ।
हम काकाकेँ सोर पाड़लिऐन्हि
बाबुकेँ बोखार लागि गेलैन्हि।

माए सितुआसँ आम सोहलैन्हि ।
पण्डितसँ पुराण सुनु ।
ओ सबसँ जेठ छथि ।
हम पाएरेँ अएलहुँ ।
कोन कारणेँ अएलहुँ अछि ?
तोँ हमरा देखलेँ ?
तोँ के छेँ ?

ब्राह्मण-भाषिकामा अनिश्चयार्थक विशेषण र भूत कृदन्तवाट बनेको विशेषणहरूको पुलिङ्ग र स्त्रीलिङ्ग[४] दुवै रूप विद्यमान छ :

(थ)	**पुलिङ**	**स्त्रीलिङ**
	गोर मर्द	गोरि माउगि
	तीन पुरुष	तीनि स्त्री
	सुन्नर बालक	सुन्नरि बालिका
	सुतल पुरुष	सुतलि स्त्री
	मुइल पितामह	मुइलि पितामही
	जागल बालक	जागलि कन्या

परिमाणबोधक सार्वनामिक रूपहरूमा ब्राह्मण-भाषिकामा a तथा e स्वर æ जस्तो उच्चरित हुन्छ ।

(द)	a~æ	:	etba~etbæ
		:	otba~otbæ
		:	kətba~kətbæ
	e~ æ	:	etbe ~ etbææ
			otbe ~ otbææ

ब्राह्मण-भाषिकामा (र आजभोलि शिक्षित भाषिकामा समेत) पति-पत्नी एक अर्कालाई सम्बोधनार्थ मध्यमपुरुष आदरार्थी सर्वनाम *अहाँ* को प्रयोग गर्दछन् । त्यस्तै, पिता-पुत्र, काका-भतिजा, दाजु-भाइ आदि पनि एक अर्कोलाई *अहाँ* सर्वनामको प्रयोग गर्दछन् । यति मात्र होइन,सानो बच्चाका लागि समेत (जसको लागि सम्मानप्रदर्शन सामान्यत: अनिवार्य हुँदैन) आदरार्थी रूप *अहाँ* सर्वनामको प्रयोग गरिन्छ ।

अन्तत: अत्यन्त विचारणीय वस्तु यो छ कि सर्वनामको चयन र जातिगत अहङ्कार, सामूहिकता (Solidarity), तथा स्वनामधन्य श्रेष्ठता यी दुवैको सम्बन्ध तब सुस्पष्ट हुन्छ जब यो देखिन्छ कि अधिकांश ब्राह्मण वक्ता (शिक्षित र अशिक्षित दुवै) अधेड़ तथा शिक्षित ब्राह्मणेतर वक्ताको लागि समेत मध्यमपुरुष मध्य-आदरार्थी सर्वनाम *तोँ* र मध्य आदरार्थी सम्बोधन निपात *हओ* को प्रयोग गर्दछन् तथा असामान्य परिस्थितिमा अधेड तथा शिक्षित-ब्राह्मणेतर व्यक्ति विशेषलाई मात्र मध्यम पुरुष आदरार्थी सर्वनाम *अहाँ* र अति आदरार्थी सर्वनाम *अपने* बाट सम्बोधित गर्दछन् ।

निष्कर्षवत्, यो भन्न सकिन्छ कि मैथिली भाषाको ब्राह्मण-भाषिकाको यस तथाकथित "उच्च", साहित्यिक र ग्रन्थस्थ स्वरूपलाई ब्राह्मणेतर मैथिलीभाषी छात्र-

छात्राहरू "द्वितीय भाषा" को रूपमा सिक्दछन् र उनीहरूलाई यस कार्यमा प्रशस्त कठिनाइ हुन्छ ।

३.३.२ ब्राह्मणेतर-भाषिका

मैथिलीको भाषिक वैविध्यको असली स्वरूप तब परिलक्षित हुनेछ जब मैथिली भाषा-भाषी विभिन्न जातिका बोलीहरूको क्षेत्रानुसन्धान गरी त्यसको समाजभाषावैज्ञानिक अध्ययन-अनुशीलन हुनेछ। वर्तमानमा यो सम्भव छैन। तसर्थ ब्राह्मणेतर सामाजिक उपभाषाका केही प्रमुख विशेषताहरूको संक्षिप्त वर्णन-विश्लेषण तल गरिएको छ।

ब्राह्मणेतर सामाजिक भाषिकाको एउटा प्रमुख विशेषता छ *थिक* सहायक क्रियाको प्रयोगको सर्वथा अभाव । उपहासस्वरूप, ब्राह्मणको बोलीलाई *थिकाथिकी* अकारण भनिँदैन। मेरो एउटा प्रकाशोन्मुख आलेखको शीर्षक छ – "ई रेडियो नेपाल थिक आब थिकाथिकीमे समाचार सुनु।"

ब्राह्मण-भाषिकाको विपरीत ब्राह्मणेतर भाषिकामा कारक विभक्ति, परसर्ग र मध्यमपुरुष अनादरार्थी सर्वनाम *तों* सँग क्रियापदमा समानाधिकरण चिह्नको रूपमा नासिक ध्वनिको सर्वथा अभाव हुन्छ। तुलना गर्नुस् :

	ब्राह्मण-भाषिका	ब्राह्मणेतर-भाषिका
(ध)	नोकरकेँ बजाउ ।	नोकरके बजाउ ।
	बाबुकेँ बोखार लागि गैलैन्हि ।	बाउके बोखार लाइग गेलै ।
	माए चक्कूसँ आम सोहैत छथि ।	माए चक्कूस' आम सोहै हइ ।
	बाभनसँ पूजा कराउ ।	बाभनस' पूजा कराउ ।
	तोँ हमरा देखलेँ ?	तोँ हमरा देखले ?
	तोँ के छेँ रौ ?	तोँ के छे रौ ?

त्यस्तै, मध्यमपुरुष मध्य-आदरार्थी सर्वनाम *तोँ* तथा मध्य-आदरार्थी सम्बोधन निपात *हओ/ हौ* सँग क्रियापदमा समानाधिकरण चिह्नको रूपमा *अह* को प्रयोग नभई -*आ* के प्रयोग हुन्छ। तुलनीय छ :

	ब्राह्मण-भाषिका	ब्राह्मणेतर-भाषिका
(न)	तोँ कत' जाइ(त) छह ?	तोँ कत' जाइ छा ?
	हओ के छह ?	हौ के छा ?

अधिकांश ब्राह्मणेतर मैथिली वक्ता अशिक्षित भएकोले स्पष्टतः यस भाषिकामा "उच्च शब्दावली" (high vocabulary) को प्रयोग न्यूनतम रूपमा हुन्छ। साथै, ब्राह्मण भाषिकामा प्रयुक्त आदरार्थी बाहुल्यको दाँजोमा यस भाषिकामा आदरार्थीको प्रयोग ह्रासोन्मुख देखिन्छ :

(प)	(अहाँक) बाबुजी छथि ?	(ब्राह्मण-भाषिका)
	घरमे नइ हइ ।	(ब्राह्मणतेर-भाषिका)

ब्राह्मणेतर-भाषिकाको एउटा प्रमुख विशेषता यो पनि छ कि अधेड़ उमेरको अशिक्षित मैथिली वक्ता अहिले पनि पत्नीलाई *अहाँ* सर्वनामले सम्बोधन नगरी अन्यपुरुष निकट-निर्देशक अनादरार्थी सर्वनाम *ई* तथा यसबाट साधित अन्य रूपहरूको अधिकार

प्रयोग गर्दछ। साथै, यस भाषिकामा पति-पत्नी संवादमा *होएब* सहायक क्रियाको *छ* रूपको स्थानमा *ह* रूपको प्रयोग सर्वसाधारण मानिन्छ र क्रियापदमा समानाधिकरण चिह्नको रूपमा *ऐ/अइ* को प्रयोग हुन्छ, जस्तै:

(फ) ई कत' हइ ?
ई कहिआ जैतै ?

पति-पत्नी संवादमा अनुरोधात्मक/आज्ञात्मक वाक्यमा *अउक/औक* को प्रयोग सामान्य रहेको छ :

(ब) ई जाउक।
अबौक ने।
बजौक ने।

अन्ततः ब्राह्मणेतर-भाषिकामा *ग' जे बलू* को प्रयोग पनि सामान्य छ :

(भ) बाउ कहलकै ग' जे बलू आइ इस्कूल नइ जो। भैंसीए चरा दही।

ब्राह्मणेतर "निम्न" वर्गीय ग्रामीण तथा अशिक्षित पति-पत्नीको बातचितको भाषिकाको विशद् वर्णनको लागि हेर्नुस्: यादव (१९९५)।

४. उपसंहार

प्रश्न उठ्दछ : मैथिली भाषामा व्याप्त विस्तृत भाषिक वैविध्यका सम्बन्धमा के गर्नुपर्छ ? के औपभाषिक वैविध्यलाई– जसले यस भाषालाई अति समृद्धशाली बनाई प्रशस्त जनसंलग्नता समेत स्थापित गरेको छ– अन्त गर्न समग्र उपभाषालाई नष्ट (eliminate) गरिदिनु पर्छ ? के मैथिली अकादमीजस्तो संस्था अन्य समग्र उपभाषाको प्रयोगको बहिष्कारको नारा दिएर मात्र मानक भाषाको प्रयोगको आह्वान प्रारम्भ गरोस् ? अथवा अन्य कुनै निदानको खोजी होस् ?

यस सम्बन्धमा भाषाविज्ञान-साहित्यमा मूलतः तीनवटा निदानको उल्लेख पाइन्छ। पहिलो निदान यो प्रस्तुत भएको छ कि समग्र उपभाषालाई नष्ट गरेर मात्र मानक मैथिलीको प्रयोग वाञ्छनीय हुन्छ। औपभाषिक अथवा अमानक अथवा अपरिनिष्ठित मैथिली भाषालाई जरैदेखि उखेलेर फाल्ने सबल प्रयास विद्यालयस्तरीय मैथिलीको पठन-पाठनमा परिलक्षित हुन्छ जहाँ शिक्षकहरू (अधिकांश ब्राह्मण, कायस्थ जातिको) बालबालिकाहरूलाई तथाकथित अवस्तरीय मैथिली भाषा बोल्न निरुत्साहित गर्दछन् र यस्तो मैथिलीलाई स्पष्ट रूपमा अशुद्ध, ठेठ, गँवार आदि पक्षपातपूर्ण विशेषणबाट बेझिझक विभूषित गर्दछन्। साथै, ग्रन्थस्थ र परिनिष्ठित मैथिली बोल्ने बालबालिकाहरूलाई उत्साहित गरी उनीहरूको उत्कर्षको मार्ग प्रशस्त गर्दछन्।

भाषावैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीहरूको धारणा छ यो प्रवृत्ति विभिन्न कारणले घातक सिद्ध हुन सक्दछ। प्रथमतः यो प्रवृत्ति मनोवैज्ञानिक दृष्टिले घातक छ किनकि भाषा मात्र संप्रेषणको माध्यम नभएर कुनै समाज वा समुदायको सदस्यता र त्यसको पहिचान तथा अस्मिता समेतको प्रमुख द्योतक हुन्छ। कुनै बालबालिकालाई त्यसको भाषिक लक्षण

निम्नस्तरीय भएको बोध गराउनु प्रकारान्तरले निम्नस्तरीय भन्नु हो। यसबाट त्यस बालबालिकालाई विद्यालय तथा विद्यालयीय मान्यता परित्याग (reject) गर्ने प्रवृत्तिमा र साथै आफ्नो समुदायलाई घृणा गर्ने प्रवृत्तिमा पनि वृद्धि हुन्छ जो मनोवैज्ञानिक दृष्टिले स्पष्टत: अहितकर छ। दोस्रो, यो प्रवृत्ति सामाजिक दृष्टिकोणले पनि घातक सिद्ध हुन सक्दछ किनकि यसबाट यो आभास हुन्छ कि कुनै एक समुदाय अन्य कुनै एक समुदायभन्दा कम महत्त्वपूर्ण छ। यो पक्ष विशेष रूपमा यसकारण पनि उल्लेख्य छ कि भाषाको आधारमा जसलाई कम महत्त्वपूर्ण भनिन्छ ती हुन् सामान्यत: निम्नवर्गीय तथा ब्राह्मणेतर भाषिक समुदायका बालबालिका र जो यस वर्गको भाषालाई अवस्तरीय भनिरहेको छ ती हुन् सामान्यत: ब्राह्मण-कायस्थ जातिका अधेड़ शिक्षकहरू। तेस्रो, यो प्रवृत्ति व्यावहारिक दृष्टिले पनि अहितकर छ किनकि अधिकांश वक्ताहरू आफ्नो भाषा/बोलीलाई (idiolects) परिवर्तन गर्न चाहँदैनन् अर्थात् आफ्नो जातिगत अथवा समुदायगत अथवा समूहगत पहिचानको बलियो कड़ीलाई क्षीण गर्न चाहँदैनन्। बाल-भाषा-शिक्षणको अनुसन्धानबाट यो परिलक्षित हुन्छ कि वास्तवमा बाल-बालिका आफ्नो आमा-बाबुजस्तो बोल्दै बढेका हुँदैनन् र शिक्षकजस्तो बोलेर त अवश्य पनि बढेका हुँदैनन्। बरु आ-आफ्नो समूहका साथी (Peer group) जस्तो बोल्दै बढेका हुन्छन्। तसर्थ, यदि आफ्नो भाषिक अवस्तरीयताको लागि कुनै भाषिक समुदायका बाल-बालिकाको विकास अवरुद्ध भयो भने त्यस उपभाषालाई अथवा अन्य समग्र उपभाषालाई नष्ट गरिदिनु त्यसको समाधान हुन्छ ? कदापि हुँदैन।

दोस्रो निदान यसरी प्रस्तुत भएको छ कि वक्ताले आफ्नो भाषिकाको (ती तथाकथित अवस्तरीय भाषिका भए पनि) प्रयोग आफ्नो घर-आँगनमा, साथीहरूबीच, तथा विद्यालयको केही क्रियाकलापमा समेत गर्नुपर्छ र विद्यालयस्तरीय पठन-पाठनको कार्यसम्पादनको लागि स्तरीय भाषा सिकाउनु पर्छ। यसले स्तरीय तथा अवस्तरीय भाषिकालाई दुई स्वतन्त्र रूप दिएर यी दुवैबीच विद्यमान भिन्नताको स्पष्ट परिचय हुन्छ। उद्देश्य यो छ कि यसले बाल-बालिकाहरू आ-आफ्नो भाषिकालाई जायज, पवित्र एवं मर्यादापूर्ण भाषाको एक प्रकारको रूपमा प्रतिष्ठापित गर्ने छन् र स्तरीय भाषिकाको प्रयोग आफ्नो कौशल, आवश्यकता र वाञ्छनीयता अनुरूप गर्न सक्ने क्षमताको विकास गरी दुवै भाषिकालाई फेरबदल (Code-Switching) गर्नेछन्। अर्थात् परिस्थिति विशेषमा उसले कहिले आफ्नो भाषिकाको प्रयोग गर्नेछन् र कहिले स्तरीय भाषिकाको– श्रद्धेय स्व. पण्डित श्री हरिदेव मिश्रजस्तो आफ्नो खेतमा काम गर्ने नेवार ज्यापूसँग अति संस्कृतमय तथा ग्रन्थिल नेपाली/हिन्दीमा वार्तालाप गर्ने छैनन्।

तेस्रो निदान प्रस्तुत भएको छ कि कुनै पनि भाषाका वक्ताहरू त्यस भाषामा व्याप्त भाषिक विविधताको समुचित रूपमा समादार गरोस्।[६] भन्नुको तात्पर्य यो हो कि यदि कुनै बालबालिका आफ्नो अवस्तरीय भाषिकाको कारणले समाजमा अगाडि बढ्न पाइरहेको छैन भने यसको प्रमुख कारण त्यस समाज र त्यस भाषाका शिक्षकको त्रुटिपूर्ण भावना र मनोवृत्ति छ र यस त्रुटिपूर्ण भावना र मनोवृत्तिमा परिवर्तन हुनु नितान्त आवश्यक छ, भाषामा होइन। अर्थात् कुनै पनि भाषिकाप्रति उदारवादी, पक्षपातरहित एवं सहिष्णुतापूर्ण अवधारणाको विकासको आवश्यकता छ र समाजलाई यही मार्गमा प्रशिक्षित गर्नु पनि वाञ्छनीय छ।

मैथिली भाषाको औपभाषिक स्वरूपहरूलाई ग्राह्य औ समादृत गर्ने एउटा उचित प्रयास यो पनि हुनेछ कि यस भाषाको शब्दकोश वा शब्दसङ्ग्रहहरूमा प्रयुक्त मूल प्रविष्टिका साथै यस प्रविष्टिको आन्तरिक, क्षेत्रीय र सामाजिक वैविध्यलाई प्रतिनिधित्व गराउने समरूपहरू कि त सहायक प्रविष्टिको रूपमा कि त कोष्ठकमा उल्लिखित हुनुपर्छ । यसले यस भाषाका प्रयोक्ताहरूलाई औपभाषिक स्वरूप उत्तिकै पवित्र र उपादेय छ भन्ने अभिज्ञान हुनेछ, साथै यस स्वरूपहरूको प्रयोग गर्ने साहसमा पनि अभिवृद्धि हुनेछ । यस प्रयासको परिणति यो हुन्छ कि यस भाषाका कथ्य रूप पनि परिनिष्ठित हुँदै जानेछ र परिणामस्वरूप यस भाषामा पनि बङ्गला भाषा सदृश मानक लेख्य-रूपका साथै मानक कथ्य-रूपको निर्माण हुनेछ । अर्थात्, यस भाषामा कथ्यस्थ र ग्रन्थस्थ दुवै रूपको निर्माण हुनेछ जसले मैथिली भाषा-साहित्यलाई समृद्ध हुन प्रशस्त वल प्राप्त हुनेछ । अन्ततः यसले मैथिली भाषाको बौद्धिकीकरण (intellectualization) हुनेछ । अर्थात् यस माध्यमबाट मैथिली भाषाको वार्तालापीय स्तरदेखि वैज्ञानिक स्तरसम्मको भाषिक संप्रेषण-क्षमताको विकासमा अभिवृद्धि हुनेछ ।

टिप्पणी

१. मधुबनीको मैथिलीको पदोन्नति कसरी एउटा संयोग मात्र थियो त्यसको विलक्षण वर्णन रमानाथ झा (पाठक १९९५: ३५) निम्नानुसार गर्दछन् ।

> तत्कालीन मधुबनी सबडिवीजनक भाषा जे साहित्यिक मान्यता प्राप्त कएल तकर कारण ई छल जे विद्यापति, गोविन्द दास, मनबोध, चन्दा झा, म.म. मुरलीधर झा, डा. गंगानाथ झा, महावैयाकरण दीनबन्धु झा, महाकवि लाल दास, भोलालाल दास, सब मधुबनी सबडिवीजनक अथवा सन्निहित भूभागक वासी छलाह । आइ जँ प्रेमचन्द सन केओ प्रतिभाशाली व्यक्ति वेतियाक बोलीमे लघु-कथा लिखए लागथि, शरद्चन्द सन असाधारण लेखक भागलपुरक बोलीमे उपन्यास लिखथि तँ स्वतः ओ बोली सब साहित्यिक मान्यता प्राप्त कए लेत । मुदा भ्रष्ट मैथिली कहि ओकरा लोकनिक बोली कें जँ लांछित कए देबैक तँ की ओहि जनसमुदायक भावनाकें ठेस नहि पहुँचतैक ?

२. स्मरणीय छ कि सुभद्र झाको १९५८ को कृतिको प्रकाशन भन्दा ४१ वर्षपूर्व ग्रियर्सनले लेखेका छन् कि :

> Moreover, in Maithili a final short vowel is quite commonly omitted in ordinary speech.
>
> (Grierson 1917: 27)

३. मैथिली-लेखन क्षेत्रमा व्याप्त आन्तरिक वैविध्य/अव्यवस्था हेरेर रमानाथ झाले (पाठक १९९५: ३५-३६) उद्घोष गरेका छन् कि:

> हम ई नहि मानैत छी जे जँ मैथिली हमर मातृभाषा थिक, हम

मैथिली अहोरात्र बजैत छी तँ जे लिखब, जेना लिखब सएह साहित्यिक मैथिली होएत। जे कहैत छथि जे जहिना बजैत छी तहिना लिखब, तँ मैथिलीक स्वरूप अनन्त भए जाएत। हमरा ई विश्वास दृढ़ अछि जे मैथिलीकें जँ राजनीतिक मान्यता प्राप्त होएतैक तँ ताहिसँ पूर्व एकरा साहित्यिक मान्यता करबए पड़त ओ साहित्यिक मान्यता कोना मैथिलीकें प्राप्त होएतैक जँ मैथिलीक कोन एक गोट स्वरूप स्थिर नहि रहतैक।

म यो मान्दिन कि यदि मैथिली मेरो मातृभाषा हो, म मैथिली दिन-रात बोल्दछु भने जे लेख्छु, जसरी लेख्छु त्यही साहित्यिक मैथिली हुनेछ। जे भन्छु, जे जसरी बोल्छु त्यस्तै लेखौं भने मैथिलीको स्वरूप अनन्त हुन जान्छ। मलाई यो विश्वास दृढ छ कि मैथिलीलाई यदि राजनीतिक मान्यता प्राप्त हुन्छ भने त्यस अगाडि यसलाई साहित्यिक मान्यता दिलाउनु पर्छ। त्यो साहित्यिक मान्यता कुन मैथिलीलाई प्राप्त हुन्छ यदि मैथिलीको कुनै एक स्वरूप स्थिर रहँदैन।

४. सहायक क्रिया *'थिक'* सम्बन्धमा यादवको मत निम्नानुसार छ :

thik, a characteristic of the Brahmanic speech, is a full form of the verb 'to be' in Maithili. In affected styles, *thik* is optionally used as a copula in present tense forms. However, it is a highly marked form, and its use is on the decline now; *thik* is systematically replaced by *aich* and *ch-* in all educated styles of speech.

(Yadav 1996: 219)

५. यद्यपि स्त्रीलिङ्ग विशेषण रूपहरूको प्रयोग ह्रासोन्मुख छ।
ग्रियर्सनको शब्दमा:

As a matter of fact the distinction of gender is observed but loosely: except to paṇḍits grammatical gender, as distinct from natural gender, is almost unknown; that is to say, adjectives only become feminine when applied to female living creatures, ...

(Grierson 1881: 17)

सुभद्र झाको कथन पनि छ कि:

There is already the growing tendency of doing away with the feminine affix *-i* from such cases in the speech of the people of the younger generation ...

(S. Jha 1958: 355-356)

६. ठीक यही अभिमत अनेकौं वर्ष पूर्व रमानाथ झाले (पाठक १९९५: ४१) पनि अभिव्यक्त गरेका थिए:

... हमरा लोकनि जे केन्द्र मिथिलाक कहबैत छी ओ ऐतिहासिक कारणसँ अपन भाषाकें विशुद्ध मिथिला भाषा मानैत छी, अनकहु मानए

कहैत छिऐक, तनिकहु लोकनिक कर्तव्य थिक जे मिथिला भाषाक जे भिन्न-भिन्न विभाषा छैक, जकरा वोली कहैत छिऐक, तकर अस्तित्व स्वीकार कए ओकरा सबकें मैथिलीक अंग मानि ली ओ तखन ओकर बजनिहारकें ई गौरव अनुभव करए दिऐक जे ओहो सव मिथिला भाषा सएह बजैत अछि, मिथिला भाषा-भाषी अछि।

अनुवादकः चन्देश्वर शाह

नेपालमे मैथिली भाषाप्रति सेन राजालोकनिक दृष्टिकोण

हरिकान्तलाल दास

मैथिली भाषाक प्राचीनता

आकार आ क्षेत्रफलक दृष्टिस नेपाल छोट रहितहु बहुभाषी देश रहल अछि। एहि देशक विभिन्न भागमे विभिन्न भाषाक प्रयोग होइत अछि। नेपालक दक्षिणी-पूर्वी तराई क्षेत्र मिथिलाञ्चल इलाका मानल जाइत अछि। प्राचीन समयमे ई क्षेत्र मिथिला राज्य अर्न्तगत पडैत छल। धर्मशास्त्र आ इतिहासक अध्ययनस ज्ञात होइत अछि जे विदेह वा मिथिला जनपदक शासक सभ "जनक" नामस प्रसिद्ध छलाह। ओ "जनक" राजालोकनिक समय ३००० इश्वी पूर्वस ६०० ई. पू. धरि मानल गेल अछि। मिथिलाञ्चलक भाषा बहुत प्राचीन समयस मैथिली रहल अछि। ओना समय-समयमे एकर स्वरूपमे परिवर्तन हौइत रहलैक अछि। वाल्मीकि *रामायण* (सुन्दरकाण्ड सर्ग १०, श्लोक १०-१९) क आधारपर कहल जाइत अछि जे बहु भाषा विज्ञ हनुमानजी अशोक वाटिकामे सीताजीस हुनक मातृ भाषामे गप्प कएने छलाह। ओहि समयमे मिथिला जनपदक लोकभाषा प्राकृत छल। ओएह प्राकृत भाषा आधुनिक मैथिली भाषाक वीज थिक। जैन धर्म आ" बौद्ध धर्मक आचार्य सभ अपन-अपन धर्म ग्रन्थ रचना संस्कृतमे नहि कए प्राकृतक तत्कालीन रूप आवहठ्ठमे कएने छलाह। एहि भाषाक लेल मैथिली शब्दक प्रयोग सर्वप्रथम कालब्रुक कएलन्हि परन्तु एहि नामक प्रचारक श्रेय ग्रीयर्सन महोदयके छन्हि। ओना एहि भाषाक लेल "तिरहुतिया" शब्दक प्रयोग होइत छल। मैथिली भाषाक अपन लिपि अछि जकरा मिथिलाक्षर कहल जाइत अछि। एहि लिपिके "तिरहुता" सेहो कहल जाय लागल जहियास मिथिलाक भू-भाग तिरहुतमे पडल। बौद्ध धर्मक एकटा ग्रन्थ *ललित विस्तर* मे वैदेही लिपिक उल्लेख अछि जकरा मैथिलीक प्राचीनतम स्वरूप कहल जा सकैत अछि।

वर्तमान समयमे नेपालमे मैथिली भाषाक स्थान दोसर अछि। २०४८ सालक राष्ट्रीय जनगणना अनुसार नेपालक छ जिला सभमे अर्थात सुनसरी, सप्तरी, सिरहा,

धनुषा, महोत्तरी आ" सलाहीमे मैथिली भाषा पहिल स्थानमे अछि आ" मोरंगमे ई भाषा दोसर स्थान पर अछि। तथा नेपालक पूर्वमे मेची एवं पश्चिममे रौतहट, वारा, पर्सा, आदि जिला सभमे सेहो बाजल जाइत अछि। इतिहासकार वाबुराम आचार्यक कथन छन्हि जे मिथिला जखन "वज्जि" गणतंत्र अन्तर्गत छल, ओहि समयमे सप्तरीस महोत्तरी धरि आ" रौतहटस मकवानपुर आ" चित्तौन धरि मैथिली भाषाक प्रयोग होइत छल। ओहि समयमे तराई क्षेत्रक थारु लोकनिक भाषा सेहो मैथिली छल। ताहि समयमे तराई क्षेत्रमे दनुवार सभक जनसंख्या करीब आधा लाख छल जे अपनाके कर्णाट वंशक मानैत रहल। दनुवार सभक मातृभाषा मैथिली छल। एहि तरहें कहल जा सकैत अछि जे नेपालक पूर्वी तराई क्षेत्रमे मैथिली बोलचालक भाषा बहुत पहिनहिंस रहल अछि।

नेपालमे मैथिली साहित्यक उल्लेखनीय विकास वास्तवमे कर्णाटवंशी राजा लोकनिक समयमे भेल। एगारहम शताब्दीक अन्त दिस (1096-97 A.D.) मिथिलाक मध्य क्षेत्रमे एकटा नव शक्तिक उदय भेल छल, जकर प्रर्वत्तक छलाह– नान्यदेव। नेपालक विभिन्न वंशावलीस ज्ञात होइत अछि जे दक्षिण भारतस विहार प्रान्तक उत्तरी भागसँ नेपाल तराईक मध्य क्षेत्र धरि जे तिरहुत इलाकाक नामस जानल जाइत छल ओतहिं सिम्रौनगढमे कर्णाटवंशक स्थापना कएलन्हि। सिम्रौनगढ सम्प्रति वारा जिलामे पडैत अछि। नान्यदेव द्वारा स्थापित राज्य "तिरहुतराज्य" क नामस सेहो जानल जाइत अछि। करीब २२७ वर्ष धरि मिथिला क्षेत्रमे कर्णाट राजालोकनिक शासन रहल। मिथिलाक विद्वान लोकनिक कथन छन्हि जे राजनैतिक दृष्टिसँ मिथिलाक ई समय स्वर्णयुग छल। कारण एहि युगमे संगठित राज्य एवं शासन प्रणालीक स्थापना भेल छल। कर्णाट वंशक शासनकालमे मैथिली भाषार्के विशेष संरक्षण भेटलैक। एहि वंशक समयमे मैथिली भाषाक प्रथम गद्य कृति *वर्णरत्नाकर* लिखल गेल। एकर लेखक छलाह श्री ज्योतिरीश्वर ठाकुर। एहि पुस्तकस तत्कालीन मिथिलाक स्थितिक पता लगैत अछि। ज्योतिरीश्वर ठाकुर नाटकक परम्परा सेहो चलोलन्हि। हिनक *धर्त समागम* नाटक व्यंग्यक अपूर्व उदाहरण अछि। सिम्रौनगढक कर्णाटवंशक सभ राजालोकनि मैथिली भाषाके प्रोत्साहन देलन्हि। तकर प्रमाण ओत एक खण्डहरस प्राप्त किछु खण्डित शिलालेख अछि। खण्डहर निरीक्षणक क्रममे एकटा शिक्षकके राजा राम सिंहदेवक समयक Slab inscription भेटलन्हि जकर लिपि मैथिली अछि। गतवर्ष त्रिभुवन विश्वविद्यालयक इतिहास विषयक एकटा सेमिनार सिम्रौनगढमे भेल छल। ओतए इतिहास विषयक प्राध्यापक डा. तुल्सी राम वैद्यके नेतृत्वमे अनुसन्धान टोलीके एकटा खण्डित शिलालेख प्राप्त भेलन्हि जेकर भाषा सेहो मैथिली अछि। एहिं तरहें अनुमान लगायल जाइत अछि जे कर्णाट शासनकालमे मैथिली राजकाजक भाषा रहल होएत।

सेन वंश आ' मैथिली भाषा

मुसलमानी आक्रमणक कारणे सिम्रौनगढ ध्वंश (ध्वस्त) भेलाक डेढ-दुई वर्ष पश्चात तराई क्षेत्रमे सेनवंशक शासन स्थापित भेल। नेपालमे सेन राजा लोकनिक दूटा केन्द्र छल– पाल्पा आ" मकवानपुर। ई विवादास्पद अछि जे सेन सभ पहिने पाल्पा प्रवेश कएलन्हि कि मकवानपुर। पाल्पाक सेन वंशावली मे उल्लेख भेल अछि जे ओत" सेन सभ मकवानपुरस आयल छलाह। पुरातत्वविद श्री जनकलाल शर्माक कथन छन्हि जे भारतमे मुसलमानी शासन काल स्थापना भेलाकवाद बंगालक सेन सभ नेपाल प्रवेश करबाक

प्रमाण भेटैत अछि। तै मकवानपुरक सेनसभ बंगाल दिसस गेल हएवाक अनुमान कएल जाइत अछि। कालान्तरमे मकवानपुरक सेन राज्यक विस्तार पश्चिम दिस पाल्पा तक भेल छल। सेन राजा सभमे मुकुन्द सेन बहुत पैघ प्रतापी राजा भेल छलाह। हुनक राज्य पूव दिस वराहक्षेत्र तक छलन्हि। नेपालक वर्तमान मोरङ , झापा तथा विहारक पूर्णिया धरिक इलाका हुनक राज्य अन्तर्गत पडैत छलन्हि। मुकुन्द सेन अपन जीवन कालमे राज्य विभाजन कए मकवानपुरक क्षेत्र अपन पुत्र लोहाग सेनके देलन्हि। कहल जाइत अछि जे लोहाग सेन सेहो अपन पिता सन प्रतापी छलाह। ओ अपन विजय अभियानमे सम्पूर्ण तराई क्षेत्र जीति मकवानपुर राज्यक विस्तार कएलन्हि। किछु समय पश्चात पूव दिस विजयपुर आ" चौदण्डी मे सेहो पृथक-पृथक सेन राज्य स्थापित भेल। एहिं तरहें कहल जासकैत अछि जे सिम्रौनगढक पतन भेलाक बाद सेनराजा सभक तराई क्षेत्रमे वर्चस्व भ गेल।

सेन राजा लोकनिक समयमे सेहो मैथिली भाषाके समुचित स्थान भेटलैक। एकर किछु कारण छलैक। सर्वप्रथम सेन सभ बंगाल दिशिस आयल छल जत'क तत्कालीन राजा बल्लालसेन मैथिली भाषास अत्यन्त प्रभावित छलाह। दोसर बंगला भाषा मैथिलीक सन्निकट बुझैत जाइत अछि। महाकवि विद्यापतिक सम्बन्धमे ओकर सभके धारणा छलैक जे ओ मैथिल नहि, बंगाली छलाह। ई बहुत समयतक विवादक विषय रहल, तथापि ई तथ्य अछि जे मैथिली भाषाक विद्वान सभके बंगालक सेन राजा लोकनिकद्वारा सम्मान भेटैत छलैक। तेसर कारण ई जे मकवानी सेन राज्यस विजयपुर आ चौदण्डीक सेन राज्य धरिक क्षेत्र मैथिली भाषा-भाषी छल। तै मैथिली भाषाके प्रमुखता आ" संरक्षण भेटव स्वभाविके छलैक। एहि भाषाक कवि मकवानपुर दरवारक शोभा छलाथि जेना मैथिल कवि देवनाथ, राय राघव, राय हरि मकवानपुर दरबारमे शुसोभित रहथि। ग्रीयर्सनक कथन छन्हि जे कवि उमापतिकें राजा हरिहरसेनक दरवारमे संरक्षण प्राप्त छलन्हि। जतए रहि ओ कवि *पारिजात हरण* नामक प्रसिद्ध नाटक लिखलन्हि। एकर अतिरिक्त ओ कतेको गीत आ' गद्यक रचना कएलन्हि। एहि तरहें देखल जाइत अछि कर्णाटकालमे मैथिली भाषाके जे स्थान प्राप्त छलैक, ताहि स कम महत्त्वपूर्ण स्थान सेनराजालोकनिक नहि छलैक। मोरङसँ मकवानपुर तक अभिलेखक भाषा मैथिली छलहएवाक अनेकों प्रमाण भेटैत अछि। एहि सम्बन्धमे पुरातत्वविद् श्री जनकलाल शर्मा लिखैत छथि जे पूबमे विजयपुर आ" पश्चिममे पाल्पाक सेन राजा लोकनिक स्याहा मोहर, आ" ताम्रपत्र मैथिली भाषामे भेटब कोनो आश्चर्यक गप्प नहिं थिक। मोरङ पदावलीस ज्ञात होइत अछि जे मैथिली भाषाक साहित्यकार सभके मकवानपुर दरबारक अतिरिक्त विजयपुर आ पाल्पा दरबारमे सेहो निर्वाह होइत छलन्हि। विजयपुर राज्यक बोलचालक भाषा मैथिली छल। तैं राजकाज भाषा मैथिली बनाओल होएत। दन्तकाली मन्दिरक पुजारीके विजयपुरक सेन राजा द्वारा देलगेल आदेश पत्रक भाषा प्रमाणित करैत अछि जे ताहि समयमे मैथिली राजकाजक भाषा छल। पंडित तुलाराम के कोशी क्षेत्रक जमीन जागीर स्वरूप देलगेल छलन्हि,तकर भाषा सेहो मैथिली अछि। नेपालक एकटा इतिहासकार प्रेमबहादुर लिम्बूके कथन छन्हि जे सेन राजा लोहाग सेन किरात प्रदेश पर विजय कएलाक बाद ओ ओहि क्षेत्रमे किरताक्षरक स्थानमे मिथिलाक्षरके प्रचारित करोलन्हि। फलस्वरूप किरात संस्कृति मे मिथिला संस्कृतिक प्रभाव बहुत दिन धरि रहल। एहि सभ बात के अध्ययन कएलाकबाद कहल जासकैत अछि सेनराजा सभ द्वारा

मैथिली भाषाक नीक संरक्षण भेटलैक। ओ लोकनि अपन काम कारबाई तक मैथिली भाषा मे कएलन्हि। ई बहुत महत्त्वपूर्ण बात छल।

एहि तरहें मध्यकालमे सेन राज्यक विस्तार नेपालक पश्चिम भाग पाल्पासँ पूर्व दिस विजयपुर धरि देखल जाइत अछि ताहि अन्तर्गत तराईक विशाल भू-भाग परैत छलैक। एहि लेखमे "मैथिली भाषाक प्राचीनता" क शीर्षकमे संकेत देल गेल अछि जे "वज्जि गणतंत्र" क समयस मोरङ आ" सप्तरीस पाल्पा धरि थारुवर्गक घनगर आवादी छलैक आ" एहि वर्गक भाषा मैथिली, मिश्रित मैथिली, मैथिली मिश्रित भोजपुरी आ" हिन्दी छलैक। ओहि समयक सेन राजा सभ अपन बहुसख्यक प्रजाक भाषा प्रति सम्मानक भावक कारणे सरकारी आदेशपत्र, स्याहा मोहर क अतिरिक्त अभिलेख, बिर्ता-पत्र, दानपत्र, शिलालेख आदि प्राप्त भेल अछि, तकर भाषा मैथिली, मिश्रित मैथिली, मैथिली मिश्रित भोजपुरी देखल जाइत अछि। एहि तरहें मोरङ मकवानपुरक अभिलेखक भाषा मैथिली स भोजपुरी आ" तकरबाद नेपाली दिसि गेल अछि। एकर प्रत्यक्ष असर उपत्यकाक मल्ल राजा सभक अभिलेख पर सेहो देखल जासकैत अछि। ओतहु अभिलेखक भाषा मैथिली सेहो देखल जाइत अछि तेकर बाद नेपाली मे जायबाक क्रम लगैत अछि।

नीचा पाल्पा, मकवानपुर, तनहूँ आ" विजयपुरक सेन राजा सभद्वारा जारी कएल गेल मैथिली भाषामे किछु आदेश पत्र, स्याहा मोहर, लालमोहर, विर्तापत्र रजबन्धकी पत्र, दानबकसपत्र आ" अभिलेख प्रस्तुत अछि। ई पढलापर स्पष्ट होइत अछि जे सेन राजा लोकनिक मैथिली भाषा प्रति अत्यन्त उदार दृष्टिकोण छलन्हि आ" एहि भाषाके संरक्षण प्राप्त छलैक आ" ई भाषा राजकाजक भाषा सेहो छलैक।

मैथिली भाषासा सम्बन्धित पाल्पाक तीनटा सेनराजाक स्याहा मोहर

रुद्रसेनक स्याहा मोहर

स्थानः- पाल्पा, मिति वि. सं. १५७१, विषयः- बिर्तापत्र

स्वस्ति श्री रूपनारायणेत्यादि विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत श्री महराजधिराज श्रीमत् रुद्र सेन देवानां सदा समय विजयि नाम...

आगे नर नारायण दास उपाध्या तथा............ उपाध्या हम संकल्प वदै दिहल हिपखिजाउवा (जगहकनाम) मोही आना अवाद देलही। दिल साक्षी वुद्ध जुर थापा....................................

संवत् १५७१ वैसाख १३ सुदि इति।

स्रोत– *पाल्पाराज्यक इतिहास*

गन्धर्व सेनक स्याहा मोहर

स्थानः- पाल्पा, मिति वि. १७८० विषयः- बिर्तापत्र

स्वस्ति रूप नारायणेत्यादि विविद विरुदावली विराजमान मन्नोनत श्री महराजाधिराज श्री श्री श्री मद गन्धर्व सेन देवानां सदा समर विजयिनाम्.....

आगे धनराम जोइसि के कुसुमा षोला खेत मुरी १४० लगपास समेत डीही हम कुश वृति दिहल। दोमही से उपर दर्लामा दो वाटा गोहदी पोखरी समेत दिहल।

संवत् १७८० मिति वैसाख सुदि रोज ५ मु. प्रभास शुभम् . . . .

स्रोत– *पाल्पाराज्यक इतिहास स*

मुकुन्द सेन द्वितीयक स्याहा मोहर

स्थानः- पाल्पा, मिति वि. सं. १८०८ विषय बन्धकीपत्र

श्री रामः

स्वस्ति श्री रूपनारायणेत्यादि विविध विरुदावली विराजमान मन्नोनत श्री महराजाधिराज श्री श्री श्री मन्मुन्द सेन देवानां सदर समर विजयिनाम्....................

माधो ढकाल कै हाथवाला राषल कृष्ण भंडारीके षाइल षेत डीही लग पास सभ दिहल। तेकर रूपैया दस मासा जब देहि तब बाला छुटै।

मिति जेठ वदि थियौ १ रोज ५ संवत् १८०८ मुकाम पाल्पा शुभम्

स्रोत– पाल्पाराज्यक इतिहासस

पाल्पाक सेन राजा मुकुन्द सेन द्वितीयक अभिलेख (मैथिली भाषामे)

स्थानः बुटवल मिति सन् ११८१ वि. सं. १८३०

स्वस्ति श्रीश्वरश्चरणस्मरण पूर्वक रूपनारायणेत्यादि विविद विरुदावली विराजमान मन्नोनत श्री मन्हाराजा श्री श्री श्री मुकुन्द सेन वहादुर देवानां सदा समर विजयीनाम्:-

आगे बुटौलके उपरोहिती हरे कृष्ण उपाध्यायके लिषी दिहल। अपने षातिर जमासे उपरोहिती करही। गले ही षाहि....... के जगा मिति सावन सुदि ९ रोज १ सन् ११८१ साल मु. नुवाकोट शुभम्

स्रोत– पाल्पाराज्यक इतिहास

मकवानी राजा माणिक सेनक लालमोहर (मैथिली भाषा मे)
श्री सीतारामः नवातीक

स्वस्ति श्री रूपनारायणेत्यादि विविध विरुदावली वीराजमान् मन्नोनत श्री महराजाधिराज श्री श्री मन्मानिक देवानाम सदा शमर विजयनामः-------------

श्रं गोसाईंके प्रगना कोराडी मध्ये जनकपुर पही वैराही टोला श्री.................. के प्रीती कै दिइ इएही पत्र अपने षातिर ज्मा जोताय तलाश तरक द कै भोग्य करथ आसीरबाद श्री............ का महीम से दइकरथ। इति संवत् १७८० साल भाद्र शुदी रोज............ मोकाम मकवानपुर

स्रोत– प्राचीन नेपाल, अङ्क...... २६, माघ २०३०

तनहुक सेन राजा द्वारा देलगेल मैथिली भाषाक बिर्तापत्र, बकसपत्र
कमारिदत्त सेनक बिर्तापत्र

स्वस्ति श्रीश्वर चरण सरोरु हस्मरणेत्यादि श्री मद्राम चन्द्रवंशोभ्दव समराधित सा वसी लक्ष्मी नारायण श्री श्री श्री कमारि दत्त देवानां सदा समर विजयिनाम्..................

आगे गुणानन्द पंथज्यूके बिर्ता बकस भेल जिले मर्यादपुर तमे चितवन मौजे सहलौली गांव भरि साध सिवानकै के-के दान भोग वेतलव सर्व अङ्क पाय बकस भेल। अपन बिर्ता जानि वसहिं बसावहि सेवा षिज मतिहम हाजीर रहि।

संवत् १८२७ साल भाद्रपद सुदि ७ रोज २ मुकाम बदरकोना शुभम्।

तनहुक सेन राजा हरकुमार दत्त सेन द्वारा देलगेल रजबन्धकीपत्र (मैथिली भाषा)

स्वस्ति श्रीश्वर चरण सरोरुहस्मणेत्यादि श्री मद्रा चन्द्रवंशोद्भव सदासमाराधित साम्व शिव लक्ष्मी नारायण श्री मन्महाराज धिराज श्री श्री श्री मद् हरकुमार दत्तसेन देवानां सदा समर विजयिनाम.........

आगे हरिकृष्ण आचार्ज्जके वाधां वकस कलेसदि माडि मध्ये रामचन्द्र थापाक षायल मध्ये षेत मुरि १२० तेकर डिही लगा समेत बक्सल औ शिमलाचौर षरके वक्सल। बांधाक मोल रुपिया ५०४ अक्षरेपि पाचसय चार रूपाया सिक्का समसि अपन वाधा जानि अवल करहिं षाहि आशीर्बाद देल करहि। जव रूपया देव तव वाधा छुटि।

संवत् १८३१ मार्ग सुदि १० रोज २ मुकाम सिमलटार शुभम्।

दानबकसपत्र (मैथिली भाषामे)

आगे वलभद्र गोलिके वांधा वक्सल महारुद्र अधिकारिके षायलषेत मुरि ५० औं षवारि बोधा मध्ये षेत मुरि २० तेकर रूपैया शिम्का ३२७ अक्षरेपि तीन सय सताइस रहल पहल डीह लगा समेत बाधाके बक्सल अपने जानिके अंवल करु षाहु वसहु आसिर्बाद देहु।

संवत् १८३९ साल मार्ग वदि ४ रोज १ मुकाम गोलडाडा

स्रोत– *पूर्णिमा* वर्ष १४, अङ्क- १ २०३९ साल

विजयपुरक राजा कामदत्त सेनद्वारा मैथिली भाषामे जारीकएल गेल बिर्तापत्र

श्री

श्री विष्णु पीति

श्री कामदत्त सेन विजयपुर

आज्ञा श्री श्री श्री.......................... जीव

केशव झा जोसीके षडा मोरंग कटहरी मध्ये मोजे पोषरिया गांवो ठेक १ ससीम श्री......... षातीर कुश वीर्ती दहल। अपन षाती रज्माशै गुलजार कै दाम अङ्क मा) भेल .... प्रति शुष भोग्य कै आर्शिवाद देत रहथु इति संवत् १८२५ शाल माह अगहन शुदि ता. १ रोज मु............ चौत्राहा

स्रोत- *पूर्णिमा* वर्ष २०, अङ्क- १, २०४७

निष्कर्ष

एहि तरहें विभिन्न राज्यक सेन राजा सभ द्वारा मैथिली भाषामे जारी कएल गेल स्याहा मोहर, लालमोहर, बिर्तापत्र, रजबन्धकीपत्र, बकसपत्र देखल जाइत अछि। राज्यक बोली आ स्थान अनुसार सभ ठामक भाषामे किछु विषमता भेटैत अछि। जेना पाल्पाक राजाद्वारा प्रयोग कएल गेल मैथिली भाषा किछु भिन्न अछि। ओहि मे "दिहल", "करही" शब्दक प्रयोग अधिक ठाम देखल जाइत अछि। ओहि क्षेत्रक थारू सभक भाषा मिश्रित मैथिली रहला कारणे ओही तरहक मैथिली भाषाक प्रयोग भेल अछि। ओहि समयमे पाल्पा क्षेत्रमे मैथिली भाषाक इएह रूप छल। मकवानपुरक राजा माणिक सेन द्वारा जनकपुरक महन्थके बिर्ताक मैथिली भाषा शुद्ध रूप कहल जासकैत अछि। ओना मकवानी राजाक लालमोहरमे भोजपुरी मिश्रित मैथिली देखल जाइत अछि एकर कारण

छल। जनकपुर क्षेत्र विशुद्ध मैथिली भाषा भाषी क्षेत्र रहला कारणे, मैथिली भाषामे बिर्ता देलगेलैक। तहिना मकवानपुर क्षेत्रक आसपास थारू सभके मिश्रित मैथिली बोली भेलाक कारणें ओहि क्षेत्रमे जकरा बिर्ता भेटलैक, तकर भाषा मिश्रित मैथिली अछि। सप्तरी जिलाक बरमझिया गाममे एकटा चौधरी परिवारमे मकवानी राजा द्वारा प्रदान कएल गेल स्याहा मोहर अछि श्री ५ को सरकार पुरातत्व विभाग द्वारा प्रकाशित *प्राचीन नेपाल* क संख्या १३५ मे मकवानी राजा द्वारा देल गेल सप्तरीक बिर्तास सम्बन्धित किछु स्याहा मोहर छापल गेल अछि। ओहि स्याहा मोहरक भाषा सेहो मैथिली अछि। ओहि बिर्तापत्र स ई बात स्पष्ट भ' जाइत अछि ओहि समयमे थारू सभक मातृभाषा मैथिली रहला कारणे मकवानी राजा द्वारा जे बिर्तापत्र या रजबन्धकी जारी कएल गेल तकर भाषा मिश्रित मैथिली अछि वर्तमान समयक चित्तौन क्षेत्र ओहि समयमे तनहूँ अर्न्तगत पडैत छल। तखन ओत्यके भाषा मैथिली छल। तै ओहि क्षेत्रमे तनहूँक राजाद्वारा मैथिली भाषामे बिर्ता देबएके दृष्टान्त देखल जाइत अछि। विजयपुरक राजा कामदत्त सेन द्वारा जारी कएलगेल बिर्तापत्रक मैथिली भाषा बहुत किछु पाल्पाके राजा रुद्रसेन, गन्धर्वसेन आ मुकुन्द सेन द्वारा जारी कएल गेल स्याहा मोहरक भाषास मिलैत अछि। जेना दिहल" शब्दक प्रयोग पाल्पाक राजा लोकनि द्वारा भेल अछि। ओहि अनुरूप विजयपुरक अभिलेखमे इएह शब्दक प्रयोग कएल गेल अछि। ओना विजयपुरक अभिलेखमे "आर्शीवाद देत रहथु" शब्दक प्रयोग ओहि समयक शुद्ध मैथिली शब्द प्रयोग अछि। एहि तरहे" देखल जाइत अछि पाल्पा, मकवानपुर, तनहूँ आ विजयपुरक सेनराजासभ अपन-अपन स्याहा मोहर, लालमोहर, बिर्तापत्र, दानवकसपत्र मे अपन प्रजाक मैथिली भाषाक विभिन्न रूप प्रयोग कएलन्हि। तै निष्कर्षमे कहल जासकैत अछि सेनराजालोकनिक समयमे मैथिली भाषा सम्मानित अवस्थामे छल। एहि भाषाके राजकीय सम्वर्द्धन भेटैत रहलैक।

सन्दर्भ-सामग्री

१. घिमिरे विष्णु प्रसाद, वि. सं. २०४५, *पाल्पा राज्यको इतिहास,* घिमिरे प्रकाशन, चितवन, पृ- १८५, १९०, १९१

२. चौधरी राधाकृष्ण, १९८८ ई. *मिथिलाञ्चलक ऐतिहासिक सर्वेक्षण,* मिथिला गौरब प्रकाशन, पटना, पृ. १८, २१

३. ऐ. ऐ. १९७२, भाषा, साहित्य एवं संस्कृतिक प्रभाव, चेतना समिति, पटना, पृ.- ७, ८

४. झा, डा. रामदेव, १९८०, उमापति, मैथिली साहित्य अकादमी, पटना- पृ. १३

५. झा, दुर्गानाथ श्रीश १९९१ *मैथिली साहित्यक इतिहास,* भारती पुस्तक केन्द्र, दरभङ्गा।

६. ठाकुर विजय, १९८८ ई, मध्यकालीन मिथिला, इन्द्रालय प्रकाशन पटना, पृ.- ३३, ३४

७. दास, हरिकान्तलाल, २०५४ वि. सं., *प्रमुख धार्मिक स्थलको आधारमा सप्तरीको इतिहास,* अनुसन्धान परियोजना, यू. जी. सी. पृ.-

८. शर्मा, डा. रामप्रकाश, *मिथिलाका इतिहास,* संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, पृ.

९. सिन्हा, सी. पी. एन........... *मिथिला अन्डर द कर्णाटस,* जानकी प्रकाशन,

पटना
१०. ज्ञवाली, सूर्यविक्रम, वि. सं. २०३४ *इतिहासका कुरा,* नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान- पृ.- ७५, ७६

पत्र-पत्रिका

१. दास, हरिकान्तलाल, २०५३ नेपालक मिथिलाञ्चल क्षेत्र, **वाणी**, अङ्क २, मैथिली साहित्य परिषद, राजविराज
२. पन्त, महेशराज, २०४० तनहूँ का सेनराजाहरूको बिर्तापत्र, **पूर्णिमा,** इतिहास संसोधन मंडल, काठमाण्डौं
३. पन्त, महेशराज, २०३९, विजयपुरका सेन राजाको बिर्तापत्र, **पूर्णिमा,** इतिहास संसोधन मंडल, काठमाण्डौं
४. पजियार, तेजनारायण, २०५०, विर्तवाल थारु, **प्राचीन नेपाल**, पुरातत्व विभाग, काठमाण्डौं ।
५. लम्साल, देवी प्रसाद+भट्टराई, राधेश्याम, २०२८, जनकपुर अंचलको पूरातात्विक सर्भे, **प्राचीन नेपाल**
६. सुवेदी, राजाराम, १९९८ ई., मिस्ट्री अ) सिम्रौनगढ सिभलाइजेसन, भ्वाइस अ) हिस्ट्री, त्रि. वि. कीर्तिपुर

राजविराज

नेपालमा मैथिली भाषाप्रति सेन राजाहरूको दृष्टिकोण

मैथिलि भाषाको प्राचिनता

आकार र क्षेत्रफलका दृष्टिकोणले सानो भए पनि नेपाल बहुभाषिक देश रहेका छ। यस देशका विभिन्न विभिन्न भागमा विभिन्न भाषाको प्रयोग हुन्छ। नेपालको दक्षिण पूर्वी तराई क्षेत्रलाई मिथिलाञ्चल इलाका मानिदै आएको छ। प्राचीन समयमा यो क्षेत्र मिथिलाराज्यअन्तर्गत पर्दथ्यो। धर्मशास्त्र र इतिहासका अध्ययनबाट विदेह वा मिथिला जनपदका शासक "जनक" का नामले प्रसिद्ध थिए। ती जनक राजाहरूको समय ई. पू. ३००० देखि ६०० ई. पू. सम्म मानिन्छ। मिथिलाञ्चल क्षेत्रको भाषा धेरै प्राचीन समयदेखि मैथिली रहेको छ। हुन त समय-समयमा यसको स्वरूपमा परिवर्तन हुने गरेको इतिहास छ। वाल्मीकि रामायणको सुन्दर काण्ड सर्ग १० श्लोक १०-१९ को आधारमा भनिन्छ कि बहुभाषा विज्ञ हनुमानजीले अशोक वाटिकामा सीताजीसग उनकै मातृ भाषामा कुरा गरेका थिए। त्यति बेला मिथिला जनपदको लोकभाषा प्राकृत थियो। त्यही प्राकृत भाषा आधुनिक मैथिली भाषाको बीज हो। जैन धर्म र बौद्ध धर्मका आचार्यहरूले आ-आफ्नो धर्म-ग्रन्थको रचना संस्कृत भाषामा न गरेर प्राकृतको तत्कालीन रूप अवहट्टमा गरेका थिए। यस भाषाका लागि मैथिली शब्दको प्रयोग सबभन्दा पहिला कोलब्रुकले गरेको पाइन्छ, तर यसलाई प्रसिद्ध पार्ने श्रेय ग्रीयर्सन महोदयलाई छ। पहिला यस भाषाको लागि "तिरहुतिया" शब्दको प्रयोग हुन्थ्यो। मैथिली भाषाको आफ्नो प्राचीन लिपि छ। यसलाई मिथिलाक्षर पनि भनिन्छ। मिथिलाको भू-भाग तिरहुतमा गएदेखि यस लिपिलाई "तिरहुता" पनि भनिएको पाइन्छ। बौद्ध धर्मको एउटा ग्रन्थ *ललितविस्तर* मा वैदेही लिपिको उल्लेख छ, जसलाई मैथिलीको प्राचीनतम रूप मान्न सकिन्छ। वर्तमान समयमा नेपालमा मैथिली भाषाको दोस्रो स्थान छ। २०४८ सालको राष्ट्रीय जनगणनाअनुसार नेपालका ६ वटा जिल्लाहरू– सुन्सरी, सिरहा, सप्तरी, धनुषा, महोत्तरी र सर्लाहीमा बोलिने भाषामा मैथिली पहिलो स्थानमा छ भने मोरङ्गमा यो भाषा दोस्रो स्थानमा छ। यसका अतिरिक्त नेपालको पूर्वमा मेची र पश्चिम तिर रौतहट, बारा, पर्सा, रूपन्देही, कैलाली जिल्लाहरूमा मैथिली भाषा बोलिने गरेको पाइन्छ। इतिहास शिरोमणि बाबूराम आचार्यको भनाइ छ– मिथिला क्षेत्र "वज्जि गणतन्त्र"-अन्तर्गत रहेको बेला

सप्तरीदेखि महोत्तरी र रौतहटदेखि मकवानपुर तथा चित्तौनसम्म सर्वसाधारणद्वारा मैथिली भाषाको प्रयोग हुन्थ्यो। त्यसबखत तराई क्षेत्रका थारूहरूको भाषा पनि मैथिली नै थियो। त्यति बेला तराई क्षेत्रमा दनवारहरूको जनसङ्ख्या करिब आधा लाख जति थियो। दुनवारलाई आजभोलि दनुवार पनि भनिन्छ। यिनीहरू पारम्परिक विश्वासअनुसार आफूलाई कर्णाटवंशी हौं भन्छन। दनुवारहरूको मातृभाषा मैथिली नै थियो। यसरी नेपालको पूर्वी तराई क्षेत्रको भाषा मैथिली धेरै पहिलादेखिनै रहेको मान्न सकिन्छ।

नेपालमा मैथिली साहित्यको उल्लेखनीय विकास वास्तवमा कर्णाटवंशी राजाहरूको समयमा भयो। एघारौं शताब्दीको अन्ततिर (1096-97 A.D.) मिथिलाको मध्य क्षेत्रमा एउटा नया शक्तिको उदय भयो जसका प्रवर्तक थिए– नान्यदेव। नेपालका विभिन्न वंशावलीबाट थाहा हुन्छ– दक्षिण भारतको चालुक्य राजाका सेनापति नान्यदेवले उत्तरी भारततर्फ अभियान चलाउदा विहार प्रान्तको उत्तरी इलाका विजय गर्दै नेपाल तराईको मध्य क्षेत्र, जो त्यति बेला तिरहुत क्षेत्रको नाउले जानिन्थ्यो; त्यसको जङ्गलमा पर्ने वनदुर्ग सिम्रौनगढमा कर्णाटवंशको स्थापना गरे। सिम्रौनगढ हाल बारा जिल्लामा पर्दछ। नान्यदेवले स्थापना गरेको राज्य "तिरहुत राज्य" को नाउले पनि जानिन्छ। २२७ वर्ष सम्म मिथिला क्षेत्रमा कर्णाट वंशको शासन रहयो। त्यस समयमा मिथिलालाई एकीकरण गर्ने कार्य भयो। यसबाट तिरहुतले एकपल्ट फेरि शान्ति र समुन्नतिको अवसर प्राप्त गऱ्यो। मिथिलाका विद्वानहरूको मतअनुसार राजनैतिक दृष्टिले त्यो युग मिथिलाको लागि स्वर्ण-युग थियो। यसका दुई कारणहरू थिए – त्यस युगमा मिथिला क्षेत्रमा बलियो सङ्गठित राज्य र विकसित शासन प्रणालीको जन्म भयो। कर्णाटराजाहरूको शासनकालमा मैथिली भाषालाई विशेष संरक्षण प्राप्त भयो। यस समयमा मैथिली भाषाको प्रथम गद्य पुस्तक *वर्ण रत्नाकर* को रचना भयो। यसका लेखक थिए- श्री ज्योतिरिश्वर ठाकुर। त्यस पुस्तकबाट मिथिलाको तत्कालीन स्थितिबारे जानकारी प्राप्त हुन्छ। रचनाकार ज्योतिरिश्वर ठाकुरले नाटक लेख्ने परम्पराको पनि थालनी गरे। यिनले लेखेको *धर्त समागम* नाटक व्यङ्ग्य शैलीको एउटा अपूर्व उदारहणका रूपमा लिइन्छ। सिम्रौनगढका सबै राजाहरूले मैथिली भाषालाई प्रोत्साहन दिए। त्यस भाषाको समुन्नतिका लागि केही न-केही योगदान गरे। त्यहाको खण्डहरमा भेटाइएको केही खण्डित शिलालेखका टुक्राहरू त्यसका प्रमाण हुन। एकजना शिक्षकले खण्डहर निरीक्षण गरेको बेला कर्णाट राजा रामसिंह देवको समयको एउटा प्रस्तर अभिलेख (Slab inscription) भेट्टाए। यसको लिपि मैथिली थियो। गत वर्ष सिम्रौनगढमा त्रिभुवन विश्वविद्यालयका इतिहास विषयका शिक्षकहरूको एउटा सेमिनार भएको थियो। त्यहा अनुसन्धान टोलीको नेतृत्व गरिरहेका डा. तुलसीराम बैद्यले एउटा खण्डित शिलालेख फेला पारे। त्यसमा पनि मैथिली लेखिएको देखियो। यी सब कुरा बिचार गर्दा कर्णाट शासन-कालमा मैथिली भाषालाई राजकीय संरक्षण प्राप्त रहेको सहज अनुमान गर्न सकिन्छ।

सेन वंश र मैथिली भाषा

मुसलमानी आक्रमणका कारण सिम्रौनगढ ध्वस्त भएको डेढ/दुई सय वर्षपछि तराई क्षेत्रमा सेनहरूको शासन कायम भयो। नेपालमा सेन राजाहरूको दुईवटा केन्द्र थियो- पाल्पा र मकवानपुर। सेनहरू पहिला मकवानपुर पुगे कि पाल्पा भन्ने विषयमा

विवाद छ। पाल्पाको सेन वंशावलीमा उल्लेख भएअनुसार त्यहाका सेनहरू मकवानपुरबाट गएका थिए। पुरातत्त्वविद् जनकलाल शर्माकाअनुसार भारतमा मुसलमानहरूको शासन स्थापना भए पछि बङ्गालका सेनहरू नेपाल प्रवेश गरेका हुन। खासगरी मकवानपुरका सेनहरू बङ्गालबाट आएको हुनु पर्दछ भन्ने अनुमान लगाइन्छ। कालान्तरमा मकवानपुरका सेनहरू पाल्पासम्म गई त्यसलाई पनि आफ्नो एउटा केन्द्र बनाए। सेन राजाहरूमा मुकुन्द सेन सबभन्दा प्रतापी राजा भए। उनको राज्य पूर्वमा बराहक्षेत्रसम्म थियो। वर्तमान समयको नेपालको मोरङ तथा झापा जिल्ला र बिहारको पूर्णिया सम्मका इलाका उनको राज्यअर्न्तगत पर्दथ्यो। मुकुन्द सेनले आफ्नै जीवनकालमा राज्यको अंशवण्डा गरी मकवानपुरको इलाका आफ्नो एउटा छोरा लोहाग सेनलाई दिए। भनिन्छ कि लोहाग सेन पनि आफ्ना पिताजस्तै प्रतापी राजा थिए। उनले विजय अभियान चलाएर तराईको सम्पूर्ण क्षेत्रमा मकवानपुर राज्यको विस्तार गरे। केही समयपछि मकवानपुरबाट छुट्टिएर पूर्वतर्फ चौदण्डी र विजयपुर राज्यहरू बेग्लाबेग्लै कायम भए। यसरी भन्न सकिन्छ सिम्रौनगढको पतनपछि केही समय भित्रै सेनराजाहरूको समयमा पनि मैथिली भाषालाई सम्मानित स्थान प्राप्त थियो। यसका केही कारणहरू थिए– प्रथमतः सेनहरू बङ्गालतिरबाट आएका थिए। त्यहाका राजा बल्लाल सेन मैथिली भाषाबाट धेरै प्रभावित थिए। दोस्रो बङ्गला भाषाको मैथिली भाषासग सामिप्यता पनि छ। महाकवि विद्यापतिका सम्बन्धमा बङ्गालमा कस्तो धारणा पाइन्छ भने महाकवि मैथिल होइनन् बङ्गाली हुन्। त्यो विवाद हालसम्म रहेको छ, तर यो तथ्यलाई नकार्न सकिँदैन कि बङ्गालमा सेनहरूको समयअघिनै मैथिली भाषाका विद्वान्हरूले निकै सम्मान प्राप्त गरिसकेका थिए। तेस्रो कारण यो थियो– मकवानी सेन इलाकादेखि लिएर पूर्वमा चौदण्डी र विजयपुर सम्मको क्षेत्र मैथिली भाषाभाषीको थियो। त्यसकारण सेनराजाहरूका समयमा मैथिली भाषाले प्रमुखता पाई संरक्षण भेट्नु स्वभाविकै थियो। यस भाषाका विद्वान्हरू मकवानपुर दरबारमा शोभा बढाउथे। कवि देवनाथ, रायराघव र राय हरिजस्तो विद्वान्हरूलाई दरवारको संरक्षण प्राप्त थियो। ग्रियर्सनको भनाइअनुसार उमापति राजा हरिहर सेनका दरबारी कवि थिए। त्यहा अरू जस्तै उनलाई पनि संरक्षण प्राप्त थियो। मकवानपुर दरबारमै बसेर उनले आफ्नो प्रसिद्ध कृति *पारिजात हरण* रचना गरेका थिए। त्यो आफ्नो समयको चर्चित नाटक हो। यसबाहेक कवि उमापतिले गद्य र गीत रचना पनि गरेका थिए। यसरी भन्न सकिन्छ कर्णाट शासनकालमा मैथिली भाषालाई जुन स्थान प्राप्त थियो, त्यसभन्दा कम महत्त्वपूर्ण स्थान सेनहरूको समयमा थिएन। मोरङदेखि मकवानपुरसम्म मैथिली अभिलेखको भाषा रहेको अनेकौं प्रमाणहरू भेटाइन्छन। यस विषयमा पुरातत्त्वविद जनकलाल शर्मा लेख्नु हुन्छ कि पूर्वतिर विजयपुरदेखि पश्चिम पाल्पासम्मका सेन राजाहरूको स्याहा मोहर र ताम्रपत्र मैथिली भाषामा भेटिनु कुनै ठूलो आश्चर्यको कुरा होइन। मैथिली भाषाका साहित्यकारको निर्वाह मकवानपुर र विजयपुरको अतिरिक्त पाल्पा दरवारबाट पनि हुन्थ्यो भन्ने कुरा मोरङ पदावलीबाट थाहा हुन्छ। मैथिली भाषाका कविहरू पाल्पा दरबारको पनि शोभा बढाउथे। विजयपुर दरवारको बोलचालको भाषा मैथिली थियो। त्यहा राजकाजको भाषा पनि मैथिली नै हुन सक्ने अनुमान गरिन्छ। विजयपुरका सेन राजाले दन्तकाली मन्दिरका पुजारीलाई दिएको आदेश पत्रको भाषाले त्यति बेला त्यस राज्यमा मैथिली पनि राजकाजको भाषा थियो भन्ने प्रमाणित गर्दछ। पण्डित तुलारामलाई कोशी क्षेत्रसम्म

जागिर दिइएको थियो। उनको भाषा मैथिली देखिन्छ। यसले पनि विजयपुर राज्यमा त्यहाका सेनराजाले मैथिली भाषालाई प्रश्रय दिएको हुनुपर्दछ भन्ने कुरा प्रमणित हुन्छ। नेपालको इतिहासकार प्रेमबहादुर लिम्वको मत-अनुसार सेन राजा लोहाग सेनले किरात प्रदेश विजय गरेपछि त्यस क्षेत्रमा किराताक्षरको ठाउमा मिथिलाक्षरको प्रचार गराएका थिए। त्यही कारणले गर्दा किरात संस्कृतिमा मिथिला संस्कृतिको प्रभाव धेरै दिन सम्म रहेको देखिन्छ। यी सब कुराको अध्ययन गरेपछि पूर्व तर्फका सेन शासकहरूको समयमा मैथिली भाषाले राम्रो संरक्षण प्राप्त गरेको थियो भन्ने कुरा स्वीकार गर्न सकिन्छ। तिनीहरूले त आफ्नो व्यवहारका माध्यम मैथिलीलाई नै बनाएको कुरा पनि महत्त्वपूर्ण पाइन्छ।

यसरी मध्यकालमा सेनराजाहरूको राज्य विस्तार नेपालको पश्चिम इलाका पाल्पादेखि पूर्व विजयपुरसम्म भएको पाइन्छ। जसअन्तर्गत तराई क्षेत्रको विशाल भ-भाग थियो। यस लेखको “मैथिली भाषाको प्राचीनता” भन्ने उप शीर्षकमा भनिएको छ, “वज्जिगणतन्त्र”, कै समयदेखि मोरङ सप्तरीबाट पाल्पासम्म थारूहरूको घनावस्ती थियो र त्यस वर्गको बोलचालको भाषा मैथिली, मिश्रित मैथिली र मैथिली मिश्रित भोजपुरी थियो। त्यति बेलाका सेन राजाहरूले आफ्नो बहुसङ्ख्यक प्रजाको भाषाप्रति सम्मान गरी सरकारी आदेशपत्र, स्याहा मोहरको अतिरिक्त, अभिलेख, बिर्तापत्र, दानपत्र, बकसपत्रहरू मैथिली भाषामै जारी गरेका थिए। स्थानस्थानको बोली र भाषाअनुसार यस्ता आदेशपत्र वा बकसपत्र मैथिली भाषामा जारी गरेको देखिन्छ। यस्तै मोरङ मकवानपुरको अभिलेखको भाषा मैथिलीबाट भोजपुरी र त्यसपछि नेपालीतिर गएको प्रमाण पाइन्छ। यसको प्रत्यक्ष प्रभाव उपत्यकाका मल्ल राजाहरूको अभिलेखहरूमा परेको पाइन्छ।

तल पाल्पा मकवानपुर, तनह र विजयपुरका सेन राजाहरूले मैथिली भाषामा जारी गरेको आदेशपंत्र, स्याहा मोहर, लालमोहर, बिर्तापत्र, रजबन्धकीपत्र, दानबकसपत्रको नक्कल प्रस्तुत गरिएको छ। यसबाट सेन राजाहरूको मैथिली भाषाप्रतिको दृष्टिकोण अत्यन्त उदार देखिन्छ। यस भाषालाई उनीहरूले संरक्षण मात्र दिएका थिएनन्, राजकाजका भाषा पनि बनाएका थिए।

रुद्र सेनको स्याहा मोहर

स्थानः- पाल्पा, मिति वि. सं. १५७१, विषयः- बिर्तापत्र

स्वस्ति श्री रूपनारायणेत्यादि विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत श्री महराजाधिराज श्रीमत्‌रुद्र सेन देवानां सदा समय विजयिनाम … … … … … … … … … … … …. … … .. …

आगे नर नारायण दास उपाध्या तथा………… उपाध्या हम संकल्प वदै दिहल हिपखिजाउवा (जगहकनाम) मोही आना अवाद देलही। दिहल साक्षी वृद्ध जुर थापा………………………………

संवत्‌ १५७१ वैसाख १३ सुदि इति।

स्रोत– *पाल्पा राज्यको इतिहास*

गन्धर्व सेनको स्याहा मोहर

स्थानः- पाल्पा, मिति वि. १७८० विषयः- बिर्तापत्र

स्वस्ति रूपनारायणेत्यादि विविद विरुदावली विराजमान मन्नोनत श्री महराजाधिराज श्री श्री श्री मदगन्धर्व सेन देवानां सदा समर विजयिनाम्.....

आगे धनराम जोइसि के कुसुमा षोला खेत मुरी १४० लगपास समेत डीही हम कुश वृति दिहल। दोमही से उपर दर्लामा दो वाटा गोहदी पोखरी समेत दिहल।

संवत् १७८० मिति वैसाख सुदि रोज ५ मु. प्रभास शुभम्.......................................

स्रोत– *पाल्पाराज्यको इतिहास*

मुकुन्द सेन द्वितीयको स्याहा मोहर

स्थान:- पाल्पा, मिति वि. सं. १८०८ विषय बन्धकीपत्र

श्री राम:

स्वस्ति श्री रूपनारायणेत्यादि विविध विरुदावली विराजमान मन्नोनत श्री महराजाधिराज श्री श्री श्री मन्मुन्द सेन देवानां सदा समर विजयिनाम्..................................

माधो ढकाल कै हाथवाला राषल कृष्ण भंडारीके षइल षेत डीही लग पास सभ दिहल। तेकर रूपैया दस मासा जब देहि तब बाला छुटै।

मिति जेठ वदि तिथौ १ रोज ५ संवत् १८०८ मुकाम पाल्पा शुभम्

स्रोत– पाल्पा राज्यको इतिहास

पाल्पाको सेन राजा मुकुन्द सेन द्वितीयको अभिलेख (मैथिली भाषामा)

स्थान: बुटवल मिति सन् ११८१ वि. सं. १८३०

स्वस्ति श्रीश्वरश्चरणस्मरण पूर्वक रूपनारायणेत्यादि विविद विरुदावली विराजमान मन्नोनत श्री मन्महाराजा श्री श्री श्री मुकुन्द सेन बहादुर देवानां सदा समर विजयीनाम् :–

आगे बुटौलके उपरोहिती हरे कृष्ण उपाध्यायके लिषी दिहल। अपने षातिर जमासे उपरोहिती करही। गले ही षाहि....... के जगगा मिति सावन सुदि ९ रोज १ सन् ११८१ साल मु. नुवाकोट शुभम्

स्रोत :– *पाल्पा राज्यको इतिहास*

मकवानी राजा माणिक सेनको लालमोहर (मैथिली भाषामा)
श्री सीताराम नवातीक

स्वस्ति श्री रूपनारायणेत्यादि विविध विरुदावली वीराजमान् मन्नोनत श्री महराजाधिराज श्री श्री मन्मानिक देवानाम सदा शमर विजयनाम:--------------

श्री गोसाईके प्रगना कोराडी मध्ये जनकपुर पट्टी वैराही टोला श्री.................. के प्रीती कै दिइ इएही पत्र अपने षातिर ज्मा जोताय तलाश तरक द कै भोग्य करथ आसीरबाद श्री............ का महीम से दइकरथ। इति संवत् १७८० साल भाद्र शुदी रोज............ मोकाम मकवानपुर

स्रोत :– *प्राचीन नेपाल, अङ्क*...... २६, माघ २०३०

तनहुँको सेन राजा द्वारा दिएको मैथिली भाषाको बिर्तापत्र, बकसपत्र
कमारिदत्त सेनको बिर्तापत्र

स्वस्ति श्रीश्वरचरण सरोरु हस्मरणेत्यादि श्री मद्राम चन्द्रवंशोद्भव समराधित सा वसी लक्ष्मी नारायण श्री श्री श्री कमारि दत्त देवानां सदा समर विजयिनाम्....................

आगे गुणानन्द पतज्यूके बिर्ताबकस भेल जिले मर्यादपुर तमे चितवन मौजे सहलौली गाँव भरि साध सिवानकै के-के दान भोग वेतलव सर्व अङ्क पाय वकस भेल । अपन बिर्ता जानि वसहिं बसावहि सेवा षिज मतिहम हाजीर रहि ।

संवत् १८२७ साल भाद्रपद सुदि ७ रोज २ मुकाम बदरकोना शुभम् ।

तनहुँको सेनराजा हर कुमार दत्त सेन द्वारा दिएको रजबन्धकीपत्र (मैथिली भाषामा)

स्वस्ति श्री एवर चरण सरोरुहस्मणेत्यादि श्री मद्रा चन्द्रवंशोद्भव सदासमाराधित सम्व शिव लक्ष्मी नारायण श्री मन्महाराजधिराज श्री श्री श्री मद् हरकुमार दत्तसेन देवानां सदा समर विजयिनाम.........

आगे हरिकृष्ण आचार्ज्जके वाधां वकस कलेसदि माडि मध्ये रामचन्द्र थापाक षायल मध्ये षेत मुरि १२० तेकर डिही लगा समेत बक्सल औ शिमलाचौर षरके बक्सल । बांधाक मोल रुपिया ५०४ अक्षरेपि पाचसय चार रूपाया सिक्का समसि अपन बाधा जानि अवल करहिं षाहि आशीर्वाद देल करहि । जव रूपया देव तव बाधा छुटि ।

संवत् १८३१ मार्ग सुदि १० रोज २ मुकाम सिमलटार शुभम् ।

दानबकस पत्र (मैथिली भाषामा)

आगे वलभद्र गोलिके वांधा वक्सल महारुद्र अधिकारिके षायलषेत मुरि ५० औं षवारि बोधा मध्ये षेत मुरि २० तेकर रूपैया शिम्का ३२७ अक्षरेपि तीन सय सताइस रहल पहल डीह लगा समेत बाधाके बक्सल अपुने जानिके अंवल करु षाहु वसहु आसिर्बाद देहु ।

संवत् १८३९ साल मार्ग वदि ४ रोज १ मुकाम गोलडाडा

स्रोत– *पूर्णिमा* वर्ष १४, अङ्क- १, २०३९ साल

विजयपुरक राजा कामदत्त सेनद्वारा मैथिली भाषामे जारी गरेको बिर्तापत्र

श्री

श्री विष्णु पीति

श्री कामदत्त सेन विजयपुर

आज्ञा श्री श्री श्री.......................... जीव

केशव झा जोसीके षडा मोरंग कटहरी मध्ये मोजे पोषरिया गांवो ठेक १ ससीम श्री......... षातीर कुश वीर्ती दहल । अपन षातीर ज्माशै गुलजार कै दाम अङ्क मा) भेल................. प्रति शुष भोग्य कै आर्शिवाद देय रहथु इति संवत् १८२५ शाल माह अगहन शुदि ता. १ रोज मु........... चोंत्राहा

स्रोत- *पूर्णिमा* अङ्क १, वर्ष २०, २०४७

निष्कर्ष

यसरी नेपालमा विभिन्न ठाउका सेनराजाहरूले मैथिली भाषामा जारी गरेको स्याहा मोहर, लालमोहर, बिर्तापत्र, बकसपत्रको प्रमाण पाइन्छ। ठाउको बोलीअनुसार सरकारी भाषाको बोलीमा अन्तर देखिन्छ। ठाउअनुसार मैथिली भाषामा विषमता पनि पाइन्छ। जस्तो पाल्पाली, राजाले जारी गरेको मैथिली भाषा फरक छ। पाल्पाका राजाको स्याहा मोहरमा "दिहल" "करही" शब्दको प्रयोग धेरै ठाउमा भएको देखिन्छ। त्यस क्षेत्रका थारूहरूको बोली मिश्रित मैथिली रहेकाले त्यसप्रकारका शब्दहरूको प्रयोग गरिएको अनुमान गर्न सकिन्छ। सायद त्यति बेला मैथिली भाषाको त्यही रूप थियो होला। मकवानुपरका राजा माणिक सेनले जनकपुरको महन्तलाई दिएको बिर्ताको भाषा मैथिली भाषाको शुद्ध रूप थियो भन्न सकिन्छ। जनकपुर क्षेत्र शुरुदेखि नै मैथिली भाषाभाषी रहेकाले त्यस क्षेत्रका लागि शुद्ध मैथिली भाषाको प्रयोग गरिएको हुन सक्दछ। हुन त मकवानी राजाको लालमोहरमा मिश्रित भोजपुरी मैथिली हेर्न सकिन्छ। यसको कारण थियो मकवानपुरको वरिपरि इलाकाका थारूहरूको मैथिली बोलीमा भोजपुरी भाषा पनि मिसिएको देखिन्थ्यो। त्यसै कारण त्यस क्षेत्रमा मकवानी राजाले प्रयोग गरेको बिर्तापत्रमा मिश्रित भोजपुरीको प्रभाव देखिन्छ। सप्तरी जिल्लाको बरमझिया गाउको एउटा थारू परिवारमा मकवानी सेन राजाका समयको केही लालमोहर सङ्ग्रहित छ। श्री ५ को सरकार पुरातत्व विभागद्वारा प्राचीन नेपाल को अङ्क १३५ मा सप्तरी जिल्लाका ती लालमोहरहरू छन्।

त्यो स्याहा मोहर नै हो जसको भाषा मैथिली देखिन्छ। त्यस बिर्तापत्रबाट के प्रष्ट हुन्छ भने त्यति बेला मकवानपरदेखि सप्तरीका थारूहरूको भाषा मैथिली थियो। त्यसै कारण मकवानी राजाले एकजना थारू परिवारलाई मैथिली भाषामा सप्तरीको जग्गा बिर्ताको रूपमा प्रदान गरेका थिए। त्यस्तै माथि प्रस्तुत गरिएको तनहूँको राजा हरकुमार दत्त सेनले जारी गरेको बिर्तापत्र वा रजबन्धकीपत्रको भाषा मिश्रित मैथिली देखिन्छ। वर्तमान समयको चित्तौन त्यति बेला तनहूँ राज्यअन्तर्गत पर्दथ्यो र त्यति बेला त्यस क्षेत्रमा मैथिली बोल्नेहरूको संख्या बढी थियो। हरकुमार दत्तको बिर्तापत्र चित्तौनसग नै सम्बन्धित रहेकाले तनहूँको सेनराजाले मिश्रित मैथिलीको व्यवहार गरेको बुझिन्छ। यस्तै विजयपुरका राजा कामदत्त सेनले जारी गरेको स्याहा मोहरको मैथिली भाषा पाल्पाली राजाको स्याहा मोहरसग मिल्दोजुल्दो छ। पाल्पाली राजाले प्रयोग गरेको "दिहल", "दहल" शब्दका प्रयोग विजयपुरको स्याहा मोहरमा पाइन्छ। फेरि विजयपुरको स्याहा मोहरमा मैथिली शब्द "आर्शीवाद देत रहथु" देखिन्छ। यो शब्द त्यस क्षेत्रको लागि मैथिलीको शुद्ध रूप थियो। मैथिली भाषामा यसरी पाल्पा, मकवानपुर, तनहूँ र विजयपुरका सेनराजाहरूले मैथिली भाषामा जारी गरेको स्याहा मोहर, लालमोहर, बिर्तापत्र र वकसपत्रबाट सेनराजाहरूको मैथिली भाषाप्रति सम्मानको भाव थियो भन्ने तथ्य प्रमाणित हुन्छ। यो भाषा सेनराजाहरूको समयमा सम्मानित अवस्थामा थियो र यसलाई राजकीय सम्वर्द्धन प्राप्त थियो।

अनुवादकः हरिकान्तलाल दास

मिथिलाक किछु पूर्वाञ्चलीय लोक गायिकी विवेचन

धीरेश्वर झा 'धीरेन्द्र'

लोक गाथा– लोक गाथा दुइ गोट शब्द-लोक आ गाथासँ बनल अछि। प्राचीन संस्कृत साहित्यमे लोक आ वेदक मध्य किछु अन्तर भेटैत अछि। महाभाष्यमे कहल गेल अछि वेदान्तोः वैदिकः शब्दा सिद्धा लोकांच्छा लौकिकः तथ्यतः वेदसँ बाहरक विषय लोकमे अछि। लोकंक सम्बन्ध ओहि वर्गसँ अछि जे अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता, साहित्य चेतना तथा अहंकारसँ शून्य रहि एक परम्पराक प्रवाहमे जीवैत रहैछ अछि।

एहि वर्गद्वारा सुरक्षित दीर्घकाय गीत कथा, लोक गाथा कहबैछ। यद्यपि एहिमे पद्यक संग-संग गद्य सेहो रहैछ, मुदा ओहो लयात्मक। तथ्यतः लोक कंठमे सुरक्षित महाकाव्य होइछ। गाथा ऐतिहासिको भए सकैछ आ नहियो। एकरामे कल्पनाक उड़ान बेसी रहैछ। एकर किछु खास विशेषता होइत छैक, यथा– (क) एकरामे रचनाकार अज्ञात रहैत छथि आ हुनक व्यक्तित्वक सर्वथा अभाव रहैछ। (ख) अलिखित रहबाक कारणें मूल पाठ युगानुसार बदलैत रहैछ। (ग) एकरामे संगीत आ नृत्यक अभिन्न साहचर्य रहैत अछि। (घ) स्थानीयता एवं उपदेशात्मक प्रवृत्तिक एहिमे अभाव रहैछ। ((ङ) स्वभाविकता एहिमे सर्वत्र रहैत अछि। (च) टेक पदक बारम्बार पुनरावृत्ति एकर एक गोट विशेषता थिक तथा (छ) एकर कथा दीर्घ रहैछ।

मैथिलीक लोकागाथा काव्य अत्यन्त समृद्ध अछि। एहि मध्य विभिन्न युगक इतिहास, समाज दर्शन एवं लोक जीवनक चित्रण भेटैछ। यद्यपि काल प्रवाहमे बदलैत रूपक कारणें इतिहास किछु झपा गेल अछि, तथापि इतिहासक लेल ई आधार सामग्रीक काज करैछ। मुदा एकरा लेल सुक्ष्म अध्ययन आवश्यक अछि।

लोक गाथा द्विजेत्तर वर्गक वस्तु थिक आ एहिमे द्विजेत्तर वर्गक लोक नायकक चित्रण कयल गेल अछि। ई विभिन्न जातिक विभिन्न लोक गाथा अछि जे ओही जाति विशेषमे आदरक संग प्रचलित अछि।

मैथिली लोक गाथाक सृजन मिथिलाक नेपालक सीमामे बेसी भेल अछि। एकर कारण छल, एहि क्षेत्रक सांस्कृतिक सामरिक तथा ऐतिहासिक घटनाचक्रसँ सम्बद्ध होयब। गाथाकार लोकनि ओहि पृष्ठभूमिक चर्चा कयलनि तथा अनेकों अविस्मरणीय चरित्रक उपस्थापन।

मिथिला क्षेत्रमे दर्जनों लोकगाथा प्रचलित अछि। एहिमेसँ किछु पूर्वाञ्चलीय लोक गाथाक विवेचना करब एतए अभिप्रेरित अछि। ई लोक गाथा अछि– (१) लोरिकाइन (२) नैका बनिजारा (३) राजा सलहेस आ (४) दीना-भदरी।

(१) **लोरिकाइन**– एहि गाथाक सम्बन्ध यादव वर्गसँ अछि। एकर प्रधान पात्र लोरिकक नामपर एकर नामकरण कयल गेल अछि, मुदा एहिमे आनो-आनो पात्र सभ महत्त्वपूर्ण अछि। यथा– हरबा, सहदेव, मोचैन अंगार, बूढा कुब्बे, गजभीमल, उघरापंवारा, सोनिका-मोनिका, पहलवान राउत, सावर, कुलीन, सती मांजरि, चनैन, तेतलिया घोड़ा, वाजलि कौवा अछि। एकरा महराइ सेहो कहल जाइछ। ई एकगोट ऐतिहासिक जन महाकाव्य थिक।

ऐतिहासिकता– एहिमे वर्णित धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक घटनाक अध्ययन एवं विश्लेषणसँ प्रतीत होइछ जे एकर सम्बन्ध ईसाक एगारहम् शताब्दीक मिथिलाक अराजकतासँ अछि। एहि युगमे मिथिला तिब्बतीय, मखौरी, पाल, गुजर, प्रतिहार, राष्ट्रकूट तथा चंदेलक निरन्तर आक्रमणसँ जर्जर भए गेल। कोनो केन्द्रीय सत्ता नहि रहल। जे व्यक्ति कनेक शक्तिशाली होइत छल ओ कोनो भू-भागपर आधिपत्य कए ओकर अधिपति बनि जाइत छल। समाज मध्य शक्तिशाली व्यक्ति पैघ आ एकबाली मानल जाइत छल। सामाजिक स्थिति दुर्दशाग्रस्त छलै। जतए-ततए राजा नामसँ अभिहित शक्तिशाली व्यक्ति छल। अगोरा गामक राजा होउथु वा श्रीनगरक राजा मोचैन, सभ ग्रामपति छलाह मुदा हुनका राजा कहल जाइत छल। न्योरागढ़क प्रतापी राजा हरबा-बरबाक राज्य हिमालय खण्डसँ लए गंगा कात धरिक भू-भागपर पसरल छल। हिनक शक्तिक प्रसंगमे लोरिकाइनमे कहल गेल अछि–

हिन-हिन-हिन-हिन घोड़ा हिनकर
हाथी करइ चिघाड़
अकुना-मकुना के बताबए
सोलह सय दन्तार।

राजाक दरबारक ठाठक वर्णन कयल गेल अछि –

सोनाके जे पासी रहइ, रूपा पौवा आव
चारू पौवा ऊपर जरइ, माणिक पहुनाल
फुले सनक औढ़ना रहइ, फुले बिछौना साज
रतन ज्योति दप-दप करइ, हरबा के दरबार।

लोरिकाइनमे वर्णित अनाचारी उघरा पंवारक सम्बन्ध मालवाक परमार राजपूतक एकगोट अधिपतिसँ अछि जे मिथिलाका भू-भागपर शासन करैत छलाह। डा. उपेन्द्र ठाकुरक अनुसार परमार सभ कैलाश धरिक भू-भागपर शासन करैत छलाह। जे हो, लोरिक सभ अत्याचारीसँ संघर्ष कएल आ युद्धमे अपन नामी खंडाक जौहर देखाओल।

लोरिकाइन पात्र गांगेय पमार राजा हंश सँ पराजित भ' अपन पुत्र कर्णकेँ राज्य दए गंगा कातमे तपस्या करैत छलाह। लोरिककेँ परमार सभसँ शत्रुता छल। अतएव गांगेय हुनका सहयोग देलनि। लोरिकाइनसँ ज्ञात होइछ जे परमार आ हरबा-बरबामे राजनीतिक समझौता छल। लोरिक जखनि न्यौरागढ़क युद्धमे छलाह तँ ओतए उघरा

ञपंवारक छोट भाय घुघरा पंवारसँ हुनक युद्ध भेल। गांगेय हरवा-बरबाक विरूद्ध हुनक सहायता कयल। एहि सहायताक मूल कारण राजनीतिक छल। लोरिकक सम्बन्ध कोनो कोल राजासँ अछि जे सप्तरीक कोइलाहीसँ सम्बन्धित अछि। मोचैन एकर प्रतिनिधित्व करैत छलाह।

सहदेवक सम्बन्ध पालसँ अछि जे लोरिकाइनमे वर्णित तथ्य, तत्कालीन ऐतिहासिक स्थितिकेँ देखबैछ। लोरिक अपन वीरतासँ सभकेँ चकित कए दैछ।

भौगोलिक स्थिति– लोरिकाइन गाथाक अनुसार मिथिलाक भौगोलिक सीमा निम्न प्रकारसँ निर्धारित छल–

पूरब रे पुरनियाँ पुजलौ
पश्चिम रे विहार
उत्तर जे नेपाल पुजलियै
दक्षिण गंगाधार।

विहारसँ तात्पर्य एतए गण्डकीय किन्हेरमे अवस्थित ओदन्तपुरी विहारसँ अछि। लोरिकाइनमे हरदीक अधीनक अगौरा गामक राजा सहदेवक चर्चा आयल अछि। अगौरा गाम हरदीसँ चारि मील पश्चिममे पड़ैत अछि। सहर्षा जिलाक एहि गामसँ करीब एक मील पूर्व लोरिकाइनमे वर्णित देवहा धार बहैत छल। आब ई धार कोशीक गर्भमे विलीन भऽगेल अछि। एहि गाममे हालधरि एकटा राजाक डीह छल। ई राजा सहदेवक डीह छल से अनुमान कयल जा सकैछ। हरदीक पहचान हरदीक चौघाड़ासँ कयल जाइछ। एतए लोरिकक भगवती थान सेहो छल जकरा कोशी नष्ट कए देलक अछि। भगवती एखनहुँ ओहि गामसे सुरक्षिते छथि। ई स्थान सहरसा जिलाक सुपौल उप-प्रमण्डलान्तर्गत पड़ैत अछि। श्रीपुरक राजा मोचैनक जे चर्चा अछि ओकर सम्बन्ध सीरीपुर सुरवासिनी गामसँ थिक। ई गामँ हरदीसँ करीब चारि मीलपर अछि।

हरबा-बरबाक न्यौरागढ़क सम्बन्ध मधुबनी जिलाक लोकही थानाक न्यौरा गामसँ अछि। एहि गाममे एखनहुं एहि राजाक गढ़क भग्नावशेष सुरक्षित अछि। एहि गामसँ दू मीलपर हथरी गाम अछि, जकर पहचान हथरी बनसारसँ कयल जा सकैछ। न्यौर गामसँ करीब तीन मीलपर नासे खड़होरि अछि जे ओहि युगक सरियारी थिक। न्यौर गामक समीपे देवहा धार अछि जकरा घोड़-दौड़ सेहो कहल जाइछ। न्यौर गामसँ तीन मील दक्षिण दुहवी-सुहवी पोखरि छल। ई पोखरि हरबा-बरबाक प्रेयसीक नामपर छल। आब ई प्रायः नष्ट अछि। लोरिकाइनमे ओही दुनू रमणीक वर्णन आयल अछि।

"केराक वीर सन छह छह देह
मधु सन वर्ण, घोड़ीक आँखि सन नयन
दुपहरियाक फूलसन रक्तिम गाल
पान सन पातर ठोर, गजगण्ड सन उरोज
आ आसवसँ भीजल अधरपर आतुर मुस्की
विपुल नितम्बपर मणि मेखला ऊपर नीचा होइत
आ केशक लट-लटमे गूहल मोती जगमग करैत।"

न्यौरा गामक समीपक बाजुवन गाम लोरिकाइनक विजुवन थिक जे पटोर आ मानिक चोलीक क्रय-विक्रयमे प्रख्यात छल।

लोरिकाइनक उघड़ा गामक सम्बन्ध दरभंगा जिलाक उघरा गामसँ अछि। एहि

गाममे अद्यावधि उघड़ा पंवारक गढ़क भग्नावशेष प्राप्त अछि तथा गौरा गाम एहि गामक समीपेमे अछि। एहि प्रकारसँ लोरिकाइनमे आयल विभिन्न ठामक ठेकान भेटि जाइछ।

तंत्रक प्रभाव– लोरिकाइनमे वर्णित ठाम-ठाम तंत्रक प्रसंग जे उल्लेख अछि, ओहिसँ मिथिलाक लोक धर्मपर वज्रयानक प्रभाव दृष्टिगोचर होइछ, मुदा ओहिमे बौद्ध धर्मसँ बेसी शैव धर्मक प्रभाव देखल जाइछ। लोरिकाइनक अनुसार जखनि देशमे सर्वत्र शान्ति स्थापित भए गेल तँ लोरिक भगवती प्रदत्त खंडाकेँ देवहा धारमे फेकि अपन धर्मपत्नी मांजरि आ प्रेयसी चनैनकेँ भैरवी आ अपनाकेँ भैरव रूपमे राखि बसहा पर चढ़ि वर्णाश्रम परम्पराक निर्वाहक हेतु काशीक यात्रा कयलनि।

लोरिकाइनमे लोरिकक जेना चरित्र-चित्रण भेल अछि, ताहिसँ ओ शिव-शिवाक भक्त बुझना जाइत छथि। लोरिकाइनक सातो बहिनी दूर्गा सप्तमातृका थिकीह।

लोरिक आ हुनकर छोट भाय साबरक भगवतीक समक्ष संकल्प छल जे अवला, गाय आ लोकक रक्षा करब। अराजकताक स्थितिमे एहन संकल्प लेबाक पृष्ठभूमिममे हुनक शाक्त आस्था छल।

लोरिकाइनमे वर्णित मालिन कोसाक तांत्रिक प्रक्रिया मिथिलाक जीवनमे एखनहुं ओहिना गाओल जाइछ। मालिन कोसाक आचरणमे वज्रयानक प्रभाव परिलक्षित होइछ। कहल गेल अछि–

नील वर्णक आसनपर अग्नि वर्ण कोसा मालिन पीत वसन पहिरने बैसल छथि। लगैछ जेना ओ स्वयं पुण्यमयी हो। केराक नवकोसा सन उरोज, तील फूल सनक नाक, माधुरी फूलसनक ठोर, दाड़िमक फूलसन गाल आ नील अपराजित फूलसन आंखि छलैक आ केशक लट ओकर अरूझायल छलै। मालिन कदम्ब आ रुद्राक्षक माला हिरने छलीह। ओकर पीठ लगैक जे हुलकी दय कोंढ़-करेज देखि रहल हो।

उपर्युक्त उद्धरणमे नील आसन, अग्निवर्ण,पीत वसन कदम्ब आ, रुद्राक्षक माला आदि शब्द तान्त्रिक अर्थ बहुत व्यापक अछि। साधना मालामे तारक जांगुली, पर्णशवरी महाचीन तारा, एकजटा आदि कतिपय नामक उल्लेख पाओल जाइछ।

कोसाक नील वर्णक आसनसँ तात्पर्य नील तारासँ अछि जनिका महाचीन तारा तथा उग्रतारा सेहो कहल जाइछ।

लोरिकाइनमे वर्णित आनो-आनो दार्शनिक तथ्यक सम्बन्ध तन्त्रोसँ अछि जे मिथिलाक जीवनसँ पूर्णरूपे परिव्यात पाओल जाइछ।

लोरिकाइनमे उद्भवक प्रसंगमे एवं क्रमक वर्णन अछि। एहि कालक उपक्रममे कहल गेल अछि–

> "प्रणय कालमे
> रमणी छिड़ियाइत छैक
> चूड़ी झनझनाइत छैक
> आभूषण रनरनाइत छैक
> आ चान घमाइत छैक।"

प्रलय कालक सम्बन्ध जीवनक अन्तसँ अछि। एहि प्रसंगमे लोरिकाइनमे कहल गेल अछि–

"युद्ध कालमे
घोड़ा रमकैत छैक
योद्धा रमकैत छैक
शस्त्र झनकैत छैक
आ' तरूआरि चमकैत छै।"

एहि प्रकार जीवनक दुनू अवस्थाक चित्रण भेल अछि। मिथिलाक देशाचारक उत्कृष्ट उदाहरण थिक लोरिकके लिखल मांजरिक पत्र, जाहिमे कहल गेल अछि–

"मांजरि सिन्दुरसँ अपन सोहाग लिखलनि, काजरसँ अपन वियोग लिखलनि आ अपन कनगुरिया आंगुर चिरिकय ओहि शोणितसँ सावरक वीरगति, आ मैनावतीक सत्त लिखलनि।"

वस्तुत: मांजरिकपत्र लेखन कालमे तन्त्रपर आधारित भारतीय दर्शनक तथ्य सन्निहित अछि। लाल सिन्दुरसँ तात्पर्य निराकार ब्रह्मक साकार रूपसँ अछि। कारी काजर सँ तात्पर्य मोह वा तमोगुण थिक। कनगुरिया आंगुरकें चीरि शोणित बहार करबाक तात्पर्य रजोगुणसँ अछि जे क्रमश: सृष्टि (ब्रह्मा), स्थिति (विष्णु) तथा प्रलय (महेश) के गप्प करैत सृष्टि पक्रियाक दिग्दर्शन करबैत अछि।

नृत्य– लोरिकाइनमे ठाम-ठाम नृत्यक प्रसंगक जे चर्चा आयल अछि ओ शास्त्रीय नृत्यसँ सर्वथा भिन्न अछि। एहिमे वर्णित नृत्यक नाममे असिखण्ड नृत्य, रणचण्डी नृत्य, पूजा तथा वज्रयोगिनी नृत्यक नाम उल्लेख अछि। इहो नृत्यसभ तन्त्रसँ सम्बन्धित अछि।

काव्यात्मकता– लोरिकाइनक संरचना संस्कृत काव्य परम्परासँ भिन्न क्रमक अछि। ई काव्यक जन्म खण्ड, सती मांजरि खण्ड, चनैन खण्ड, रण खण्ड, सावर खण्ड, वाजिल खण्ड, संझौता खण्ड एवं भैरवी खण्ड नामक आठ खण्डमे विभक्त अछि। प्रत्येक खण्डक अपन नाम छैक आ जकर कड़ी महानायक लोरिकद्वारा एक दोसरासँ जोड़ल अछि। एहिमे चौपाईकें चौखडि आ दोहाके विश्राम कहल गेल अछि। श्लेष, यमक, आदि अलंकार यत्र-तत्र भेटैछ। एकर सन्निवेश अत्यन्त स्वाभाविक रीतिएँ भेल अछि। रसक दृष्टिएँ लोरिकाइनमे वीररस, शृंगार रस एवं करुण रसक प्रधानता अछि। एहि गायिकीक शब्द सौष्ठव अर्थ गौरव तथा ध्वनिक गतिशीलता दर्शनीय अछि उदाहरणक लेल किछु वानगी देखल जा सकैछ–

लोरिक वर्णन अछि —

"सखुआक सोहल सारिल आ सालक खम्भा सनसन जांघ,
घस्सल आ रस्सल पाथरक धोवियापाट सन छाती,
सिंहसन डाँर, वृषभसन कान्ह,
आ दन्तार हाथी सन उन्नत मस्तक छलनि
औ जखन चलथि तँ लागय जेना
निलांचल पर्वतक खण्ड रमकल जा रहल हो।"

हुनका खण्डाक वर्णन अछि —
"लोरिकक हन-हन करैत खण्ड विद्युत लता जकाँ
शत्रुक सैन्य घटापर चमकिरहल छल
ओ जेम्हरे लौकैक तेम्हरे रक्तक बुमकार छुटैक

लगैक जेना ओही खण्डक धारसँ
लिधुरक धरहरा, फेन आ फोका उठि रहल हो।"

लोरिकक प्रेयसी मांजरिक सौन्दर्यक विवरण अछि

"विजुरी रेहसन पातरि छितरि
मुँह उदीयमान सूर्य सन सिन्नुर औसल
पुरैनिक पातसन छह-छह देह
लाल कमल दल सन अरूणायल आँखि
जकर कोर कान दिस बढल हो।
सुग्गा सन नाक तिलकोडक फडसन अधरपर झुकल
रहि रहिके दाड़िम वीजक पांती छिटकि उठैक।"

एहिना चनैनक रूपक वर्ण अछि–
"चम्पक वर्ण, केराक थम्हसन जांघ
चढ़ल नाक खंजनि नयन
आ सात-सात हाथक केश।
आंगीमे रतन झालरि लागल
आ ताहिमे झकारी हीरा टांकल
ओ जखने हंसय तँ दामिनी दमकय
हंसिनी जेकाँ ठुमुकि ठमुकिकैँ चलय
आ परवा जकाँ घटुकि घटुकिकेँ बाजय
ओ जकरा दिस ताकय करेजकेँ सालि दैक
आ तकरा मनमे वासकनाक हूक पैसि जाइक
ओकर टिकुली अंगोर जकाँ छिटकैक
आ खोपा चानक पाछुक कारी पर्वत शिर जकाँ लगै।"

एहि प्रकारसँ लोरिकाइन साधना, शौर्य, त्याग आ मानवताक प्रतीक गाथा थिक।

एहिमे क्रूरताका प्रसंग सेहो आएल, मुदा मानवता ओकरापर हावी अछि। ई एकगोट अपूर्व गाथा अछि, जकरा प्रसंगमे जतेक लिखल जाएत सएह थोड़ हएत। कथावस्तु भाव एवं भाषा सभ दृष्टिसँ ई एकगोट महान् जन महाकाव्य थिक।

(२) **नैका बैनिजारा**– एहि गाथाक सम्बन्ध वणिक वर्ग सँ अछि। ई एकगोट प्रेमकथात्मक लोक गाथा थिक।

कथा संक्षेपमे एहितरहक अछि–

नैका नामक वणिक पुत्रक विवाह चम्पा नरेशक सुपुत्री फुलेश्वरीसँ भेलनि। नैका दुरागमन कराए जखन अपन पत्नी कें अनलनि तँ ओ पुनः व्यापार करबाक निमित्त बारह वर्षक महायात्रमे प्रस्थान कएलनि। मार्गमे ओ रातिमे एकगोट वृक्षक नीचाँ सुतल छलाह। ओही वृक्षपर विध-विधकरी नामक एकगोट दिव्य पंक्षीक जोडा छल। ओ पंछीसभ अपनामे वार्तालाप कएरहल छल, जाहि वार्तासँ नैकाकें पता चलल जे ओहि रातिक मुहूर्त वड़ शुभ अछि। एहि मुहूर्तमे जे व्यक्ति अपन पत्नी संग समागमन करत

ओकरा दिर्घायु, प्रफुल्ल, स्वस्थ, पराक्रमी, सर्वगुणसम्पन्न प्रतिभावान पुत्र उत्पन्न होयत।

एहि कथा कें सूनि नैका गोप्य रूपें अपन तिलान वाछापर चढि ओही राति अपन गृह आबि पत्नीक संग समागम कयलनि। लोकापवादसँ बचवाक हेतु ओ पत्नीके अभिज्ञान स्वरूप अपन औंठी दए यात्राक निमित्त प्रस्थान कयलनि तथा बारह वर्ष उपरान्त घर घुरलाह।

एहि अभ्यन्तर गर्भवती फुलेश्वरीकें ओकर छोटकी ननदि तिलकेश्वरी द्वारा बड़ दुर्गति भेलैक जकरा आचरणक प्रसंगमें गाथामे एहि तरहक उल्लेख अछि–

तिल फूल सनक हुनक नाक छलनि,
छह-छह कपोल अहंकारक साकार मूर्ति,
वाज पंक्षीसन सतत क्रूद्ध आ निड़रल-निड़रल आँखि
ओ क्षुब्ध डेग दैत चलथि आ लुब्ध दृष्टिमे ताकथि
हुनकर ठोढ़ रहिक-रहिकय काँपि उठैत छलनि
ओ कोनो व्यक्तिक सुन्दर सुमधुर आ सुमनोहर दृष्टिगोचर हो
तकरा देखिते हुनका जेना उकारि लेसि दनि
आ हुनका कोंढ करेजसँ-धधरा उठए लागनि।

तिलकेश्वरी द्वारा ओ घरसँ निकालि देल गेलीह आ पाछू कुम्भा डोमक हाथें बेचल गेलीह जे नारीक व्यापार करैत छल। अपन सतीत्वक रक्षा करैत एवं पतिक पुनर्मिलन चिर संचित अभिलाषाकें अपना मोनमे संयोगने फुलेश्वरीके अपनहि जेठकी ननदि द्रोण नगरक रानी तुलेश्वरी कीनि लेलनि जतए सँ फुलेश्वरीक नीक दिन आरम्भ भेल।

तुलेश्वरी हुनका नहियो चिन्हि दुलार करथि। तुलेश्वरीक आचरणक प्रसंगमें कहल गेल अछि।

धर्म प्राण सदिखन कोमल भावनासँ भीजलि
लोक कल्याण लए आकुल तिलेश्वरी

ओ बेर-बेर फुलेश्वरीकें कहथिन्ह जे लगैये जेना अहाँ हमर क्यों अप्पन छी।

नैका वनिजाराकें अएलापर जखन परिचय आ वस्तुस्थितिक उद्घाटन भेल तं ओ हुनका करेजमे लगाकऽ कहलथिन्ह हे रानी, हमर सभटा अपराध क्षमा करबैक। हम नहि जनलहुं जे अहाँ हमर अपने भाउज छी।

नैका वनिजाराक गीतक वानगी एहि प्रकारक अछि

तव वारी रे कानय जान-वेजान कानइ रे ना।
दुर्गा गे स्वामीके लऽकऽ कोहवर घर गेबोने केलियै रे ना
कहवर घरसँ हमरा निकालियो देलकै रे ना।
दुर्गा गे कोना बचवै अन्न-पानि बिन केना रहवइ रे ना॥

ऐतिहासिकता– नैका शब्दक सम्बन्ध नायक अर्थात् मुख्य व्यक्तिसँ अछि जकरा ज्येष्ठ सार्थ कहल जइत छल। ओकरहि वनिजारा अर्थात् वाणिज्यकार कहल जाइत छल। एहि शब्दक सम्बन्ध आथी-साथी शब्दसँ अछि जे सार्थवाह व्यापारीसँ लेल गेल अछि। 'आथी' शब्द संस्कृतक आर्थिसँ बहराएल अछि। एकर अर्थ धनिक होइछ आ 'साथी' शब्द संस्कृतक सार्थक शब्दसँ बहराएल अछि जकर अर्थ सार्थवाहक मुखिया होइछ। व्यापारीक अगुवा सार्थवाह कहबैत छल।

प्रधानत: कलवाड़, बनिया आ तेली जातिक लोक जे बड़दगाड़ी वा बड़दद्वारा व्यापार करैत छल, वनिजारा कहबैत छल। नैका वनिजाराक सम्बन्ध तेली जातिसँ छल। गाथामे नैकाक श्वसुरक प्रसंग सेहो कहल गेल अछि।

ग्रियर्सनक अनुसार वनिजारा दल जकर नायक नैका छलाह असंख्य बड़दगाड़ी द्वारा नेपालसँ चाउर आ तीसी कीनि पटनामे बेचैत छलाह जकरा कलकत्ताक माध्यमसँ विश्वक आन-आन भागमें पटनिया चाउरक नामें ख्याति प्राप्त छलैक तथा तीसीक मांग जर्मनीमे बड़ बेसी छलैक।

एहि गाथामे वर्णित चम्पा, दमनपुर, अरूवाघाट, कमलपुर, सोनदहक पहाडी, वरूण नदी, गयातीर्थ, सोनपुर, ताम्रलिप्त, जगन्नाथ, सुमात्राद्वीप, द्रोणनगर आदि नाम ऐतिहासिक अछि। यथा चम्पा अंग जनपदक राजधानी छल। आधुनिक भागलपुरक चम्पा नगर ओही चम्पाक स्मरण दियबैछ। एहिना गया आ जगन्नाथ प्रसिद्ध अछिए। आनो-आन नाम ऐतिहासिक थिक, यथा ताम्रलिप्त एवं सुमात्रा द्वीप। ताम्रलिप्त बंग जनपदक नामी बन्दरगाह छल आ सुमात्रा द्वीप तँ प्रसिद्धे अछि।

नैका वनिजारामे दस्युराज मकर, नागमणि धांगर, भिक्षु, देवपदम, बकर बनिजारिन, कनक मंजरी तथा पांच हजार महापोतक मालिक रत्नसेनक वर्णन अछि।

सातम-आठम शताब्दीमे भारतीय व्यापारक वड़ अभ्युदय भेल। नैका वनिजाराक गाथा ओही कालसँ सम्बन्धित अछि। दस्युक जे चर्चा भेल अछि ओहो स्वाभाविक समाज विरोधी तत्व सेहो व्यापारिये जँकां सक्रिय रहैत छल, जकर प्रतिनिधित्व दस्युराज मकर तथा नागमणि धांगर करैत छल।

भिक्षु देवपदम बौद्ध भिक्षु छलाह। बकर वनिजारिन प्राय: नेपाल आ तिब्बतक सँग बकराक माध्यमसँ व्यापार केनिहारि वनिजारिन छलीह।

सभ मिलाय नैका वनिजारा वणिक वर्गसँ सम्बद्ध एकगोट सुन्दर गाथा अछि।

३ राजा सल्हेस– राजा सल्हेसक गाथा दुसाध वर्गसँ सम्बद्ध अछि। ई स्वयं दुसाध छलाह। सल्हेसक पूजा प्रधानत: दुसाध जातिक लोक करैछ। प्रत्येक गाममे वर अथवा पीपरक गाछ तर सल्हेसक थान पाओल जाइछ आ आनो-आनो वर्गक लोक एहिपर निष्ठा रखैछ।

नेपालक वन-प्रान्तमे जँ बाट-बटोही बाट विसरल वा कोनो संकटमे पड़ल तँ राजा सल्हेसकें गोहरबैत अछि आ ओकरा त्राण भेटि जाइत छैक। जंगल आ पहाड़क दुसाध जन-जीवनमे लोकक अखण्ड आस्था सल्हेसपर छैक।

कथानक– सल्हेस मोरंगक एक पराक्रमी सुन्दर युवक छलाह। हुनक स्वभाव अत्यन्त लोकोपकारी छल। ओ जेहने बलवान छलाह तेहने सुन्दर सेहो रहथि। सल्हेस मोरंगसँ मुंगेर आबि पकड़ियाक राजा भीमसेनक चौकीदारी कएलनि। चोर चुहरमल राजाक महलमे चोरि कएलक जकर अभियोग सल्हेस पर लगलनि। सल्हेसके कारावास प्राप्त भेल। दौना मालिन जे सल्हेसक रूप आ गुणपर आकृष्ट छलीह आसावरी देवीक कृपासँ तथा अपन चातुर्यसँ सभ चोरिक माल आ चोरकें पकड़ाओल। चुहरमल दण्डित भेल तथा दौना आ सल्हेस सुखपूर्वक रहए लगलाह।

सल्हेसक गाथा चारि भागमे विभक्त अछि जकरा 'किला' कहल जाइछ। ई चारू महिसौथा किला, बाघगढ़ किला, योगिनी क्रिला आ पकड़िया किला थिक।

सल्हेस शब्द 'शैलेस' क परिवर्तित रूप थिक जकर अर्थ पहाड़क राजा होइछ।

तहिना दुसाध शब्द दुःसाध्यसँ बनल अछि जकर अर्थ प्रखर बलवान होइछ।

जे हो, चौकीदारसँ राजा बनबामे सल्हेसक शक्तिक हाथ छल।

ई गाथा पांचम-छठम शताब्दीक कहल जाइछ। मुदा ओतेक पुरान अछि नहि। एहिमे प्रयुक्त तमसुक, हुकुम, हाजिर, मोसाफिर आदि कतिपय शब्द अछि जे एकरा नवीन कहैछ।

ऐतिहासिकता– गाथामे आएल पकड़िया परगना मुंगेरक उत्तर पूर्वमे स्थित गोगरी थानाक अन्तर्गत अछि। ई क्षेत्र एक प्राचीन जातिक जमींदार वंशक अधिकारमे छल। एहि क्षेत्रमे भूमिहीन दुसाध जातिक प्रधानता छलैक। चुहरमल एवं ओकरा दलक आन-आन चोर-डाकूक सर्वदा आतंक रहैत छलैक। ई डाकू सभ राजनीतिमे सेहो भाग लैत छल।

मोरंगक विराटनगर राज तथा पकड़िया राजमे यद्यपि मित्रता छल तथा विराटनगरक राजा कुलेश्वर, सल्हेसक छोट भाय बुधेशवरक स्वसुर रहथिन तथापि चुहरमलक प्रपन्चमे आबि पकड़िया राजक सहयोगसँ विराटनगर पर आक्रमण भेल। सल्हेसक सहयोगसँ विराटनगर बाँचल आ एतहिसँ सल्हेसक अभ्युदय शुरू होइछ। देखैत देखैत ओ राजा भए गेलाह।

जंगल आ पहाड़क प्रतापी राजा सल्हेसक राजधानी महिसौथाक भग्नावशेष अहुखन सगरमाथा अंचलमे विद्यमान अछि। फूलवारी आ पतारि सेहो अछि जे हुनक साधनास्थली छल।

राजा महेश्वर भण्डारीक गढ़क भग्नावशेष सप्तरीक मानराजामे अहुखन उपलब्ध अछि।

एवंक्रमे नदीक नाममे कमला, बलान, खुट्टी, गागन, वागमती परूआने आदि मिथिलाक प्रसिद्ध नदी थिक।

तांत्रिक प्रभाव– मालिनक स्थान मिथिलाक तांत्रिक साधनामे वड़ विशिष्ट छल। ई लोकनि रूप, गुण, यौवन,मति, गतिमे सर्वोपरि तँ छलीहे संगहि अपन चेतनाक उद्यानसँ साधनाद्वारा विश्वमोहिनी माला प्रस्तुत करैत छलीह। दौना मालिन एही वर्गक प्रतिनिधित्व करैत छथि।

मध्यकालीन मिथिलामे जखन तंत्र-मंत्रक प्रधानता छल तँ तांत्रिक प्रक्रियाक सम्पादनमे मालिन मुद्राक रूपमे प्रयुक्त होइत छलीह।

मिथिलामे नैना जोगिन तथा हिरिया-जिरियाक दोहाय देबाक परम्परा वड़ विशिष्ट अछि। ई सभ मालिन छलीह। तथ्यतः मालिन एकगोट सम्प्रदाय छल जकर सम्बन्ध सम्पूर्ण पूर्वान्चलसँ छलैक।

राजा सल्हेसकें एहि वर्गक पूर्ण सहयोग प्राप्त छल।

सल्हेसक गाथामे चारू बहिन मालिनकें तरेगनाक गढ़ेश्वर राजा महेश्वर भंडारीक बेटीक रूपमे उल्लेख कएल गेल अछि जनिकर सम्बन्ध योगिनी गुफासँ छल।

वाघगढ़क राजमाता बनसप्ती जे सल्हेसक वहिन छलीह मिथिलाक जन-जीवनमे वड़ प्रख्यात छथि।

भाषा– राजा सल्हेस गाथाक भाषा बड़ रोचक अछि।

यथा– भेल भिनसरबा ठाढ़ि दरबाजा मालिन कर जोरि
मिनती करैए देवमुनिक नाम
सुनु इन्द्रासन छपन कोटि देवता जे

इन्द्र जनम देलन्हि
छठि राति सोइरी घरमे ताकि दिन राखि देल सल्हेस सन वर
हुनक कारण आंचर वन्हलौं
परपुरुष मूँह नहि देखलौंह
जनम पाय सिन्दूर नहि केलौंह
जाहि स्वामीक कारण
कांच बांसक कोहवर वन्हलौ
लाल पलंगपर सेज ओछौलौं
सिकिया चीरिकें बेनिया वनौलहुँ
गौरी आओत नाहि ।

उपर्युक्त गीत दौना मालिनक थिक ।

दौनाक आचरण पतिक अभावमे जीवन भारसन बुझना जाइत छैक–

हिआ हारिकें चललीह मालिन
कनैत चललीह मालिन स्वामीक उदेस
डेगे डेगे चललीह जीवनभरि
जाय जुमलीह अपना फुलवारी
फूल देखि धरती खसल मुरझाय
तखन लोटि लोटि कानए लगलीह फुलवारीमे।

उपर्युक्त पदमे विरह विदग्धा नारीक मनोदशाक विलक्षण वर्णन अछि ।

पकड़िया राजभवनमे चोरीक सम्वाद रानी हंसावती राजा भीमसेनकें एवंक्रमे दैत छथि ।

कानि-कानि अंचरा फारि कागज बनौलन्हि
नैनाक काजर पोछिके मोसि बनौलन्हि
वाम कनगुरिआकें चीरिकए कलम वनौलन्हि ।

एहि तरहें पत्र लिखबाक परम्परा वड़ प्राचीन अछि ।

दौना मालिनक प्रसंग पद अछि–

सोलहो सिंगार कैलन्हि
जादूक फुलडाली लेलन्हि
रंग-विरंगक फूल तोड़लन्हि
काँचे लौंग अरांची तोरलन्हि
चललीह स्वामीक उदेस ।

तथा पुन:

दौना मालिन दछिनक चीर पहिर लेलैन्ह
पाटी समारि लेलैन्ह
नैना काजर केलैन्ह
सौंसे सीकिए मिसि वैसौलैन्ह
हाथमे बांक पहिर लेलैन्ह

पैरमे काड़ा पहिर लेलैन्ह
मांगमे तारा-चन्द टिकुली साटि लेलैन्ह
असले कमसीन बनि गेलीह ।

संकट कालमे नारी रक्षिकाक काज करैछ, आ ओ चुहर मलक प्रपंचकें पराजित कए चोर आ मालकें बारामद करबैत छथि जे एकगोट असाधारण काज अछि। एहि तरहें सल्हेसक रक्षा होइछ ।

दीना-भदरी– ई लोक गाथा मुसहर जातिसँ सम्बद्ध अछि। मुसहर लोकनि अखनहुं दीना-भदरीक पूजा करैत अछि।

कथानक– जोगिया-जांजरि गाममे दीना आ भदरी दुई भाय रहैत छलाह। हुनका लोकनिक शौर्यसँ सभ प्रभावित छल। ओहि गाममे एकगोट धाइम रहैत छल। ओ दीना-भदरीकें जन देवाक हेतु कहलक। दीना-भदरी जनिका दासताक जीवनसँ घृणा तथा स्वच्छन्द आ स्वतन्त्र जीवन प्रिय छलनि, धाइमक प्रस्तावकें अस्वीकार कए देल।

एकर बाद ओ सभ अपन जातीय प्रवृत्तिसँ वशीभूत भए अपन माम बहोरनक संग कटैया वनमे शिकारक निमित्त आने दिन जकाँ ओहि दिन गेलाह। बाटमे कतिपय अमंगल बाधा उपस्थित भेलनि मुदा दृढ संकल्प व्यक्ति वाधासँ कतहु-त्रासित नहि भेल अछि। दीना-भदरी ओहि वाधा सभक अवज्ञा कए कजरा नदीकें पार कए कटैया वनमे पहुँचलाह।

भवितव्यता ओकर-आगू चलैछ आ ओ मनुष्यकें आन्हर बना दैछ। सर्वत्र शिकारक अभाव छलैक। दृश्य भयानक छल। एहि अभ्यन्तर दक्षिण दिससँ पोटरा गीदर वौरम नदी मे पानि पीबाक लेल आयल। भदरी पोटराकें देखि तीर चलौलक। पोटरा धराशायी भेल। मुदा राजा सल्हेस ओकरा अमृत दए पुनः जीवित कएल। ई क्रम कएबेर चलल। अन्तमे पोटरा दीना-भदरीकें मारि देल।

जोगिया गाममे दीना-भदरीक मृत्युक संवाद अहिरा गोआर अनलक। दुनूक श्राध कर्म भेल आ सभ किछु पूर्ववते चलए लागल।

दीना-भदरीक प्रेतात्माकें जोगिया गामक लोककें जीवन कार्यक्रम तथा आन-आन दिनचर्य देखबाक उत्सुकता भेलनि फलस्वरूप दुनू प्रेत योगिके भेष धारण कए जोगिया गाम अएलाह। गामक सम्पूर्ण वृतान्त बुझलाक उपरान्त ओ लोकनि अपन भाय वापस भेंट कएलनि। दीना-भदरीक प्रेतात्मा देवही धारक कातक दौरा गामक हिरिया तमोलिनकें जे हुनका लोकनिक शौर्यपर मुग्ध छलि, अपन प्रेयसी बनौलन्हि।

तदुपरान्त दीना-भदरीक ध्यान बगहा गाम दिस गेल। ओतए ताहिर मियाँ नामक एकटा कुजड़ा रहैत छल। ताहिरकें सोना आ वेना नामक दुईगोट कामधेनु गाय रहैक। ओहि गायक चरबाहक नाम छल गुलामी जट। गुलामीक शौर्यक डंका बजैत छल। ताहिरकें फेकुनी नामक एकगोट जादूगरनी बेटी छल। ओकरे जोगक बले गुलामी ककरो किछु नहि लगबैत छल।

दीना-भदरी गुलामीसँ एक चुरूक दूध पिबाक हेतु मँगलक। गुलामी घमंडसँ इनकार कए देल। एहिपर दुनू भाई के बहुत क्रोध भेलनि आ ओ सभ पोटरा गीदरक रूप धारण कए हुलकए लगलाह। गुलामी पोटराक सँग युद्धक हेतु उद्यत भेल, मुदा सल्हेसक सहयोगसँ दुनुभाई गुलामीकें पराजित कए देल। ओ हिनका लोकनिकें चिन्हि अधीनता कबूल कएलक तथा सतत् सहयोग देबाक वचन देलक।

दीना-भदरीक अन्तिम युद्ध कनौलीक जोरावर सिंह नामक राजपूतसँ भेल। जोरावर सिंह सेहो अपन शौर्यक हेतु प्रसिद्ध छल। ओकरा अखारामे सातसय पहलवान प्रतिदिन कुश्ती लड़ैत छल जोरावर सिंहक अनाचारसँ सभ लड़ैत पस्त छल। ओ नवकनियां सभकें घेरि कए शीलहरण करैत छल। एहिना ओ दीना-भदरीक दुनू महफाकें, जाहिमें हिरिया जिरिया छलीह रोकि कए कनौली लए जएवाक हेतु कहलक गुलामी आ जोरावर सिंहमे कुश्ती भेल। खूब दावपेंच चलल आ अन्तमे जोरावर पछड़ि गेल। भदरी जोरावरकें बान्हि देल आ पश्चात् ओकरा मारलनि।

ऐतिहासिकता– ई गाथा सोलहम् शताब्दीसँ बेसी पुरान नहि भएसकैछ। दीना-भदरी गाथाक मीर सुल्तान, दादा, हुकुम नालिस आदि प्रयोगमे अरबी फरसी शब्द अछि जे मुसलमानी शासनकालकें द्योतक अछि।

गाथामे वर्णित नाम जेना थारू, दोनवार, निरसी, बुधना रजना, रतन मोती, कालूसादा, हिरिया, जिरिया, ताहिर मियां, गुलामी जट, फेकुनी तथा जोरावर सिंह आदिमे सेहो आधुनिकतका बोध होइछ।

दीना-भदरीक जन्मभूमि जोगिया जांजरि नेपाल तराईक एक गाम थिक। ई सप्तरीमे अछि। कटैयाक सम्बन्ध सप्तरीक कटैया गामसँ अछि, जतए कजरा नदी अहुखन बहैत अछि। बौरम नदी एहि गामक समीपे बहैत अछि। वगहा गाम तथा उरसी डीह लौकही थानामे अछि। देवहा धार घोड़दौड़ थिक आ दौराक सम्बन्ध दौरीपट्टीसँ अछि। कुनौली नेपाल सीमापर अवस्थित कुनौली बजार थिक।

भाषा– दीना-भदरी गाथाक भाषा मिथिलाका जन-जातिक भाषा थिक, जकर सम्बन्ध मिथिलाक लोक-जीवनसँ अछि।

यथा–

कोन गरू पारलौ हौ धामी बड़ भोरे छेकल दुआर
अपन वहु-बेटी देलनि घर सुताय
हमर बेटी-पुतहु रखलन्हि नांगट उघार
थारू दोनवार जन भेल तैयार
आजुक दिन दीना-भदरी कें
सभकें देबौ हम चारि सेर बोनि
दीना भदरीकें देबौ पसेरी बोनि।

जनकें चारि सेर बोनि देवाक परम्परा मिथिलामे वड़ पुरान अछि। उपर्युक्त पद जन जीवनकें दर्शबैछ। एहिना–

कवहु ने कैल खुरपी कोदारि बोनि
कहियो ने जानिओ हो धामी पैंच उधार

एहुसँ कृषि-जीवनक छवि भेटैत अछि।

दीना-भदरीक मृत्युक उपरान्त जोगिया गामक स्त्री लोकनि जे पूर्ण अनुशासित छलीह आबि गेल। ओ सभ मर्यादाक उल्लंघन कए स्वच्छन्द आ स्वतन्त्र भए गेलीह। जकर वर्णन निम्न उद्धरणमे भेटैत अछि।

कोंचा भुनकी देखि बड़ अजगुत

सरवा भुनकी ढकना भुनकी, खोंइछा भुनकी खोपा भुनकी, उखरी, भुनकी

मुसर झुनकी, सूप झुनकी, चालनि झुनकी, खुरपी झुनकी हांसू झुनकी वंसुली झुनकी, काजर सिन्दुर सिंगार कएलक।

उपर्युक्त शृंगार सर्वथा नव अछि। एहि तरहक शृंगारक कतहु वर्णन नहि अछि।

कुनौलीक जोरावर सिंहक अनाचार, अत्याचारक वर्णन अछि–

जोरावर सिंह राजपूत कनियाँके
पच्छिम नहि जाय दैत अछि
पच्छिमक कनियाँ पुरुव नहि जाय दैत अछि।
दक्षिनक कनियाँ उत्तर नहि जाय दैत अछि।
उत्तरक कनियाँ दक्षिण नहि जाय दैत अछि।

दीना-भदरीक गाथामे कुल सात गोट परिच्छेद अछि।

पहिल परिच्छेद दीना-भदरीक वन्दनासँ प्रारम्भ भए धामीक सँग वाद-विवाद तथा कटैयाक शिकारक ओरिआओनक प्रसंग अछि। दोसर परिच्छेदमे मामा वहोरन सँग दीना-भदरी कटैयावनक माया तथा पोटरा गीदर द्वारा दीना-भदरीक मृत्युक प्रसंग उल्लेख अछि। तेसर परिच्छेदमे जोगिया गाममे दीना-भदरीक प्रेतात्माकें योगी भेषमे जोगिया गामक यात्रा तथा अपन मायकें दर्शन देवाक उल्लेख अछि। पांचम परिच्छेदमे हिरिया तमोलिन आ जिरिया लोहारिनकें हरि लय जैबाक प्रसँगक उल्लेख अछि। छठम्मे वगहाक ताहिर मियाँ तथा गुलामी जटसँ युद्ध कए परास्त करबाक तथा ओकर सहयोगक वचन प्राप्त करबाक उल्लेख अछि। सातममे कुनौलीक जोरावर सिंह आ गुलामी जटक कुश्ती आ जोरावर सिंहक पराजय एवं ओकर मृत्युक वर्णन अछि।

वस्तुतः असाधारण वीरता, जनकल्याणक भावना तथा स्वतन्त्र विचारधाराक निमित्त मुसहर जातिक लोक दीना-भदरीकें देवत्व प्रदान कए अमरत्व प्रदान कएलनि अछि।

जनकपुरधाम

मिथिलाका केही पूर्वाञ्चलीय लोकगायकीको विवेचना

लोकगाथा– लोकगाथा दुईवटा शब्द लोक र गाथाबाट बनेको छ। प्राचीन संस्कृत साहित्यमा लोक र वेदमध्ये केही अन्तर पाइन्छ। महाभाष्यमा भनिएको छ– वेन्दान्तोः वैदिकः शब्दासिद्धा लोकांक्षा लौकिक। तथ्यतः वेदभन्दा बाहिरको विषय लोकमा निहित छ। लोकको सम्वन्ध त्यस वर्गसँग छ जुन अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता, साहित्यचेतना तथा अहङ्कारबाट शून्य रही एउटा परम्पराको प्रवाहमा बाँचिरहेको हुन्छ।

यस वर्गद्वारा सुरक्षित दीर्घकायः गीत-कथालाई, लोकगाथा भनिन्छ। यद्यपि यसमा पद्यको सँगसँगै गद्य पनि रहने गर्दछ तर त्यो पनि लयात्मक। तथ्यतः लोककण्ठमा सुरक्षित महाकाव्य हुन्छ। गाथा ऐतिहासिक हुन पनि सक्दछ र नहुन पनि सक्दछ। यसमा कल्पनाशीलता बढी हुन्छ। यसका केही खास विशेषताहरू हुन्छन् – जस्तै– (क) यसमा रचनाकार अज्ञात हुन्छन् र उनको व्यक्तित्वको सर्वथा अभाव रहन्छ। (ख) अलिखित रहने हुनाले मूल पाठ युगानुसार बदलिइरहन्छ। (ग) यसमा सङ्गीत र नृत्यको अभिन्न साहचर्य रहने गर्दछ। (घ) स्थानीयता तथा उपदेशात्मक प्रवृत्ति यसमा रहन्छ। (ङ) स्वाभाविकता यसमा सर्वत्र पाइन्छ। (च) टेक र पदको पटकपटक पुनरावृत्ति हुनु यसको एउटा विशेषता हो। (छ) यसको कथा दीर्घ रहन्छ।

मैथिलीको लोकगाथा काव्य अत्यन्त समृद्ध रहेको छ। यसमा विभिन्न युगका इतिहास, समाज-दर्शन एवं लोकजीवनको चित्रण भेटिन्छ, यद्यपि कालप्रवाहमा बदलिइरहेको रूपको यसको इतिहास केही ओझेल हुन गएको छ। तथापि इतिहासको लागि यो आधार सामग्रीको कार्य गर्दछ। तर यसको लागि सूक्ष्म अध्ययनको आवश्यकता छ।

लोकगाथा द्विजोत्तर वर्गको वस्तु हो र यसमा द्विजोत्तर वर्गको लोकनायकलाई चित्रण गरिएको हुन्छ। यी लोकगाथाहरू विभिन्न जातिको भिन्नाभिन्नै छन् जुन ती जाति विशेषमा आदरका साथ प्रचलित रहेको पाइन्छ।

मैथिली लोकगाथाहरूको सृजन मिथिलाको नेपाली भू-भागमा बढी भएको छ।

यस क्षेत्रका सांस्कृतिक,सामरिक तथा ऐतिहासिक घटना-चक्रसँग सम्वद्ध हुनु यसको प्रमुख कारण हो। गाथाकारहरूले त्यस पृष्ठभूमिको चर्चा गरे र अनेकौं अविस्मरणीय चरीत्रहरूको उपस्थापन पनि।

मिथिला क्षेत्रमा दर्जनौं लोकगाथाहरू प्रचलित छन्। यसमध्ये केही पूर्वाञ्चलीय लोकगाथाहरूको यहाँ विवेचना गरिएको छ। यी लोकगाथाहरू हुन्–

(१) लोरिकाइन (२) नैका बनिजारा (३) राजा सलहेस (४) दीना-भदरी।

(१) **लोरिकाइन**– यस गाथाको सम्बन्ध यादववर्गसँग छ। यसको प्रधान पात्र 'लोरिक'-को नाममा नामकरण गरिएको हो। तर यसमा अन्यान्य पात्रहरू पनि महत्त्वपूर्ण छन्; जस्तै– हरबा, सहदेव, मोचैन, अङ्गार, बुढ़ा कुब्वे, गज भीमल, उघरा पँवार, सोनिका, सती माञ्जरी, चनैन, तेतलिया घोड़ा, र बाजिल कौआ। यसलाई 'महराई' पनि भन्ने गरिएको छ। यो एउटा ऐतिहासिक जनमहाकाव्य हो।

ऐतिहासिकता– यसमा वर्णन गरिएका धार्मिक, सामाजिक एव. राजनीतिक घटनाको अध्ययन र विश्लेषणबाट के स्पष्ट हुन्छ भने यसको सम्बन्ध ईसाको एघारौं शताब्दीमा विद्यमान मिथिलाको अराजकतासँग छ। यस कालमा मिथिला तिब्बतीय परवौरी, पाल, गूजर, प्रतिहा, राष्ट्रकूट तथा चन्देलको निरन्तर आक्रमणबाट जर्जर भैसकेको थियो। कुनै केन्द्रीय सत्ता रहेन। शक्तिशाली व्यक्तिहरू कुनै पनि भू-भागमा आधिपत्य जमाएर त्यसको अधिपति बन्ने गर्दथे। समाजमा शक्तिशाली व्यक्तिहरू ठालू र प्रभावशाली मानिन्थे। सामाजिक अवस्था दुर्दशाग्रस्त थियो। जहाँ-तहीँ 'राजा' नामले शक्तिशाली व्यक्तिहरू विभूषित थिए। अगोरा गाउँका राजा सहदेव होउन् वा श्रीनगरका राजा मोचैन, सबै ग्रामपति थिए तर तिनीहरूलाई राजा भनिने गरिन्थ्यो। न्योरा गढ़का प्रतापी र राजा हरवा-बरवाको राज्य हिमालय खण्डदेखि गङ्गाको किनारासम्मको भू-भागमा फैलिएको थियो। उनको शक्तिको प्रसङ्गमा लोरिकाइनमा भनिएको छ –

हिन-हिन-हिन-हिन घोडा हिनकर
हाथी करइ चिघाड
अकुना मकुना के बताबय
सोलह सय दन्तार।

(घोडाहरू हिनहिनाउँथे, हात्तीहरू चिंघार्दथे, अकुना-मकुनाको के कुरा गर्नु त्यहाँ ठुला-ठुला दाँत (दन्तारे) भएका सोह्र सय हात्तीहरू थिए।)

राजदरबारको साज सज्जाको वर्णन यसरी गरिएको छ –
सोनाके जे पासी रहइ, रूपा पौवा आब
चारु, पौवा उपर जरइ, माणिक पहुनाल
फुले सनक ओढ़ना रहइ, फुले बिछौना साज
रतन ज्योति दप-दप करइ, हरबा के दरबार।

(हरबाको दरबारमा सिंहासनमा पासीहरू सुनका, त्यसका गोडाहरू रुपाका थिए। ओढ्ने र ओछ्याउने फूलजस्ता नरम थिए र रत्नज्योति धप-धप बलिरहेका थिए)

लोरिकाइनमा वर्णित अनाचारी उघरा पंवारको सम्बन्ध मालवाको परमार

राजपूतहरूको एउटा अधिपतिसित छ जो मिथिलाको भू-भागमा शासन गर्दथ्यो । डा. उपेन्द्र ठाकुरको मतमा परमारहरू क़ैलाशसम्मको भू-भागमाथि शासन गर्दथे । जेहोस्, लोरिकले सबै अत्याचारीहरूसँग सङ्घर्ष गरे र युद्धमा आफ्नो नामी खंडा (तलबार)-को प्रभाव देखाए ।

लोरिकाइनको पात्र गाङ्गेय पंवार राजा हंससँग पराजित भई आफ्नो पुत्र कर्णलाई राज्य सुम्पी गङ्गा किनारमा तपस्या गर्दथे । लोरिकको परमारहरूसँग शत्रुता थियो । त्यसकारण गाङ्गेयले उनलाई सहयोग गरे । लोरिकाइनबाट के ज्ञात हुन्छ भने परमार रहरबा-बरबामा राजनीतिक सम्झौता थियो । जुन बेला लोरिक न्योरागढको युद्धमा थिए त्यतिबेला त्यहाँ उघरा पंवारको कान्छा घुघरा पंवारसँग युद्ध भएको थियो । गाङ्गेयले हरबा-बरबाको विरुद्ध उनलाई सहायता गरे । यस सहायताको मूल कारण राजनीति थियो, लोरिकको सम्बन्ध कुनै कोल राजासँग थियो, जुन सप्तरीको कोइलाहीसँग सम्बन्धित छ । मोचैन यसैका प्रतिनिधित्व गर्दथे ।

सहदेवको सम्बन्ध पालसँग थियो जसले लोरिकाइनमा वर्णित तथ्य तात्कालीन ऐतिहासिक स्थितिलाई प्रष्टचाउँछ । लोरिक आफ्नो वीरताबाट सबैलाई आश्चर्यचकित पार्छन् ।

भौगोलिक स्थिति – लोरकाइन गाथाअनुसार मिथिलाको भौगोलिक सीमा निम्नानुसार निर्धारित गरिएको छ ।

पूरब रे पुरनिया पुजलौं
पश्चिम रे विहार
उत्तर रे नेपाल पुजलियै
दक्षिण गङ्गाधार ।

(पूर्वमा पुर्णिया, पश्चिममा विहार, उत्तरमा नेपाल र दक्षिणमा गङ्गाधारको पूजन गाथामा गरिएको छ ।)

विहारसँग तात्पर्य, यहाँ गण्डकीय किनारमा अवस्थित ओदन्तपुरी विहारसँग छ । लोरकाइनमा हरदीको अधीनको अगौरागाउँका राजा सहदेवको चर्चा आएको छ । अगौरागाउँ हरदी भन्दा चार-पाँच माइल पश्चिममा पर्दछ । सहरसा जिल्लाको यो गाउँबाट करिब एक माइल पूर्व लोरकाइनमा वर्णित देवहा धार (नदी) बग्ने गर्दछ । अहिले यो नदी कोशीको गर्भमा विलीन भइसकेको छ । यस गाउँमा हालसम्म एउटा राजाको गढ रहेको थियो । यो गढ राजा सहदेवको थियो भन्ने अनुमान गर्न सकिन्छ । हरदीको पहचान हरदीको चौघाड़ासँग गर्ने गरिएको छ । यहाँ लोरिकको भगवती थान पनि थियो जसलाई कोशीले नष्ट गरिसकेको छ । भगवती अहिले पनि त्यस गाउँमा सुरक्षित छ । यो ठा़उँ सहरसा जिल्लाको सुपौल उप-प्रमण्डलअन्तर्गत पर्दछ । श्रीपुरको राजा मोचैनको जुन च़र्चा आएको छ त्यसको सम्बन्ध सीरीपुर सुखासिनी गाउँसँग छ । यो गाउँ हरदीबाट चार माइलको दूरीमा अवस्थित छ ।

हरबा-बरबाको सम्बन्ध मधुवनी जिल्लाअन्तर्गत लौकही थानाको न्योरा गाउँसँग छ । यस गाउँमा अहिले पनि राजाको गढ़को भग्नावशेष सुरक्षित रहेको छ । यस गाउँबाट दुई माइलको दूरीमा हथरी गाउँ रहेको, छ । जसको पहिचान हथरी वनसारसँग गर्न सकिन्छ । न्योरा गाउँबाट तीन माइलको दूरीमा नासे खड़होरि रहेको छ, जुन त्यस

ताकाको सरियारी हो। न्योरा गाउँको नजिकमै देवड़ा धार पनि बग्दछ र त्यहाँ घोड़-दोड़ पनि हुने गर्दछ। न्यो गाउँको तीन माइल दक्षिण दिशामा दुहवी-सुहवी पोखरी थियो। यो पोखरी हरबा-बरबाको प्रेयसीको नाउँमा खनाइएको थियो। अहिले पोखरी प्रायः नष्ट भइसकेको छ। लोरिकाइनमा यी दुवै रमणीको वर्णन आएको छ।

केराक वीरसन छह-छह देह
मधुसन वर्ण, घोड़ीक आँखि सन नयन
दुपहरियाक फूल सन रक्तिम गाल
पान सन पातर ठोर, गजगण्ड सन उरोज
आ आसवसँ भीजल अधरपर आतुर मुस्की
विपुल नितम्बपर मणि मेखला उपर-नीचा होइत
आ केशक लट-लटमे गूहल मोती जगमग करैत।

(केराको थामजस्तो चिल्लो शरीर, महजस्तो रङ्ग, घोड़ीको आँखाजस्तो नयन, फूलजस्तो रक्तिम गाला, पानजस्तो पातलो ओंठ, गजगण्ड जस्तो वक्ष, आसवमा भिजेको ओंठमा आतुर मुस्कान, विपुल नितम्बमा तल माथि भइरहेको मणिमुक्त र कपालका केस्राकेस्रामा जगमग गरिरहेको मोती।)

म्यौरा गाउँ समीपको बाजबन गाउँ लोरिकाइनको विजुवन हो। जुन पटोर मानिको चोलीको क्रय-विक्रयको लागि प्रख्यात थियो।

लोरिकाइनको उखडा गाउँको सम्बन्ध दरभङ्गा जिल्ला (भारत)को उघरा गाउँसँग छ। यस गाउँमा अहिलेसम्म पनि उघडा पंवारको गढको भग्नावशेष प्राप्त छ तथा गौरा गाउँको नजिकै छ। यसप्रकार लोरिकाइनमा उल्लेख हुने विभिन्न स्थलहरूको ठेगान भेटिन्छ।

तन्त्रको प्रभाव– लोरिकाइनमा विभिन्न ठाउँमा तन्त्र सम्बन्धी जुन प्रसङ्ग उल्लिखित छ, त्यसबाट मिथिलाको लोकधर्ममा बज्रयानको प्रभाव दृष्टिगोचर हुन्छ, तर त्यसमा बौद्ध धर्मभन्दा बढी शैव धर्मको प्रभाव देखिन्छ। लोरिकाइन अनुसारदेशमा सर्वत्र शान्ति स्थापित भई सकेपछि लोरिक भगवतीले प्रदान गरेको खंडा (गडाँसी) देवंहा नदीमा फाली आफ्नी धर्मपत्नी माञ्जरि तथा प्रेयसी चनैनलाई भैरवी र आफूलाई भैरवको रूपमा राखी 'बसहा' (साँढे) मा चढी वर्णाश्रम परम्पराको निर्वाह गर्न काशीको यात्रा गरे।

लोरिकाइनमा लोरिकको जसरी चरित्र-चित्रण गरिएको छ, त्यसबाट उनी शिव-शिवाको भक्त रहेको बुझिन्छ। लोरिकाइनको सात बहिनी दुर्गा सप्तमातृका हुन्।

लोरिक र उनका कान्छा भाइ साबरले भगवती समक्ष अबला, गौ र प्रजाको रक्षा गर्ने सङ्कल्प गरेका थिए। अराजकताको अवस्थामा यस्तो सङ्कल्प लिनुको पृष्ठभूमिमा उनीहरूको शाक्त आस्था थियो।

लोरिकाइनमा वर्णित मालिनी 'कोसा'को तान्त्रिक प्रकृया मिथिलाको जीवनमा अहिले पनि त्यसरी नै गाउने गरिन्छ। मालिनीकोसाको आचरणमा बज्रयानको प्रभाव परिलक्षित हुन्छ। भनिएको छ –

'नीलवर्णको आसनमा अग्निवर्ण कोसामालिनी पहेँलो वस्त्र लगाई बसेकी छिन्। लाग्दछ ऊ स्वयं पुण्यमयी छे। केराको नयाँकोसा जस्तो वक्ष (उरोज), तिलको फूलजस्तो

नाक, माधुरी फूलजस्तो ओठ, दाड़िम[1] को फूलजस्तो गला र नीलो अपराजिता फूलजस्ता आँखा थिए र उनको कपालका केस्राहरू अल्झिएका थिए। मालिनीले कदम्ब र रुद्राक्षको माला लगाएकी थिइन्। उसको दृष्टि, बोक्सीको मुटु खान खोजेको झैं प्रतीत हुन्थ्यो।'

उपर्युक्त उद्धरणमा नील आसन, अग्निवर्ण, पहेँलो वस्त्र कदम्ब र रुद्राक्षको माला आदि शब्दहरूको तान्त्रिक अर्थ अति व्यापक छ। साधनामालमा तारक जाङ्गुली पर्याश्वरी महाचीन तारा, एकजटा, आदि कतिपय नाउँको उल्लेख गरिएको भेटिन्छ।

कोसाको नीलवर्णको आसनको तात्पर्य नीलतारा सँग छ जसलाई महाचीन तारा तथा उग्रतारा पनि भनिने गरिन्छ।

लोरिकाइनमा वर्णित अन्यान्य दार्शनिक तथ्यहरूको पनि तन्त्रसँग सम्बन्ध देखिन्छ र मिथिलाको जीवनमा पूर्णरूपमा परिव्याप्त रहेको पाइन्छ।

लोरिकाइनमा उद्भवको प्रसङ्गमा एवं क्रमको वर्णन गरिएको छ। यस कालको उपक्रममा भनिएको छ –

प्रणयकालमा
रमणी नखरमाउँछे
चुराहरू झंकृत हुन्छन्
आभूषणहरू बज्छन्
र चन्द्रमा पसिनामा भिज्छ।

(प्रणयकालमा रमणी छिड़ियाइत अछि। चूडी झनझनाइत छैक। आभूषण रन्रनाइत छैक। आ चान घमाइत अछि।)

प्रलयकालको सम्बन्ध जीवनको अन्तसँग छ। यस प्रसङ्गमा भनिएको छ–

युद्ध कालमा
घोड़ा चम्किन्छ
योद्धाहरू चम्किन्छन्
शस्त्रहरू बज्दछन्
र तलबार टल्किन्छ।

युद्धकालमे। घोडा रमकैत छैक। योद्धा रमकैत छैक। शस्त्र झनकैत छैक। आ 'तरुआरि चमकैत छै।

यसरी जीवनको दुइटै अवस्थाको चित्रण गरिएको छ। त्यहाँ मिथिलाको देशाचारको उत्कृष्ट उदाहरण छ। लोरिकलाई माञ्जरिले लेखेको पत्र, जसमा भनिएको छ–

"माञ्जरिले सिन्दूरले आफ्नो सौभाग्य (सोहाग) लेखिन्, गाजलले आफ्नो वियोग लेखिन् र आफ्नो कान्छी औंला चिरेर त्यसको रगतले साबरको वीरगति, र मैनबत्तीको प्रतिज्ञा (सत्त) लेखिन्।"

वस्तुता– माञ्जरिको पत्र लेखन कार्यमा तन्त्रमा आधारित भारतीय [(?) (पूर्वीय)] दर्शनको तथ्य सन्निहित छ। रातो सिन्दूरको तात्पर्य निराकार ब्रह्मको साकार रूप सँग छ। कालो गाजलको तात्पर्य मोह वा तमोगण हो। कान्छी औंला चिरेर रगत निकाल्नुको तात्पर्य रजोगुणसँग छ जसले क्रमशः सृष्टि (ब्रह्मा), स्थिति (विष्णु) तथा प्रलय

१ . अनार

(महेश)को चर्चा गर्दै सृष्टि प्रक्रियाको दिग्दर्शन गराउँदछ।

नृत्य– लोरिकाइनमा ठाउँ-ठाउँमा नृत्यको प्रसङ्गमा जुन चर्चा गरिएको छ। त्यो शास्त्रीय नृत्यभन्दा सर्वथा भिन्न छ। यसमा वर्णित नृत्यको नाउँमा असिखण्ड नृत्य, रणचण्डी नृत्य, पूजा तथा बज्रयोगिनी नृत्यको नाम उल्लेखनीय छ। यी नृत्यहरू पनि तन्त्रसँग सम्बन्धित छन्।

काव्यात्मकता– लोरिकाइनको संरचना संस्कृत काव्य परम्पराभन्दा भिन्न क्रमको छ। यो काव्य जन्मखण्ड, सती मान्जरि खण्ड, चनैन खण्ड, रणखण्ड सावर खण्ड, वाजिल खण्ड, सम्झौता खण्ड एवं भैरवी खण्ड नामका आठवटा खण्डहरूमा विभक्त छ। प्रत्येक खण्डको आफ्नो नाउँ छ र जुन महानायक लोरिकद्वारा एक-अर्कोसँग शृंखलाबद्ध गरिएको छ। यसमा चौपाइलाई चौखड़ र दोहालाई विश्राम भनिएको छ। श्लेष, यमक आदि अलङ्कार यत्रतत्र पाइन्छन्। यसको सन्निवेश अत्यन्त स्वाभाविक ढङ्गले भएको छ। 'रस'को दृष्टिले हेर्दा लोरिकाइनमा वीररस, शृंगाररस एवं करुणरसको प्रधानता छ। यस गायनको शब्द सौष्ठव, अर्थगौरव तथा ध्वनिको गतिशीलता दर्शनीय छ। उदाहरणको लागि केही झलक हेर्न सकिन्छ। लोरिकको वर्णन छ –

ताछिएको साखु (सखुआ) र सालको खम्बाजस्तो तिघ्रा,
खिइएको (घस्सल आ रस्सल) ढुङ्गाको धोबिढुङ्गा
(धोबियापाट) जस्तो छाती,
सिंहजस्तो कम्मर साँढेजस्तो कुम,
ठूलो दाँत भएको हात्ती (दन्तार हाथी) जस्तो उन्नत
निधार थियो
उनी हिँड्दा यस्तो भान हुन्थ्यो,
कुनै निलाञ्चल पर्वतखण्ड लम्किँदै गइरहेको छ।

उनका खण्डा (गँडासा)को वर्णन छ –

"लोरिकको हन्-हन् गरिरहेको खण्ड विद्युत लता झैं
शत्रुको सैन्य घटामा चम्किरहेको थियो
त्यो जता चम्किन्थ्यो त्यतै रगतका धाराहरू (बुमकार) फुट्दथे
लाग्दथ्यो त्यस खण्डको तीक्ष्णता
सिन्दूरको धरहरा, फींज र फोका उठिरहेको छ।"

लोरिकको प्रेयसी माञ्जरिको सौन्दर्यको वर्णन छ –

"विद्युत किरण झैं (बिजुरी रेहसन) पातली
अनुहार उदीयमान सुर्य झैं सिन्दुर पोतेकी
कमल (पुरैन) को पातझैं चिल्लो (छहछह) शरीर
रातो कमल दल झैं अरूणाएका (लाली लिएका) आँखा
जस्का कुना कान तीर ढल्केको होस्।

सुगाजस्तो नाक, तिलकोडको फल (एक किसिमको रक्तवर्णी फल)
जस्तो अधरमा ढल्केको
छिन-छिनमा अनार (दाड़िम) को बीजको पङ्क्ति टल्किन्छन्।

त्यसैगरि चनैनको रूपको वर्णन छ –

"चम्पई वर्ण, केराको थाम जस्तो तिघ्रा

उठेका नाक खजन (चराको) नयन
र सात-सात हातको कपाल ।
चोलीमा रतन झालर लागेको
र त्यसमा झम्काउने (झकारी) हीरा उनेको
उनी जब हाँस्दथिन् चन्द्रमा(दामिनी) चम्किन्थ्यो
हंसिनी झैं मस्की-मस्की हिँड्दथिन्
र परेवा झैं अटकी-अटकी बोल्दथिन्
उनी जसलाई हेर्दथिन् मुटु चिरिन्थ्यो
र उसको मनमा वासना तरंगित हुन्थ्यो
उनको बिन्दी फिलिंगो झैं चम्किन्थ्यो
र शीरमाथि गुजमुज्याई बाँधिएको कपाल (खोपा)
चन्द्रमाको पछाडिपट्टिको कालो पर्वतशीखर
जस्तो भान हुन्थ्यो ।

यस किसिमले लोरिकाइन साधना, शौर्य, त्याग र मानवताको प्रतीक गाथा हो ।

यसमा क्रूरताको प्रसङ्ग पनि छ, तर मानवता त्यसमाथि प्रभावी छ । यो एउटा यस्तो अपूर्व गाथा हो, जसको बारेमा जति लेखिए पनि थोरै हुनेछ । कथावस्तु, भाव एवं भाषा हरेक दृष्टिमा यो एउटा महान् जन-काव्य हो ।

(२) **नैका-बैनिजारा**- यस गाथाको सम्बन्ध वणिकवर्गसँग छ । यो एउटा प्रेमकथात्मक लोकगाथा हो । कथा संक्षेपमा यस्तो छ–

नैका नाम वणिकपुत्रको विवाह चम्पा नरेशकी सुपुत्री फुलेश्वरीसँग भएको थियो । नैका दुरान (दुरागमन) गराई आफ्नी पत्नीलाई घर भित्र्याइसकेपछि पुन: व्यापार गर्न निमित्त बाह्र वर्षको महायात्रामा प्रस्थान गरे । मार्गमा बेलुकी एउटा वृक्षमुनि उनी सुतेका थिए । त्यस वृक्षमा विध-विधकरी नामक दिव्य पंक्षीको जोडी बसेको थियो । ती पक्षीहरू आपसमा कुरा-कानी गरिरहेका थिए, जसबाट त्यो रातको मुहूर्तमा जुन व्यक्ति आफ्नी पत्नीसँग समागमन गर्नेछ त्यो दीर्घायु, प्रफुल्ल, स्वस्थ, पराक्रमी, सर्वगुणसम्पन्न प्रतिभावान पुत्र प्राप्त गर्नेछ भन्ने कुरासमेत थाहा पाए ।

यो वार्ता सुनेपछि नैका आफ्नोतिला बाछा चढी गोप्य ढङ्गले त्यसै राति आफ्नो घर आई पत्नीसँग समागम गरे लोकोपवादबाट बच्नको लागि आफ्नी पत्नीलाई निशानी (अभिज्ञान) स्वरूप आफ्नो औंठी दिई यात्रामा प्रस्थान गरे र बाह्र वर्षपछि घर फर्के ।

यसैबिच (उनी यात्रामा रहेको अवस्थामा) गर्भवती फुलेश्वरीलाई उसकी कान्छी नन्द तिलकेश्वरीले अनेक किसिमको दु:ख दिइन्, जसको आचरण सम्बन्धमा यस गाथामा भनिएको छ –

तिलको फूलजस्तो उनको नाम थियो
ठूलो निधार अहङ्कारको साकार मूर्ति,
बाज पक्षीजस्तो क्रुद्ध र बटारिएको आँखा
ओ क्षुब्ध पाइला टेक्दथिइन् र
लुब्ध दृष्टिले हेर्दथिइन् ।
उनको ओठ छिन-छिनमा काम्ने गर्दथ्यो
उनले कुनै सुन्दर सुमधुर र सुमनोहर

व्यक्तिलाई हेर्दा
उनीभित्र द्वेषाग्नि उत्पन्न हुन्थ्यो
र डाहाले उनमो मुटु बल्न थाल्दथ्यो ।

तिलकेश्वरीद्वारा उनी (फुलेश्वरी) घरबाट निकालिइन् र पछि कुम्भा डुमको हात बेचिइन् जसले नारीको व्यापार गर्दथ्यो। आफ्नो सतीत्वको रक्षा गर्दै र पतिसँग पुनर्मिलनको चिरसंचित अभिलाषा आफ्नो मनमा राखेकी फुलेश्वरीलाई उनकै जेठी नन्द, द्रोणनगरकी रानी तुलेश्वरीले किनिन् जहाँबाट फुलेश्वरीका राम्रा दिनहरू पुन: आरम्भ भए ।

तुलेश्वरीले उनलाई नचिनेर पनि माया गर्थिन् । तुलेश्वरीको आचरणको प्रसङ्गमा भनिएको छ–

धर्मप्राण, सधैंभरि कोमलभावनामा भिजेकी
लोककल्याणको लागि आकुल तुलेश्वरी ।

र पटकपटक फुलेश्वरीलाई भन्थिन्– यस्तो लाग्दछ जस्तो तिमी मेरो आफ्नै छौ ।

नैका बनिजाराको आगमनपछि जब परिचय र वस्तुस्थिति उद्‌घाटित भयो, उनले फुलेश्वरीलाई छातीमा टाँसिन् र भनिन्– "हे रानी, मेरो सबै अपराध माफ गर्नू। मैले चिनिनँ, तपाईं मेरी भाउजू हुनुहुन्छ ।

नैका बनिजाराको गीतको उदाहरण यसप्रकार छ–

तब बारी रे कानय जान-बेजान् कानइ रे ना ।
दुर्गा गे स्वामीके ल' क' कोहबर घर गेबो केलियै रे ना ॥
कोहबर घर स हमरा निकालियो देलकै रे ना ।
दुर्गा गे कोना बचबै अन्न-पानि बिन केना रहबइ रेना ॥

अनि बाग-बगैंचा बलिन्द्र धारा रोइरहेका थिए। हे दुर्गा, पतिसँग कोहबर र (दुल्हा-दुलही सुत्नेकोठा) मा गएँ। कोहबर घरबाट मलाई निकाली दिए, हे दुर्गा अन्न पानीबिना कसरी बाँच्ने होला ।

ऐतिहासिकता– नैका शब्दको सम्बन्ध नायक अर्थात् प्रमुख व्यक्तिसँग छ, जसलाई ज्येष्ठ सार्थ भनिन्छ। त्यसैलाई बनिजारा अर्थात् वाणिज्यकार भनिन्छ। यस शब्दको सम्बन्ध आथी साथी शब्द सँग छ, जुन सार्थवाह व्यापारीसँग लिइएको हो। 'आथी' शब्द संस्कृतको आर्थिकबाट आएको हो। यसको अर्थ धनी हुन्छ र 'साथी' शब्द संस्कृतको सार्थक शब्दबाट आएको हो जसको अर्थ सार्थवाहक मुखिया हुन्छ। व्यापारीहरूको अगुवालाई सार्थवाह भनिन्थ्यो ।

प्रधानत: कलवार, बनिया र तेली (तराईका जाति विशेष) जातिका मानिसहरू जसले बयलगाडा वा गोरुले व्यापार गर्ने गर्दथे, बनिजारा भनिन्थे। नैका बनिजाराको सम्बन्ध तेली जातिसँग छ। गाथामा नैकाको ससुराको प्रसङ्ग पनि आएको छ ।

ग्रियर्सनको मतमा बनिजारा समूह जसको नायक नैका थिए, असङ्ख्य बयलगाडामा नेपालबाट चामल र आलस खरिद गरी पटना (भारत) मा लगी बेच्ने गर्दथे। जुन कलकत्ताको बाटो विश्वका विभिन्न भागमा पटनिया चामलको नामले ख्यातिप्राप्त गरेको थियो तथा आलसको माँग जर्मनीमा बढी थियो ।

यस गाथामा वर्णित चम्पा, दमनपुर, अूवाघाट, कमलपुर, सोनदहको डाँडा, वरुण नदी गयातीर्थ, सोनपुर, ताम्रलिप्त, जगन्नाथ, सुमात्राद्वीप, द्रोणनगर आदि नाम ऐतिहासिक छ। यथा चम्पा अङ्ग जनपदको राजधानी थियो। आधुनिक भागलपुर (भारत) को चम्पानगर त्यस चम्पाको स्मरण गराउँदछ। यसरी नै गया र जगन्नाथ प्रसिद्ध नै छ। अन्यान्य नामहरू पनि ऐतिहासिक छन्। यथा ताम्रलिप्त एवं सुमात्रा द्वीप त प्रसिद्ध नै छन्।

नैका बनजारामा दस्युराज मकर, नागमणि धांगर, भिक्षु देवपद्म, बकर बनिजारिन, कनक मञ्जरि तथा पाँचहजार महापोत (पानीजहाज) को मालिक रत्नसेनको वर्णन छ।

सातौं-आठौं शताब्दीमा भारतीय व्यापारको निकै अभ्युदय भयो। नैका बनिजाराको गाथा त्यसै कालसँग सम्वन्धित छ। दस्यु (डाँका) को जुन चर्चा गरिएको छ। त्यो पनि स्वाभाविक समाजविरोधी तत्त्व पनि व्यापारीहरू झैं सक्रिय रहन्थे, जसको प्रतिनिधित्व दस्युपराज मकर र नागमणि धांगरले गर्दछन्।

भिक्षु देवपद्म बौद्ध भिक्षुथिए। बकर बनिजारिन प्रायः नेपाल र तिब्बतमा बाख्राको व्यापार गर्ने बनिजारी थिई।

समग्रमा नैका बनिजारा वणिक वर्गसँग सम्बद्ध एउटा सुन्दर गाथा हो।

३. राजा सलहेस– राजा सलहेसको गाथा दुसाध वर्गसँग सम्बद्ध छ। यिनी स्वय. दुसाध थिए। सलहेसको पूजा-अर्चना प्रधानतः दुसाध जातिका मानिसहरूले गर्दछन्। प्रत्येक गाउँमा वर अथवा पीपलको रूखमुनि सलहेसको थान (देवस्थल) पाइन्छ र अन्य-अन्य वर्गका मानिसहरू पनि यसप्रति निष्ठा राख्दछन्।

नेपालको वन-प्रान्तमा यदि कुनै बटुवाले बाटो बिराएमा वा कुनै सङ्कटमा परे। राजा सलहेसलाई गोहराउँछन् (स्मरण गरी गुहार माग्दछन्) र उसले त्राण पाइहाल्दछ। जङ्गल र पहाडको दुर्घर्ष जन-जीवनमा सलहेसप्रति मानिसहरूको अखण्ड आस्था छ।

कथानक– सलहेस मोरङ्गका एक पराक्रमी सुन्दर युवक थिए। उनको स्वभाव अत्यन्त लोकोपकारी थियो। उनी जस्तो बलवान थिए त्यसै औधी सुन्दर पनि थिए। सलहेस मोरङ्गबाट मुङ्गेर (भारत) गई पकडियाको राजा भीमसेनको चौकिदारी गरे। चोर चुहडमलले राजाको महलमा चोरी गरे जसको अभियोग सलहेसमा लगाइयो। सलहेसलाई कारावासमा लगियो। दोना मालिनी, जो सलहेसको रूप र गुणप्रति आकृष्ट थिइन् र सावरी देवीको कृपाले तथा आफ्नो चातुर्यले चोरी भएको सबै माल र चोरलाई पक्राउ गराइन्। चुहरमललाई दण्डित गरियो तथा दौना र सलहेस सुखपूर्वक जीवन व्यतीत गर्न थाले।

सलहेस शब्द "शैलेस" को परिवर्तित रूप हो जसको अर्थ हुन्छ– पहाडको राजा। त्यसरी नै दुसाध शब्द 'दुःसाध्य' बाट बनेको हो जसको अर्थ हुन्छ – प्रखर बलवान्।

जेहोस् चौकिदारबाट राजा बन्नुमा सलहेसको शक्तिको हात थियो।

यो गाथा पाँचौं-छैठौं शताब्दीको भनिन्छ। तर त्यति पुरानो छैन। यसमा प्रयुक्त तमसुक, हुकुम, हाजिर, मोसाफिस आदि कतिपय शब्द छन् जसले यसलाई नवीन भन्दछन्।

ऐतिहासिकता– गाथामा वर्णित पकडिया प्रगन्ना मुङ्गेरको उत्तर-पूर्वमा स्थित गोगरी थानाअन्तर्गत पर्दछ। यो क्षेत्र एउटा प्राचीन जातिको जमिन्दार वंशको अधिकारमा थियो। यस क्षेत्रमा भूमिहीन दुसाध जातिको प्रधानता थियो। चुहरमल एवं त्यसको

समूहका अन्य चोर-डाँकाहरूको सर्वदा आतङ्क रहन्थ्यो । यी डाँकाहरू राजनीतिमा पनि भाग लिने गर्दथे ।

मोरङ्गको विराटनगर राज तथा पकडिया राजमा यद्यपि मित्रता थियो तथा विराटनगरका राजा कुलेश्वर, सलहेसको कान्छा भाइ बुधेश्वरका ससुरा थिए, तथापि चुहरमलको प्रपञ्चमा परी पकडिया राजको सहयोगमा विराटनगरमाथि आक्रमण भयो । सलहेसको सहयोगले विराटनगर जोगियो र यहीँबाट सलहेसको अभ्युदय आरम्भ हुन्छ । हेर्दा हेर्दै उनी राजा भए ।

जङ्गल र पहाडका प्रतापी राजा सलहेसको राजधानी महिसौथाको भग्नावशेष अहिले पनि सगरमाथा अञ्चलमा विद्यमान छ । फूलवारी र पतारि (घाँसपात गर्ने ठाउँ) पनि छ जुन उनको साधनास्थली थियो ।

राजा महेश्वर भण्डारीको गढको भग्नावशेष सप्तरीको मानराजामा अहिले पनि उपलब्ध छ ।

यसै क्रममा नदीहरूको नाममा कमला, बलान, खुट्टी, गागन, बाग्मती, परुआन आदि मिथिलाका प्रसिद्ध नदीहरू हुन् ।

तान्त्रिक प्रभाव– मालिनीको स्थान मिथिलाको तान्त्रिक साधनामा अति विशिष्ट थियो । यिनीहरू रूप गुण, यौवन, मति-गतिमा सर्वोपरि त थिई नै साथै आफ्ना चेतनाको उद्यानबाट साधनाद्धारा विश्वमोहिनी माला प्रस्तुत गर्दथिन् । दौना मालिनी यसै वर्गको प्रतिनिधित्व गर्दछिन् ।

मध्यकालीन मिथिलामा जुन बेला तन्त्रमन्त्रको प्रधानता थियो, तान्त्रिक प्रकृयाको सम्पादनमा मालिनी मुद्राको रूपमा प्रयुक्त हुने गर्दथिन् ।

मिथिलामा नैना-जोगिन तथा हिरिया-जिरियाको दोहाई (साक्षी) दिने परम्परा अति विशिष्ट छ । यिनीहरू मालिनी थिए । तथ्यतः मालिनी एउटा सम्प्रदाय थियो जसको सम्बन्ध सम्पूर्ण पूर्वाञ्चलसँग थियो ।

राजा सलहेसलाई यस वर्गको पूर्ण सहयोग प्राप्त थियो । सलहेसको गाथामा चारवटी बहिनी मालिन् (मालिनी) लाई तरेगनाका गढेश्वर राजा महेश्वर भण्डारीकी छोरीको रूपमा उल्लेख गरिएको छ जसको सम्बन्ध योगिनी गुफासँग थियो ।

बाघगढकी राजामाता बनसप्ती जो सलहेसकी बहिनी थिइन्, मिथिलाको जन-जीवनमा खुबै प्रख्यात थिइन् ।

भाषा– राजा सलहेस गाथाको भाषा पनि अति रोचक छ ।

यथा–

भयो बिहानी ढोकामा उभिएकी मालिन कर जोडी
बिनती गर्छिन् देवमुनिका नाम
सुन इन्द्रासनका छपन्न कोटी देवता जुन
इन्द्रले जन्म दिए
छैंठि राती सुत्केरी घरमा लेखी
भविष्य खोजिदिए सलहेसजस्तो वर (दुल्हा)
उनकै खातिर आँचल बाँधे
परपुरुषको अनुहार हेरिन्
जनम् पाई सिंदुर गरिन्

जुन स्वामी (पति) को लागि
काँचो बाँसको कोहबर (नव वरबधू सुत्ने कोठा) बनाए
लाल पलङ(रातो पलङ) मा सेज (ओछ्यान) लगाएँ
सिकिया चिरेर बेनियाँ (पङ्खा) बनाएँ
हे गौरी उनी आउँदैनन्

उपर्युक्त गीत दौना मालिनीको हो ।

दौनाको आचरण पतिको अभावमा
हातमा बाँक (हातमा लगाउने आभूषण) पहिरिन्
गोडामा कारा (गोडामा लगाउने आभूषण) पहिरिन्
निधारमा ताराचन्द्र बिन्दी टाँसिन्
साँच्चैकी नवयौवना बनिन् ।

सङ्कटकालमा नारी रक्षिकाको कार्य गर्छिन् र उनी चुहरमलको प्रपञ्चलाई पराजित गरी चोर र माल बरामद गराउँछिन् जुन एउटा असाधारण काम हो । यस प्रकार सलहेसको रक्षा हुन्छ ।

४. **दीना-भदरी–** यो लोकगाथा मुसहर जातिसँग सम्बद्ध छ । मुसहरहरू अहिले पनि दीना-भदरीको पूजा गर्दछन् ।

कथानक– जोगिया-जांजरि गाउँमा दीना र भदरी दुई दाजु-भाइ बस्दथे । उनीहरूको शौर्यले सबै प्रभावित थिए । त्यस गाउँमा एकजना धामी बस्दथे । उसले दीना-भदरीलाई खेताला दिनलाई भन्यो । दीना-भदरीले, जसलाई दासताको जीवनदेखि घृणा र स्वच्छन्द तथा स्वतन्त्र जीवन प्रिय थियो, धामीको प्रस्ताव अस्वीकार गरिदिए ।

त्यसपछि तिनीहरू आफ्नो जातीय प्रवृत्तिले वशीभूत भई आफ्ना मामा बहोरन सँगै कटैया वनमा शिकारको लागि अरू दिनझैं त्यस दिन पनि गए । बाटोमा अनेक अमंगल बाधा आए तर दृढ सङ्कल्प व्यक्ति बाधा देखेर कहिल्यै त्रसित हुँदैन । दीना-भदरी ती बाधाहरूको अवज्ञा गर्दै कजरा नदी तरेर कटैया वनमा पुगे ।

जीवन भारझैं लाग्दछ–
हिया (मुटु) हारेर हिँडिन् 'मालिन'
रुँदै हिँडिन मीलन स्वामीको उदेस (उद्देश्य)
पुगिहालिन् आफ्नो फूलवारी
फूल, हेरी धर्तीमा खस्यो मौलार
अनि लडि-बुडि गरि रुन थालिन् फूलबारीमा ।

उपर्युक्त पद्यमा विरह विदग्धा नारीको मनोदशाको विलक्षण वर्णन छ ।

पकडिया राजभवनमा चोरी भएको खबर रानी हंसावती राजा भीमसेनलाई यसप्रकार दिन्छिन्–
"रोइ-रोई सप्को च्याती कागत बनाइन्
आँखाका गाजल पुछी मसि बनाइन्
बायाँ कान्छी औंला चिरी कलम बनाइन् ।"

यसप्रकार पत्र लेख्ने परम्परा अति प्राचीन छ–

दौना मालिनको प्रसङ्ग पद छ –

"सोरह सिंगार गरिन्
जादूको फूलडाली लिइन्
किसिम-किसिमका फूल टिपिन्
काँचा ल्वाङ्ग सुकुमेल टिपिन्
हिँडिन स्वामीको उदेश (उद्देश्यमा)
र फेरि
दौना मालिन दछिनको (मुग्लानको) चीर पहिरिन्
केश शृंगार गरिन्
आँखामा गाजल लगाइन्
दाँतमा सिन्कोले मिसि लगाइन्।

भवितव्यता मानिसको अघि-अघि हिँड्दछ र त्यसले मानिसलाई अन्धो बनाउँदछ। चारैतिर शिकारको अभाव थियो। दृश्य भयानक थियो। त्यसै समयमा दक्षिण दिशाबाट पोटरा नामक स्याल बौरम नदीमा पानी खान आयो। भदरीले पोटरालाई हेरी बाण चलायो। पोटरा धराशायी भयो। तर राजा सलहेसले उसलाई अमृत खुवाई पुनः जीवित गरे। यो क्रम पटकपटक दोहरियो। अन्तमा पोटराले दीना-भदरीलाई मारे।

जोगिया गाउँमा दीना-भदरीको मृत्युको खबर अहिरा गोआरले पुऱ्यायो। दुवैको श्राद्ध कर्म गरियो र सबथोक पूर्ववत् नै चल्न थाले।

दीना-भदरीको प्रेतात्मालाई जोगिया गाउँका मानिसहरूको जीवन कार्यक्रम तथा अन्य दिनचर्या पनि हेर्न उत्सुकता भयो। फलस्वरूप दुवै प्रेत योगीको भेष धारण गरी जोगिया गाउँ आए। गाउँको सम्पूर्ण वृतान्त थाहा पाइसकेपछि तिनीहरूले आफ्ना भाइ र पितासँग भेटघाट गरे। दीना-भदरीका प्रेतात्माले देवहा खोला किनारको दौरा गाउँकी हिरिया र जिरिया तमोलिनलाई, जो उनीहरूको शौर्यमा मुग्ध थिए, आफ्नो प्रेमिका बनाए।

त्यसपछि दीना-भदरीको ध्यान बगहा गाउँतिर गयो। त्यहाँ ताहिर मियाँ नामक एउटा कुजडा (तरकारी बेच्ने) बस्दथ्यो। ताहिरसँग सोना र बेना नामक दुईवटा कामधेनु गाईहरू थिए। ती गाईहरूको गोठालोको नाम थियो गुलामी जट। गुलामी वीरताकोलागि चारैतिर प्रसिद्ध थियो। ताहिरकी फेकनी नामक गरेकी एउटी जादूगरनी छोरी थिई। त्यसैको जोग (तन्त्र-मन्त्र) को बलले गुलामी कसैलाई टेर्दैनथ्यो।

दीना-भदरीले गुलामीसँग एक अँजुली दूध खानलाई माँगे। गुलामीले घमण्डले इन्कार गरी दिए। दुई भाइ धेरै रिसाए र तिनीहरू पोटरा स्यालको रूप धारण गरी डुल्न थाले। गुलामी पोटरासँग युद्ध गर्न उद्यत भए, तर सलहेसको मद्दतले दुवै भाइले गुलामीलाई पराजित गरे। गुलामीले उनीहरूलाई चिनेर अधीनता स्वीकार गरे र सधैं सहयोग गर्ने वचन दिए।

दीना-भदरीको अन्तिम युद्ध कनौलीको जोरावरसिंह नामक राजपूतसँग भयो। जोरावरसिंह पनि आफ्नो वीरताको लागि प्रसिद्ध थियो। उसको अखाडा (कुस्ती खेल्ने ठाउँ) मा सात सय पहलमानहरू प्रतिदिन कुश्ती खेल्थे। जोरावरसिंहको अनाचारले सबै त्रस्त र लड्दालड्दा थकित थिए। ऊ नववधू (नया दुलही) हरूलाई (बाटामा) घेरेर शीलहरण (बलात्कार) गर्ने गर्दथ्यो। यसरी नै दीना-भदरीको दुई डोलीलाई, जसमा

हिरिया र जिरिया थिए, रोकेर जोरावरसिंहले कनौली लग्न दुवाब दियो। र गुलामी र जोरावरसिंहमा कुस्ती पऱ्यो अनेक किसिमका दाउँ-पेँचहरू चले र अन्तमा जोरावर पराजित भयो। भदरीले जोरावरलाई बाँध्यो र त्यसपछि माऱ्यो।

ऐतिहासिकता– यो गाथा सोह्रौं शताब्दीभन्दा बढी पुरानो हुन सक्दैन। दीना-भदरी गाथाको मीर सुल्तान दादा, हुकुम, हाजिर, नालिस आदि प्रयोगमा अरबी-फारसी शब्द छ जुन मुसलमानी शासनकालको द्योतक हो।

गाथामा वर्णित नाम जस्तै – थारू, दोनवार निरसी, बुधना, रजना, रतन, मोती, कालूसादा, हिरिया, जिरिया, ताहिर मियां, गुलामी जट, फेकुनी तथा जोरावरसिंह पनि आधुनिकताको बोध गराउँदछन्।

दीना-भदरीको जन्मभूमि जोगिया जांजरि नेपाल तराईको एउटा गाउँ हो। यो सप्तरीमा छ। कटैयाको सम्बन्ध सप्तरीको कटैया गाउँसँग छ। बौरम नदी यस गाउँको नजिकै बग्छ। बगहा गाउँ र उरसी डीह लोकही थाना (भारत) मा पर्दछ। देवहा खोला घोड दौड छ र दौराको सम्बन्ध दौरपिट्टीसँग छ। कुनौली नेपाल-भारत सीमामा अवस्थित कुनौली बजार हो।

भाषा– दीना-भदरी गाथाको भाषा मिथिलाको लोक-जीवनसँग छ। यथा–

कुन ग्रहमा पाऱ्यौ हे धामी एकाबिहानै छेक्यौ द्वार
आफ्ना चेली-बेटी घरमै सुताई
हाम्री छोरी-बुहारी राख्यौ नाङ्गो
थारू दोनवार जन भए तैयार
आजको दिन दीना-भदरीको
सबैलाई दिनेछौं हामी चार सेर बनी (ज्याला)
दीना-भदरीलाई दिनेछौं छ सेर बनी

ज्यामीहरूलाई चार सेर बनी दिने (ज्याला दिने) चलन मिथिलामा धेरै पुरानो छ। उपर्युक्त पद जनजीवनको दर्शन गराउँदछन्। जस्तै–

कहिल्यै गरिन खुर्पा कोदालोको बनी
कहिल्यै जानिन हे धामी पैंचो-उधारो।

यसमा कृषि-जीवनको छवि भेटिन्छ।

दीना-भदरीको मृत्युपश्चात् जोगिया गाउँकी महिलाहरूमा उच्छृंखलता बढ्यो। उनीहरूले मर्यादा उल्लङ्घन गरी स्वच्छन्द तथा स्वतन्त्र भइन्, जसको वर्णन निम्न उद्धरणमा पाइन्छ।

मूजा झम्केदेखि बडो गजब
सरबी झम्के, ढकनी झम्के, सप्को झम्के, जूडो झम्के
ओखली झम्के, मुसल झम्के, सुपो झम्के, चाल्ने झम्के
खुर्पा झम्के, चुलेसी झम्के, मूरली झम्के,
गाजल-सिंदूर सिंगार गरिन्।

उपर्युक्त शृंगार सर्वथा नयाँ छ। यस प्रकारको शृंगारको कतै वर्णन गरिएको छैन। कुनौलीको जोरावरसिंहको अनाचार, अत्याचारको वर्णन छ–

जोरावरसिंह राजपूत दुलहीहरूलाई
पच्छिम जान दिँदैन
पच्छिमकी दुलही पूर्व जान दिँदैन
दच्छिनकी दुलही उत्तर जान दिँदैन
उत्तरकी दुलही दच्छिन जान दिँदैन

दीना-भदरीको गाथामा जम्मा सातवटा परिच्छेदहरू छन्। पहिलो परिच्छेद दीन-भदरीको वन्दनाबाट प्रारम्भ भई धामीसँग वाद-विवाद तथा कटैयाको शिकारको बन्दोबस्तको प्रसङ्ग छ। अर्को परिच्छेदमा मामा बहोरनसँग दीना-भदरी कटैया वनको माया तथा पोटरा स्यालबाट दीना-भदरीको मृत्युको प्रसङ्ग उल्लेख छ। तेस्रो परिच्छेदमा जोगिया गाउँमा दीना-भदरीको प्रेतात्माको योगी भेषमा जोगिया गाउँको यात्रा तथा आफ्नी आमासँग भेटेको प्रसङ्ग छ। चौथो परिच्छेदमा हिरिया तमोलिन तथा जिरिया लोहारिनलाई भगाई लगेको प्रसङ्ग उल्लेख छ। पाँचौंमा बगहाको ताहिर मियाँ तथा गुलामी जटसँगको युद्ध गरी परास्त गरेको तथा उसको सहयोगको वचन प्राप्त गर्ने प्रसङ्ग छ। सातौंमा कुनौलीका जोरावरसिंह तथा गुलामी जटको कुस्ती तथा जोरावरसिंहको पराजय एवं उसको मृत्युको वर्णन छ।

वस्तुतः असाधारण वीरता, जन कल्याणको भावना तथा स्वतन्त्र विचारधाराको निम्ति मुसहर जातिका मानिसहरू दीना-भदरीको देवत्वलाई अमरत्व प्रदान गरेका हुन्।

अनुवादकः रोशन/रमेश

मिथिलाक इतिहास आ कला परम्परासबहक परिचय

रामनिवास पाण्डे

इतिहास

विगतमे मिथिला राज्य उत्तरमे हिमालयसँ दखिनमें गंगाधरि आ कोशी आ गण्डकी नदीसबहकबीच फैलल छल। प्राचीन ग्रन्थसबहक अनुसार मिथिला भूमिके पन्दरहटा नदी सिंचैत रहै। ओही राज्यके यज्ञ क्षेत्र, विदेह, आ त्रियुक्ति (तिरहुत) सेहो नामसँ जानल जाइत छल। ईसब नाम यैह थत्यक संकेत करैत अछि कि भारतक सीमामे स्थित मिथिला राज्यमे भविष्यवक्ता आ योगीसब बैसै छलाह आ ओ राज्य कर्मकाण्ड आ बली आ भाँतिभाँतिक सामाजिक, धार्मिक क्रियाकलापसबलेल खूब प्रसिद्ध केन्द्रसबयें एक छल। राज्यके चारोओरि शिवक विभिन्न लिङ्गसब स्थापित कयल गेल छल। तिनकर नाम कपिलेश्वर, कुपेश्वर, कल्याणेश्वर, जलेश्वर, क्षीरेश्वर आ मिथिलेश्वर छलनि आ ओसबमे मिथिला परिक्रमाक बेर तीर्थयात्रीसब श्रद्धासँ दर्शन आ पूजा करै छलाह। मिथिला राज्य यै कारण प्रसिद्ध नै भेल जे अइठाम *रामायणक* नायिका देवी सीताक जन्म भेल छल वरु राजर्षि जनक, यावल्क्य आ गार्गीक लेल प्रसिद्ध भेल। ओसब हिन्दू सभ्यताक शुरुमे आर्यावर्तमे हिन्दू धर्मक सामाजिक नीतिसब आ दर्शनक सुव्यवस्था आ विकास करबामे पैघ योगदान कइले छलाह।

मिथिला क्षेत्रमे व्यवस्थित जीवन शुरु भेलापर चरवाहासबहक एक समूह बइसल बुझाइत अछि। ओकरासबसंगे गाईमालक एक पैघ झुण्ड रहै। ओसब से गाईमालके विशाल मैदान आ जङ्गल (वृहदारणक्य) मे चरवाक लेल लजाएत छल जे शिवालिक पहाड़सँ दक्षिणमे प्लाइस्टोसीन पश्चात् आ खराब वातावरण सकला पर विकसित भेल। बादमे सेहे वातावरण पृथ्वीक सतहपर विद्यमान रहल। विदेहक गाईसबहक उल्लेख सर्वप्रथम ईशापूर्व २००० मे लिखल बुझइत *तैत्रिय संहिता* मे मिलैए। दोसर ग्रन्थ *सत्पथ व्राम्हणमे* उल्लेख भेल अछि जे ओ क्षेत्रमे जनकवंश आ आर्य संस्कृतिक जग रखवला व्यक्ति विदेह माधव छलाह मुदा *पुराणसब* तकर श्रेय *निमि विदेह* के दैत अछि। पारगितार *पुराण* आ *रामायणक* सूक्ष्म अध्ययन क ई निष्कर्ष देलैन जे मिथिलापर जनक वंशक चौरानवे राजासब शासन कयलैथ। सीताक पिता राजा शिरध्वज जनक (करीब

१५०० ई.पू. मे) विदेहक सब सँ पैघ अर्थात् प्रसिद्ध शासक छलाह। हुनका शासनकालमे राज्य खूब समृद्ध छल आ विद्वान् आ विदूषीसब अपन समय धर्म आ दर्शनक विकासमे लगवैत छलाह जे आखिरमे मनक चिरशान्ति आ मोक्ष पावमे सहयोगी होएछल। राजदरबारमे सत्यकाम ज्वाला, अरूण अश्वपति, श्वेतकेतु, याज्ञवल्क्य आ गार्गीसन विद्वान् विदूषीसबहक जमघट होए छल। ओसब खालि प्रकाण्ड विद्वान् आ विदूषी नै भ' पैघ सामाजिक सुधारक सब सेहो छलाह। हुनकासबहक परिश्रमसँ विदेहमे हिन्दू धर्म आ वर्णाश्रम व्यवस्था खूब जड जमौलक आ राज्य एक आदर्श हिन्दू राज्यक रूपें स्थापित भेल। प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थसब ओ राज्यक राजधानी मिथिलापुरी नगरमे बहुते पोखरी (सागर), नहर आ चौकसब छल से उल्लेख करेत अछि। सर्वसाधारणक घर प्राय: काठसँ बनल छल। शहरक वातावरणमें बली मन्त्रक उच्चरण आ जत्रा मनाब लेल आएल जनसमुदायक आवाज गुँजत रहै। ओहिठाम खूब भव्य मन्दिर आ महलसब निर्माण भेल छल आ सम्पूर्ण शहरके उच्च देवार या किलासँ सुरक्षित कयल गेल छल। शहरमे अनेक सकडसब छल जेकर दूनोतरफ राखल असंख्य दूकानसबमे व्यापारीसब अपन समान बेचैत छल। *महाभारत* मे भेल वर्णनक आधारपर पाण्डवसब ओहिठाम निर्वास कइले छलनि। कर्ण आ भीमसेन मिथिलापर विजय पौले छलनिसे कहल गाइए। *महाभारत* या कुरुक्षेत्रक युद्धमे कौरवसबहक ओरसँ लडैबला मिथिलाक राजा मारल गेल छलहि।

कौटिल्यक कथन अछि जे करला जनक मिथिलाक अन्तिम शासक छलाह जिनाका बाद ओ राज्य वाजीसबहक शासनमे गणतन्त्रमे परिवर्तन भेल। ताहि बेर शासन प्रणली बदलिओ गेला पर जनतासबद्वारा राजा कटौनिआर राज्यक मनोनित नेताक रूपैं निमिक वंशजसब ओहि राज्यमे तैया धरि शासन कयलनि जैया मगध महाज्ञानपदक राजा अजातशत्रु (ई. पू. ४५९-१९) मे ओहिपर कब्जा कयलनि। जैन वंशावलीअनुसार महावीर मिथिला राज्यमे छौ वरखा ऋतुधरि वास कयलनि। *मज्जिया निकाय* अनुसार गौतम बुद्ध विदेह राज्यक दूबेर यात्रा कयलनि। ताहि बेर ओ मखदेवा अम्बावनामे बइसलनि आ बहुते लोकनिक धर्म बदललनि यानि ओकरासबके बुद्ध धर्मावलम्बी बनौलनि। *गन्धार जातक* अनुसार विदेह राज्य ३०० योजन क्षेत्रमे विस्तारित छल। यैमे १६००० गाम, १६००० पत्थरक घर आ १६००० नर्तकीसब छल। *सुरुचि जातक* अनुसार विदेह यानि विदेहपुरी राज्यक राजधानी ७ योजन मे फैलल छल त बनारस १२ योजनमे फैलल छल। व्यापारीसब बुद्धो कालमे दूरदूर सँ आबिक अपन समानसब बेचैत छल।

सैसुनाग, मौर्य आ सुन्त्रास वंशक शासनधरि विदेह उनका सबहक अधीने छलै। मुदा कुसवासबहक शासनबारे कोनो पैघ प्रमाण नै अछि। चारिम शताब्दीमे गुप्तसबद्वारा भारतमे शक्ति हथिऔलापर विदेह उनकासबहक एक राज्यक रूपैं रहि गेल जेकरा त्रिक्ति कहल गेल। सातम शताब्दीमे गुप्तसबहक पतन भेलापर गण्डक राजा शशाङ्क एकरा अपन राज्यमे मिलौलथि। मुदा हुनकर मृत्युपश्चात् यै राज्यपर बर्द्धन सबहक सीधा शासन भ गेलै। ताङ्ग वृतान्तअनुसार एक चिनिया दल वाङ्ग ह्वेन-त्सेक नेतृत्वमे सन् ६४६ मे भारत गेल। त्रियुक्तिसँ गुजरैतबेर ओहिपर अरूणाश्व आक्रमण क' मालसामान आ बहुमूल्य उपहारसब लुटिलेलनि। बादमे नेपालक राजा नरेन्द्रदेवक सहायतासँ हुनका हराओल गेल आ बन्दी बना चीन पठाएल गेल। ओहिठाम ओ शोकसँग मरि गेलनि। विद्यमान अभिलेखसब सातम शताब्दीक आखिरमे त्रियुक्तिपर मगधक राजा आदित्यसेनक शासन छलै से उल्लेख कइले अछि। आठम शताब्दीमे बंगालक पलससब त्रियुक्तिउपर

कब्जा कयलनि आ एघारम शताब्दिधरि शासन कयलनि। हुनका सबहक शासन कालमें विदेहक जनता प्रसन्न नै छल।

एघारम शताब्दीक अन्तिम दशक (१०९७) मे कर्नाटवंशी नान्यदेव मिथिलापर अपन आधिपत्य जमौलनि आ ओहि राज्यपर सिमरौनगढसँ शासन करलागलथिका अभिलेखसब नान्यदेवके विविध सैनिक अभियान सफलतासाथ संचालन क' तिरहुतके एकीकरण करवाक श्रेय दैत अछि। कर्नाटसबहक अधीन राई तिरहुत आर्थिक, सामाजिक, आ सांस्कृतिक क्षेत्रमे उल्लेखनीय प्रगति कयलक। हुनकासबहक शासनकालके तिरहुत 'स्वर्णिम युग' कहल जाइए। ओसब मिथिलापर करीब २२५ वर्षधरि शासन कयलनि जेकरा बाद गयासुद्दीन तुगलक एहि राज्यपर विजय पौलनि। करीब तीन सय वर्षधरि मिथिला राज्य मुसलमानसबहक कब्जामे रहलै। तेकराबाद एहिपर मकवानपुरक सेनसब कब्जा कयलनि। लोहाङ्गसेन राज्यमे सामाजिक, सांस्कृतिक आ धार्मिक क्षेत्रमे पैघ योगदान कयल बुझिपडैए। सन् १७६२ मे दिग्बन्धन सेनक शासनकालमे राजा पृथ्वीनारायण शाह मकवानपुरपंर विजय पौलनि आ तैयासँ पूर्वी तराईक सम्पूर्ण क्षेत्र, तिरहुत या मिथिला सेहो पर, गोर्खाली प्रभाव जमिगेल। सन् १८१६-१७ क अंग्रेज-गोर्खा युद्धक बाद नेपाल पूर्वी तराईक कुछ भाग गुमौलक। मुदा सन् १८१६ क सुगौली सन्धिक बाद ई फेनो नेपालक अधीन भ गेल। आइ जनकपुर केन्द्रबिन्दु रहल मिथिला हिन्दू धर्मक एक महत्त्वपूर्ण केन्द्रक रूपमे रहल अछि। ओहिठाममें ढेरों पोखरि, कुण्ड ओ मन्दिरसब आई। टिकमगढ़क महारानी वृषभान कुमारीद्वारा निर्मित माँ जनकीक नौलखा मन्दिर ओ शहरक बहुत भव्य आ दर्शनीय स्मारिकाक रूपमे रहल अछि। एकर असाधारण भव्यतालेल एकरा नेपालक ताज़महल कहल जाइए।

परिचय

महाभारत सन प्राचीन साहित्यिक ग्रन्थसब मिथिलापुरीक महल, मन्दिर, देवार, गल्ली, बारी आ पोखरिसबहक गइन विवरण दैत अछि। आइ जनकपुर या ओ क्षेत्रक कोनो स्थलपर आवश्यक पुरातात्विक अवशेषसब नै अछि जे मिथिलाक निश्चित अवस्थितिक आधिकारिताके प्रमाणित क सकै। सि-यु-कीमे ह्वेन त्साङ्ग बाजी राज्यमंडलक राजधानीके चेन-सु-ना नामसँ उल्लेख कइले छथि। जुलियन एकरा चान-सुङ्ग नाम देलैथि आ मार्टिन एकरा जनकपुर कहिक चिनौलथि। ई सब तथ्यसबके बील अपन ग्रन्थ *बुद्धिस्ट रेकर्ड्ज अँव द वेष्टर्न वर्ल्ड* मे कुशलतासँ प्रस्तुत कइले छथि। ह्वेन त्साङ्गक अनुसार बाजीसबहक राज्य (मिथिला) पूरब-पछिममे लाम आ उत्तर-दखिनमे पातर छल। करीब एक शताब्दी पहिले कनिङ्घ्म अपन किताब *ऐन्श्यन्ट ज्यॉग्राफि अँव इन्डिअ्* (पृ. ४४५) में लिखलनि कि 'चिनियाँ यात्रुद्वारा वर्णन कयल दूरीसब सही होला पर ई बात करीब निश्चित अछि कि बाजीसबहक राजधानी इ.पू. सातम शताब्दीमे जनकपुर होयबाक चाहि।' ऐहि तरहे ताइवेरसँ जनकपुरक परिचय या पहिचानक समस्या महसूस कयल जाइअ। मुदा हाले उपेन्द्र ठाकुर अपन किताब *हिष्ट्रि अँव मिथिला* (पृ. २४) मे कहले छथि कि ह्वेन साङ्गक विवरण अस्पष्ट अछि आ ई 'प्रामाणिकता आ दूरी' के प्रष्ट नै करैअ। बुद्ध धर्मावलम्बीक श्रोतसबके विस्तृत रूपमे उद्धृत करिक ओ आखिरमे ई तथ्य स्थापित कयले छथि कि साहित्यिक कृतिसबमे कहिओ विदेह राजधानीक रूपमे उल्लेख नै कयल गेल अछि। हुनका अनुसार विदेहक राजधानी मिथिला छल आ ओ अपन कहबसब

प्रमाणित करबाक लेल कुछ उद्धरण सब *रामायण, जातक कथा* आ विविध *पुराण*सबसँ प्रस्तुत कयले छथि। आखिरमे ओ विदेहक राजधानी आधुनिक चम्पारण क्षेत्रमे कोनो ठाम हयबाक चाहि से बतोले छथि। ठाकुर अनुसार, विदेहमे बहुते शहरसब छले। ओ सबमे एक नन्दगढ़ छल जेकरा करीब १५०० वर्ष पहिले नास कयल गेल छल। ओ से स्थलक पुरातात्विक अवशेषसबहक अध्ययन क' ओकरा प्राचीन जनकपुर रूपमे चिनौले छथि। मुदा एहि सन्दर्भमे प्रमाणक रूपमे प्रस्तुत एक छोटकाक आहत-मुद्रा (भुखला पैसा) देवीक स्वर्णिमपट्टी नन्दगढ़के प्राचीन मिथिलापुरीके रूपमे चिनाब लेल मजबूत प्रमाण नै अछि। मिथिलाक स्त्री (उत्तराङ्गण) या प्रताप *उपनिषद्*क युगमे शिखरपर छल। ताहिबेर घरसब काठ, नर्कट आ खरेमात्रसँ बनैत छलै। आदि आर्यसब पत्थर, पकिया ईंटा आ खपरासँ घर बनबामे अज्ञानी छलनि। ताहिसँ प्राचीन मिथिलाक पुरातात्विक अवशेष सबपर ठाकुर आ मिश्राद्वारा अपन कृतिसबमे उल्लेख भेलाक आधार पर अन्वेषण करबाक कोशिश नै होयबाक चाहि। ठाकुर अपने अपन कितापमे एकठाम लिखले छथि कि मिथिला "मुख्यरूपेण नेपालसँ गंगाक ओर बहेवला अनेक नदीसबसँ आवद्ध अस्थाई तालसबहक एक विशाल कड़ी" छल। उल्लेखनीय अछि कि नन्दगढ़ चारोओर जनकपुर शहरसन कहीं कोनो ताल नै अछि। इहे तथ्य ई प्रमाणित करैत अछि कि नन्दगढ प्राचीन मिथिलापुरीक शहर नै अछि।

सेनसबहके युगसँ जनकपुरके मिथिलाक राजधानीक रूपमे स्वीकार कयलासँ सन्त सुर किशोर दास एहिठाम अइलनि आ करीब एक शताब्दी पहिले टिकमगढ़क महारानी वृषभान कुमारी देवीद्वारा निर्मिण वर्तमानमे भव्य मन्दिर स्थापित भेल पवित्रस्थलपर देवी जानकीक पूजाअर्चना करे लगलनि। आइ जनकपुर क्षेत्र आ ओकरा चारोओरक स्थासबहक पुरातात्विक अवशेषसबहक व्यापक अन्वेषण आ संभावित स्थलसबहक वैज्ञानिक रूपसँ खनाइ करबाक आवश्यकता महसूस कयल जाइए जाहिसँ प्राचीन मिथिलापुरीक एकेटा संभावित क्षेत्रक रूपमे जनकपुरसँ सम्बन्धित आओर विवरणसब बाहर आओल।

कला

ब्राह्मणसबहक कालमे उपनिषदीय जीवनशैलीमे कलाके प्रोत्साहन नै देल जाएत रहै। एहि क्षेत्रमे जनकवंशीसबहक शासनकालमे कलाके खालि ऐन्द्रिक सुख या आनन्दक एक ओतक रूपमे निन्दा कयल जाएत छल (ठाकुर, पृ. ९२-९३)। मुदा राजसूय यज्ञक समयमे अग्नि वेदसब निर्माण भेल छल जाहिमे पत्थरके खाँचासब तामा आ लोहा सेहो प्रयोग कयल गेल छल (कुमारस्वामी, पृ. ६३-६४)। *बजसयेनी संहिता* मे १०,८०० ईंटसँ बनल एक अग्नि वेदीक विवरण मिलैत अछि (ठाकुर, पृ. ९३)। बुच अपन किताब *इकॉनमिक लाइफ इन ऐन्श्यन्ट इन्डिअ,* प्रथम खण्ड (पृ. १६९) मे लिखले छथि कि राजा जनकक दरबार 'भाँतिभाँतिक चित्रसबसँ सुसज्जित एक पृथक भव्य दरबार' छले आ ओकर मूल भागसबमे अनेक टंकी, नहर आ चौकसब छलै। मुदा गामक किसानसब खर, बाँस, चिकनी माटी आ कचिया ईंटसँ बनल झोपडीसबमे बइसल छलै। बुद्ध ग्रन्थसब सेहो ई प्रमाणसब प्रस्तुत करैत अछि। तिनकर अनुसार, बड़का घर आ भवनसब बेसी व्यस्त आ हल्लाबला शहरसबमे छल आ आम जनता 'एकतल्लाबला टाटी आ खरले छरल छप्परबला ठार झोपडीसबमे' बइसत छलै। जनताक भौतिक जीवन नैतिक र

आध्यात्मिक जीवनक तुलनामे ओते विकसित नै छल। एहि बातक पुष्टि *उपनिषद* आ *पुराणसबहक* अध्ययनो करैए।

मिथिलामे कलात्मक गतिविधिसबहक प्रारम्भ एकरा गुप्त शासनसबहक कब्जामे कायला पर भेल। ताईधरि मूर्तिसब आर्य समाजक एक अभिन्न अंग भचुकल छलै आ मन्दिरसबमे सूर्य, शिव, विष्णु, शक्ति आ गणेशक विस्तृत पूजाअर्चना होयल छल। ताहिसँ पहिले जेजेतना मूर्तिसब छल काठसँ निर्मित होयत छल आ विविध चित्रकारी रूपमे छल आ ओसब समयक कुचक्र शिकार होगेल। वैष्णव धर्मावलम्बीसबहक अवतारसँ सम्बन्धित सिद्धान्त गुप्तलिच्छवी शासनकालमे समाजमे बहुत प्रचलित छल आ मन्दिरसबमे पूजाअर्चना लेल विष्णुक विविध औतारी मूर्तिसब बनाएल गेल। विविध हिन्दू देवीदेवताक महिमा बखान करैबला *पुराण*सब सेहो एहि समयमे लिखल गेल। ताहिमेसँ एक *वराहपुराण* अछि जे मिथिला राज्यक वराह क्षेत्रक पास कोनो ठाममे लिखल बुझिपडैए। वराह क्षेत्रमे स्थित या स्थापित वराहक मूर्ति पाँचम या छठम शताब्दी ईश्वी संवत्मे बनल छल। एहिठाम देउताद्वारा क्षणिक पृथ्वीसँ धरतीमाता (भूमिदेवी) क पुष्ट मूर्ति स्थापना कार्य भेलप्रष्ट होइए। मूर्ति पत्थरसँ बनल अछि आ ओकर स्थापना नागरशैलीक ईटक मन्दिरमे कयल गेल अछि।

मध्यकालक शुरुमे पलसवंशीसब पूर्वी भारतमे शक्तिमे अयला पर मिथिला राज्यमे कलात्मक गतिविधिसब देखल गेल। मिथिलामे मिलेवला ताहिबेरक मूर्तिसब बेसी मोट आ भारी अछि। एहि तथयक पुष्टि सिमरौनगढ़सँ मिलल ताहिवेरक विष्णुक किछु मूर्तिसब कुशलतासँ करैत अछि। ओसब प्राय: विशाल आ भव्य रूपमे बनाएल गेल अछि। पट्टी (पैनल) के वगलमे आयुधपुरुष सब आ श्री आ पुस्तिका सेहो चित्रण कयलगेल अछि। एहि कालमे मूर्तिसबहक निर्माण करवालेल कारी क्लोराइट नामक वस्तु प्रयोग होय छल। मिश्रा अपन किताब *कल्चरल हिष्ट्रि अँव मिथिला* मे लिखले छथि कि मध्यकालक शुरुमे मिथिलामे मिलेबला मूर्तिसबके मिथिला या मैथिल मूर्तिसब कहल जाइए। ई मूर्तिसबहक केन्द्रविन्दु पूर्ण लालिमायुक्त यौवन भेल एक मानव आकृति अछि जे प्रफुल्लित आ गतिशील अछि आ ओकर निचका भागमे वास्तविक रूपमे एक आध्यात्मिक भाव प्रकट करेबला, निस्सन्देश सम्मानित सम्प्रदायसबद्वारा सम्मानित यौनजन्य योग या तान्त्रिक विवरणसँ प्राप्त यौनोत्तेजक प्रकृतिक आन्तरिक अनुभूति देबबला आध्यात्मिक आ सांसारिक अभिव्यञ्जनाक मिश्रण अछि।

दशम-एघारम शताब्दीमे पवित्रता आ महानताक शास्त्रीय या पुरातन मान्यतासबके मूर्तिसबमे त्यागल गेल छल। ताहिबेर मूर्तिकारसब सुकोमल 'शरीर' के प्राथमिकता दैत छलै। दशम शताब्दीक गहिर व्यापक रूप पातर आ सीमित होइत जाइछै आ शारीरिक आकृतिक भव्यता बेसी उजागर होइत अछि। पयरसब आओर पातर आ लचकविहीन अछि। बारहम शताब्दीमे सेहो सुकोमल शारीरिक रूप रंगोके कायम कयल आ पहिलक शताब्दीएसन औपचारिक दृष्टिसँ देखल पबैत अछि। पहिलक शताब्दीमे देखाएबला मुखाकृतिक भावक सम्वेदनशीलता हराएल अछि तं गहनासब बहुत चमकदार अछि। ई चारि शताब्दीमे मिथिलाक कलामे उच्च प्राविधिक विकास भेल आ एकतरहक यान्त्रिक भव्यता आ लालित्य भेल मिलैत आइछ से कहबामे अतिश्योक्ति नै होयत। तिनकर रूपरेखा तेज (पनिगर). आ प्रष्ट छलै। सिमरौनगढ, वाल्मिकीनगर, जनकपुर आ मूर्तियाक मूर्तिसब अपन मोडल सबमे ई विशेषतासब प्रष्टे देखबैत अछि।

मिथिलाक मूर्तिसबमेसँ जनकपुरस्थित राम मन्दिरक पैनलमे माय आ बच्चाक मूर्तिके सबसे निक उदाहरणक रूपमे लेल जा सकैए। एकर साम्प्रदायिक विशेषता बतौनाइ कठिन भेलो पर पैनलपर चित्रण भेल गणेश, कार्तिकेय आ लिङ्गक आकृतिसब ओ चित्र टौव धर्मसँ सम्बन्धित हो सकैए से संकेत करैए। माय बच्चाके सेहार रहल अछि त ओकर सेवा दूटा महिला कर रहल अछि। तहिमेसँ एक महिला (सेविका) मायक देह जतैत अछि आ दोसर महिला ओकर बिछौनापर गमेगमे पंखा हौकैत अछि। मायक पछाडिसँ चोटी गुइल केश-सज्जा आ पद्म-पल्भ आँखिसब ई चित्र बारहम शताब्दीमे बनाउल होतै से देखबैत अछि। नीचामे दूनोओर भक्तसब नमस्कार-मुद्रा मे दूटा कमलपुष्पमे बइसल कहि चित्रण कयल गेल अछि। एहि मूर्तिक सक्कल प्रतिलिपि बारहम शताब्दीमे चित्रण भेल छल से उल्लेख करैत दिल्लीक राष्ट्रिय संग्रहालयमे प्रदर्शन कयल गेल अछि। एहि हिसाबसँ शैलीक दृष्टिसँ ई मूर्तिक बारहम शताब्दीक उक कृतिक रूपमे लेल जासकैए।

सिमरौनगढ आ जनकपुरमे मिथिला कलामे निर्मित शिव, विष्णु आ शक्तिक वहुते मूर्तिसब अछि आ ओसब दशम-चौदहम शताब्दीमे मिथिला राज्यमे कलात्मक क्रियाकलाप खूब विकसित भेल छल से देखबैत अछि। ई मूर्तिसबमे वक्ररेखी पत्थर आ/या ईंटसे बनल मन्दिरसबमे स्थापित कयलगेल अछि आ भक्तसबद्वारा तेकर श्रद्धापूर्वक पूजाअर्चना होइत अछि। जनकपुरक चारोओर कलयाणेश्वर, क्षीरेश्वर, जलेश्वर आ मिथिलेश्वर महादेवक पीठसब अछि जाहिठाम परिक्रमालेल मन्दिरसबमे लिङ्गसबहक स्थापना कयल गेल छल। आइधरि पूर्व-मध्य आ मध्य-युगक शैव मूर्तिसब आधुनिक युगक पवित्र स्थलसबभे स्थापित कयल पबैत अछि। जनकपुरस्थित राममन्दिरक प्राङ्गणमे स्थापित एकमुखी लिङ्ग मिथिला कलाक प्रेघ उदाहरण अछि। लिङ्गक आकारमे बनाएल मूर्तिक आकृति खूब भव्य देखाएत अछि।

जनकपुरसँ १० किलोमीटर उत्तरमे स्थित मखनाहामे बारहम-तेरहम शताब्दीमे भगवान् शिवक भव्य प्रस्तर मूर्ति छलै। मन्दिरक परिसर आ गर्भगृह आ सपाट छतबला द्वार आइधरि अवशेषसबमे देखा पड़ैत अछि। ओहिठाम नृत्य-मुद्रामे अष्टभुजाधारी शिवक मूर्ति खूब रमणीय देखाहर। ओ मूर्ति अपन विद्यमान भुजासबमे डण्ड-हस्त, लोल-हस्त, अग्नि, डयड, त्रिभुत आ अक्षमाला नेने अछि आ ओ मूर्ति डेक्कन भारतक चोला नररूपी शिवक मूर्तिसबहक शैलीमे निर्मित अछि। ओहिठाम स्थापित पशु-आकृतिबला देवता, भूत आ नर्तकी या नृत्याङ्गनासबहक मूर्तिसब ओतबे प्रशंसनीय अछि। ई मूर्तिसबके अश्वन रामस्वरूप रायसागर बहुमुखी क्याम्पसक संस्कृति शिक्षण समितिमे सुरक्षित राखल गेल अछि। जनकपुरसँ करीब १० किलोमीटर उत्तर-पूर्वमे स्थित भुतहीमे स्थापित विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी, आदिक मूर्तिसब सेहो सिमरौनगढमे स्थापित मूर्तिसबसन कर्नाट शैलीक अछि। तहिबेरक मूर्तिसबहक अध्ययनसँ कर्नाटवंशीसबहक युग या शासनकालमे मिथिलामे कला परम्परा उच्चता पर छल से उजागर करैत अछि।

ऐपन वा अरिपन कलाक रूपमे प्रसिद्ध मिथिला चित्रकलाक विकास अचेतन रूपसँ ओहि क्षेत्रक स्त्रीसभद्वारा भेल अछि आ ताहिमे मिथिलाक सम्पूर्ण सांस्कृतिक जीवनक झलक मिलैत अछि। ई खूब प्रतीकात्मक अछि आ एहिमे उर्वरता देखाबएबला सम्प्रदायक गहिर छाप देखायए। ई कलाबारे सर्वप्रथम गुप्त कालमे लिखित *ब्रह्मपुराण* मे उल्लेख भेल अछि। एकर तुलना गुजरातक सथिआ कला, महाराष्ट्रक रंगोली कला, बंगालक

अल्पना कला आ राजस्थानक मेहँदी या नन्दन कलासँ कयल जा सकैए। चित्रकार महिलासब दुर्गा,काली, राम, सीता, कृष्ण, राधा, सूर्य, चन्द्र, बाँस, गाछि, कमलपुष्प, सुगा, माछ, आदिक सुन्दर या मनोरम चित्रण लेल, लाल, कारी, पिअर, नीर या हरिअर आ उजर रंग प्रयोग कइले अछि। चित्रणकयल भू-आकृति या रिलफिसब एकदम शुभ आ प्रतीकात्मक अछि। विवाहोसबमे दान दिआएबला या प्रयोग होइबला भाँड़ाबर्तन, पंखा आ माटिक सामानसबके तहिआसन विविध आकृति आ डिजाइनसभक चित्रण कयल गेल अछि आ हमसब ओहिमे भित्तिचित्रक शैली निकजखा देख सकैछि। उपेन्द्र ठाकुरक विचार अछि कि मिथिलाक अरिपन चित्रकला या चित्रसब प्रायः ओहि क्षेत्रक ब्राह्मण आ कायस्थसभद्वारा सुपोषित धनुशैलीक भित्तिचित्रसभ अछि । ब्राह्मण चित्रकलामे पातर कल्पनाशील आ व्यग्र रेखासब अछि त कायस्थ चित्रकलामे दृढ मजबूत आ सटीक रेखासब अछि। तेकर आकार चंचल आ शक्तिशाली अछि आ गति सुकोमल आ भव्य अछि।

अपन पुस्तक *आर्ट अँव नेपाल* (नेपालक कला) मे लिडिया ऐरन मिथिलाक कलाबारे एहितरहक टिप्पणी कयले छथि, "हजारों वर्षसँ मिथिलाक नारीसब अपन घरक माटिक देवारपर, अँगनाक जमीनसबपर तस्वीर बनएबाक गरिमामय कलाक विकास कयलनि त बादमे कागजक प्रयोग पूजाअर्चना, कर्मकाण्ड आ नर आ नारायणबीच संवाददलेल कयलनि ..... ओहि चित्रसबमे तान्त्रिक चिन्हसबहक वर्चस्व अछि आ ओ सब जीवनबारे तान्त्रिक धारणाक प्रतिनिधित्व करैत अछि। चाहे अमूर्त होए याअलंकारिक ओ चित्रसबमे अचेतन यौनक व्यापक प्रयोग भेल मिलैए आ ओसबहक मौलिक आ औपचारिक प्रयोग खासक विवाह,प्रजननक्षमता आ भोग सँ सम्बन्धित विशिष्ट तान्त्रिक धारणा, अन्तर्ज्ञान प्रदान करैबला यौनानन्द आ लीला, एकटा खेल, एकटा क्रीडा आ एकटा क्षणिक मायाके चारोओर रहिक' कइल जाइत रहै।" (पृ. ४३-४४)

मैथिल चित्रसबमे चित्रण भेल तीनटा सबसँ लोकप्रिय वस्तुसब ई अछि (क) तथाकथित कोहबर अर्थात् योनि या भग मे प्रवेशोन्मुख लिङ्गपर केन्द्रित चित्र (१) तथाकथित अरिपन, अर्थात् कर्मकाण्ड आ घरेलु धार्मिक क्रियाकलापसब सम्पन्न करवालेल जादूसँ पवित्र क' अलगाओल स्थल देखावेबला एक जादूभरल वृताकार (तिब्बती मण्डलासबसन) ई मण्डलासबसन ओ वृताकार सेहो ब्रह्माण्डक चित्रण करेत अछि त ई चित्रसबमे प्रयुक्त प्रतीकचिन्हसब तन्त्रशास्त्र अनुसार ब्रह्माण्डक अवधारणा झलकबैत अछि।) आ (ग) हिन्दू मिथक या *पुराण*सँ सम्बन्धित दृश्यसब। ई चित्रसबमे प्रायः कारी या लाल रंगक प्रयोग भेल रहैछै आ ओसब कमेमे बेसी बुझाएब से बातपर जोड दैत अछि। 'प्राचीन शैली' क भेलो पर ई चित्रसबहक अपन विशिष्ट विषयवस्तु आ प्रतीकात्मक अर्थ होइत अछि। मिथिला चित्रकलामे मुहारसबके प्रायः पार्श्वमा देखायल जाइछै मुदा आँखिके जेना अगासँ देखलसँ देखायल जाइछै। पयरसब हमेशा अगलबगल घुमल रहैछै। लम्बा नोकगर नाक आ बडका आँखि भेल मुँह कोनो मंगोलियन प्रभाव नै भेल मुदा आर्यसबहक विशुद्ध सन्तान अछि से धारणाक पुष्टि करैत अछि। अखनो मिथिलाक नारीसब अपन घरमे धार्मिक या अन्य उत्सवमे घरक देवार आ अँगनामे चित्र वनबेत अछि। ओसबहक विषयवस्तु आ डिजाइन प्राचीन आ मध्यकालीन चित्रसबसन सरल होइछै आ ओहि क्षेत्रमे अखनोधरि जीवित प्राचीन परम्पारके दर्शबैत अछि।

वास्तुकला

मिथिला भवन निर्माणसम्बन्धी क्रियाकलापसब होलोसीन युगक शुरुमे भेल नवप्रस्तर क्रान्तिके समयमे शुरु भेल। शुरु शुरुमे पशुपालन आ खेती क' हातमुँह जोड़एबला लोकनि खर, नर्कट, बाँस, गिलेबा आ कचिया ईंटसँ बनल साधारण झोपडीसबमे बइसत रहै। मुदा मौर्य आ गुप्त कालमे ओहि क्षेत्रमे मानव सभ्यताक विकास होइत खनि स्थायी गाभघर आ शहरसबहक विकास भेल। तेकरासंगे हिन्दू धर्मस्थली या मठ मन्दिरसबमे स्तुप आ मठसबहक निर्माण होय लागल।

मिथिलामे आओर सम्प्रदायक मन्दिरसबहक निर्माण कार्य गुप्त कालमे शुरु भेल। उपेन्द्र ठाकुरका मतानुसार ताहि समयमे वराक्षेत्रके मिथिलामे मिलौलाके संगे वराहमन्दिरक निर्माण भेल। एकर सुपुष्टि ओ स्थलमे स्थापित पाँचम-छठम शताब्दीक मूर्तिसँ होइछै। जनकपुरसँ नजदीक रहल कुआमे महादेवक मन्दिर स्थापित अछि। ओहिमे स्थापित एकदम जर्जर मूर्ति सेहो गुप्तकालीन वराह देवक बुझिपडैए। ई मूर्तिसबसंगे मूर्तिया, वाल्मिकीनगर आदिमे स्थापित वराहक मूर्तिसब गुप्त कालमे मिथिला क्षेत्रक मन्दिर सबमे वराहक विस्तृत पूजाअर्चना होवछल से देखबैए।

कर्नाटवंशीसबहक शासनसँ पहिले गुप्त आ पाल कालमे निर्मित मन्दिरसब वर्गाकार छल आ ओकर उपरका भागपर गुम्बद रहै छल। अखन किछुए प्राचीन मन्दिरसब देखल जाइए। ई मन्दिरसबसँ प्राप्त अवशेषसब मिथिलाक प्राचीन मन्दिरसब वर्गाकार होयछल आ कहियोकाल चारोओर छोटछोट प्रतिकृतिसब देखबैत उपरीओर पातर होयत सोझ टावर बुर्जवला खुला बरणासँ घेरल रहै से देबैत अछि।(मिश्र, पृ. २२४)।

एघारम शताब्दीक अन्तिम दशकमे कर्नाटवंशी नान्यदेव मिथिलापर कब्जा कयलथि आ सिमरौनगढसँ शासन कर लगलथि। कर्नाटवंशीसबहक शासन कालमे अधिराज्यमे भवन निर्माणक कार्यसब बहुत बढ़ल छल। एहि समयमे एक नया तरहक मन्दिरसब निर्माण भेल जेकरा स्पूनर अपन कार्यपत्रमे तिरहुत शैलीक मन्दिर कहि उल्लेख कयले छथि। से कार्यपत्रके उद्धृत करेत उपेन्द्र ठाकुर अपन किताबमे एना लिखले छैत, "ओ मन्दिरसबमे पवित्र मूर्ति स्थापित कर लेल एगो छोट वर्गाकार कोठरी अछि जेकर छत बरसातसँ बचबाक हिसाबसँ बनायल गेल अछि त बादमे कडकडौआ धामके मन्दिरमे पहुचसँ रोक लेल एगो छोट मण्डप बनायल गेल अछि। ओसबमे कहीं वक्ररेखाकार नै अछि। तिरहुत शैलीका ई मन्दिरसब वर्गाकार अछि ओसबमे पुरे सादा आ सज्जाहीन देवारसब आ ओतबे सज्जाहीन, चित्रहीन छल अछि" (पृ. ३८४)। कुआ, पिपरा, क्षीरेश्वर, कल्याणेश्वर, जलेश्वर, आदिमे निर्मित मन्दिरसब इहे शैलीके अछि। एकर सुपुष्टि ई प्राचीन स्थलसबमे स्थित मूर्तिकला आ शिलालेखसबसँ होइछै। मखनाहा मन्दिरक निर्माण सेहो कर्नाटवंशीसबहक शासनकालमे भेल छल। मन्दिरक गर्भगृहक देवारसब पत्थरक निचका पीठपर ठार रहैए। विद्वान्सबहक मतानुसार मिथिलाक मन्दिरसबहक विकास खरक छत भेल काठसँ निर्मित परम्परागत घरसबसँ भेल अछि। ओ मन्दिरसबमे पर्याप्त ईंटसबहक प्रयोग भेल अछि। कारण ओ क्षेत्रमें ईंट बनाबबला माटि आसानीसँ मिल जाइए। ओ सब मन्दिरक आमा विशेषतासबहक परीक्षण अन्वेषकसबके यी वताओत कि तेकर चित्रित तोरणद्वार, उनार छत, चित्र पारल ओरियानीसबमे जंगलवासीसबहक परम्परागत बाँससँ निर्मित झोपडीसबहक स्वरूप देखाइए। मिथिलाक मन्दिरसब कहियो बेसी उँचै नै भेल। बादमें मिथिलाक मन्दिरसबमे प्राय: विविध

खम्बासबसँ अलग कयल तीन तीन तोरणद्वारक निर्माण भेल बुझाइए। मिथिलाक मन्दिरसबके तीन मुख्य समूहमा बाँटल जाइए : शिखर शैली, गुम्बद शैली आ एकचारी बंगला शैली। पुरातात्विक इतिहासक विद्यार्थीसब तेकर नामेसँ तेकर प्रमुख विशेषतासबवारे आसानीसँ बुझिसकैए।

मध्ययुगमे मिथिला क्षेत्रमेदरबार आ किलासबहक निर्माण भेल छल। सिमरौनगढक किलाक देवार करीब ४० वर्ग किलोमीटर क्षेत्रमे फैलल अछि। एहिसँ ओ नगरक वास्तुशिल्पीय भव्यता झल्कैए। ई सुरक्षात्मक देवारक भितर रानीवास आ कंकालीमठसन एकदम महत्त्वपूर्ण बहुतें पुरातात्विक स्थलसब अछि जेकर खनाइ भेलापर कर्नाटवंशीसबहक वास्तुशिल्पीय गरिमाके झल्काओत। विद्यापतिक *वर्ण रत्नाकर* मे उल्लिखित विवरण पर विश्वास कयल जाएत सिमरौनगढ़ दरबारमे खालि भव्य बंगलोसव नै भक अनेको सैनिक कैम्प आ जुआघरसब सेहो छल। तहिना कवि अपन *कीर्तिलता* नामक कितापमे राजधानीमे स्थित घरक जालीदार खिड़कीसबहक बहुत प्रशंसा कयले छथि। मकवानपुरक किला आ देवघाट आ जनकपुरमे स्थित मन्दिरसब एहि वातक पुष्टि करैए कि लक्षमान सेन, मुकुन्द सेन आ लोहांग सेनसब मिथिला अधिराज्यक धार्मिक आ ऐतिहासिक वास्तुकलामे पैघ योगदान कयले छल।

शाह राजासब मिथिला क्षेत्रपर आधिपत्य कयले पर सर्वप्रथम मूर्तिसबहक परम्परागत पूजाअर्चना आ आओर धार्मिक क्रियाकलाप कायम रखलेल पुरान गुठीसब पुनर्स्थापना कयलनि। ई बातक पुष्टि जनकपुरस्थित राम मन्दिरक चतुर्भुज गिरीके अमरसिंह थापाद्वारा नया गुठी प्रदान कयल प्रावधानसँ होयए। सिमरौनगढ किलामे स्थित रानीवास मन्दिरमे नियमित पूजाअर्चना लेल स्थापित गुठीद्वारा शाहवंशीसबहक शासनकालमे मन्दिरक वास्तुकलाक विकासमे प्रशंसायोग्य योगदान भेल दोसर उदाहरण भेल देखबैए।

माँ जानकीक वर्तमान मन्दिर मिथिला क्षेत्रमे मन्दिर वास्तुकला शिखरपर पहुँचल देखवैए। सेनवंशीसबहक शासनकालमे ओहिठाम देवी सीताक नाममे एगो भव्य मन्दिर निर्माण भेल आ सन्त सुरकिशोर दास हुनकर नियमित श्रद्धासाथ पूजाअर्चना कयलथि। सन् १७२७ (वि.सं. १७८४) मे राजा मणिक सेन हुनका देवीक नियमित पूजाअर्चना मेला आदिलेल किछु जमीन प्रदान कयलनि। तेकराबाद सन् १९११ (वि.सं. १९६७) मे टिकमगढक महारनी वृषभान कुमारी देवी माँ जानकीक वर्तमान मन्दिर निर्माण करौलथि। ई मन्दिरके नेपालक ताजमहल कहल जाइए। स्थानीय जनतासबद्वारा नौलखा मन्दिर कहायल ओ मन्दिरमे माँ जानकीक स्वर्ण प्रतिमा स्थापित अछि। ओ प्रतिमा सेन कालमे सन्त सुर किशोर दासद्वारा देवीक प्राचीन मन्दिरमे स्थापना कयल गेल छल। ओ मन्दिर हिन्दू आ मुस्लिम वास्तुशैलीक अनुपम मिश्रण अछि। एतबे नै। जनकपर आओरो बहुत मन्दिरसब अछि। ओसबमे लक्ष्मण, जनक आ संकटमोचन हनुमानक मन्दिरसब बहुत महत्त्वपूर्ण अछि आ मिथिलाक धार्मिक आ कलासम्बन्धी इतिहासमे तिनकर अलगे स्थान अछि। जनकपुरमे सागर (पोखरी) सब सेहो बहुते अछि। ओसब अनाडि कालसँ ओहिठाम विद्यमान अछि। जनकपुरक पास हनुमान नगरमे हनुमानक एगो सुन्दर मन्दिर अछि। एकर निर्माण सन् १७७६ (वि.सं. १८३३) मे राजा प्रताप सिंह शाहद्वारा भेल छल। राजा प्रतापद्वारा ओ मन्दिरक निर्माण भेल विवरणबला एगो लालमोहर सेहो मिलैए।

निष्कर्ष

१. मिथिलाक इतिहास आ कलासम्बन्धी परम्परासबहक ई सर्वेक्षण ई देखबैए कि मानव सभ्यताक शुरुएसँ पूर्वी नेपालक तराई क्षेत्र नेपाली सांस्कृतिक एगो महत्त्वपूर्ण केन्द्रक रूपमे रहल अछि। पौराणिक युगमे जनक, सीता, याज्ञवल्क्य, गार्गी आदि सामाजिक मर्यादा या व्यवस्था, धर्म, दर्शन, आ राजनीतिक आ कानूनी अवधारणासबहक प्रवर्द्धनमे बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान कयले छनि। ऐतिहासिक कालमे नान्यदेव आ विद्यापति विविध मैथिल परम्परासबहक प्रवर्द्धनमे पैघ योगदान कयलनि त कलाकापर, वास्तुकार आ चित्रकारसब ओतबे महत्त्वपूर्ण योगदान कयलनि। ई विद्वान् पंडितसबक कारणसँ मिथिलाक परम्परासब खरा भेल आ स्थायित्व पौलै जे ओहिठामक सामाजिक आ सांस्कृतिक जनजीवनमे आइधरि विद्यमान अछि।

आखिरमे हम इहाँ इ तथ्यपर जोड़ देब चाहैछि कि नेपाल पूर्वी तराईक जनतासबके बुझलेल मिथिलाक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आ कला परम्परासबहक अध्ययन होएब एकदम जरुरी अछि। ई ओ क्षेत्रसंगे जनकपुरधामक आधुनिकीकरण आ पर्यटनक विकास सम्बन्धी योजना बनाब लेल सेहो मदत करत।

अनुवादक : विजय कुमार रौनीयार

विश्वभाषा क्याम्पस

मिथिलाको इतिहास र कलापरम्पराहरूको परिचय

रामनिवास पाण्डे

इतिहास

विगतमा मिथिला राज्य उत्तरमा हिमालयदेखि दक्षिणमा गङ्गासम्म र कोशी तथा गण्डकी नदीहरूका बीच फैलिएको थियो । प्राचीन ग्रन्थहरूका अनुसार मिथिला भूमिलाई पन्ध्र नदीले सिंच्ये । उक्त राज्यलाई यज्ञ क्षेत्र, विदेह र त्रिभुक्ति (तिरहुत) का नामले पनि चिनिन्थ्यो । यी भिन्न नामहरूले यस कुराको सङ्केत गर्छन कि भारतको सिमानामा अवस्थित मिथिला राज्यमा भविष्यवक्ता तथा योगीहरूको वास हुन्थ्यो र उक्त राज्य कर्मकाण्ड तथा बलि र विभिन्न प्रकारका सामाजिक, धार्मिक क्रियाकलापहरूका लागि अति प्रसिद्ध केन्द्रहरूमध्ये एक थियो । राज्यको वरिपरि शिवका विभिन्न लिङ्गहरू स्थापित गरिएका थिए जसको नाम कपिलेश्वर, कुपेश्वर, कल्याणेश्वर जलेश्वर, क्षीरेश्वर र मिथिलेश्वर थिए र तिनीहरूमा मिथिला परिक्रमाको समयमा तीर्थयात्रुहरूद्वारा श्रद्धासाथ दर्शन् र पूजाआजा गरिन्थ्यो । मिथिला राज्य यसकारण प्रसिद्ध भएन कि यहाँ *रामायण* की नायिका देवी सीताको जन्म भएको थियो बल्कि यो राजर्षि जनक, याज्ञवल्क्य र गार्गीका लागि प्रसिद्ध भयो जसले हिन्दू सभ्यताको पूर्वार्द्धमा आर्यावर्तमा हिन्दू धर्मका सामाजिक नीतिहरू तथा दर्शनको सुव्यवस्था तथा विकास गर्ने काममा ठूलो योगदान गरेका थिए ।

मिथिला क्षेत्रमा व्यवस्थित जीवनको प्रारम्भ भएपछि त्यहाँ गोठालाहरूको एक समूह बसेको थियो भन्ने बुझिन्छ जोसँग गाईवस्तुको ठूलो बथान थियो र जसले तिनलाई विशाल मैदान र वन (वृहदारण्यक)-मा चरण गराउँथ्यो जुन शिवालिक पहाडको दक्षिणमा प्लाइस्टोसीन वा अभिनूत हिमाच्छादनको अन्तिम अपसरण (निवर्तन, अपयान वा अपावर्तन) पछि र प्रतिकूल वातावरणको अन्त्यपछि विकसित भयो जुन वातावरण पछि पृथ्वीको सतहमा कायम रह्यो । विदेहका गाईहरूको बारेमा सर्वप्रथम *तैत्तरीय संहिता* मा उल्लेख भएको पाइन्छ, जुन ईशापूर्व २००० मा लेखिएको बुझिन्छ । अर्को ग्रन्थ *सत्पथ ब्राह्मण* ले उल्लेख गरेअनुसार उक्त क्षेत्रमा जनक वंश र आर्य संस्कृतिको जग बसाल्ने व्यक्ति विदेहमाधव थिए तर पुराणहरूले उक्त श्रेय *निपि विदेह* लाई दिन्छन् । पारगितारले *पुराणहरू*का साथै *रामायण* को सूक्ष्म अध्ययन गरे र यस निष्कर्षमा पुगे कि मिथिलामाथि जनक वंशका चौरानब्बे राजाहरूले शासन गरे । सीताका पिता राजा शिरध्वज जनक

(लगभग १५०० ई. पू.) मा विदेहको सबभन्दा प्रभावशाली वा प्रसिद्ध शासक थिए। उनको शासनकालमा राज्यमा निकै समृद्धि थियो र विद्वान् तथा विदुषीहरूले आफ्ना समय धर्म तथा दर्शनको प्रवर्द्धनमा लगाउँथे जुन अन्ततः मनको चिरशान्ति वा शाश्वत शान्ति र मोक्ष प्राप्त गर्न सघाउँथे। राजदरबारमा सत्यकाम ज्वाला, अरूण, अश्वपति, श्वेतकेतु, याज्ञवल्क्य र गार्गीजस्ता विद्वान् विदुषीको जमघट हुने गर्थ्यो जो प्रकाण्ड विद्वान् र विदुषी मात्र नभई महान् सामाजिक सुधारकहरू पनि थिए। तिनको उद्यमले विदेहमा हिन्दू धर्म तथा वर्णाश्रम व्यवस्थाले गहिरो जग बसाले एवं राज्य एक आदर्श हिन्दू-राज्यका रूपमा स्थापित भयो। प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थहरूले उक्त राज्यको राजधानी मिथिलापुरी नगरमा विघ्नै तलाउ, नहर र चोकहरू थिए भनी उल्लेख गरेका छन्। सर्वसाधारणका घर प्रायः काठले बनेका थिए। शहरको वातावरणमा बलि मन्त्रको उच्चारण तथा जात्रा मनाउन भेला भएका जनसमुदायको आवाज गुन्जिन्थ्यो। त्यहाँ निकै भव्य मन्दिर तथा महलहरू निर्माण गरिएको थियो। सम्पूर्ण शहरलाई अग्लो पर्खाल वा किल्लाले सुरक्षित पारिएको थियो। शहरमा अनेकौं मार्गहरू थिए जसका दुवैतिर अवस्थित असङ्ख्य पसलहरूमा व्यापारीहरूले आफ्ना मालसामान बिक्री गर्दथे। महाभारतमा बयान गरिएअनुसार पाण्डवहरूले त्यहाँ निवास गरेका थिए। कर्ण तथा भीमसेनले मिथिलामाथि विजय प्राप्त गरेका थिए। महाभारत वा कुरुक्षेत्रको युद्धमा कौरवका तर्फबाट लड्ने मिथिलाका राजालाई मारिएको थियो।

कौटिल्यका अनुसार, कटला जनक मिथिलाको अन्तिम शासक थिए जसपश्चात् उक्त राज्य बाजीहरूको शासनमा गणतन्त्रमा परिणत भयो। त्यतिञ्जेल शासन पद्धति परिवर्तन भइसके पनि राज्यका मनोनित नेताका रूपमा निमिका वंशजहरू, जसलाई जनताले *राजा* भनी सम्बोधन गर्थे, ले उक्त राज्यमा तबसम्म शासन गरिरहे जबसम्म मगध महाज्ञानपदका राजा अजातशत्रु (ई.पू. ४५९-१९ मा)ले त्यसमाथि कब्जा गरेनन्। जैन वंशावलीका अनुसार महावीरले मिथिला राज्यमा छ वर्षायामसम्म वास गरे। *मज्जिमा निकाय* का अनुसार गौतम बुद्धले विदेह राज्यको दुईपल्ट भ्रमण गरे। त्यतिञ्जेल तिनी मखदेवा अम्बावनामा वास गरे र धेरै मानिसको धर्म परिवर्तन गराए वा बुद्ध धर्मावलम्बी बनाए। *गन्धारजातक*का अनुसार विदेह राज्य ३०० *योजन* क्षेत्रमा विस्तारित थियो। यसमा १६००० गाउँ, १६००० ढुङ्गे घर तथा १६००० नर्तकीहरू थिए। *सुरुचिजातक*का अनुसार विदेशहवा विदेहपुरी राज्यको राजधानी ७ योजनमा फैलिएको थियो भने वाराणसी १२ योजनमा फैलिएको थियो। व्यापारी बुद्ध कालमा समेत टाढाटाढाबाट आई आफ्ना मालसामान बिक्री गर्ने गर्थे।

सैसुनाग, मौर्य र सुन्गास वंशको शासनसम्म विदेह तिनीहरूको अधीनमा थियो, तर कुसवाहरूको शासनबारे कुनै सटीक वा ठोस प्रमाण छैन। चौथो शताब्दीमा गुप्तहरूले भारतमा शक्ति हत्याएपछि विदेह तिनको एक राज्यको रूपमा रहन गयो जसलाई त्रिभुक्ति भनियो। सातौं शताब्दीमा गुप्तहरूको पतनपछि गण्डकका राजा शशाङ्कले यसलाई आफ्नो राज्यमा गाभे, तर उनको मृत्युपछि यसमाथि वर्द्धनहरूको प्रत्यक्ष शासन हुन गयो। ताङ्ग वृतान्तका अनुसार एक चिनियाँ दल वाङ्ग ह्वेन-त्सेको नेतृत्वमा सन् ६४६ मा भारत गयो। त्रिभुक्तिबाट गुज्रिदाँ त्यसमाथि अरूणाश्वले आक्रमण गरी मालसामान तथा अमूल्य उपहारहरू लुटे। पछि नेपालका राजा नरेन्द्रदेवको सहयोगले उनलाई पराजित गरियो र कैदी वा बन्दी बनाई चीन पठाइयो जहाँ उनको शोकले मृत्यु

भयो। विद्यमान अभिलेखहरूले सातौं शताब्दीको अन्त्यतिर त्रिभुक्तिमाथि मगधका राजा आदित्यसेनको शासन थियो भन्ने उल्लेख गरेका छन्। आठौं शताब्दीमा बङ्गालका पलसले त्रिभुक्तिमाथि कब्जा गरे र एघारौं शताब्दीसम्म शासन गरे। तिनको शासनकालमा विदेहका जनता प्रसन्न थिएनन्।

एघारौं शताब्दीको अन्तिम दशक (सन् १०९७) मा कर्नाटवंशी नान्यदेवले मिथिलामाथि आफ्नो आधिपत्य जमाएर सिमरौनगढबाट उक्त राज्यमाथि शासन गर्न थाले। अभिलेखहरूले नान्यदेवलाई विभिन्न सैनिक अभियान सफलतापूर्वक सञ्चालन गरी तिरहुतको एकीकरण गरेको श्रेय दिन्छन्। कर्नाटहरूको अधीनमा तिरहुतले आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रमा उल्लेखनीय प्रगति गऱ्यो। तिनको शासनकाललाई तिरहुतको 'स्वर्णिम युग' भनिन्छ। तिनले मिथिलामाथि करिब २२५ वर्षसम्म शासन गरे जसपश्चात् गयासुद्दीन तुगलकले यसमाथि विजय हासिल गरे। करिब तीनसय वर्षसम्म मिथिला राज्य मुसलमानहरूको आधिपत्यमा थियो। तत्पश्चात् मकवानपुरका सेनहरूले यसमाथि कब्जा गरे। लोहाङ्गसेनले राज्यमा सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक क्षेत्रमा निकै योगदान पुऱ्याएको बुझिन्छ। सन् १७६२ मा दिग्बन्धन सेनको शासनावधिमा राजा पृथ्वीनारायण शाहले मकवानपुरमाथि विजय हासिल गरे र त्यस अवधिदेखि पूर्वी तराईको सम्पूर्ण क्षेत्र, तिरहुत वा मिथिलासमेत गोर्खाली प्रभावमा आइपुग्यो। सन् १८१४-१६ को अङ्ग्रेज-गोर्खा युद्धपश्चात् नेपालले पूर्वी तराईका केही भाग गुमायो, तर सन् १८१६ को सुगौली सन्धि पश्चात् यो फेरि नेपालको अधीनमा आयो। हाल जनकपुर केन्द्रबिन्दु भएको मिथिला हिन्दू धर्मको एक महत्त्वपूर्ण केन्द्रको रूपमा रहेको छ। त्यहाँ अनेकौं तलाउ, कुण्ड र मन्दिरहरू छन्। टिकमगढकी महारानी वृषभानकुमारीद्वारा निर्मित माता जानकीको नौलखा मन्दिर उक्त शहरको भव्यतम र दर्शनीय स्मारिकाको रूपमा रहेको छ। यसको असाधारण भव्यताका लागि यसलाई नेपालको ताजमहल भनिन्छ।

परिचय (पहिचान)

*महाभारत*जस्ता प्राचीन साहित्यिक ग्रन्थहरूले मिथिलापुरीका महल, मन्दिर, पर्खाल, गल्ली, बगैंचा र तलाउहरूबारे गहन विवरण दिन्छन्। अहिले जनकपुर वा त्यस क्षेत्रको कुनै पनि स्थलमा पर्याप्त पुरातात्त्विक अवशेषहरू छैनन्, जसले मिथिलाको निश्चित अवस्थितिको आधिकारिकताबारे प्रमाणित गर्न सकुन्। सि-चु-कीमा ह्वेनसाङ्गले वाजी राज्यमण्डलको राजधानीलाई चेन-सु-ना भनी उल्लेख गरेका छन्। जुलियनले यसलाई चान-सुङ्ग भनी पुनर्नामकरण गरे र मार्टिनले यसलाई जनकपुर भनी चिनाए। यी सबै तथ्यहरूलाई बीलले आफ्नो ग्रन्थ *बुद्धिस्ट रेकर्ड्ज अवँ द वेस्टर्न वर्ल्ड (पश्चिम विश्वका बुद्ध धर्मावलम्बी अभिलेखहरू)* मा कुशलतासाथ प्रस्तुत गरेका छन्। ह्वेन-त्साङ्गका अनुसार वाजीहरूको राज्य (अर्थात् मिथिला) पूर्व-पश्चिममा लाम्चो र उत्तर-दक्षिणमा साँघुरो थियो। करिब एक शताब्दी अगाडि कनिङ्घमले आफ्नो पुस्तक *ऐन्श्यन्ट ज्यॉग्राफि अँव इन्डिअ्* (पृ. ४४५) मा लेखे कि 'चिनियाँ यात्रुद्वारा बयान गरिएका दूरीहरू सही हुन् भने यो लगभग निश्चित छ कि वाजीहरूको राजधानी ई.पू. सातौं शताब्दीमा जनकपुर रहेको हुनुपर्छ।' यसरी, त्यस अवधिदेखि जनकपुरको परिचय वा पहिचानको समस्यालाई अनुभूत गरिएको छ, तर हालसालै उपेन्द्र ठाकुरले आफ्नो पुस्तक *हिस्ट्रि अव मिथिला* (पृ. २४) मा भनेका छन् कि ह्वेन साङ्गको विवरण अस्पष्ट छ र यसले

'प्रामाणिकता र दूरी' लाई प्रस्ट पार्दैन। बुद्ध धर्मावलम्बीका श्रोतहरूलाई व्यापक रूपमा उद्धृत गरेपछि उनले अन्त्यमा यो तथ्य स्थापित गरेका छन् कि जनकपुरलाई साहित्यिक कृतिहरूमा कहिल्यै विदेहको राजधानीका रूपमा उल्लेख गरेका छैनन्। उनका अनुसार, विदेहको राजधानी मिथिला थियो र उनले आफ्ना भनाइहरू प्रमाणित गर्ने केही उद्धरणहरू *रामायण, जातक कथाहरू* तथा विभिन्न *पुराणहरू*-बाट प्रस्तुत गरेका छन्। अन्त्यमा, उनले विदेहको राजधानी आधुनिक चम्पारण क्षेत्रमा कुनै स्थानमा हुनुपर्छ भनी इङ्गित गरेका छन्। ठाकुरका अनुसार, विदेहमा अनेकौं शहरहरू थिए। तीमध्ये एक नन्दगढ थियो जसलाई करिब १५०० वर्षअघि ध्वस्त पारिएको थियो। उनले उक्त स्थलका पुरातात्विक अवशेषहरूको अध्ययन गरेर त्यसलाई प्राचीन जनकपुरका रूपमा चिनाएका छन्, तर यस सन्दर्भमा उनले वैदिक युगमा प्रचलित रहेको भनी प्रमाण स्वरूप प्रस्तुत गरेका एक सानो आहत-मुद्रा(प्वाल परेको सिक्का) र देवीको स्वर्णिम पट्टीले नन्दगढलाई प्राचीन मिथिलापुरीको रूपमा चिनाउनका लागि ठोस प्रमाणका रूपमा उभिन्नन्। मिथिलाको महिला वा प्रताप *उपनिषद*का युगमा चरममा थियो। त्यसबेला घरहरू काठ, नर्कट र परालले मात्र निर्मित हुन्थे। शुरुशुरुका (आदि) आर्यहरू ढुङ्गा, पक्की ईंट र टाइलबाट घर निर्माण गर्ने कलामा अज्ञानी थिए। तसर्थ प्राचीन मिथिलाका पुरातात्विक अवशेषहरूबारे ठाकुर र मिश्राले आफ्ना कृतिहरूमा उल्लेख गरेअनुसार खोज्ने वा अन्वेषण गर्ने प्रयास गर्नु हुँदैन। ठाकुर स्वयंले आफ्नो किताबमा एक ठाउँमा लेखेका छन् कि मिथिला "मुख्यतया नेपालबाट गङ्गातर्फ बग्ने अनेकौं खोलाहरूले आवद्ध अस्थाई तालहरूको एक विशाल कडी" थियो। उल्लेखनीय छ कि नन्दगढको वरिपरि जनकपुर शहरभैं कहीं पनि कुनै ताल छैन। यस तथ्यले यो प्रस्टयाउँछ कि नन्दगढ प्राचीन मिथिलापुरीको शहर होइन।

सेनहरूकै युगदेखि जनकपुरलाई मिथिलाको राजधानीका रूपमा स्वीकार गरिएको हुनाले सुर किशोरदास यहाँ आए र करिब एक शताब्दी अगाडि टिकमगढ़की महारानी वृषभानकुमारी देवीद्वारा निर्मित वर्तमानमा भव्य मन्दिर स्थापित भएको पवित्रस्थलमा देवी जानकीको पूजाअर्चना गर्न थाले। अहिले जनकपुर क्षेत्र तथा यस वरिपरिका स्थानहरूका पुरातात्त्विक अवशेषहरूको व्यापक अन्वेषण र सम्भावित स्थलहरूको वैज्ञानिक उत्खनन गर्नु पर्ने आवश्यकता महसुस गरिन्छ जसले गर्दा प्राचीन मिथिलापुरीको एकमात्र सम्भावित क्षेत्रका रूपमा जनकपुर सम्बन्धी भन बढी विवरणहरू प्रकाशमा आऊन्।

कला

ब्राह्मणहरूको कालमा साथै उपनिषदीय जीवन शैलीमा कलालाई प्रोत्साहित गरिँदैनथ्यो। जनकवंशीले यस क्षेत्रमा शासन गर्दा कलालाई ऐन्द्रिक सुख वा आनन्दको एक श्रोतको रूपमा मात्र निन्दा वा अपहेलना गरिन्थ्यो। तर राजसूय यज्ञको समयमा 'अग्नि वेदीहरू' को निर्माण ईंटबाट भएको थियो ढुङ्गाका ब्लकहरू, तामा र फलामसमेत प्रयोग गरिएको थियो (कुमारस्वामी, पृ. ६३-६४)। *बज्रसयेनी संहिता* मा १०,८०० ईंटले निर्मित एक अग्निवेदीको बारेमा विवरण पाइन्छ (ठाकुर, पृ. ९३)। बुचले आफ्नो पुस्तक *इकॉनमिक लाइफ इन ऐन्श्यन्ट इन्डिअ,* खण्ड १ (पृ. १६९)-मा लेखेका छन् कि राजा जनकको दरबार "विभिन्न चित्रहरूले सुसज्जित एक छुट्टै प्रकारको सुन्दर वा भव्य दरबार' थियो र त्यसका मूल भागहरूमा अनेकौं टयाङ्क, नहर र चोकहरू थिए, तर गाउँले

कृषकहरू पराल, नर्कट, बाँस, मलिलो वा चिल्लो माटो र कच्ची ईंटले बनेका झुपडीहरूमा बस्थे। बुद्ध धर्मग्रन्थहरूले त्यस्तै प्रमाणहरू प्रस्तुत गर्छन्। तिनका अनुसार, ठूला घर र भवनहरू अधिकांशतया व्यस्त तथा कोलाहलपूर्ण शहरहरूमा थिए र सामान्य जनता 'एकतल्ले ठाठ र परालले छाएका छाना भएका चिसा झुपड़ीहरू'मा बस्थे। जनताको भौतिक जीवन नैतिक र आध्यात्मिक जीवनका तुलनामा त्यति विकसित थिएन। यस कुराको पुष्टि/ *उपनिषद्* तथा *पुराण* (ठाकुर, पृ. ९२-९३)हरूको अध्ययनले पनि गर्छ।

मिथिलामा कलासम्बन्धी क्रियाकलापहरूको प्रारम्भ यसलाई गुप्त शासकहरूले आधिपत्यमा गरेपछि भयो। त्यस बेलासम्म मूर्तिहरू आर्य समाजको एक अभिन्न अङ्ग भइसकेका थिए र मन्दिरहरूमा सूर्य, शिव, विष्णु, शक्ति गणेशको व्यापक पूजा-अर्चना गरिन्थ्यो। त्यसअघि जे जति मूर्तिहरू थिए काठबाट निर्मित गरिन्थे र विभिन्न चित्रकारी रूपमा थिए र तिनीहरू समयको क्रूर चक्रको शिकार बन्न पुगे। वैष्णव धर्मावलम्बीहरूको अवतारसम्बन्धी सिद्धान्त गुप्त लिच्छवि शासन-कालमा समाजमा निकै प्रचलित भयो र मन्दिरहरूमा पूजाआजाका लागि विष्णुका विभिन्न अवतारीमूर्तिहरू कुँदिए। विभिन्न हिन्दू देवीदेवताको महिमा बखान गर्ने *पुराणहरू* पनि यसै समयमा लेखिए। तीमध्ये एक *बराह पुराण* छ जुन मिथिला राज्यको बराह-क्षेत्र नजिकै कुनै स्थानमा लेखिएको बुझिन्छ। बराहक्षेत्रमा स्थित वा स्थापित बराहको मूर्ति पाँचौं वा छैठौं शताब्दी ईश्वी संवत्मा निर्मित भएको हो। यस स्थानमा देवताद्वारा क्षणभङ्गुर पृथ्वीबाट धरती माता (भुमदेवी)-को पुष्ट मूर्ति स्थापना गर्ने कार्य भएको प्रष्ट हुन्छ। मूर्तिको निर्माण ढुङ्गा (प्रस्तर)-बाट भएको हो र त्यसको स्थापना नागर शैलीको ईंटको मन्दिरमा गरिएको छ।

मध्यकालको पूर्वार्द्धमा पलसवंशीहरू पूर्वी भारतमा शक्तिमा आएपछि मिथिला राज्यमा कलासम्बन्धी गतिविधिहरू देखा परे। मिथिलामा पाइने त्यस कालका मूर्तिहरू बढी बाक्ला र गह्रौं छन्। यस तथ्यको पुष्टि सिमरौनगढबाट प्राप्त त्यस समयका विष्णुका केही मूर्तिहरूले कुशलतासाथ गर्छन। तिनीहरू प्रायः विशाल र भव्य रूपमा कुँदिएका छन्। पट्टीका (प्यानल) छेउमा *आयुधपुरुषहरू* र श्री र पुस्तिको चित्रण पनि गरिएको छ। यस कालमा मूर्तिहरूको निर्माण गर्न कालो क्लोराइट भन्ने सामग्रीको प्रयोग हुन्थ्यो। मिश्राले आफ्नो पुस्तक *कल्चरल हिष्ट्रि अँव मिथिला* मा उल्लेख गरेका छन् कि मध्यकालको पूर्वार्द्धमा मिथिलामा पाइने मूर्तिहरूलाई मिथिला मूर्तिहरू भनिन्छ। यी मूर्तिहरूको केन्द्रविन्दु पूर्णलालिमायुक्त यौवन भएको एक मानव आकृति हो जुन कान्तिमय (प्रफुल्लित) र गतिमान छ, र त्यसको अधोभागमा वास्तविक रूपमा एक आध्यात्मिक भाव प्रकट गर्ने, निस्सन्देह सम्मानित सम्प्रदायहरूद्वारा सम्मानित यौनजन्य योग वा तान्त्रिक विवरणबाट प्राप्त यौनोत्तेजक प्रकृतिको आन्तरिक अनुभूति दिने आध्यात्मिक तथा सांसारिक अभिव्यञ्जनाको मिश्रण छ।

दशौं-एघारौं शदीमा पवित्रता तथा महानताका शास्त्रीय वा पुरातन मान्यताहरूलाई मूर्तिहरूमा त्यागिएको थियो। त्यतिखेर मूर्तिकारहरूले सुकोमल वा सलक्क परेको शरीरलाई प्राथमिकता दिन्थे। दशौं शताब्दीको गहिरो व्यापक रूपरेखा पातलिँदै र सीमित हुँदै जान्छ र शारीरिक आकृतिको भव्यता बढी प्रस्टिन्छ। गोडाहरू झन् पातला र लचकहीन छन्। बाह्रौं शताब्दीमा पनि सर्लक्क परेको शारीरिक रूपरङ्गलाई नै कायम गरिएको र पूर्ववर्ती शताब्दीको झैं औपचारिक दृष्टिले हेरिएको

पाइन्छ। पूर्ववर्ती शताब्दीमा देखिने मुखाकृतिको भावको सम्वेदनशीलता हराएको छ भने गहनाहरू अति झकिझकाउपूर्ण छन्। यी चार शताब्दीमा मिथिलाको कलामा उच्च प्राविधिक विकास भएको र एकथरी यान्त्रिक भव्यता र लालित्य भएको पाइन्छ भन्नुमा अतिशयोक्ति नहोला। तिनको रूपरेखा तीखो तथा प्रस्ट थियो। सिमरौनगढ, वाल्मीकिनगर, जनकपुर तथा मूर्तियाका मूर्तिहरूले आफ्ना मोडेलहरूमा यी विशेषताहरू प्रष्ट झल्काउँछन्।

मिथिलाका मूर्तिहरूमध्ये जनकपुरस्थित राम मन्दिरको प्यानलमा आमा र शिशुको मूर्तिलाई सर्वोत्तम उदाहरणका रूपमा लिन सकिन्छ। यसको साम्प्रदायिक विशेषता छुट्याउन गाह्रो भए पनि प्यानलमा कुँदिएका गणेश, कार्त्तिकेय तथा लिङ्गका आकृतिहरूले उक्त चित्र शैव धर्मसँग सम्बन्धित हुन सक्ने सङ्केत गर्दछन्। आमाले शिशुको स्याहार गरिरहेकी छिन् भने तिनको सेवा दुई महिलाहरूले गरिरहेका छन्। तीमध्ये एक महिला (परिचारिका)-ले आमाको जिउमा मालिस गरिहेकी छिन् र अर्की महिलाले तिनको ओछ्यानमा विस्तारै पङ्खा हम्किरहेकी छिन्। आमाले पछाडिपट्टि चुल्ठो बाटेको केश-सज्जा तथा *पद्म-पलस* आँखाहरूले यो चित्र बाह्रौं शताब्दीमा कोरिएको भनी दर्शाउँदा तल दुवैतिर भक्तहरू *नमस्कार-मुद्रा*-मा दुई कमलपुष्पहरूमा बसेको भनी चित्रण गरिएको छ। यस मूर्तिको सक्कल प्रतिलिपि बाह्रौं शताब्दीमा चित्रण गरिएको भनी उल्लेखका साथ दिल्लीको राष्ट्रिय सङ्ग्रहालयमा प्रदर्शन गरिएको छ। यसरी शैलीका हिसावले यो मूर्तिलाई बाह्रौं शताब्दीको एक कृतिको रूपमा लिन सकिन्छ।

सिमरौनगढ र जनकपुरमा मिथिला कलामा निर्मित शिव, विष्णु र शक्तिका अनेकौं मूर्तिहरू छन् र तिनीहरूले दशौं-चौधौं शताब्दीमा मिथिला राज्यमा कलात्मक क्रियाकलाप निकै फष्टाएको थियो भनी देखाउँछन्। यी मूर्तिहरूलाई वक्ररेखी ढुङ्गा वा ईंटले निर्मित मन्दिरहरूमा स्थापित गरिएको छ र भक्तहरूद्वारा श्रद्धापूर्वक तिनको पूजाआजा गरिन्छ। जनकपुरका चारै दिशामा कल्याणेश्वर, क्षीरेश्वर, जलेश्वर र मिथिलेश्वर महादेवका *पीठहरू* छन् जहाँ *परिक्रमा*-का लागि मन्दिरहरूमा *लिङ्गहरू* को स्थापना गरिएको थियो। अद्यावधि पूर्व-मध्य तथा मध्ययुगका शैव मूर्तिहरू आधुनिक युगका पवित्र स्थलहरूमा स्थापित गरिएको पाइन्छ। जनकपुरस्थित राममन्दिरको चोकमा स्थापित *एकमुखी लिङ्ग* मिथिला कलाको उल्लेख्य उदाहरण हो। लिङ्गको आकारमा कोरिएको मूर्तिको आकृति निकै शानदार देखिन्छ।

जनकपुरदेखि १० किलोमिटर उत्तरमा अवस्थित यखनाहामा बाह्रौं-तेह्रौं शताब्दीमा भगवान् शिवको भव्य प्रस्तर मूर्ति स्थापित थियो। मन्दिरको परिसर वा गर्भगृह तथा समतल छाना भएको द्वार अद्यावधि अवशेषहरूबीच देखापर्छन्। उक्त स्थलमा नृत्य-मुद्रामा अष्टभुजाधारी शिवको मूर्ति निकै रमणीय देखिन्छ। उक्त मूर्तिले आफ्ना विद्यमान युगहरूमा डण्डहस्त, लोल-हस्त, अग्नि, डण्ड, त्रिशुल र अक्षमाला लिएको छ र सो मूर्ति डेक्कन भारतका चोला नर्त्य वा नटरूपी शिवका मूर्तिहरूको शैलीमा निर्मित छ। उक्त स्थलमा स्थापित पशु-आकृति भएको देवता, भूत तथा नर्तकी वा नृत्याङ्गनाहरूका मूर्तिहरू उत्तिकै प्रशंसनीय छन्। यी मूर्तिहरूलाई अहिले रामस्वरूप रामसागर बहुमुखी क्याम्पसको संस्कृति शिक्षण समितिमा सुरक्षित राखिएका छन्। जनकपुरदेखि १० किलोमिटर उत्तर-पूर्वमा अवस्थित भूतहीमा स्थापित विष्णु, सरस्वती, लक्ष्मी आदिका मूर्तिहरू पनि सिमरौनगढमा स्थापित मूर्तिहरूझैं कर्नाट शैलीका छन्। त्यस कालका मूर्तिहरूको

अध्ययनले कर्नाटवंशीहरूको युग वा शासनवधिमा मिथिलामा कला परम्परा आफ्नो चरममा थियो भन्ने छर्लङ्ग पार्छ।

ऐपन वा अरिपन कलाको रूपमा प्रसिद्ध मिथिला चित्रकलाको विकास अचेतन रूपले त्यस क्षेत्रका नारीहरूद्वारा भएको हो र त्यसमा मिथिलाको सम्पूर्ण सांस्कृतिक जीवनको झलक पाइन्छ। यो अति प्रतीकात्मक छ र यसमा उर्वरता झल्काउने सम्पद्रदायको गहिरो छाप देखिन्छ। यस कलाबारे सर्वप्रथम गुप्त कालमा लिखित *ब्रह्म पुराण*-मा उल्लेख गरेको पाइन्छ। यसको तुलना गुजरातको सथिआ कला, महाराष्ट्रको रङ्गोली कला, बङ्गालको अल्पना कला र राजस्थानको मेहँदी वा नन्दन कलासँग गर्न सकिन्छ। चित्रकार महिलाहरूले दुर्गा, काली, राम, सीता, कृष्ण, राधा, सूर्य, चन्द्र, बाँस, रुख, कमलपुष्प, सुगा, माछा आदिको सुन्दर वा मनोरम चित्रणका लागि रातो, कालो, पहेंलो, नीलो वा हरियो र सेतो रङ्गको प्रयोग गरेका छन्। चित्रण गरिएका भू-आकृति वा रिलीफहरू अत्यन्तै शुभ र प्रतीकात्मक छन्। विवाहोत्सवमा दान दिइने वा प्रयोग गरिने भाँडाकुँडा, पङ्खाका र माटाका सामानहरूमा उहिलेझैं विभिन्न आकृति तथा डिजाइनहरूको चित्रण गरिएको छ र हामी तिनमा भित्तिचित्रको शैली प्रष्टै हेर्न सक्छौं। उपेन्द्र ठाकुरको मत यो छ कि मिथिलाका अरिपन चित्रकला वा चित्रहरू अधिकांशतया त्यस क्षेत्रका ब्राह्मण र कायस्थहरूद्वारा सुपोषित धनुशैलीका भित्तिचित्रहरू हुन्। ब्राह्मण चित्रकलामा झिनो कम्पनशील र व्यग्र रेखाहरू छन् भने कायस्थ चित्रकलामा दृढ, दर्रो र सटीक रेखाहरू छन्। तिनको आकार चञ्चल र शक्तिशाली छ र गति सुकोमल र भव्य छ।

आफ्नो ग्रन्थ *आर्ट अँव नेपाल* (नेपालको कला)-मा लिडिया ऐरनले मिथिलाको कलाबारे यसरी टिप्पणी गरेका छन् "हजारौं वर्षदेखि मिथिलाका नारीहरूले आफ्ना घरका कच्ची वा माटाका भित्ताहरूमा, आँगन वा चोकका भुइँहरूमा चित्र कोर्ने गरिमामय कलाको विकास गरे भने पछि कागजको प्रयोग पूजाआजा, कर्मकाण्ड र नर नारायणबीच संवादका लागि गरे ..... ती चित्रहरूमा तान्त्रिक चिह्नहरूको वर्चस्व छ र तिनले जीवनबारे तान्त्रिक धारणाको प्रतिनिधित्व गर्छन्। चाहे अमूर्त होऊन् वा आलङ्कारिक ती चित्रहरूमा अचेतन यौनको व्यापक प्रयोग भएको पाइन्छ र तिनको मौलिक र औपचारिक प्रयोग मूलतया विवाह, प्रजननक्षमता र *भोग* सम्बन्धी विशिष्ट तान्त्रिक धारणा, अन्तर्ज्ञान प्रदान गर्ने यौनानन्द र *लीला,* एक खेल, एक क्रीडा र एक क्षणिक मायाको वरिपरि रहेर गरिन्थ्यो" (पृ. ८३-८४)।

मैथिल चित्रहरूमा कोरिने तीन सर्वाधिक लोकप्रिय वस्तुहरू यी हुन् : (क) तथाकथित *कोहबर,* अर्थात् *योनि* वा *भग* मा प्रवेशोन्मुख *लिङ्ग* माथि केन्द्रित चित्र, (ख) तथाकथित अरिपन, अर्थात् कर्मकाण्ड तथा घरेलु धार्मिक क्रियाकलापहरू सम्पन्न गर्नका लागि जादूले पवित्र गरी छुट्याइएको स्थल देखाउने एक जादुमयी वृताकार (तिब्बती मण्डलाहरूझैं)- यी मण्डलाहरूझैं उक्त वृत्ताकारले पनि ब्रह्माण्डको चित्रण गर्छ भने यी चित्रहरूमा प्रयुक्त प्रतीक चिह्नहरूले तन्त्रशास्त्रअनुसार ब्रह्माण्डको अवधारणा झल्काउँछन्।, र (ग) हिन्दू मिथक वा पुराणसँग सम्बन्धित दृश्यहरू। यी चित्रहरूमा प्रायः कालो वा रातो रङ्गको प्रयोग भएको हुन्छ र तिनले थोरैमा बढ़ी बखान गर्ने कुरामा जोड़ दिन्छन्। 'प्राचीन शैली'-का भए पनि यी चित्रहरूको आफ्नो विशिष्ट विषयवस्तु र प्रतीकात्मक अर्थ हुन्छ। मिथिला चित्रकलामा अनुहारहरूलाई प्रायः पार्श्वमा देखाइन्छ, तर

आँखालाई मानौं सामुन्नेबाट हेरिएझैं देखाइन्छ। गोडाहरू सधैं दायाँबायाँ तेसिर्एका हुन्छन्। लामा चुच्चे नाक र ठूल्ठूला आँखा भएका अनुहारले कुनै मङ्गोलियन प्रभाव नभएको बरु आर्यहरूको विशुद्ध सन्तति हुन् भन्ने धारणाको पुष्टि गर्छन्। अहिले पनि मिथिलाकी नारीहरूले आफ्ना घरमा धार्मिक वा अन्य उत्सवका अवसरमा घरका भित्ता र चोकमा चित्रहरू कोर्छन्। तिनका विषयवस्तु र डिजाइन प्राचीन तथा मध्यकालीन चित्रकलाहरूमा झैं सरल हुन्छन् र त्यस क्षेत्रमा अद्यावधि जीवित प्राचीन परम्परालाई दर्शाउँछन्।

वास्तुकला

मिथिला भवन निर्माणसम्बन्धी क्रियाकलापहरू होलोसीन युगको पूर्वार्द्धमा भएको नवप्रस्तर क्रान्तिताका देखि नै प्रारम्भ भए। शुरु-शुरुमा पशुपालन र खेती गरी जीविकोपार्जन गर्ने मानिसहरू पराल, नर्कट, बाँस, गिलेबा र कच्ची ईंटले बनेका साधारण झुपडीहरूमा बसोवास गर्दथे, तर मौर्य र गुप्तकालमा त्यस क्षेत्रमा मानव सभ्यता समृद्ध हुँदै जाँदा स्थायी गाउँबस्ती र शहरहरूको विकास भयो। साथै तिनताका हिन्दू धर्मस्थली मठमन्दिरहरूमा स्तूप र मठहरूको निर्माण हुन थाल्यो।

मिथिलामा अन्य सम्प्रदायका मन्दिरहरूको निर्माण कार्यको थालनी गुप्तकालमा भयो। उपेन्द्र ठाकुरको मतानुसार सोही कालमै बराहक्षेत्रलाई मिथिलामा गाभिनुका साथै बराह मन्दिरको निर्माण भयो। यस कुराको सुपुष्टि त्यस स्थलमा स्थापित पाँचौं-छैठौं शताब्दीको मूर्तिबाट हुन्छ। जनकपुर नजिकैको कुआमा महादेवको मन्दिर स्थापित छ। त्यसभित्र स्थापित अति जर्जर मूर्ति पनि गुप्तकालीन बराह देवको प्रतीत हुन्छ। यी मूर्तिहरूका साथै मूर्तिमा वाल्मीकिनगर, आदिमा स्थापित बराहका मूर्तिहरूले गुप्त-कालमा मिथिला क्षेत्रका मन्दिरहरूमा बराहको व्यापक पूजाआजा हुने गरेको दर्शाउँछन्।

कर्नाटवंशीहरूको शासन-पूर्व गुप्त र पाल-कालमा निर्मित मन्दिरहरू वर्गाकार थिए र तिनको शीर्षमा गजुर हुने गर्थ्यो। हाल केही मात्र प्राचीन मन्दिरहरू देखा पर्छन्। यी मन्दिरबाट प्राप्त अवशेषहरूले मिथिलाका प्राचीन मन्दिरहरू वर्गाकार हुन्थे र कहिलेकाहीं चारैतर्फ साना प्रतिकृतिहरू दर्शाउँदै मास्तिर पातलिँदै गएको सोझो मिनार वा बुर्ज भएको खुला बार्दलीले घेरिएका हुन्थे भनी दर्शाउँछन् (मिश्र पृ. २२४)

एघारौं शताब्दीको अन्तिम दशकमा कर्नाटवंशी नान्यदेवले मिथिलामाथि आधिपत्य जमाए र सिमरौनगढबाट शासन गर्न थाले। कर्नाटवंशीहरूको शासन कालमा अधिराज्यमा भवन निर्माणका कार्यहरू निकै बढेका थिए। यस कालमा एक नयाँ किसिमका मन्दिरहरू निर्माण भए जसलाई स्पूनरले आफ्नो कार्यपत्रमा तिरहुत शैलीका मन्दिर भनी उल्लेख गरेका छन्। सो कार्यपत्रलाई उद्धृत गर्दै उपेन्द्र ठाकुरले आफ्नो पुस्तकमा यसप्रकार लेखेका छन् "ती मन्दिरहरूमा पवित्र मूर्ति स्थापना गर्नका लागि सानो वर्गाकार कोठा छ जसको छानु वर्षालाई छेल्ने गरी बनाइएको छ भने कालान्तरमा चर्को घामलाई मन्दिरमा छिर्नबाट रोक्नका लागि एक सानु मण्डप बनाइएको छ। तिनमा कतै वक्ररेखाकार छैन। तिरहुत शैलीका यी मन्दिरहरू वर्गाकार छन् र तिनमा पूर्णतया सादा र सज्जाविहीन भित्ताहरू र त्यस्तै सज्जाविहीन, चित्रविहीन छानु छन्" (पृ. ३८४)। कुआ, पिपरा, क्षीरेश्वर, कल्याणेश्वर जलेश्वर आदिमा निर्मित मन्दिरहरू यसै शैलीका छन्। यस कुराको सुपुष्टि यी प्राचीन स्थलहरूमा स्थित मूर्तिकला र कुँदिएका

शिलालेखहरूबाट हुन्छ। मखनाहा मन्दिरको निर्माण पनि कर्नाटवंशीहरूको शासनकालमा भएको थियो। मन्दिरको गर्भगृहका भित्ताहरू ढुङ्गाको होचो पीठमाथि उभिएका छन्। विद्वान्हरूका मतानुसार मिथिलाका मन्दिरहरूको विकास परालका छाना भएका काठले निर्मित परम्परागत घरहरूबाट भएको हो। ती मन्दिरहरूमा पर्याप्त ईंटहरूको प्रयोग भएको छ किनभने त्यस क्षेत्रमा ईंट बनाउने माटो सजिलै उपलब्ध हुन्छ। ती मन्दिरका आम विशेषताहरूको परीक्षणले अन्वेषकहरूलाई प्रष्ट्याउनेछ कि तिनका चित्रित तोरणद्वार, भिराला छाना, कुँदिएका बलेंसीहरूमा जङ्गलवासीहरूका परम्परागत बाँसले निर्मित झुपडीहरूको स्वरूप झल्किन्छ। मिथिलाका मन्दिरहरू कहिल्यै धेरै अग्ला भएनन्। कालान्तरमा मिथिलाका मन्दिरहरूमा प्रायः विभिन्न स्तम्भहरूले छुट्याइएका तीनतीन तोरणद्वारको निर्माण भएको पाइन्छ। मिथिलाका मन्दिरहरूलाई तीन प्रमुख समूहमा बाँडिन्छ। शिखर शैली, गुम्बद शैली र एकचारी बङ्गला शैली। पुरातात्त्विक इतिहासका छात्रहरूले तिनको नामैले तिनका प्रमुख विशेषताहरूबारे सजिलै बुझ्न सक्छन्।

मध्ययुगमा मिथिला क्षेत्रमा दरबार र किल्लाहरू निर्माण भएको थियो। सिमरौनगढको किल्लाको पर्खाल करिब ४० वर्ग किलोमिटर क्षेत्रमा फैलिएको छ। यसैबाट उक्त नगरको वास्तुशिल्पीय भव्यता झल्किन्छ। यस सुरक्षात्मक पर्खालभित्र रानीवास तथा कङ्कालीमठजस्ता अति महत्त्वपूर्ण निकै पुरातात्त्विक स्थलहरू छन् जसको उत्खनन भएमा कर्नाटवंशीहरूको वस्तुशिल्पीय गरिमालाई झल्काउने छन्। विद्यापतिको *वर्ण रत्नाकर*-मा उल्लिखत विवरणलाई विश्वास गर्ने हो भने सिमरौनगढ दरबारमा भव्य बङ्गलाहरू मात्र नभई अनेकौं सैनिक क्याम्प र जुआघरहरू पनि थिए। त्यस्तै कविले आफ्नो *कीर्तिलता* भन्नेपुस्तकमा राजधानीमा अवस्थित घरका जालीदार झ्यालहरूको निकै प्रशंसा गरेका छन्। मकवानपुरको किल्ला र देवघाट तथा जनकपुरमा अवस्थित मन्दिरहरूले यस कुराको पुष्टि गर्छन् कि लक्ष्मान सेन, मुकुन्द सेन र लोहाङ्ग सेनसमेतले मिथिला अधिराज्यको धार्मिक तथा ऐतिहासिक वास्तुकलामा निकै योगदान दिएका थिए।

शाह राजाहरूले मिथिला क्षेत्रमाथि आधिपत्य जमाएपछि उनीहरूले सर्वप्रथम मूर्तिहरूको परम्परागत पूजाआज तथा अन्य धार्मिक क्रियाकलाप जारी राख्नका लागि पुराना गुठीहरूको पुनर्स्थापना गरे। यो कुराको पुष्टि जनकपुरस्थित राम मन्दिरका चतुर्भुज गिरीलाई अमर सिंह थापाले नया गुठी प्रदान गरेको प्रावधानले गर्दछ। सिमरौनगढ किल्लाभित्र स्थित रानीवास मन्दिरमा नियमित पूजाअर्चनाका लागि स्थापित गुठीले शाहवंशीहरूको शासनकालमा मन्दिरको वास्तुकलाको विकासमा सराहनीय योगदान पुऱ्याएको अर्को उदाहरण भएको देखाउँछ।

मा जानकीको वर्तमान मन्दिरले मिथिला क्षेत्रमा मन्दिर वास्तुकला चरममा पुगेको दर्शाउँछ। सेनवंशीहरूको शासनकालमा त्यहाँ देवी सीताको नाममा एक भव्य मन्दिरको निर्माण भयो र सन्त सुरकिशोर दासले तिनको नियमित श्रद्धापूर्वक पूजाअर्चना गरे। सन् १७२७ (वि.सं. १७८४) मा राजा मणिक सेनले निजलाई देवीको नियमित पूजाअर्चना र मेला आदिका लागि केही जग्गा प्रदान गरे। तत्पश्चात् सन् १९११ (वि.सं. १९६७)-मा टिकमगढ़की महारानी वृषभान कुमारी देवीले मा जानकीको वर्तमान मन्दिर निर्माण गराइन्। यस मन्दिरलाई नेपालको ताजमहल भनिन्छ। स्थानीय वासिन्दाहरूले नौलखा मन्दिर भनी सम्बोधन गर्ने उक्त मन्दिरमा माँ जानकीको स्वर्ण प्रतिमा स्थापित छ। सो

प्रतिमा सेनकालमा सन्त सुरकिशोर दासद्वारा देवीको प्राचीन मन्दिरमा स्थापना गरिएको थियो । उक्त मन्दिरले हिन्दू र मुस्लिम वास्तुशैलीको अनुपम मिश्रण हो । यति मात्र होइन, जनकपुरमा अन्य- कतिपय मन्दिरहरू छन् । ती मध्ये लक्ष्मण, जनक र सङ्कटमोचन हनुमानका मन्दिरहरू अति महत्त्वपूर्ण छन् र मिथिलाको धार्मिक र कलासम्बन्धी इतिहासमा तिनको छुट्टै स्थान छ । जनकपुरमा तलाउ (सागर)हरू पनि प्रशस्तै छन् । तिनीहरू अगाडि कालदेखि त्यहाँ विद्यमान रहेका छन् । जनकपुर नजिकै हनुमान नगरमा हनुमानको एक सुन्दर मन्दिर छ । यसको निर्माण सन् १७७६ (वि.सं. १८३३) मा राजा प्रतापसिंह शाहद्वारा गरिएको थियो । राजा प्रतापद्वारा सो मन्दिरको निर्माण भएको विवरणसमेतको एक *लालमोहर* समेत उपलब्ध छ ।

निष्कर्ष

१. मिथिलाको इतिहास र कलासम्बन्धी परम्पराहरूको उपरोक्त सर्वेक्षणले यो झल्काउँछ कि मानव सभ्यताको आरम्भदेखि नै पूर्वी नेपालको तराई क्षेत्र नेपाली संस्कृतिको एक महत्त्वपूर्ण केन्द्रका रूपमा रहेको छ । पौराणिक युगमा जनक, सीता, याज्ञवल्क्य, गार्गी, आदिले सामाजिक मर्यादा वा व्यवस्था, धर्म, दर्शन तथा राजनीतिक र कानूनी अवधारणाहरूको प्रवर्द्धनमा निकै महत्त्वपूर्ण योगदान गरेका छन् । ऐतिहासिक कालमा नान्यदेव र विद्यापतिले विविध मैथिल परम्पराको प्रवर्द्धनमा महत्त्वपूर्ण योगदान गरे भने कलाकार, वास्तुकार र चित्रकारहरूले उत्तिकै महत्त्वपूर्ण योगदान गरे । यी विद्वान् पण्डितहरूले गर्दा मिथिलाका परम्पराहरू टल्किए र स्थायित्व प्राप्त गरे जुन त्यहाँको सामाजिक तथा सांस्कृतिक जनजीवनमा अद्यावधि विद्यमान छ ।

अन्त्यमा म यहाँ यो तथ्यमाथि जोड दिन चाहन्छु कि नेपालको पूर्वी तराईका जनताहरूलाई बुझ्नका लागि मिथिलाका ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक र कला परम्पराहरूको अध्ययन हुनु नितान्त आवश्यक छ । यसले उक्त क्षेत्र, साथै जनकपुरधामको आधुनिकीकरण तथा पर्यटनको विकास सम्बन्धी योजना तर्जुमा गर्नसमेत सघाउने छ ।

अनुवादक : विजयकुमार रौनियार

मिथिलाक कर्णाटकीय राजवंशी राजा रामसिंह देव

तारानन्द मिश्र

मिथिलादेश आ ओकर राज्यसीमा– शतपथ ब्राह्मणक (१-४-१-१०) अनुसार आर्यजातिक पूर्वदेशमे प्रसारक सिलसिलामे ८००-७०० ई. पूर्वमे राजा विदेघमाथव अपन ब्राह्मण पुरहित गौतमराहुगण तथा अग्निवैश्वानरके संग ल अनार्यलोकनिक कठिन अवरोधक बावजूद गंडक (सदानीरा) पारकर मे तथा आर्यजातिके ओहिक्षेत्रम् आधिपत्य कायम करमे सफल भेलाह। शांखायन श्रौतसूत्र (१६-९-११; १६-२९-५) अनुसार अष्णारके पुत्र पर विदेह तथा कोशलक राजा छलाह (राधाकुमुद मुकर्जी, हिन्दू सभ्यता, १९६५, ११०, १३६)। पाणिनी विदेह के प्राच्यजनपद के नामसँ सम्बोधन केने छैथ। महाजनक जातकमे यशस्वी राजा विदेह द्वारा मिथिला नगरके निर्माणक उल्लेख छैक (मिथिलं मापितं सोमनस्सेनं वेदेहेन यसस्निां)। लेकिन दीघनिकायके महागोविन्दसुत्त तथा महावस्तुक अनुसार विदेहसंगे सातटा आन देश आ सबहक राजधानीक (जाहिमे मिथिलानगर सेहो छलैक) निर्माणकर्ता राजा रेणुक ब्राह्मण मंत्री गोविन्द छलाह (भरतसिंह, १९९१, ११)। मध्यकालिक बौद्धग्रंथ 'अभिधानप्पदीपिका' मे बुद्धकालके बीसटा पैघनगरक उल्लेख छैक जाहिमे मिथिलोक नाम समावेश कयल गेल छैक (भरतसिंह, १९९१, ४१३)। जैनग्रन्थ उत्तराध्यनसूत्र (अध्याय १८) आ सूत्रकृतांग (२-८) मे सेहो विदेहक चर्चा छैक। महाभारत, रामायण आ भविष्य पुराणक अनुसार राजा मिथिक नाम सँ अहि प्रदेशक नाम मिथिलाक रूपमे प्रख्यात भेल छलैक। मिथिला नामक नगरके श्रष्टा राजा मिथि के जनक नामसँ सेहो जानल जायत छैक। (निमि: पुत्रस्तु तथैव मिथिर्नामं महानस्मृत, निर्म्मितं स्वीनाम्ना च मिथिलापुर मुत्तमम्। पुरी जनन सामर्थ्यात: जनक: स च कीर्तित:)। पुराण तथा शब्दकल्पद्रुम (भाग-३, पृ. ७२३) मे मिथिला नामक अलग किसिमके व्याख्याँ छैक। जाहि अनुसार जनकपुरी आ विदेह के नाम मिथिला पडवाक कारण छलैक ओय नगरमे शत्रुक पराजय (मिथिलादयश्च मथ्यन्ते तत्र रिपवो। मथ्यन्ते शत्रवो यस्यां मथ मिथिलादयश्च। सन्तु जनकपुरी यथा। विदेहा मिथला प्रोक्ता)। मिथिला महात्म्यक (वृहदविष्णुपुराण, दरभंगा, अध्या. ५, श्लोक ५-७) विवरण अनुसार गौतम, याज्ञवल्क आदि ऋषिगणद्वारा यज्ञादि अनुष्ठानक परिणामस्वरूप मिथिक उत्पत्ति भेल छलैक जाहिसँ देशक नाम मिथिलारूपे प्रख्यात भेल छलैक। अहि प्रदेशक नाम तिरहुत सेहो छलैक। तिरहुतक

पहिल चर्चा सम्भवत: गुप्त कालमे भेल छलैक। तिरहुत नाम तीरभुक्ति (गंगा, गंडक़ तथा कोशीक तीर-किनार) क प्रदेश के अपभ्रंश थिकैह। दिनेश चन्द्र सरकार (इंडियन एपि. १९६५, ३७९) भुक्तिके अनेक विषयके उपरके प्रदेश मानैत छथिन। चण्डेश्वरक कृत्यचिंतामणि मे – 'आसीन्मैथिलि तीरभुक्त विषये' के रूपमे अहि प्रदेशक वर्णन भेल छैक। गोपाल राजवंशावलि (पत्र-४३) मे तीर प्रदेशके तरी (व्यनापे संस्थानं तरीटो म्वण्डयङ ... डोय भास्यं वडग्व), तिरहुति आ मिथिला कहल गेल छैक (गो. राज. वंशा. पत्र-४६, तिरहुति: हरसिंह राजासन मिथ्लासनता–तिरहुतिया राजा महाथ आदिन ...। पत्र-९, तिरहुतिया जगतशिंह कुमरस)। ई संवत् १२३६ तथा १२३८ मे क्रमश: दूबेर मिथिलाक राजधानी सिमरौनगढक भ्रमण मे पहुंचल तिब्वति भिक्षु धर्मस्वामी अहिप्रदेश के तिरहुतिक नामसँ सम्बोधन केने छथिन (रोरिक, १९५९, ५७,, The name of the place which he had reached was Tirahuti,..., पृष्ठ- ९८, the city of pa-ta in Tirhuti)। ई. संवत् १६०८ मे तिब्बती विद्वान् लामा तारानाथ अपन पुस्तक, 'भारतमे बौद्धधर्मक इतिहास', मे अनेक बेर तिरहुति प्रदेशक चर्चा केने छथिन (लामा चिम्पा तथा अलका चट्टोपाध्याय, १९९०, पृ. ३४, ५४, १३३, २१०, ३१४ तथा ३१८)। विद्यापतिक भूपरिक्रमा मे आठ देशक अन्तमे 'जनकदेशक' वर्णन भेटैत छैक (राधाकृष्ण चौधरी, विद्यापतिक समयमे मिथिला, १९७६, पृ. २३३)। चण्डेश्वरक विवादरत्नाकर मे मिथिलाके एकटा तीर्थस्थल के सूचिमे प्रस्तुत कयल गेल छैक (चौधरी, १९७६, २३५, पाद-४२)।

विदेह-मिथिला देशक विस्तान सुरुचिजातक मे ३०० योजन आ मिथिलानगरक सात योजन कहल गेल छैक। एकटा जातक (भाग-३) अनुसार विदेह राज्य अन्तर्गत सोलह हजार गाम छलैक। बौद्धग्रंथ अनुसार मिथिलाक व्यापारिक संबंध प्राय: चम्पा, कम्पिल्ल, इन्द्रप्रस्थ, श्रावस्ती तथा गान्धारक तक्षशिला नगर सँ छलैक (भरत सिंह, १९९१, २७७)। कुम्भकार जातकमे विदेहराज निमिके गान्धारदेशक राजा नग्नजित आ पांचालराज दुम्मुख (दुर्मुख) के समकालीन कहल गेल छैक। बौद्ध साहित्यक श्रोतसँ विदेहराज्य, उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गया, पशिचममे मही (गण्डक-गण्डकी) नदी तथा पूर्वमे कोशी नदीसँ घेरल छलैक। मज्झिमनिकायक चूलगोपालक सुत्तन्त अनुसार विदेह गंगापार (उत्तर दिशा मे) छलैक। मिथिलामहात्म्य अनुसार गंगा तथा हिमालय पर्वतश्रेंणीक माँझ मे तथा कोशीँ गण्डकी नदी तक तिरहुतदेश के विस्तार छलैक[1]। महाजनजातक मे मिथिला नगरके समृद्ध, विशाल तथा अत्यंत प्रकाशित (मिथिलं फीतं विशालं सब्बंतोपभं), विभाजित भागसब अत्यंत शोभायमान (विभक्तं भागसोभितं), अनेक दिवार आ दरबाजासँ युक्त (बहुपाकार-तोरणं), अनेक तल्लाकार विशाल तथा मजगूत घरसबसँ भरल (दलहमट्टाल कोट्ठकं) गाय-वरद, घोडा आ रथ सबसँ भरल (गवास्सरथ पीलितं) आ बाग-बगीचा, वनसँ युक्त (उज्जानवन मालिनिं) कहलगेल छैक। महाउमग्ग जातक अनुसार मिथिलानगर के चारु दिशा (क्रमश: उत्तर-दक्षिण, पूर्व आ पशिचम) मे चारिटा विशाल नगरद्वार तथा ओकर बाहर यवमज्झक व्यापारिक निगम (हाट-बजार) सब छलैक। रामायण मे सेहो मिथिलाके चारिभागमे विभाजित नगर कहलगेल छैक जाहिके मुख्यसडकक किनारमे दोकानक पंक्ति आ, सगरे सडकमे प्रकाशक व्यवस्था छलैक (रामायण अध्या. ६, श्लोक ११२, ४२, 'सिक्त रथ्यान्तरापण;' आचार्य, वास्तुशब्दकोष, १९९५, २८८)। तकर अलावा ओहीठाम अन्न, दही-दूध तथा फलफूल आदिक प्रचुर मात्रामे उपलब्ध होयक उल्लेख छैक (भरतसिंह, १९९१, पृ. २७६-२७९)। महाभारत

(अध्या. ३,२००-२०७) मे मिथिलाक दरबार आ नगरदिवालक चर्चा केल गेल छैक (आचार्य, वास्तुशब्दकोष, १९९५ पृ. ३९२)।

बुद्धपूर्वकालमे मिथिला राज्य राजा जनकके शासन अन्तर्गत छलैक, लेकिन बुद्धकालमे अहिठाम गणतंत्रात्मक शासनक स्थापन भेल छलैक। ई राज्य वृज्जिसंघक (अष्टकुलमे सँ) एकटा सदस्य छलैक। मध्यकालमे कर्णाटकी वंशके छत्रछायामे मिथिलामे फेर राजतंत्रक स्थापना भेल छलैक। राजा जनकवंशके शासन मे मिथिलामे वैदिक साहित्यक खूब विकास भेल छलैक, आ मिथिला एकटा विशिष्ट विद्वान् सबहक संगमस्थल छल। बुद्धकालमे सेहो मिथिलाके बौद्धधर्मक सक्रीय बाहक के रूपमे चित्रण कयल गेल छैक। भगवान बुद्ध स्वयं अहिठाम आबि विहार मे निवास करैत छलाह। मध्यकालीन इतिहासमे कर्णाटकी शासक अन्तर्गत मिथिला पुन: जागरुक सांस्कृतिक केन्द्र के रूपमे धन, धर्म आ विद्याक केंद्रक रूपमे प्रख्यात छलैक। अहिकालमे हिन्दूधर्म सँ संबंधित ज्योतिषशास्त्र,साहित्य, धर्म, कला, राजनीति, नाट्य-संगीतशास्त्र सबहक पुस्तक आ टीका ग्रंथसब अत्यधिक मात्रामे विद्वानद्वारा लिखल गेल छलैक।

वैदिककाल आ बुद्धकालक मिथिलाक राजधानी कत छलैक एकर निश्चित प्रमाण उपलब्ध नहि भेलछैक। तथापि अलेक्सजेंडर कनिंघम आधुनिक जनकपुरके प्राचीन राजधानी मानैत छथिन। आ सिमरौनगढके सेहो उल्लेख केने छथिन जे ओहिसमयमे ५५० वर्षसँ वेसीकाल सँ विरान छलैक (प्राचीन भारतके भूगोल, वाराणसी, १९६३, ३७८)।

मिथिलामे कर्णाटकी राजवंश

गुप्तवंशके शासनकालमे मिथिला तीरभुक्ति प्रदेशके रूपे प्रख्यात छल। गुप्त शासन पश्चात् मिथिला हर्षवर्द्धन के साम्राज्यके एकटा प्रांत छलैक। एकर बाद क्रमश: शशाङ्क, चीन-तिब्बतक अधीनताक बाद ई. संवत् ७०३ मे पुन: स्वतंत्र भेल। किछु समय पश्चात् गोविन्द चन्द, कन्नौजक यशोवर्मन तथा धंग आ धर्मपालक शासन मिथिलामे ई.सं. ७५०-९०० तक) कायम रहलै। एकरबाद चालुक्यराज सोमेश्वर प्रथम (राज्यकाल १०४६-१०६८ ई.तक) आ विक्रमादित्य छठम (१०७६-११२६ ई) के आक्रमण मिथिला तथा बंगालमे भेल छलैक। अहिसमयमे मिथिलाक्षेत्रमे कलचुरी राजासबहक सेहो आक्रमण भेल छलैक, जकर सूचना कल्हनदेवीक भेरीघाट अभिलेख सँ प्राप्त होयत छैक[२]। संवत् १०७६ आषाढ वदि ४ मे लिखल रामायण ग्रन्थमे (ग्रन्थसंख्या १०७९, वेजलर, पृ. १०४-१०५) तीरभुक्ति विषय मे महाराजाधिराज गांगेयदेवक उल्लेख भेटैत छैक। हरपदशास्त्रीक नेपाल दरबारक हस्तलिखित पुस्तकक भूमिका लिखैक सिलसिलामें प्रोफेसर सिलसिल बेंडल गांगेयदेवके कलचुरी-चेदि चन्द्रवंशी राजा कहने छथिन। हुनक विचारमे रामायणक अहि ग्रन्थक रचना गांगेयदेवक तिरहुत शासनकालमे (ई.सं. १०१९-१०३०) मे भेल छलैक। गांगेयदेवक किछु मुद्रा गोरखपरसँ प्राप्तभेल छैक (रेप्सन, भारतीय मुद्रा, पृ. ३३)। गांगेयदेवक बेटा तथा उत्तराधिकारी कर्णदेव सेहो अपनाके गौड देशक शासक कहने छथिन। राजा कर्णक बेटाके चम्पारण अभियान के विवरण सेहो प्राप्त भेल छैक (Epi. Indi. II, 9, 1; Wezler, 1989, 18-19)। अहिकालमे नान्यदेव नामक एकटा कर्णाटकी सामंत १०९७ ई. मे पालशासन के चुनौती दैत कोशी-गण्डकी, गंगा-हिमालयपर्वत श्रेणीक पादभागमे अपन राज्य संगठन करमे सफल भेलाह। नान्यदेवक अन्धराठाढी अभिलेख, नेपालक मुदितकुवलाश्व नाटक, नान्यदेवक भारतवार्त्तिका

(भरतनाट्यशास्त्रकटीक) मे हुनका 'कर्णाटकुलभूषण' आ 'सामंताधिपति' कहल गेल छैक। अहि राज्यक राजधानी मोतिहारी शहरक लग, नान्यपुरीमे स्थापित भेल छलैक। लेकिन किछुएक समय पश्चात् नान्यदेव अपन राजधानी हालक नेपालराज्यक बारा जिला अंतर्गत सिमरौनगढ क्षेत्रमे स्थानान्तर कैलखिन जाहिके किछु भाग भारतके घोडासहन रेलवेस्टेशन स दु-अढाई कोस उत्तरी सीमाक्षेत्र मे सेहो छैक। नान्यदेवक संतान आ उत्तराधिकारी सबके शासन अहि क्षेत्रमे १३२६-१३२७ ई. धरिकायम रहलैन। सिमरौनगढमे[३] नान्यदेवक शक संवत् १०१९ (ई.सं.१०९७) श्रावण महिना शनिश्चर दिनक एकटा स्तंभाभिलेख प्राप्त भेल छैक जाहिमे वो नगरनिर्माणक चर्चा छैक। नेपालक केशलवंशावली मे सेहो अहि नगरक निर्माण नान्यदेव द्वारा होयके उल्लेख छैक (पत्र सं. १५, 'नान्यदेव नृपतिर्विदधीत वास्तुं। स्रष्टा नान्यपतिर्ण्वभूव')। जयस्थितिमल्लकाल (१३८२-१३९५ ई. संवत्) मे लिखल गोपालराजवंशावली नान्यदेव के वंशज के डोय (पत्र- ३५, ३६, ४०), तिरहुतिया। (पत्र- ४६, ४९) आ कर्णाटवंशज (पत्र २८, 'कर्णाटवंशज श्री जगतसिंह) के नामसँ सम्बोधन केने छैक। नान्यदेवक उत्तराधिकारी आ सिमरौनगढसँ[४] शासन केनहार राजा सब संप्रति छलाह – गंगादेव, नरसिंहदेव, रामसिंहदेव, शक्ति सिंहदेवक बाद रामसिंह आ हरिसिंहदेव छलाह। अहि वंशक प्रतापी राजासबये नान्यदेबका बाद रामसिंह आ हरिसिंहदेव छलाह। यी तीनटा राजा सब अन्तयंत चतुर, प्रतापी, विद्वान् आ राज्यरक्षामे समर्थ वीर, कूटनीतिज्ञ छलाह।

राजा रामसिंहदेव

नान्यदेवक चतुर्थ उत्तराधिकारी रामसिंहक जन्म गोपाल राजवंशावली (पत्र ३५क) अनुसार नेपाल संवत् ३०३ (चैत्र शुक्ल त्रयोदशी श्री नरसिंह देवस्य पुत्र श्री रामसिंह जातः डो ठाकुरः'।) अर्थात् ई. संवत् ११८२ मे भेल छलैक। अहि जन्म कालके लुशियानो पेटेक ठीक मानैत छथिन् (१९८४ रोम पृ. २११)। लेकिन अगर रामसिंहक शासनक अन्त १२८५ ई. मे भेलैक छल त हुनक शासन अवधि १०३ वर्ष होयत छैक, जे सम्भव नहि छैक आ मिथिलाक श्रोतसँ एकर संमर्थन नय होयत छैक। उपेन्द्र ठाकुरके विचारमे रामसिंहक शासन १२२५ अथवा १२२७ सँ हुनक पिता नरसिंहदेवक मृत्युपश्चात् शुरु भेल छलैक। राधाकृष्ण चौधरी हुनक शासन अवधि १२२७ सँ १२८५ तक निर्धारिक करैत छथिन जकर सर्मथन डा. अल्टेकर सेहो केने छथिन (रोरिक, १९५९, भूमिका पृ. १३)।

सकरी स्टेशनसँ दक्षिण हावीपत्तन (वर्तमानक हावीडिहगाम) सँ पार्वती मूर्तिक पाद्पीठलेखक अनुसार ल. सेन संवत् (ई.सं. १३१९-१३२२) २१२ मे शायद रामसिंहक रानी सौभाग्यदेवीक आज्ञानुसार हुनक मंत्रि कर्मादित्य ओहिठाम ओ मूर्तिक स्थापना करौने छलखिन ('हाविपट्टन संज्ञके सुविदिते हैहट्टदेवी शिवा कर्मादित्य सुमन्त्रिणह विह्निता सौभाग्यदेव्याज्ञया, ठाकुर, १९५६, पृ. २७०)। दरभंगाक तिलकेश्वर मंदिरमे सेहो कर्मादित्यक नाम उल्लेखित छैक। राजा रामसिंहक राज्यकाल आ आश्रयमे श्रीकरणद्वारा लिखल एकटा अमरकोषटीका भेटल छैक, जाहिमे – 'महाराजाधिराज श्रीमद्रामसिंह देवानां' वाक्य उल्लेख भेल छैक।[५] प्रोफेसर सिसिल बेंडल मिथिलाक इतिहास पर पंडित हरप्रसाद शास्त्रीक नेपाल दरबारक पुस्तकसूचि (वेजलर, पृ. १९) मे अहि शब्दकोषक चर्चाक सिलसिलामे कर्णाटकी राजा रामसिंहके ओइनवार वंशक रामभद्रदेवसँ गलत परिचय करौने छथिन (वेजलर १९८९, १९)। उपेन्द्र ठाकुरक अनुसार श्रीकरण कर्णाटकी

पादटिप्पणी-४)। अमरकोष के पुष्पिका सँ रामसिंहक आश्रयमे छलथिन (१९५६, ३३४, पादटिप्पणी-४)। अमरकोष के पुष्पिका सँ सेहो अहीबातक स्पष्ट प्रमाण भेटैत छैक (वेजलर सूचि, पृ. १४१, 'महाराजाधिराज श्रीमद्रामसिंहदेवानां सदस्य महामहोपाध्याय श्री श्रीकरविरचिताया अमरकोष विवरणटीकायां, पुस्तक सं. ८०२ ख; पुस्तक सं. ८०३ ख, अमरकोषटीका, 'श्रीकरेणरायमुकुटेन च रचिता')। राजा रामसिंहक शासनकालमे लक्ष्मीधरक लिखल पुस्तक क्रियाकल्पतरु (ई.सं. १३९० मे लिखल प्रति; कल्त्यकल्पतरु, लक्ष्मीधरकृत:, वेजलर, १९८९, पृ. १८०), आ पृथ्वीधरकें, लिखल पुस्तक मृच्छकटिक नाटकके टीका भेटल छैक (ठाकुर, १९५६, पृ. १९५ आ पृ. ३७६)। हाले एकटा कनिफुटल शिलालेख सिमरौनगढसँ प्राप्त भेलछैक जाहिमे रामसिंहदेवं (नरपति: ... धार्मिकानाम अनवधि महिम रामसिंहदेव) आ मंत्री करमादित्यक नाम उल्लेख भेल छैक। अहि अभिलेखक अंतिम पंक्तिमे – 'उपगतस्यतनय:। अभूत कर्म्मा (दित्य:)' के उल्लेखद्वारा कर्म्मादित्यक पिता (शायद रामादित्य) क नामोल्लेख होयके सम्भावना छैक, जे अंश फुटिगेल छैक[६]। काशीप्रसाद जायसवाल अपन लेखमे राजा नरसिंहक दुटा मंत्रि, क्रमश: रामादित्य आ कर्मादित्यक उल्लेख केने छथिन (JBORS, X, 46)। अहि अभिलेखसँ कर्म्मादित्य दुनु बाप-बेटा (राजा नरसिंहदेव आ रामसिंह देव) के शासनकालमे मंत्रिक रूपमे सेवा केने छलखिन, तकर प्रमाण उपलब्ध भेल छैक। दरभंगाराजक पुस्तकालयमे सुरक्षित पंजीप्रबन्ध हस्तलिखित पुस्तकसँ कर्मादित्यक दुटा बेटा क्रमश: देवादित्य आ भवादित्यक विषयमे ज्ञात होयत अछि ('गढ बिसपी संबीजी त्रिपाठी कर्मादित्य: ऐ सुतौ सन्धिविग्रहिक देवादित्य-राजवल्लभ भवादित्य') मंत्री कर्मादित्यक दोसर अभिलेख दरभंगाक तिलकेशवर मंदिरसँ प्राप्त भेल छैक। (ठाकुर १९५६, २७०, पादपीठ-४) चण्डेश्वरक कृत्यचिंतामणी सँ देवादित्यक बेटा वीरेश्वर आ हुनक बालक चण्डेश्वर होयबाक सूचना प्राप्त होयत अछि। (ठाकुर, १९५६, पृ. २७०, पाठपीठ-४) चण्डेश्वरक कृत्यचिंतामणी से देवादित्यक बेटा वीरेश्वर आ हुनक बालक चण्डेश्वर होयबाक सूचना प्राप्त होयत अछि। (ठाकुर, १९५६, पृ. २७०, 'देवादित्य इति त्रिलोकमहितो मन्त्रीन्द्रचूडामणि:')। श्रीहर्षकृत 'खण्डनखण्ड-खाद्यम' नामक (रा. अभिलेखालय नेपाल, पुस्तक सं. १११३ ई. वेजलर, पृ. १५३) पुस्तक मिथिलामे ल.से. संवत् ११६ (१२२४–१२३४ ई.) मे विजलपुरमे पण्डित वासुदेव लिखने छलखिन। शायद ई पुस्तक राजा रामसिंहक शासन अवधि मे लिखल गेल छलैक। राजारामसिंहक शासन अवधिमे शक संवत् ११८४ (ई. सं. १२६२) मे हरीश्वरक लिखल 'नलचरित्रटीका' क रचना मिथिलामे भेल छलैक (वेजलर, १९८९, पृ. ९१, पृ. ५४२)। हरीश्वरक उल्लेख नेपाल राष्ट्रिय संग्रहालय, छावनीमे प्रदर्शित सूर्यमूर्ति पाठपीठ लेख मे सेहो छैक।[८] श्रीलक्ष्मीधरभट्टक रचना कृत्यकल्पतरुक एक प्रति खण्डितप्रति नेवारी लिपिमे उतारल रा. अभिलेखालयमे तथा एक प्रति रामसिंहक शासनकालमे लिखल गेल छलैक। (तारानन्द मिश्र, प्राचीन नेपाल अंक २४, पृ. ४१)।

रामसिंहक शासनकालमे दिल्लीके वादशाह क्रमश: इल्लतुतमिश (१२२५-१२३६ ई.) सुल्तानारजिया (१२३६ ई.), सुल्तना अल्लाउद्दिन मसुद के समय मे सिमरौनगढक आसपास १२३३-१२४२ के लगभग मे विहारक प्रशासक तुघ्रिल तुघाखाना तथा अवधके प्रशासक तमरखान मिथिलापर आक्रमण क खूब लूटपाट मचौने छलैह। धर्मस्वामीक जीवनीपर भूमिका लिखैक सिलसिला मे डा. अल्टेकर अहि आक्रमण के घटना के १२३३ मे भेल छलैक से लिखने छथिन (रोरिक, १९५९, भूमिका १४)। तिब्बती यात्री धर्मस्वामी

१२३४ ई. मे बोधगया (बज्रासन) जायके सिलसिलामे नेपालसँ सिमरौनगढ होयत ओहि नगरक अत्यंत सुरक्षाक इन्तजाम पर टिप्पणी करैत तुरष्कक आक्रमण ओहि नगरमे किछु समयपूर्व मे भेल छलैक, तकर जानकारी देने छथिन (Roerich, 1959, 58, There protective measures were due to the fear of Turushkas or Gar-logs who during the year had led an army (against the town), but failed to reach it.' . मुस्लिम इतिहास रियाजक अनुसार (१९५४, पृ. ७४) तुघ्रिलखान तिरहुत पर आक्रमण केने छलैक। रियाजक अनुसार तुघाखान कर्णाटक-मिथिला राज्यपर आक्रमण क ओकर राजा (रामसि.ह) के बन्दी बनादिल्ली लगैलैक, लेकिन दिल्लीक बादशाह सुल्तान अल्लाउद्धिन मसुद हुनकरबहादुरीक कदर करैत हुनका आदरपूर्वक दरभंगा पहुचा देलकैन। तबाकत, रियाज, आ भिनहाज, तिनु मुश्लिम श्रोत तुघाखानद्वारा लखनौतीसँ तिरहुतक आक्रमणक विषयमे उल्लेख केने छैक। अहि घटनाक पश्चात् तिरहुती राजा सिधे दिल्ली के कर बुझबैत छलखिन, (राधाकृष्ण चौधरी, तिरहुत मे मुश्लिम शासन, १९७०, ३८-३९)। लेकिन धर्मस्वामीक विवरण सँ सिमरौनगढक पतन आ राजारामसिंहके बन्दी बनाक दिल्ली तक ल जायक मुश्लिम श्रोतक बात गलत साबित होयत छैक। आ अहि घटनाक बादो राजा रामसिंह दिल्लीक सुल्तानसँ अपन सबबातक सल्तनत क मिथिलाके स्वतंत्र राखमे सफल भेलाह। हुनक बाद हुनक बेटा शक्तिसिंहदेव आ नाती हरिसिंहदेव सहित ई. संवत् १३२६ सालतक अपन शासन सिमरौनगढसँ सफलतापूर्वक सञ्चालन केने छलखिन।

राजा रामसिंहके शासनकालक (१२२५-१२५८ ई.) पहिनय लखनौती, विहार तथा अवध मे दिल्लीक शासन कायम भगेल छलैक । अहिसमय मे तिरहुतखण्ड अवध तथा लखनौतीक नबाब (प्रशासक) आ दिल्लीक बादशाह, ई तिनु शक्ति सँ मिथिलाके नीक सम्बन्ध बनाके राखपडैत छलैक। सबसे मुश्किल तखन आबैत छलेक जखन लखनौतिक नबाब दिल्लीक विरुद्ध विद्रोह करैत अपनाके स्वतंत्र घोषित करैत छलैक। यही विकट परिस्थिति मे मिथिलाक शासक अत्यधिक कूटनीतिक प्रदर्शन करैत लखनौती आ दिल्ली दुनु के आर्थिक आ सैनिक मदत दक स्वतंत्रता कायम रखने छलाह। मिथिलाक शासनक्षेत्र ओहिसमय मे क्रमशः चम्पारण (हाजिपुरसँ उत्तर), सिमरौनगढ, मीठ भगवानपुर, अन्हराठाढी,दरभंगा, सकरी, बहेरा आ बनगांउ (गोरहोघाट) आसपासक क्षेत्र भीतर सीमित भगेल छलैक। सिमरौनगढक आँखिदेखल विवरण १२३४-१२३६ ई. मे दूबेर ओ नगरक भ्रमण करबला तिब्बती विद्वान् धर्मस्वामीक जीवनवृत्तांत सँ ज्ञात होयत छैक। हुनक वर्णनक अनुसार ओनगरमे ६ लाख घर छलैक आ नगर के बाहर सातटा उँच दिवार छलैक। राजाक दरबार नगरसँ बाहर छलैक जकर सामने एगारहटा विशाल दरबाजा छलैक। राजप्रासादक चारु दिश एकइसटा पानि सँ भरल खाई (परिखा, मानसार शिल्पशास्त्र एकर विधान निम्न प्रकार वर्णन करैत छैक– 'वाह्ये प्राकार-संयुक्तम परितः परिखान्वितः, अध्या. १०, श्लोक ४५०; कौटिल्य अर्थ. अध्या. २५, पृ. ५१, ५६ मे 'तोयपुर्णा– परिवाहाः .. परिखा' कहने छैक; १६५१ ई. मे ललितपुर के चारु तरफक नगरद्वारा आ प्रकार तथा परिखाक वर्णन कुनुशर्मा अपन पुस्तक कीर्तिपताका मे निम्नानुसारकेने छथिन– 'श्री परिखा गंभीरतिमिरं .. खाताभ्यन्तर संभवाहि नानाकुञ्ज विभूषिता तिलिलताः प्रोतुङ्गशाखोत्तमाः।') छलैक। नगरके पूर्व, पश्चिम, दक्षिण मे प्रकारसंगे तीन-तीनटा द्वारआ उत्तर दिशामे दुटा (कुल एगारहटा) नगरद्वारछलैक। प्रत्येक

द्वारक आगा पुलछलैक जकर सामने दशटा धनुर्धारी आ तीन-तीनटा खड्गधारी सैनिक पहरा दैत छलैक। धर्मस्वामीक कथनानुसार एते कडा सुरक्षाक व्यवस्था तुर्क आक्रमण के संभावनाके ध्यानमे राखिके केलगेल छलैक। तुर्क सबहक आक्रमण गत वर्ष भेल छलैक। राजा रामसिंहक शासन कालमे मे सिमरौनगढ नगरक चारुदिश नगरद्वीवारक पुन: निर्माण आ सुदृढिकरण भेल छलैक। एकर प्रमाण किछुवर्ष पूर्व ओही नगरक उत्खनन तथा अन्वेषण मे संलग्न इटली तथा श्री ५ के सरकार पुरातत्व विभागक पुरातत्वविदक प्रतिवेदनसँ जानकारी प्राप्त भेलछैक। उत्खनन कर्त्ताद्वय फ्रांचेस्का लुगली, मास्सिमो विडालीक प्रतिवेदन सँ मालुम होयत छैक कि ओही नगरक प्राकार तथा परिखाक निर्माण दुटा चरणमे भेल छलैक। सिमरौनगढक दुर्ग मुख्यरूपमे लम्बाकार (rectangular) छैक, जे उत्तर-दक्षिण दिशामे ७.५ किलोमीटर लंबाई मे आ ४.५ किलोमीटर (पूर्व-पश्चिम) चौडा छैक। भीतरसँ ई प्राकार (दिवार) माइटक आ बाहरसँ पाकल ईंटक (५.१ सँ ४.२ से.मी. मोट × १६.५ सँ २०.५ से मीटर चाकर × आ १९ सँ २४.५ से.मी. लंबा आकारक, मुगलकालीन लखौरी ई.टक सदृश्य) छैक। पुरातत्त्व विभागक जनकलाल शर्माक सिमरौनगढ प्रतिवेदन मे ओहि नगरक चारु दिशाक दिवारके अठारह किलोमीटर (६ कोस)लंबा कहल गेल छैक (प्राचीन नेपाल, संख्या – २,१९६८, पृ. ४)। दोसर चरणके दिवार एक मीटर चाकर छलैक तथा परिखा ५ मीटर चाकर आ दु मीटर गहीर छलैक। ई दिवार एखनो ६-७ मीटर (२२-३३ फीट) ऊँच छैक। मुख्य दिवालक भीतर आ बाहर दुनुकात मे परिखा (पानिक नाली) छलैक। जकरा जमुनी आ अरबा नदी सँ जोडल गेल छलैक। अही नदीक पानिके एकठाम ताल बनाके जरुरत अनुसार कम-बेस परिपूर्ति करबाक सेहोबृहत् व्यवस्था छलैक। दिवालक चारु कोणमे चारिटा चतुष्कोणात्मक किला (कोट) छलैक। एकर दक्षिण पूर्वकोणमे चक्राकार दिवालक समूह बनाके राखल गेल छलैक जाहिसँ द्वारक भ्रम होयत छलैक लेकिन ओहीठामसँ श्री लुगली तथा बिडालीक अनुसार (१९९७, पृ.९८) उत्खननक्रममे मुख्य दिवारक बाहर गाछी आ झाडी भेटल छैक। अहीठामसँ शत्रुपर प्रतिघात करैक व्यवस्था छलैक।[९] सिमरौनगढके चारुतरफ चक्रव्यूहारकार दिवालक सूचना ओही प्राचीन नगरक भग्नावशेष होयत १७३९-५४ ई. भीतर अनेक बेर पटना सँ प्राचीन राजमार्गद्वारा भक्तपुर आ नेपाल उपत्यका मे आयल ईटलीक कापुचिन पादरी कास्सिआनोक विवरण संगे राखल चित्रसँ मालुम होयत छैक। पादरी कास्सिआनो वेलिगात्ती लिखैथ छैथ जे सिमरौनगढ (जकरा ओ चिमनगढ उच्चारण केने छथिन) के चक्रव्यूहाकार गढक चित्र भक्तपुर दरबारक परिसरमे छलैक जकर नक्कल पादरी कास्सिआनो इटली लगेल छलखिन आ पाछा इटलीक पत्रिकामे प्रकाशित केने छलखिन। हुनक विवरणसँ ओय नगरके चारु दिशामे अण्डाकार एक-एक कोसक दूरीपर सातटा दीवार छलैक[१०]। यी दिवारक मांझ मे कृषियोग्य खेत आ छोट-छोट पानिक नाला सब छलैक। दिवारक कोण सबमे चारिटा सुरक्षा चौकी (प्राकार अट्टाल; अट्टालक प्राकारो परितन युद्ध स्थानम्-रामायणक व्याख्याँ, अध्य-१६-११; आचार्य वास्तुशब्दकोष, १९९५, १५) क प्रवन्ध छलैक। पादरीक वर्णन अनुसार ओ चक्रव्यूहारकार सिमरौनगढक नगर-दिवाल के भक्तपुरके एक प्राचीन राजाक चांदीक मुद्रामे सेहो छापल गेल छलैक, जे बजारमे बहुत कम हेबाक कारण अधिक मुल्यमे बिक्री होयत छलैक (पेटेक, १९५२-५३, पृ. ११), १३)। बहुत पाछा १८३५ ई. मे सिमरौनगढक भ्रमण केनहार विद्वान् बी.एच. हुडशन अपन विवरण मे, ओहिनगरक चारु दिशामे प्रमुख नगर दिवाल, दिवालक बाहर छ

अथवा सातटा चक्राकार परिखाक उल्लेख करेत छैथ। प्रत्येक परिखाक सँगे एक-एकटा माटिक दिवार (मृणमय परित) छलैक (रामायण अनुसारलंका नगर के चारु तरफ सातटा दिवार छलैक, लंकाम ... सात्त-प्रकार-तोरणम्, अध्या. ५, ३, ३३)। अहि संदर्भमे ज्योतिरीश्वरक विवादरत्नाकरण मे उल्लेखित देशरक्षा, व्युहरचना आ व्युहप्रवेशक चर्चा प्रासंगिक छैक।

धर्मस्वामीक विवरणमे हुनक भ्रमण वर्षक पूर्वार्धमे सिमरौनगढ पर राजा रामसिंहक शासनकालमे, तुर्कसेनाके आक्रमण भेल छलैक, जकर चर्चा आगां भेल छैक। धर्मस्वामी सिमरौनगढक आसपासक वर्णन करैत नगरबाहर कुसियारकखेत आ रास्ताक किनारमे बाँसझाडीक पंक्तिक उल्लेख केने छथिन। राजा रामसिंह वर्षमे एक बेर अपन दरबारसँ बाहर नगरभ्रमण मे आबैत छलखिन। हुनक नगरभ्रमणक सिलसिलामे प्रत्येक घरके रेशमी पताका तथा तोरणसँ सजावल जायक प्रचलन छलैक। राजा एकटा हथिनीपर सिंहासनमे बैसल छलाह, ओ सिंहासन कीमती पत्थर आ रंगीन कपडासँ सजावल गेल छलैक। हुनक आगाँ-आगाँ ढोलकिया, नचनिया सब छलैक ताहिमे अधिकांशक हातमे झंडा-पताका छलैक। सिमरौनगढमे राजाक आगमन के तमाशा देखैत तिब्वती भिक्षु धर्मस्वामीके राजा अपन मंत्रीद्वारा राजाप्रासाद मे बजौलखिन। दरबारसँ पठावल पालकीपर सवार भ धर्मस्वामी राजा समक्ष उपस्थित भ स्वस्तिवचन कहलखिन। राजा धर्मस्वामीक विद्वतासँ प्रभावित भ हुनका सोना, कपडाक थान, दवाई, चावल तथा अनेको बढिया वस्तुसब उपहार देलखिन। रामसिंह भिक्षुके अपन धर्मगुरुतक बनवैकप्रस्ताव केने छलखिन। लेकिन धर्मस्वामी धर्मभिन्नता आ तिब्बत के अपन बौद्धविहारक सेवा करक इच्छा जाहिर करैत ई प्रस्ताव के अस्वीकृत क देलखिन। ओही समयमे सिमरौनगढमे किछु नेपालीसब संगे धर्मस्वामीक भेंट भेल छल्हैन।[१२] जाहिसँ तिब्बत आ नेपालक लोकसब भारतके कोनो प्रदेश जायके सिलसिलामे सिमरौनगढ होयत जायत छलैक एकर सूचना प्राप्त होयत छैक। अहि रास्ता भ १७४२-५४ मे इटलीक कापुचिन पादरीसब बराबर नेपाल आबैत छलैक (चित्र-१)। ओय समयमे राजा रामसिंहक दरबारमे विभिन्न देशक विद्वान्सब रहैत छलैक जाहिक परिणमस्वरूप अनेक प्राचीन ग्रंथक रचना आ प्राचीन ग्रंथक भाष्य तथा टीका अहिकाल मे लिखल गेल छलैक (ठाकुर, १९५६, पृ. ३७९; राम प्र. शर्मा, १९७९, २२६)।

राजा रामसिंहक नेपाल उपत्यकामे आक्रमण आ हुनक नेपालीश्रोतमे उल्लेख–

नेपाल उपत्यकामे कर्णाटवंशी राजाक प्रथम आक्रमण नेपाल संवत् २३१ भाद्र (१११० ई.) मे भेल छलैक (गो.राज.वंशा. पत्र ३२, 'नरमल्लदेव पोह कर्णाटकी सैनिक सबके खड्ग (तरवार) सँ काटि देलखिन')। ओहिसमयमे मिथिलाक राजा नान्यदेव छलाह लेकिन हुनक नाम आक्रमणके सिलसिलामे नय लेल गेल छैक। गोपाल राजवंशावली (पत्र. ३४) अनुसार नान्यदेवक पुत्र श्री अर्जुनदेवक जन्म ने.सं. ३५२ (ई. सं. १२३१) भाद्रमे भेल छलैक, जे सरासर गलत मालुम होयत छैक, कियेक तँ ओहि समयमे मिथिलाक राजा रामसिंह छलाह। मिथिलाक ऐतिहासिक श्रोतसँ नान्यदेवक दुटा बेटा क्रमशः मल्लदेव आ गंगादेवक उल्लेख भेटैत छैक आ ओ दुनु भाय अलग-अलग नामसँ अगल क्षेत्र पर शासन करैत छलाह। कोनो मैथिल श्रोतसँ अर्जुनदेवक नाम नय भेटैत छैक। ई सम्भव छैक कि मल्लदेव जे अत्यंत बहादुर छलाह आ गहडवालक राजा

जयचन्द्र आ विजयचन्द्रक सेवामे कार्यरत छलाह । हुनक दूटा अभिलेख प्रकाशित भेल छैक संगै हुनका विषयमे विद्यापतिक पुस्तक पुरुषपरीक्षा कथा ३) सँ ज्ञात होयत छैक, (चौधरी, १९७०, पृ. २३६-२३७) हुनका अर्जुनदेव कहल गेल छैक । गोपाल राजवंशावली (पत्र ३४) अनुसार शायद रामसिंह के नेतृत्वमे नेपाल उपत्यकामे १२२३ ई. मे आक्रमण भेल छलैक (वडा रामसिंह राजाटों । ... संवत् ३४४ पौष्य ..) । फेर गो. वंशावली (पत्र-३६) मे रामसिंहक आक्रमण नेपाल उपत्यकामे होयबाक सूचना प्राप्त होयत अछि जाहि दलके नेतृत्व स्वयं रामसिंह केने छलखिन (सं ३६४ जेष्ठ कृष्ण प्रतिपदा खंडाधार गुंस डोय लासन वल्यम् धाङ्ग याङ तल म्वण्ड डयङा द्वंल आहु रामसिंह राजास कटकः चोछें जगतब्रम भाटो धाङ्गस हव। लिज जय जुव जात्रा याङ लास्यं वया राजा श्री अनर्धमलदेवस ।' सं. ३६४ जेष्ठ (१२४३ ई.) कृष्ण प्रतिपदाक दिन खण्डाधार जंगलमे कर्णाटकीसब लडाई करबाक हेतु आयल छलैक। ओकरासबके रोकिके राखल गेल। लडाइमे बहुत आदमीक मृत्यु भेलैक। दल मुखियाक रूपे राजा रामसिंह आयल छलाह। हुनका आनयबाल चोंघरक जगतब्रम्ह भारो (भारादार) छलखिन। पाछां (नेपालीपक्षके) विजय भेलैक आ राजा अनर्धमलदेव के नेतृत्वमे विजय यात्रा मनावल गेलैक) । रामसिंहक शासनावधि मे ई. १२४५ मे अंतिम बेर नेपाल उपत्यकाभीतर आक्रमण भेल छलैक (गो.रा.वंशा. पत्र ३८, 'सं ३६६ मार्ग शुक्ल सप्तमी, कंपाहाथार भोयोथलिटो वव डोव फुङा, तल म्वण्ड डयंङालिम जय जुवः । ई.सं. १२४५ मार्ग शुक्ल सप्तमीक दिन कपनसँ लडाई करैत भोयोस्थली तक आयल कर्णाटकी (सैनिक) सब घेरागेलाह, बहुत काटमारक बाद (नेपाली पक्षक विजय भेलैक) । राजा रामसिंहक शासन कालक बादो अनेक बेर (ने.सं. ४२०, गो.वं. पत्र-४०; ई.सं. १३१० तथा तथा १३११ मे) अहि उपत्यकामे कर्णाटकी आक्रमण आ करक वसूली होयत रहलैक। ई. संवत् १३११ कार्तिक सँ १३१२ फागुनतक नेपाल उपत्यका मे कर्णाटकी सेना निरंतर रहलैक। गोपाल वंशावली (पत्र सं. ४३) क अनुसार कर्णाटकी प्रशासक अहिठाम शासन करमे विफल भेलाक बाद फागुनमे लौट गेलैक (व्यनापे सन्थानं तरीटो म्वण्ड डयङा फाल्गुन शुक्ल ... कोहनु डोय भास्यं वङ्गव, लिंस राज याये भायो मफ्वास्यं ।)

राजारामसिंहक शासनकालमे लिखल दूटा हस्तलिखित ग्रन्थ भेटल छैक । तिब्बतके नोरविहार मे राखल 'काशिकाविवरणपंजिका' नामक ग्रन्थ अनुसार ओ पुस्तक तिरहुतके सिमरौनगढमे वीरसिंहदेवक आज्ञासँ ल. सेन संवत् ५६ मे लिखल गेल छलैक । लुशिआनो पेटेक वीरसिंहके गोरखपुर के राजा कहने छथिन, लेकिन हुनके विवरणसँ वीरसिंहक आज्ञासँ ई पुस्तक १८ नवम्बर १२५६ अथवा १२६० ई. संवत् मे तीरभूक्तिके सामलिपाटक (सिमरावनपट्टन) मे लिखल गेल छलैक। पेटेक, १९८४, पृ. २११ 'श्रीमद् वीरसिंहदेवस तनयमानायाम्तीरभक्तौ सामलीपाटके स्थित्वा लिखितम इदम्)। ऊपरकेविवरणसँ ई वीरसिंह देव सम्भवतः नान्यदेवक वंशज आ सिमरौनगढक निवासी तथा रामसिंहक समकालिक हुनक परिवारक सदस्य होयके सम्भावना छैक। दोसर पुस्तक १२६७ अथवा (ल. सेन संवत् ६७ मार्ग) १२७१ ई. मे लिखल अष्टसाहश्रिका प्रज्ञा पारमिता' थिकैह, ई पुस्तक सिमरौनगढमे राजा रामसिंहक शासनकालमे लिखल गेल छलैक (रामसिंहदेव-भुज्यमानेतिरभुक्तौ सामलिवन पाटके लिखिन्ता, 'पेटेक , नेपालक मध्यकालीन इतिहास, १९८४, २११। राजा रामसिंहक उल्लेख केशर वंशावली (पत्र. १५) 'नरसिंहदेवनृपतिः' श्रीरामसिंहस्ततः) मे; प्रतापमल्लके ने.सं. ७६९ (ई. १६४८) के

काठमाण्डू, हनुमानढोकाक कृष्णमंदिर शिलालेखमे, (रेग्मी, भाग-४, १९६६, पृ.. ८६, 'नृसिंहो नरपतिरतुस्तत्सुतो रामसिंह:') भक्तपुरक राजा जगज्योतिर्मल्लक समयमेवंशमणि झा द्वारा लिखल नरपतिजयचर्य्याटीका (शक सं. १६३६ आ ल. सेन सं. ४९४) मे नान्यदेव सहित रामसिंहक नामक उल्लेख भेटैत छैक। हालसाले भक्तपुरक प्राध्यापक पुरुषोत्तम लोचन श्रेष्ठके भक्तपुर राजप्रासादके जलद्रोणीचौक के खिडकीक निचला भागमे तुलजा भगवतीक दहिनातर्फ एक लाइनसँ कर्णाटकी नान्यदेव, गंगादेवी, नरसिंहेव, रामसिंहदेव तथा अन्य राजासबहक काठकमूर्ति आ तकर पाद्‌भागमे सबहक नामक उल्लेख सहित भेटल छैन।[१३]

रामसिंहक अंतिम समय (१२५३-१२८१ ई. संवत् आसपास) दिल्लीक सिंहासनपर बल्बन आसीन छलैक। लेकिन हुनक विरुद्ध अवध तथा बंगालक प्रसासक सव विद्रोह केने छलैन।राजा रामसिंह अहिसब झगडासँ अपनाके अलगक मध्यस्त भ रहलाह। शायद हुनक शासन कालमे मिथिलामे शान्ति रहबाक इहो एकटा कारण छलैक। हुनक शासनकाल लगभग अठावन वर्षतक कायम रहैत १२७६ अथवा १२८१ मे हुनक मृत्यु भेलैन्ह (ठाकुर, १९५६, २७५; चौधरी, तिरहुत मे मुश्लिम शासन, १९७०, ३९)। राजा रामसिंहक बेटा शक्तिसिंहके समयमे मिथिलाराज्य पर मुगलशासक सबहक बारम्बार आक्रमण भेल छलैक। शायद अहिक परिणामस्वरूप नेपाल उपत्यकामे शक्तिसिंहक आक्रमण आ कर असूल करैक संख्यामे अत्यधिक वृद्धि भेल छलैक (गो.रा.जंशा. पत्र-२६; पत्र-४०-४१)। राजपूत हम्बीर चौहानक पराजयमे दिल्लीक बादशाह अल्लाउद्दीन खल्जीके शक्तिसिंहदेव स्वयम् आ हुनक मंत्री देवादित्य सेनापतिकरूप मे भागल मदद केने छलखिन जाहिसँ मिथिलामे कर्णाटक वंशके शासन हरिसिंहदेवके राज्यकाल (१३३६ ई.) तक कायम रहमे सफल भेलैक।

पादटिप्पणी

१. Imperial Gazett of India, VIII, p. 187; Darbhanga District Gazetreer, p. 152; U. Thakur, History of Mithili, Darbhanga, 1956, p. 2; मिथिला महात्म्य मे ई विवरण निम्नानुसार छैक–

गंगाहिमवतोर्मध्यं नदी पंचदशान्तरे।
तैरभूक्तिरिति ख्यातो देश: परमपावन: ॥
कौशिकींतु समारम्य गण्डकीमधिगम्य वै।
योजनानि चतुर्विंशत् व्यायाम: परिकीर्तित: ॥
गंगाप्रवाहमारभ्य यावद्धैमवतं वनम्।
विस्तार: षेदश: प्रोक्तो देशस्य कुलनन्दन ॥
मिथिला नाम नगरी नामस्ते लोकविश्रुत।
पंचभि: कारणै: पुण्या विख्याता जगतीत्रये ॥'

शक्तिसंगमतंत्र मे लगभग अहि प्रकारक उल्लेख छैक–

'गण्डकीतीरमारभ्य चमपारण्यान्तकं शिवे।
विदेहभू: समाख्याता तैरभुक्त्यभिध: स तु ॥' शक्तिसंगमतंत्र, विनयतोष भट्टाचार्यद्वारा सम्पादित, सुन्दरीखण्ड, ३, पृ. ६९, श्लोक-४२।

महाराज दरभंगाके संबोधित सम्राट अकबर के पत्रमे निम्न सम्बोधन छैक– 'अज कोष ता गोस व अज गङ्गा सङ्ग' (कोशी-गंडक तथा गंगा आ पहाडक मांझ प्रदेश)।

२ मुश्लिम शासनक इतिहास, वाराणसी, १९७०, उपेन्द्र ठाकुर, १९५६, पृ. ३-२५; राधाकृष्ण चौधरी, तिरहुत मे मुश्लिम शासनक इतिहास, वाराणसी, १९७०, पृ. २४-२५।

३. लेभी, ले नेपाल– २, प. १९४; पंडित चंदाझाके विद्यापतिद्वारा रचनाकेल पुरुषपरीक्षाक टिप्पणी अंक, दरभंगा, पृ. १९, मे तथा नेपालक विभिन्न वंशावलीसब, १६२८ ई. मे लिखल मुदितकुवलयाश्व नाटक के अलावा मिथिलाक विभिन्न श्रोतक आधारमे नान्यदेवक मिथिलाक सिमरौनगढ पर १०९७ ई. मे आधिपत्यक प्रमाण भेटैत छैक। सिमरौनगढक लेखक अंश निम्नप्रकार छैक– 'नन्देन्दुबिन्दुविधुसम्मित शाक वर्षे सच्छ्रावणे सितदले मुनि सिद्धि तिथ्याम् स्वातौ शनैश्चरदिने करिवैरिलग्ने श्री नान्यदेव नृपतिर्व्यदधीत वास्तुम'। शायदओहि स्तंभ लेखके प्रतिध्वनि केशलवंशावलीक पृ. १५ सँ प्राप्त होयअछि– '१०१९ सम्मत शाक वर्षे तच्छ्रावनस्य ... स्वात्यां शनैश्चर दिने रिपुमर्दलग्ने श्री नान्यदेव नृपतिर्विद्धीत वास्तुं। स्रष्टा नान्य पतिर्व्वभूव ...।' धनवज्र वज्राचार्य तथा कमल-प्रकाश मल्लद्वारा सम्पादित– गोपाल राजवंशावली, विसवेडेन, १९८५, पृ. २२२। केशर वंशावली के 'धीत वास्तुं' के अर्थ नगर स्थापन केनहार होयत छैक, जकरा पुनः 'स्रष्टा नान्यपतिर्व्वभूव' (निर्माणकर्ता नान्यदेव भेलाह) शब्दद्वारा पुष्टि कयल गेल छैक। प्रफुल्लकुमार आचार्य (वास्तुशबदकोष, १९९५, पृ. ५४५) वास्तुशब्दके अर्थ ग्राम, नगर तथा किला लिखने छथिन। अग्निपुराणमें (अध्या. १०६, श्लोक-१)– 'नगरादिक-वास्तुम्च वक्ष्ये' के उल्लेख छैक।

४. सिमरौनगढ नगरके विभिन्न नाम भेटैत छैक जे निम्नप्रकार छैक–
गोपालराजवंशावली (पत्र सं. ४६) मे 'शिमरावनगढ़' कहल गेल छैक। १२३४-३६ ई. सम्वत् मे अहि नगरक भ्रमणकर्ता तिब्वती विद्वान् धर्मस्वामी अहि नगर के खालि 'पट-पट्टन' कहने छथिन (रोरिक, १९५९, ५८)। चतुर्भुजक लिखल पुसतक 'गीतगोपाल' (वेजलर, १९९८, पृ. ५१७-१८) मे 'सिमरामग्राम' उल्लेख भेल छैक। तिब्बतके नोरविहारमे सुरक्षित पुस्तक 'काशिका, विवरण पंजिका' (ल.सेन.सं. ५६; ११७६-१२५६ ई.) मे एकरा 'सालमलीपाटक' (तीरभुक्तौ सालमलीपाटके स्थित्वा लिखितम) कहल गेल छैक। नोर विहारके दोसर ग्रन्थ 'अष्टशाहश्रिका प्रज्ञा पारमिता' मे सेहो 'सामलिवनपाटके लिखिता' पायल गेल छैक (पेटेक, नेपालक मध्यकालीन इतिहास, १९८४, पृ. २११)। पाटक वास्तुशब्द थिकै जकर अर्थ नगर होयत छैक (पट्ट, पट्टिका, पट्टी– आचार्य, वास्तुशब्दकोष, १९९५-३३०)। संभवतः पाटक-पट्ट सँ पट्टन भेलैक, जकर अर्थ 'नगर' आ 'नयावस्ती' होयत छैक (आचार्य, १९९५, ३३३)। पाटकके गाम अथवा नगरक एकटा भाग सेहो कहल गेल छैक (Ind. Antiquity, XVIII, 135)। नेवारी लिपिमे लिखल एकटा 'वृहदितिहास संहितासार' पुस्तकमे उल्लेख छैक। राजा हरिसिंहदेवके सिमरौनगढसँ ने.सं. ४४४ (१३२३ ई.) मे भक्तपुर आबैक हुनक नगरके नाम ओ पुस्तक मे 'सिमांगंधन' कहल गेल छैक (संस्कृत-सन्देश, अंक १०-१२, २०११ साल, पृ. ८१)। एकटा मुश्लिम श्रोत मे अय नगरके 'हरसिंहपुर' कहल गेल छैक (रा.कृष्ण चौधरि,तिरहुत मे मुश्लिम शासनक इतिहास, १९७०, पृ. ५५)। मिथिलामोद मे अय शहरके नाम के उल्लेख विना एकरा 'सुपट्टनपुरी' कहलगेल छैक। (चौधरी, १९७०, ५४)।

५. Albrecht Wezler, Publications of the Nepal-German Mss. Preservation Project-1, Stuttgart, 1989, p. 141, अमरकोषटीका,पुस्तक सं. ८०२ ख, राष्ट्रिय अभिलेखालय काठमाण्डू, 'इति मिथिला महेन्द्र-महाराजाधिराज श्रीभद्रामसिंह देवानां सदस्य महामहोपाध्याय श्रीकर विरचिता याममरकोष विवरण टीकायां ...।' वेजलर, पृ. १४१, पुस्तकसंख्या ८०३ ख, अमरकोषटीका, 'श्रीकरेण रायमुकुटेन च रचिता।' U. Thakura, Hist. of Mithili, 1956, p. 376:

६. Riccardo Garbini, A fragmentary Inscription from Simraongarh, The Ancient Mithila Capital, Ancient Nepal No= 135, 1993, pp 6-9, अभिलेख निम्नानुसार छैक–
'प्रसन्न अनरतम अर्प्यति मयमिनिम ...।
नरपतिः ... लन मौक्तिक श्रेणी तरकित अनवरो ...।
रत्नछविचरित पद्सरोज लक्ष्मीः ...।
ग्राम भूमिर्धैरियो धार्मिकानाम अनवधि महीम राम ...।
... व रसगने सम्बन्धत करवटवल्ली विलसद्विद्युतद्युति द्योतिनिः ...।
यस्य कीर्ति परवरपरम हरहसित सितैर ... प्रकाशैरशः कसयति ...।
... म उपगतस् तस्य तनयः। अभूत कर्म्मादित्यः।'

७. नेपालक केशरवंशावली (पृ. १५) मे रामसिंहक उत्तराधिकारीतथा वेटा भवसिह तथा कर्मसिंह आ हुनक बालक हरिसिंहदेव कहल गेल छैक (श्रीरामसिंहस्ततः। तत्सूनुर्भवसिंहदेव उदितः श्रीकर्मसिंहस्तत, स्तत्सूनु(र्ह रसिंहदेव नृपतिः कर्ण्णाटचूडामणिः।)' लेकिन दरभंगाक पंजिप्रबन्ध अनुसार विसफीक वेदाभ्यासी ब्राह्मण कुलमे कर्मादित्य उत्पन्न भेल छलाह आ हुनकर दूटा बालक क्रमशः देवादित्य आ भवादित्य छलखिन। अही कर्मादित्य आ हुनक बेटा भवादित्यके रामसिंह आ राजा हरसिंहदेवक बिचक राजाक रूपमे नेपालक वंशावलिसबमे उल्लेख भेल छैक।

८. तारानन्द मिश्र, गणेश्वर तथा सिमरौनगढक मंत्री र पुरोहितहरू, प्राचीन नेपाल, भाग-२४, १९७३, पृ. ३५-४१; ओ सूर्यमूर्ति अभिलेख निम्नानुसार छैक–

१. 'श्री श्रीपतिना प्रतिमेयं महामंत्रि श्रीगणेश प्रसांदतः घटितम् ।
२. आग्नयानिक पदस्थ श्री हरीश्वर कारिता ॥'

महामंत्रि गणेश राजा शक्तिसिंह (शक्रसिंह) आ हरिसिंहदेव दुनु राजाक शासन कालमे महामंत्रि छलाह । गणेश्वरक पुत्र मंत्रि रामदत्तक लिखल पुस्तक 'विवाहादिपद्धति' सँ गणेश्वर महामंत्रि देवादित्यक पुत्र छलाह आ हुनक पुत्र रामदत्त छलखिन अहिवातक सूचना भेटैत छैक (मंत्रीन्द्र देवादित्य तनुदभवः ... गणेश्वरः । श्रीमता रामदत्तेन मंत्रिणा तस्य सूनुना,' वेजलर, सूचिपत्र, १९८९, पृ. १९८; संस्कृत-सन्देश, भाग-६, २०१० साल, पृ. ३०-३१) । अहि अभिलेखमे उल्लेखित हरीश्वरक लिखल 'नलचरितटीका' के उतारल प्रति राष्ट्रिय अभिलेखालय मे सुरक्षित छैक जतेहुनक परिचयमंत्रिकरूप मे भेटैत अछि (वेजलर,पृ. ९१, 'मन्त्रिहरीश्वरकृतौ नलचरित टिप्पन्यां, शक सं. ११८४' । अगर हरीश्वर ई. सं. १२६२ मे ई पुस्तक लिखने छलखिन छल ताहिसँ ई पुस्तकक लेखन राजा रामसिंह आश्रयमें भेल प्रमाणित होयत अछि ।

९ M. Vidale, C. Balista and V. Torrieri, A Test-Trench Through The fortifications of Simraongarh, Ancient Nepal No-135 1993, pp. 10-18, fig. 1; F. Lugli and Massimo Vidale, Excavations at Simraongarha, The karnata Phase, Nepalese and Italian Contributions to the History and Archaeology of Nepal, ISIAO, Roma, 1997, pp 98-100. अग्निपुराण अनुसार नगरके दिवारसँ चारुकात घेरवाक चाही (अभ्यर्चवास्तुनगरम् प्राकाराद्यम् तु कारयेत ।' दिवारक ऊँचाई गरुडपुराणक (अध्या. ४६, श्लोक-१९) अनुसार पाँच हात ऊँच होयबाक चाही (प्राकारम् तद-वहिर्दयात पञ्चहस्त प्रमाणतः) । कौटिल्य अर्थशास्त्रमे ईटकदिवारके बारह हात उँच बनवैक सिफारिस छैक ('ऐष्टकम द्वादस-हस्ताद उर्द्धम,' आचार्य, वास्तुशब्दकोष, १९९५, पृ. ३९१) ।

१०. Journal in the Biblioteca Communal, Macerata; A. Magnaghi, Unpublished Relation of a Trip to Tibet by P. Casino Beligatti of Macerata, 1902; L. Petech, Italian Missionaries in Tibet and Nepal, IL Nuovo Ramusio, Vol-4, Rome, 1952-53, II, pp. 3-142; Rosa Maria Cimino, The Labyrinth of Simaraongarh, South Asian Archaeology, Rome ISMEO, 1990, part- 2, pp. 1151-1163; Rosa Maria Cimino, Simraongarh, The forgotten city and Its Art, Contributions to Nepalese Studies, CNAS, T.U. vol. 13, No-13, No- 3, August, 1986, pp- 278-287; Massimo Vidale, Passage to Nepal, Archaeology of Sourth and West Asia in Memory of Geogrge F.Dales, Wisconsin Archaeological Reports, vol.-3, 1994.

११. B.H. Hodgson, Account of a Visit to the ruins of Simraongarh, once the capital of Mithila province, Essays on the language, Literature and Religion of Nepal and Tibet,, Reprint, Amsterdam (1835), 1972, 176-180; A. Cunningham, The Ancient Geography of India, Varanasi, 1963, pp. 375-378, Cunningham reports about the site Which had been deserted for about 550 years or more. He takes Simraun and Janakpur as the ancient cities which formed the capitals of two Vrijjimemers among the eight clans (p. 3788). The capucino father P.C. Beligatti also describes about the deserted city.

१२ G. Roerich, Biography of Dharmasvami, Patna, 1959, 58; 'town called Pa-ta which ... was surrounded by seven walls.' मुश्लिम ग्रन्थ फरिस्था सिमरौनगढक चारु दिशा मे एकटा ऊँच दिवार आ सातटा पानि भरल परिखाक उल्लेख करैत छैक जाहिके फोरय आ जंगल के साफ करमे घियासुद्दिन तुगलकके सेनाके तीन सप्ताह लागल छलैक । महमुद तुगलक संगे सिमरौनगढ आक्रमणक सिलसिलामे जेनहार इतिहासकार अहमद हसन दबीर अपन ग्रन्थ बसातिनुलउनस (पत्र १०-११) मे लिखने छथिन – 'The Rai had a very strong army and a very strong fortas well.. The fort of the King of Tirhut was surrounded on all sides by water and jungles '(R.K. Choudhary, His. of Muslim Rule in Tirhut, 1970, pp. 50-51)

१३. पुरुषोत्तमलोचन श्रेष्ठ, जन्हचोकका कलाकृतिहरू, मासिक भक्तिपुर, २०५५ माघ, पृं. २९-३०, ओ मूर्तिसमूह तथा अभिलेख केपुनः जाँच करबाक आवश्यकता छैक । यदि अभिलेख सही छैक त ई बहुत पैघ उपलब्धि सावित हेतैक । अहि नामावलिमे पाछ्राक वंशावलि जेका किछु राजाक काल्पनिक नाम छैक । अभिलेखके अन्तिम नाम राजा भूपतीन्द्रमल्ल के साहेबज्यू कहलाक कारण ई नामावलि राजा जितामित्रक शासन समयमे लिखल गेल छलैक ताहि बातक अनुमान होयत छैक ।

सहायक ग्रन्थ तथा लेख

Chaudhary, Radha Krishna.1954, The Karnats of Mithila, BORI, 36, pp. 91-125.

__________. 1976, Mithila in the Age of Vidyapati, Varanasi.

__________. 1970, History of Muslim Rule in Tirhut, Varanasi.

Cimino Rosa Maira, 1990, The Labyrinth of Simraongarh, South Asian Archaeology, 1987, ISMEO, Rome.

_______, 1986, The Gorgotten City and Its Art, Journal of CNAS, vol. 13, No - 3 pp. 277-288.

Cunningham Alexander, 1963, The Ancient Geography of India, Varanasi, pp. 375\378.

Garbini Riccardo, 1993, A fragmentary Inscription from Simraongarh, The Ancient Mithila Capital, Ancient Nepal No-135, pp. 1-9.

Publication of the Nepal-German manuscript preservation project 1, 1989, Edited by Wezler albrecht, Stuttgart.

Lugli, Francesca, massimo Vidale, 1997, Excavations at Simraongarh, The Karnat Phase, Nepalese and Italian Contributions to the History and Archaeology of Nepal, ISIAO, Roma, 97-118.

मिश्र, तारानन्द, वि.सं. २०२२, तेह्रौं शताब्दीको नेपालबारे भिक्षु धर्मस्वामीको बयान, नेपाल, त्रि.वि.वि. संस्कृति परिषद्, पृ. २३०-३३ ।

__________. १९७३ गणेश्वर तथा सिमरौनगढका मंत्री र पुरोहितहरू, प्राचीन नेपाल, सं. २४, पृ. ३६-४२ ।

Mishra, T.N., 1988. The Historical Dynasties and ancient Archaaeological sites in Nepal, Ancient Nepal no- 103, pp. 6-15.

Petech, Luciano, 1952-55, The Italian Missionaries in Tibet and Nepal, vol - 6

__________. 1984, Mediaeval History of Nepal, ISMEO, Roma, pp. 93-129

Roerich George, 1959, Biography of Dharmaswamin, Patna.

शर्मा जनकलाल, १९६८, चितवनदेखि जनकपुरसम्मका केही पुरातात्त्विक स्थल, प्राचीन नेपाल, संख्या-२, पृ. २-४ ।

Sharma, R.P., 1979. Mithilaka Itihas, Darbhanga.

Thakur, Upendra, 1956, History of Mithila, Darbhanga.

The Gopal Raj Vansavali, 1985, Edit by Vajracharya Dhanavajra, and

Malla K. P., Wisbaden.

उपाध्याय भरतसिंह, १९९१, बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, इलाहाबाद, पृ. २७६-२७९ ।

Vidale, M. and Lugli, F., 1991-1992, Archaeological Investigation at Simraongarh, Ancient Nepal no 126-27, pp. 1-35.

Vidale, Massimo, 1994, Passage to Nepal , Archaeology of the Early State of Simraongarh, from Sumer to Meluhha, Wisconsion, vol-3.

Vidale. M; C. Balista, V. Torrieri, 1993, A Test-trench through the fortifications of Simaraongarh, Ancient Nepal no \ 135, pp. 10-21.

४१०२०६

मिथिलाका कर्णाटवंशी राजा रामसिंहदेव

मिथिला देश र त्यसको राज्यसीमा शतपथ ब्राह्मण (१-४-१-१०, १७) का अनुसार आर्यजातिको पूर्वदेशतिर प्रसारका सिलसिलामा ई. पूर्व ८००-७०० तिर राजा विदेघमाथव आफ्ना ब्राह्मण पुरोहित गौतमराहुगण र अग्निवैश्वानरलाई साथ लिई अनार्यजातिका कठिन विरोधका बावजूद पनि गंडक पार गर्नमा र आर्यजातिलाई गंडक पारिका प्रदेशमा विजय गराउन सफल भए। शांखायन श्रौतसूत्रअनुसार अटणारका छोरा पर विदेह र कोशल राज्यका समेत राजा थिए। पाणिनिले विदेहलाई प्राच्यजनपद भनी सम्बोधन गरेका छन्। महाजनक जातकअनुसार मिथिलानगरका निर्माता राजा विदेह थिए।तर दीघनिकायको महागोविन्दसुत्त र महावस्तु अनुसार विदेहराज्यसँगै सातओटा देश र सबैका राजधानीका निर्माता राजारेणुका मन्त्री गोविन्द थिए। मध्यकालीन बौद्धग्रन्थ 'अभिधानप्पदीपिका' मा मिथिला समेत जम्बूद्वीपका बीसओटा ठूल-ठूला नगरहरूको उल्लेख पाइन्छ। जैनग्रन्थ उत्तराध्ययनसूत्र (अध्या. १८) र सूत्रकृतांगले मिथिलानगर बारे चर्चा गरेको पाइन्छ। महाभारत, रामायण र पुराणमा उल्लेख भएबमोजिम राजा मिथिका नाउँबाट यस प्रदेशको नाउँ मिथिला भएको थियो। मिथिलाका श्रष्टा भएकाले राजा मिथिलाई जनक (श्रष्टा) पनि भन्ने गरिएको थियो। पुराण र शब्दकल्पद्रुममा शत्रुलाई मथिने ठाउँ भएकोले (मथ्यन्ते तत्र रिपवो) मिथिला नाउँको अभ्युदय भएको थियो। मिथिला महात्म्यबमोजिम गौतम, याज्ञवल्क आदि ऋषिगणद्वारा यज्ञादि गरिएकाले राजा मिथिको जन्म भएको र उनकै नाउँबाट यस क्षेत्रको नाउँ मिथिलाका रूपमा प्रख्यात भएको थियो। यस भूभागका एउटा नाउँ तिरहुत पनि रहेको छ र यो नाउँ गुप्तशासनकालमा गङ्गा-गंडक-कोशीका तिर प्रदेशलाई भुक्ति (अनेक विषयमाथिका क्षेत्र) का रूपमा संङ्गठन गरिएको हुनाले रहेको हुनुपर्दछ।

विदेह-मिथिला देशको विस्तार सुरुचि जातकअनुसार ३०० योजन क्षेत्रमा थियो र मिथिला नगर सात योजन भूभागमा फैलिएको थियो। जातक (खण्ड-३) मा यस राज्यभित्र सोह्र हजार गाउँहरू थिए। बौद्धग्रन्थहरूमा मिथिलाको व्यापार चम्पा, कम्पिल्ल, इन्द्रप्रस्थ, श्रावस्ती आदि नगरहरूसँग हुन्थ्यो। कुम्भकारजातकमा विदेहराज निमिलाई गान्धार देशका राजा नग्नजित र पाञ्चालराज दुर्मुखका समकालीन भनिएको पाइन्छ। महानारद

कस्सप जातकमा विदेह राष्ट्रमा मनाइने कुमुदनी महोत्सवको चर्चा पाइन्छ। मिथिला महात्म्यबमोजिम तिरहुत देश गङ्गा तथा हिमालय पर्वतका माझमा र कोशी-गण्डकीका क्षेत्रभित्र विस्तृत थियो। महाजनक जातकमा मिथिलानगरलाई समृद्ध, विशाल र अत्यन्त उज्यालो, सबै बाँडिएका भागहरू शोभायमान, अनेक नगर पर्खाल र ढोका भएको, बलिया र अनेक तल्लाकार अग्ला घरहरूले भरिएको, गाई-गोरु, घोडा र रथले युक्त, बगैंचा र र सुरक्षित वनहरू रहेको शहर भनिएको छ। महाउमग्ग जातकमा मिथिला नगरका चारओटा मुख्य द्वारबाहिर यवमज्झक नाउँ भएका व्यापारिक हाट-बजार रहेको वर्णन पाइन्छ। रामायणमा पनि मिथिला नगरीमा खाद्यपदार्थहरू, धान्य, दही-दूध-मक्खन फलफूलहरू प्रशस्त मात्रामा पाइने सम्पन्न ठाउँ भनिएको छ।

बुद्धपूर्वकालमा मिथिला देशमाथि जनक उपनामधारी राजाहरूको शासन थियो, भने बुद्धकालमा यहाँ गणतन्त्र थियो र यो राज्य अष्टकुल संवृज्जिको एउटा सदस्य थियो। मध्यकालमा मिथिलामै एकपटक फेरि कर्णाटक राजाहरूको शासन व्यवस्था भएको धन, संस्कृति र धर्मबाट सम्पन्न प्रदेश बनेको पाउँछौं। यस कालमा यहाँ हिन्दूधर्म र संस्कृतिको पुन:स्थापना भएको साथै यहाँ अत्यधिक सङ्ख्यामा धर्मग्रन्थ, ज्योतिषशास्त्र, कला, राजनीतिशास्त्र आदिका ग्रन्थहरू लेखिएको र प्राचीन गन्थहरूका भाष्य तैयार गरिएको पाइन्छ।

मिथिलामा कर्णाटकीय राजवंशको स्थापना

गुप्त शासनकालमा मिथिला एउटा भुक्तिको रूपमा थियो र यस अन्तर्गत अनेक विषयहरू थिए। यसका मुख्य प्रशासनिक नगर वैशाली थियो। गुप्तशासनपछि मिथिलामा क्रमश: हर्षवर्धन, शशाङ्क, चीन-तिब्बत, र पालावंशको शासन स्थापना भयो। यसपछि चालुक्यराज सोमेश्वर प्रथम (राज्यकाल १०४६-१०६८ ई.) र विक्रमादित्य छैठौं (१०७६-११२६ ई.) का आक्रमण मिथिला र बङ्गालमाथि भएको पाइन्छ। यसै कालमा मिथिलामाथि कलचुरी राजाहरूको पनि आक्रमण भएको सूचना कल्हनदेवीका भेरिघाट अभिलेखले दिन्छ। कलचुरी चन्द्रवंशी राजा गांगेयदेव, कर्णदेव र उनका छोराका साथै पछिका कतिपह्रि वंशज गणपतिको (गो.राज.वंशा. पत्र २७, आगतम कपह्रिया गणपतिकेन) पनि आक्रमण मिथिला नेपाल र चम्पारण क्षेत्रमाथि भएको प्रमाणहरू पाइन्छन्। यसैताका नान्यदेव नामक एउटा कर्णाटकी सामन्त १०९७ ई. मा पालशासनलाई मिथिलाक्षेत्रबाट परास्त गरी कोशी-गण्डकी र गङ्गा-हिमालयका पाद्भागमा आफ्नो राज्यसङ्गठन गर्न सफल भए। प्रथमचरणमा नान्यदेवलाई 'कर्णाटकीकुलभूषण' र सामंताधिपति (अन्धराठाढी, अभिलेख, नेपालको मुदितकुवलाश्व नाटक, नान्यदेवले लेखेका भारतवार्त्तिका, भरतनाट्यमको टीकाग्रन्थमा र विद्यापतिको पुरुषपरीक्षामा पनि भनिएको छ। पहिले नान्यदेवले आफ्नो राजधानी मोतिहानी शहर नजिक नान्यपुरी नाउँको ठाउँमा स्थापना गरेका थिए तर केहीपछि त्यो राजधानी उनले सिमरौनगढ क्षेत्रमा (नेपालको बारा जिल्लाअन्तर्गतको ठाउँमा) सारे। नान्यदेव र उनका उत्तराधिकारीहरूले यसै ठाउँबाट मिथिलादेशमाथि १०९७ देखि १३२६ ई. सम्म शासन गरेका थिए। नान्यदेवले सिमरौनगढ नगरको स्थापना शक् संवत् १०१९ (ई. सं. १०९७) श्रावण महीनाको स्वाती नक्षत्रमा शनिश्चरवारका दिन गरेका थिए जसको पुष्टि मिथिलाको श्रोतहरू र केशर वंशावली (पृ. १५, १०१९ सम्मंतशाकवर्षे ... श्री नान्यदेवनृपतिर्विदधीत वास्तुं) बाट हुन्छ। नान्यदेवका

उत्तराधिकारी थिए मल्लदेव गङ्गादेव, नरसिंहदेव, रामसिंहदेव, शक्तिसिंहदेव (उपनाम-शक्रसिंहदेव) र हरिसिंहदेव । कर्णाटकवंशज सिपमरौनगढका राजाहरूमा संस्थापक राजा नान्यदेवपछि रामसिंह र अन्तिम राजा हरिसिंहदेव श्रेष्ठ, चतुर, सांस्कृतिक दृष्टिले जागृत तथा राज्यरक्षामा समर्थ कूटनीतिज्ञ र बहादुर राजा थिए ।

राजा रामसिंहदेव

नान्यदेवका चौथो उत्तराधिकारी रामसिंहको जन्म गोपालराज वंशावली (पत्र. ३५ क्र. सं. ३०३ चैत्र शुक्ल त्रयोदशी श्री नरसिंहदेवस्य पुत्र श्री रामसिंहदेव जात:) अनुसार ई. संवत् ११८२ मा भएको थियो । गोपाल वंशावलीमा कर्णाटकीहरूलाई डों (पत्र-३५, 'श्री रामसिंह जात: डों ठाकुर; डों शब्दको उल्लेख १३२४ ई. तिर लेखिएको वर्णन रत्नाकरमा पनि पाइन्छ, ठाकुर, १९५६, डोंव नागरप्रभृति मन्दजातीय', पृ. ३६८), तिरहुतिया (पत्र. ४६, तिरहुति हरिसिंह राजासन; केशर वंशा. पत्र. १०, तिरहुतिया भगतग्रामे प्रविष्ट) र कर्णाटकी (गो. वंशा. पत्र. २८, 'कर्ण्णाटवंसज श्रीजगतसिंहदेव,' केशर वंशा. पत्र. १४, जय राजा देवस्य पत्नी कर्ण्णाटवंशज श्री रुद्र मल्ल देवनाम:, केशर वंशापत्र १५. 'हरिसिंहदेवनृपत्कि कार्ण्णाटचूडामणि:') भनी सम्बोधन गरिएको पाइन्छ । माथि उल्लेख गरिएको गोपाल वंशावलीमा लेखिएको रामसिंहको जन्मतिथिलाई मिथिला र मुगल श्रोतहरूले उल्लेख गरेका छैनन् । यसको संशोधन हुन पर्ने देखिन्छ । लुशियानो पेटेकले अरू कुरा विचार नगरी यसै जन्ममितिलाई समर्थन गरेका छन् (नेपालको मध्यकालीन इतिहास, १९८४, २०९) । उपेन्द्र ठाकुरका मतअनुसार आफ्ना पिताको मृत्युपश्चात् रामसिंह १२२५ ई. अथवा १२२७ ई. मा राजगद्दीमा बसेका थिए (ठाकुर, १९५६, २६८-२६९) राधाकृष्ण चौधरी (तिरहुतमा मुस्लिम शासन, १९७०, ३९) ले उनको शासनकाल १२२७ देखि १२८५ ई. सम्म निर्धारित गरेका छन्, जसको समर्थन अल्टेकरले गरेको पाइन्छ । (रोरिक, धर्मस्वामी, १९५९, भूमिका पृ. १३) । सकरी शहर र रेलस्टेशनबाट दक्षिणतिर हावीपत्तन (वर्तमानको हावीडीह गाउँ) मा पार्वतीको मूर्तिको पाद्पीठ लेख अनुसार ल. सेन संवत् २१२ मा मन्त्री कर्मादित्यले रानी सौभाग्यदेवीका आदेशानुसार त्यस ठाउँमा त्यस मूर्तिको स्थापना गरेका थिए (ठाकुर, १९५६, २७०, पादलेख-४, 'हावी पट्टनसंज्ञके सुविदिते हैहट्टदेवी शिवा कर्मादित्य-सुमन्त्रिणेह विहिता सौभाग्यदेव्याज्ञया') । शायद रानी सौभाग्यदेवी रामसिंहकै पत्नी थिइन् । दरभङ्गाराज पुस्तकालयमा रहेको पंजि अनुसार कर्मादित्य मन्त्री देवादित्य र भवादित्यका बुवा थिए । दरभङ्गानजिक तिलकेश्वर मन्दिर अभिलेखमा पनि कर्मादित्यको नाउँ लेखिएको छ । राजा रामसिंहका दरबारमा रहेका श्रीकरणले लेखेका 'अमरकोषटीका'मा – 'महाराजाधिराज श्रीमद्रामसिंहदेवानां'- सदस्य महामहोपाध्याय श्री श्रीकर विरचिताया अमरकोषटीकायां' र अर्को प्रतिमा – 'श्रीकरेणा राममुकुटेन रचिता' लेखिएको पाइएका छन् (वेजलर, स्टुट्टगार्ट, १९८९, पृ. १४१, ठाकुर, १९५६, पृ. ३७६, पृ. २८८) । श्रीकरका यी पदवीहरूले उनी रामसिंहका कुनै उच्च पदासीन अधिकारी पनि भएको भान हुन्छ । उपेन्द्र ठाकुरले रामसिंहका आश्रममा पृथ्वीधर आचार्यले लेखेको मृच्छकटिका नाटकको भाष्य पनि भेटिएको उल्लेख गरेका छन् (ठाकुर, १९५६, ३७६) । केहीवर्ष अगाडि सिमरौनगढबाट एउटा फुटेको कालो ढुङ्गामा अभिलेख पाइएको छ । यस अभिलेखको सम्पादन र प्रकाशन इटलीका अभिलेखविद् रिकार्डो गार्बिनीले (प्राचीन नेपाल सङ्ख्या १३५, १९९३, पृ. १-९मा) गर्नु भएको छ । केही

अंश फुटे पनि यस अभिलेखले राजा रामसिंह मन्त्री रामादित्य र कर्मादित्यबारे केही सूचना दिन्छ। सो अभिलेख निम्न प्रकार छ– 'नरपतिः ... धार्मिका नाम अनवधिमहिम राम (सिंहदेव)। उपगतस्य तनयः। (अभूत कर्म्मा(दिव्यः)। काशीप्रसाद जायसवालले सिमरौनगढका कर्णाटकी वंशको ऐतिहासिक लेखमा राजा नरसिंहदेवका दुईओटा मन्त्रीहरू क्रमशः रामादित्य र कर्मादित्यबारे उल्लेख गरेका छन्। सिमरौनगढको यस अभिलेखले रामादित्यका छोरा कर्मादित्य थिए भन्ने प्रमाणित हुन्छ र कर्म्मादित्यले राजा रामसिंह अन्तर्गत सेवा गरेका थिए भन्ने प्रमाण पनि प्रस्तुत गर्दछ। दरभङ्गा राजको पंजिप्रवन्धबाट कर्म्मादित्यका दुईओटा छोराहरू-देवादित्यय र भवादित्य थिए भन्ने थाहा पाइन्छ ('गढ बिसपी संबीजी त्रिपाठी कर्मादित्यः ऐ सुतौ सन्धिविग्रहिक देवादित्य– राजवल्लभ भवादित्य–' ठाकुर, १९५६, २७०)। त्यसै सिलसिलामा चण्डेश्वरको कृत्यचिंतामणीबाट देवादित्यका छोरा वीरेश्वर र तिनका छोरा चण्डेश्वर थिए भन्ने सूचना पाइन्छ। राजा रामसिंहका शासनकालमा शाके संवत् ११८४ तद्नुसार ई.सं. १२६२ मा मन्त्री हरीश्वरद्वारा लेखिएको (इति मन्त्रिहरीश्वरकृतौ, वेजलर, १९८९, ५४२)। मन्त्री हरीश्वरको उल्लेख नेपाल राष्ट्रिय सङ्ग्रहालय छाउनीमा सिमरौनगढबाट ल्याई राखिएको सूर्यमूर्ति पाठपीठ अभिलेखमा पनि छ। ('श्री श्रीपतिना प्रतिमेयं महामन्त्री गणेश प्रसादतः घटितम्। आग्नयानिक पदस्थ श्री हरीश्वरकारिता॥)। राजा रामसिंहको शासन कालमा दिल्लीका बादशाह क्रमशः इल्लतुतमिश (१२२५-१२३६ ई.) सुल्ताना रजिया (१२३६ ई.), सुल्तान अल्लाउद्दिन मसुद, बल्बन (१२५३-१२५६ ई.) आदि थिए। सुल्तान अल्लाउद्दिन मसुद र सुल्ताना रजियाका समयमा सिमरौनगढमाथि १२३६ ई. अगाडि तुर्कहरूको आक्रमण भएको थियो। यो आक्रमण विहारका प्रशासक तुघ्रिल तुघाखान र अवधका नवाब तमरखानले गरेको हुनु पर्दछ। यस आक्रमणको सिलसिलामा तिनीहरूले खूब लूटपाट गरेका थिए। राजा रामसिंहले दिल्लीका बादशाह सुल्तान अल्लाउद्दित मसुससित आफ्नो सम्बन्ध राम्रो पारी सोझै दिल्लीलाई कर बुझाउन थाले। यसरी मिथिलाराज्यलाई स्वतन्त्र राख्न सफल भए।

राजा रामसिंहको शासनकालमा मिथिलाको मुख्य राजधानी सिमरौनगढ र दोस्रो राजधानी दरभङ्गा थियो (चौधरी, १९७०, १९)। रामसिंहको शासनकालको अलि अगाडि नै दक्षिण विहार, उत्तर विहारको दक्षिणी भाग, अवध र लखनौतीमा दिल्लीको शासन स्थापित भैसकेको थियो। एउटा मिथिला राज्यबाहेक सबै हिन्दूशक्ति र राजाहरूको पतन भैसकेको थियो। त्यसबखत तिरहुतखण्ड, अवध र लखनौतीका प्रशासकहरूको अत्यधिक दवाबमा थियो तथा उसले यी दुवै शक्तिसँग आफ्नो समन्वय बनाउन पर्दथ्यो। मिथिलाका कर्णाटकीराजाहरू यी दुवै शक्तिलाई आर्थिक र सैनिक मद्दत गरी आफ्नो स्वतन्त्रता कायम राख्दथे। यस कालमा मिथिलाको शासनक्षेत्र क्रमशः मुजफ्फरपुर, सिमरौनगढ, भीठभगवानपुर (कोशी र हिमालय पर्वतमालासम्म), अन्हराठाढी, दरभङ्गा, सकरी, बहेरा, वनगाउँ (धेमुरा) तथा सिंहेश्वरस्थानसम्म कायम थियो। सिमरौनगढ क्षेत्रको १२३४-३६ ई. मा भ्रमण गर्ने तथा त्यस नगर हुँदै वैशाली र बोधगयाका भ्रमणमा आएका तिब्बती यात्रीले लेखेका भ्रमणवृत्तान्तबाट त्यस ठाउँबारे अनेक जानकारी प्राप्त भएको छ। धर्मस्वामीका वर्णनअनुसार सिमरौनगढ नगरभित्र ६ लाख घरहरू थिए, र त्यस नगरको वरिपरि सातओटा अग्ला नगर पर्खाल थिए। राजाको दरबार नगर बाहिर थियो जसको बाहिर एघारओटा विशाल तोरणद्वारहरू थिए। यसका चारैतिर एक्काइसओटा पानी

भरिएका खावा थिए, जसका किनारमा पंक्तिबद्ध बोटहरू थिए। पूर्व, पश्चिम र दक्षिण दिशामा तीन-तीनओटा तथा उत्तरतिर दुइओटा मात्र द्वार थिए। सबै नगरद्वार बाहिर पुलहरू थिए जसका किनारमा दस-दस धनुर्धारी र तीन-तीनओटा खड्गधारी सैनिक पहरा दिइरहेका थिए। धर्मस्वामीसँगै सिमरौनगढ हुँदै एक जना नेपाली आफ्ना पिताको अस्थि गङ्गामा प्रवाह गर्नलग्दै थिए। सिमरौनगढ वरिपर धान र बाँसका झाडीहरू थिए र त्यहाँ जडीबूटी पनि पाइन्थे।

राजा रामसिंहका समयमा नगरको पर्खाललाई पुन: बलियो पारिएको र नयाँ नगर पर्खाल निर्माण गरिएको सम्भांवना केही वर्ष त्यहाँ उत्खनन् गर्ने फ्रांचेस्का लुगली र मास्सिमो विडालीको प्रतिवेदनमा उल्लेख भएको छ। सो प्रतिवेदनको संक्षेप निम्न प्रकारको छ– त्यहाँका पर्खालको निर्माण दुई चरणमा भएको प्रमाण पाइएको छ। सिमरौनगढ क्षेत्रको दुर्ग मुख्य रूपमा लम्बाकार (rectangular) छ, जसको उत्तर-दक्षिण भाग ७.५ किलोमिटर लामो र पूर्व-पश्चिममा यो ४.५ किलोमिटर चाक्लो छ। भित्र पर्खालमा माटोको प्रयोग गरिएको छ र बाहिरपट्टि पाको ईंटको प्रयोग भएको पाइएको छ। यो पाकेको ईंट ५.१ देखि ४.२ से.मी. बाक्लो र १६.५ देखि २०.५ से.मी. लामो छ। पुरातत्व विभागका जनकलाल शर्माको प्रतिवेदनमा त्यस नगरका चारै दिशाका पर्खाल अठाइ किलोमिटर लामो (छ कोश) भएको उल्लेख छ। प्राचीन नेपाल, सङ्ख्या-२, १९६८, पृ. ३)। सिमरौनगढको पूर्वमा कचोरवा गाउँ छ, पश्चिममा बैरिया, उत्तरमा कोतवाली टेंटा र दक्षिणमा नेपाल-भारत सिमाना र दशगजा छ। अलेक्जेंडर कनिंघमका अनुसार सिमरौनगढ नगर ५५० वर्षसम्म मानिसविहीन र बिरान भई बसेको थियो। उनले सिमरौनगढलाई अष्टवृज्जिकुलमध्ये एउटाको राजधानी हुन पर्ने अनुमान गरेका छन्। (प्राचीन भारतीय भूगोल, वाराणसी, १९६३, पृ. ३७८)। उनले यस नगरबारे हुडशनको टिपोटवारे पनि उल्लेख गरेका छन् र यस प्राचीन भग्नावशेषको गहन अध्ययन गर्नपर्ने पनि सुझाव दिएका छन्। २०२६ साल आश्विन महीनामा यस लेखका लेखकले गरेको सिमरौनगढको सर्वेक्षणको सिलसिलामा यस प्राचीन नगरभित्र सोह्रओटा गाउँहरू पाइएको थियो। तिनको नाउँ क्रमश: निम्नप्रकारका छन्– गोलागञ्ज, परसाटोला, सतुअहिया, कवलपुर, झवानी, अमृतगन्ज, जानकीनगर, खजहनी, नयकाटोला, महुआही, ननसगरा, गङ्गानगर, हरिहरपुर, सलेमपुर, कनकपुर र ईंटवाल। यसका पूर्वोत्तर भागमा टेंटा नजिक चिउटाहा गाउँमा अनेक मूर्तिहरू र द्वार-तोरणका टुक्राहरू छन्। यहाँ अन्दाजी बयालीसओटा, गणेश, शिवपार्वती, विष्णु, लक्ष्मीनारायण, संकर्षन,गरुडोपरिविष्णु, सूर्य, ब्रह्मा,हरिहर, दुर्गा र वराह मूर्तिहरू पाइएका थिए। यी मूर्तिहरू प्राय: कालो ढुङ्गा (Blackschist stone) मा कुँदिएका छन् तर केही मूर्ति बालुवा ढुङ्गामाथि पनि कुँदिएका छन्। एउटा गरुडोपरिविष्णुको पादपीठमा दुई पंक्तिमा सम्भवत: मिथिलाक्षरमा कुँदिएको अभिलेख पनि जानकीनगर ब्रह्मस्थानवाट पाइएको थियो।

उत्खनन प्रतिवेदन बमोजिम सिमरौनगढको पर्खाल दोस्रो चरणमा निर्माण गर्दा एक मिटर चाक्लो र खावा (परिखा) ५ मिटर चाक्लो र दुई मिटर गहिरो बनाइएको भेटिएको छ। त्यहाँको पर्खालको बाँकी रहेको भाग अहिले पनि ६-७ मिटर (२२-२३ फीट) अग्लो छ। मुख्य पर्खालका भित्र र बाहिर दुवैतिर खावा छन्। यी खावाहरूलाई जमुनी नदी र अरवा नदीसँग जोडिएको छ। यी दुवै नदीहरू सिकर्नी नदीबाटै निस्केका हुन्। यसै नदीको पानीलाई एउटा ठाउँमा ताल बनाई आवश्यकता अनुसार परिपूर्ति गरिन्थ्यो।

पर्खालका चारै कोणमा चारओटा कोट (Bastion)चतुष्कोणात्मक आकारका छन्। यसका दक्षिण-पूर्व कोणमा चक्राकार पर्खालका समूह छन् जसले त्यहाँ द्वारको भ्रम हुन्छ। श्री लुगली र विडालीका अनुसार यसै चक्राकार पर्खालका समूहबाट शत्रुमाथि आक्रमण गरिने व्यवस्था थियो। उत्खननकर्ताअनुसार अहिले पनि मुख्य पर्खालका वाहिर अनेक मृणमय पर्खाल र परिखाका अवशेषहरू विद्यमान छन् जसले गर्दा सिमरौनगढ नगरका चारैतिर चक्राकार (चक्रव्यूहाकार (Labyrinth) पर्खाल थियो भन्ने विवरणहरू पाइन्छन्। सिमरौनगढका चारै दिशामा रहेको चक्रव्यूहाकार पर्खालबारे बृहत् विवरण १७३९-१७५४ ई. भित्र अनेक पटक त्यस नगरको भ्रमण गर्दै काठमाडौं आउने इटलीका कापुचिन पादरी कास्सिआनोका रिपोर्टमा पाइन्छन्। कापुचिन पादरीका अनुसार चिमनगढ (सिमरौनगढ) का चक्रव्यूहाकार चित्र भक्तपुर दरबार क्षेत्रमा थियो, जसको प्रकाशन उनले इटलीका पत्रिकामा गरेका थिए। उनको विवरणअनुसार गोलो अथवा अण्डाकार एक-एक कोशको अन्तरमा रहेका सातओटा पर्खाल सिमरौनगढका चारैतिर थियो। माथिको यो विवरण गलत होइन किनभने रामायणमा लङ्का नगरका चारैतिर सातओटा अग्ला-अग्ला पर्खाल थिए ('सत-कुंभेन महता प्राकारेनाभिषम् वृताम– अध्या. ५,३,६ आचार्य, वास्तुशब्दकोश, १९९५, ३९२)। यस्तै वैशालीनगरका चारैतिर पनि एक-एक कोशका अन्तरमा तीनओटा पर्खाल, कोट र नगरद्वारहरू भएको व्यहोरा जातकमा र रामायाणमा पनि लेखिएको छ (जातक, फउसवोल, I, पृ. ५०४)। सिमरौनगढका चारैतिर सातओटा पर्खाल रहेको कुरा धर्मस्वामीले पनि बताएको माथि उल्लेख गरिसकिएको छ (a town called pa-ta-was surrounded by Seven Walls' Roerich, 1959, 58)। तर मुस्लिम ग्रन्थ फेरिस्थाले सुल्तान घियासुद्दिन तुगलक १३२३ ई. मा लखनौतीबाट फर्किंदाखेरि त्यहाँका राजा हरिसिंहदेव आफ्ना सैनिकहरूका साथ बाटो छेक्न आए तर उनलाई लखेटी त्यस नगरका वरिपरिका जङ्गल काटी सातओटा पानीले भरिएका परिखाहरू र एउटा अग्लो पर्खालले घेरिएको किल्लानजिक पुग्न सफल भए भन्ने वर्णन गरेको छ। राजप्रासादलाई र पर्खाललाई भत्काइयो तथा परिखाहरूलाई पुरियो। यो सबै काम गर्न तीन सप्ताह लाग्यो भनिन्छ (चौधरी, तिरहुतमा मुस्लिम शासन, १९७०, ५१)। यस्तै अर्को मुस्लिम इतिहास बसतिनुल-उन्सले भन्दछ– 'रायको किल्ला धेरै बलियो थियो र त्यत्तिकै बलियो उनका सैनिकशक्ति थियो। राजाका किला चारैतिरबाट पानी र जङ्गलले घेरिएको थियो' (चौधरी, १९७०, ५०)।

इटालीका पादरी कास्सिआनोले चक्राकार अग्लो-अग्लो र चाक्लो पर्खालभित्र रहेको चक्रव्युहाकार पर्खालका नगरभित्र एउटै ढोकाबाट पस्न सकिन्थ्यो भनेका छन्। प्रत्येक दुईओटा पर्खालका माझ-माझमा कृषियोग्य खेतहरू पानीका सोताहरू थिए पनि भनिन्छ। (पेटेक, तिब्बत र नेपालमा इटालियन मिशनरीहरू, १९५२-५३, भाग-४, पृ. १२-१३)। सिमरौनगढका यी नगर पर्खाललाई अण्डाकार अथवा वृत्तायत (Rhomboidal) आकारका भनिएको छ (रोसा मारिया चिमिनो,सेनास, १९८६, भाग-१३, पृ. २७८-२८०, चित्र-१)। पादरी कास्सिआनोले सिमरौनगढका चक्रव्यूहाकार पुरीको दृश्यलाई भक्तपुरका एउटा राजाले आफ्ना चाँदीका मुद्रामा पनि छापेका थिए, जुन बजारमा धेरै कम र अत्यधिक बढी मोलमा उपलब्ध थिए भनेका छन्। (पेटेक, १९५२, ५३, १३, ११)। इटालीका पादरीले पनि सिमरौनगढका भग्नावशेषमाथि ठूल-ठूला रुखहरू उम्रिएका र धेरै

वर्षदेखि मानिसको बसोवास न रहेको भनी जनाएका छन् ('I could not understand, how in a wood so vast, whose age-old trees showed its ancient origins, there could have existed constructions of a certain consideration, I was assured by many Nepalese from Batgao that said ruins were small vestiges of the famous and very, ancient city of Scimangada, from whence came their Kings(petech, 1952-53, IV, 12-13; Cimino, 1986, vol-13, No-3, p. 278)। धेरै पछि १८३५ ई. मा बी.एच. हुडशनले सिमरौनगढको भ्रमण गरेका थिए। उनले पनि प्राचीन नगरको मुख्य पर्खालबाहिर छ अथवा सातओटा माटोको पर्खाल र त्यतिकै सङ्ख्यामा परिखाहरू रहेको कुरा लेखेका छन्। (Lugli & Vidale, ISIAO, 1997, p. 98, 'Six or seven concentric ditches were visible around the main defence wall... The ditches were separated by as many secondary earthen ramparts')।

धर्मस्वामीको विवरणमा उनको भ्रमण वर्ष (१२३४ ई.) अगावै सिमरौनगढमाथि, जब राजा रामसिंह शासन गरिरहेका थिए, तुर्कसेनाको आक्रमण भएको थियो ('The Turushkas, who during the year, had led an army [against the town], but failed to reach it, 'Roerich, 1959, 58)। तिब्बती विद्वान्ले राजा रामसिंह वर्षमा एकपटक आफ्ना राजदरबारबाट सिमरौनगढ नगर भ्रमणमा आउने गरेको कुराको वृहत् वर्णन गरेका छन्। राजाको नगरभ्रमणको सिलसिलामा त्यहाँका प्रत्येक घरका छाना र बाटोका कुनाका घरहरू रेशमका झण्डा-पताकाले सिँगारिएका हुन्थे । राजा एउटा हथिनीमाथि सवार भई सिंहासनमा बसेका हुन्थे, जुन कीमती प्रस्तर र रङ्गीचङ्गी पर्दाले घेरिएको हुन्थ्यो । उनका अगाडि नर्तक, ढोल बजाउने र शङ्खवादकहरू झण्डा र पङ्खा बोकेका हुन्थे । यी सबै दृश्य नगरका सडककिनारबाट हेरिरहेका धर्मस्वामीलाई राजाका मन्त्रीले राजासँग भेट्न आउने निमन्त्रण गरे। मन्त्रीले उनका लागि पालकी (डोली) पठाएका थिए जसमा बसी धर्मस्वामी राजदरबारमा राजा रामसिंह समक्ष गई स्वस्ति-वचन पढे। राजाले तिब्बती भिक्षुका विद्वताबाट प्रभावित भई उनलाई आफ्ना धर्मगुरु नियुक्त गर्ने प्रस्ताव राखे । धर्मस्वामीले आफ्नो धर्मभिन्नता भएको र आफू तिब्बतका आफ्ना बौद्धविहारमा सेवा गर्ने इच्छा जाहेर गर्दै सो प्रस्तावलाई अस्वीकार गरे। राजाले उनलाई केही दिनको आतिथ्य स्वीकार गरी बस्न र सुन, कपडाका थान, औषधि, चामल तथा अनेकौं अन्य राम्रा सामग्रीहरू भेट गरे। सिमरौनगढको बसाइबाट नेपालतिर लाग्दा भिक्षुले अनेक धनी पूर्वपरिचित नेपाली भारादारहरू (ba-ros) सँग भेटे र वहाँहरूले उनको रुग्ण जिउका लागि दुःख प्रकट गर्दै उनका लागि नेपालसम्म पुग्न डोलीको व्यवस्था गरिदिएका थिए।

राजा रामसिंहका दरबार र आश्रयमा अनेक देश र स्वदेशका समेत अनेक विद्वान्हरू बस्दथे र त्यसैको परिणामस्वरूप उनको शासनकालमा अत्यधिक हिन्दू ग्रन्थहरूको रचना भयो। उनकै शासनकालमा मिथिलाका अनेक ठाउँहरूमा हिन्दू-देवी-देउताका मन्दिरहरू पनि निर्माण गरिएकोले उनले हिन्दूधर्म र संस्कृतिको उत्थान र पुनर्जागरणका निमित्त महत्त्वपूर्ण योग गरेका थिए भन्ने थाहा पाइन्छ। (रोरिक, १९५९, पृ. १००-१०१; ठाकुर, १९५६, ३७९; राम प्र. शर्मा, १९७९, २२६)।

रामसिंहको नेपाल उपत्यकाभित्र आक्रमण

लिच्छवीराजा जयदेव द्वितीय (ई.सं. ७१५-७३५) पछि पनि लक्ष्मीदेव र विजयकामदेवसम्म लिच्छवीराजाको शासन (११९७-१२०० ई. संवत्)सम्म नेपालमा कायम रहेको पाइन्छ। तर जयदेवपछि नेपाल उपत्यकाको शासन यति कमज़ोर भयो कि अनेक विदेशी शक्तिहरूले यस उपत्यकाभित्र आक्रमण र लुटपाट गर्न थाले। यस उपत्यकाभित्र आक्रमण गर्ने मुख्य शक्तिहरूमध्ये पूर्वक्षेत्रका सिमरौनगढका कर्णाटकी-मिथिला राजाहरू थिए भने पश्चिमका खसमल्ल राजाहरू थिए। यी दुई मुख्य शक्तिका शासकहरूको आक्रमण एउटा पछि अर्को गरी बराबर भई नै रह्यो। यी शक्तिबाहेक यस उपत्यकामा दक्षिण भारतका चालुक्य राजाहरू, बङ्गालका पाल राजाहरू (महीपाल) काकतिया वंशज राजा गणपति, मुकुन्दसेन आदि विभिन्न वंशका राजाहरूले पनि उपत्यकाभित्र आक्रमण गर्ने प्रयास गरेको विवरणहरू पाइन्छन्। तर काठमाण्डु उपत्यकाभित्र सिमरौनगढको कर्णाटकीय राजाहरूको आक्रमण र पछि तिनीहरूसँग यहाँका क्षत्रीयहरूसँग भएको द्विपक्षीय वैवाहिक र सांस्कृतिक सम्बन्धको विशेष महत्त्व छ। गोपालराजवंशावलीले कहीं पनि पश्चिममा खसमल्लहरूलाई काठमाडौंका कुनै शक्तिले बोलाएको अथवा यहाँ रहेका विभिन्न महत्त्वाकांक्षी राजशक्तिहरूसँग वैवाहिक सम्बन्ध भएको प्रमाण उपलब्ध भएको छैन। तर ई. संवत् १११०-११११ देखि नै राजा नान्यदेवको शासनकालमा कर्णाटकीहरूको आक्रमण शुरु भएको प्रमाण गोपाल राजवंशावलीले प्रस्तुत गरिरहेको छ। (पत्र. ३२-३३, संवत् २३१ भाद्र ... श्री नरमलदेव पोहस खण्ड लाक्व डोययछि म्वण्ड डयङा)। यो सिलसिलापछि पनि जारी नै रहेको विवरण उपलब्ध छ। यस किसिमसँग कर्णाटकीय आक्रमण राजा रामसिंहका शासनकालमा सङ्ख्यात्मकरूपबाट बढेको पाइन्छ। कर्णाटकीय शक्तिको सहारा लिई उपत्यका महत्त्वाकांक्षी शासक अथवा सामन्तवर्गमा यति बढेको थियो कि त्यसैको परिणास्वरूप तीनओटा वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित भएको पाइन्छ। नेपाल उपत्यकामा शायद पहिलो दक्षिणकी महिला थिइन् शयशक्ति देवकी आमा विरमा देवी (केशर वंशा. पत्र. ११), दोस्रो विवाह जयराजदेवको कर्णाटकीय पत्नी श्रीरुद्रमल्ल देवीसँग भयो (केशर वंशा. पत्र. १४, जयराजदेवस्य पत्नी कर्ण्णाटवंशज श्री रुद्रल्लदेवनाम) तेस्रो बिहा राजा हरिसिंहमल्लको भक्तपुरका जयतुंगमल र पदुमल्लदेवीकी छोरी देवलदेवीसँग भएको थियो। प्रायः यी बिहाहरू आ-आफ्ना पक्षमा कर्णाटकीय सैनिक शक्तिलाई बढी परिचालनका निमित्त भएको पाइएको छ (T.N. Mishra, Nanyadeva and his successors from Indian and Nepalese sources as well as an Inscription Discovered from Simaraongarha, forthcoming from Prajna Pratisthana, 1999)। गोपाल राजवंशावलीमा ने.सं. ३४४ (ई.सं. १२२३) मा राजा रामसिंहको नेतृत्वमा नेपाल उपत्यकाभित्र आक्रमण भएको व्यहोरा पाइन्छ (पत्र-३४, वङा रामसिंह राजाटों)। फेरि ने.सं. ३६४ (१२४३ ई.) मा राजा रामसिंह आफै नेतृत्व गर्दै आफ्ना सैनिकसमेत यहाँ आक्रमण गर्न आएका थिए (पत्र. ३६, जेष्ठ कृष्ण प्रतिपदा खण्डाधार गुंस डोय लासन वल्वयम् धाङ्ग याङतल म्वण्ड डयङा ढ्ंल आहु रामसिंह राजास कटकः चोछें जगत्‌बम भाटो धाङ्गस हव), र उनलाई यहाँ आउन निम्तो गर्ने जगत्‌वम भारो थिए। यसै सिलसिलामा कर्णाटकी सैनिकले नेपालीपक्षबाट ठूलो अवरोध र मारकाट को सामना गर्न परेपछि उनी फिर्ता गए र राजा अनर्घमलदेवलाई अगाडि सारी ठूलो विजय यात्रा

मनाइयो। रामसिंहकै राज्यकाल ई.सं. १२४५ मा एकपटक फेरि उपत्यकामा कर्णाटकीय सेनाले आक्रमण गऱ्यो। यो आक्रमण मार्ग शुक्ल सप्तमीका दिन भएको र कपनदेखि भोयोस्थलीसम्म आएका कर्णाटकी सैनिकलाई नेपाली पक्षाले घेरी धेरैलाई मारीदिए। यसरी नेपाली पक्षकै विजय भयो(गो.राज.वंशा. पत्र ३८,सं. ३६६ मार्ग शुक्ल सप्तमी, कंपा हाथार भोयोथलिटो वव डोय फुङा, तल म्वण्ड डयंङालिम जय जुवः)। यसपछि शक्तिसिंहको र हरिसिंहदेवका समयमा पनि अनेक पटक कर्णाटकी सेना र भारादारहरू यहाँ आक्रमण गर्न आए, कर असूली गरे, वर्षदिनसम्म यहाँ बसे र पछि फर्केर गए। राजा रामसिंहको उल्लेख केशर वंशावली (पत्र- १५; नरसिंहदेव नृपतिः श्रीरामसिंहस्ततः) मा राजा नरसिंहदेव पछि रामसिंह राजा भएको भनी गरिएको पाइन्छ। प्रतापमल्लको ने.सं. ७६९ (ई.सं. १६-४८) को हनुमानढोका कृष्णमन्दिरमा रहेको शिलालेखमा कर्णाटकीय वंशावली प्रस्तुत गर्ने सिलसिलामा रामसिंहलाई राजा नरसिंहका छोरा भनिएको छ (रेग्मी, मध्यकालीन नेपाल भाग-४, १९६६, पृ. ६६, 'नृसिंहो नरपतिरतुस्तत्सुतो रामसिंहः')॥ यसै गरी भक्तपुरका राजा जगज्योतिर्मल्ल देवका आश्रयमा वंशमणी झाले लेखेका नरपतिजयचय्यटीका (श.सं. १५३६ र ल.सं. ४९४ तद्नुसार ई.सं. १६१४ लिखित) ग्रन्थमा पनि राजा नान्यदेवदेखि रामसिंह र हरिसिंहदेव आदि राजाका नाउँ पाइन्छ। यसैको अर्को प्रति शाके १५३९ मा लेखिएको थियो (वेजलर, १९८९, पृ. १५९, जगज्जयोतिमल्लेनरचिता)। राजा रामसिंहका शासन अवधिमा लेखिएका र हाल तिब्बतको नोर विहारमा राखिएका पुस्तकहरूमध्ये 'काशिकाविवरणपंजिका' रचना सिमरौनगढ नगरमै बसी गरिएको थियो र यो ल.स.सेन संवत् ५६ (ई.सं. १२५६-१२५८) मा लेखिएको थियो (ले.सं. ५६ श्रीमद् वीरसिंहदेवस्तन्यमानायाम् तीरभुक्तौ साममलिपाटकेस्थित्व लिखितम इदम् चात्रश्री शुभंकदासेन ... मार्ग शुदि १४,पेटेक, नेपालको मध्यकालीन इतिहास, १९८४, पृ. २११)। लुशिआनोपेटेक वीरसिंहलाई गोरखपुरका राजा भनी परिचय गराउनु हुन्छ। तर वहाँकै विवरणबमोजिम कच्छपघाटवंशी नलपुरका वीरसिंहको शासनकाल ई संवत् ११२० थियो। यस 'कासिकाविवरणपंजिका' पुस्तकका वीरसिहदेव तिरहुतका र सिम्रौनगढ 'सालमलिपाटकेस्थित्वा'- र अर्को पुस्तक 'श्रष्टसहश्रिका प्रज्ञा पारमिता' मा उल्लेखित 'तिरभुक्तौ सालमलिवनपाटके' ले सिमरावनगढ नगरलाई सम्बोधन गरिएको छ) का राजा रामसिंहका वंशज राजकुमार अथवा सामन्त थिए भनी बोध हुन्छ। राष्ट्रिय अभिलेखालयमा रहेको पुस्तक 'अष्टसाहश्रिका प्रज्ञापारमिता' को पुष्पिकामा त्यो ग्रन्थ ल. सेन सं. ६७ मार्ग वदि ५ आइतवारका दिन तिरहुतको सिमरावननगरमा र राजा रामसिंहको शासनकालमा ('ल.सेन सं. ६७ मार्ग वदि ५ रवौ ... एत्यादि राजावली पूर्वत श्रीमद् रामसिंहदेव भुज्यमाने तीरभुक्तो सालमलिवनपाटके लिखिता', रेग्मी, I, २६९; पेटेक, १९८४, पृ. २११) लेखिएको थियो। यसमा उल्लेखित ल. सेन संवत् ६७ मार्गलाई पेटेकले नवम्बर बाईस तारिख १२७१ ई. भनी लेखेका छन्। उनले यहाँ उल्लेखित रामसिंहलाई अर्कै राजा भनी उल्लेख गरेका छन्, तर हामीलाई मिथिला र मुस्लिम श्रोतबाट थाहा हुन्छ कि रामसिंहको शासनकाल १२२५-२७ देखि १२८५ ई. सम्म थियो र यी रामसिंह रजा नरसिंहका छोरा र शक्तिसिंहका बुवा थिए। हालसालै भक्तपुरका प्राध्यापक पुरुषोत्तमलोचन श्रेष्ठले श्री रणजितमल्लले संवत् ८१५ श्रावणमा जलद्रोणी निर्माण गरेका र त्यही नाउँबाट डान्हंचोकले प्रख्यात भयो भनेका छन्। उनले भक्तपुर राजप्रासादको चोकको भ्यालतल तुलजाभवानीको काठको मूर्तिको दाहिने लाइनसँग नान्यदेव, गङ्गादेव,

नरसिंहदेव, रामसिंहदेव, भावसिंहदेव, कर्म्मसिंहदेव, हरिसिंहदेव आदिका साथै अन्तमा जस्थितिमल्लको नाउँसमेत लेखिएको काठको मूर्ति फेला पारेका छन्, जुन एउटा महत्त्वपूर्ण खोजी भएको छ। डा. पुरुषोत्तमलोचन श्रेष्ठ, जङ्घचोकका कलाकृतिहरू, भक्तपुर मासिक, २०५५ माघ, पृ. २९-३०)।

रामसिंहको अन्तिमकालतिर (१२५३-१२८१ ई. वरिपरि) दिल्लीको सिंहासनमा बल्बन आसीन थिए। तर उनको शासनकालमा अवध र बङ्गालका शासकहरूले विद्रोह गरेका थिए र दिल्ली र बङ्गालका शासकविरुद्ध लामो अवधिसम्म (१२७९-१२८० ई. सम्म) युद्ध चलेको थियो र रामसिंहले आफूलाई ती युद्धसँग अलग राखी मध्यस्थ भई बसेका थिए। शायद उनको शासनकालमा मिथिलामा त्यसैकारण शान्ति रहेको थियो। उनको लामो शासन अवधि प्राय: अन्ठाउन्न वर्षसम्म कायम रहँदै १२८०-८१ ई. तिर उनको मृत्यु भयो (ठाकुर, १९५६, पृ. २७५; चौधरी, १९७०, ४२-४४)। राजा रामसिंहपछि उनका छोरा शक्तिसिंह (उपनाम शक्रसिंह) मिथिलाका राजा भए, तर उनको राज्यकाल मुगलशासकहरूका बारम्बार आक्रमण र आफ्नै दरबारभित्र मन्त्रीहरूका कारण अशान्तिपूर्ण थियो। उनका मन्त्रीहरूले गणेश्वरलाई महामन्त्री बनाई एउटा परिषद्को निर्माण गरेका थिए, जसले राज्यसञ्चालनमा राजाभन्दा बढी महत्त्वपूर्ण निर्णय लिने गर्दथ्यो। त्यसपछि उनका छोरा हरिसिंहदेवले सिमरौनगढबाट १३३६ ई. सम्म शासन गरेको देखिन्छ।

अनुवादक : तारानन्द मिश्र

विद्यापति आ नेपाल

नमोनारायण झा

विद्यापति एक एहन सार्वभौम व्यक्ति छलाह जिनका कोनो देश-कालक संकुचित सीमामे सीमित नहि कयल जासकैत अछि। एक समय छल पूर्वाञ्चलक विभिन्न भाषाक विद्वान्लोकनि हुनका "तोहर नहि हमर" प्रमाणित करबाक चेष्टा करैत छलाह। कारण ज्योतिश्वरद्वारा लोकभाषाक प्राप्त मान्यता कें विद्यापति चरमोत्कर्ष पर पहुँचाकए कविकोकिल बनि जन साधारणक कण्ठहार बनि गेल छलाह। जे समस्त पूर्वांचलीय साहित्यकें वरदान स्वरूप प्राप्त भेलैक। ग्रियर्सन ठीके कहने छथि जे

Seven cities might have contended for the honour of the birth place of Homer, but with the exception of the poet Vidyapati there is no other name of a poet claimed as there own by two peoples speaking two different languages, Maithili and Bengali, unparalleled in the history of literature.

विद्यापतिक अविर्भाव साहित्यकाश मे एहन समय मे भेल जे विद्वान्क लेल कुंठा काल छल। कठोर सामन्तवादी सांस्कृतिक फलस्वरूप नव जीवनक संचार असंभव भए गेल छल। स्थापत्य, चित्रकला, साहित्य आ संगीत आदि मे जीवन शक्ति समाप्त भए गेल छल। निस्तेज सामन्त सवहक मन मे कामेच्छा उत्पन्न करवालेल साहित्यकार दोहाक मोदक बांटि रहल छलाह। धर्म-दर्शनक स्थानपर तंत्र-मंत्र, टोना-टापर और गुह्यसाधनाक' प्रधानता भए गेल छल। कविगण प्राचीन शैली आ भाषाक अनुसरण करैत छलाह। यद्यपि मुसलमानक आक्रमणक फलस्वरूप एहि प्रवृत्ति सबहक पतन प्रारंभ भए गेल छलैक। परन्तु बस परम्परा के त्यागि "देसिल वयना" कें अपन गीतक माध्यम बनोओलनि जे नवीन जन-जागरणक प्रथम चरण भेल। एकर संरक्षक विशाल-विशाल जनसमूह छल। हिनक वाणी सँ युग मुखरित भेल। राधा-कृष्णक लीलागान सँ पूर्ण हुनक "गीतावली" क्षेत्र विशेष मे सीमित नहि समस्त पूर्वांचल मे पसरि गेल। एहि भूभागक राजमहलसँ पर्णकुटी धरि सर्वत्र एकर अव्याहत प्रभाव पड़ल। डा. शैलेन्द्र झा क अनुसार "नेपालक पार्वत्य नीड़ मे, कामरूपक वनवीथिकामें बंगालक शस्यश्यामांचल में, उत्कलक नाटिकेर निकुंजमे एतेक धरि जे व्रजक करील कुंज में विद्यापतिक गीत परिव्याप्त रहल अछि।" ललनाक लज्जावृत कंठसँ संगीतज्ञक साधित स्वरसँ, राजनर्तकीक हाव-भाव

विलासमय दृष्टि निक्षेप सँ’ भक्तमंडलीक कीर्तन-नर्तन सँ, वैष्णव-वैष्णवीक’ एकताराक झंकारसँ निःस्तृत विद्यपतिक गीतनाद चौदहम सदीसँ श्रोतगणकें रसतृप्त मात्र नहि करैत रहल, अपितु चंडीदास, शंकरदेव, कवीर , सुरदास, मीरा, नरसी मेहता आ भानुभक्त आदिमें संदेशवाहक बनल ।

विद्यापति एकटा विशिष्ट काव्य भाषाक प्रवर्तक छलाह। हिनक पदावलीक भावसौन्दर्य ओ माधुर्यसँ परवर्ती युगक वैष्णव कविगण अभिभूत भए भक्ति काव्यक एकटा नवीन भाषाक सृष्टि बंग, कामरूप, उत्कल आ नेपाल तराई क्षेत्रमे कयलनि जे व्रजवुलीक नामसँ प्रसिद्ध भेल । जकरा स्वीकार करैत श्री नगेन्द्र नाथ गुप्त इ कहलनि जे व्रजवुलीक माध्यमसँ द्यिापतिक वाणीक प्रसार नेपाल सहित समस्त पूर्वाञ्चलीय प्रदेश मे भए गेल ।

नेपालमे विद्यापतिक प्रभाव कोनो ऐतिहासिक घटनाक फलस्वरूप नहि भए नेपाल उपत्यका आ मिथिलाक सम्बन्ध परम्पराक एक कड़ीक रूपमे भेल अछि। प्राचीन कालसँ नेपाल विभिन्न सांस्कृतिक जनलोकनिक आश्रय स्थल रहल अछि। प्रकृति सुरम्य नेपाल उपत्यका मे केओ आक्रमणकारी रूपमे त केओ आक्रमणकारी क भयसँ आयल छलाह। एहि मे कर्णाट लोकनि विख्यात छथि। वास्तव मे कर्णाट राजा न्यानदेव (१०९६ ई.) सँ ओनिवार राजा शिव सिंह (१४१६ ई.) तक अर्थात् ३२० वर्ष तक नेपाल उपत्यका आ मिथिलाक बीच अविच्छिन्न सम्बन्ध रहल। मुसलमान आक्रमणसँ त्रस्त एहि क्षेत्रक विद्वान् विशेष रूपे नालन्दा आ विक्रमसीलाक हिन्दू तथा बौद्ध विद्वान् लोकनि अपन मोथी-पतरा सहति नेपाल उपत्यका मे आश्रम पाओल। फस्वरूप उपत्यकामे शासन कएनिहार मल्ल राजा लोकनि मैथिली भाषा तथा साहित्यक माधुर्यसँ प्रभावित भ’ स्वयं मैथिली भाषा मे साहित्यिक रचना प्रारंभ कयलनि । एहि प्रकारें मल्ल राजा तथा हुनक आश्रित मैथिल विद्वान् सब अनेक गीत तथा नाटकक रचना कयलन्हि। जाहि सँ मैथिली साहित्यक एक विशाल भंडार कायम भेल। नेपाल उपत्यका क विभिन्न भाग मे बसल विद्वान् लोकनि अपन वैदुष्य एवं मैथिलीक माधुर्यसँ मल्ल राजा लोकनि कें पूर्ण रूपमे आकृष्ट कयलनि। मैथिली ओतए परिनिष्ठित साहित्यिक भाषा भए गेल। महत्त्वपूर्ण त ई जे मैथिली उपत्यका भाषाक ओहि स्थायी रूपता के प्राप्त कयलक जाहि सँ ओ शीलालेखक भाषा बनि गेल। एहि तरहे मैथिली के शिलालेख भाषा बनवाक गौरव प्रथम बेर नेपाल उपत्यका मे प्राप्त भेलैक ।

मिथिला जनक राजवंश काल सँ विद्याकेन्द्र के रूपमा विख्यात रहल अछि । महान् दार्शनिक निवास स्थल मिथिला कर्णाट काल मे शस्त्र एवं शास्त्र मे प्रसिद्धी पओने छल। कर्णाट आ ओइनवार वंशक राजा लोकनि सेहो कला तथा साहित्य मर्मज्ञ छलाह। विद्यापतिक पूर्व समकालीन तथा परवर्ती विद्वान् सवहक विद्वतासँ नेपालटा नहि समस्त भारत अमित प्रकाश पिण्डसँ आलोकित छल। विभिन्न प्रदेशक शिक्षार्थी लोकनि एहए अध्ययन करवाक लेल अबैत छलाह। मस्तिष्क मे ज्ञान भंडार तथा कंठ मे विद्यापति तथा अन्य कविक मधुर गीत लए घर वापस जाइत छलाह। नेपाल त मैथिल विद्वान् लोकनिक आश्रय स्थल छल। ई विद्वान्लोकनि मल्ल राजा लोकनिक हेतु एहि क्षेत्रसँ दुर्लभ तथा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ सबकें अन्वेषण कए प्रतिलिपि तैयारक अपन आश्रयदाता के समर्पित करैत छलाह। एहि प्रकारें विद्यापति तथा अन्य विद्वान्क महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अनेकौं प्रतिलिपि तैयार भेल जे नेपालक एक विपुल अमूल्य सम्पत्ति अछि ई सम्प्रति गवेषक अभाव मे राष्ट्रिय अभिलेखालय मे पड़ल अछि ताहि सँ जे किछु वहार भेल जे अन्यत्र नहि प्राप्त भेल छल। जेना *कीर्तिपताक गोरक्ष-विजय नाटक पदावली* क हस्तलिखित ग्रन्थ आ

अनेकौं हस्तलिखित गीत ग्रन्थ जाहि में विद्यापतिक भनितामे नव-नव गीत सब अछि। *लिखनावली* क रचना त एहिक्षेत्र मे भेला विद्यापतिक प्रभाव सँ नेपालक साहित्यक क्षेत्र मे मैथिली भाषाक भाव आ छन्दक अनुकरण प्रारंभ भेल । मल्ल राजलोकनि मात्र आश्रयदाता वा रचनाकारे टा नहि स्वयं कलाकार छलाह उपत्यकाक तीनू राज्य मे एहि लेल प्रतिस्पर्धा छलैक । एकरे फलस्वरूप मैथिली भाषाक परिनिष्टिता आ परिमार्जित रूप सुरक्षित रहल। एहि भाषाक साहित्य मूल रूपमे बाँचल रहल । नेपाल मे विद्यापतिक रचना सबहक संरक्षणक दृष्टि सँ अपन विशिष्टता अछि। बंगाल, उत्कल आ कामरूप जे वैष्णव क प्रभाव क्षेत्र छल ताहि ठाम मात्र वैष्णव भाव धाराक गीत सब सुरक्षित रहल सेहो विकृत अवस्था मे। नेपाल मे एहन स्थिति नहि भेलैक एहि ठाम विद्यापतिक रचना मौलिक रूपमे समग्रताक साथ सुरक्षित रहल। विद्यापतिक रचना सब मे *शैवसवएवसार दानावाक्यावली दुर्गा-भक्ति-तरंगिणी* और *पुरुष परीक्षा* क हस्तलिखित ग्रन्थ राष्ट्रिय अभिलेखालयसँ प्राप्त भेल अछि। मल्लकालीन गीतकार आ नाटककार के रूपमे जगज्योतिमल्ल, सिद्धिनरसिंह मल्ल, भूपतीन्द्र मल्ल, वंशमणि झा, काशिनाथ, त्रिभुवन मल्ल, भास्करमल्लक गीत आ नाटक सब विद्यापति सम्पूर्ण प्रभावित अछि। ज्योतिश्वरक *धूर्तसमागम* आ विद्यापतिक *गोरक्षविजय* नाटकक परम्परा नेपाल मे प्रचलित भेल आ संस्कृत भाषामे लिखल नाटक सब मे मैथिली शब्दक प्रयोग भेल जे एकर विशिष्टता छैक ।

उपत्यकाक अतिरिक्त बनेपा (बज्किपुर) क राजा जयनरसिंह मल्ल क समयमे जयरामलिखित *पांडव विजय* नाटक सेहो प्रसिद्ध अछि ।

मकवानपुर, मोरंग आ सप्तरी क्षेत्रक राजालोकनि मैथिल विद्वान् सबके आश्रयदाता छलाह जाहि क्रम मे विद्यापति क रचना सुरक्षित रहल ।

मोरंग क्षेत्रक राजा सभहक सद्प्रयास सँ मैथिली गीतक संग्रह आ रचना भेल। मुरारी मिश्र (१७ सदी) क गीत सब मे भनिता मे विभिन्न राजाक नाम उल्लेख अछि। एहि समय मे रचना भेल भाषागीत संग्रह, *नाना राग गीतम्* तथा *कृष्ण चरित्र* प्रसिद्ध अछि। एहि समयक विद्वान् सब में गोपीनाथ, भिष्म, पुरन्दर आ चतुर्भुज प्रसिद्ध छथि। चतुर्भुज पाछा उपत्यका सँ सम्बद्ध भेला कारणे हुनका रचना मे सिद्धिनरसिंह मल्ल आ जगज्योतिमल्लक नाम उल्लेख अछि।

विद्यापतिक युग राजनैतिक अस्थिरताक युग छल। *कीर्तिलता* मे एकर स्पष्ट उल्लेख अछि। एहि अनुसार असलान, अर्जुन राय तथा रत्नाकरक षडयन्त्र सँ गणेश्वर ठाकुर (१३६०-७१ ई.) क हत्याक बाद शिव सिंहक राज्यकाल तक मिथिला गृह कलह तथा मुसलमान आक्रमण सँ त्रस्त छल। शिव सिंहक आज्ञा सँ विद्यापति रानी लखिमा सहित अन्य राजपरिवारक सदस्यक संगे सप्तरी परगनाक राज बनैलीक द्रोणवार राजा पुरादित्य गिरीनारायणक आश्रित भेलाह। एतए पुरादित्यक आज्ञासँ विद्यापति अल्प पठित व्यक्ति सबहक उपदेशार्थ बहुपठित व्यक्ति सबहक *विनोदार्थ* तथा सज्जन लोकनिक *प्रीत्यार्थ* लिखनावलीक रचना कएलन्हि जे नेपालक राजकीय पत्र लिखबाक परिपाटीके विकासक आधार बनल। विद्यापति एतए *श्रीमद् भागवतक* प्रतिलिपि कएलनि।

एहि प्रकारें नेपालमे विद्यापतिक रचनाक फलस्वरूप मैथिली संस्कृतसँ नेपाल उपत्यका प्रभावित भेल आ हुनक रचना एतए पूर्ण रूपमे सुरक्षित रहल ।

रा.रा.क्याम्पस
जनकपुर

विद्यापति र नेपाल

विद्यापति एउटा यस्तो सार्वभौम व्यक्ति हुनुहुन्थ्यो जसलाई कुनै देश र कालको सङ्कुचित सीमामा सीमित पार्न सकिँदैन। एउटा समय थियो जुन बेला पूर्वाञ्चलका विभिन्न भाषाका विद्वान्हरू विद्यापतिलाई "तेरो होइन मेरो" प्रमाणित गर्ने प्रयत्नमा लागेका थिए। कारण ज्योतिरीश्वरद्वारा लोकभाषाको प्राप्त मान्यतालाई विद्यापतिले चरमोत्कर्षमा पुऱ्याएर कवि कोकिल बन्दै जनसाधारणको कण्ठहार बन्न पुग्नु भयो। जुन सम्पूर्ण पूर्वाञ्चलीय साहित्यलाई वरदान स्वरूप प्राप्त भयो। ग्रियर्सनले ठिकै भन्नुभएको छ–

Seven cities might have contended for the honour of the birth place of Homer, but with the exception of the poet Vidyapati there is no other name of a poet claimed as there own by two peoples speaking two different languages, Maithili and Bengali, unparalleled in the history of literature.

विद्यापतिको आविर्भाव साहित्याकाशमा यस्तो अवस्थामा भयो जुन विद्वान्हरूको लागि कुण्ठाकाल थियो। कठोर सामन्तवादी संस्कृतिको फलस्वरूप नवजीवनको सञ्चार असम्भव भइसकेको थियो। स्थापत्य, चित्रकला, साहित्य र सङ्गीत आदिमा जीवनशक्ति समाप्त भइसकेको थियो। निचोडिएको सामन्तहरूको मनमा कामेच्छा उत्पन्न गराउने उद्देश्यले साहित्यकार दोहा पस्किने काम गरिरहेका थिए। धर्म-दर्शनको स्थानमा तन्त्रमन्त्र, टोना-टापर र गुह्यसाधनाले प्रधानता पाइरहेका थिए। कविगण प्राचीन शैली र भाषालाई अनुसरण गर्दै थिए। यद्यपि मुसलमानहरूको आक्रमणपश्चात् यी प्रवृत्तिहरूको पतन आरम्भ भइसकेको थियो, तर पनि यी सबै परम्परालाई त्यागेर "देसिल वयना" लाई आफ्नो गीतको माध्यम बनाउनु भयो जुन नयाँ जन-जागरणको प्रथम-चरण प्रमाणित भयो। यसका संरक्षणका लागि विशाल-विशाल जनसमूह देखिए। उहाँको गीतावली क्षेत्र विशेषमा सीमित नरही सम्पूर्ण पूर्वाञ्चलमा फैलियो। त्यस भूभागका राजमहलदेखि पर्णकुटीसम्ममा गहिरो प्रभावपऱ्यो। डा. शैलेन्द्र झाका अनुसार "नेपालको पार्वत्य निरवतामा, कामरूपको वनविथिकामा, बङ्गालको शस्यश्यामाञ्चलमा, उत्कलको

नाटी निकुञ्जमा यहाँसम्म कि व्रजनको करीले कुञ्जमा विद्यापतिको गीत परिव्याप्त रहेको थियो । महिलाहरूको लज्जावृत कण्ठमा, सङ्गीतज्ञको साधित स्वरमा, राजनर्तकीको हाव-भाव, विलासमय दृष्टि निक्षेपमा, भक्त मण्डलीको किर्तन-नर्तनमा, वैष्णव-वैष्णवीको एकताराको झङ्कारबाट निसृत विद्यापतिको गीतले चौधौं सदीदेखि श्रोताहरूलाई रसतृप्त गराउने कार्य मात्र गरेन चण्डीदास, शङ्करदेव, कबीर, सुरदास, मीरा, नरसी मेहता र भानुभक्तमा सन्देशबाहक बन्ने कार्य पनि गऱ्यो ।

विद्यापति एउटा विशिष्ट काव्यभाषाको प्रवर्तक हुनुहुन्थ्यो । उहाँको विद्यापति पदावलीको भाव सौन्दर्य र माधुर्यबाट अभिभूत भएर परवर्ती युगका वैष्णव कविहरूले भक्तिकाव्यको एउटा नयाँ भाषाको सृष्टि बङ्ग, कामरूप, उत्कल र नेपालको तराई क्षेत्रमा गर्नुभयो र त्यसले व्रजबुलीको नाउँले प्रसिद्धि पायो । यस तथ्यलाई स्वीकार गर्दै श्री नगेन्द्रनाथ गुप्ताले भन्नुभएको छ– व्रजबुलीको माध्यमले विद्यापतिको वाणीको प्रसार नेपालसहित सम्पूर्ण पूर्वाञ्चलीय प्रदेशमा भएको थियो ।

नेपालमा विद्यापतिको प्रभाव कुनै खास ऐतिहासिक घटनाको कारण नभई नेपाल उपत्यका र मिथिलाको पारम्परिक सम्बन्धको एउटा कडीको रूपमा भएको थियो। प्राचीन कालदेखि नेपाल सांस्कृतिक व्यक्तिको आश्रय स्थलको रूपमा रह्यो । प्रकृति सुरम्य नेपाल उपत्यकामा कोही आक्रमणकारीको रूपमा तथा कोही आक्रमणकारीको भयबाट त्रसित भई आएका थिए। यसमध्ये कर्णाटहरू विख्यात छन्। वास्तवमा कर्णाट राजा नान्यदेव (१०९६ ई.) देखि ओनिवार राजा शिवसिंह (१४१६ ई.) सम्म अर्थात् ३२० वर्षसम्म नेपाल उपत्यका र मिथिलाको बीचमा अविछिन्न सम्बन्ध रहेको थियो। मुसलमान आक्रमणबाट त्रस्त यस क्षेत्रका विद्वान् विशेषगरी नालन्दा र विक्रमशीलाका हिन्दू तथा बौद्ध विद्वान्हरूले आफ्ना पुस्तक-पात्रोसहित उपत्यकामा आश्रय पाए। फलस्वरूप उपत्यकामा शासन गर्ने मल्ल राजाहरूले मैथिली भाषा तथा साहित्यको माधुर्यबाट प्रभावित भएर साहित्यिक रचना प्रारम्भ गरे। यसप्रकार मल्ल राजा र उहाँका आश्रित मैथिली विद्वान्हरू आफ्ना वैदुष्य तथा मैथिली भाषाको माधुर्यले मल्ल राजाहरूलाई आकृष्ट गऱ्यो। र मैथिली विद्वान्हरूबाट अनेकौं गीत तथा नाटक रचना गरिए। जसले गर्दा मैथिली साहित्यको विशाल भण्डार कायम भयो। नेपाल उपत्यकाको विभिन्न भागमा बस्ने उपत्यकामा परिनिष्ठित साहित्यिक भाषाको रूपमा स्थापित भयो। महत्त्वपूर्ण पक्ष के छ भने मैथिलीले उपत्यका-भाषाको स्थायीरूपको प्राप्ति गऱ्यो र शिलालेखको भाषा बन्यो। यसप्रकार मैथिलीलाई शिलालेखी भाषा बन्ने गौरव प्रथम पटक नेपाल उपत्यकामै प्राप्त भयो।

मिथिला जनक राजवंशदेखि नै विद्या-केन्द्रको रूपमा विख्यात रही आएको छ। महान् दार्शनिकहरूको निवास-स्थल मिथिलाले कर्णाटकालमा' शस्त्र र शास्त्रमा प्रसिद्धि पाएको थियो। कर्णाट र ओइनिवार वंशका राजाहरू कला तथा साहित्यका मर्मज्ञ थिए। विद्यापतिको पूर्व, समकालीन तथा परवर्ती विद्वान्हरूको विद्वत्ताबाट नेपाल मात्र नभई सम्पूर्ण भारत अमित प्रकाशपिण्डबाट आलोकित हुन पुगेको थियो। विभिन्न प्रदेशका शिक्षार्थीहरू यहाँ अध्ययनको लागि आउने गर्थे। मस्तिष्कमा ज्ञानका भण्डार तथा कण्ठमा विद्यापति र अन्य कविका मधुर गीत लिएर घर फर्कने गर्थे। यी विद्वान्हरू मल्ल राजाहरूको लागि यस क्षेत्रबाट दुर्लभ तथा महत्त्वपूर्ण ग्रन्थहरूको अन्वेषण गरेर प्रतिलिपि

तयार गरी आफ्ना आश्रयदाताहरूलाई समर्पित गर्थे। यसप्रकार विद्यापति तथा अन्य विद्वान्हरूको महत्त्वपूर्ण ग्रन्थको अनेकौं प्रतिलिपि तयार भयो जुन नेपालको एउटा विपुल अमूल्य सम्पदा हो। अहिले यी सम्पदा अन्वेषणको अभावमा राष्ट्रिय अभिलेखालयमा थन्किएको छ। त्यहाँबाट प्राप्त केही ग्रन्थ अन्यत्र भेटिएन। जस्तै– *कीर्तिपताका, गोरक्ष विजय नाटक,* पदावलीको हस्तलिखित ग्रन्थ र अनेकौं हस्तलिखित गीत-ग्रन्थ जसमा विद्यापतिको नाउँ उल्लिखित भएको नयाँ-नयाँ गीतहरू छन्। "लिखनावली"को रचना यसै क्षेत्रमा भएको हो। विद्यापतिको प्रभावबाट नेपालको साहित्यिक क्षेत्रमा मैथिली भाषाको भाव र छन्दको अनुकरण प्रारम्भ भएको पाइन्छ। मल्ल राजाहरू आश्रयदाता र रचनाकार मात्र नभई स्वयं कलाकार पनि थिए। उपत्यकाको तीनवटै राज्यमा यस क्षेत्रमा प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति थियो। यसैकारणले मैथिली भाषाको परिनिष्ठित र परिमार्जित रूप सुरक्षित रहन पायो। यस भाषाको साहित्य मूल-रूपमा बाँच्न सक्यो। नेपालमा विद्यापतिका रचनाहरू संरक्षण गर्ने दृष्टिले विशिष्टता प्राप्त गरेको छ। बङ्गाल, उत्कल र कामरूप वैष्णवको प्रभाव क्षेत्र रहेको हुनाले मात्र वैष्णव भावधाराका गीतहरू सुरक्षित रहन पायो त्यो पनि विकृत अवस्थामा। नेपालमा यसतो स्थिति रहेन। यहाँ विद्यापतिको रचना मौलिक रूपमा समग्रताका साथ सुरक्षित रह्यो। विद्यापतिका रचनाहरूमा *शैवर्स्वर-वसार, दानावाक्यावली, दुर्गा भक्ति तरंगिणी* र *पुरुष परीक्षा*को हस्तलिखित ग्रन्थ राष्ट्रिय अभिलेखालयबाट प्राप्त भएको छ। मल्लकालीन गीतकार र नाटककारको रूपमा जगर्ज्योति मल्ल सिद्धिनरसिंह मल्ल, भूपतीन्द्र मल्ल, वंशमणि झा, काशीनाथ, त्रिभुवन मल्ल, भाष्कर मल्लका गीत र नाटकहरू विद्यापतिबाट पूर्णतः प्रभावित रहेको छ। ज्योतिरीश्वरको *धूर्तसमागम* र विद्यापतिको *गोरक्ष विजय* नाटकको परम्परा नेपालमा प्रचलित भयो र संस्कृत भाषामा लेखिएका नाटकहरूमा मैथिली शब्दको प्रयोग हुनु नै यसको विशिष्टतम पक्ष मानियो।

उपत्यकाका अतिरिक्त बनेमा (वणिकपुर) का राजा जयनरसिंह मल्लको समयमा जयराम लिखित *पाण्डव विजय* नाटक पनि प्रसिद्ध रहेको छ।

मकवानपुर, मोरङ र सप्तरी क्षेत्रका राजाहरू मैथिल विद्वान्हरूको आश्रयदाता थिए र त्यसैले त्यहाँ पनि विद्यापतिको रचना सुरक्षित रह्यो।

मोरङ क्षेत्रका राजाहरूको सद्प्रयासबाट मैथिल गीतको सङ्ग्रह र रचना भयो। मुरारि मिश्र (१७ सदी) को गीतमा भनिता रूपमा विभिन्न राजाको नाउँ उल्लेख भएको छ। यस समयमा रचना भएको *भाषा गीत-सङ्ग्रह, नानाराज गीतम्* तथा *कृष्णचरित्* अत्यन्तै प्रसिद्ध छन्। यस कालखण्डका विद्वान्हरूमा गोपीनाथ, भीष्म, पुरन्दर र चतुर्भुज प्रसिद्ध रहेका छन्। चतुर्भुजपछि उपत्यकासँग सम्बद्ध भएका कारणले उहाँका रचनामा सिद्धिनरसिंह मल्ल र जगज्ज्योति मल्लको नाउँ उल्लेख भएको पाइन्छ।

विद्यापतिको युग राजनीतिक अस्थिरताको युग थियो। *कीर्तिलता*मा यसको स्पष्ट उल्लेख भएको छ। यसअनुसार असलान, अर्जुन राय, तथा रत्नाकरको षड्यन्त्रबाट गणेश्वर ठाकुर (१३६०-७१ई.) को हत्यापश्चात् शिवसिंहको राज्यकालसम्म मिथिला गृह-कलह तथा मुसलमानी आक्रमणबाट त्रस्त थियो।

शिवसिंहको आज्ञाले विद्यापति रानी लखिमा र अन्य राजपरिवारका सदस्यसहित सप्तरी परगनाका राजा वनौलीका द्रोणवार राजा पुरादित्य-गिरीनारायण कहाँ आश्रित हुन

पुग्नुभयो। यहाँ पुरादित्यको आज्ञाले विद्यापतिले अल्पपठित व्यक्तिहरूको लागि *उपदेशार्थ*, बहुपठित व्यक्तिहरूको लागि *विनोदार्थ* तथा *सज्जनहरूको लागि प्रीत्यर्थ* लिखनावली रचना गर्नुभयो र त्यही नेपालको राजकीय-पत्र लेख्ने परिपाटीको विकासको आधार बन्यो। विद्यापतिले त्यहाँ *श्रीमद्भागवत*को प्रतिलिपि पनि तयार गर्नुभयो।

यसप्रकार नेपालमा विद्यापतिको रचनाको परिणामस्वरूप मैथिली र संस्कृतबाट नेपाली प्रभावित भयो र उहाँको रचना पनि पूर्ण रूपमा सुरक्षित रह्यो।

अनुवादक : रञ्जन

सलहेस गाथा: मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदा

चन्देश्वर शाह

संक्रान्ति प्रत्येक महिनाक शुरुक दिन थिक। अर्थात् ई संक्रान्ति एक वर्षमे बारहटा होइत अछि। एहिमेसँ एकटा संक्रान्ति महिनाक शुरुवात तँ अछिए वर्षक सेहो शुरुवात थिक। ओ संक्रान्ति वैशाख संक्रन्ति थिक। नेपाली पञ्चाङ्गअनुसार वैशाख संक्रान्ति अर्थात् वैशाख एक गते वर्षक पहिल दिन थिक। एहि हिसाबसँ वैशाख संक्रान्ति सम्पूर्ण नेपालीक लेल एकटा उत्सवक दिन थिक। एहन परम्परा नेपालेटामे नहि विश्वभरि प्रचलित अछि। प्रत्येक देशमे ओहि ठामक पञ्चाङ्गअनुसार होमएवला वर्षक पहिल दिन राष्ट्रिय पर्वक रूपमे लेल जाइत अछि आ ओहिदिन राष्ट्रव्यापी रूपमे सार्वजनिक छुट्टी देल जाइत अछि। ई पर्व मनएबाक तरीका धरि अलग-अलग अछि। कोनो ठाम एहि दिनकेँ खुशी आ मौजमजाक दिनक रूपमे लेल जाइत अछि तँ कतहु एकरा शुभ मुहूर्तक रूपमे नीक काजक शुरुवात करबाक दिनक रूपमे लेल जाइत अछि। नेपालक वर्षक पहिल दिन अर्थात् वैशाख संक्रान्तिकेँ नेपालीलोकनि राष्ट्रिय पर्वक संगहि धार्मिक तिथिक रूपमे लेल करैत छथि। वैशाख संक्रान्तिक दिन नेपालमे कतेको जातिक लोक कुल-पूजा करैत छथि तँ एहि दिन नेपालक विभिन्न क्षेत्रमे विभिन्न धार्मिक उत्सव मनएबाक सेहो प्रचलन अछि। मिथिलांचल क्षेत्रमे एहि दिनक आओर अधिक महत्त्व अछि। ई दिन मिथिलांचलक जुड़शीतल पर्वक दिन थिक। क्षेत्रीय हिसाबसँ धार्मिक पावनि तिहार विभिन्न समयमे होइत रहब एकटा निरन्तर प्रकृया थिक। एहि निरन्तर प्रकृयामे कोनो कोनो पर्वक व्यापकता ओहि पर्वक आध्यात्मिक विश्वासक कारणेँ विशिष्ट स्थान रखैत अछि। एहन विशिष्टता प्राप्त सामाजिक पावनितिहारमे जुड़शीतल मिथिलांचलक प्रसिद्ध पावनि थिक आ एकर अपन पृथक विशेषता छैक। ई पर्व मनएबाक तरीका अपने तरहक छैक। एहि दिन मिथिलांचलक नागरिक अपनासँ छोट (अपन परिवारक) सदस्यक माथ पर पानि थोपि क' शीतलताक आशीर्वाद दैत अछि संगहि अपना गाछवृक्षक जड़िमे सेहो पानी पटा क' ओकर दीर्घायुक कामना करैत अछि। युवकलोकनि फगुवामे जेना रंग-अबीरसँ खेलाइत अछि तेना एहि दिन थाल-पानीसँ खेलाइत अछि। एहि पर्वक एकटा बहुत मनोरंजक प्रसंग अछि जे ओहि दिन गाममे घरजमैया रहल व्यक्तिकेँ लदनी बुढ़ी घोड़ी वा विकलाङ्ग

घोड़ीपर बैसा थाल-पानीक संगहि टुटल टोकरी आ कनैलफूलक फुलाएल ठाढ़िपातसँ महादेव सनक विचित्रक रूप बना गाममे घुमाओल जाइत अछि। एहि समयमे शिवगण सदृश थाल-पानीसँ लेढ़ाएल युवकसभ घोड़ीक आगू-पाछू चैताबर गबैत थपड़ी तथा लकड़ी बजबैत गाम घुमैत दृश्य देखि कनेक कालक लेल अपन दुःख बिसरि हर्षित नहि भेनिहार किओ नहि रहैत अछि। एहि प्रकार एहि दिन माथपर पानी थोपि शीतलताक आशीर्वाद देलासँ आ थाल-पानी खेललासँ लोक सालभरि स्वस्थ रहबाक आ सुख शान्ति प्राप्त होयबाक विश्वास कएल जाइत अछि। वर्षक प्रथम दिन शुभमुहूर्तक रूपमे लेल जएबाक उपर उल्लेख भेल अनुसार एहि दिन विभिन्न तरहक काज कएल जाइत अछि। जाहिमे संकटमे पड़ल व्यक्तिकेँ उद्धार कयनिहार देवताका रूपमे मिथिलांचलमे विश्वास कएल गेल सलहेसक पूजा सेहो होइत अछि।

सलहेस मिथिलांचलमे बहुत प्रभावशाली देवताक रूपमे आदरणीय छथि। मिथिलांचल जगतजननी जानकीक नैहर थिक। जगतजननी जानकी आ हुनक दुलहा रामचन्द्र लक्ष्मी आ नारायणक रूपमे पुजल जाइत छथि। सम्पूर्ण विश्वक हिन्दुलोकनि रामजानकीक पूजा करैत छथि मुदा रामजानकीक परिवारक अन्य सदस्य देवताक रूपमे नहि पुजल जाइत छथि। जहाँधरि सम्मानक बात थिक दुनू परिवार आदरणीय अछि मुदा सलहेस मिथिलांचलक एहन देवता छथि जिनकर सम्पूर्ण परिवार अलग-अलग देवताक रूपमे पुजल जाइत छथि। अर्थात् सलहेस परिवार देवताक परिवार थिक। एहि परिवारमे सलहेस प्रमुख छथि आ हिनका प्रमुख देवताका रूपमे पुजल जाइत अछि। हिनक मझिला भाइ मोतीराम पहलवानसभक देवताक रूपमे पुजल जाइत छथि। मिथलांचलक पहलवानलोकनि कुश्ती खेलवला अखाड़ामे प्रवेश करबासँ पहिने मोतीरामक स्मरण करव अनिवार्य होइत अछि। हिनक छोट भाइ बुधेसर बुद्धिक देवता छथि तँ हिनके परिवारक सदस्य अन्हेरबाँट माल-जालक देवता छथि। मिथिलांचलमे कोनो जातिक लोक किए नहि हुअए अपन गाइ, भैंसी, बकरी आदि गाभिन नहि भेलैक तथा दूधमे कोनो तरहक गड़बड़ी भेलैक तँ अन्हेरबाँटक पूजा करैत अछि। एतेक धरि जे यदि अनेरा छोड़ल गेल गाइ, भैंसी, बकरी आदि हेरा गेलैक, पता नहि लगलैक तँ अन्हेरबाँटक कबुला करैत अछि। मिथिलांचलमे एतेक प्रचलित आ व्यक्ति-व्यक्तिक श्रद्धा प्राप्त एहि देव-परिवारक पूजा हरेक साल वैशाख संक्रान्तिक अवसर पर होइत अछि। सलहेसक पूजाक लेल सलहेस गहबर (मन्दिर)क मुख्य पुजेगरी (धामी)क अगुवाइमे एकटा टोली बाजागाजा सहित सलहेसक गीत गबैत गामभरि घर-घर पहुँचैत अछि। आ गामभरिसँ गच्छ अनुसारक चन्दा संकलन करबाक पाछू एकटा रहस्य इहो अछि जे सार्वजनिक रूपमे चन्दा संकलन करैत अछि। एहि तरहेँ चन्दा संकलन कऽ कएल गेल पूजा सेहो सार्वजनिक होइत अछि आ सार्वजनिक रूपमे कएल गेल पूजामे उपस्थिति सेहो सामूहिक होइत छैक। चन्दा देलहा ठाममे पूजाक प्रसाद लेबाक लेल अथवा पूजा देखबाक लेल ककरो कोनो अशोकर्य नहि होइत छैक। एक दिस मिथिलांचलमे सलहेस भलाई कयनिहार देवताक रूपमे विश्वास कएल गेलाक कारणेँ प्रसादमे सभक रुचि रहैत छैक, सभ किओ पूजामे अपन सहभागिताकेँ नीक मानैत अछि तँ दोसर दिस सलहेसक पूजा तान्त्रिक विधिसँ होयबाक कारणेँ आकर्षक सेहो होइत छैक। पूजाक समयमे पूजा सामग्री तान्त्रिक विधि अनुसार सजाओल जाइत अछि, एकटा टोली सलहेसक गीत गबैत रहैत अछि आ भगतासभ (तीन-चारि गोटे) बेराबेरी गोसाईं खेलैत रहैत अछि। पूजाक समयमे, ककरो

परिवारमे कोनो तरहक बिघ्न-बाधा छैक तँ ओ सलामी रखैत अछि आ गोसाईं खेलनिहार सलामीबलाकेँ ओकर बिघ्न-बाधा हटएबाक लेल देवताक नामसँ अक्षत दैत छैक। एहन सलामी धयनिहार सेहो कम नहि रहैत छैक। एहि अक्षतसँ बिघ्न-बाधा हटबाक विश्वास कएल जाइत अछि। एहि तरहेँ सलहेसक पूजामे सहभागी भ' प्रसाद लेलासँ अपन परिवारक कल्याण होयबाक विश्वास आ पूजाक रमणीयताक संगहि पूजा सार्वजनिक रूपमे भेलाक कारणेँ सेहो सलहेस पूजाक स्थानपर भीड़ लागि जाइत छैक आ रमणीय सेहो होइत छैक।

मिथिलांचलक गाम-गाममे सलहेसक मन्दिर छैक। एकरा गहबर कहल जाइत छैक। गहबर प्रायः सार्वजनिक स्थानमे रहैत छैक। बाट-बटोही जे किओ ओहि ठाम पहुँचैत अछि अन्य देवी-देवता सदृश सलहेस प्रति सेहो श्रद्धा करैत अछि। गहबरक पुजारी दुसाध जातिक भगता होइत छैक। कहल जाइत छैक जे सलहेस जातिसँ दुसाध छलाह। ओही परम्परा अनुसार दुसाध जातिक लोक सलहेसकेँ अपन कुलदेवता मानैत आएल अछि। सलहेसकेँ हुनक वीर-गाथामे महिसौथाक राजा आ जातिक दुसाध कहल गेल छैक। ओना तँ, दुसाध किए कहल गेल छैक ताहि बात पर एकमत नहि देखल जाइत अछि। कहल जाइत छैक जे दुसाध शब्द दुःसाध्यक विकृत रूप अछि। दुःसाध्य एहि अर्थमे कहल जाइत अछि जे एहि जातिक लोक अत्यन्त शूर-वीर होइत छल। एकरासभकेँ पछारब अत्यन्त कठिन कार्य छलैक आ एही कारणसँ जितब कठिन रहल एहि शूर-वीरसभक जातिकेँ दुःसाध्य कहल गेल अछि। समयक संग ओहि वीर-पुरुषसभक सन्तानकेँ सम्बोधित कएल जाएबला शब्द सेहो विकृत भ' दुसाधक रूप लेलक आ राजनैतिक आकाससँ खसल दुःसाध्य शूर-वीर राजा सलहेसक सन्तान पाछू पानि नहि चलएबला दुसाध जातिमे परिणत भ' गेल। जे होइक, एहि ठाम दुसाध जातिक इतिवृत खोजबाक उद्देश्य नहि अछि, ई अनुसन्धानक विषय छैक आ एकर जिम्मेवारी अनुसन्धानकर्तालोकनिपर छोड़ब उचित अछि। एहिठाम दुसाध जातिक कुल-देवता आ मिथिलांचलमे भलाई कयनिहार देवताक रूपमे परिचित राजा सलहेस आ हुनक वीर गाथाक किछु झलक मात्र प्रस्तुत करबाक उद्देश्य अछि। सलहेसक वीर-गाथा मिथिलांचलमे अत्यन्त लोकप्रिय गाथा अछि। ओना तँ लोरिक, कारीख, नैकाबनिजारा, दिनाभद्री, अल्हा-रुदल, गोपीचन्द आदि गाथा सेहो प्रचलित अछि मुदा सलहेसक गाथा अधिक प्रचलित अछि। एकरा वीर-गाथाक रूपमे गबैयासभ ढ़ोलकपर सेहो गबैत अछि आ नाचक रूपमे प्रदर्शित करबाक सेहो प्रचलन छैक। मिथिलांचलमे अत्यन्त लोकप्रिय एहि लोकनाट्य मंडलीमे १५-२० गोटे रहैत अछि। मंच फैलगर स्थानपर राखल जाइत अछि। ५-६टा चौकी जोड़िक दूटा पर्दा लटकाओल जाइत अछि। बाजा बजौनिहार मंचक एक कातमे बैसैत अछि। ई नाच कए-कए दिन धरि चलैत अछि। एहि नाचमे ढ़ोलक, झालि, हारमोनियम, नगेड़ा आ करनट बाजाक प्रयोग होइत अछि। एहि नाचमे सलहेसक जन्म, कुसुमा मालिनीसंग सलहेसक प्रेम, मोतीराम आ बुधेसरक विवाह, सलहेस आ चन्द्रावतीक प्रसंग संगहि विभिन्न गढ़क लड़ाई आदि प्रसंग अबैत अछि मुदा कुसुमा-सलहेसक प्रसंग आ चन्द्रावती-सलहेस प्रसंग अधिक लोकप्रिय मानल जाइत अछि। चन्द्रावती-सलहेस प्रसंगक संक्षिप्त झलक प्रस्तुत अछि –

सलहेसक जन्म महिसौथामे भेल छलैन्हि। एक दिन सलहेसक मनमे पकड़ियाराज भ्रमण करबाक इच्छा भेलैन्हि। हुनका मोरंगवाली कुसुमा रोकबाक प्रयास कयलकैन्हि

मुदा ओ मानवला नहि भेलाह आ आठ दिनक वचनबद्धता प्रक्ट करैत ओहि दिस प्रस्थान कयलनि। सलहेस जखन पकड़ियागढ़क राज-फुलवारीमे पहुँचलाह, विश्राम करबाक इच्छा भेलैन्हि। ओ एकटा गाछतर बैस गेलाह। एहि समयमे पकड़िया गढ़क राजकुमारी चन्द्रावती फूल लोढ़ैत ओहि ठाम पहुँचलीह। राजकुमारी सलहेसकेँ देखि मोहित भऽ गेलीह आ सलहेससँ अपन पत्नीक रूपमे स्वीकार करबाक अनुरोध कयलनि –

पलक त खोलियौ राजा
नजरिसँ देखियौ पियबा हे।
छोटे जखन रहियै त
परन हम ठनलियै से
दरसन देलियै हो पियबा
राज पकड़ियामे ने हो।

सलहेस हुनकर बात पर सहमत नहि भेलाह आ जबाब देलनि –

कथी लागी सत हे सुन्दरी
हमर भंगठबै छ
कथी लागी कूलमे आइ
दगिया लगबै छ
जइयौ त जइयौ हे सुन्दरी
अपन महलियामे
हमहूँ त जाइछी हे सुन्दरी
अपना महलियामे।

सलहेसद्वारा राजकुमारीक अनुरोध अस्वीकार कएल गेला पर राजकुमारी सलहेस पर तमसा गेलीह आ अपन इज्जत लुटबाक प्रयास करबाक दोष लगौलनि। एहि बातक खबर प्राप्त भेलापर पकड़िया गढ़क राजा कुलेसर सलहेसकेँ पकड़ि अनबाक आदेश देलनि। सलहेसकेँ दरबारमे आनल गेलाक बाद राजा कुलेसर हुनका कठिन काराबास देब चाहैत छलाह मुदा चन्द्रावतीक आग्रहपर हुनका सजाय स्वरूप चन्द्रावतीक महलक चौकीदार बनाओल गेल। जखन सलहेस चौकीदार नियुक्त भेलाह, पुरान चौकीदार चोहरमलकेँ अवकास देल गेलैक। चोहरमल एकर बदला लेबाक प्रयत्न करए लागल आ एक दिन सेन्ह खनि क' चन्द्रावतीक महलमे प्रवेश कयलक आ धन-माल चोरौलक मुदा एतेकसँ ओकर तामस ठंढ़ा नहि भेलैक आ चन्द्रावतीक नुआ खोलि क' बेइज्जती करबाक प्रयास कयलक। चन्द्रावतीक आँखि खुजि गेलापर ओ हल्ला कयलनि आ चोहरमल भागि गेल। प्रात भेने शंकासँ सलहेशकेँ कठिन काराबासक सजाय देल गेल। एम्हर मोरंगवाली अपन पतिक बाट तकैत चिन्तित छलीह –

भेल भिनसरबा
ठाढ़ी दरबाजा मालिन
कर जोरि मिनती करैय
देवमुनिक नाम
सुनु इन्द्रासन छप्पन कोटि देवता जे

इन्द्र जन्म देलनि
छठि राति सोइरी घरमे ताकि
राखि देल सलहेस सन वर
हुनके कारण आँचर बन्हलौं
जन्म पाय सिन्दूर नहि केलौंह
जाहि स्वामी कारण
काँच बाँसक कोहबर बन्हलौं
लाल पलंग पर सेज ओछौलौं
सिकिया चीरिकें बेनिया बनौलहूँ
गौरी आवत नाहि ।

जखन सलहेसक पत्नी सलहेसकें चोरीक आरोपमे कारावास देल गेल जानकारी पओलनि, पतिकें छोड़एबाक लेल विदा भेलीह –

सोलहो सिंगार कैलन्हि
जादूक फूलड़ाली लेलैन्हि
रंग विरंगक फूल तोड़लैन्हि
काँचे लौंग अराँची तोड़लैन्हि
चलली स्वामीक उदेस ।

ओ पकड़िया गढ़ पहुँचलीह आ पकड़िया गढ़क राजा कुलेसर समक्ष विन्ती चढ़ौलनि – आठ दिनक लेल हमरा पतिकें छोड़ि दिअ, हमसभ चोरकें एहि समयमे दरबारमे हाजिर कए देब। राजा कुलेसर हुनक अनुरोध स्वीकार क' आठ दिनक लेल सलहेसकें छोड़ि देबाक आदेश देलनि। आब चोर पकड़बाक लेल आ सलहेसकें मुक्ति दिअएबाक लेल सलहेसक पत्नी नटिन वेष धारण कयलनि –

दौना मालिन दछिनक चीर पहिर लेलैन्ह
पाटी समारि लेलैन्ह
नैना काजर केलैन्ह
सीके सीके मिसि बैसौलैन्ह
हाथमे बाँक पहिर लेलैन्ह
पैरमे काड़ा पहिर लेलैन्ह
मांगमे तारा-चन्द्र टिकुली साटि लेलैन्ह
असले कमसीन बनि गेलीह ।

एहि प्रकार नटिन बनि सलहेसकें सिरकीमे नुका चोर पकड़बाक लेल विदा भेलीह। चोहरमलक गाममे ड़ेरा देलनि आ ओकरा फँसएबाक यत्न कयलनि। चोहरमलकें सलहेस ओहि ठाम रहल जानकारी नहि भेलैक आ नटिनकें एसगर बुझि ओकरा ड़ेरामे पहुँचल। नटिन ओकरा नशा पिया बेहोस कयलक आ सलहेस ओकरा बान्हि क' पकड़ियाक राजा कुलेसर समक्ष हाजिर कएलनि। चोहरमल अपन गल्ती

स्वीकार कयलक आ शर्त अनुसार कुलेसर सलहेसकेँ मुक्त कए देलक । सलहेस अपना घर घुरि अएलाह ।

ई प्रसंग एहि गाथाक महत्त्वपूर्ण मुदा एक प्रसंग मात्र अछि। एहि गाथामे उपर कहल गेल अनुरूप अनेक प्रसंग अछि। विद्वान्लोकनि एहि गाथाके चारि भागमे विभक्त कयने छथि जकरा किला कहल गेल अछि। ई किला थिक – महिसौथा किला, बाघगढ़ किला, योगिनी किला आ पकड़िया किला। विद्वान्लोकनि द्वारा चार किलामे विभक्त एहि गाथाकेँ गबैयासभ प्रसंग अनुसार विभिन्न नामसँ सम्बोधित करैत अछि।

एहि गाथामे अनेक स्थानक चर्चा अछि जाहिमेसँ अधिकांश स्थान मिथिला क्षेत्रमे अवस्थित अछि। गाथामे वर्णित सम्पूर्ण कथा आ स्थानक जानकारीक लेल गाथाक अध्ययन-श्रवण आवश्यक अछि। एहि ठाम तकर किछु झलक धरि प्रस्तुत अछि जाहिसँ राजा सलहेस प्रति सामान्य जानकारी प्राप्त होयबाक विश्वास अछि।

महिसौथा

राजा सलहेसक जन्मस्थल महिसौथा गढ़ नेपालक सिरहा जिलाक सिरहा बजारक उत्तरमे महिसौथा गाँवमे अछि। एहि गामक उत्तरमे मछुआही, दक्षिणमे सिरहा, मखनाहा, पुरुब दिस अरहा आ पश्चिममे बसबिट्टा अछि। लगभग दू हजार जनसंख्या रहल एहि गाममे पचास प्रतिशत यादव, पन्द्रह प्रतिशत दुसाध आ बाँकी पैंतीस प्रतिशतमे अन्य विभिन्न जातिक लोक रहैत अछि। राजा सलहेसक गढ़ महिसौथा गाँव विकास समितिक ४ नं. वार्डमे पड़ैत अछि। साबिक गढ़क लगपासमे बस्ती बसि गेलाक बादहु बस्तीक उत्तर-पुरुब दिस किछु भाग बाँचल छैक जतए एकटा मन्दिर छैक। ओहि मन्दिरमे राजा सलहेसक प्रतिमा हाथीपर स्थापित छैक। मोतीराम तथा बुधेसर बगलमे घोड़ापर सवार छथि। हाथीक एकदिस दीना मालिनी फूलक ड़ाली लेने ठाढ़ अछि। मंदिरक बगलमे दूटा छोट छोट आओर मन्दिर छैक जाहिमेसँ एकटामे राजमाता अर्थात् सलहेसक माताक पूजा होइत छैक आ दोसरमे कमलाजीक पूजा होइत छैक।

एही ठाम वीरगाथाक वीरनायक सलहेसक जन्म एकटा नागरिक परिवारमे भेल छलैन्हि। अपन शौर्य, वीरता आ पराक्रमसँ पाछू ओ राजा भेलाह आ एही महिसौथाकेँ अपन राजधानी बनौलनि।

ननमहरी पर्वत

जनकपुरसँ करीब ३२ किलोमीटर उत्तर-पूर्वमे ननमहरी पर्वत स्थित अछि। एहि पहाड़पर भगवान शंकरक एकटा मंदिर छैक। एखनहु श्रद्धालु भक्तजन ओहि मन्दिरमे पूजा करबाक लेल जाइत अछि।सलहेसक गाथामे कहल गेल अनुसार भगवान नारायण एहि शिवलिंगक पूजा अर्चनापर प्रतिबन्ध लगौने छलथि। प्रतापी सलहेस एहि प्रतिबन्धकेँ हटा देलनि आ आमजनताक लेल ई मन्दिर खोलि देलनि। राजा सलहेसद्वारा पूजा कएल गेल शिवलिंगक रूपमे एहि मन्दिरक महिमा एखनहुँ जनमानसमे व्याप्त रहल अछि।

छोपहा चौरी

सलहेस गाथामे एकटा प्रसंग एहन आएल अछि जे सलहेसक द्विरागमन करएबाक उद्देश्यसँ मोतीराम (भाइ) आ करिकन्हा (भगिना) सलहेसक सासुर विराटपुर जा रहल

छलैथि। एहि चौरीमे पहुँचलापर ओहि ठाम घास काटि रहल सात सय घसवाहिनी दुनूकेँ घेरि कए हँसी मजाक करए लागल।

गाथामे रहल वर्णन अनुसार दुनू गोटे तेहने अजेय योद्धा छलाह मुदा सलहेसक सासुरक ओहि घसवाहिनीसभक बीच निरीह भए गेलाह।

ई छोपहा चौरी भारतक मधुवनी शहरसँ करीब २९ किलोमीटर उत्तर पश्चिममे पड़ैत अछि। ई भारतक मधुबनी जिलाक बासोपट्टी थानाक विराटपुर गामक उत्तर तर्फक चौरी थिक। ई चौरी पूर्व-पश्चिममे करिब ४ किलोमीटर अछि मुदा उत्तर-दक्षिण चौड़ाइ कम छैक। एहि चौरीक दक्षिणमे विराटपुर, उत्तरमे फेंट परसा, पूर्वमे अरघवा आ कमलपुर तथा पश्चिममे भैयापट्टी आ सिरियापट्टी गाम अछि। चौरीक दक्षिणवारी कातसँ भैयापट्टी जाएवला कच्ची सड़क छैक जकरा किचका बान्ह कइल जाइत छैक।

विराटपुर

विराटपुर राजा सलहेसक सासुर छलैन्हि। विराटपुरक राजा विराटक पुत्री सत्यवतीसँ हुनक विवाह भेल छलैन्हि। सत्यवतीकेँ सती मांजरि आ सती सामरि सेहो कहल गेल अछि। एहिना सत्यवतीक तद्भव सतवरती सेहो गाथामे आएल अछि। राजा विराटकेँ नाम आ यशक आधारपर किछु गोटेकेँ मोरंगक विराटनगरक राजा सेहो कहैत सुनल जाइत अछि मुदा मोरंगक विराटनगर आ ओहि विराटनगरक राजा विराट सलहेसक सासुर पक्ष नहि अछि। सलहेसक ससुर राजा विराट विराटपुर गामक राजा छलाह जे एखन भारतक मधुबनी जिलाक बासोपट्टी प्रखण्डमे पड़ैत अछि। एहि गामक पश्चिम आ उत्तरमे बछराजा नदी बहैत अछि। संगहि गामक उत्तरमे सलहेस गाथाक प्रसिद्ध छोपहा चौरी आ तकर उत्तरमे फेंट परसा, दक्षिणमे नरैला, पूर्वमे राढ़ि अरघवा तथा पश्चिममे भैयापट्टी अछि। एहि गामक दक्षिण-पूर्वमे अद्यापि राजा विराटक गढ़ विद्यमान अछि। एहि ठाम राजा विराट रहैत छलाह आ हुनके नामपर एहि गामक नाम विराटपुर रहल ओहिठामक जनविश्वास अछि। गढ़ आब अन्दाजी अढ़ाइ एकड़ जतेक मात्र बाँकी अछि मुदा एखनहुँ गढ़क आसपास जंगल-झार विद्यमान अछि। गढ़मे शिवलिंग स्थापित अछि। ई लिंग मोटाइत गेल किम्बदन्ती ओहि ठाम प्रचलित अछि।

त्रिवेणी मेला

नेपालक उदयपुर जिलाक त्रिवेणी मेलाक प्रसंग सेहो सलहेस गाथामे आएल अछि। गाथा अनुसार सलहेसक बहिन बनसपती तथा सतखोलियाक राजा शैनिक एही त्रिवेणी मेलामे पहिल बेर भेंट भेल छलैन्हि । दुनू गोटे एक-दोसरप्रति आकर्षित भेल छलैथि आ पाछू विवाह भेल छलैन्हि। हिनके पुत्र करिकन्हा छलैन्हि जे मामा मोतीराम सदृश बलवान छलैथि आ सलहेस गाथामे विभिन्न गढ़क लड़ाइमे मामाकेँ सहयोग कयने छलैथि। त्रिवेणी मेलाक विषयमे किओ कोनो आन चर्चा नहि कयने छथि तेँ ई मेला सलहेसक समयसँ पहिनहिसँ चलैत आएल मानए पड़त। त्रिवेणी मेलाक बाटमे सलहेसक माय मदोदरीक सखी विमलाक निवास रहल कोकचिया गिधावर हकमाहा नामक स्थान पड़ैत अछि। कहल जाइत अछि जे एत धरि अबैत अबैत लोक हकमि जाइत छल तेँ एकर नाम हकमाहा पड़ल अछि।

राजा फूलवारी

राजा सलहेसद्वारा दैनिक अपन इष्टदेवताका पूजाक लेल फूल तोड़ल गेल फूलवारीकें राजा फूलवारी सलहेस फूलवारि वा फूलबाइर कहल जाइत अछि। नेपालक सिरहा जिलाक ई फूलवारी भारतीय सीमानक शहर लदनियाँसँ ३०-३२ किलोमिटर पूर्वमे तथा सिरहा जिलाक लहान बजारसँ ४ किलोमीटर पश्चिममे पड़ैत अछि। फूलवारीक उत्तरमे महेन्द्र राजमार्ग, दक्षिणमे जब्दी गम्हरिया, पूर्वमे जटियाही तथा पश्चिममे पठेरवा वैकुण्ठपुर पड़ैत अछि। एखन ई फूलवारी लगभग ३०-३५ एकड़मे अछि। फूलवारीक बीचमे सलहेसक गहबर अछि। गहबरमे राजा सलहेस हाथीपर सवार छथि। गहवरक नजदीके हारभ नामक एकटा गाछ अछि। लोक विश्वास अनुसार प्रत्येक वर्ष वैशाख संक्रान्तिक दिन दीना मालिनी फूल बनि कए ओही गाछ पर लटकैत अछि। अर्थात प्रत्येक वर्ष वैशाख १ गतेक दिन ओहि हारभ गाछमे माला सनक एकेटा फूल फुलाइत अछि। एही फूलक दर्शन करबाक लेल लाखोक संख्यामे लोक जमा होइत अछि आ भारी मेला लगैत छैक। हारभ गाछक नजदीके एकटा परती छैक जकरा अखाड़ा चौर कहल जाइत अछि। लोक विश्वासक अनुसार सलहेसक भाइ मोतीराम एही सिलहट अखाड़ापर अपन सात सय कुश्तीबाजसभक संग कुश्ती खेलैत छलाह।

पकरिया

पकरिया गढ़ जतए सलहेसकें चोरीक आरोप लागल छलैन्हि, सिरहा जिलामे पड़ैत छैक। एहि जिलाक भदैया गाँव विकास समितिक ई गढ़ लहान बजारसँ १० किलोमीटर उत्तरमे पहाड़क कातमे अछि। लहानसँ ४-५ किलोमीटर पूर्वमे कन्चनगढ नामक गाम अछि। सम्भवत: सलहेस गाथामे वर्णन कएल गेल पकरियाक राजभवन एही कन्चनगढमे छल। लहानसँ पकरिया जएबाक बाटमे चोहरवा चौक अछि आ पकरियाक उत्तरमे सीताकुण्ड पहाड अछि जकर सलहेस गाथामे उल्लेख भेल अछि पकरिया गढक नजदीके गाथामे उल्लेख भेल कमलदह आ मानिकदह अछि। एहि पकरिया गढक तीन दिस पहाड आ दक्षिणमे समतल मैदान अछि। एहि गढमे एकटा पोखरि अछि आ पोखरिक मोहारपर राजा कुलेसरक मन्दिर छैक जतए हुनक पूजा होइत अछि। मन्दिरमे घोडापर सवार सलहेसक मूर्ति सेहो छैक मुदा पकरियामे सलहेसकें चौकीदारक रूपमे मानल गेलाक कारणें अलग पूजा नहि होइत अछि। पकरियाकें बनतरी इलाका कहल जाइत अछि। आ एहि ठाम प्रत्येक वर्ष मेष संक्रान्तिक अवसर पर मेला लगैत अछि।

पतारि

सलहेस गाथामे उल्लेख भेल राजा कुलेसरक छोट भाइ हरिसिंहदेवक निवास एहि ठाम रहल विश्वास कएल जाइत अछि। एहि ठाम हरिसिंहदेवक गहबर अद्यापि विद्यामान अछि। एहि ठाम सन्तानहीन लोक सन्तानक कामनासँ अबैत अछि। सन्तानक कामना रहल लोक राजा फूलवारीक दर्शन पश्चात् एहि ठाम अबैत अछि आ एहि ठामक पोखरिमे डुब्बी मारि गामक सिमाना नघैत अछि। सिमाना टपि गेला पर कपडा बदलैत अछि आ अपना घर जाइत अछि। जनविश्वास अनुसार एहि पतारि पोखरिमे विधिपूर्वक स्नान कएलासँ सन्तान प्राप्ति होइत छैक।

मानिक दह

कहल जाइत अछि जे सलहेस प्रत्येक दिन मानिक दहमे स्नान क' फूलवारीमे फूल तोडि महिसौथा जाइत छलाह आ राजमाता एवं कमलाजीक पूजा करैत छलाह। दहक पश्चिम किनारपर एकटा गहबर अछि जतए सलहेसक प्रतिमा स्थापित छैक। ओहि ठामक निवासी हिनक पूजा करैत अछि। मानिक दहमे सेहो वैशाख संक्रान्तिक दिन मेला लगैत अछि। कहल जाइत अछि जे सलहेस अपने एहि दहक निर्माण कएने छलैथि।

एहि तरहें राजा सलहेसक महिमा मिथिलांचल भरि व्याप्त अछि। प्राय: सभ गाममे सलहेसक गहबर अछि संगहि सलहेस गाथाक प्रमुख स्थानसभ एखनहुं गढक रूपमे विद्यामान अछि आ ओहि ठाम सलहेस तथा सम्बन्धित पात्रसभक मंदिर अछि। एही गढसभक आध्यात्मिक महत्त्व भेलासँ विपत्तिमे पडल लोक अपन दु:ख निवारण हेतु एहि ठाम अबैत अछि, कबुला करैत अछि आ दु:ख निवारण भेलापर चढ़ौना चढ़बैत अछि। एहन लोक सालोभरि अबैत रहैत अछि। ई गढ़सभ अधिकांश नेपालेमे पडैत अछि मुदा किछु भारतमे सेहो पडैत अछि। अधिकांश गढमे वार्षिक मेला लगैत अछि। सलहेसक गहबरसभमे लागएवला मेलामे सभसँ पैघ मेला राजा फूलवारीक मेला थिक. आन ठामक मेला जकाँ दू-चारि-दस गामक लोक मात्र फूलवारी मेलामे नहि रहैत अछि। एहि ठामक मेलामे नेपालक दूर-दूर सँ तँ लोक अबितहि अछि, भारतक श्रद्धालुसभ सेहो ओतबे संख्यामे अबैत अछि। लाखोंक संख्यामे आबएवला तीर्थयात्रीसभक सुविधा लेल स्थानीय संघ-संस्था सक्रिय रहैत अछि आ बस व्यवसायी ओहिना सतर्क रहैत अछि। व्यापरी लेल ई मेला ओतबे महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा दु:खक बात ई अछि जे संरक्षणक अभावमे एहि फूलवारी क्षेत्रक प्राकृतिक सम्पदा दिन-दिन घटैत जा रहल अछि। फूलवारी क्षेत्रक जंगल जडीबूटी आ चिडै चुनमुन सम्बन्धी अध्ययन कयनिहारक लेल आकर्षक केन्द्र बनि सकैत अछि। तहिना पर्यटकीय सुविधा उपलब्ध भेलासँ विदेशी पर्यटकसभक लेल ओहने महत्त्वपूर्ण होयबाक सम्भावना रहल एहि क्षेत्रक विकासमे सभ पक्षक ध्यान जाएब जरुरी अछि। प्राचीन सम्पदा सभ ठामक महत्त्वपूर्ण होइत अछि मुदा ई फूलवारी क्षेत्र राष्ट्रीय पर्यटनमे सहयोग कए सकबाक कारणें एहि दिस विशेष ध्यान जाएब बान्छनीय अछि।

जनकपुरधाम

सलहेसगाथा : मिथिलाको साँस्कृतिक सम्पदा

सङ्क्रान्ति भनेको प्रत्येक महीनाको शुरुको दिन हो। अर्थात् यो सङ्क्रान्ति एक वर्षमा बाह्रवटा हुन्छ। यसमध्ये एउटा सङ्क्रन्ति महीनाको शुरुवात त छ नै वर्षको पनि शुरुवात हो। त्यो सङ्क्रान्ति वैशाख सङ्क्रान्ति हो। नेपाली पञ्चाङ्गअनुसार वैशाख सङ्क्रान्ति अर्थात् वैशाख एक गते वर्षको पहिलो दिन हो। यस हिसाबले वैशाख महीनाको सङ्क्रान्ति नेपाली मात्रको लागि एउटा उत्सवको दिन हो। यस्तो परम्परा नेपालमा मात्र नभई विश्वभरि नै प्रचलित छ। प्रत्येक देशमा त्यहाँको पञ्चाङ्गअनुसार हुने वर्षको पहिलो दिन राष्ट्रिय पर्वको रूपमा लिइन्छ र त्यस दिन राष्ट्रव्यापी रूपमा सार्वजनिक विदा दिइन्छ। यो पर्व मनाउने तौरतरीका भने फरकफरक छ। कुनै ठाउँमा यस दिनलाई रमाइलो र मोजमज्जाको दिनको रूपमा लिइन्छ भने कुनै क्षेत्रमा यसलाई शुभ–साइतको रूपमा राम्रो कामको शुरुवात गर्ने दिनको रूपमा लिइन्छ। नेपालको वर्षको पहिलो दिन अर्थात् वैशाख सङ्क्रान्तिलाई नेपालीले राष्ट्रिय पर्वका साथै धार्मिक तिथिको रूपमा पनि लिएको पाइन्छ। वैशाख सङ्क्रान्तिका दिन नेपालका कैयौं जातका मानिसहरूले कुलपूजा गरी मनाउँछन् भने यस दिन नेपालका विभिन्न क्षेत्रमा विभिन्न धार्मिक उत्सव गर्ने पनि चलन छ। मिथिलाञ्चल क्षेत्रमा यस दिनको अझ ठूलो महत्त्व छ। यो दिन मिथिलाञ्चलको जुडशीतल पर्वको दिन हो। क्षेत्रीय हिसाबले धार्मिक चाडपर्वहरू विभिन्न समयमा भै रहनु एउटा निरन्तर प्रकृया हो। यस निरन्तर प्रकृयामा पनि कुनै चाडपर्वको व्यापकता त्यस पर्वसँग गाँसिएको आध्यात्मिक विश्वासहरूका कारणले विशिष्ट स्थान ओगटेको हुन्छ। यस्ता विशिष्टता हासिल गरेका समाजिक चाडपर्वहरूमध्ये जुडशीतल मिथिलाञ्चलको ठूलो चाड हो र यसको विशेषता पनि आफ्नै खालको छ। यो पर्व मनाउने तरीका पनि अनौठै छ। यस दिन मिथिलाञ्चलका नागरिकले आफूभन्दा सानोको टाउकोमा पानी हाली शीतलताको आशीर्वाद दिन्छन् भने वोटबिरुवा समेतलाई पानी दिई तिनको दीर्घायुको कामना गर्दछन्। युवाहरू फागुमा रङ्ग-अबिर खेलेझैं यस दिन हिलो र पानीले एक-अर्कालाई छ्यापाछ्याप गरी खेल्छन्। यस पर्वको अझ रमाइलो एउटा प्रसङ्ग त के छ भने गाउँमा घरज्वाइँ भै बसेकालाई लदनी बूढी घोडी वा विकलाङ्ग घोडीमा चढाई हिलोपानीका साथै चित्रा-डोका र कनैलफूलका फूलेकै हाँगाहरूले महादेवको जस्तो विचित्रको रूप बनाई गाउँ घुमाउँछन्। यस बेला

शिवगण जस्तै हिलोले पोतिएका युवाहरूले घोडीको अघिपछि चैतावर गाउँदै थपडी तथा लौरी बजाउँदै गाउँ घुमाएको दृश्य देख्दा एक छिनलाई आफ्नो दुःख नबिर्सिने मानिसै हुँदैन। यसरी यस दिन टाउकोमा पानी हाली शीतलताको आशीर्वाद दिनाले र हिलो खेल्नाले मानिस वर्षभरि स्वस्थ रहन्छ र सुख शान्ति पाउँछ भन्ने विश्वास गरिन्छ। वर्षको शुरुदिन शुभ-साइतको दिनको रूपमा लिने माथि उल्लेख भएअनुसार यस दिन विभिन्न क्रियाकलापहरू गरिन्छ। जसमध्ये सङ्कटमा परेकालाई उद्धार गर्ने देउताको रूपमा मिथिलाञ्चलमा विश्वास गरिएको सलहेसको पूजा पनि एक हो।

सलहेस मिथिलाञ्चलमा निकै प्रभावशाली देवताको रूपमा आदरणीय छन्। मिथिलाञ्चल जगत्‌जननी जानकीको माइती हो। जगत्‌जननी जानकी र उनका दुलहा रामचन्द्र लक्ष्मी र नारायणका रूपमा पुजिन्छन्। सम्पूर्ण विश्वमा रहेका हिन्दूहरू रामजानकीको पूजा गर्ने गर्दछन्, तर रामजानकीको परिवारका अन्य सदस्य देवताको रूपमा पुजिएका छैनन्। जहाँसम्म आदरको कुरो हो दुवै परिवार आदरणीय छन्, तर सलहेस मिथिलाञ्चलका यस्ता देवता हुन् जसका सम्पूर्ण परिवार छुट्टाछुट्टै देवताका रूपमा पुजिन्छन्। अर्थात् सलहेस-परिवार देवताहरूको परिवार हो। यसमध्ये सलहेस सबैभन्दा प्रमुख हुन् र यिनलाई प्रमुख देउताको रूपमा पुजिन्छ भने यिनका माइला भाइ मोतीराम पहलवानहरूको देवताको रूपमा पुजिन्छन्। मिथिलाञ्चलका पहलवानहरू कुस्ती खेल्ने अखाडामा पस्नु अघि मोतीरामको स्मरण गर्नु अनिवार्य हुन्छ। यिनका कान्छा भाइ बुधेसर बुद्धिका देउता हुन्। सलहेसकी बहिनी वनस्पति वनदेवीको रूपमा पुजित छिन् भने उनकै परिवारका सदस्य अन्हेरबाँट गाई-वस्तुका देवता हुन्। मिथिलाञ्चलमा कुनै जातका मान्छे किन नहोउन् तिनले पालेका गाई भैंसी, बाख्रा आदिले ब्याएन अथवा दूध दिएन भने अन्हेरबाँटको पूजा हुन्छ। कतिसम्म भने छाडा छोडिएका गाई, भैंसी, बाख्रा आदि हरायो, फेला परेन भने अन्हेरबाँटकै भाकल गरिन्छ। मिथिलाञ्चलमा यति प्रचलित र व्यक्ति-व्यक्तिबाट श्रद्धा पाएका यस देव-परिवारको पूजा हरेक वर्ष वैशाख सङ्क्रान्तिको अवसरमै गरिन्छ। सलहेसको पूजा गर्न सलहेस गहबर (मन्दिर) का मुख्य धामीको अगुवाइमा एउटा टोली बाजागाजासहित सलहेसको गीत गाउँदै गाउँभरिकै प्रत्येक घरदैलोमा पुग्छ र गाउँभरिबाट नै गच्छेअनुसारको चन्दा सङ्कलन गर्दछ। यसरी चन्दा सङ्कलन गर्नुको पछाडि एउटा रहस्य के पनि छ भने सार्वजनिक रूपमा चन्दा सङ्कलन गरी गरिएको पूजा सार्वजनिक हुन्छ र सार्वजनिक रूपमा गरिएको पूजामा उपस्थिति पनि सामूहिक हुन्छ। आफूले चन्दा दिएको ठाउँमा पूजाको प्रसाद लिन वा पूजा हेर्न कसैले कुनै अप्ठ्यारो मान्नु पर्दैन। एकातिर मिथिलाञ्चलमा सलहेस भलो गर्ने देवताको रूपमा विश्वास गरिएकाले सबैले प्रसाद लिन रुचाउँछन् भने सबैले पूजामा आफ्नो सहभागितालाई राम्रो ठान्छन्, अर्कोतिर सलहेसको पूजा तान्त्रिक विधिअनुसार हुने हुनाले आकर्षक पनि हुन्छ। पूजाको समयमा पूजासामग्री तान्त्रिक विधिअनुसार सजाइएको हुन्छ भने एउटा टोलीले सलहेसको गीत गाउँदै गरेको हुन्छ र धामीहरू (तीनचारजना) पालैपालो देवता खेल्ने (काम्ने) काम गर्दै हुन्छन्। पूजाको समयमा, कसैको परिवारमा कुनै किसिमको विघ्नबाधा रहेछ भने उसले सलामी (सुपारी) राख्छ र देउता खेल्नेले सलामी राख्नेलाई उसको विघ्नबाधा हटाउन देवताको तर्फबाट अक्षता दिन्छ। यस्तो सलामी राख्नेको सङ्ख्या पनि निकै नै रहेको हुन्छ। यस अक्षताले विघ्नबाधा हट्ने विश्वास गरिन्छ। यसप्रकार सलहेसको पूजामा सहभागी भै प्रसाद लिँदा आफ्नो परिवारको

कल्याण हुने विश्वास र पूजा हेर्न रमाइलो पनि हुने साथै पूजा सार्वजनिक रूपमा गरिएकोले पनि सलहेस पूजा हुने ठाउँमा ठूलो घुइँचो र रमाइलो हुन्छ ।

मिथिलाञ्चलको गाउँगाउँमा सलहेसको मन्दिर रहेको छ । यसलाई गहबर भनिन्छ । गहबर प्रायः सार्वजनिक थलोमै हुन्छ । आउनेजाने जो कोही त्यहाँ पुग्दा अन्य देवीदेउताजस्तै सलहेसप्रति पनि श्रद्धा गर्दछन् । गहबरका पुजारी दुसाध जातिका भगता (धामी) हुन्छन् । भनिन्छ, सलहेस दुसाध जातिका थिए । त्यही परम्परानुसार दुसाध जातिका मानिसहरूले सलहेसलाई आफ्नो कुल-देवता मानिआएका हुन् । सलहेसलाई उनको वीरगाथामा महिसौथाका राजा र जातका दुसाध भनिएको छ । हुन त, दुसाध किन भनिएको हो भन्ने कुरामा एक मत देखिँदैन । भनिन्छ, दुःसाध्य शब्दको विकृत रूप दुसाध हो । दुःसाध्य यस अर्थमा भनिएको हो कि यसजातका मानिसहरू अत्यन्त शूर-वीर हुन्थे । यिनलाई पछार्न असाध्यै गाह्रो काम थियो र यही जित्न नसकिने शूर-वीरहरूको जातलाई दुःसाध्य भनिएको हो । समय सँगसँगै ती वीर-पुरुषहरू कालको गलामा समाए र दुःसाध्य भनिएका ती वीर-पुरुषहरूका सन्तानलाई बोलाउने शब्द पनि विकृत भएर दुसाधको रूप लियो र राजनैतिक आकाशबाट झरेका दुःसाध्य शूर-वीर राजा सलहेसका सन्तान पछि पानी नचल्ने दुसाध जातिमा परिणत हुन पुगे । जेहोस्, यहाँ दुसाध जातिको नालीबेली खोज्ने प्रयास गरेको होइन । यो अनुसन्धानको विषय हो र यसको जिम्मा अनुसन्धानकर्ताहरूलाई नै छोड्नु पर्छ । अहिले दुसाध जातिका कुल-देवता र मिथिलाञ्चलमा भलो गर्ने देवताको रूपमा परिचित राजा सलहेस र उनको वीरगाथाको केही झलक मात्र प्रस्तुत गर्न खोजिएको हो । सलहेसको वीरगाथा मिथिलाञ्चलमा अत्यन्तै लोकप्रिय गाथा हो । हुन त लोरिक, कारीख, नैका बनिजारा दिनाभद्री, आल्हारुदल गोपीचन्द आदि गाथाहरू पनि प्रचलित छन्, तर सलहेसको गाथा बढी प्रचलित भएको देखिन्छ । यसलाई वीरगाथाको रूपमा गायकहरू ढोलक बजाएर पनि गाउँछन् भने नाचको रूपमा प्रदर्शित गर्ने पनि चलन छ । मिथिलाञ्चलमा अत्यन्त लोकप्रिय यस लोकनाट्य मण्डलीमा १५-२० जना हुन्छन् । मञ्च खुला स्थानमा बनाइन्छ । ५-६ वटा चौकी (फल्याक ठोकेको खाट) जोडेर दुईवटा पर्दा झुन्ड्याइएको हुन्छ । बाजा बजाउनेहरू मञ्चको एकातिर बस्छन् । यो नाच हप्तौं दिनसम्म चल्छ । यस नाचमा ढोलक, झ्याली, हारमोनियम, नगरा र करनट बाजाको प्रयोग गरिन्छ । यस नाचमा सलहेसको जन्म, कुसुमा मालिनीसँग सलहेसको प्रेम, मोतीराम र बुधेसरको, विवाह सलहेस र चन्द्रावतीको प्रसङ्गका साथै विभिन्न गढको लडाइँ आदि प्रसङ्ग आउँछ, तर कुसुमा सलहेसको प्रसङ्ग र चन्द्रावती-सलहेस प्रसङ्ग अधिक लोकप्रिय मानिन्छ । चन्द्रावती-सलहेस प्रसङ्गको संक्षिप्त झलक प्रस्तुत छ –

सलहेसको जन्म महिसौथामा भएको थियो । एक दिन सलहेसको मनमा पकडिया राज भ्रमण गर्ने इच्छा भयो । उनलाई मोरङ्गवाली कुसुमाले रोक्ने प्रयास गरिन्, तर उनले मानेनन् र आठ दिनको भाखा गरी त्यसतर्फ लागे । जब सलहेस पकडिया गढको राज-फूलबारीमा पुगे, एकछिन आराम गर्ने इच्छा जाग्यो । उनी त्यहीँ एउटा रूखमुनि बसी रहेका थिए, यत्तिकैमा पकडिया गढकी राजकुमारी चन्द्रावती फूल टिप्ने क्रममा त्यहाँ पुगिन् । राजकुमारी सलहेसलाई देखी मोहित भइन् र आफूलाई पत्नीको रूपमा स्वीकार गर्न सलहेसलाई अनुरोध गरिन् –

पलक त खोलियौ राजा
नजरिसँ देखियौ पियबा हे ।
छोटे जखन रहियै त
परन हम ठनलियै से
दरसन देलियै हो पियबा
राज पकडियामे ने हो ।

सलहेस उनको कुरामा सहमत भएनन् र भन्न थाले –

कथी भागील सत हे सुन्दरी
हमर भंगठबै छ
कथी लागी कूलमे आइ
दगिया लगबै छ
जइयौ त जइयौ हे सुन्दरी
अपन महलियामे
हमहूँ त जाइछी हे सुन्दरी
अपना महलियामे ।

सलहेसले राजकुमारीको अनुरोध अस्वीकार गरेपछि राजकुमारी सलहेसमाथि खनिइन् र आफ्नो इज्जत लुट्ने प्रयास गरेको आरोप लगाइन् । यस कुराको जानकारी पकडिया गढका राजा कुलेसरले पाएपछि उनले सलहेसलाई समातेर ल्याउने आदेश दिए । सलहेस दरबारमा ल्याइएपछि उनलाई कठिन कारावास दिने राजा कुलेसरको इच्छा थियो, तर चन्द्रावतीको आग्रहमा उनलाई सजाय स्वरूप चन्द्रावतीको महलको चौकीदार बनाइयो । जब सलहेस चौकीदार नियुक्त भए पुरानो चौकीदार चोहरमललाई नोकरीबाट अवकास दिइयो । चोहरमलले यसको बदला लिन खोज्यो र सुरुङ बनाएर चन्द्रावतीको सुत्ने कोठामा प्रवेश गरी धनमाल लुट्यो, तर धनमालले मात्र उनको रिस मेटिएन र उनले चन्द्रावतीको लुगा खोली बेइज्जती गर्ने प्रयास गर्‍यो । चन्द्रावतीको आँखा खुलेपछि उनी कराइन् र चोहरमल भाग्यो । भोलिपल्ट शङ्का गरी सलहेसलाई कठिन कारावासको सजाय दिइयो । यता मोरङ्गवाली आफ्नो पति कहिले आउने भनी चिन्तित थिइन्–

भेल भिनसरबा
ठाढि दरबाजा मालिन
कर जोरि मिनती करैय
देवमुनिक नाम
सुनु इन्द्रासन छप्पन कोटि देवता जे
इन्द्र जन्म देलनि
छठि राति सोइरी घरमे ताकि
राखि देल सलहेस सन वर
हुनके कारण आँचर बन्हलौं
जन्म पाय सिन्दूर नहि केलौंह
जाहि स्वामी कारण
काँच बाँसक कोहबर बन्हलौं

लाल पलंग पर सेज ओछौलौं
सिकिया चीरिकें बेनिया बनौलहुँ
गौरी आवोत नाहि ।

जब सलहेसको पत्नीले सलहेसलाई चोरीको आरोपमा कारावास दिइएको थाहा पाइन्, पतिलाई छुटाउन रमाना भइन्–

सोलहो सिंगार कैलन्हि
जादूक फूलडाली लेलैन्हि
रंग विरंगक फूल तोड़लैन्हि
काँचे लौंग अराँची तोड़लैन्हि
चलली स्वामीक उदेस ।

उनी पकड़िया गढ पुगिन् र पकड़िया गढका राजा कुलेसर समक्ष बिन्ती चढाइन्– आठ दिनको लागि मेरो पतिलाई छोड़ि दिनोस् हामी चोरलाई यस समयभित्र दरबारमा हाजिर गरि दिन्छौं । राजा कुलेसरले उनको अनुरोध स्वीकार गरी आठ दिनको लागि सलहेसलाई छोड़िदिने आदेश दिए । अब चोर समात्न र सलहेसलाई मुक्ति दिलाउन उनकी पत्नीले नटिन (एक जाति) को भेष बनाइन्–

दौना मालिन दछिनक चीर पहिर लेलैन्ह
पाटी समारि लेलैन्ह
नैना काजर केलैन्ह
सीके सीके मिसि बैसौलैन्ह
हाथमे बाँक पहिर लेलैन्ह
पैरमे काड़ा पहिर लेलैन्ह
मांगमे तारा-चन्द्र टिकुली साटि लेलैन्ह
असले कमसीन बनि गेलीह ।

यसरी नटिनको भेष बनाई सलहेसलाई सिरंकी (टेन्टजस्तो)-मा लुकाई चोर समाउन रमाना भइन् । चोहरमल भएको ठाउँमा उनले डेरा गरिन् र उसलाई फँसाउने प्रयास गरिन् । चोहरमलले सलहेस त्यहाँ भएको थाहा पाएन र एक्ली नटिन देखि आकर्षित भई उनको डेरामा पुगे । नटिन भेषधारी मोरङ्गवालीले उनलाई नशा खुवाई वेहोस पारिन् र सलहेसले उनलाई बाँधी पकड़ियाका राजा कुलेसर समक्ष पुऱ्याए । चोहरमलले आफ्नो गल्ती स्वीकार गऱ्यो र शर्तअनुसार कुलेसरले सलहेसलाई मुक्त गरिदिए र उनी आफ्नो घर फर्के ।

यो प्रसङ्ग यस गाथाको महत्त्वपूर्ण तर एक प्रसङ्ग मात्र हो । माथि उल्लेख भएअनुसार यस गाथामा अनेक प्रसङ्ग आएको छ । सलहेसगाथालाई विद्वान्हरूले चार भागमा विभक्त गरेका छन् जसलाई किल्ला भनिएको छ । यी चार किल्ला हुन्– महिसौथा किल्ला, बाघगढ किल्ला, योगिनी किल्ला र पकड़िया किल्ला । विद्वान्हरूद्वारा चार भागमा वर्णन गरिएको यस गाथालाई गाइनेहरूले प्रसङ्गअनुसार विभिन्न नाम दिएको छ ।

यस गाथामा अनेक स्थानहरूको नाम आएको छ । जसमध्ये अधिकांश स्थान

मिथिला क्षेत्रभित्र रहेको देखिन्छ। गाथामा वर्णन गरिएको सम्पूर्ण कथा र ठाउँ थाहा पाउन गाथाकै अध्ययन-श्रवण गर्नु पर्ने हुन्छ। यहाँ त्यसको केही झलकसम्म प्रस्तुत गर्न खोजिएको हो जसबाट राजा सलहेसप्रति सामान्य जानकारी पाठकले पाउने विश्वास गरिन्छ।

महिसौथा

राजा सलहेसको जन्मस्थल महिसौथा गढ नेपालको सिरहा जिल्लाअन्तर्गत सिरहा बजारसँगै उत्तरपट्टि महिसौथा गाउँमा रहेको छ। यस गा.वि.स.को उत्तरमा मछुआही, दक्षिणमा सिरहा, मखनाहा, पूर्वमा अरहा तथा पश्चिममा बसबिट्टा रहेको छ। करिब दुईहजार जनसङ्ख्या रहेको यस गाउँमा पचास प्रतिशत जति यादव, पन्ध्र प्रतिशत दुसाध तथा बाँकी पैंतीस प्रतिशतमा अन्य विभिन्न जातिका मानिसहरू बस्छन्। राजा सलहेसको गढ महिसौथा गा.वि.स.को वडा नं.४ मा पर्छ। साबिक गढको वरिपरि अहिले बस्ती बसी सकेको भए तापनि बस्तीको उत्तरपूर्वतर्फ केही भाग बाँचेको छ जहाँ एउटा मन्दिर छ। त्यस मन्दिरमा राजा सलहेसको प्रतिमा हात्ती माथि स्थापित छ। मोतीराम तथा बुधेसर छेउमा घोड़ामा सवार छन्। हात्तीको एकातिर दीना मालिनी फूलको डाली लिई उभिएकी छिन्। मन्दिरको छेउमा दुईवटा स-साना अर्को मन्दिरहरू छन् जसमध्ये एउटामा राजमाता अर्थात् सलहेसकी आमाको पूजा हुन्छ भने अर्कोमा कमलाजीको पूजा हुन्छ।

यही स्थानमा वीरगाथाका वीरनायक सलहेसको जन्म एउटा नागरिक परिवारमा भएको थियो। आफ्नो शौर्य, वीरता र पराक्रमले पछि उनी राजा भए र यही महिसौथालाई आफ्नो राजधानी बनाएका थिए।

ननमहरी पर्वत

जनकपुरधामदेखि करिब ३२ किलोमिटर उत्तरपूर्वमा ननमहरी पर्वत रहेको छ। यस पहाडमा भगवान् शङ्करको एउटा मन्दिर रहेको छ। अहिले पनि श्रद्धालु भक्तजन त्यस मन्दिरमा पूजा गर्न जान्छन्। सलहेसको गाथामा भनिएअनुसार भगवान् नारायणले यस शिवलिङ्गको पूजा-अर्चनामा प्रतिबन्ध लगाएका थिए। प्रतापी सलहेसले यस प्रतिबन्धलाई हटाई दिए र आमजनताको लागि यो मन्दिर खुला गरियो। राजा सलहेसले पूजा गरेको शिवलिङ्गको रूपमा यस मन्दिरको महिमा अझै पनि जनमानसमा व्याप्त रहेको छ।

छोपहा चौरी (फाँट)

सलहेसगाथामा एक प्रसङ्ग यस्तो आएको छ कि सलहेसको द्विरागमन गराउने उद्देश्यले मोतीराम (भाइ) र करिकन्हा (भानिज) सलहेसको ससुराली विराटपुर जाँदै थिए। यस फाँटमा आई पुगेको बेला त्यहाँ घाँस काटिरहेका सातसय घँसिनीहरूले ती दुबैलाई घेरर हँसीमजाक गर्न थाले। गाथामा वर्णन गरिएअनुसार यी दुवैजना अजेय योद्धा थिए, तर सलहेसको ससुरालीका ती घँसिनीहरूको माझमा निरीह भए।

यो घोपहा चौरी भारतको मधुवनी शहरबाट करिब २९ किलोमिटर उत्तर-पश्चिममा पर्छ। यो भारतकै मधुबनी जिल्लाको बासोपट्टी थानाको विराटपुर गाउँको उत्तरपट्टीको फाँट हो। यो फाँट पूर्व-पश्चिममा करिब ४ किलोमिटर लामो छ, तर

उत्तर-दक्षिण चौडाइ भने कमै छ। यस फाँटको दक्षिणमा विराटपुर उत्तरमा फेट परसा, पूर्वमा अरघवा र कमलपुर तथा पश्चिममा भैयापट्टी र सिरियापट्टी रहेको छ। फाँटको दक्षिणतिरवाट भैयापट्टी जाने कच्ची सडकलाई किचका बाँध भनिन्छ।

विराटपुर

विराटपुर राजा सलहेसको ससुराली थियो। विराटपुरका राजा विराटकी छोरी सत्यवतीसँग उनको विवाद भएको थियो। सत्यवतीलाई सती माजरि र सती सामरि पनि भनिएको छ भने सत्यवतीको तद्भव सतबरती पनि गाथामा आएको छ। राजा विराटलाई नाम र चल्तीको आधारमा कसैकसैले मोरङ्गको बिराटनगरका राजा भनेको पनि सुनिन्छ, तर मोरङ्गको बिराटनगर र त्यस बिराटनगरका राजा विराट सलहेसको ससुराली पक्ष होइन। सलहेसको ससुरा राजा विराट विराटपुर गाउँका राजा थिए जो अहिले भारतको मधुबनी जिल्लामा बासोपट्टी प्रखण्डमा रहेको छ। यस गाउँको पश्चिम र उत्तरमा बछराजा नदी बगेको छ। साथै गाउँको उत्तरमा सलहेसगाथाको प्रसिद्ध छोपहा चौरी र त्यसको उत्तरमा फेट परसा दक्षिणमा नरैला, पूर्वमा रादि अरघवा तथा पश्चिममा भैयापट्टी रहेको छ। यस गाउँको दक्षिण पूर्वमा अद्यापि राजा विराटको गढ विद्यमान छ। यस ठाउँमा राजा विराट बस्थे र उनकै नामबाट यस गाउँको नाम विराटपुर रहेको त्यहाँको जनविश्वास रहेको छ। गढ अब अन्दाजी साढे दुई एकड़ जति मात्र बाँकी छ, तर अहिले पनि गढ भएको ठाउँमा जङ्गलझार विद्यमान छ। गढमा शिवलिङ्ग स्थापित छ। यो लिङ्ग क्रमश: मोटाउँदै गएको छ भन्ने किंवदन्ती त्यहाँ रहेको पाइन्छ।

त्रिवेणी मेला

नेपालको उदयपुर जिल्लामा लाग्ने त्रिवेणी मेलाको प्रसङ्ग पनि सलहेसगाथामा आएको छ। गाथाअनुसार सलहेसकी बहिनी वनसप्रति तथा सतखोलियाका राजा शैनिको यही त्रिवेणी मेलामा पहिलो पटक भेट भएको थियो। दुवै एकअर्काप्रति आकर्षित भएका थिए र पछि विवाह भएको थियो। यिनकै छोराको नाउँ करिकन्हा थियो। जो मामा मोतीराम जस्तै बलवान थिए र सलहेसगाथाका विभिन्न गढको लडाइँमा मामाहरूलाई सघाएका थिए। त्रिवेणी मेलाको सम्बन्धमा कोही कसैले पनि अन्य चर्चा गरेका छैनन् तसर्थ यो मेला सलहेसको समयभन्दा पनि पहिलेदेखि चलिआएको मान्नु पर्ने देखिन्छ। त्रिवेणी मेला जाने बाटोमा सलहेसकी आमा मदोदरीकी सखी विमलाको निवास रहेको कोकचिया गिधावर हकमाहा नामक स्थान पर्छ। भनिन्छ यस ठाउँमा मानिसहरू पुग्दा हाँफ्न थाल्ने भएकोले यसको नाम हकमाहा रहेको हो।

राजा फूलबारी

राजा सलहेसले दैनिक आफ्नो इष्ट देवहरूको पूजाको लागि फूल टिप्ने गरेको फूलबारीलाई राजा फूलबारी, सलहेस फूलबारी वा फूलबाइर भनिन्छ। नेपालको सिरहा जिल्लामा पर्ने यो फूलबारी भारतीय सिमाना शहर लदनियाँदेखि ३०-३२ किलोमिटर पूर्वमा तथा सिरहा जिल्लाका लहानबजारदेखि ४ किलोमिटर पश्चिममा पर्छ। फूलबारीको उत्तरमा महेन्द्र राजमार्ग, दक्षिणमा जब्दी गम्हरिया, पूर्वमा जटियाही तथा पश्चिममा पठरेवा बैकुण्ठपुर रहेको छ। हाल यो फूलबारी लगभग ३०-३५ एकड़मा

रहेको छ। फूलबारीको बीचमा सलहेसको गहवर छ। गहवरमा राजा सलहेस हात्तीमा सवार छन्। गहवर नजिकै हारभ नामको एउटा रूख छ। लोक- विश्वासअनुसार प्रत्येक वर्ष वैशाख सङ्क्रान्तिका दिन दीना मालिनी फूल बनेर त्यही रूखमा झुन्डिन्छिन्। अर्थात् प्रत्येक वर्ष वैशाख १ गतेका दिन त्यस हारभ रूखमा माला गाँसिएको जस्तो एउटा मात्र फूल फूल्दछ। यही फूलको दर्शन गर्न लाखौंको सङ्ख्यामा मानिस जम्मा हुन्छन् र ठूलो मेला लाग्दछ। हारभ रूखको नजिकै एउटा चौर छ जसलाई अखाडा चौर भनिन्छ। लोकविश्वासअनुसार सलहेसका भाइ मोतीराम यही सिलहट अखाडामा आफ्ना सातसय कुस्तीवाजहरूसँग कुस्ती खेल्ने गर्दथे।

पकरिया

पकरियागढ जहाँ सलहेसलाई चोरीको आरोप लागेको थियो, सिरहा जिल्लामा नै पर्दछ। यस जिल्लाको भदैया गा.वि.स.मा पर्ने यो पकरियागढ लहान बजारदेखि दश किलोमिटर उत्तरमा पहाडको नजिकमा छ। लहान भन्दा ४-५ |किलोमिटर पूर्वमा कञ्चनगढ नामक गाउँछ। सम्भवतः सलहेसगाथामा वर्णन गरिएको पकरियाको राजभवन यही कञ्चनगढमा थियो। लहानबाट पकरियागढ जाने बाटोमा चुहरवा चोक छ भने पकरियाको उत्तरमा सीताकुण्ड पहाड रहेको छ जसको सलहेसगाथामा उल्लेख भएको छ। पकरियागढ नजिकै गाथामा उल्लेख भएको कमल दह र मानिक दह रहेको छ। यस पकरियागढको तीनतिर पहाड़ र दक्षिणमा मैदान रहेको छ। यस गढमा एउटा पोखरी रहेको छ र पोखरीको डिलमा राजा केलेश्वरको मन्दिर छ जहाँ उनको पूजा गरिन्छ। मन्दिरका घोड़ामा सवार सलहेसको मूर्ति पनि छ, तर पकरियामा सलहेसलाई चौकीदारको रूपमा मानिने भएकोले छुट्टै पूजा चल्दैन। पकरियालाई वनतरी इलाका मानिन्छ र यस ठाउँमा प्रत्येक वर्ष मेष सङ्क्रान्तिका अवसरमा निकै ठूलो मेला लाग्छ।

पतारि

सलहेसगाथामा उल्लेख भएको राजा कुलेसरका कान्छा भाइ हरिसिंहदेवको निवास यहाँ रहेको मानिन्छ। यहाँ हरिसिंहदेवको गहबर अद्यापि विद्यमान रहेको छ। यस ठाउँमा सन्तान नहुनेले सन्तान माग्नआउँछन्। सन्तानको इच्छा गर्नेले राजा फूलबारीको दर्शन गरी यस ठाउँमा आउँछन र यहाँको पोखरीमा डुबुल्की मारेपछि तलको माटो खोतलेर एक मुट्ठी माटो लिएर भिजेकै लुगासहित दौडदै त्यो सिमाना नाघ्नु पर्दछ। सिमाना नाघेपछि लुगा फेरि घर जान्छन्। जनविश्वासअनुसार उक्त पोखरीमा विधिपूर्वक स्नान गरे सन्तान प्राप्ति हुन्छ।

मानिक दह

भनिन्छ सलहेस प्रत्येक दिन मानिक दहमा नुहाएर फूलबारीमा फूल टिप्ने र महिसौथामा आई राजमाता र कमलाजीको पूजा गर्थे। दहको पश्चिमी किनारामा एउटा गहबर छ जहाँ सलहेसको प्रतिमा स्थापित छ। त्यस ठाउँका वासिन्दा तिनको पूजा गर्दछन्। मानिक दहमा पनि वैशाख सङ्क्रान्ति कै दिन मेला लाग्दछ। भनिन्छ यस दहको निर्माण स्वयं सलहेसले नै गरेका थिए।

यसरी राजा सलहेसको महिमाले मिथिलाञ्चल भरिनै व्यापकता पाएको देखिन्छ।

प्रत्येकजसो गाउँमा सलहेसको गहबर रहेको देखिन्छ, तर सलहेसगाथाका प्रमुख स्थानहरू अहिले पनि गढको रूपमा विद्यमान छन् र ती स्थानहरूमा सलहेस तथा सम्बन्धित पात्रहरूको मन्दिर रहेको छ। यी गढहरूले आध्यात्मिक महत्त्व पाएको हुनाले विपत्तिमा परेकाहरू आफ्ना दुःख बिसाउन आध्यात्मिक ओत लाग्न भाकल गर्छन र मनोकामना पूरा भएपछि चढौना लिएर जान्छन्। यसरी यी गढहरूमा भाकल गर्ने र चढौना चढाउने मानिसहरूको वर्षभरि नै आवागमन भइरहेको हुन्छ। माथि वर्णन गरिएअनुसार यी गढहरू अधिकांश नेपालमै भए पनि केही भारतमा पनि छन्। अधिकांश गढहरूमा वार्षिक मेला लाग्ने गरेको छ। सलहेसको मन्दिरहरूमा लाग्ने मेलाहरूमध्ये सबै भन्दा ठूलो मेला राजाफूलबारीको मेला हो। अन्य मेलाहरू जस्तो स्थानीय दुई-चार-दश गाउँका मानिस मात्र फूलबारी मेलामा हुँदैनन्। यहाँको मेला हेर्न नेपालका टाढा-टाढाका मानिस त आउँछन नै भारतका श्रद्धालुहरूको सङ्ख्या पनि उत्तिकै हुन्छ। लाखौंको सङ्ख्यामा आउने तीर्थयात्रीहरूको सुविधाको लागि स्थानीय सङ्घसंस्थाहरू सक्रिय रहेका हुन्छन् भने वस व्यवसायीहरू उत्तिकै चनाखो रहन्छन्। व्यापारीको लागि यो मेला त्यत्तिकै महत्त्वपूर्ण हुन्छ, तर दुःखको कुरा के छ भने संरक्षणको कमीले गर्दा यस फूलबारी क्षेत्रको प्राकृतिक सम्पदा दिनानुदिन ह्रास हुँदै गएको छ। फूलबारी क्षेत्रका जङ्गलहरू जडीबुटी र चरा चुरुङ्गीको अध्ययन गर्नेका लागि आकर्षणको केन्द्र बन्न सक्ने र पर्यटकीय सुविधा उपलब्ध हुन सके विदेशी पर्यटकहरूका लागि पनि त्यत्तिकै महत्त्वपूर्ण हुन सक्ने सम्भावना रहेकोले यस क्षेत्रको विकासमा सबै पक्षको ध्यान जानु जरुरी छ। हुन त प्राचीन सम्पदा सबै ठाउंको महत्त्वपूर्ण हुन्छ, तर यस फूलबारी क्षेत्रले राष्ट्रिय पर्यटनमा सहयोग गर्न सक्ने भएकोले यसतर्फ विशेष ध्यान जानु वाञ्छनीय देखिन्छ।

अनुवादक : चन्देश्वर शाह

जट-जटीन तराईक समृद्ध लोक नाट्य

श्यामसुन्दर शशि

तराई नेपालक दक्षिणी भू-भागमे पूर्व-पश्चिम समानान्तर पसरल सश्य-श्यामल उब्जाउ माटिसँ बनल प्रदेश थिक, जकरा आधुनिक "नेपालक अन्नक बखारी" सेहो कहल जाइछ.। मध्यकालीन मिथिला राज्यक राजधानीक रूपमे प्रख्यात एहि अभिशप्त प्रदेशके सम्प्रति कोनो फूट । स्तित्व नहि थिक कारण तत्कालीन मिथिलाक किछु भाग भारतक बिहार राज्यक दुधगरि गाई बनल अछि तँ किछु भाग नेपालक उपेक्षित क्षेत्र। मिथिला महात्म्य मे –

मिथिला तेर मुक्तिश्य वैदेही नैमिकाननम्
ज्ञान क्षेत्रं कृपापीठं स्वर्ग लांगल पद्धति ।

रूपमे वर्णित मिथिला सम्प्रति सोनाक कटोरीमे भिक्षाटन करबाले बाध्य अछि। इतिहासक प्राय: सभ पन्ना मिथिलाक चीरहरण करवाक यथाशक्य प्रयास कएने अछि मुदा एहिठाँम सांकांक्ष धर्मगुरु, दार्शनिक, पीठाधीश, कवि, साहित्यकार तथा मैथिलानी सभ मिथिलाक चीरमे दागधरि नहि लागए देलनि एहिठाँम धरतीपर मुसलमान, अंग्रेज, राणा तथा अन्यायन्य कुचक्री सभ शासन करैत रहल मुदा एहिठामक जनताक मोनपर अपने भाषा, साहित्य, कला, संस्कृतिक राज्य रहलै। जकर प्रमाणक रूपमे आधुनिक आर्य भाषा समूहक भाषा मध्य प्रथम ग्रन्थ गद्य मैथिलीमे लिखल जाएब कें लेल जा सकैछ। मैथिली कवि शेखर ज्योतिरीश्वर (१३२५ ई.) रचित *वर्ण रत्नाकर* (वर्णन प्रधान मैथिली गद्य ग्रन्थ) तथा महाकवि विद्यापति रचित *कीर्तिलता, कीर्तिपताका* भारतीय उप-महाद्वीपक आधुनिक भाषा मध्य सभसँ पुराण ग्रन्थ सभ थिक। आओर मैथिली भाषाक उत्स दिश दृष्टिपात कएल जाए तँ आठम् शताब्दी मे सरहप्पा, भुसुप्पा, डाक, तथा घाघ आदि सिद्धलोकनिद्वारा मैथिली भाषामे लिखल गेल कृषि ज्योतिष तथा रहस्यवादी पदसभकें देखल जा' सकैछ मृतात्मा जहि तथ्यकें भाषाशास्त्री हरप्रसाद शास्त्री तथा राहुल सांकृत्यायन आदि प्रमाणित क' चुकल छथि।

मिथिलामे लोक नाट्यक परम्परा

शास्त्रीय नाट्यशास्त्रक उत्पत्ति सम्बन्धी मृतात्मामाप्रति श्रद्धा अथवा वीरपूजाक सिद्धान्त हुअए वा पुतलिका नृत्य सिद्धान्त, प्राकृतिक परिवर्तनकेँ दृश्यांकन करबाक सिद्धान्त हुअए वा छाया नाटकक सिद्धान्त मुदा एहिमे दू मत नहि भऽ सकैछ जे विभिन्न भाव तथा अवस्थासभ सँ प्रेरित भऽ कएल जाएबला लोकवृतक अनुकरणेँ लोक नाट्य थिक। नाट्य शास्त्रक रचयिता भरतमुनि (ई.पू. तेसर शताब्दी) द्वारा नाट्य विद्याक उत्पत्ति सम्बन्धी वर्णित कथा सँ पूर्वहिसँ लोकनाट्य क अस्तित्व छल हएत कारण भाषाक सम्यक विकास नहि भेल उक्त परापूर्वकालमे, अपन मनक भाव व्यक्त करबालेँ आदि मानवद्वारा अपन अङ्ग-प्रत्यङ्गक प्रयोग बेसी कएल जाएब स्वाभाविकेँ लगैत अछि। वास्तवमे इएह आङ्गिक चेष्टा तँ नाटक छिऐ। अर्थात् लोक नाट्य मानव सभ्यताक आदिकालहि सँ एहि जनमानसमे विद्यामान अछि।

मिथिलामे दर्जानौं लोक नाट्यसभक अस्तित्व देखल जाइत अछि जाहिमध्य किछुएक मात्र अवशेष बाँकी अछि, किछु सिनेमा,थिएटर, नाटक आदिक सम्पर्कमे आबि अपन मौलिकता निलाम कऽ रहल अछि तथापि किछु लोक नाट्यसभ एखनहुँ अपन वास्तविक रूपमे विद्यमान अछि। एतय ई गप्प विचारणीय अछि जे जाहि लोक नाट्यक सम्बन्ध स्त्रीसमुदायसँ अछि ओकर मूल रूप अद्यावधि बाधित नहि भेल अछि। सम्प्रति तत्कालीन मिथिला आ आजुक नेपाल तराईमे जट-जटिन, सामा-चकेवा, झिझिया, विरहा, विदेशिया, जालिम सिंह, रामलीला, रासलीला आदि लोक नाट्य अस्तित्व देखल जाइछ।

जट-जटीन उद्भव आ विकास

एहि लोक नाट्यक उद्भवक सम्बन्धमे विभिन्न प्रकारक तर्क-वितर्क प्रस्तुत कएल गेल अछि। इतिहासकार प्रो. श्री कृष्णकान्त मिश्र अपन *मैथिली साहित्यिक इतिहास* नामक ग्रन्थमे एहि लोकनाट्यक प्रारम्भ मैथिली कवि सङ्गीतबद्ध कएनिहार महाराज शिवसिंह (१४१२-१६ ई.) क दरबारी सङ्गीतकार 'जयट' द्वारा, मानैत छथि। 'जयट' द्वारा प्रतिपादित हएबाक कारणेँ एहि लोक नाट्यक नाम 'जट-जटीन' रहल, एहि प्रकारक तर्क ओ प्रस्तुत कएलनि अछि। मुदा भाषाविद् डा. राजेश्वर झा एहि लोकनाट्यक सम्बन्ध जट जातिसँ स्थापित करैत, जट जातिक उद्भवक प्रसङ्गमे निम्न प्रकारक तर्क प्रस्तुत कएलनि अछि – जखन दक्ष प्रजापतिक यज्ञमे पार्वती अपन शरीर त्याग कएलनि तखन क्रोधागिन भेल भगवान् शिव पृथ्वीपर अपन जटा फैलौलनि फलस्वरूप एकगोट पराक्रमी पुरुष उत्पन्न भेल आ भगवान् शिवसँ आज्ञा लऽ दक्षप्रजापतिक यज्ञकेँ विध्वंश कएल। वीरभद्रक नामसँ प्रख्यात एहि व्यक्तिक वंश पाछाँ जा' जट जातिक रूपमे विकसित भेल। मेरठ एवं रोहिल खण्डकेँ प्रख्यात कृषक जाति जटक प्रारम्भिक निवास स्थान मानल जाइछ। कहल जाइछ जहन मुहम्मद गोरी चित्तौर पर अपन प्रभुत्व जमौलनि तहन जट जाति दू भागमे विभक्त भऽ एक नेपाल दिश तथा दोसर मुजफ्फरनगर दिश पलायन कएल सम्प्रति नेपाल तराईमे प्रचलित जट-जटीन आख्यान नेपाल आएल जट-जातिक प्रभावसँ भेल हएबाक विचार डा. राजेश्वर झा क छनि।

मञ्चनक समय, पात्र तथा भेषभूषा

एहि नाट्यक सम्बन्ध स्त्रीवर्गसँ मात्र अछि। एकरा मञ्चनक लेल कोनो प्रकारक मञ्चक निर्माण नहि कएल जाइछ। रातिमे खाना खा अपन पति तथा सासुकेँ पैर दवा पूर्व नियोजित ठामपर गामक सभ वयसक स्त्रीसभ जम्मा होइत छथि।

एहि प्रकार जम्मा भेल स्त्रीसभ दू वर्गमे विभाजित होइत छथि। एक दिश जटपक्ष तथा दोसरपक्ष जटीन पक्ष।स्त्रीए सभ द्वारा पुरुषसभक लिवास लगा पुरुषक स्वाङ कएल जाइछ। स्त्री-पुरुष विकछएवाले' जटपक्षक स्त्री सभकेँ फूलक माला लगाओल जाइत अछि। दुनू पक्षमे आठ-आठ दस-दस गोटएक टोली रहैछ जे अपन-अपन पक्षक सहभागीसभक संग एक दोसराक कान्हपर हाथ ध' एक-दोसर टोलीक समक्ष सामानान्तर रेखा बना' ठाड रहैछ। गीतक माध्यमसँ बाजल जाएबला संवादमे जटपक्षद्वारा देल जाइछ। गीतेक माध्यमसँ कथा आगू बढ़एबला उक्त गीति नाट्यमे हास्य विनोद, मान-मनौवल, प्रेम वियोग, आर्थिक, सामाजिक तथा तान्त्रिक भावनाक सम्यक प्रयोग अछि। जे एहि लोक नाट्यकेँ पूर्ण तथा समृद्धशाली लोक नाट्यक मान्यता प्रदान करैछ।

लोक नाट्यक निम्न वर्ग संगक सम्बन्ध

मिथिलामे व्याप्त लोक नाट्य किंवा लोक साहित्यिक सम्बन्ध निम्नवर्गीय जनताक संग मात्र अछि। हमरा तँ लगैछ जे कोनो् लोक साहित्यक सम्बन्ध निमुखा, अशिक्षित, गरीब तथा सोझ-सपाट जनताकसंग मात्र भ् सकैछ। कारण तथाकथित शिक्षित तथा समृद्ध व्यक्तिसभक लेल हुनके सभक शब्दमे 'एहि जङ्गली' साहित्यमे कोनो तत्त्व नहि भेल करैछ।' ओना तँ विद्वत् वर्ग द्वारा लोक साहित्यकेँ निम्नवर्गक साहित्य कहल जएबाक प्रमाणसभ अपना सभक *वेद, पुराण,* वाल्मिकीय *रामायण* तथा *महाभारत* समेत मे पाओल जाइछ। अष्टाध्यायीक प्रणेता पाणिनी – "लोक सर्व काट्ठत्र" क रूपमे 'वेद' शब्द उच्चवर्गक लेल तथा 'लोक' शब्द निम्न वर्गक लेल प्रयोग कएल जाएव सर्वविदिते अछि। तहिना *महाभारत*मे महर्षि वेदव्यासद्वारा सेहो कृष्णक मूंहसँ –

"प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नरः।"

कहवा लोक तथा *वेदक* पृथकपृथक व्याख्या कएलनि अछि।

कथावस्तु

एहि लोक नाट्यक विवेचन कएलापर ई प्रष्ट होइछ जे एकर प्रदर्शनक मूल उद्देश्य "भगवान् इन्द्रकसंग पानिक याचना" कहब तर्कसंगत नहि अछि कारण एकर मूलकथा जट-जटीनक परिवारक चित्रण अछि। जहाँधरि इन्द्रसंग पानिक याचनाक प्रश्न थिक तँ ओ प्रकरण एहि नाट्यक मङ्गलाचरण थिक कारण मिथिलामे व्याप्त लोकनाट्य सभमें मूलकथा प्रारम्भ करबासँ पहिने अपन इष्टदेवी देवताक वन्दना करबाक परम्परा अछि। एहि परम्पराकेँ मध्यकालीन मैथिली शास्त्रीय नाटक सभ (किर्तनिञा नाटक) द्वारा सेहो अङ्गीकार कएल जएबाक प्रष्ट प्रमाण मध्यकालीन नेपाल उपत्यकामे रचित मैथिली नाटक सभ यथाः जगज्ज्योतिमल्लक *हर गौरी विवाह* आदिमे सेहो पाओल जाइछ। अतः लोक नाटकीय परम्पराक आलोक मे एत ई कहबाक प्रयत्न कएल गेल अछि जे एहि नाटकमे

भगवान् इन्द्रसंग पानिक याचनाक प्रसङ्ग अन्यान्य लोक नाटकें जकाँ मङ्गलाचरण थिक जकर पश्चात् मूल कथा प्रारम्भ होइछ।

मङ्गलाचरण

प्राय: अधिकतर लोक साहित्य विज्ञ लोकनि एहि नाट्यक मञ्चनक मूल उद्देश्य जलदेवता ईन्द्रसंग पानिक याचना मानने छथि। सम्भव थिक ओ लोकनि लोक नाटकीय तत्वसभपर विचारे नहि कएने होथि।यदि एकर मूल उद्देश्य वर्षाक याचना रहैत तँ कृषिकर्मक लेल उपयुक्त मास आषाढ, श्रावण भादोमे एकर प्रदर्शन प्राय: वैशाख, जेष्ठ तथा आशिन, कार्तिक मे अधिकतर होइछ। एहिप्रकार मङ्गलाचरणक रूपमे वर्णित जलदेवता संगक पानिक याचनाक प्रसङ्गक श्रेष्ठता तथा प्रभावोत्पदकता देखि माछापुच्छ्केे सागरमाथा कहब शास्त्रीय लोकनिद्वारा अपन श्रम बचाएब थिक। ताहुमे यदि शास्त्रीय लोकनि आध्यात्मिक चश्मा लगौने छथि तहन तँ आओर सहजहि।

मिथिलामे सदियौंसँ वर्षाक भरमे कृषि कर्म कऽ अपन जीवनयापन कएनिहार सर्वसाधारण मैथिलक लेल पानि देनिहार इनर भगवान्कें छोड़ि आर केओ भैए ने सकैछ। अत: पानिक अभावमे व्याकुल भेल जनसामान्य, गाई वस्तु तथा तृषित खेतक लेल पानिक याचना करैत चैत, वैशाख किंवा आश्विन, कार्तिक क दूधियाह चन्द्रमाक चमकैत प्रकाशमें स्त्री-पुरुषक भेषधारी मैथिलानीसभ अपन विविध अभिनयक सँग गवैछ –

चमराक खता-खुती छापर-छुपर पनिया।
ओहिमे नहाइछै ... बभना।
धोतियो ने खिचै छै, जनौउवो ने माजै छै।
दयो ने लगै छो हे इनर लोक।
दैवा पानी रे विनु ना ऽऽऽ
पानी बिनु पड़लै अकाल,
दैवा पानी रे बिनु ना ऽऽऽ।

अर्थात् वर्षाक अभावमे ब्राह्मण सदृश्य उच्च तथा स्वच्छप्रिय जाति समेत धोती तथा जनौ साफ नहि कऽ पबैछ अर्थात् पानिक अभावमे सामाजिक प्राणीक जीवन, जाति आ धर्म नाश भऽ जाएत अत: हे जलदेवता। अहाँकें दया नहि लगैछ ? आवो तँ पानि दिय।

पुन: एहि गीतमे आगाँ इनर लोकद्वारा पानि नहि देबाक कारण व्यक्त करैत एकर कारक तत्त्व भाषामे परम्परागत भाव तथा शैलीमे अभिव्यक्त भेल अछि –

सगरे सुनै छिऐ ... बड्ड धनिक छै रे ना।
एक सेर के दू सेर करै छै रे ना ऽऽ
चिपरी रोटी, चुटकी नून जनके दै छै रे नाऽऽऽ
ओकरे पापे पानियो नै होइछै रे ना ऽऽऽ॥

अर्थात् चारुदिश फलां बाबू वड्ड धनीक छथि से सुनैत छी, ओ एकसेरकें दू सेर असुल करै छथि चिपरी सन पातर रोटी आ चुट्की नून अपन बोनिहारकें दैत छथि ... हुनके पापसँ पानि नहि परैछ। केहन निश्छल अभिव्यक्ति अछि एहि पदसभमे। सते एहि

प्रकारक हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति कोनो लोक साहित्यतामे भऽ सकैछ। प्रायः एहि सदृश्यक स्तरीयता देखि कऽ शास्त्रीलोकनी एहि नाट्यक मङ्गलाचरणके सएह मूलकथा मानि बैसल छलाह।

मूलकथा

एहि लोक नाट्यक मूलकथा पारिवारिक अछि, जकर नायक जट तथा नायिक जटीन अछि। जट-जटीन क पारिवारिक तथा दाम्पत्य जीवनक चित्रण एकर मुख्य उद्देश्य थिक (डा. ताराकान्त झा, मैथिली लोक साहित्यका सर्वेक्षण) एहिमे जट-जटीन प्रारम्भमे प्रेमी-प्रेमीका रहैछ जे पाछाँ जा' परिणय सूत्रमे आबद्ध भऽ जाइछ। पति जट मिथिलाक परम्परा (स्त्री कें घरमे रखबाक) अनुसार जटीनकें व्यक्तित्वकें कुण्ठित कऽ, हुनक स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगा' अपन आदेशानुसार चलबाले बाध्य करैछ जे एहि प्रकार वर्णित अछि –

जट – *नबिके चलिहें गे जटिनियाँ।*
नबिकें चलिहें गे ऽऽऽऽ॥
जहिना नबतें काँच करचिया
तहिना नबिहें गे ऽऽऽऽ॥

जटीन – *नहिए नबबौ रे जटवा,*
नहिए नबबौ रे ऽऽऽ।
हम त बाबाके दुलारु धिया
तनिके चलबौ रे ऽऽऽ॥

अर्थात् हे जटीन। आब अहाँ सासुरमे अएलौ अहाँ कें माथ निहुरा' अर्थात् घोघ तानिक' चलबाक चाही मुदा जटीन अपनाकें बाबाके दुलारु धिया कहैत स्वतन्त्रतापूर्वक चलबालें जिद्द करैछ।

जट-जटीन शान्त, शीतल आ आह्लादक वातावरणमे गाओल जाएबला गीत अछि, वास्तविक हास परिहास तथा निष्कपट हृदयसँ निस्पंदित स्वरलहरी थिक बिना बाजा-गाजाकें मन मयूरकें आन्दोलित करएबला लोक धुन थिक। यी सभ विशेषता शहरसँ कोसो दूर-दराजक गाम मे मात्र भऽ सकैछ। एहन गाममे जतए निष्कपट आत्मा सभक मिलन होइछ, चाँदक चाँदनी जकाँ गरीबीक इमानदारीक संग प्रेम होइछ। जतए वसंतमे कोइली कुहकैछ आ पतझडमे कौआ डकैछ। एहने सन निष्कपट टिप्पणी जटद्वारा लाओल गेल उपहार पर जटीनद्वारा एहि गीतमे कएल गेल अछि –

जटीन – *तेलवा जँ हम मंगैलियौ रे जटा,*
तेलवा किए ने लौले रे।
हरि। हरि बाली उमेरिया अभगला
तेलवा किए ने लौले रे॥

जट – *तेलवा जँ हम मंगोलियौ गे जटीन*
तेलवा किए ने लेले गे।
मैया तोहर निसोखनी गे जटीन,
लेबहुँ ने देलकौ गे॥

किछु दिन सासूमे रहलाक बाद जटीन अपन नैहर जएबाले जिद्द कर' लगैछ मुदा जट नेपाल तराईक तरकारीबाली कएनिहार कुशल किसान अछि तें ओ अपन जटीनकें आमदानीक लोभ देखवैत एहन मासमे नैहर जएबासँ रोकैछ, जाहि महीनामे नगदीबाली उब्जा होइछ –

जट – घेरा फड़लौ गे जटीन, झिगुनी फड़लैगे।
तू चल जेबही नैहरवा, घेरा के बेचतौ गे ॥

तत्कालीन मिथिला कतबो बौद्धिक, धार्मिक, दार्शनिक तथा सांस्कृतिक प्रौढ़ता प्राप्त क्ऽ लेने हुअए, एहिठाँम जनताक आर्थिक स्थिति दयनीय रहल अछि।

अतिवृष्टि, अनावृष्टि तथा अकालादिक गढ़ एवं आदिकाल मे सेहो अकालसँ बँचबाले एत'क प्रतापी राजा जनक हर जोतने रहथि जकर परिणाम सीताक जन्म भेल रहनि, ई तथ्य सर्वविदीत अछि। साँ कही तँ एहि माटिपर सरस्वतीक विरुद्ध लक्ष्मी युद्ध ठनैत अएलीह अछि मुदा एतक वरद्पुत्र लोकनि लक्ष्मीक बिनु परवाह कएनहि सरस्वतीपूजनमे व्यस्त रहैत अएलाह अछि। निम्न गीतमे एहि क्षेत्रक जनताक आर्थिक क्षेत्रक हृदय विदारक चित्र प्रस्तुत भेल अछि –

जट – हाथी परके हौदा बेचबौले गे जटीन
आब जटा जाइछौ विदेश।

अर्थात् परिवाररूपी गाड़ी कें चलबैत रहबालें जटकें बिनु विदेश गेने काज चल' बला नहि छनि मुदा जटीनकें लेल विदेश जएबाक अर्थ मात्र पैसा कमाएब नहि थिक अपितु दोसर छौंड़ी – मौगी क सँग रङ्ग – रभस करब आ अन्ततः अपन प्रिया जटीनकें अवहेलना करब सेहो थिक। सते। बाहिरी आडम्बर आ भौतिक सुख-सुविधासँ प्रेम कएनिहारि नायिकाक लेल नायककें विदेशगमन सुखास्पद भऽ सकैछ मुदा मात्र प्रेम कर' जननिहारि जटीन कें ओकर पति विदेश जाएव तिलो भरि नीक नहि लगलनि। यथा–

जट – जाए दे गे जटीन, देश रे विदेश।
तोरा लागी लैवौ जटीन, नथिया सनेश ॥
जटीन – नथिया त हे जटा, तरबाक धूर।
घरही रहू जटा, नयनाके हजूर ॥

जहन जट विदेश सँ नथिया लावि देबाक आश्वासन दैछ तँ जटीन बहुत शालीनताक संग जवाफ दैछ जे नथिया तँ ओकरा लेल तरबाक धुरा छैक ... । बरु ओ (जट) अपनहि घरपर रहथि।

मुदा विदेशक सपना देखि-सूनि चुकल जटकें जटीनक ममतामयी व्यवहार बान्हि क्ऽ नहि राखि सकल आ अन्ततोगत्वा एक राति ओ विदेश रमाना भैए जाइत अछि।... ओकरा विदेश गेला वर्षों भऽ जाइत छैक ... पुरुष विनाक जवान स्त्रीकें समाजक शोषक सभ द्वारा अपन जाल मे फँसएबाक प्रयास करब कोनो नव घटना नहि थिक। एहि लोक नाट्यमे सेहो जटीनकें एक गोट सोनार अपन फन्दामे फँसएबाक प्रयास करैत कहैछ –

सुनार – हे गे जटीनिया। छोर आब जटवा कें आस
गड़वा जोखि-जोखि-जोखि हँसुली पेन्हैवौ
चल हमरे साथ ॥

ताहि पर पतिव्रता जटीन बहुत संतुलित तथा स्पष्ट उत्तर दैत कहैछ –

जटीन – हे रे सोनरवा भाइ।
अगिया लगेवौ तोरे हँसुलिया,
बजरा खसैवौ तोरे साथ।
बारह बरख हम आँचर बान्हि रखबै,
रहबै जटेके आस॥

केहन प्रबल आत्मविश्वास छैक जटीन केँ अपन जटप्रति। ओ बारह वर्ष धरि जटक आशामे बैसल रहबाक प्रण करैछ। वास्तवमे एहि प्रकारक व्यवहार कोनो लोक नायिकाद्वारा मात्र सम्भव छैक।

किछु वर्षक बाद नायककेँ नायिकाक प्रेम गाम अएबापर बाध्य कऽ दैछ आ ओ अपन गाम धूरि अबैछ। घर अएलापर नायिका ओकरा संग परिहासक रूपमे प्रश्न करैछ–

जटीन – एतेक जे कमेला जटा की भेल' ना
सुनु मोरा जटा
जटीन केँ मंगवा उदास लागौ ना ऽऽऽ
जट – एतेक जे कमैलौ जटीन, तोरा लागी ना ऽऽऽ।
सुन मोरी जटीन
मंगटिकवा गढ़ा'क' संदुकमे रखलौ ना ऽऽऽ।

एहि प्रकार एहि लोक नाट्यक सुखान्त होइछ।

तान्त्रिक भावना

अभिनयोपरान्त सहभागी स्त्रीसभद्वरा निर्दिष्ट स्थानपर हर जोतबाकपरम्परा अछि। हर जोतबाकाल स्त्रीसभ सएह बैलक स्वाङ करैत छथि। एहि प्रकार हर जोतबाक कारण राजा जनकद्वारा हर जोतलासँ पानि पड़ल तेँ एखनहुँ पानि पड़त से भऽ सकैछ। हर जोतलाक बाद जलदेवता इन्द्रक प्रवक्ता तथा प्रिय पात्रबेंगकेँ पकड़ि उखरीमे कूटि, ककरो घरसँ चोरा क' लाओल घैलमे गोबर-माटिसंग मिला। कोनो झगडाउ तथा गाड़िशास्त्रक निपुण स्त्रीक आँगन मे फेकल जाइछ। एहि प्रकार झगड़ा उए महिलाक आँगनमे ई अलिन पदार्थ फेकबाक कारण ई देल जाइछ जो गाडिक मात्रा जतेक बेसी हएत पानिक मात्रा सेहो ताहि अनुपातमे बढ़त। हमरा बिचारमे एहि प्रकार बेंगके "बलिदान देबाक कारण इन्द्र भगवान्द्वारा पानि नहि देलाक कारण हुनका प्रियपात्र संग प्रतिशोध लेल जाइछ। ओना तराई दिश एखनहुँ चापाकल इनार, कुवा अथवा पोखरीक निर्माण करबैत काल जल्दी तथा बेसी पानि अएबालेँ खसी, पड़वा, भेंड़ा आदिक बलि देबाक प्रथा अछि। यदि आदि तथा मध्य कालक कथा पेहानीसभ पर ध्यान देल जाय तँ पोखरी तथा इनारसँ पानि प्राप्तिक लेल नरबलि समेत देल जएबाक कथा भेटैत अछि।

एहि प्रकार हर जोतब, वेंगकेँ बलिदान देव आदिकेँ किछु विद्वान् लोकनि तांत्रिक रहस्य मानलैन अछि।

एहि तरहेँ अणु-परमाणुक होड़मे रकेट आ जेटक दौड़मे विशुद्ध निष्कपट हृदय सभक उल्लसित भावना व्यक्त होइछ, एहि लोक नृत्यमे। बढैत फिल्म टेलिभिजन आ

व्यावसायिक रङ्गमञ्च सभ एहि लोक नाट्य कें प्रत्यक्ष अवरोध नहियो करैत हो मुदा एहि माध्यमसभसँ पाओल जाएबला सहयोग एहि लोक नाट्य सभकें नहि प्राप्त भऽ रहलछैक। नहि तँ कमसँ कम लोक साहित्यक क्षेत्रमे हमरालोकनि विश्व समक्ष अवश्य मूड़ी उठाक' चलि सकब ।

जनकपुरधाम १

जट-जटीन तराईको समृद्धशाली लोकनाट्य

तराई नेपालको दक्षिणी भू-भागमा पूर्व-पश्चिम समानान्तर फैलिएको मलिलो, रसिलो, उर्वरा माटोले बनेको भेक हो। जसलाई आधुनिक नेपालको "अन्नको भकारी" पनि भनिन्छ। मध्यकालीन मिथिला राज्यको मुटुको रूपमा प्रख्यात यस अभिशप्त भेकको हाल कुनै अलग अस्तित्व छैन कारण तत्कालीन मिथिलाको केही भाग भारतको विहार राज्यको दूधं दिने गाई बनेको छ भने उत्तरको केही भू-भाग नेपालको उपेक्षित भेक। मिथिला महात्म्यमा –

मिथिला तेर मुक्तिश्य वैदेही नैमिकाननम्
ज्ञान क्षेत्रं कृपापीठं स्वर्ग लांगल पद्धति।

–को रूपमा वर्णित मिथिला हाल सुनको कचौरामा भिक्षाटन गर्न बाध्य छिन्। इतिहासको प्राय: सबै पानाले मिथिलाको चीरहरण गर्ने यथाशक्य प्रयास गरेका छन्, तर यहाँका साकांक्ष धर्मगुरु, दार्शनिक, पीठाधीश, कवि, साहित्यकार तथा मैथिलानीहरूले यसको चीरमा दाग सम्म लाग्न दिएनन्। यहाँको भूमिमाथि मुसलमान, अङ्ग्रेज, राणा तथा अन्यान्य कुचक्रीहरूले शासन गर्दै रहे, तर यहाँका जनताहरूको मनमा आफ्नै भाषा, साहित्य, कला संस्कृतिको राज्य रह्यो। यसको प्रमाणको रूपमा आधुनिक आर्यभाषा समूहका भाषाहरूमध्ये प्रथम ग्रन्थ मैथिलीमा लेखिनुलाई लिन सकिन्छ। मैथिली कवि शेखर ज्योतिरीश्वर (१३२५ ई.) रचित *वर्ण रत्नाकर* (वर्णनप्रधान मैथिली गद्यग्रन्थ) तथा महाकवि विद्यापति रचित *कीर्तिलता, कीर्तिपताका* आदि ग्रन्थ भारतीय उप-महाद्विपकै आधुनिक भाषाहरूमध्ये सबभन्दा जेठा ग्रन्थहरू हुन्। अझ मैथिली भाषाको उत्सतिर दृष्टिपात गरियो भने आठौं शताब्दीतिर सरहप्पा, भुसुप्पा, डाक तथा घाघ आदि सिद्धहरूद्वारा मैथिली भाषामा लेखिएका कृषि, ज्योतिष तथा रहस्यवादी पदहरूलाई हेर्न सकिन्छ। जसलाई भाषाशास्त्री हरप्रसाद शास्त्री, राहुल सांकृत्यायन आदिले सिद्ध गरिसक्नुभएको छ।

मिथिलामा लोकनाट्यको परम्परा

शास्त्रीय नाट्यशास्त्रको उत्पत्ति सम्बन्धी मृतात्माप्रति श्रद्धा अथवा वीरपूजाको सिद्धान्त होस् वा पुतलीका नृत्य सिद्धान्त, प्राकृतिक परिवर्तनलाई दृश्याङ्कन गर्ने सिद्धान्त होस् वा छाया नाटकको सिद्धान्त, तर यसमा दुई मत हुनै सक्दैन कि विभिन्न भाव तथा अवस्थाहरूबाट प्रेरित भएर गरिने लोकवृतको अनुकरण नै लोकनाट्य हो। नाट्यशास्त्रका रचयिता भरतमुनि (इ.पू. तेस्रो शताब्दी) द्वारा नाट्य विद्याको उद्भव सम्वन्धी वर्णित कथा भन्दा पहिले देखि नै लोकनाट्यको अस्तित्व थियो होला भन्ने विषयमा दुई मत हुनै सक्दैन कारण भाषाको सम्यक विकास हुन नसकेको उक्त परापूर्व कालमा आफ्नो मनको भाव व्यक्त गर्न आदिमानवहरूद्वारा आफ्नो अङ्ग-प्रत्यङ्गको बढी प्रयोग गरिनु स्वाभाविकै देखिन्छ। वास्तवमा यही आङ्गिक चेष्टा नै नाटक हो। अर्थात् लोकनाट्य मानव सभ्यताको आदिकालदेखि नै विद्यमान रहेको छ।

मिथिलामा दर्जनौं लोकनाट्यहरूको अस्तित्व देखिन्छ, जसमध्ये केहीका अवशेष मात्र बाँकी छन्। केही सिनेमा, थेटर, नाटक आदिको सम्पर्कमा आई आफ्नो मौलिकता गुमाउन थालिसकेका छन्, तर केही लोकनाट्यहरू अहिले पनि आफ्नो वास्तविक रूपमा विद्यमान छन्। यहाँ के कुरा सम्बन्ध विचारणीय छ भने जुन लोकनाट्यको सम्बन्ध स्त्रीवर्गसँग छ त्यसको मूलरूप अद्यावधि बाधित भएको छैन। हाल तत्कालीन मिथिला तथा अहिलेको तराईमा जट-जटीन, सामा-चकेवा, झिझिया, विरहा, विदेशिया, जालिमसिंह, रामलीला, रासलीला आदिको अस्तित्व देखिन्छ।

जट-जटीन, उद्भव र विकास

यस लोकनाट्यको उद्भव विषयमा विभिन्न किसिमका तर्कहरू प्रस्तुत गरिन्छ। इतिहासकार प्रो. श्री कृष्णकान्त मिश्र आफ्नो *मैथिली साहित्यक इतिहास* भन्ने ग्रन्थमा लोकनाट्यको प्रारम्भ मैथिली कवि कोकिल विद्यापतिका समकालीन र वहाँको पदहरूलाई सङ्गीतबद्ध गर्ने महाराज शिवसिंह (१४१२-१६ ई.) का दरबारी सङ्गीतकार 'जयट' द्वारा गरिएको मान्नु हुन्छ। 'जयट'द्वारा प्रतिपादित हुने भएकोले यस लोकनाट्यको नाउँ 'जट-जटीन' पर्न गएको तर्क वहाँले अघि सार्नु भएको छ, तर भाषाविद् डा. राजेश्वर झाले यस लोकनाट्यको सम्बन्ध जट जातिसँग स्थापित गर्दै, जट जातिको उद्भवको प्रसङ्गमा यस प्रकारको तर्क प्रस्तुत गर्नुभएको छ – जब दक्ष प्रजापतिको यज्ञमा पार्वतीले आफ्नो शरीर त्याग गरिन्, तव क्रोधाग्नि भएका भगवान् शिवले आफ्नो जटा फैलाउनु भयो। फलस्वरूप एउटा पराक्रमी पुरुष उत्पन्न भए र भगवान् शिवसँग आज्ञा लिएर दक्षप्रजापतिको यज्ञलाई विध्वंश गरे। वीरभद्रको नामले प्रख्यात ती व्यक्तिकै वंश पछि गई जट जातिको रूपमा विकसित भए। मेरठ एवं रोहिल खण्डलाई प्रख्यात कृषक जाति जटको प्रारम्भिक निवास स्थान मानिन्छ। भनिन्छ जब मुहम्मद गोरीले चित्तौरमाथि आफ्नो प्रभुत्व जमाए, तव जटजाति दुई भागमा विभक्त भई एउटा नेपालतिर तथा अर्को मुजफ्फरनगरतिर लाग्यो। हाल नेपाल तराईमा प्रख्यात जट-जटीन आख्यान नेपाल बस्ने जट जातिको प्रभावले भएको होला भन्ने डा. राजेश्वर झाको मत छ।

मञ्चन हुने समय, पात्र तथा भेषभूषा

जुन लोकनाट्यको सम्वन्ध स्त्रीवर्गसँग मात्र छ त्यसको लागि कुनै किसिमको

कृत्रिम मञ्चको आवश्यकता हुँदैन। राती खानासाना खाई, आफ्ना जहान परिवारलाई सुत्न लगाई, पूर्व नियोजित ठाउँमा, गाउँका सबै उमेरका आइमाईहरू भेला हुन्छन्। त्यसरी भेला भएका आइमाईहरू दुई वर्गमा विभक्त हुन्छन्। एकापट्टि जटीन पक्ष तथा अर्कोपट्टि स्त्रीहरूद्वारा नै, पुरुषको भेषभूषा लगाई पुरुषको स्वाङ गर्ने जटपक्ष हुन्छ। स्त्री-पुरुष, छुट्याउन जट बनेका स्त्रीलाई फूलको माला लगाइन्छ। आठआठ अथवा दसदस जनाको टोली आपसमा अङ्गालो हाली एक-अर्को टोलीको सामुन्ने समानान्तर सीधा रेखा झैं उभिन्छन्। गीतकै माध्यमबाट बोलिने संवादमा जटपट्टिबाट सोधिने प्रश्न अथवा संवादको जवाफ जटीनपट्टिले तथा जटीनपट्टिबाट सोधिने प्रश्नको जवाफ जटपट्टिले दिन्छन्। गीतकै माध्यमले कथा अगाडि बढ्ने उक्त गीतिनाट्यमा हास्य-विनोद, मान-मनौवल, प्रेम-वियोग, आर्थिक, सामाजिक तथा तान्त्रिक भावनाको सम्यक प्रयोग हुन्छ। त्यसले गर्दा यसलाई पूर्ण तथा समृद्ध लोकनाट्यको मान्यता दिलाएको छ।

लोकनाट्यको निम्नवर्गसँगको सम्बन्ध

मिथिलामा व्याप्त लोकनाट्य किंवा लोकसाहित्यको सम्बन्ध निम्नवर्गीय जनतासँग मात्र छ। मलाई त लाग्दछ कुनै पनि लोकसाहित्यको सम्बन्ध निमुखा अशिक्षित, गरिब तथा सीधासादा जनतासँग मात्र हुन सक्दछ कारण तथाकथित शिक्षित तथा समृद्ध व्यक्तिहरूको लागि उनीहरूकै शब्दमा यस जङ्गली साहित्यमा कुनै तत्त्व हुँदैन। यसो त विद्वत्वर्गद्वारा लोकसाहित्यलाई निम्नवर्गको साहित्य भन्ने गरेको प्रमाणहरू हाम्रो *वेद*, *पुराण* वाल्मिकीय *रामायण* तथा *महाभारत*समेतमा पाइन्छ। अष्टाध्यायीका प्रणेता पाणिनिले "लोक सर्वकाट्ठञ" भनी 'वेद' शब्द उच्च वर्गको लागि तथा 'लोक' शब्द निम्नवर्गको जनताको लागि प्रयोग गरेको सर्वविदितै छ। त्यस्तै नै *महाभारत*मा महर्षि वेदव्यासले पनि कृष्णको मुखबाट–

"प्रत्यक्षदर्शीले लोकानां सर्वदर्शी भवेन्नर।" भन्न लगाएर लोक तथा *वेद*को पृथकपृथक व्याख्या गर्नुभएको छ।

कथावस्तु

यस लोकनाट्यको कथावस्तुलाई लोकनाट्य शास्त्रीय तत्त्वहरूको आधारमा केलाउँदा के प्रष्ट हुन आउँछ भने यसको प्रदर्शनको मूल उद्देश्य "भगवान् इन्द्रसँग पानीको याचना' गर्नु हो भन्ने कुरा तर्कसङ्गत छैन। यो एउटा पूर्ण तथा समृद्ध लोकनाट्य हो। कारण यसको मूल कथाले जट-जटीनको पारिवारिक स्थितिको चित्रण गर्दछ। जहाँसम्म इन्द्रसँग वर्षाको याचनाको प्रश्न छ त्यो प्रकरण यस नाट्यको मङ्गलाचरण हो कारण मिथिलामा व्याप्त लोकनाट्यहरूमा मूलकथा प्रारम्भ गर्नुभन्दा पहिले आफ्नो इष्ट देवी-देवताहरूको वन्दना गर्ने परम्परा छ। यस परम्परालाई मध्यकालीन मैथिली शास्त्रीय नाटकहरू (कीर्तनियाँ नाटक) ले पनि अङ्गिकार गरेका छन्। मध्यकालीन नेपाल उपत्यकामा रचित मैथिली नाटकहरूले पनि त्यस परम्परालाई मानेको प्रमाण जगज्योति मल्लको *हर-गौरी विवाह* लगायत अन्य नाटकहरूद्वारा लिन सकिन्छ। अंतः लोक नाटकीय परम्पराको आलोकमा यहाँ के भन्न खोजिएको हो भने भगवान् इन्द्रसँग पानीको याचनाको प्रकरण नाट्यको मङ्गलाचरण मात्र हो। अन्य लोकनाट्यजस्तै यसमा पनि मङ्गलाचरण पछि मूल कथा प्रारम्भ हुन्छ।

मङ्गलाचरण

प्रायः सबै लोक साहित्य विज्ञहरूले यस लोकनाट्यको मञ्चनको मूल उद्देश्य जलदेवता इन्द्रसँग पानीको याचना मानेका छन् । सम्भव छ लोकनाटकीय तत्त्वहरूमाथि विचारै नगरेर त्यस्तो भनिएको होला । यदि यस नाट्यको मूल उद्देश्य वर्षाकै याचना हुन्थ्यो भने कृषि कर्मको लागि उपयुक्त महीना आषाढ, श्रावण, भदौतिर यसको प्रदर्शन हुने थियो जब कि यसको प्रदर्शन प्रायः वैशाख, जेष्ठ तथा आश्विन, कार्तिकतिर हुन्छ। यसप्रकार मङ्गलाचरणको रूपमा वर्णित जलदेवतासँगको पानीको याचनाको प्रसङ्गको श्रेष्ठता तथा प्रभावोद्पादकता देखेर माछापुच्छ्रेलाई सगरमाथा भन्नु शास्त्रज्ञद्वारा आफ्नो श्रम जोगाउनु हो । त्यसमा पनि शास्त्रज्ञहरूले आध्यात्मिक चश्मा लगाउनु भएको रहेछ भने त झन् के ?

मिथिलामा सदियौंदेखि वर्षाको भरमा कृषिकर्म गरेर जीवनयापन गर्ने सर्वसाधारण मैथिलहरूको लागि वर्षादिंने इनर भगवान् (इन्द्रभगवान्) बाहेक अरू कोही हुनै सक्दैनन्। अतः पानीको अभावमा व्याकुल भएका जनसामान्य, गाईवस्तु तथा तृषित खेतका लागि पानीको याचना गर्दै चैत्र-वैशाख किंवा आश्विन-कार्तिकको दूधभैंं भैंं चम्किलो चन्द्रमाको प्रकाशमा स्त्री तथा पुरुषको भेषधारी मैथिलानीहरू विविध अभिनयका साथ गाउँछन् –

चमराक खता-खुती छापर-छुपर पनिया ।
ओहिमे नहाइछै ... बभना ।
धोतियो ने खिचै छै, जनौउवो ने माजै छै ।
दयो ने लगै छो हे इनर लोक ।
दैवा पानी रे विनु ना ऽऽऽ
पानी बिनु पड़लै अकाल,
दैवा पानी रे बिनु ना ऽऽऽ ।

अर्थात् वर्षा नभएको कारणले नुहाउने-धुने पानीको अभावमा बाहुनजस्तो उच्च तथा स्वच्छप्रिय जातिले समेत धोती तथा यज्ञोपवित सफा गर्न सकिरहेको छैन । अर्थात् पानीको अभावमा सामाजिक प्राणीको जीवन, जाति र धर्म सखाप हुने भयो । अतः हे ! जल देवता, तिमीलाई दया लाग्दैन ? अब त पानी देउ ॥

फेरि यसै गीतमा अगाडि इन्द्रभगवान्द्वारा पानी न दिनाका कारण पोख्दै यसका कारक तत्त्व (शोषकवर्ग) प्रतिको आक्रोश लोकभाषामा परम्परागत भाव तथा शैलीमा अभिव्यक्त भएको छ –

सगरे सुनै छिऐ ... बड्ड धनिक छै रे ना ।
एक सेर के दू सेर करै छै रे ना ऽऽ
चिपरी रोटी, चुटकी नून जनके दै छै रे नाऽऽ
ओकरे पापे पानियो नै होइछै रे ना ऽऽऽ ॥

अर्थात् सबैतिर फलानो बाबू धेरै धनी हुनुहुन्छ भन्ने सुनिन्छ। एकसेरको दुईसेर असुल गर्नुहुन्छ, अत्यन्त पातलो रोटी तथा चिम्टीभर नून आफ्नो जन (मजदुर)लाई दिनुहुन्छ ... उसकै पापले पानी पर्दैन। कस्तो निश्छल अभिव्यक्ति छ पदहरूमा। साँच्चै यस प्रकारको हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति कुनै लोकसाहित्यमा मात्र हुन सक्छ। प्रायः यस

प्रकारकै स्तरीय साहित्य देखेर शास्त्रज्ञहरूले यस लोकनाट्यको मङ्गलाचरणलाई नै मूलकथा भनेका होलान् ।

मूल कथा

यस लोकनाट्यको मूल कथा पारिवारिक हो, जसको नायक जट तथा नायिका जटीन हो । "जट-जटीन को पारिवारिक तथा दाम्पत्य जीवनको चित्रण यसको मुख्य उद्दश्य हो ।" (डा. ताराकान्त झा, मैथिली लोकसाहित्यका सर्वेक्षण) यसमा जट-जटीन प्रारम्भमा प्रेमी-प्रेमिका हुन्छन् जो पछि परिणय सूत्रमा आवद्ध हुन पुग्छन् । पति जट मिथिलाको परम्परा (स्त्रीलाई घरमै राख्ने) अनुसार जटीनको व्यक्तित्वलाई कुण्ठित गरी स्वतन्त्रतामाथि प्रतिबन्ध लगाई आफ्नो आदेशानुसार चल्न बाध्य गर्छन्, जो यसप्रकार वर्णित छ –

जट – नबिके चलिहें गे जटिनियाँ ।
नबिकैं चलिहें गे ऽऽऽऽ ॥
जहिना नबतै काँच करचिया
तहिना नबिहें गे ऽऽऽऽ ॥
जटीन – नहिए नबबौ रे जटवा,
नहिए नबबौ रे ऽऽऽ ।
हम त बाबाके दुलारु धिया
तनिंके चलबौ रे ऽऽऽ ॥

जट भन्छ – हे जटीन, अब तिमी ससुरालमा आयौ तिमीले मुन्टो तल गरेर अर्थात् घुम्टो हालेर हिँड्नु पर्‍यो । तर जटीन भने आफूलाई बाजेको दुलारु भन्दै मुन्टो माथि गरेर हिँड्ने जिद्दी गर्छे ।

जट-जटीन शान्त, शीतल र आह्लादक वातावरणमा गाउने गीत हो । वास्तविक हास-परिहास र निष्कपट हृदयबाट निष्पंदित स्वरलहरी हो । विना बाजा-गाजा नै मनमयूरलाई आन्दोलित गर्ने लोक धुन हो । यी सबै विशेषताहरू शहरबाट कोसौं टाढा कुनै दूर-दराजको गाउँमा मात्र हुन सक्छ, त्यस्तो गाउँमा जहाँ निष्कपट आत्माहरूको मिलन हुन्छ, चन्द्रमाको चाँदनी झैं गरिबीको इमानदारीसँग प्रेम हुन्छ । जहाँ वसन्तमा कोइली र पतझडमा काग डाक्ने गर्छन् । यस्तै निष्कपट टिप्पणी जटद्वारा ल्याएको उपहारमाथि जटीनद्वारा यस गीतमा गरिएको छ –

जटीन – तेलवा जँ हम मंगौलियौ रे जटा,
तेलवा किए ने लौले रे ।
हरि । हरि बाली उमेरिया अभगला
तेलवा किए ने लौले रे ॥
जट – तेलवा जँ हम मंगोलियौ गे जटीन
तेलवा किए ने लेले गे ।
मैया तोहर निसोखनी गे जटीन,
लेबहुँ ने देलकौ गे ॥

अर्थात् ए जटा ! मैले तिमीलाई तेल ल्याउन भनेकी थिएँ । तिमीले तेल किन

ल्याएनौ, तर जटले मैले त तेल ल्याएको थिएँ तिम्रो आमाले ल्याउन दिइनन् भन्ने प्रत्युत्तर दिन्छ।

केही हिन ससुराल बसेर जटीन माइती जान जिद्दी गर्न थाल्छे तर जट नेपाल तराईको करेसाबाली गर्ने कुशल किसान हो त्यसैले ऊ आफ्नी जटीनलाई आम्दानीको लोभ देखाउँदै यस्तो महीनामा माइती जानबाट रोक्छ र भन्छ– यसै महीनामा नगदे बालीको उब्जा हुन्छ। यथा :

जट – घेरा फड़लौ गे जटीन, भिगुनी फड़लैगे।
तू चल जेबही नैहरवा, घेरा के बेचतौं गे॥

तत्कालीन मिथिला जतिसुकै बौद्धिक, धार्मिक, दार्शनिक तथा सांस्कृतिक प्रौढता प्राप्त गरे तापनि यहाँको सर्वसाधारणको आर्थिक स्थिति दयनीय नै थियो अतिवृष्टि, अनावृष्टि तथा अकालादिको गढ यहाँ आदिकाल मा पनि अकालबाट जोगिन यहाँका प्रतापी राजा जनकले हलो जोतेको र त्यति बेला नै सीताको जन्म भएको कुरा इतिहासमा विदित छ। साँच्चै भनौं भने यस माटोमा सरस्वतीको विरुद्ध लक्ष्मीले युद्ध गर्दै आएकी छिन्, तर यहाँका वरद्पुत्रहरूले लक्ष्मीको वास्तै नगरी सरस्वती पूजनमा व्यस्त रहँदै आएका छन्। निम्न गीतमा यस क्षेत्रको आर्थिक स्थितिको हृदयविदारक वर्णन भएको छ –

जट – हाथी परके हौदा बेचबौले गे जटीन
आब जटा जाइछौं विदेश।

अर्थात् परिवाररूपी गाडीलाई चलाउन जटलाई विदेशगमन नगरी भएन, तर जटीनको लागि विदेश जानु भनेको पैसा कमाएर ल्याउनु मात्र होइन बल्कि अर्की ठिटीहरूसँग मोजमजा गरेर बस्नु र अन्ततः आफ्नी प्रिया जटीनलाई अवहेलना गर्नु पनि हो। हुन पनि हो, बाहिरी आडम्बर र भौतिक सुख-सुविधासँग प्रेम गरी बसेकी नायिकाको लागि नायकको विदेशगमन मन पर्दो हुन सक्छ, तर मात्र प्रेम गर्न जानेकी जटीनलाई उसको पोइ विदेश जान लागेको अलिकति पनि मन परेको छैन। यथा–

जट – जाए दे गे जटीन, देश रे विदेश।
तोरा लागी लैवौ जटीन, नथिया सनेश॥
जटीन – नथिया त हे जटा, तरबाक धूर।
घरही रहू जटा, नयनाके हजूर॥

जट विदेशबाट नथिया ल्याई दिने आश्वासन दिन्छ। जटीन बडो शालीनताका साथ उत्तर दिन्छे – नथिया त पैतालाको धूलो हो। बरु हजुर घरमै रहनु भए सबथोक पाइहालिन्छ।

तर विदेशको सपना देखी-सुनी सकेको जटलाई जटीनको ममतामयी व्यवहारले बाँधी राख्न सकेन। अन्ततोगत्वा एक रात जट विदेशतिर उम्की नै हाल्छ। अब उसलाई विदेशिएको वर्षौं भइसकेको छ। लोग्नेविनाको जवान स्त्रीलाई समाजका मनचलाहरूले आफ्नो पासोमा फँसाउन खोज्नु कुनै नौलो व्यवहार होइन।

यस लोकनाट्यमा जटीनलाई पनि एउटा सुनार (सुनको काम गर्ने) ले आफ्नो प्रेम

जालमा फँसाउने प्रयास गर्दै भन्छ –

सुनार – हे गो जटीनिया । छोर आब जटवा कें आस
गड़वा जोखि-जोखि-जोखि हँसुली पेन्हैवौ
चल हमरे साथ ॥

अर्थात् अब तिम्रो जट आउँदैन । तिमी मसँग लाग ... । मसँग लागेपछि तिमीलाई सुन-चाँदीलें लादिदिउँला । तर, पतिब्रता जटीन बडो स्पष्ट उत्तर दिन्छे –

जटीन – हे रे सोनरवा भाइ ।
अगिया लगेवौ तोरे हँसुलिया,
बजरा खसैवौ तोरे साथ ।
बारह बरख हम आँचर बान्हि रखबै,
रहबै जटेके आस ॥

कस्तो प्रबल आत्मविश्वास छ जटीनलाई, आफ्नो जटप्रति । त्यो नारी अझै बाह्रवर्षसम्म जटको आशामा बसिरहने प्रण गर्दछे । त्यस किसिमको व्यवहार साँच्चै नै कुनै लोक नायिकाबाटै हुन सक्दछ ।

केही वर्षपछि नायकलाई नायिकाको प्रेमले गाउँ फिर्ता आउन बाध्य गर्छ र ऊ गाउँ आउँछ पनि । घर आएपछि नायिका ऊ सँग परिहासको रूपमा सोध्छे –

जटीन – एतेक जे कमेला जटा की भेल' ना ऽऽऽ
सुनु मोरा जटा ऽऽऽ
जटीन कें मंगवा उदास लागौ ना ऽऽऽ
जट – एतेक जे कमैलौ जटीन, तोरा लागी ना ऽऽऽ
सुन मोरी जटीन
मंगटिकवा गढा'क' संदुकमे रखलौ ना ऽऽ

जटीन भन्छे – हे जटा, यत्रो दिन बिताएर के कमायौ खै ! सिउँदो त खालि नै छ । जट भन्छ – जेजति कमाए तेरै लागि त हो नि ! सुन जटीन, गहनापात बाकसभित्र छ ।

यसप्रकार यस लोकनाट्यको सुखान्त हुन्छ ।

तान्त्रिक भावना

अभिनयोपरान्त सहभागी स्वास्नीमानिसहरूद्वारा निर्दिष्ट ठाउँमा हलो जोत्ने परम्परा छ । हलो जोत्दा खाली स्वास्नीमानिसहरू नै गोरुको अभिनय गर्ने गर्छिन् । यसरी हलो जोत्नाको कारण राजा जनकद्वारा हलो जोत्दा पानी परेको हुँदा तिनीहरूद्वारा हलो जोत्दा पानी पर्छ भन्ने पनि हुन सक्दछ । हलो जोतिसकेपछि जलदेवता इन्द्रको प्रवक्ता तथा प्रियपात्र (भ्यागुतो)लाई समाती, ऊखलमा कुटी कसैको घरबाट चोरी ल्याइएको गाग्रोमा हिलो-माटोसँग हाली यस्तो व्यक्तिको आँगनमा फालिन्छ जो गालीशास्त्रमा पारङ्गत हुन्छिन् । यसरी झगडालु आइमईकै घरमा भ्यागुतो तथा हिलो माटोको घोल फाल्नुको पछाडि के तर्क दिइन्छ भने पानीको परिमाणमा पनि गालीकै अनुपातमा बृद्धि

हुन्छ रे। मेरो विचारमा यसप्रकार भ्यागुतालाई बलिदान दिनाको मूल कारण इन्द्र भगवान्ले पानी नदिएकोले उनको प्रियपात्रसँग प्रतिशोध लिनु हो । यसो पनि यस भेकमा चापाकल, इनार, कुवा अथवा पोखरीको निर्माण गराउँदा छिटो र बढी पानी आओस् भनी खसी, परेवा, भैंडा आदिको बलि दिने प्रथा अझै पनि छ अझ आदि तथा मध्यकालतिर पोखरी तथा इनारबाट पानी प्राप्तिको लागि नरबलि पनि दिने गरेको कथा तराईतिर हालसम्म प्रचलित छ ।

यसप्रकार हलो जोत्नु, भ्यागुतोको बलिदान दिनु आदिलाई केही विद्वान्हरूले तान्त्रिक रहस्य ठानेका छन् ।

यसप्रकार अणु-परमाणुको होडमा रकेट र जेटको दौडमा विशुद्ध निष्कपट हृदयहरूको उल्लसित भावना व्यक्त हुन्छ यस लोकनृत्यमा । बढ्दो फिल्म, टेलिभिजन र व्यावसायिक रङ्गमञ्चहरूले यस लोकनृत्यलाई प्रत्यक्ष अवरोध न गरे तापनि पाउनुपर्ने सहयोग यी लोकनाट्यहरूले पाइराखेका छैनन् । अन्यथा हामी कमसेकम लोकसाहित्यको क्षेत्रमा विश्वसमक्ष मुन्टो ठाडो गर्ने स्थितिमा अवश्य हुन्छौं ।

अनुवादक : श्यामसुन्दर शशि

विद्यापतिक उगना

महेन्द्र मलंगिया

ई बात सर्वविदित अछि जे शिवसिंह युद्धभूमिसँ निपात्ता भऽ गेलाह। हुनक खोज बहुत कयल गेलनि, मुदा ओ कतहु नहि भेटलाह। कोनो इतिहासकार एहिठामसँ आगाँ नहि बढ़लाह अछि। सभ एतऽ आबि कऽ गुम्म भऽ गेँल छथि। मुदा बात तँ एहीठाम खतम नहि भऽ जाइत अछि। हुनका निश्चित किछु भेल होयतनि। तँ एहि सम्बन्धमे तीन प्रकारक बात उठाओल जा सकैत अछि– पहिल तँ ई जे ओ मारल गेलाह, दोसर ई जे ओ यवनद्वारा बन्दी बनाओल गेलाह आ तेसर बात ई जे ओ पलायन कयने होयताह। आब पहिल बातमे किछु शंका उठैछ जे यदि युद्धभूमिमे मारल जइतथि तँ हुनक शव तकला उत्तर अवश्य भेटितय जे नहि भेटैत अछि। तँ शिवसिंह मारल गेलाह से नहि कहल जा सकैछ। दोसर, यदि यवनद्वारा बन्दी बनाओल जइतथि तँ इतिहासक क्रम निश्चय आगाँ बढ़ितय। किएक तँ एकटा राजाकेँ बन्दी बनायब साधारण बात नहि जे ककरो पता नहि चलितय। तखन तँ तेसर बात यैह कहल जा सकैछ जे ओ युद्धभूमिसँ भागि गेलाह। एहि सम्बन्धमे रामवृक्ष बेनीपुरीद्वारा सङ्कलित तथा आचार्य रामलोचनशरणद्वारा सम्पादित *विद्यापति की पदावली* मे विद्यापतिका परिचय दैत लिखल गेल अछि – "शिवसिंह सेना के साथ बादशाह से जा भिड़े। वे शाही सेना का व्यूह भेद कर बादशाह के निकट पहुँच गये और अपनी तलवार से शिरस्त्राण उड़ाते हुए फिर बाहर निकल आये। उनकी वीरता पर बादशाह मुग्ध हो गया। यवन सेना उनके पीछे दौड़ी, तो बादशाह ने मना कर दिया।

शिवसिंह वहाँ से नेपाल की ओर जंगल में चले गये और पुनः अपने राज्यमे नहीं लौटे।" एहि बातमे किछु सत्यक संभावना देखबामे अबैत अछि। किएक तँ ओ युद्ध नीकजकाँ हारि चुकल छलाह। युद्ध हारि गेलाक बाद तीनेटा बात रहि जाइत छैक– एक तँ विजयीक अधीनता स्वीकार कऽ लेल जाय वा बन्दी बनि जाय। दोसर, आत्महत्या वा बल्लहुसँ युद्धभूमिमे प्राण गमायब आ तेसर, पलायन। एहि तीनूमेसँ ओ दूटा नहियेँ कयलनि। तखन तँ तेसर रस्ता ओ निश्चय अपनौने होयताह। किएक तँ एकरा छोड़ि आओर कोनो रस्ते नहि छलनि। एहि बातक समर्थन रामवृक्ष बेनीपुरीजी सेहो कयलनि अछि।

आब एहिठाम प्रश्न ई उठैत अछि जे यदि शिवसिंह युद्धभूमिसँ भागि गेलाह तँ भागि क' कहाँ गेलाह ? एहि सम्बन्धमे निम्नांकित बात कहल जा सकैत अछि– जाहि समयमे युद्ध भेल छल, ओहि समयमें विद्यापति नेपालक राजा पुरादितयक आश्रयमे छलाह। हुनके अभिभावकत्वमे मिथिलाक राजपरिवार सेहो ओतहि सुरक्षाक हेतु निर्वासित जीवन व्यतीत क' रहल छल। तँ यदि छद्म वेष बना क' विद्यापतिक ओहिठाम गेल होथि तँ कोनो अत्युक्ति नहि। डा. ब्रजकिशोर वर्मा आ राजेश्वर झा क्रमश: अपन उपन्यास *विद्यापति* आ अपन नाटक *विद्यापति* मे उगनाक चर्चा नेपालेसँ करैत छथि। दोसर, उगनाक सम्बन्धमे विद्यापति रहस्यकेँ दबने छलाह से बात जगजाहिर अछि। एहना स्थितिमे छद्म वेष बना क' रहबाक हेतु शिवसिंह आ विद्यापतिक बीच कोनो गुप्त मंत्रणा छल तकरा नकारल नहि जा सकैत अछि। छद्म वेषमे रहबाक कारण ई भ' सकैत अछि जे यदि ओ प्रकट होइतथि तँ लोक हिनकापर आङुर उठबितनि जे युद्धभूमिसँ भागि गेलाह। दोसर, यवन हिनका पकड़बाक हेतु घात लगौने छल होयत। तँ ई प्रकट नहि भ' क' छद्मे वेषमे रहब ठीक बुझने होथि। एहि तथ्यसँ ई बुझना जाइत अछि जे विद्यापतिक ओहिठाम उगनाका रूपमे महादेव नहि, अपितु शिवसिंह छलाह।

शिवसिंहक छद्म वेषक सम्बन्धमे सुप्रसिद्ध विद्वान् ब्रजकिशोर वर्मा अपन विचार निम्नांकित रूपें प्रकट कयने छलाह– ओ कोन कमाल मेकअप छलै जे राजा शिवसिंहकें राजा पुरादित्य चिन्हि नहि सकलथिन। वर्माजीक एहि शंकाक समाधान भोलानाथ झाजी निम्नांकित रूपें कयने छलाह– ओ कोन कमाल मेकअप छलैक जाहि कारणें पाण्डवव लोकनिकें राजा विराट नहि चिनि सकलथिन। अस्तु।

आब जहाँधरि 'उगना' क नामकरणक प्रश्न अछि से निम्नलिखित प्रकारसँ होयबाक संभावना देखबामे अबैत अछि– बहुत दिनधरि शिवसिंह एमहर-ओमहर भटकलाक पश्चात् विद्यापतिक ओहिठाम पहुँचल होयताह। बहुत दिनधरि डुबल (छद्म वेषमे) कतहु अन्यत्र रहलाक बाद अकस्मात् हिनका ओहिठाम प्रकट भेल होयताह। तँ हुनक नाम 'उगना' पड़ल होअय। किएक तँ बहुत दिनपर उगलाह। दोसर, ओ छद्म वेषमे रह' चाहैत छलाह, तँ हुनक नामो उगना (उग+ना) अर्थात नहि उगू, डुबले रहू, राखल गेल होअय।

उगना शब्दकें भाषा विज्ञानक कसौटीपर राखि क' नहि देखल जा सकैछ। तँ उगना शब्द उग्रनाथेसँ उद्भूत भेल अछि से समीचीन नहि। कारण, मिथिलामे नाम रखबाक परम्परा विचित्र ढंगक अछि। यथा– मंगल, बुध, शनि आदि दिनमे जनमल तँ ओकर नाम क्रमश: मंगला, बुधना आ शनिचरा राखल जाइछ। एहिना जे बच्चा बहुत दिनधरि नहि चलल से लोथवा, जे बच्चा बेसी गुड़कय से गुड़का, लुक्कड़ प्रवृत्तिबला बच्चा लुकड़ा, जे लड़की बेसी बढय से बढनियाँ, जे लड़की बेसी नहिं बढय से भुटिया आदिकें देखलजा सकैछ। ठीक एहिना विपरीत अर्थमे सेहो नाम राखल जाइछ, यथा– निरपर व्यक्तिक नाम वैदिक, दरिद्र व्यक्तिक नाम बिड़ला, हर जोतनिहार व्यक्तिक नामा राजा आदि। आब एहि सभ नामकरणक आधारपर उगनाक नामकरण कोनो असंगत नहि बुझना जाइछ।

उगनाक सम्बन्धमे लोकक मत छैक जे ओ अर्द्धबताह छल। एहिठाम महाराज शिवसिंहकें ल' क' मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ देखल जाय तँ ओ अवगुण हिनकोमे आबि सकैत छल। किएक तँ एक दिस राजदरबार आ दोसर दिस सामान्य गृहस्थक परिवार।

दुनूक परिस्थितिमे बहुत भिन्नता देखल जाइछ। तेँ एकटा राजा एकटा सामान्य गृहस्थक परिवारमे परिवारक ओही सदस्य अनुरूप अपनाकेँ नहि ढारि सकैत अछि। ओकर जतेक आहार-व्यवहार होयतैक से ओहि परिवारक आहार-व्यवहारक विपरीते। आ तेँ यदि शिवसिंह अर्द्धबताह तँ उगनो अर्द्धबताह। एहि बातकेँ नकारल नहि जा सकैछ।

पुन: उगनाक सम्बन्धमे लोकक मत छैक जे ओ विद्यापतिक ओहिठाम बड़दक चरबाहिमे नियुक्त छल। एहिठाम ई ध्यान देबाक बात अछि जे एकटा राजा गृहस्थाश्रमक कोनो अन्य भिड़गर काज करबासँ असमर्थ भऽ सकैत अछि। तेँ हुनका एकटा हल्लुक काज बड़दक चरबाहि दऽ देल गेलनि। हँ हुनका इहो काज नहि देबाक चाहैत छलनि, मुदा काज नहि कऽ यदि ओहिना बैसल रहितथि तँ लोककेँ शंका भऽ सकैत छलैक आ ई रहस्य खूजि सकैत छल। तेँ नाम धरा कऽ किछु काज हुनका दऽ देल गेल होनि से ओतेक असंगत नहि।

उगनाक सम्बन्धमे लोकक इहो कहब छैक जे एक दिन विद्यापति उगनाक संगे कोनो निर्जन स्थानमे भ्रमण कऽ रहल छलाह। ओही समयमे हुनका बड़ जोर पियास लगलनि। जतऽ पियास लगलनि ओतऽ कतहु पानि नहि छलैक। मुदा उगना ओहिठाम पानि आनि कऽ देलकनि। विद्यापति जखन पानि पिलनि तँ गंगाजलक स्वाद लगलनि। ओ एहि रहस्यक विषयमे उगनासँ पुछलथिन। पहिने तँ उगना एहि गप्पकेँ टारबाक प्रयास कयलक, मुदा जखन विद्यापति नहि मानलथिन तँ अपन असली रूप (महादेव) मे हुनका सोझाँ प्रकट भेलाह।

हमरा जनैत उपर्युक्त घटना उगनाकेँ महादेवक रूपमे प्रमाणित करबाक हेतु बुनल जालक एकटा पुष्ट कडी अछि। हँ, यदि एहन बात छैके तँ शिवसिंह हेतु ओतऽ पानि आनब कोनो असम्भवस काज नहि छल) किएक तँ जखन शिवसिंह युद्धभूमिसँ भागल होयताह तँ किछु दिन एमहर-ओमहर अवश्य भटकल होयताह। अत: ओहि स्थानमे कतऽ की छैक से सभ हुनका बुझल छल होयतनि। तेँ यदि ओ ओहि स्थानपर पानि अनलनि तँ कोनो चमत्कारक बात नहि। आब जतऽधरि गंगाजलक बत रहल से तँ एही लेखमे आगू विद्यापति शिवसिंहकेँ शिवक अवतार मानलनि अछि। तेँ यदि शिवसिंह हुनका हेतु जल अनलनि तँ ओ जल कोना होइत ! शिवक हाथसँ जखन जल आओत तँ ओ गंगाजल छोडि आन जल नहि भऽ सकैछ।

तखन आब विद्यापतिक किछु पाँती देखि कऽ किछु गोटे किछु कालक हेतु शंका उठा सकैत छथि जे 'उगना' महारानी लखिमाक पति नहि, गौरीक पति शिव छलाह। किएक तँ उगना यदि लखिमाक पति शिव रहितथि तँ ओ एहि प्रकारसँ निम्नांकित पदक रचना नहि कऽ, दोसर प्रकारसँ करितथि–

उगना रे मोर कतए गेला
कतए गेला शिव किदहु भेला।
नन्दन वनमे भेटल महेश
गौरी मन हरखित मेटल कलेश।

रचना जे होइत –

उगना रे मोर कतए गेला
कतए गेला शिव किदहु भेला

नन्दन वनमे भेटल महेश
मोर मन हरखित भेटल कलेश ।

विद्यापतिक उपर्युक्त पाँतीपर ध्यान देला उत्तर ई बुझना जाइत अछि जे कवि एकर रचना अपनापर आरोपित कऽ कऽ नहि, अपितु गौरीपर आरोपित कऽ कऽ कयने छथि। किएक तँ मनोवैज्ञानिक तथ्य अछि जे कवि वा लेखक जाहि चीजसँ बेसी सम्पर्कित रहैत छथि ओ ओकरे वर्णन करेत छथि। ई भोगल, यथार्थ अथवा कल्पना दुनू रूपमे भऽ सकैत अछि। तँ यदि विद्यापति एहि पदक रचना अपनापर आरोपित कऽ कऽ करितथि तँ स्त्रीक आभूषण कङना नहि दऽ पुरुषक आभूषण दितथि–

जे मोरा कहताह उगना उदेश
ताहि देबओ कर कङना भेष ।

उपर्युक्त पाँतीसँ इहो स्पष्ट होइत अछि जे ताकऽबला पुरुष (विद्यापति) नहि, स्त्री (गौरी) छथि। किएक तँ प्रलोभन कङनाक देल गेल अछि । यदि विद्यापति ताकऽ जइतथि तँ निश्चय पुरुषक आभूषणक प्रलोभन दितथि। हँ, एहिठाम ई कहल जा सकैत अछि। मुदा पुनः निम्नांकित पाँतीसँ ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे उगनाकेँ ताकऽबला विद्यापति नहिये छथि–

नन्दन वनमे भेटल महेश
गौरी मन हरखित मेटल कलेश ।

आब उपर्युक्त पाँती सभसँ ई साफ स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे शिवसिंह केँ उगनाक रूपमे उगबासँ पहिने वा बादमे एहि पाँती सभक रचना भेल छल। मुदा उगनाकेँ विद्यापतिक सँग छोड़लाक बाद किन्नहुँ नहि। तँ ई कहब अनुचित अछि जे उगना जखन विद्यापतिक सङ छोड़ि देलथिन तँ विद्यापति बताह भऽ कऽ ई पद गाबऽ लगलाह। दोसर, जतेक वेदना उगनाक विरहसँ बहरयबाक चाही ओतेक वेदना एहि गीतसँ नहि बहराइत अछि। एहना स्थितिमे महान् आशावादी कवि महान् निराशावादीमे बदलि जइतथि आ निराशावदी पदक रचना करितथि, जेना कि ओ आगा कयलनि अछि–

तातल सैकत बारि-बिन्दु-सम
सुत-मित-रमनि समाज
तोहि बसारि मन ताहि समरपल
आब होअय कोन काज
माधव, हम परिणाम निरासा ।

एहिसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे 'उगना रे मोरा कतए गेला' बला पदक रचना उगनाक रूपसँ शिवसिंहकेँ विद्यापतिक संग छोड़लाक पहिनेक अछि।

आब पुनः एहिठाम ई सोचबाक बात अछि जे जँ महादेवक दोसर नाम 'उगना' तँ महाराज शिवसिंहक दोसर नाम 'उगना' राखब कोनो अनुचित नहि। किएक तँ ओशिवसिंहकेँ 'शिव' क अवतार मानैत छलाह–

भनइ विद्यापति कवि कंठहार
रस बुझ सिवसिंह सिब अवतार ।

*गीता*मे श्रीकृष्ण कहलनि अछि– नराणां च नराधिपः। अर्थात् नरमे राजा हमहीं छी। तखन जँ विद्यापति महाराज शिवसिंहमे 'शिव' क रूप देखलनि तँ कोनो अनुचित नहि। आब एहिठाम ई ध्यान देबाक बात अछि जे जखन 'शिव' आ 'शिवसिंह' मे कोनो दूरी नहि, तखन शिवसिंहक नाम उगना किएक नहि पड़ि सकैत अछि? तँ ई कहल जा सकैत अछि जे विद्यापतिक उगना गौरी पति नहि, लखिमाक पति शिव छलाह।

आब एकटा विचारणीय प्रश्न ई उठैत अछि जे उगना विद्यापतिक जीवनक सभसँ महत्त्वपूर्ण आ उल्लेखनीय घटना छल। ओ बारह वर्षधरि विद्यापतिक ओहिठाम रहल छलाह। एहना स्थितिमे मात्र एकठाम उगनाक चर्चा अबैत अछि। ई एना किएक? जखन कोनो कवि वा लेखकक सङ आकस्मिक घटना घटैत छेक तँ ओ पूर्ण रूपसँ आन्दोलित भऽ उठैछ आ ओकर कलम फनकऽ लगैत छैक। एहि परिस्थितिमे उगनापर कतेकों गीतक रचना भऽ जयबाक चाहैत छल जे नहि होइत अछि। एहिसँ ई बुझना जाइछ जे शिवसिंह आ विद्यापतिक बीच उगनाक प्रसंग, एकटा सुनियोजित घटना छल।

आब यदि उगनाकेँ विद्यापतिक संग छोड़बाक घटनापर ध्यान देल जाय तँ सम्पूर्ण घटना एकटा हल्लुक नाटकीयतासँ भरल अछि। उगनाकेँ कोनो काजमे देरी करब, विद्यापतिक पत्नीकेँ खा-मखाह उग्र बनायब,लगमे चेरा राखब, एहन अवसरपर विद्यापतिक उपस्थिति, विद्यापतिक मुँहसँ 'साक्षात् शिवपर प्रहार' कहायब आ तकर बाद उगनाक पलायन से समीचीन नहि बुझना जाइत अछि।

तखन जतेकधरि शिवसिंहक उगनाक रूपमे संग छोड़बाक प्रश्न अछि, ओहि सम्बन्धमे ई कहल जा सकैत अछि जे हिन्दू धर्मशास्त्रक अनुसार पतिक कोनो सूचना नहिं भेटलापर स्त्री सती भऽ जाइत छलीह। तेँ लखिमा सेहो बारह वर्षधरि पतिक बाट देखलनि, मुदा नहि अयलापर सती होयबाक तैयारी कयलनि। स्व. मुकुन्द झा 'बख्सी' *मिथिला भाषामय इतिहास* मे लिखैत छथि– "बारह वर्ष व्यतीत भऽ गेलापर महारानी लखिमा शास्त्र विधिसँ कुशक प्रतिमा बना कऽ अपन पति महाराज शिवसिंहक चिता सजौलनि आ ओहिमे स्वयं सती भऽ गेलीह।" एहना स्थितिमे महारानी लखिमाकेँ सती होयबासँ पहिने शिवसिंहकेँ प्रकट होयबाक लेल विद्यापति हुनकासँ आग्रह कयने होयथिन। ओ आग्रह क्रमशः बढैत-बढैत भेद खुजबाक स्थितिमे पहुँचि गेल होइक। तेँ शिवसिंह ओहि स्थितिमे अपनाकेँ गोप्य नहि राखि सकबाक कारणेँ हुनक संग छोडि देने होथि। अथवा महारानी जखन सती भऽ गेलीह तँ शिवसिंहक कुशक प्रतिमा सेहो जराओल गेल होयतनि। ई बात हुनका असह्य बूझि पडल होनि वा एकर बाद शास्त्रीय नियमक अनुसार दुनियाँसँ कोनो सम्बन्ध नहि रहि जाइत छैक, तेँ विद्यापतिक संग छोड़ि कऽ चल गेल होथि।

उपर्युक्त घटनाक सम्बन्धमे ई प्रश्न उठि सकैत अछि जे विद्यापति एहि रहस्यकेँ किएक नहि खोललनि? एकर अन्तरमे ई कहल जा सकैत अछि जे शिवसिंह हुनकासँ सन्त करा लेने होयथिन जे एहि रहस्यकेँ हम कहियो नहि खोलब। जेना कि एहन 'सन्त' क चर्चा जनश्रुतिमे अबैत अछि। दोसर, यदि शिवसिंह विद्यापतिक संग महारानी लखिमाकेँ सती भेलाक बाद छोड़लनि तँ लोकक प्रश्नक झड़ी देखि कऽ वा आब बाजिए कऽ की होयत से सोचि गुम्म भऽ गेल होथि आ एकर रूप महादेवक दऽ देने होथि तँ कोनो अत्युक्ति नहि। कारण, निम्नांकित ऐतिहासिक क्रमपर ध्यन देलाक बाद संग छोड़बाक बात किछु स्पष्ट आ सत्य बुझना जाइत अछि।

म.म.पं. उमेश मिश्र,स्व. रमानाथ झा, स्व. शिवनन्दन ठाकुर तथा श्री सुभद्र झा विद्यापतिक मृत्यु १४४८ ई. मानलनि अछि। इतिहासकार लोकनि शिवसिंहक राज्यारोहण काल १४०० ई. मानैत छथि। श्री रामरीझन रसूलपुरी *आर्यावर्त*मे प्रकाशित 'मिथिला का ओइनवार राजवंश' शीर्षक लेखमे लिखैत छथि– "महाराजा शिवसिंह देव के राज्यारोहण के चौथे वर्ष में जौनपुर सुल्तान की महती सेना ने गयासबेग के नायकत्व में मिथिला पर आक्रमण कर दिया।" युद्धक बारह वर्षक बाद महारानी लखिमा सती भेलीह। विद्यापति शिवसिंहक वियोगक बत्तीस वर्षक बाद मरऽ काल वा ओकर आसपासमे स्वप्न देखलनि। अतः राज्यारोहण काल १४०० ई. +४ वर्षक औन-पौन धरि गद्दीपर बैसबाक काल + १२ वर्षधरि लखिमाक शिवसिंहक प्रतीक्षा काल +३२ वर्षक बाद विद्यापतिकेँ स्वप्न मे देखब। (१४००+४+१२ +३२ = १४४८) कुल मिला कऽ १४४८ ई. होइत अछि। बहुमतसँ विद्यापतिक मृत्युकालक १४४८ ई. मानल गेल अछि। आब एहिठाम ई द्रष्टव्य अछि जे यदि युद्धक बाद शिवसिंह उगनाका रूपमे विद्यापतिक ओहिठाम नहि रहलाह तँ हुनका १४३६ ई. (१४०४ ई. मे युद्ध +३२ वर्षपर सपना = १४३६ ई.) में सपना देखबाक चाहियनि जे नहि देखैत छथि। ओ अपना पत्नीसँ कहैत छथिन जे आब हम बेसी दिन नहि जीब। कारण; राजा शिवसिंहकेँ बत्तीस वर्षपर सपनामे कारी रूपमे देखलियनि अछि–

सपना देखल हम सिवसिंह भूप,
बतीस बरखपर सामर रूप।

आओर सपना देखबाक जिकिर अपना पत्नीसँ कयलाक किछुए दिनक बाद विद्यापति अपन पार्थिव शरीरक त्याग कयलनि। एहिसँ ई संकेत भेटैत अछि जे शिवसिंह निश्चितरूपेण छद्म वेष बना बना कऽ उगनाक रूपमे विद्यापतिक ओहिठाम रहलाह।

मिथिलांचलमे एकटा पद चरितार्थ अछि– काशीमे मरब तँ रामक कोन नेहोरा! ठीक एहिना यदि विद्यापतिक ओहिठाम महादेव उगनाक रूपमे छलाह तँ ओ निम्नांकित पदक रचना किएक कयलनि ?

हे हरि बन्दो तुअ पद नाय
तुअ पद परि हरि पाप पयोनिधि
पारक कोन उपाय।

जनिका ओहिठाम साक्षात् महादेव नोकरक रूपमे रहलाह, हुनका पारक तँ 'बहुत उपाय भऽ सकैत छलनि। तखन 'पारक कोन उपाय' क चिन्ता हुनका किएक सतौलकनि ? हमरा जनैत जँ उगना महादेव छल तँ हुनका एहन शंका नहि होयबाक चाहैत छलनि। अस्तु।

विद्यापतिक एहन कोनो रचना नहि अछि जाहिसँ ई स्पष्ट होइतय जे हुनका सङ रहऽबला उगना महादेव छलाह। हँ, एहिठाम लोक इहो कहि सकैत अछि जे शिवसिंहे उगनाक रूपमे छलाह तकरे कोन विद्यापतिद्वारा लिखित प्रमाण अछि ? यद्यपि एहू सम्बन्धमे हुनकाद्वारा लिखित कोनो प्रमाण नहि अछि, तथापि हुनक रचना, ऐतिहासिक क्रम राजनीतिक, परिस्थिति, मनोवैज्ञानिक कारण तथा कतेकों एहन तथ्य अछि जे 'उगना' केँ शिवसिंहे होयब प्रमाणित करैत अछि।

जनकपुरधाम

विद्यापतिको उगना

शिवसिंह युद्धभूमिबाटै बेपत्ता भएका थिए भन्ने कुरा सर्वविदित छ। उनको निकै खोजी गरियो, तर उनी कतै फेला परेनन्। इतिहासकारहरू यसभन्दा अगाडि बढ्न सकेका छैनन्। यहाँनिर आएपछि सबै मौन भएका छन्। तर कुरोचाहिँ यत्तिकैमा टुङ्गिदैन। उनलाई पक्कै पनि केही भएको थियो होला। त्यसैले यस सम्बन्धमा तीनथरिका कुरा उठाउन सकिन्छ। पहिलो के भने उनी मारिए। दोस्रो यवनले उनलाई बन्दी बनाए। र, तेस्रो चाहिँ उनले पलायन गरे। अब पहिलो कुरामा एउटा शङ्का के उठाउन सकिन्छ भने यदि उनी युद्धभूमिमा मारिएका भए उनको शव त भेटिनुपर्थ्यो नि ! तर, खोजी भए तापनि शव पाइएको थिएन। त्यसैले शिवसिंह मारिए भनेर भन्न मिल्दैन। यवनद्वारा उनलाई बन्दी बनाइएको खण्डमा इतिहासको क्रम पक्कै पनि अगाडि बढ्ने थियो। किनकि एउटा राजालाई बन्दी बनाइनु सामान्य कुरा होइन, जुन कसैलाई थाहै नहोस्। अनि त तेस्रो कुरामा मात्र भर पर्दै उनी युद्धभूमिबाट भागेकै थिए भन्ने कुरालाई नै सत्यतासँग नजिक मान्नुपर्ने हुन्छ। यस सम्बन्धमा रामवृक्ष बेनीपुरीद्वारा सङ्कलित तथा आचार्य रामलोचनशरणद्वारा सम्पादित *विद्यापतिकी पदावली* मा विद्यापतिको परिचय दिँदै लेखिएको छ– "शिवसिंह सेनाका साथ गएर बादशाहसँग लड्न थाले। उनी शाही सेनाको व्यूह तोडी बादशाह नजिक पुगे र आफ्नो तलबारले बादशाहको शिरको मुकुट उडाएर बाहिर निस्के। उनको वीरता देखेर बादशाह मुग्ध भए। यवन सेना शिवसिंहको पछाडि दगुरे, तर बादशाहले रोकिदिए।

शिवसिंह त्यहाँबाट नेपालतर्फ जङ्गलमा पसे र फर्केर उनी आफ्नो राज्यमा आएनन्।" यस कुरामा केही सत्यको सम्भावना देखिन्छ। किनकि उनी पूर्णतया युद्ध हारिसकेका थिए। युद्धमा पराजयपछि तीनवटा बाटा मात्र बाँकी रहन्छन्। पहिलो– विजयीको अधीनस्थता स्वीकार गर्नु वा बन्दी बन्नु। दोस्रो– आत्महत्या वा प्रयासपूर्वक युद्धभूमिमा प्राण त्याग गर्नु। र, तेस्रो– पलायन हुनु। यी तीनमध्ये दुइटा उनले गरेनन्। अनि त तेस्रो बाटो उनले पक्कै पनि रोजे होलान्। किनकि यसबाहेक अरू केही विकल्प नै थिएन। यस कुराको समर्थन रामवृक्ष बेनीपुरीले पनि गरेका छन्।

अब यहाँ प्रश्न के उठ्छ भने यदि शिवसिंह युद्धभूमिबाट पलायन भए भनेदेखि भागेर कहाँ गए ? यस सम्बन्धमा निम्नाङ्कित कुरा भन्न सकिन्छ। युद्धको समयमा विद्यापति नेपालका राजा पुरादित्यको आश्रयमा थिए। उनकै अभिभावकत्वमा मिथिलाको

राजपरिवार पनि त्यहीं सुरक्षाका लागि निर्वासित जीवन बिताइरहेको थियो। त्यसैले छद्म भेष धारण गरी शिवसिंह विद्यापतिकहाँ गएका थिए भन्दा कुनै अत्युक्ति नठहर्ला। डा. ब्रजकिशोर वर्माले आफ्नो उपन्यास *विद्यापति* मा र राजेश्वर झाले आफ्नो नाटक *विद्यापति* मा उगनाको चर्चा नेपालबाटै गरेका छन्। अर्को उगनाको सम्बन्धमा विद्यापतिले रहस्यबाट पर्दा उठ्न दिएका थिएनन् भन्ने कुरा पनि जगजाहेर छ। यस्तो स्थितिमा छद्म भेष बनाई बस्ने सम्बन्धमा शिवसिंह र विद्यापतिका बीच कुनै गोप्य सम्झौता भएको थियो भन्ने कुरालाई नकार्न सकिन्न। छद्म भेषमा बस्नुको कारणमा मानिसले भगुवा राजा भनेर होच्याउलान् भन्ने भयलाई लिन सकिन्छ। अर्को, यवनले उनलाई समात्न घात लगाएको पनि हुन सक्दथ्यो। त्यसैले शिवसिंहले प्रकट नभई छद्म भेषमै बस्नु उपयुक्त ठानेका होलान्। यस आधारमा के भन्न सकिन्छ भने विद्यापतिकहाँ उगनाको रूपमा महादेव होइन, राजा शिवसिंह नै बसेका थिए।

शिवसिंहको छद्म भेषका बारेमा सुप्रसिद्ध विद्वान् ब्रजकिशोर वर्माले आफ्नो आशङ्का यसरी प्रकट गरेका छन्– "त्यो कस्तो गजबको रूपसज्जा थियो,जसले गर्दा राजा शिवसिंहलाई राजा पुरादित्यले चिन्न सकेनन्।" वर्माजीको यस शङ्काको समाधान भोलानाथ झाले निम्नानुसार गरेका छन्– "त्यो कस्तो गजबको रूपसज्जा थियो, जसले गर्दा पाण्डवहरूलाई राजा विराटले चिन्न सकेनन्।" अस्तु।

अब जहाँसम्म 'उगना' को नामकरणसम्बन्धी कुरा छ, त्यो यसप्रकार भएको हुन सक्दछ– धेरै दिनसम्म शिवसिंह यता-उता भौंतारिएपछि विद्यापतिकहाँ पुगेका होलान्। निकै समयसम्म अन्यत्रै डुलिरहेर (छद्म भेषमा) त्यहाँ प्रकट भएका थिए होलान्। त्यसैले उनको नाम 'उगना' रहन गएको होस्। 'उगना'को अर्थ मैथिली भाषामा 'उदाउने' भएकोले यो कुरा सत्य नै लाग्दछ। अर्को, छद्म भेषमै बस्न चाहन्थे। त्यसैले उनको नाम 'उगना' (उग+ना) अर्थात् न उदाऊ, डुबिरहू, राखिएको होस्।

उगना शब्दलाई भाषाविज्ञानको कसीमा राखेर हेर्न मिल्दैन। त्यसैले 'उगना' शब्द 'उग्रनाथ' बाट उद्भूत भएको हो भन्नु समीचीन लाग्दैन। किनभने मिथिलामा नाम राख्ने परम्परा विचित्र किसिमको छ। जस्तो– मङ्गलवार, बुधवार, शनिवार आदि दिनमा जन्मेको मान्छेको नाम मङ्गला, बुधना, शनिचरा राख्ने गरिन्छ। यस्तै धेरै दिनसम्म नहिँड्ने बच्चाको नाम 'लोथवा', बढ्ता बामे सर्नेको 'गुड्का', धेरै बढ्ने केटीको 'बढनियाँ', नबढ्ने केटीको 'भुटिया' राख्ने गरेको पाइन्छ। यस्तै ठीक विपरीत अर्थमा नाम राख्ने चलन पनि मिथिलामा छ। जस्तो कि – निरक्षर मान्छेको नाम 'वैदिक', दरिद्र मान्छेको नाम 'धनिकलाल', हलो जोत्ने मान्छेको नाम 'राजा' आदि। यी सबै नामकरणका आधारमा उगनाको नामकरणलाई असङ्गत भन्न मिल्दैन।

उगनाको बारेमा मानिसको भनाइ के पाइन्छ भने ऊ अर्धपागल थियो। यहाँनेर महाराज शिवसिंहलाई लिएर मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोणले हेर्ने हो भने यो अवगुण उनमा आउन सक्दथ्यो। किनकि एकातर्फ राजदरबार र अर्कातर्फ सामान्य गृहस्थी परिवार। दुवैको परिस्थितिमा पर्याप्त भिन्नता पाइन्छ। त्यसैले एउटा राजाले सामान्य गृहस्थी परिवारमा पारिवारिक सदस्यको रूपमा आफूलाई ढाल्न सक्दैन। उसका सम्पूर्ण आहार-व्यवहार त्यस परिवारका सदस्यहरूको आहार-व्यवहारभन्दा विपरीत हुन जान्छन् र, यसै आधारमा यदि शिवसिंह अर्धपागल थिए भने उगना पनि अर्धपागल थियो होला। यस कुरालाई अमान्य भन्न मिल्दैन।

उगनाको विषयमा मानिसको के पनि मत रहेको पाइन्छ भने ऊ विद्यापतिकहाँ गोरु-गोठालोको काम गर्दथ्यो । यसमा विचार गर्नुपर्ने कुरा के छ भने एउटा राजाले गृहस्थाश्रमको कुनै गह्रौं काम गर्न नसक्ने हुन सक्छ । त्यसैले शिवसिंहलाई सजिलो कामको रूपमा गोरु चराउने जिम्मा दिइएको थियो होला । हो, उनलाई यस काममा पनि लगाउनु हुन्नथ्यो । तर, काम नगरी त्यसै बसिरहेका भए मानिसलाई शङ्का लाग्न सक्थ्यो र रहस्य खुल्न सक्दथ्यो । त्यसैले नामकै लागि भए पनि उनलाई एउटा काममा लगाइएको थियो होला भन्ने कुरालाई असङ्गत मान्न मिल्दैन ।

उगनाको बारेमा मानिसको भनाइ के पनि पाइन्छ भने– एक दिन विद्यापति उगनासँग कुनै निर्जन ठाउँमा भ्रमण गरिरहेका थिए । त्यसैबेला उनलाई तिर्खा लाग्यो । त्यस ठाउँमा कतै पानी थिएन । तर उगनाले त्यहाँ पानी ल्याएर विद्यापतिलाई खान दियो । विद्यापतिले त्यस पानीमा गङ्गाजलको स्वाद पाए । उनले यस रहस्यको बारेमा उगनासँग सोधे । पहिले त उगनाले टालटुल पार्ने प्रयास गऱ्यो । तर, विद्यापतिले नमानेपछि उसले आफ्नो वास्तविक रूप (महादेव) विद्यापतिका सामु प्रकट गरिदियो ।

वास्तवमा उपर्युक्त घटना उगनालाई महादेवका रूपमा प्रमाणित गर्नका लागि बुनिएको जालोको एउटा पुष्ट कडी हो । यदि त्यहाँ उगनाले पानी ल्याएको प्रसङ्ग सत्य नै भएको खण्डमा पनि शिवसिंहका लागि त्यहाँ पानी ल्याउनु असम्भव थिएन । किनकि युद्धभूमिबाट भागेपछि शिवसिंह जङ्गलमा अवश्य पनि भौंतारिएका थिए होलान् । अतः जङ्गलमा कुन ठाउँमा के छ भन्ने कुरा उनले थाहा पाएका हुन सक्छन् । त्यसैले यदि उनले त्यहाँ पानी ल्याए भने त्यो कुनै चमत्कारको कुरो थिएन । अब जहाँसम्म गङ्गाजलको कुरो छ । यस सम्बन्धमा विद्यापतिले शिवसिंहलाई शिवको अवतार मानेका थिए भन्ने कुरा यसै लेखमा उल्लेख गरिएको छ । त्यसैले शिवसिंहले ल्याएको पानी उनको लागि सामान्य कसरी हुन सक्दथ्यो ? शिवको हातबाट आएको पानी गङ्गाजलबाहेक अर्थोक त केही हुनै सक्दैनथ्यो ।

यसपछि विद्यापतिका केही पङ्क्तिहरूका आधारमा कसैले शङ्का उठाउन सक्ला । कस्तो शङ्का भने 'उगना' महारानी लखिमाका पति होइन, गौरीका पति शिव थिए । किनकि यदि उनी लखिमाका पति शिव भइदिएका भए निम्नलिखित पदको रचना यसरी गरिँदैनथ्यो–

उगना रे मोर कतए गेला
कतए गेला शिव किदहु भेला ।

नन्दन वनमे भेटल महेश
गौरी मन हरखित मेटल कलेश ।

रचना यसप्रकारले हुनुपर्दथ्यो–

उगना रे मोर कतए गेला
कतए गेला शिव किदहु भेला
नन्दन वनमे भेटल महेश
मोर मन हरखित भेटल कलेश ।

विद्यापतिरचित उपर्युक्त पङ्क्तिलाई विचार गर्ने हो भने कविले यसको रचना आफूमाथि आरोपित नगरी गौरीमाथि आरोपित गरेका छन् । किनकि मनोवैज्ञानिक

तथ्यअनुसार कवि वा लेखक जुन कुरासँग बढी सम्पर्कित रहन्छन्, त्यसकै वर्णन गर्ने गर्दछन्। यो भोगिएको यथार्थ अथवा कल्पना दुवै रूपमा हुन सक्दछ। त्यसैले यदि विद्यापतिले यस पदको रचना आफूमाथि आरोपित गरेर गरेका भए स्त्रीको आभूषण कङ्गन नदिई पुरुषको आभूषण दिने थिए –

जे मोरा कहताह उगना उदेश
ताहि देबओ कर कङना भेष ।

उपर्युक्त पङ्क्तिबाट के पनि स्पष्ट हुन्छ भने उगनाको खोजी गर्ने पुरुष (विद्यापति) होइन स्त्री (गौरी) हुन्। किनकि कङ्गनको प्रलोभन दिइएको छ। यदि विद्यापतिले खोज्न हिँडेका भए निश्चय पनि पुरुष-आभूषणको प्रलोभन दिइने थियो। हो, यहाँ कङ्गन पुरुषको आभूषण पनि हुन सक्दछ भन्ने कुरा उठाउन सकिन्छ। तर, पुनः निम्नाङ्कित पङ्क्तिबाट उगनालाई खोज्ने विद्यापति होइनन् नै भन्ने स्पष्ट हुन्छ–

नन्दन वनमे भेटल महेश
गौरी मन हरखित मेटल कलेश ।

उपर्युक्त पङ्क्तिहरूबाट शिवसिंह उगनाको रूपमा उदाउनुभन्दा पहिले वा पछि यसको रचना भएको हो भन्ने पूर्णतः स्पष्ट हुन्छ। उगनाले विद्यापतिलाई छोडेर गइसकेपछि यसको रचना कदापि भएको होइन। त्यसैले उगनाले विद्यापतिको साथ छोडिदिएपछि विक्षिप्त भएर विद्यापतिले उक्त पद गाउन थाले भन्ने कुरा सर्वथा अनुचित छ। अर्को कुरा, उगनाको विरहमा जस्तो वेदना हुनुपर्ने हो, त्यस्तो वेदना यस गीतमा झल्कन्न। यस्तो स्थितिमा महान् आशावादी कवि घोर निराशावादी हुन सक्दथे र निराशावादी पदकै रचना गर्ने थिए; जस्तो कि उनले पछि आएर गरेका छन्–

तातल सैकत बारि-बिन्दु-सम
सुत-मित-रमनि समाज
तोहि बसारि मन ताहि समरपल
आब होअय कोन काज
माधव, हम परिणाम निरासा ।

यसबाट 'उगना रे मोरा कतए गेला' शीर्षक रचना शिवसिंहले उगनाको रूपमा विद्यापतिको साथ छोड्नु अगावै हो भन्ने स्पष्ट हुन्छ।

अब पुनः सोचनीय कुरा के आउँछ भने यदि महादेवको अर्को नाम 'उगना' थियो भने महाराज शिवसिंहको अर्को नाम 'उगना' राखिनु कुनै अनुचित थिएन। किनकि विद्यापति शिवसिंहलाई शिवको अवतार मान्दथे–

भनइ विद्यापति कवि कंठहार
रस बुझ सिवसिंह सिब अवतार ।

गीतामा श्रीकृष्णले भनेका छन्– नराणां च नराधिपः। अर्थात् नरमा राजा मै हुँ। त्यसो भए विद्यापतिले महाराज शिवसिंहमा 'शिव' को रूप देखे भने यसमा अनौठो मान्नुपर्ने के छ ? अब यहाँ विचारणीय कुरा के आउँछ भने जब शिव र शिवसिंहमा कुनै फरक छैन भने शिवसिंहको नाम उगना किन रहन सक्दैन ? त्यसैले विद्यापतिका उगना

गौरीपति होइन, लखिमापति शिव थिए भन्ने कुरा स्वत: प्रमाणित हुन्छ।

अब एउटा प्रश्न अझै के उठ्छ भने 'उगना' विद्यापतिको जीवनको सर्वैभन्दा महत्त्वपूर्ण र उल्लेखनीय घटना थियो। उगना बाह्र वर्षसम्म विद्यापतिकहाँ बसेको थियो। यस्तो अवस्थामा मात्र एक ठाउँमा उगनाको चर्चा उठ्नुको कारण के ? कुनै कवि वा लेखकको जीवनमा आकस्मिक रूपले कुनै घटना घट्दा ऊ पूर्णतया आन्दोलित हुन्छ र उसको कलम तिखारिन थाल्छ। यस्तो स्थितिमा उगनाबारे अनेकौं गीतहरू रचिनुपर्दथ्यो, तर रचिएनन्। यसबाट के स्पष्ट हुन्छ भने शिवसिंह विद्यापति बीच उगनाको प्रसङ्ग एउटा सुनियोजित घटना थियो।

अब उगनाले विद्यापतिको साथ छोड्नुको कारणमा दृष्टिपात गर्ने हो भने सम्पूर्ण घटना एउटा फितलो नाटकीयता जस्तो प्रतीत हुन्छ। उगनाले कुनै काममा ढिलो गर्नु, विद्यापतिकी पत्नी अनावश्यक रूपमा उग्र हुनु, नजिकै दाउरा राखिनु, यस्तो अवस्थामा विद्यापतिको उपस्थिति, विद्यापतिद्वारा 'साक्षात् शिवमाथि प्रहार' भनाइनु र त्यसपछि उगनाको पलायन हुनु स्वभाविक लाग्दैन।

महाराज शिवसिंहले उगनाको रूपमा विद्यापतिको साथ छोड्ने सन्दर्भमा के भन्न सकिन्छ भने हिन्दू धर्मशास्त्रअनुसार पतिको कुनै सूचना नपाएपछि पत्नीले सती जाने प्रथा थियो। यसैअनुरूप लखिमाले पनि बाह्र वर्षसम्म पतिको बाटो हेरिन्, तर नआएपछि सती जाने तयारी थालिन। स्व. मुकुन्द झा 'बख्सी' *मिथिला भाषामय इतिहास* मा लेख्छन्– "बाह्र वर्ष व्यतीत भएपछि महारानी लखिमाले शास्त्रविधिअनुरूप कुशको प्रतिमा बनाई आफ्ना पति महाराज शिवसिंहको चिता सजाइन् र त्यसमा स्वयं सती भइन्।" यस्तो विचित्रको अवस्थामा महारानी लखिमा सती जानुपूर्व विद्यापतिले शिवसिंहलाई आफ्नो वास्तविक रूपमा प्रकट हुने अनुरोध गरे होलान्। विद्यापतिको अनुरोध क्रमिकरूपमा बढ्दा-बढ्दा भेद खुल्न सक्ने अवस्थासम्म पुग्यो होला। शिवसिंहले आफूलाई गुप्त राख्न सक्ने अवस्था नदेखेपछि विद्यापतिको साथ छोडिदिएका हुन सक्दछन्। अथवा महारानी लखिमा सती हुने बेलामा शिवसिंहको कुशको प्रतिमा पनि जलाइएको थियो। यो कुरा उनलाई असह्य लागेको होला अथवा यसपछि शास्त्रीय नियमानुसार संसारसँग मानिसको कुनै सम्बन्ध बाँकी रहँदैन। त्यसैले उनी विद्यापतिको साथ छोडेर गएका होलान्।

उपर्युक्त घटनाको सन्दर्भमा विद्यापतिले यो रहस्य किन खोलेनन् त भन्ने प्रश्न उठ्न सक्दछ। यसको जवाफमा के भन्न सकिन्छ भने शिवसिंहले यस रहस्यबाट कहिल्यै पर्दा नउठाउने भनी विद्यापतिसँग वाचा गराएका थिए होलान्। यस्ता वाचाको चर्चा प्राय: जनश्रुतिमा पाउने गरिन्छ। अर्को कुरा, महारानी लखिमा सती गइसकेपछि शिवसिंहले विद्यापतिको साथ छोडेका भए अब बोलेर पनि के फाइदा भन्ठानेर अथवा मानिसको प्रश्नबाट बाँच्नका लागि उनले मौनता साधेका हुन सक्दछन्। यसपछि उगनालाई महादेवको रूप दिइएको पनि हुन सक्दछ। निम्नाङ्कित ऐतिहासिक क्रममा ध्यान दिने हो भने साथ छोड्ने कुरा केही स्पष्ट हुन्छ र सत्य पनि प्रतीत हुन्छ।

महामहिम पं. उमेश मिश्र, स्व. रमानाथ झा, स्व. शिवनन्दन ठाकुर तथा श्री सुभद्र झाले विद्यापतिको मृत्यु १४४८ ई. मा भएको मानेका छन्। इतिहासकारहरूका अनुसार शिवसिंहको राज्यारोहण १४०० ई. मा भएको थियो। श्री रामरीझन रसूलपुरीले *आर्यावर्त्त*मा प्रकाशित 'मिथिला का ओइनवार राजवंश' शीर्षक लेखमा लेखेका छन्–

"महाराजा शिवसिंह देवको राज्यारोहणको चौथो वर्ष जौनपुर सुल्तानको महती सेनाले गयासबेगको नेतृत्वमा मिथिलामा आक्रमण गऱ्यो।" युद्धको बाह्र वर्षपछि महारानी लखिमा सती भइन्। विद्यापतिले शिवसिंहसँग वियोगको बत्तीस वर्षपछि मर्ने बेलामा अथवा त्यसकै छेउछाउमा सपना देखे। अतः राज्यारोहणकाल १४०० ई. + ४ वर्षको छेउछाउ गद्दीमा बसेको अवस्था + १२ वर्षसम्म लखिमाद्वारा शिवसिंहको श्यामल रूप देख्नु। (१४००+४+१२+३२ = १४४८) सबैलाई जोड्दा १४४८ हुन आउँछ। बहुमतद्वारा विद्यापतिको मृत्युकाल १४४८ ई. मानिएको छ। अब यहाँनिर आएर पुनः एउटा विचारणीय कुरा आउँछ। त्यो के भने युद्धपछि शिवसिंह उगनाको रूपमा विद्यापतिकहाँ थिएनन् भने १४३६ ई. (१४०४ ई. मा युद्ध +३२ वर्षपछि सपना = १४३६ ई.) मा उनले शिवसिंहको सपना देख्नुपर्ने थियो, तर त्यस्तो छैन। उनी आफ्नी पत्नीलाई अब आफू नबाँच्ने कुरा बताउँछन्। किनकि राजा शिवसिंहलाई बत्तीस वर्षपछि सपनामा कालो रूपमा देखेका छन् उनले –

सपना देखल हम सिवसिंह भूप,
बतीस बरखपर सामर रूप।

र, आफ्नी पत्नीसँग सपनाको कुरा गरेको केही दिनपछि नै विद्यापतिले आफ्नो शरीर त्याग गरे। यसबाट के सङ्केत पाइन्छ भने शिवसिंह निश्चित रूपले छद्म भेष बनाई उगनाको रूपमा विद्यापतिकहाँ बसेका थिए।

मिथिलाञ्चलमा एउटा पद चरितार्थ छ– काशीमा मरे रामको किन निहोरा ? ठीक यसैप्रकार यदि विद्यापतिकहाँ उगनाको रूपमा महादेव बसेका भए उनले निम्नाङ्कित पदको रचना किन गर्थे ?

हे हरि बन्दो तुअ पद नाय
तुअ पद परि हरि पाप पयोनिधि
पारक कोन उपाय।

जसको घरमा साक्षात् महादेव नोकरको रूपमा बसेका होऊन्, त्यसका लागि पार पाउने त पर्याप्त उपाय हुन सक्दछन्। अनि त 'पारक कोन उपाय' भन्ने चिन्ताले उनलाई किन सतायो ? उगना यदि महादेव भइदिएको भए विद्यापतिले यस्तो चिन्ता लिनै पर्दैनथ्यो। अस्तु।

विद्यापतिको घरमा बस्ने उगना महादेव थिए भन्ने कुरालाई स्पष्ट पार्ने उनका कुनै पनि रचना पाईदैनन। हो, यहाँ मानिसले शिवसिंह नै उगना थिए भन्ने विषयमै विद्यापतिद्वारा लिखित के प्रमाण छ भनेर पनि प्रश्न उठाउन सक्छन्। उसो त यस सम्बन्धमा पनि विद्यापतिद्वारा लिखित कुनै प्रमाण छैन, तर उनका रचना, ऐतिहासिक क्रम, राजनीतिक परिस्थिति, मनोवैज्ञानिक कारण तथा अन्य विभिन्न तथ्यहरूबाट 'उगना' शिवसिंह नै थिए भन्ने कुरा प्रमाणित हुन्छ।

अनुवादक: धीरेन्द्र प्रेमर्षि

पण्डित रमाकान्त झा आ हुनक मैथिली महाकाव्य *व्यथा*

राजेश्वर नेपाली

महान् प्रजातन्त्र सेनानी तथा मैथिली महाकाव्य *व्यथा* क रचनाकार स्वर्गीय पण्डित रमाकान्त झा कें जन्म १९६४ साल कार्तिक शुक्ल एकादशी तिथि मे जनकपुर धामक निकटस्थ बभनगामा ग्राम मे भेल छलैन्हि। हुनक शिक्षा-दीक्षा पिता पं. दुःखमोचन झा कें रेखदेख मे घरे पर भेलैन्हि। ओ सत्रह वर्षक उमेरसँ कविता लिख लागल रहथि।

हमर निकटतम पडोसी मित्रराष्ट्र भारतमे महात्मा गान्धी कें नेतृत्व मे भए रहल स्वाधीनता आन्दोलनसँ प्रभावित भ' युवक झा १९९२ साल वैशाख २२ गते (अक्षय तृतीया) ५ मई १९३५ ई. रविवारक सन्ध्या साढे ६ बजे सम्प्रति जनकपुर हवाई मैदानक किनेर मे रहल पापमोचनी पोखरीक भिण्डपर अपन अन्य २१ युवक साथी सभ, जाहि मे प्रमुख रहथि बोधप्रसाद उपाध्याय, पं. रामभद्र झा, कमलाकान्त चौधरी, बौएलाल झा, यमुनाप्रसाद सिंह, इन्द्रप्रसाद मल्ल, देवशंकर गिरी, रामदुलार साह, महंथ गोकुल गिरी, गंगेश्वर झा सभ तत्कालीन महोत्तरीक आ गुलाबनारायण झा रौतहटक आदि सङ्ग २२ युवक एकतन्त्रीय राणाशासनसँ मातृभूमि नेपालकें मुक्त करा प्रजातन्त्रक स्थापनार्थ अपन-अपन सोनितसँ हस्ताक्षरक' प्रतिज्ञा कएने रहथि।

साहित्यसेवी पण्डित झा अपन लक्ष्य पूरा करवाक हेतु १९९५ साल मे "सेवा समिति" नामक संस्था कें गठन कए एकतन्त्रीय राणा शासन के विरोध मे सूर्यकान्त झा, कुँवर झा, रमानन्द ठाकुर आदि युवकक सङ्गठन बढौलन्हिं आ ओहि क्रममे पाछा नेपाली राष्ट्रीय कांग्रेसक स्थापना भेलाउपरान्त ओ ओकर सदस्यता ग्रहण क' ओहि मे लागि गेलाह आ' ओकर बनारस, दरभंगा आ' जयनगर अधिवेशन सभ मे सक्रिय रूप मे भाग लेलैन्हि एवं २००४ सालक प्रथम सत्याग्रह आन्दोलन कें सफल बनोलैन्हि। फलस्वरूप हुनका घरेसँ पक्राउ क' जलेश्वर जेल मे राखिदेल गेलैन्हि।

प्रखर गान्धीवादी विचारक पं. झा जेल सुधारक माग राखि कें आमरण अनशन कयलैन्हि आ' अट्ठाइसम् दिन मे तत्कालीन बडाहाकिमद्वारा हुनक माग स्वीकार कएला उपरान्ते ओं अनशन भङ्ग कएने रहथि, एहि घटनाकें महोत्तरीक जनता पर पैघ प्रभाव पडल छल। २००७ साल कार्तिक २६ गते सँ नेपाल मे सशस्त्र क्रान्ति आरम्भ भेल आ

पांचम दिन कार्तिक ३० गतेक साँझ ६ बजे क करिब, मिथिलाकें सर्वश्रेष्ठ पर्व 'छठि' स्थानीय जनता मनारहल समय मे जेल फोडिकें दिगम्बर झा, सरोज कोइराला, भीष्मजंग के.सी., सुन्दर झा शास्त्री, बुद्धिप्रसाद शर्मा आ' सुरेन्द्रबहादुर बस्नेत भगलैन्हि किन्तु सत्य आ' अहिंसाक पुजारी पं झा, भारतक समाजवादी नेता कवि नरेन्द्र देव आ कान नहि सुनएबाला राजबन्दी नकुल बहादुर सिंह तीनू राजबन्दी जेले मे रहिगेलाह। महोत्तरी जिला पर नेपाली कांग्रेसक आधिपत्य कायम भेला पर गठित प्रथम जन सरकारक प्रमुख गभर्नर रुद्रप्रसाद गिरी, दिगम्बर झा, सरोज कोइराला आ' महेन्द्रनारायण निधि आदिक अगुवाई मे हजारन लोकनिक जुलुस जलेश्वर जेल गेट पर पहुँच हुनकालोकनिके जेलमुक्त कराकें हार्दिक अभिनन्दन कएलकैन्हि। प्रजातान्त्रिक नेपालक प्रथम अन्तरिम मन्त्रिमण्डल मे नाम प्रस्तावित भ'गेल महोत्तरिक गान्धी पं. झा नेपाली कांग्रेसक प्रथम महोत्तरी जिला अध्यक्ष भेलथि। ओकर पश्चात् ओ पदीय राजनीति मे नहि लगलैन्हि।

किशोरावस्था सँ साहित्य सिर्जन मे लागल ओ राधेश्याम तर्जमे *सुदामा चरित्र* प्रथम हिन्दी खण्डकाव्यक रचना क' १९४१ ई (१९९७ साल) मे स्वयं प्रकाशित कराबि कें गाम-गाम मे कीर्तनमण्डलीद्वारा गायन करबाके राणा विरोधी जनमत तैयार कराब' मे कटिबद्ध भेल रहथि।

तत्पश्चात् पं. झा *वनकन्या* महाकाव्य *ग्राम सन्देश* खण्डकाव्य *जीवन* नाटक आ' *नेपाल के आधुनिक इतिहास* सब पद्यमय हिन्दी मे लिखलैन्हि। निर्लोभी राजनीतिज्ञ तथा प्रखर गान्धीवादी विचारक पं. झा सत्रह साल में प्रजातन्त्रक हत्या पश्चात् जीवनक अन्तिम चरण में मातृभाषा मैथिलीमे *व्यथा* महाकाव्यक रचना कएलैन्हि। २०१९ साल वैशाख शुक्ल अक्षय तृतीयाके दिन रचना पूरा भेल *व्यथा* मैथिली मे ७ सर्ग आ ८७२ हरिगीतिका छन्दक महाकाव्य अछि। रचना कएलाक एक दशक पाछा ओ स्वयं ओकर प्रकाशन कराब' मे सफल भेलथि। २०२८ साल आश्विन १० (२६ सितम्बर १९७१ ई.) महाष्टमी तिथि के दिन जनकपुरधामसँ अपन घर पहुँचैत-पहुँचैत घरक बगलके अपने आमक फूलवारी मे हुनक निधन भ'गेलनि। 'व्यथा' सम्प्रति त्रिभुवन विश्वविद्यलयके स्नातकोत्तर मैथिली पाठ्यक्रममे राखल अछि।

पं. झा जीवनके अन्तिम चरण मे प्रजातन्त्र के हत्या पश्चात् मुगलकालीन भारत मे सन्त कवि तुलसीदास हिन्दू धर्म संरक्षण के साथे जन-जागरण लएबाक हेतु लोकभाषा हिन्दीमे *रामायण* के रचना कएलैन्हि आ' भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के समय राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त *भारत-भारती* महाकाव्यक रचनाक, जनचेतना अभिवृद्धि कएलैन्हि ओहिना मातृभाषा मैथिली मे *व्यथा* महाकाव्यक रचना क' ओकर पाठसँ जनमानस के गान्धीवादी तौर तरिका अनशन धरना आ' सत्याग्रह क' निरंकुश पञ्चायती शासन कें खत्म करवाकहेतु उद्यत कएलैन्हि।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामक वनगमन कालमे जानकीक' व्यथा मे लिखल गेल *व्यथा* महाकाव्य पूर्णतः मौलिक रचना अछि आ' ओकर माध्यमसँ कवि अपहृत प्रजातन्त्रकें पुनर्प्राप्तिक हेतु संघर्ष करबाक लेल नेपाली जनता कें आस्वान कएल स्पष्ट देख जाइछ। मानवता के सफल शिल्पीकार पं. रमाकान्त झा रचित *व्यथा* महाकाव्य मैथिली भषाक मात्रे नहि सम्पूर्ण राष्ट्रक गौरव ग्रन्थ अछि आ' ओ हुनका अमरत्व प्रदान करैत अछि। एहि पुस्तक मे श्री रामक वनगमन काल मे सीता के राम, दशरथ, कैकेयी आ' कौशल्यासँ समयोचित संवादक साथे राम कें कौशल्या आ' लक्ष्मणसँ, लक्ष्मण कें सुमित्रा

आ' उर्मिलासँ आ फेर राम के प्रजाजन एवं लक्ष्मणसँ ओहिना सीताके फेर दशरथसँ आ, राम, लक्ष्मण एवं सीता कें कैकेयी आ' सुमित्रासँ तथा माण्डवी आ' श्रुतकीर्तिसँ संवाद अछि आ अन्त मे मर्यादा पुरुषोत्तम राम, सीता एवं लक्ष्मण संगहि वनगमनक हेतु प्रस्थान करैतकाल चारुदिश क्रन्दन भए रहल कोलाहलपूर्ण दृश्य व्यथाक मौलिकता अछि।

प्रथम सर्ग मे सीता अपन 'व्यथा' रखैत राज्यवनएवाक अपन अभिलाषा व्यक्त करैत, देशक नव निर्माण मे सभक श्रमदान आवश्यक अछि, सभके श्रमदान कएलापर जनता अकालमे नहि मरत अभिव्यक्त निम्न श्लोक मे वर्णित अछि –

हमरे सभक श्रमदान हमरा देशकें विकसित करत।
हमरा सभक साम्राज्य मे जनता अकाले नहि मरत॥

दोसर सर्ग मे सीता कहैछथिन स्वामीक आज्ञा पर चलब हमरा समाजक धर्म अछि त दुःखिया सभक संकट हरब से हो परम कर्तव्य अछि यथा –

स्वामीक आज्ञा पर चलब, हमरा समाजक धर्म अछि।
दुःखिया सभक, संकट हरब ई हो परक कर्तव्य अछि॥

तेसर सर्ग मे सीता के वन ज़ाए सँ रोकैत कौशल्या बड्ड मार्मिक शब्द मे कहैछथिन हम चकोरवत अहाँक आशमे केना रहब ? ताहिसँ अहाँ नहि जाउ। यथा –

किनकर मधुर मुखचन्द्र हम, निरखैत रहब चकोरिवत ?
किनकर मधुर अनुरागपर, आशालता कुसुमति रहत ?

चारिम सर्ग मे लक्ष्मण संगहि वन जएवाक हेतु माता सुमित्रा सँ आज्ञा लेब' पहुचैत छथि त माता सुमित्रा रामक सेवा करबाक आज्ञा दैत रामक हेतु अपन अमोल शरीर धरि देब' परे त देब कहै' छथिन, जे निम्न पंक्ति मे उल्लेख होइत अछि। यथा–

हे पुत्र आशिर्वाद अछि, रामक सकल सेवा करु।
कठिनाई में सुखलैत, रामक असुविधा वन मे हरू॥
कोनो समय पर यदि अमूल्य शरीर धरि देवय पड़य।
रामक निमित्त कठोर कष्टक, साधना पर तन जड़य॥

मातासँ आज्ञा प्राप्त कएँ लक्ष्मण उर्मिला सँ चौदह वर्षक लेल भ्राता राम संगहि वन जाए लगला सँ धैर्य धारण करबाक कहला पर उर्मिला बड्ड निश्छल भाव- सँ कहैछथिन- चौदह वर्षक अहाँ की बात करैत छी ? हम त जन्म भरिए नहि सय जन्म धरि एकसरी रहि सकैत छी आ वनवास धरि त हम एके आसन पर रहि जाएब यथा –

एतिवही दिवस धरि की कहैछ, रहि सकै छी जन्म भरि।
आज्ञा करु, हम एक आसन पर रहब वनवास धरि॥
एहि जन्म की सय जन्म एकसरि रहि सकैछी ध्यान पर।
अपनेक पद किंकरि रहि, अभिलाषा अछि केवल हमर॥

पांचम सर्ग मे राम, लक्ष्मण आ सीता तीनू वन जाए लागल बेरमे दुःख प्रकट करैत भरतक पत्नी माण्डवी आ शत्रुघ्नक पत्नी श्रुतकीर्ति दूनू सासु कैकेयी सँ विद्रोह करैत बताहि भेल छलिह जे निम्न पङ्क्ति मे उल्लेख होइछ। यथा –

श्री भरत भार्या माण्डवी श्रुतकीर्ति, शत्रुघ्न प्रिया ।
सुनलनि त्रिमूर्तिक वनगमन दूनु, बहिन जनकक धिया ॥
हा ! हा !! महान् अनर्थ कहि, छाति पिटैत विदा भेली ॥
दूनू प्रचण्ड बताहिसन सासुक निकट दौडलि गेली ॥

गान्धीवादी विचारक प्रभावसँ कवि दूनू के सत्याग्रही के रूप में प्रस्तुत करैत दरबारक मूल दरबांजा मे दूनू के धरना देल निम्नपङ्क्ति मे उल्लेख अछि । यथा –

चुपचाप दूनू बहिन दरबारक प्रधान केबाड लग ।
आसन जमा ऽ कएँ बैसि रहली, जाए कालक रोकि मग ॥

माण्डवी श्रुतकीर्ति समेतक इच्छा प्रकट करैत भरत नहि आवैतधरि हम बाट नहि छोड़ब कहि पथावरोध करैत धरना देल निम्न पङ्क्ति मे उल्लेख अछि –

देवर तथा प्राणेश गृह, अओताह नहि ताबत रहथू ।
निर्दोष हम छी, प्रमाणित करब, अनुचित अछि कहथू ॥

छठम् सर्ग मे राम, लक्ष्मण आ सीता तीनू गोटय वन जएबाक तैयारी सँ सबदिश कोलाहल अछि आ' महाराज दशरथसँ विदा होब' पहुचला पर ओहि ठामक दृश्य चिन्तनीय रहैत अछि तदोपरान्त महराज अपन आदेश पर पश्चात्ताप करैत राज्य व्यवस्था राजा के क्रम अनुसार होइत अछि आ' राजाक ढुलमूल नीति भेला पर ओ' सभक आक्रोसक विषय बनैत अछि । निम्न पङ्क्तिमे कहैं छथि –

राजाक ढुलमूल नीति होइछ, सभ प्रकार अकीर्तिकर ।
राज्यक व्यवस्था, सफल असफल ह्वैछ नृपतिक कर्म पर ॥

सातम् सर्ग मे कैकेयी कहैछथिन आनक विचार मे चलब पशुतुल्य होइछ आ सन्तान कें उठएबाक हेतु माता पिता कें प्रयत्न करबाक चाहि तथा कर्तव्य आगा मोह नहि राखक चाहि जे निम्न पङ्क्ति मे उल्लेख अछि –

अपना स्वतन्त्र विचार पर हमरा अटल विश्वास अछि ।
पशुतुल्य अछि, ओ मनुज, जे अनकर विचारक दास अछि ॥
सन्तान के उपर उठावक यत्न, मायक धर्म थिक ।
कर्तव्य सम्मुख मोह राखब, ई परम दुष्कर्म थिक ॥

वनगमन से पूर्व राम अपन मर्यादा पुरुषोत्तमत्व सिद्ध करैत नीति अभिव्यक्त करैत कहै छथि – नश्वर पदार्थक मोह करब अज्ञानता अछि । सबसँ पैघ प्रसन्नता होइछ जे सुख आ दुःख दूनू मे राखक चाहि किएक कि जे जेहन कर्म करैत छी, ओकर फल ओ' पबैत अछि ओ चाहे जे केओ होइथा । यथा –

नश्वर पदार्थक मोह, इ अज्ञानताक प्रभाव थिक ।
हम-हम करब लरि-लरि मरब ज्ञानक विशेष अभाव थिक ॥
अछि मूल्यवान प्रसन्नता, सुख मे रहू वा कलेष मे ।
कृतक भोगहिटा, परत धर मे रहू, परदेश मे ॥

राम, लक्ष्मण आ सीता तीनू गोटय वन प्रस्थान करैत काल मे चारु दिश क्रन्दन भए रहल निम्न पङ्क्ति मे उल्लेख भेल अछि –

जय अवध, जय अवधेश ! इ कहि कए त्रिमूर्ति विदा भेला ।
तीनू गोटय, परिजन समाजसमेत, पुर बाहर गेला ॥
रामक विदा पर घोर क्रन्दन कए रहल छल नारि नर ।
चारु दिशा, क्रन्दन हि क्रन्दनं, भए रहल छल मार्ग पर ॥

अन्त मे तिनू गोटय मातृभूमि के प्रणाम करैत वन प्रस्थान भेला पर सभक सुखसागर आ करुणा पुञ्ज मात्रे नहि प्राण जीवन वन गेलाह से निम्न पङ्क्ति मे उल्लेख अछि –

जय मातृभूमि स्वदेश, जय अवधेश, जय अवधेश्वरी ।
मन होइछ, बारम्बार चरण सरोज पर माथा धरी ॥
सविनय प्रणाम करैत, सीता, लखन, राम विदा भेला ।
सुख-सिन्धु करुणा पुञ्ज, सभक प्राण जीवन वन गेला ॥

व्यथा महाकाव्यक वारेमे मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार तथा समालोचक सुन्दर झा शास्त्री अपन मैथिली मासिक *फूलपात* क २०२९ साल आषाढक अंकमे नवकृति शीर्षक मे समीक्षा प्रस्तुत करैत लिखने छथि–

१८० पृष्ठ मे उनिवद्ध हरिगीतिका छन्द मे सात सर्गक परम अहलादिनी कथा जे श्रीरामके वनगमन कालक जानकीक व्यथा सँ भरल अछि; नेपालक इतिहास मे कोनो सुच्चा नेपालीद्वारा लिखल मैथिलीक प्रथम प्रबन्ध काव्य अछि ।

नेपालक मैथिली साहित्यिक इतिहास पुस्तकक पृष्ठ ८३ मे लेखक डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मौन *व्यथा* के सन्दर्भ मे लिखने छथि – रामकथा के आधारपर मे पं. रमाकान्त झा अभिनव करुण काव्य *व्यथा* के रचना कयलनि । *व्यथा* मे बिलकुल कम चर्चिता माण्डवी आ' श्रुतकीर्तिद्वारा वनगमन काल मे प्रस्थान कएल राम, लक्ष्मण आ' सीता के पथावरोध कएल प्रसङ्ग कवि के मौलिक उद्भावना अछि । वनगमन काल मे सीता के उद्विग्नता, रामक प्रति लक्ष्मण के श्रद्धाभक्ति, भरत के त्याग उर्मिलाक विवाद आदि मार्मिक अभिव्यक्ति भेल अछि । महाकवि रमाकान्त झा महाकवि देवकोटा जेहने साहित्यिक आ' राजनीतिक प्रतिभा के धनि महापुरुष रहैथ ।

ओहिना डा. शिव शंकर झा 'कान्त' अपन मैथिली महाकाव्यक *उद्भव आ' विकास* पुस्तकक पृष्ठ २४७ मे *व्यथा* महाकाव्यक यथार्थता के सिद्ध करैत लिखने छथि–

"वस्तुतः शब्द सभक चयन मे कवि बहुत प्रगतिशील छथि । तत्सम शब्दक प्रयोग आ' ठाम-ठाम मे देशी शब्दक प्रयोग अभिव्यक्ति के मनोहारी बना देने अछि । अलङ्कारक प्रयोग स्वाभाविक रूप मे जगह-जगह मे भेल अछि संगहि अर्थान्तर न्यासक माध्यमसँ अभिव्यक्ति कें पुष्टी करवाक प्रयास भेल अछि । चरित्रक उद्भावना मे रमणीय कथा मे किछु नवीनता लाएल गेल अछि तथा चरित्र चित्रण के आधुनिक विधानप्रति किछु सकारात्मक रहल अछि ।"

बेलाग्राम, जनकपुरधाम

पण्डित रमाकान्त झा र मैथिली महाकाव्य *व्यथा*

महान् प्रजातन्त्र सेनानी तथा मैथिली महाकाव्य *व्यथा*को रचनाकार स्वर्गीय पण्डित रमाकान्त झाको जन्म १९६४ साल कार्तिक शुक्ल एकादशी तिथिमा जनकपुरधामको निकटस्थ बभनगामा गाउँमा भएको थियो । उहाँको शिक्षा-दीक्षा पिता पं. दु:खमोचन झाको रेखदेखमा घरमै भएको थियो । उहाँले सत्रवर्षको उमेरदेखि कविता लेख्न थाल्नुभएको पाइन्छ ।

हाम्रो छिमेकी मित्रराष्ट्र भारतमा महात्मा गान्धीको नेतृत्वमा भइरहेको स्वाधीनता आन्दोलनबाट प्रभावित हुनु भई युवक झा १९९२ सालको वैशाख २२ गते अक्षय तृतीय, ५ मई १९३५ ई. आइतबारको दिन, सम्प्रति जनकपुर हवाई मैदानको छेउमा रहेको पापमोचनी पोखरीको डीलमा आफ्ना अन्य २१ जना युवा साथीहरू जसमा प्रमुख हुनुहुन्थ्यो– बोधप्रसाद उपाध्याय, पं. रामभद्र झा, कमलाकान्त चौधरी, बौएलाल झा, यमुनाप्रसाद सिंह योगकुमार माथेमा, इन्द्रप्रसाद मल्ल देवशङ्कर गिरी, रामदुलार साह, महन्थ गोकुल गिरी, राजेश्वर निधि, गङ्गेश्वर झा सबै तत्कालीन महोत्तरी र गुलाब नारायण झा रौतहट आदिका सँगै एकतन्त्रीय जहानियाँ राणा शासनबाट मातृभूमि नेपाललाई मुक्त गरी प्रजातन्त्रको स्थापना गर्न आ-आफ्ना रगतले हस्ताक्षर गरी प्रतिज्ञा गर्नुभएको थियो ।

साहित्यसेवी पण्डित झा आफ्नो लक्ष्य पूरा गर्न १९९५ सालमा सेवा समिति नामक संस्थाको गठन गरी एकतन्त्रीय राणा शासनको विरोधमा सूर्यकान्त झा, कुँवर झा रमानन्द ठाकुर आदि युवकहरूको सङ्गठन बढाउँदै लग्नु भएकै क्रममा पछि नेपाल राष्ट्रिय कांग्रेसको स्थापना हुनासाथ उहाँ त्यसमा लाग्नुभयो र त्यसको बनारस, दरभङ्गा र जयनगर अधिवेशनहरूमा सक्रिय रूपमा भाग लिनुभई २००४ सालको प्रथम सत्याग्रह आन्दोलनलाई सफल पार्नु भएकोले पछि उहाँलाई घरबाटै पक्राउ गरी जलेश्वर जेलमा राखिएको थियो । प्रखर गान्धीवादी विचारक पं. झा जेल सुधारको माग राखी आमरण अनशन गर्नुभएको क्रममा अट्ठाईसौं दिनमा तत्कालीन बडाहाकिमले उहाँको माग स्वीकार गर्नुभएपछि नै अनशन भङ्ग गर्नु भएको थियो र त्यस घटनाले महोत्तरीको जनतामा निकै प्रभाव परेको थियो । २००७ साल कार्तिक २६ देखि नेपालमा सशस्त्र क्रान्ति आरम्भ भएको पाँचौ दिन कार्तिक ३० गतेको साँझ ६ बजेतिर मिथिलाको सर्वश्रेष्ठ पर्व 'छठ' स्थानीय जनता मनाइरहेकै समयमा जेल फोडेर दिगम्बर झा, सरोज कोइराला, भीष्मजङ्ग के.सी., सुन्दर झा शास्त्री, वुद्धिप्रसाद शर्मा, सुरेन्द्रबहादुर बस्नेत भाग्दा पनि सत्य र

अहिंसाका पुजारी पं. झा भारतीय समाजवादी नेता कवि नरेन्द्रदेव र कानै न सुन्ने राजबन्दी नकुलबहादुर सिंह तीनै जना जेलमै बसी राख्नु भएको थियो। महोत्तरी जिल्लामाथि नेपाली कांग्रेसको आधिपत्य कायम भएपछि गठित प्रथम जनसरकारको प्रमुख गभर्नर रूद्रप्रसाद गिरी, दिगम्बर झा, सरोज कोइराला र महेन्द्रनारायण निधि आदिको अगुवाईमा हजारौंको जुलुस जलेश्वर जेल गेटमा पुगेर उहाँहरूलाई जेलमुक्त गरेर हार्दिक अभिनन्दन गरेको थियो। प्रजातान्त्रिक नेपालको अन्तरिम मन्त्रीमण्डलमा नाम प्रस्तावित भइसकेको महोत्तरी गान्धी पं. झा नेपाली कांग्रेसको प्रथम महोत्तरी जिल्ला अध्यक्ष हुनुभएको थियो। त्यसपछि उहाँ पदीय राजनीतिमा रहनु भएन। किशोरावस्थादेखि नै साहित्य सिर्जनमा लाग्नुभएको उहाँले राधेश्याम तर्जमा "*सुदामा चरित्र*" प्रथम हिन्दी खण्डकाव्यको रचना गरेर सन् १९४१ ई. (१९९७ सालमा) स्वयं प्रकाशित गराई गाउँ-गाउँमा भजन मण्डलीद्वारा गाउन लगाएर राणाविरोधी जनमत तयार गर्नमा निकै कटिबद्ध रहनु भएको थियो।

त्यसपछि पं. झाले *वनकन्या* महाकाव्य र *ग्राम सन्देश* खण्डकाव्य *जीवन* नाटक र *नेपालके आधुनिक इतिहास* सबै पद्यमय हिन्दीमा रचना गर्नुभयो। निर्लोभी राजनीतिज्ञ तथा प्रखर गान्धीवादी विचारक पं. झा सत्र सालमा प्रजातन्त्रको हत्यापछि जीवनको अन्तिम चरणमा मातृभाषा मैथिलीमा *व्यथा* महाकाव्यको रचना गर्नुभयो। २०१९ साल अक्षय तृतीया (वैशाख शुक्ल तृतीया) को दिन रचना पूरा भएको *व्यथा* मैथिलीमा ७ सर्ग र ८७२ हरिगीतिका छन्दको महाकाव्य हो। रचना पूरा भएको झण्डै एक दशकपछि उहाँले आफैं त्यसको प्रकाशन गराउन सफल हुनभयो। २०२८ साल आश्विन १० (२६ सितम्बर १९७१ ई.) महाष्टमी तिथिको दिन जनकपुरधामबाट आफ्नो घर पुग्दा-पुग्दै घरछेउकै आफ्नै आँपको फूलवारीमा उहाँको निधन हुन गएको थियो, तर संयोगवश उहाँले नव प्रकाशित *व्यथा* को विमोचन पाँच सप्ताहपूर्व गराइसक्नु भएको थियो। *व्यथा* सम्प्रति त्रिभुवन विश्वविद्यालयको स्नातकोत्तरको मैथिली पाठ्यक्रममा छ।

पं. झाले जीवनको अन्तिम चरणमा प्रजातन्त्रको हत्यापछि मुगलकालीन भारतमा सन्त कवि तुलसीदासले हिन्दू धर्मको संरक्षणको साथै जन-जागरण ल्याउन लोकभाषामा *रामायण*को रचना गर्नुभएको र भारतीय स्वाधीनता आन्दोलनको समयमा शब्द कवि मैथिलीशरण गुप्तले भारत-भारती महाकाव्यको रचना गरेर जनचेतना अभिवृद्धि गर्नुभएको जस्तै, मातृभाषा मैथिलीमा *व्यथा* महाकाव्यको रचना गरी त्यसको पाठ गरेर जनमानसलाई गान्धीवादी तौरतरिका अनशन, धर्ना र सत्याग्रह गरी निरङ्कुश पञ्चायती शासनलाई खतम गर्न उद्यत गर्नुभएको थियो। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामको वनगमन कालमा जानकीको व्यथाको बारेमा लेखिएको *व्यथा* महाकाव्य रामकथा बारेमा बिलकुलै मौलिक रचना हो र त्यसको माध्यमबाट उहाँले अपहृत प्रजातन्त्रको पुनर्प्राप्तिको लागि सङ्घर्ष गर्न नेपाली जनतालाई आह्वान गर्नुभएको स्पष्ट झल्कन्छ। मानवताको सफल शिल्पीकार पं. रमाकान्त झा रचित *व्यथा* मैथिली भाषाको मात्र होइन कि सम्पूर्ण राष्ट्रको गौरव ग्रन्थ हो र त्यसले उहाँलाई अमरत्व प्रदान गरेको छ।

श्रीरामको वनगमन कालमा सीताको राम, दशरथ, कैकेयी र कौशल्यसितको समयोचित संवादसङ्गै रामको कौशल्या र लक्ष्मणसित, लक्ष्मणको सुमित्रा र उर्मिलासित र फेरि रामको प्रजाजन र लक्ष्मणसित, त्यस्तै सीताको फेरि दशरथसित र राम, लक्ष्मण एवं सीताको कैकेयी र सुमित्रासित तथा माण्डवी र श्रुतकीर्तिसितको संवाद अनि अन्तमा मर्यादा पुरुषोत्तम राम, सीता र लक्ष्मणसँगै वनगमनको लागि प्रस्थान गर्दा चारैतिरको कोलाहलपूर्ण दृश्यको चित्रण *व्यथा* को मौलिकता हो।

प्रथम सर्गमा सीताले आफ्नो व्यथा पोख्दै राज्य बनाउने आफ्नो अभिलाषा व्यक्त गरी देश बनाउन सबैले श्रमदान गर्नुपर्दछ र त्यसो गरेमा जनता अनिकालमा मर्दैन अभिव्यक्ति निम्न श्लोकमा वर्णित छ –

हमरे सभक श्रमदान हमरा देशकें विकसित करत ।
हमरा सभक साम्राज्य मे जनता अकाले नहि मरत ॥

दोस्रो सर्गमा सीताले स्वामीको आज्ञामा हिँड्नु हाम्रो कर्तव्य हो, तर दुःखीजनको सङ्कट दूर गर्नु पनि त हाम्रो परम कर्तव्य छ निम्न पङ्क्तिमा उल्लेख छ –

स्वामीक आज्ञा पर चलब, हमरा समाजक धर्म अछि ।
दुःखिया सभक, संकट हरब ई हो परक कर्तव्य अछि ॥

तेस्रो सर्गमा सीतालाई वन जानबाट रोक्दै कौशल्याले बडो मार्मिक शब्दमा भन्नुभएको म चकोरजस्तै तिम्रो आशमा कसरी रहनेछु ? त्यसैले तिमी नजाऊ । यथा–

किनकर मधुर मुखचन्द्र हम, निरखैत रहब चकोरिवत ?
किनकर मधुर अनुरागपर, आशालता कुसुमति रहत ?

चौथो सर्गमा लक्ष्मणसँगै वन जान आमा सुमित्रासित आज्ञा लिन पुग्दा, आमाले रामको सेवा गर्ने आज्ञा दिँदै रामको लागि आफ्नो अनमोल शरीरसम्म दिनपरेमा दिनेछौं भन्नुभएको निम्न पङ्क्तिमा उल्लेख छ । यथा –

हे पुत्र आशिर्वाद अछि, रामक सकल सेवा करु ।
कठिनाई में सुखलैत, रामक असुविधा वन मे हरू ॥
कोनो समय पर यदि अमूल्य शरीर धरि देवय पड़य ।
रामक निमित्त कठोर कष्टक, साधना पर तन जड़य ॥

आमाबाट आज्ञा प्राप्त गरी लक्ष्मणले उर्मिलासित चौदह वर्षको लागि दाजु रामसँगै वन जान लागेकोले धैर्य धारण गर्न लगाउँदा उर्मिलाले बडो निश्छल भावले भन्नुभयो – चौध वर्षको तपाई के कुरा गर्नुहुन्छ ? म त जन्मभरि मात्र होइन सय जन्म एक्लै ध्यानमा रहन सक्छु, वनवाससम्म त म एकै आसनमा रहनेछु । यथा–

एतिवही दिवस धरि की कहैछ, रहि सकै छी जन्म भरि ।
आज्ञा करु, हम एक आसन पर रहब वनवास धरि ॥
एहि जन्म की सय जन्म एकसरि रहि सकैछी ध्यान पर ।
अपनेक पद किंकरि रहि, अभिलाषा अछि केवल हमर ॥

पाचौं सर्गमा राम लक्ष्मण र सीता तीनै जना वन जान लागेकोमा दुःख प्रकट गर्दै भरतकी पत्नी माण्डवी र शत्रुघ्नकी पत्नी श्रुतकीर्ति दुवैले सासू कैकेयीसित विद्रोह गर्दै बौलाही भएको निम्न पङ्क्तिमा उल्लेख छ । यथा –

श्री भरत भार्या माण्डवी श्रुतकीर्ति, शत्रुघ्न प्रिया ।
सुनलनि त्रिमूर्तिक वनगमन दूनु, बहिन जनकक धिया ॥
हा ! हा !! महान् अनर्थ कहि, छाति पिटैत विदा भेली ॥
दूनू प्रचण्ड बताहिसन सासुक निकट दौडलि गेली ॥

गान्धीवादी विचारको प्रभावले कवि दुवैलाई सत्याग्रहीको उल्लेख निम्न पङ्क्तिमा

छ। यथा–

चुपचाप दूनू बहिन दरबारक प्रधान केवाड लग।
आसन जमा ऽ कएँ बैसि रहली, जाए कालक रोकि मग॥

माण्डवीले श्रुतकीर्तिसमेतको इच्छा प्रकट गर्दै भरत न आएसम्म हामी बाटो छाडदैनौं भन्दै बाटो अवरोध गरी धर्ना दिएको निम्न पङ्क्तिमा उल्लेख छ। यथा–

देवर तथा प्राणेश गृह, अओताह नहि तावत रहथू।
निर्दोष हम छी, प्रमाणित करब, अनुचित अछि कहथू॥

छैठौं सर्गमा राम, लक्ष्मण र सीता तीनै जनाको वन जाने तयारीले सबैतिर कोलाहल छ र उहाँहरू महाराज दशरथसित विदा हुन पुग्दा त्यहाँको दृश्य चिन्तनीय रहन्छ र पछि महाराज आफ्नो आदेशमाथि पश्चाताप गर्दै राज्यको व्यवस्था राजाको कर्मअनुसार हुन्छ, राजाको नीति ढुलमुल भएमा त्यो सबै किसिमले आक्रोशित हुन्छ। यथा –

राजाक ढुलमूल नीति होइछ, सभ प्रकार अकीर्तिकर।
राज्यक व्यवस्था, सफल असफल स्वैछ नृपतिक कर्म पर॥

सातौं सर्गमा कैकेयीले अरूको विचारमा हिंड्नु पशुतुल्य हुन्छ भन्नुहुँदै सन्तानलाई उठाउन आमाबाबुले प्रयत्न गर्नुपर्दछ र कर्तव्यको अगाडि मोह राख्नुहुँदैन भन्नुभएको निम्न पङ्क्तिमा उल्लेख छ। यथा–

अपना स्वतन्त्र विचार पर हमरा अटल विश्वास अछि।
पशुतुल्य अछि, ओ मनुज, जे अनकर विचारक दास अछि॥
सन्तान के उपर उठावक यत्न, मायक धर्म थिक।
कर्तव्य सम्मुख मोह राखब, ई परम दुष्कर्म थिक॥

वनगमन गर्नु भन्दापूर्व राम आफ्नो मर्यादा पुरुषोत्तमत्व सिद्ध गर्दै नीति अभिव्यक्त गर्दै भन्नुहुन्छ, नश्वर पदार्थको मोह गर्नु अज्ञानता हो। सबभन्दा ठूलो प्रसन्नता हो, जो सुख र दुःख दुवैमा राख्नुपर्दछ किनभने जसले जुन कर्म गर्दछ, त्यसको फल उसले पाउँछन् नै त्यो चाहे जस्तोसुकै रहुन्। यथा –

नश्वर पदार्थक मोह, इ अज्ञानताक प्रभाव थिक।
हम-हम करब लरि-लरि मरब ज्ञानक विशेष अभाव थिक॥
अछि मूल्यवान प्रसन्नता, सुख मे रहू वा कलेष मे।
कृतक भोगहिटा, परत धर मे रहू, परदेश मे॥

राम, लक्ष्मण र सीता तीनै जना वन प्रस्थान गर्दा चारैतिर क्रन्दन भइराखेको उल्लेख निम्न पङ्क्तिमा पाइन्छ।

जय अवध, जय अवधेश! इ कहि कए त्रिमूर्ति विदा भेला।
तीनू गोटय, परिजन समाजसमेत, पुर बाहर गेला॥
रामक विदा पर घोर क्रन्दन कए रहल छल नारि नर।
चारु दिशा, क्रन्दन हि क्रन्दन, भए रहल छल मार्ग पर॥

अन्तमा तीनैजना मातृभूमिलाई प्रणाम गरी वनप्रस्थान गर्दा सबैको सुखसागर र

करुणापुञ्ज मात्र होइन सबैको प्राण जीवन वन जानु भएको उल्लेख निम्न पङ्क्तिमा पाइन्छ।

जय मातृभूमि स्वदेश, जय अवधेश, जय अवधेश्वरी।
मन होइछ, बारम्बार चरण सरोज पर माथा धरी॥
सविनय प्रणाम करैत, सीता, लखन, राम विदा भेला।
सुख-सिन्धु करुणा पुञ्ज, सभक प्राण जीवन वन गेला॥

व्यथा महाकाव्यको बारेमा मैथिलीको वरिष्ठ साहित्यकार तथा समालोचक सुन्दर झा शास्त्रीले आफ्नो मैथिली मासिक *फूलपात*को २०२९ साल आषाढको अङ्कमा नवकृति शीर्षकमा समीक्षा प्रस्तुत गर्नु हुँदै लेख्नुभएको छ। –

१८० पृष्ठमा उपनिषद् हरिगीतिका छन्दको सात सर्गको परम अहलादिनी कथा, जो श्री रामको वनगमन कालको जानकीको व्यथाले भरिएको छ; नेपालको इतिहासमा कुनै पनि सच्चा नेपालीद्वारा लेखिएको मैथिलीको प्रथम प्रबन्ध काव्य हो।

नेपालक मैथिली साहित्यक इतिहास पुस्तकको पृष्ठ ८३ मा लेखक डा. प्रफुल्लकुमार सिंह मौनले व्यथाको सन्दर्भमा लेख्नुभएको छ – “रामकथाको आधारमा पं. रमाकान्त झाले अभिनव करुण काव्य *व्यथा*को रचना गर्नुभएको छ। *व्यथा*मा बिलकुलै कम चर्चित माण्डवी र श्रुतकीर्तिद्वारा वनगमन कालमा प्रस्थान गर्नुभएका राम, लक्ष्मण र सीताको पथावरोध गरिएको प्रसङ्ग कविको मौलिक उद्भावना हो। वनगमनकालमा सीताको उद्विग्नता, रामप्रति लक्ष्मणको श्रद्धाभक्ति, भरतको त्याग उर्मिलाको विवाद आदिको मार्मिक अभिव्यक्ति भएको छ। महाकवि रमाकान्त झा महाकवि देवकोटाजस्तै साहित्यिक एवं राजनीतिक प्रतिभाको धनी महापुरुष हुनुहुन्थ्यो।

त्यस्तै डा. शिवशङ्कर झा कान्तले आफ्नो *‘मैथिली महाकाव्यक उद्भव आ विकास’* पुस्तकको पृष्ठा २४७ मा *व्यथा* महाकाव्यको यथार्थतालाई सिद्ध गर्दै लेख्नुभएको छ।

“वस्तुत: शब्दहरूको चयनमा कवि निकै प्रगतिशील हुनुहुन्छ। तत्सम शब्दहरूको प्रयोग र ठाउँ-ठाउँमा देशी शब्दको प्रयोग अभिव्यक्तिलाई मनोहारी बनाई दिएको छ। अलङ्कारको प्रयोग स्वाभाविक रूपमा ठाउँ-ठाउँमा भएको छ, तर अर्थान्तरन्यासको माध्यमले अभिव्यक्तिलाई पुष्टि गर्ने प्रयास भएको छ। चरित्रको उद्भावनामा रमणीय कथामा केही नवीनता ल्याइदिएको छ तथा चरित्रचित्रणको आधुनिक विधानप्रति केही सकारात्मकै रहेको छ।

अनुवादक : राजेश्वर नेपाली

प्रतिभाक धनी साहित्यकार पं. सुन्दर झा 'शास्त्री'

पशुपतिनाथ झा

बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न पं. सुन्दर झा 'शास्त्री' क जन्म धनुषा जिल्ला बभनगामा गाउँमे २२ नवम्वर १९३० ई. मे भेल छलनि। हिनक पिताक नाम विहाडी लाल झा आ माताक नाम देवकी देवी छलनि। हिनक प्रारम्भिक शिक्षा जनकपुर वा. नं. १२ कूवा पाठशालामे भेल छलनि। दश वर्षक अवस्थामे "प्रथमा" क परीक्षामे प्रथम श्रेणीमे प्रथम भेलाह आ मध्यमाक परीक्षा सेहो ई ओतहि सँ कए लक्ष्मी नारायण संस्कृत प्रधान पाठशाला मटिहानी महोत्तरी सँ शास्त्री आ आचार्यक परीक्षा उत्तीर्ण कएलनि। १९५३ ई. में शास्त्रीजी स्वतंत्र छात्र (private) क रूपमे मैट्रिक उत्तीर्ण कएलनि। सी.एम्. कालेज दरभंगा, विहार सँ १९५७ ई. मे वी.ए. आनर्स (संस्कृत) कएलनि। सी.एम्. कालेजमे पढैत काल "कमन रुम" प्रतियोगितामे ई "लिटरैरी चैम्पियनशिप" उपाधि प्राप्त कएने छलाह। अध्ययनक समय मे ई अनेकानेक उपाधि कालेजस्तरमे प्राप्त कए अपन प्रतिभा प्रदर्शित कए चुकल छलाह। प्राध्यापकलोकनि सेहो हिनक प्रतिभासँ प्रभावित छलाह। पश्चात् कोलम्बो योजना अन्तर्गत लखनऊ विश्वविद्यालय सँ संस्कृतमे एम्. ए. प्रथम श्रेणी में प्रथम भेलाह आ "मेरिट स्कालरशिप" सेहोप्राप्त कएलनि। १९६९ ई. मे 'लाईब्रेरियनशिप' मे लंदन गेलाह; मुदा ओतय ट्यूटर इंजार्च मिसेज मौरिसन सँ विवादक कारणेँ सात मासमे "कोर्स टर्मिनेट" कए हिनका लौटा देल गेलन्हि।

वी.डि.ओ. क नोकरी सप्तरी जिल्ला सँ शुरु कए विभिन्न सरकारी पद पर रहि देशक २२ वर्ष सेवा कएलनि। रा.प. द्वितीय श्रेणीक पद सँ याज्ञवल्क्य संस्कृत पाठशाला, ज्ञानकूप, जनकपुर धाम सँ २०३९ साल अश्विन ८ गते अनिवार्य अवकाश ग्रहण कएलनि। नोकरीमें रहैत २०२५ सालमे अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषद्, काठमाडौं सँ *फूलपात* पत्रिकाकेँ प्रकाशन करौलनि। *फूलपात* नेपालक प्रथम मैथिली पत्रिकाक गौरव प्राप्त कएने अछि। पश्चत् २०२७ साल सँ 'शास्त्री' जी सम्पादक तथा प्रकाशक रूपमे *फूलपातक* प्रकाशन प्रारम्भ कएलनि। सरकारी सेवामे रहबाक कारणेँ १० अङ्क पश्चात् ई पत्रिका बन्द भ्‌ऽगेल। अवकाश ग्रहण कएलाक बाद निरन्तर रूपमे *फूलपातक* पुनः प्रकाशन शुरु कएलनि जे जीवनक अन्तिम समय धरि अपन रचना, सम्पादन कौशल सँ पाठककेँ मुग्ध करैत रहलाह। सभसँ बेसी हिनक प्रसिद्ध *फूलपात*मे जखन *सुन्दर सतसई*

नामक (अप्रकाशित) कविता संग्रहक "नेपाल सम्बन्धी" दोहा प्रकाशन सँ भेल। हिनक दोहा प्रकाशित होइतहिं जनमानस कें आन्दोलित कए देलक आ' सम्पूर्ण मैथिलक जीह्वापर बास कएलक। *फूलपात*मे ई अनेकानेक अपन मौलिक रचना आ' विचार प्रकाशित करैत रहलाह। कविता, कथा, गजल, गीत, समालोचनाक अतिरिक्त श्री घाघक नाम सँ *समयकेर शिलापर* आलेख प्रकाशित करैत छलाह, जे समसामयिक यथार्थक चित्रण छल। कटु सत्य बजबाक आ लिखबाक कारणें शस्त्रीजीक विरोधीक कमी सेहो नहि छलनि। विरोधीक विनु परवाहि कएने ई निर्भीक रूप सँ सत्य, कटु रचना फूलपात में प्रकाशित करैत रहलाह।

हिनक प्रकाशित कृति सभ अछि – *परवशता* हिन्दीमे २५ गोट मौलिक कविता संग्रह, *रत्नावली नाटिका* क संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद, *शृंगार तिलक* संस्कृत सँ मैथिली अनुवाद आ महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाक *मुनामदन* क ओही छन्दमे मैथिली अनुवाद। उपर्युक्त प्रकाशित रचना सभसँ बहूत बेसी मैथिलीक अप्रकाशित मुदा आंशिक प्रकाशित मौलिक मैथिली रचनासभ छनि जे प्रकाशनक बाट ताकि रहल अछि। जावत शास्त्रीजी क सम्पूर्ण रचना प्रकाशमे नहि आबि जायत ताधरि हिनक कृतित्वक सही मुल्यांकन नहि भ्‌ए सकैत अछि। मृत्यु सँ मात्र ६ दिन पूर्व ई अपन *आलोक* मैथिली कविता संग्रहक कम्प्युटर टाईप कराय नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमे प्रकाशन हेतु दर्ता कराय चुकल छथि; तहिना नेपाली रचना *मुना-मदन मञ्जुषा* क कम्प्युटर टाइप कराय ने.रा.प्र.प्र. प्रतिष्ठानमे प्रकाशन हेतु बुझाय चुकल छथि। देखी प्रज्ञा प्रतिष्ठान हिनक ई दनू रचना कहिया धरि प्रकाशित करैत छनि।

एतय हम हिनक किछु अप्रकाशित मुदा मौलिक मैथिली रचनाका उल्लेख कए रहल छी –

१. आलोक– मैथिली कविता संग्रह अछि, जहिमे हिनक प्रथम *कविता* "टीक" सँ लए विरासी गोट कविता संकलित अछि जेकर शीर्षक निम्न रुपेण अछि–

१. *आलोक* २. वसन्त गीत ३. राष्ट्रिय नचारी ४. मृत्युक पछाति ५. हृदयक व्यथा ६. नव विकास ७. ओ अनकर उपकार करत की ? ८. हम की करब ? ९. ई जीवन की अछि ? १०. राज्याभिषेक ११. मिथिलाञ्चल १२. साओनक सनेस १३. गाबिरहल छी १४. ई कलम उगिलैत आगि हमर १५. हम जा रहल छी १६. वाणी विनाकें त्याग करु १७. कनियाँ १८. देश लुटल जा रहल अछि १९. प्रभात गीत २०. चहटगर कथा (शब्द चित्र) २१. समय २२. जीवन दर्शन २३. की करु ? २४. अन्नत इच्छा २५. प्रार्थना २६. सुकराती २७. ई अक्टुबर क्रान्ति दिवस अछि २८. अपन दुःखड़ा २९. की लिखू ? ३०. छोड़ि दिअ ३१. पारवहन ३२. काली प्रार्थना ३३. नेपाली छी ३४. बहुदल आयल ३५. मधेशी छी ३६. नव वर्षक सन्देश ३७. चुनावक हाल ३८. दिवङ्गत पाथेय ३९. चित्रगुप्त ४०. की गायव ४१. कलम बनाम कोदारि ४२. होरी ४३. मनोरथ ४४. अटेरी ४५. चान ४६. गजल तर्ज (बासी किसी ने प्यार की...) ४७. गीत मलान मुख ४८. लुक झुक दीप ४९. परिवर्तन ५०. तैयो चुप्पे लागू ५१. मध्यावधि चुनाव ५२. अप्पन भाषा बाजू ५३. सब अपने स्वार्थमे लागल ५४. ग्रीष्म ५५. नव वर्ष ५६. पुनि आयल मध्यावधि चुनाव ५७. अद्‌भुत लोक ५८. आजुक जनकपुरधाम ५९. स्वागत गान ६०. मलान मुख ६१. अशाक लता ६२. इजोरिया राति ६३. जीवन संग्राम ६४. पुष्पक अनुरोध ६५. अनमोल विवाह ६६. दक्षिण काली ६७. गजल तर्ज (तुम से मैने प्यार किया ..., ६८. गजल तर्ज

(इन आँखोकी मश्ती मे) ६९. वसन्त ७०. कर्तव्य ७१. अद्भुत नेपाल ७२. हम हारि नहि मानव ७३. मिथिला सुमन ७४. लालू ७५. अपनाकेँ नहि चिन्हल (समस्या पूर्ति) ७६. आरसी स्मृति ७७. राखु विनम्र स्वभावक ताला (समस्या पूर्ति) ७८. टीक ७९. सुन्दर देश ८०. गल्लीक कुकुर (गद्य कविता) ८१. कवि कोकिलक स्मृतिमे (गद्य कविता) ८२. काली वन्दना।

एहि कविता संग्रहक "आमुख" मे सुरेन्द्र झा 'सुमन' अपन उद्‌गार व्यक्त करैत लिखलनि अछि जे "छन्दवन्ध, रस निवेश, गुणवत्ता, ओ चतस्र अभिज्ञता सँ मुग्ध छी। विकृति सँ संस्कृति दिश समाजकेँ उत्प्रेरित चेतना जगयबाक हेतु ई रचना आलोक दैत सर्वथा सार्थक होयत। "तहिना एहि कविता संग्रहक "सम्मति" लिखैत चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' क उक्ति अक्षरशः सत्य प्रतीत होइत अछि – प्रस्तुत *आलोक* नामक कविता संग्रह लए ई समाजक समक्ष उपस्थित भेलाह अछि। एहि मे प्राकृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिस्थितिक अतिरिक्त नेपालमे मैथिली भाषा साहित्यक स्थिति सेहो पूर्णरूपेँ आलोकित भए उठल अछि।

हिनक व्यक्तित्व, पाण्डित्य प्रकर्ष ओ कवित्व प्रतिभाक संग अन्तः करणक भाव सेहो आलोकित भेल अछि।

एहि संग्रहमे सामान्यतया किछु रचना प्रकृति वर्णन एवं आलंकारिक निदर्शन सँ निरुपित शास्त्रीय साहित्यिक परम्परा केँ अनुशरण करैत वर्तमानक तथाकथित प्रजातांत्रिक व्यवस्थापर कटाक्ष कएल गेल अछि। कतहुँ शृंगारिकता सँ पूर्ण भेटल तँ कतहुं अपन इष्ट ओ गुरुक भक्ति भाव मे डूबल कतहुं गजल आ समस्यापूर्तिक चित्रणक संग शब्द चित्र अंकित कएल गेल अछि।

एहि सँ एहि कविता संग्रहक महत्त्व स्वतः सिद्ध भऽ जाइत अछि। मैथिलीमे लिखबाक प्रेरणा मैथिलीक सुप्रसिद्ध साहित्यकार श्री सुमनजी सँ भेटल छलनि। एहि ठाम हम हिनक पहिल कविता जे जलेश्वर कारागारमे लिखने छलाह तंकर उल्लेख कए रहल छी –

"साथी ! सभ मिलि कटलनि टीक
देखि वृद्ध उपहास करै छथि।
निरखि धर्ममन ह्रास करै छथि।
पर आजुक विकसित अणु युगमे–
हुनका मोजर देबनि कथिक ? " साथी ...
कहथि वृद्ध जे छथि पुरातन।
इएह हमर थीक धर्म सनातन॥
इएह हमर थीक परम प्रतिष्ठा
ई थीक हिन्दूक पूर्ण प्रतीक॥ साथी ...
की धर्मक थीक शुभ स्वरूप ई ?
की मानवकेँ प्रतिकूल रूप ई ?
धर्म दहीकँ टाँगक वास्ते –
की पाछू मे लटकल सीक ? साथी ...
अनुपयुक्त बुझि टीक कटौलहुं।
भद्दापन बुझि मोंछ मुड़ौलहुँ॥

सुन्दर सरिपहुँ सुन्दर भेलहुँ,

बुड़ि बनबसँ इएह बड़ नीक ॥ साथी ...

सुन्दर सत सई– हिनक अत्यन्त सुप्रसिद्ध सात सय दोहाक ई संग्रह अछि। एहि संग्रहक "नेपाल सम्बन्धी" दोहा *फूलपात* पत्रिकामे २०२७ सालमे प्रकाशित भए वेश चर्चित भेल अछि। अन्यान्य दोहा सभ सेहो *फूलपातक* अंक सभमे छिटफूट रूपमे प्रकाशित भेल अछि, जे अत्यन्त रोचक आ हृदयग्राही अछि । एहि रचनाकेँ चौदहगोट शीर्षक मे विभाजन कएने छथि – १. नीति सम्बन्धी २. कवि-कविता ३. लोक लक्षण तथा लोकोक्ति ४. सज्जन-दुर्जन ५. प्रकृति वर्णन ६. स्व-परक ७. नेपाल सम्बन्धी ८. भारत सम्बन्धी ९. अन्यान्य देश १०. जीव-जगत्-ईश्वर ११. नारी सम्बन्धी १२. जाति सम्बन्धी १३. युग-चित्रण १४. विविध ।

ई पुस्तक लोक लक्षण ग्रन्थ सदृश व्यंगात्मक शैलीमे लिखल गेल अछि। ई पुस्तकक पाण्डुलिपि सेहो तैयार कए राखल अछि। प्रकाशनक बाट ताकि रहल अछि।

एहि पुस्तकक "युग-चित्रण" क कविता उद्धरणक हेतु प्रस्तुत कए रहल छी –

नहरि खोलि कहुना बान्हल कोशी सनके धार ।
अभियंताके गुरु बुते बन्हतै नै युग-धार ॥
युग सरितामे भासल मानवताके लाश ।
छानि घुमाबू चाकपर जै सँ पलटय साँस ॥
बात बनाबय सब, मुदा काज करय नहि कोय ।
क्रियाशील– मौनी एहन क्यौ-क्यौ मानव होअ ॥
काज करयमे आलसी सदिखन गप्प हँकैछ ।
जें घन गरजैत अछि अधिक से प्राय: बडिसैछ ॥
हिरण्य कश्यप सन बांप बनि बेटा चाहय राम ।
गोरि नारि राधा सनक स्वयं रहओ घनश्याम ॥
झुट्ठा, लम्पट, धूर्तसभ बनले चतुर चलाक
बूडि बनल सज्जन, सरल जखन घूमल युग-चाक ॥
भ्रष्टाचार निवारक करैछ भ्रष्टाचार ।
धर्मक प्रमुख प्रचारक करैछ पापाचार ॥

अपन एक आँखि पडोसियाक दुनू आँखि कथा संग्रहक पाण्डुलिपि सेहो तैयार अछि। एहि संग्रहक किछु कथा बहुत पूर्वहि प्रकाशित भए चर्चित सेहो भए गेल अछि। यथा – "अखनू बुखाडी नहि फूजलै" कथा दरभंगासँ प्रकाशित *वैदेही* पत्रिकाक कथा विशेपांक मे १९५५ ई. मे छपल अछि। आ' पुन: ई कथा *फूलपात* पत्रिका क वि.सं. २०४१ आषाढ पूर्णाङ्क ११ मे प्रकाशित भेल अछि। तहिना "अपन एक आँखि पडोसियाक दूनू आँखि" कथा *फूलपातक* २०२७ साल पुष १ गते वर्ष २ अङ्क २ में प्रकाशित अछि।

एहि सँ ई देखल जाइत अछि जे शास्त्री जी मूलत: कवि होइतहुँ साहित्यक विभिन्न विधामे साधीकार कलम चलौलनि आ' यश सेहो आर्जन कएलनि। आलोचना विधामे सेहो ई किनको सँ कम नहि। आलोचक रूपमे तँ ई समाजमे खूब चर्चित छलाह। संस्कृतक प्रकाण्ड विद्वानक संग-संगे मैथिली, नेपाली, हिन्दी आ' अंग्रेजीमे सेहो समान अधिकार रखैत छलाह। *शृंगार तिलक* के अंग्रेजी अनुवाद सेहो कएने छथि। महाकवि कालिदास श्रेष्ठ रचना अछि जेकर मैथिली अनुवाद कए शास्त्रीजी पहिनहि प्रकाकशित करवाय

चुकल छथि। एहि कविता क ३७ श्लोककें निम्न शीर्षक दए अनुवाद कएने छथि। यथा–

1. Ode to cupid 2. Cupid's copulation 3. Breasting after copulation, 4. Women pond 5. A Hard earned Fortune 7. A Valuminous Breast, 7. Striping a true beautitude, 8. A source of immortality, 9. A vision of waigtail, 10. Adverse effect, 11. Moneyface, 12. Unsuccessful honeymoon (question) 13. 14. East-aeo-wife (answer-two), 15. The lost youth-pearl 16. An aflictor is bound to fall (answer), 17. To unfaithful husband, 18. A stones-heart, 19. Let the truth be confirmed, 20. Unfaithful wife (I), 21. Unfaithful wife (II), 22. A hunter girl, 23. Wife adopter, 24. Request for a glimpse, 25, Revenge, 26. A letter to a seperated wife, 27. A fairy Moon (Reply) 28. Apt assuraince, 29. unextinguishable flame, 30. While in seperation, 31. Hereditary Rites, 32. A prudent deer and foolish elephant, 33. Wonderful fire, 34. A bent nipple, 35. A flower begets flower, 36. A plunderer of mind, 37. A credited enjoyment.

बानगीक रूपमे ५ श्लोक क अंग्रेजी अनुवाद देखल जा सकैछ –

5. A hard earned fortune

Better to be beaten hundred times
by a dried wooden piece
Better to be besmeared by bog
and better be baked in fire
As you found the pleasure of -
getting attached to the breast
That pleasure O jug is not to be found
Without experiencing the grief

हिनक *हाम्रो नेपाल* (नेपाली कविता) संग्रह सेहो अप्रकाशित रचना मे छथि।

एतावता संक्षिप्त विवेचन सँई कहल जा' सकैत अछि जे जा धरि हिनक सम्पूर्ण रचना प्रकाशित नहि भऽजाइत छनि ताधरि हिनका विषयमे कहब एकांगी होयत। शास्त्रीजी एकगोट अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार छलाह। हिनकर मैथिली साहित्य आ' समाज सेवाकेँ कहियो बिसरल नहि जा' सकैछ। जनकपुर वार्ड नं. ४ में विद्यापति स्मारक निर्माणमे हिनक योगदान सर्वश्रेष्ठ अछि। हिनका एहि सेवाक हेतु जे मूल्यांकन होयबाक चाही से नहि भऽसकलनि: मुदा किछु साहित्यिक तथा सरकारी स्तरपर सम्मान प्राप्त भेल छलनि –

महिला तथा समाज कल्याण मंत्रालयसँ २०५३ सालक प्रतिभा पुरस्कार सँ सम्मानित कएल गेल छलाह। नेपाली साहित्यक सेवा क लेल ८५ औं देवकोटा जयन्तीक अवसरपर देवकोटा स्मृति सभा कलैया, बाराद्वारा १७ कार्तिक २०५१ कें सम्मान प्राप्त। विद्यापति सेवा पदमानन्द ट्रष्टद्वारा २०५२ सालक गंगा-लक्ष्मी साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त। विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा सँ २२ नवम्वर १९९६ ई. मे अभिनन्दित। चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन राउरकिला मे सम्मानित; एहि संस्थाक ई वरिष्ठ उपाध्यक्ष सेहो चुनल गेल छलाह। जनकपुर बौद्धिक समाजद्वारा २०५१ सालमे विद्यापति स्मृति पर्व समारोह मे नागरिक अभिनन्दन आ' एहि संस्थाद्वारा हिन्दीक विशिष्ट सेवा वापत नेपाल राष्ट्रिय हिन्दी सम्मेलन वीरगंजद्वारा आयोजित द्वितीय नेपाल राष्ट्रिय हिन्दी सम्मेलन २०५४ फाल्गुण

२६ गते सम्मानित कएल गेल छलाह; मुदा ई दुनू पुरस्कार ओ अपन जीवन कालहिमे लौटा देने छलाह ।

नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानक शास्त्रीजी मानार्थ सदस्य सेहो छलाह; मुदा हुनकें सँ सुनल अनुसार कहियो कोनो सभा, सम्मेलनमे हुनका नहि बजाओल गेलनि आ' ने कोनो पुस्तक एखन धरि प्रज्ञा-प्रतिष्ठानसँ प्रकाशित भेल छनि ।

शास्त्री जीक व्यक्तित्व विराट छलनि । हिनक विषयमे एहि संक्षिप्त आलेखमे समेटब सागरमे गागर भरब सदृश होयत । ई यदि एकोटा पुस्तक नहि लखने रहितथि तथापि जतबा *फूलपातक* हिनक अङ्क प्रकाशित भेल छनि ततबेक उचित मूल्यांकन कएल जाय तँ ओ मैथिली साहित्यमे अमर रहताह । एहि महान् विभूतिक उचित मान नहि समाज दए सकल आने देश । अपन बात पर अडिग रहब तथा केहनो परिस्थितिमे हारि स्वीकार करब हिनक स्वभावे नहि रहलानि । कर्तव्यनिष्ठ शास्त्रीजीकें पद आ' सम्मानक कहियो स्पृहा नहि रहलनि । एहि समयमे एहि तरहक विद्वान्, समाजसेवी, राजनीतिज्ञ, साहित्यकार होयब दुर्लभ अछि । एहन महान् विभूतिक स्वर्गारोहण २०५५ साल श्रावण २५ गते सोमक राति १०.०० बजे भैरहवामे भए गेलनि । कहल गेल अछि जे "कीर्तियश्य स: जीवति" तैं शास्त्रीजीक नश्वर शरीर भले ही आब नहि छनि; मुदा हुनक आत्मा एहि धरतीपर अवश्य चंकभाउर दैत होयत: किएक तँ मिथिला, मैथिलीक हेतु ओ सदैव चिन्तित रहैत छलाह । हुनका प्रति यथार्थ श्रद्धान्जली होयत जे हुनकाद्वारा छोड़ल गेल कार्यके मिथिलाबासी आगा बढ़ाबय ।

रा.रा.ब. क्याम्पस
जनकपुरधाम

प्रतिभाका धनी साहित्यकार पं. सुन्दर झा 'शास्त्री'

बहुमुखी प्रतिभासम्पन्न पं. सुन्दर झा शास्त्रीको जन्म धनुषा जिल्लाको बभनगामा गाउँमा २२ नवम्बर १९३० मा भएको थियो । उहाँको पिताको नाउँ विहाडीलाल झा र माताको नाउँ देवकी देवी थियो । उहाँको प्रारम्भिक शिक्षा जनकपुर वडा नं. १२ कुवा पाठशालामा भएको थियो । दश वर्षको अवस्थामा "प्रथमा" परीक्षामा प्रथम श्रेणीमा प्रथम हुनुभयो र मध्यमा पनि त्यहीँबाट गरी लक्ष्मीनारायण संस्कृत प्रधान पाठशाला मटिहानी महोत्तरीबाट शास्त्री र आचार्यको परीक्षा उत्तीर्ण गर्नुभयो । १९५३ ई. मा शास्त्रीजीले स्वतन्त्र छात्रको रूपमा मैट्रिक उत्तीर्ण गर्नुभयो । सी. एम्. कलेज दरभङ्गा बिहारबाट १९५७ ई. मा बी.ए आनर्स (संस्कृत) गर्नुभयो । सी.एम्. कालेजको अध्ययनकै क्रममा "कामन रुम" प्रतियोगितामा उहाँले "लिटरैरी च्याम्पियन" उपाधि प्राप्त गर्नु भएको थियो । अध्ययनका क्रममा अनेकौं उपाधि कालेज स्तरमा प्राप्त गरी आफ्नो प्रतिभा प्रदर्शित गरिसक्नु भएको थियो । प्राध्यापकहरू पनि उहाँको प्रतिभाबाट प्रभावित थिए । पश्चात् कोलम्बो योजना अन्तर्गत लखनऊ विश्वविद्यालयबाट संस्कृतमा एम्. ए. प्रथम श्रेणीमा प्रथम हुनुभयो र "मैरिट स्कालरसिप" पनि प्राप्त गर्नुभयो । १९६९ ई. मा लाइब्रेरियनमा लन्दन जानुभयो । तर त्यहाँ ट्युटर इन्चार्ज मिसेज मौरिसनसँग भएको विवादकै कारणले सातौं महीनामा "कोर्स टर्मिनेट" गरी उहाँलाई फिर्ता पठाइएको थियो ।

वी.डि.ओ. को नोकरी सप्तरी जिल्लाबाट शुरु गरी विभिन्न सरकारी पदमा २२ वर्षसम्म मुलुकको सेवा गर्नु भएको थियो । रा.प. द्वितीय श्रेणीको पदमा याज्ञवल्क्य संस्कृत पाठशाला, ज्ञानकुप, जनकपुरधामबाट २०३९ साल असोज ८ गते अनिवार्य अवकाश ग्रहण गर्नु भयो । जागिरे रहनु हुँदा २०२५ सालमा अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषद् काठमाण्डौंबाट *फूलपात* पत्रिकाको प्रकाशन गराउनु भयो । *फूलपात*ले नेपालको प्रथम मैथिली पत्रिकाको गौरव प्राप्त गरेको छ । पछि २०२७ सालदेखि शास्त्रीजीले सम्पादक तथा प्रकाशकको रूपमा *फूलपात*को प्रकाशन प्रारम्भ गर्नुभयो । सरकारी सेवामा रहनु भएको हुनाले दश अङ्कपछि पत्रिका बन्द हुन पुग्यो । अवकाश पाइसकेपछि पुनः निरन्तर रूपमा *फूलपात*को प्रकाशन शुरु गरी जीवनको अन्तिम समयसम्म आफ्नो रचना र सम्पादन कौशलबाट पाठकलाई मुग्ध गरिरहनु भयो । सबभन्दा बढी प्रसिद्धि *फूलपात*लाई *सुन्दर सतसई* नामका (अप्रकाशित) कविता सङ्ग्रहका

नेपाल सम्बन्धी दोहा प्रकाशित भएपछि भएको थियो। दोहा प्रकाशित हुने वित्तिकै जनमानस आन्दोलित हुन पुग्यो र मिथिलाञ्चलका जनताको जिब्रोमा वास गर्‍यो। *फूलपात*मा उहाँको अनेकौं आफ्नो मौलिक रचना र विचार प्रकाशित हुने गर्थ्यो। कविता, कथा, गजल, गीत, समालोचनाका अतिरिक्त श्री घाघको नाउँले *समयकेर शिलापर* आलेख प्रकाशित गर्नु हुन्थ्यो। जुन समसामयिक यथार्थको चित्रण हुने गर्थ्यो। कटुसत्य बोल्ने र लेख्ने गर्नुहुने भएकोले शास्त्रीजीको विरोधीको सङ्ख्या पनि कम थिएन। विरोधीको चिन्ता नगरी उहाँले निर्भीक भई सत्य र कटुरचना प्रकाशित गरिरहनु भयो।

उहाँका प्रकाशित कृतिहरू हुन् – *परवशता* हिन्दी भाषामा २५ वटा मौलिक कविताको सङ्ग्रह, *रत्नावली नाटिका*को संस्कृतबाट मैथिली अनुवाद, *श्रृंगार तिलक* संस्कृतबाट मैथिली अनुवाद र महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाको *मुनामदन* को त्यै छन्दमा अनुवाद। उपर्युक्त प्रकाशित रचनाबाहेक थुप्रै मैथिलीका अप्रकाशित र आंशिक प्रकाशित रचनाहरू रहेका छन् र प्रकाशनको बाटो खोजिरहेका छन्। जबसम्म शास्त्रीजीको सम्पूर्ण रचना प्रकाशमा आउँदैन तबसम्म उहाँको कृतित्वको सही मूल्याङ्कन गर्न सकिँदैन। मृत्यु हुनुभन्दा छ दिन पहिले उहाँले आफ्नो *आलोक* मैथिली कविता सङ्ग्रहको कम्प्युटर टाइप गराई नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमा प्रकाशनको लागि दर्ता गराइसक्नु भएको थियो भने नेपाली भाषाको रचना *मुनामदन मञ्जुषा* को कम्प्युटर टाइप गराई नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानमा प्रकाशनको लागि बुझाइसक्नु भएको थियो। हेरौं प्रज्ञा-प्रतिष्ठानले उहाँका यी दुई रचना कहिलेसम्म प्रकाशित गर्ने हो।

यहाँ म उहाँको केही अप्रकाशित तर मौलिक मैथिली रचनाको उल्लेख गर्न गइरहेको छु –

१. *आलोक* – मैथिली कविता सङ्ग्रह हो। जसमा उहाँको प्रथम कविता 'टिक' देखि बयासीवटा कविता सङ्कलित छन् र जसको शीर्षक निम्नानुसार रहेको छ –

१. *आलोक* २. वसन्त गीत ३. राष्ट्रिय नचारी ४. मृत्युक पछाति ५. हृदयक व्यथा ६. नव विकास ७. ओ अनकर उपकार करत की ? ८. हम की करब ? ९. ई जीवन की अछि ? १०. राज्याभिषेक ११. मिथिलाञ्चल १२. साओनक सनेस १३. गाबिरहल छी १४. ई कलम उगिलैत आगि हमर १५. हम जारहल छी १६. वाणी विनाकेँ त्याग करु १७. कनियाँ १८. देश लुटल जा रहल अछि १९. प्रभात गीत २०. चहटगर कथा (शब्द चित्र) २१. समय २२. जीवन दर्शन २३. की करु ? २४. अन्नत इच्छा २५. प्रार्थना २६. सुकराती २७. ई अक्टुबर क्रान्ति दिवस अछि २८. अपन दुःखड़ा २९. की लिखु ? ३०. छोड़ि दिअ ३१. पारवहन ३२. काली प्रार्थना ३३. नेपाली छी ३४. बहुदल आयल ३५. मधेशी छी ३६. नव वर्षक सन्देश ३७. चुनावक हाल ३८. दिवङ्गत पाथेय ३९. चित्रगुप्त ४०. की गायब ४१. कलम बनाम कोदारि ४२. होरी ४४. मनोरथ ४५. अटेरी ४६. चान ४७. गजल तर्ज (बासी किसी ने प्यार की...) ४८. गीत मलान मुख ४९. लुक झुक दीप ५०. परिवर्तन ५०. तैयो चुप्पे लागू ५१. मध्यावधि चुनाव ५२. अप्पन भाषा बाजू ५३. सब अपने स्वार्थमे लागल ५४. ग्रीष्म ५५. नव वर्ष ५६. पुनि आयल मध्यावधि चुनाव ५७. अद्भूत लोक ५८. आजुक जनकपुरधाम ५९. स्वागत गान ६०. मलान मुख ६१. अशाक लता ६२. इजोरिया राति ६३. जीवन सङ्ग्राम ६४. पुष्पक अनुरोध ६५. अनमोल विवाह ६६. दक्षिण काली ६७. गजल तर्ज (तुम से मैने प्यार किया ..., गजल तर्ज (इन आँखोकी मशती मे) ६८. वसन्त ७०. कर्तव्य ७१. अद्भुत नेपाल ७२. हम हारि

नहि मानव ७३. मिथिला सुमन ७४. लालू ७५. अपनाकें नहि चिम्हल (समस्या पूर्ति) ७६. आरसी स्मृति ७७. राखू विनम्र स्वभावक ताला (समस्या पूर्ति) ७८. टीक ७९. सुन्दर देश ८०. गल्लीक कुकुर (गद्य कविता) ८१. कवि कोकिलक स्मृतिमे (गद्य कविता) ८२. काली वन्दना ।

यस कविता सङ्ग्रहको आमुखमा सुरेन्द्र झा 'सुमन' ले आफ्नो उद्‌गार व्यक्त गर्दै लेख्नु भएको छ – "छन्दबन्ध, रस निवेस, गुणवत्ता, चतस अभिज्ञतावाट मुग्ध छु। विकृतिबाट संस्कृतितिर समाजलाई उत्प्रेरित चेतना जगाउन यो रचना आलोक दिइरहने तथा सर्वथा सार्थक सिद्ध हुनेछ। त्यसै गरी यस कविता सङ्ग्रहको सम्मति लेख्दै चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' को उक्ति अक्षरसः सत्य प्रमाणित हुन्छ – प्रस्तुत *आलोक* नामक कविता सङ्ग्रह लिएर समाज समक्ष उपस्थित हुनुभएको छ। यसमा प्राकृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक परिस्थितिका अतिरिक्त नेपालमा मैथिली भाषा-साहित्यको स्थिति पनि पूर्ण रूपमा आलोकित हुन पुगेको छ।

उहाँको व्यक्ति पाण्डित्य प्रकर्ष र कवित्व प्रतिभाका सँगै अन्तःकरणका भाव पनि आलोकित भएको छ ।

यस सङ्ग्रहमा सामान्यतया केही रचना प्रकृति वर्णन एवं आलङ्कारिक निर्देशनबाट निरुपित शास्त्रीय साहित्यिक परम्परालाई अनुशरण गर्दै वर्तमान तथाकथित प्रजातान्त्रिक व्यवस्थामाथि कटाक्ष गरिएको छ। कतै पूर्ण श्रृंगारिकता पाउनु हुन्छ। कतै आफ्ना इष्ट र गुरुको भक्ति भावमा डुबिएको, कतै गजल र कतै समस्यापूर्ति शब्दहरू चित्र अङ्कित भएको भेटाउनु हुन्छ ।

यसबाटै यस कविता सङ्ग्रहको महत्त्व पनि स्वतः सिद्ध भएर जान्छ। मैथिलीमा लेख्ने प्रेरणा मैथिलीका सुप्रसिद्ध साहित्यकार सुरेन्द्र झा 'सुमन' बाट पाउनु भएको थियो। यहाँ म उहाँको पहिलो कविता जुन जलेश्वर कारागारमा लेख्नुभएको थियो – को उल्लेख गर्न गइरहेको छु –

"साथी ! सभ मिलि कटलनि टीक
देखि वृद्ध उपहास करै छथि ।
निरखि धर्ममन ह्रास करै छथि ।
पर आजुक विकसित अणु युगमे–
हुनका मोजर देबनि कथिक ? " साथी ...
कहथि वृद्ध जे छथि पुरातन ।
इएह हमर थीक धर्म सनातन ॥
इएह हमर थीक परम प्रतिष्ठा
ई थीक हिन्दूक पूर्ण प्रतीक ॥ साथी ...
की धर्मक थीक शुभ स्वरूप ई ?
की मानवकें प्रतिकूल रूप ई ?
धर्म दहीकँ टाँगक वास्ते –
की पाछू मे लटकल सीक ? साथी ...
अनुपयुक्त बुझि टीक कटौलहुँ ।
भद्दापन बुझि मोंछ मुड़ौलहुँ ॥
सुन्दर सरिपहुँ सुन्दर भेलहुँ,

बुड़ि बनबसँ इएह बडु नीक ॥ साथी ...

सुन्दर सत सई– उहाँको अत्यंन्त प्रसिद्ध सात सय दोहाको सङ्ग्रह हो यो। यस सङ्ग्रहका नेपाल सम्बन्धी दोहा *फूलपात* पत्रिकामा २०२७ सालमा प्रकाशित हुँदा चर्चित रहेको थियो। अन्यान्य दोहाहरू पनि *फूलपात*को अङ्कहरूमा छिटफुट प्रकाशित भयो जुन अत्यन्त रोचक र हृदयग्राही रह्यो। यी रचनाहरूलाई चौध शीर्षकमा विभाजित गरिएको छ। (१) नीति सम्बन्धी (२) कवि-कविता (३) लोक लक्षण तथा लोकोक्ति (४) सज्जन-दुर्जन (५) प्रकृति वर्णन ६. स्व-परक ७. नेपाल सम्वन्धी ८. भारत सम्बन्धी ९. अन्यान्य देश १०. जीव-जगत्-ईश्वर ११. नारी सम्बन्धी १२. जाति सम्बन्धी १३. युग-चित्रण १४. विविध।

यो पुस्तक लोक लक्षण ग्रन्थ सदृश व्यङ्ग्यात्मक शैलीमा लेखिएको छ। पुस्तकको पाण्डुलिपि पनि तयार भइसकेको छ। प्रकाशनको बाटो पर्खिरहेको छ।

यस सङ्ग्रहको "युग-चित्रण' को कविता उद्धरणको लागि प्रस्तुत गरिएको छ –

नहरि खोलि कहुना बान्हल कोशी सनके धार।
अभियंताके गुरु बुते बन्हतै नै युग-धार ॥
युग सरितामे भासल मानवताके लाश।
छानि घुमाबू चाकपर जै सँ पलटय साँस ॥
बात बनावय सब, मुदा काज करय नहि कोय।
क्रियाशील– मौनी एहन क्यौ-क्यौ मानव होअ ॥
काज करयमे आलसी सदिखन गप्प हँकैछ।
जे घन गरजैत अछि अधिक से प्रायः बडिसैछ ॥
हिरण्य कश्यप सन बाप बनि बेटा चाहय राम।
गोरि नारि राधा सनक स्वयं रहओ घनश्याम ॥
झुट्ठा, लम्पट, धूर्तसभ बनले चतुर चलाक
बूडि बनल सज्जन, सरल जखन घूमल युग-चाक ॥
भ्रष्टाचार निवारक करैछ भ्रष्टाचार।
धर्मक प्रमुख प्रचारक करैछ पापाचार ॥

३. *अप्पन एक आँखि पडोसियाक दुनू आँखि* –

कथा सङ्ग्रहको पाण्डुलिपि पनि तयार छ। यस कथा सङ्ग्रहको केही कथा धेरै पहिला प्रकाशित भई चर्चित भइसकेको छ। जस्तै – "अखनू बखाडी नइँ फूजलै" दरभङ्गावाट *वैदेही* पत्रिकाको कथा विशेषाङ्कमा १९५५ ई. मा प्रकाशित भएको छ। पुनः यो कथा *फूलपात* पत्रिकाको वि.सं. २०४१ अषाढ पूर्णाङ्क ११ मा प्रकाशित भएको छ। त्यस्तै "अपन एक आँखि पडोसियाक दुनू आँखि" कथा *फूलपात*को २०२७ साल पुष १ गते वर्ष २ अङ्क २ मा प्रकाशित भएको छ।

यसले के स्पष्ट गर्छ भने शास्त्रीजीले मूलतः कवि हुँदाहुँदै पनि साहित्यको विभिन्न विधामा कलम चलाउनु र यश आर्जन गर्नु हुन्थ्यो। आलोचनामा पनि उहाँ कम हुनु हुन्नथ्यो। आलोचकको रूपमा समाजमा खूबै चर्चित रहनु भयो। संस्कृतका प्रकाण्ड विद्वान्का सँगै मैथिली नेपाली, हिन्दी र अङ्ग्रेजी भाषामा पनि समान अधिकार राख्नुहुन्थ्यो। शृंगार तिलकको अङ्ग्रेजी अनुवाद पनि गर्नुभएको छ। श्रृंगार तिलक महाकवि कालिदासको श्रेष्ठ रचना हो जसको मैथिली अनुवाद गरी पहिला नै प्रकाशित

गराई सक्नुभएको छ। यस कविताको ३७ श्लोकलाई निम्न शीर्षक दिई अनुवाद गर्नुभएको छ। जस्तै– उदाहरणको रूपमा ५ वटा श्लोकको अङ्ग्रेजी अनुवाद हेर्न सकिन्छ।

1. Ode to cupid 2. Cupid's copulation 3. Breasting after copulation, 4. Women pond 5. A Hard earned Fortune 7. A Valuminous Breast, 7. Striping a true beautitude, 8. A source of immortality, 9. A vision of waigtail, 10. Adverse effect, 11. Moneyface, 12. Unsuccessful honeymoon (question) 13. 14. East-aeo-wife (answer-two), 15. The lost youth-pearl 16. An aflictor is bound to fall (answer), 17. To unfaithful husband, 18. A stones-heart, 19. Let the truth be confirmed, 20. Unfaithful wife (I), 21. Unfaithful wife (II), 22. A hunter girl, 23. Wife adopter, 24. Request for a glimpse, 25, Revenge, 26. A letter to a seperated wife, 27. A fairy Moon (Reply) 28. Apt assuraince, 29. unextinguishable flame, 30. While in seperation, 31. Hereditary Rites, 32. A prudent deer and foolish elephant, 33. Wonderful fire, 34. A bent nipple, 35. A flower begets flower, 36. A plunderer of mind, 37. A credited enjoyment.

5. A hard earned fortune

Better to be beaten hundred times
by a dried wooden piece
Better to be besmeared by bog
and better be baked in fire
As you found the pleasure of -
getting attached to the breast
That pleasure O jug is not to be found
Without experiencing the grief

उहाँको *हाम्रो नेपाल* नेपाली कविता सङ्ग्रह पनि अप्रकाशित अवस्थामा छ।

यो संक्षिप्त विवेचनाबाट यो मात्र भन्न सकिन्छ कि जबसम्म उहाँको सम्पूर्ण रचनाहरू प्रकाशित हुँदैन तबसम्म सर्वपक्षीय रूपमा उहाँको विषयमा भन्न सकिँदैन। शास्त्रीजी एउटा अद्भुत प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार हुनुहुन्थ्यो। मैथिली साहित्य र समाजसेवाको क्षेत्रमा उहाँले पुऱ्याउनु भएको योगदानलाई बिर्सिन सकिँदैन। जनकपुर वडा नं. ४ स्थित विद्यापति स्मारक निर्माणमा उहाँको योगदान श्रेष्ठतम रहेको छ। उहाँद्वारा भएको सेवाका लागि हुनपर्ने मूल्याङ्कन हुन सकेन तर पनि केही साहित्यिक तथा सरकारी स्तरमा उहाँले सम्मान प्राप्त गर्नुभयो।

महिला तथा समाजकल्याण मन्त्रालयबाट २०५३ सालको प्रतिभा पुरस्कारबाट सम्मानित गरिएको थियो। नेपाली साहित्य सेवाको लागि ८६ औं देवकोटा जयन्तीको अवसरमा देवकोटा स्मृति सभा कलैयाद्वारा सम्मानित गरिएको थियो। पद्मानन्द ट्रष्टद्वारा २०५२ सालको गङ्गा-लक्ष्मी साहित्यिक पुरस्कारद्वारा सम्मानित विद्यापति सेवा संस्थान दरभङ्गाद्वारा २२ नवम्वर १९९६ ई. मा अभिनन्दित। चतुर्थ अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन राउरकिलामा सम्मानित तथा यस संस्थाका वरिष्ठ उपाध्यक्षको रूपमा चयनित। जनकपुर

बौद्धिक समाजद्वारा २०५१ सालको विद्यापति स्मृति पर्व समारोहमा नागरिक अभिनन्दन र त्यही संस्थाद्वारा हिन्दीको विशिष्ट सेवाको लागि नेपाल राष्ट्रिय हिन्दी सम्मेलन २०५४ फाल्गुण २६ गते सम्मानित गरिएको थियो, तर यी दुवै पुरस्कार उहाँ आफ्नो जीवनकालमै फिर्ता गरिसक्नु भएको थियो ।

नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानको शास्त्रीजी मानार्थ सदस्य हुनुहुन्थ्यो, तर उहाँकै भनाइअनुसार कहिल्यै पनि कुनै सभा सम्मेलनमा उहाँलाई बोलाइँदैनथ्यो । उहाँको कुनै पुस्तक पनि प्रज्ञा-प्रतिष्ठानले प्रकाशित गरेको छैन ।

शास्त्रीजीको व्यक्तित्वमा विराटता तथा प्रतिभा सम्पन्नता थियो । उहाँको विषयमा संक्षिप्त आलेखमा समेट्नु भनेको गाग्रोमा सागर भर्नु सदृश हुन्छ । एउटा पनि पुस्तक उहाँले नलेखेको भए पनि *फूलपात*मा उहाँको प्रकाशित रचनाको मूल्याङ्कन भए उहाँ मैथिली साहित्यमा अमर रहनु हुन्छ । यस्ता महान् विभूतिलाई उचित सम्मान न त समाजले दिन सक्यो, न त मुलुकले । आफ्नो कुराप्रति दृढ रहनु र परिस्थितिक जटिलता जति भए पनि हार स्वीकार नगर्नु उहाँको स्वभाव थियो । कर्तव्यनिष्ठ शास्त्रीजीले पदप्रतिको आशक्ति कहिल्यै पनि देखाउन भएन । यो समाजमा यस्ता विद्वान्, समाजसेवी, राजनीतिज्ञ, साहित्यकार हुनु दुर्लभ नै हो । यस्ता महान् विभूतिको स्वर्गारोहण २०५५ साल श्रावण २५ गते सोमवार राति १०.०० बजे भैरहवामा भयो । भनिएको छ - "कीर्तियश्य स: जीवति" । त्यसैले शास्त्रीजीको नश्वर शरीर नभए पनि उहाँको आत्मा यस धरतीमा अवश्य घुमिरहन्छ, किनकि मिथिला र मैथिलीको लागि उहाँ सदैव चिन्तित रहनु हुन्थ्यो । उहाँप्रति यथार्थ श्रद्धाञ्जली भनेको उहाँद्वारा छोडिएको अधुरो कामहरूको मिथिलावासीले अगाडि बढाउनु नै हो ।

अनुवादकः रञ्जन

जनमिते जनपक्षीय : नेपालक मैथिली कथा-साहित्य

धीरेन्द्र प्रेमर्षि

साहित्यक अन्यान्य विधा संगहि नेपालमे मैथिली भाषामे कथा सेहो लिखल जाय लागल। ओना तँ आधुनिक कालमे साहित्यकारलोकनि विशेषत: कविता-लेखनदिस केन्द्रित छलाह, मुदा विश्व-साहित्यहिमे प्रभावकारी सिद्ध होइत आएल कथा-विधाक प्रभावसँ कविक रूपमे मात्र क्रियाशील साहित्यकारलोकनि सेहो मुक्त नहि रहि सकलाह। फलत: कविलोकनि सेहो कथा लिख' लगलाह। एहि छिटफुटिया लेखनसँ प्रारम्भ भेल मैथिलीक कथा-साहित्य एखनहुँ आशा आ आवश्यकताअनुरूप गति नहि ल' पौलक अछि। यद्यपि साठि आ सत्तरिक दशकमे परिमाणात्मक आ गुणात्मक दुनू दृष्टिएँ नेपालमे मैथिली कथा विधाक स्थिति उल्लेखनीय छल। अस्सीक दशकधरि सेहो अवस्था निराशाजनक नहि रहैक। मुदा भारतसँ प्रकाशित होइत आएल *मिथिला मिहिर, पल्लव, देसकोस*सहित अन्य किछु स्तरीय मैथिली पत्रिकाक प्रकाशन बन्द भ' गेलाक बाद सम्पूर्ण मैथिली साहित्यक संगहि नेपालमे लिखल जायवला मैथिली कथासभ सेहो प्रभावित भेल। मैथिली साहित्यक समग्र अवस्थाकेँ दृष्टिगत क' जँ कहल जाय तँ सम्प्रति नेपालमे मैथिली कथा-साहित्यक अवस्था दयनीय अछि।

नेपाली नागरिकद्वारा वा नेपाली भूमिपर लिखल गेल पहिल मैथिली कथा पं. सुन्दर झा शास्त्रीक 'अखनू बखाड़ी नै फुजलै' होएबाक बातकेँ ओना तँ समालोचकलोकनि स्वीकार क' चुकल छथि, मुदा मैथिली साहित्यक चर्चित समालोचक डा. रमानन्द झा 'रमण' नेपालक पहिल मैथिली कथाक रूपमे पं. वासुदेव ठाकुरक 'सप्तव्याधा' केँ उपस्थित कएने छथि। मैथिली साहित्यमे पत्रपत्रिका प्रकाशनक स्थिति अति दयनीय रहल आ छपल सामग्रीसभक सेहो उचित व्यवस्थापन नहि भ' रहल परिप्रेक्ष्यमे पं. वासुदेव ठाकुरक 'सप्तव्याधा' शीर्षक कथा कहिया, कोन पत्रिकामे छपल छल, से अनेक प्रयास कएलो सन्ता ई लेखक पता नहि लगा पौलक। सम्प्रति वासुदेव ठाकुर नामक कोनो व्यक्ति मैथिली साहित्यमे क्रियाशील सेहो नहि देखल जाइत अछि। तेँ डा. रमणक दावाकेँ

यथार्थ मानबाक कोनो आधार नहि देखबामे अबैछ। ओहुना नेपालीय मैथिली साहित्यक इतिहास-पुरुष डा. धीरेन्द्रक अनुसार पं. वासुदेव ठाकुरक 'सप्तव्याधा' कथा नहि, अपितु धार्मिक आख्यान थिक।

भारतक पटनासँ डा. मेघनप्रसादद्वारा प्रकाशित *मैथिली कथाकोश* समस्त मैथिली संसारक संगहि नेपालक कथासभक विषयमे सेहो यथेष्ट जानकारी दैत अछि। मुदा दुर्भाग्य जे एहू पुस्तकक लेखकीय सूचिमे पं. वासुदेव ठाकुरक 'सप्तव्याधा' आ 'वीरांगना मैथिली' क' दू कथाक उल्लेख रहितहुँ कथासूचिमे 'सप्तव्याधा'क विवरण उपलब्ध नहि अछि। वासुदेव ठाकुरक दूटामेसँ एक 'वीरांगना मैथिली'क विवरण उक्त ग्रन्थमे अछि, जाहि अनुसार ओ कथा ९ दिसम्बर १९६२क *मिथिला मिहिर*मे छपल अछि। कुल दुइए गोट कथा लिखनिहार वासुदेव ठाकुरक पहिल कथा सेहो दोसरसँ एक्के-दू वर्ष पहिले छपल हएत। कारण जे दुइएटा कथा लिखि सुस्ता गेल ठाकुर प्रवृत्तिगतरूपें कथाकार भइए नहि सकैत छथि। ओ जोशमे आबि कथा लिखैत छल होएताह। आ एहन जोश अक्सरहाँ एक-आध बेर, सेहो कम्मे समयक अन्तरालमे आबि सेरा जाइत अछि। तसर्थ पं. वासुदेव ठाकुरक 'सप्तव्याधा' कें पं. सुन्दर झा शास्त्रीक १९५५ ई. मे प्रकाशित 'अखनू बखाड़ी नै फुजलै' सँ जेठ नहि कहल जा सकैत अछि।

एहितरहें नेपालक अग्रज मैथिली कथाकारक श्रेय सेहो नेपालक अग्रज मैथिली पत्रकार पं. सुन्दर झा शास्त्रीएकें जाइत छनि। पं. शास्त्रीक उल्लिखित कथा सन् १९५५क नवम्बर-दिसम्बर अंकमे *वैदेही* पत्रिकामे छपल छल। एहि कथाकें समालोचकलोकनि लोककथा कहैत सेहो पाओल गेलाह अछि। मुदा, एहिमे समकालीन कथामे आवश्यक कोनहु गुणक अभाव दृष्टिगोचर नहि होइछ। बल्कि एकरा जनकथा कहब युक्तिसंगत भ' सकैत अछि। नेपालमे मैथिली कथा कतबाधरि सकारात्मक आ सार्थक एकपेड़ियापर चलिरहल अछि, तकर गबाहीक रूपमे एही बातकें लेल जा सकैत अछि जे नेपालक पहिले मैथिली कथा पेटक समस्यासँ जुड़ल अछि आ सर्वहारा वर्गक पक्षमे ओकालति क' रहल अछि। स्व. शास्त्री मूलत: कवि छलाह। तथापि हुनक अन्य तीन कथा सेहो प्रकाशित छनि। एहिमेसँ 'अपन एक आँखि पड़ोसियाक दुनू आँखि' हुनकहिद्वारा प्रकाशित-सम्पादित पत्रिका *फूलपात*मे छपल अछि। 'गोनू झा आ बसुआ' आठ कक्षाक ऐच्छिक मैथिली-पाठ्यपुस्तकमे समाविष्ट अछि। शास्त्रीक कथित अन्तिम कथा 'मानिक पड़ल कुवानिक हाथ' वस्तुत: उपन्यास थिक। मुदा *फूलपात* मे प्रकाशित ओहि उपन्यासअंशकें कथेक रूपमे स्वीकारि लेल गेल अछि। लोककथाक लीकमे बहैत हुनक प्राय: सभ कथा वर्तमान समयक विकृति-विसंगतिपर कड़ा चोट प्रहार करैत पाओल जाइत अछि। ई कथासभ आधुनिक कथा-तत्वसँ सेहो परिपूर्ण अछि।

नेपालक मैथिली कथामे विशेष गतिशीलता तखन अबैत अछि, जखन अपन जन्मभूमि भारतक लोहनासँ अध्यापनक हेतु सन १९६०मे डा. धीरेन्द्र नेपाल अबैत छथि। ओना तँ ओहिसँ पूर्वहुँ नेपालमे मैथिली साहित्यिक गतिविधिमे संलग्न पं. जीवनाथ झा आ डा. लक्ष्मण शास्त्री क्रमश: 'चौठचन्द्र' आ 'मानवताक मूल्य' तथा 'कलुआ' आ 'चूड़ा-दही' कथा छपबओने छलाह। मुदा हुनकालोकनिक सक्रियता कवितेदिस बेसी केन्द्रित रहलाक कारणें नेपालक मैथिली कथाकें ओलोकनि खास योगदान नहि द' सकलाह। एहिना भारतसँ १९५१मे नेपाल आएल पं. मथुरानन्द चौधरी 'माथुर'क ओही साल 'शीला' कथा प्रकाशित भेल अछि। मुदा ओ कथा संभवत: हुनक नेपाल आगमनसँ पूर्वहि लिखल

होएवाक प्रबल संभावनाक आधारपर ओकरा नेपालक पहिल कथाक कोटिमे नहि राखल जा सकैत अछि। पं. माथुरक पाछाँ आबि 'समाज' शीर्षकक एक कथा सेहो प्रकाशित भेल छनि। मुदा हुनकर तथा हुनक पूर्ववर्ती कथाकारसभक कथा मैथिली साहित्यक मूल धारमे समाहित नहि भ' सकल अछि।

एम्हर डा. धीरेन्द्रक कथा-लेखनमे सेहो विशेष गति हुनक नेपाल-प्रवास अर्थात् १९६० ई. क बादे आएल देखबामे अबैछ। ओना तँ हुनक पहिल कथा 'कालिमा' सन् १९४९ हिमे *हितैसी* नामक हस्तलिखित पत्रिकामे छपि चुकल छल। एहिना १९५३ ई. मे *मिथिला मिहिर* मे एक अन्य कथा 'सभ्य लोक' सेहो छपल छल। मुदा हुनक नेपाल आगमनसँ पूर्वक कथाकेँ नेपालक मैथिली कथा कहब युक्तिसंगत नहि होएबाक कारणें कथाकारक रूपमे पं सुन्दर झा शास्त्रीसँ जेठ रहितहुँ डा. धीरेन्द्रकेँ नेपालक अग्रज मैथिली कथाकार नहि कहल जा सकैत अछि।

मुदा नेपालमे मैथिली कथाक विकासमे सर्वाधिक योगदान डा. धीरेन्द्रहिक छनि, ताहि बातकेँ अस्वीकार नहि कएल जा सकैए। नेपाल अएलाक बाद धीरेन्द्र मैथिली साहित्यकेँ करीब एक सय उत्कृष्ट कथासभ देलनि। ई कथासभ *कुहेस आ किरण, पझाइत घूरक आगि* आ *शतरूपा आ मनु*मे सेहो संग्रहित अछि। डा. धीरेन्द्र नेपाल अएबासँ पहिनहि जे कथासभ लिखने रहथि, ताहि कथासभक संग्रह १९९० ई. में *नव मन्दिर* शीर्षकसँ स्व. भुवनेश्वर पाथेय प्रकाशित करबओने छलाह।

वर्तमानमे नेपालक मैथिली कथाकेँ उपर उठएबाक काजमे क्रियाशील तत्कालीन युवासभकेँ सेहो डा. धीरेन्द्रहि प्रोत्साहन द' मार्गदर्शन कएने रहथिन। ई स्वीकारोक्ति सम्बन्धित कथाकारलोकनिक छनि। डा. धीरेन्द्र नेपाल आगमनपश्चात् युवा साहित्यकारसभकेँ उत्प्रेरित करैत अपनहुँ संलग्न रहि मैथिली कथाकेँ समृद्ध बनएबादिस लागि गेलाह।

देशक राजनीतिक परिवर्तन संगहि नेपालमे लिखल जाएवला कथासभमे परिवर्तन अबैत रहल अछि। स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, अभावग्रस्त जिनगी, समाजिक रुढ़िवादितासँ ग्रस्त दिनचर्या तथा मानवीय संवेदनाक अन्य विविध पक्षपर केन्द्रित मैथिली कथामे सर्वहारा वर्गक लेल विशेष सहानुभूति प्रायः सम्पूर्ण कथाकार देखबैत पाओल गेलाह अछि। राजनीतिक पृष्ठभूमिपर नेपालमे कम्मे मैथिली कथा लिखल जाइत अछि। भाषा, शैलीमे प्रायः सभ कथाकार निजात्मकता रखैत छथि, मुदा अधिकांश नेपालक मैथिली कथाकारसभक चरम लक्ष्य शोषणरहित समाज निर्माणक दिशामे उन्मुख बुझाइत अछि।

नेपालमे थोड़बे कथा लिखिक, बेस चर्चा पौनिहार कथाकार रामभद्र थिकाह। हुनक लगभग एक दर्जन कथा प्रकाशित छनि। एहिमध्य 'सीता माने नोर, 'एकटा ब्रह्माण्ड आर', 'बेटीक बाप' आदि उत्कृष्ट कथासभक कारण डा. धीरेन्द्र श्री रामभद्रकेँ नेपालक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कथाकारक उपाधि देलनि अछि, जे सर्वमान्य सेहो भ' गेल अछि।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' संख्यात्मक दृष्टिएँ डा. धीरेन्द्रक बाद सर्वाधिक कथा लिखनिहार नेपालक मैथिली कथाकार थिकाह। *तोरासंगे जयबौ रे कुजबा* नामक हुनक कथासंग्रह मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशितो अछि। 'पाँक', बिरड़ो', 'इजोरिया रातुक सपना', 'असक्क', 'माटिक दरद' आदि भ्रमरक चर्चित कथासभ थिक। नेपालक नागरिकसभमध्य सर्वप्रथम मैथिली कथासंग्रह प्रकाशित करबौनिहार कथाकारक श्रेय सेहो

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' कें जाइत छनि ।

एकरा अतिरिक्त अपन स्वतंत्र कथासंग्रह प्रकाशित करबौनिहार एकमात्र कथाकार थिकाह– डा. रेवतीरमण लाल । *माधव नहि अएला मधुपुरसँ* हुनक प्रकाशित कथाकृति थिकनि । 'बहुरा', 'अगराही', 'दरुपीबा', 'उलहन', 'दरारि', 'चतुर्थी', अदि कथासभ हुनका मैथिली साहित्यमे विशेष परिचय दियौने छनि ।

चामत्कारिक कथा-शिल्प, संवेदनशील विषयवस्तु आ उत्कृष्ट शब्द तथा वाक्य संयोजनद्वारा पाठकक हृदय छूबि लेनिहार कथाकार थिकाह– डा. राजेन्द्र विमल । 'एकटा धधकैत भविष्य', 'रामेछापक श्रवणकुमार', 'मयूरपंखी गीतक रक्त', 'शून्य आकाश', 'जूत' आदि डा. विमलक किछु उल्लेख्य कथा छियनि । ओना तँ डा. विमल संख्यात्मक दृष्टिएँ कम्मे कथा लिखलनि अछि, मुदा जतबे लिखलनि से मीलक पाथर प्रमाणित भेल अछि ।

अन्यान्य विधामे विशेष दखल रखितो, मैथिली साहित्यकें नीक-नीक कथाक योगदान देनिहार साहित्यकारक रूपमे स्व. भुवनेश्वर पाथेयक अग्रणी स्थान छनि । नव बिम्ब, नव शैली कारणें मैथिली कवितासंसारमे सशक्त हस्ताक्षरक रूपमे सुपरिचित पाथेयकें 'अंकुर', 'जीवनवृत्त', 'खाली क्षितिज', 'अतीतक टुकड़ासभ' आदि रचनासभ कथा विधामे सेहो नीक प्रतिष्ठा दियौने छनि ।

एहि कोटिक दोसर कथाकार थिकाह – महेन्द्र मलंगिया । ओना तँ हुनका मात्र नाटककार कहल जा सकैत अछि, मुदा कहियोकालक' ओ कथा-कवितादि सेहो लिखि लेल करैत छथि । अन्य विधामे सेहो मलंगियाक नाटककार व्यक्तित्व हाबी रहल स्पष्ट देखबामे अबैछ । तथापि हुनक 'धार', 'भूत', 'घाट' आदि कथासभ प्रशंसनीय छनि । मलंगियाक 'समुद्र-मंथन' कथाकें त ँ नेपालहिक उत्कृष्टतम मैथिली कथा कहब सेहो अतिशयोक्ति नहि मानल जाएत ।

विराटनगरकें अपन कार्यक्षेत्र बनाक' साहित्य-सृजनमे जुटल रामनारायण सुधाकर सेहो मैथिली कथाकें आगाँ बढ़एबामे यथेष्ठ योगदान देने छथि । मानवीय संवेदनाकें सूक्ष्मतापूर्वक छूबिक' मन सिहरा देनिहार सुधाकरक 'खुट्टीमे टांगल ब्रा', 'दोयरि', 'चान अशोथकित अछि', 'संधि', 'थकुचल मासुक बुट्टी' आदि कथासभ बेस चर्चित छनि ।

किछु समय पूर्वधरि कथा-लेखनमे बेस सक्रिय रहल सुरेन्द्र लाभक 'खोभाड़ हेराइत परिचय', '???', 'पेन्डुलम' आदि कथासभ मैथिली कथा-विधाकें हुनकासँ पर्याप्त आश जगौने छल । मुदा, आइकाल्हि ओ निस्क्रिय देखल जा रहल छथि । अहिना सम्प्रति निस्क्रिय रहल अयोध्यानाथ चौधरीक सेहो 'एकटा हेराएल सम्बोधन', 'प्रतिशोध', 'राति आ अजन्ताक ओ मूर्ति' आदि कथासभक कारणें मैथिली कथा-संसारमे सम्मानित स्थान छनि । किछु समय पूर्वधरि जीतेन्द्र जीत सेहो बेस उत्साहक संग कथा लिखिरहल छलाह । मुदा 'कल्पनाशील', 'अपराध', 'प्रश्नचिह्न', 'मेट्रो' आदि विभिन्न भाव-भूमिक कथा लिखनिहार जीतेन्द्रक उत्साह सम्प्रति किएक सेराएलजकाँ देखबामे आबिरहल अछि, से बुझबामे नहि अबैछ । अहिना 'श्रीमतीजी' , 'घोघापुल चौक', 'झगड़ा', 'देशक सुधार' सन हास्यव्यङ्ग्य कथा लिखनिहार विनोदचन्द्र झा सेहो एखन सुषुप्तावस्थामे रहल-सन जानि पड़ैत छथि ।

मैथिली भाषाक विकास लेल सतत चिन्तनशील स्व. योगेन्द्र साह 'नेपाली' अपन अभियानहिक रूपमे कथा लिखल करैत छलाह । ओ *घुसखोरी* शीर्षकसँ कथासंग्रह प्रकाशित करबाक घोषाण सेहो क' चुकल छलाह । *नेपालक प्रतिनिधि मैथिली गल्प*

'नामक कृतिक श्री नेपाली प्रकाशक सेहो छलाह। नेपालीक निधनक बाद विभिन्न पत्रपत्रिकामे छिड़िआएल हुनक कथासभक संग्रह धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सम्पादनमे प्रकाशित होएबाक नियारमे अछि।

कथा-लेखनमे नेपालसँ दुइएटा मैथिलानी आगाँ आएल देखल जाइत छथि। ई छथि- मीनाक्षी ठाकुर आ मीना कर्ण। मुदा इहो दुनू कथाकर्त्री सम्प्रति लेखनसँ विराम ल' लेलनि अछि, तेँ नेपालक मैथिली साहित्यमे महिला कथाकारक शून्यतेजकाँ अछि।

समग्र मैथिली-संसारमे चर्चित कथाकारक रूपमे रहल धूमकेतु आ प्रदीप बिहारी सेहो नेपालक मैथिली कथा-लेखनकेँ किछु गति प्रदान कएलनि अछि। ई दुनू भारतीय कथाकार किछु समय नेपालमे रहि पुनः भारत घुरि चुकल छथि। मुदा ई लोकनि बहुतो कथा नेपालहिमे लिखने छलाह आ एखनहुँ हिनकालोकनिक कथासभ नेपालहिक पृष्ठभूमिपर आधारित रहैत अछि। ई दुनू कथाकारक *अगुरवान एवं अन्य कथा* (धूमकेतु) आ *औतीहि कमला जयतीह कमला* तथा *खण्ड-खण्ड जिनगी* (प्रदीप बिहारी) कथा एवं लघुकथाकृति प्रकाशित अछि। अही श्रेणीक कथाकार डा. प्रफुल्लकुमार सिंह 'मौन' सेहो थिकाह।

नेपालीक प्रतिष्ठित कथाकार मनु ब्राजाकी सेहो किछु मैथिली कथा लिखलनि अछि आ से चर्चितो भेलनिहें। वर्तमानमे रमेश रंजन युवा कथाकारसभमध्य विशेष सक्रिय छथि। प्रो. राजेन्द्रकिशोर, रामचन्द्र झा, श्यामसुन्दर शशि, ललन, नवीनचन्द्र कर्ण, सजीतकुमार झा सेहो कथा-लघुकथा लिखिकं एहि विधाकेँ थोड़बहुत योगदान द' रहल छथि। मैथिली कथा-लेखनमे एहि लेखकक सेहो संलग्नता रहैत आएल अछि।

जनमिते शोपित-पीड़ित वर्गक पक्षमे ठाढ़ भेल मैथिली कथा-संसारक मूल धर्म एखनहुँ जनकथेक अछि। वरिष्ठ कथाकार डा. धीरेन्द्र, डा. राजेन्द्र विमल, भ्रमरसँ ल' रामचन्द्र झा, रमेश रंजन, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, श्यामसुन्दर शशि आदि युवा तूरक कथाकारसभक मूल लेखन-प्रवृत्ति सेहो एही दिशामे बहैत पाओल जाइत अछि।

किछु एहनो कथाकार छथि, जिनक एखनधरि एकसँ ल' तीनटाधरि कथा प्रकाशित छनि। बदरीनारायण वर्मा, उपाध्याय भूषण, लोकेश्वर व्यथित, डा. गंगाप्रसाद अकेला, ब्रजकिशोर ठाकुर, अरूणकुमार झा, नित्यानन्द मण्डल, अश्रु सिन्धुलीय, कुबेर घिमिरे, डा. चन्देश्वर साह, परमेश्वर कापड़ि, प्रदीपकुमार कोइराला, हिमांशु चौधरी आदिक कथाप्रकाशन-स्थिति इएह देखबैत अछि। एकर अतिरिक्तो कतोक कथकार सक्रिय छथि।

नेपालसँ मैथिलीक नीक-नीक कथासभक रचना भेलहुँ सन्ता पत्रपत्रिकाक अभाव आ संग्रह प्रकाशनमे शिथिलताक कारणें एहन कथासभ प्रकाशित नहि भ' पाबिरहल अछि। एखनधरि प्रकाशित दूगोट कथा-संकलन – डा. धीरेन्द्रद्वारा सम्पादित *नेपालक प्रतिनिधि मैथिली गल्प* आ सुरेन्द्र लाभद्वारा सम्पादित *नेपालीय मैथिलीक उत्कृष्ट गल्प* सेहो नेपालक मैथिली कथाक प्रतिनिधित्व करबामे आ उत्कृष्टता कायम रखबामे सफल नहि भेल अछि। *गंगासँ हिमालयधरि* नामक कथा-संकलन सेहो धीरेन्द्र प्रेमर्षिक सम्पादनमे प्रकाशनक बाट जोहिरहल अछि। ... वर्तमान समयमे प्रकाशनक अवस्था जँ सुधरि जाय तँ नेपालमे लिखल जाइत मैथिली कथासभ सेहो विश्वक कोनो समृद्ध साहित्यसँ निच्चाँ नहि रहत, से हमर विश्वास अछि।

सन्दर्भ-सामग्री

डा. मेघन प्रसाद, *मैथिली कथाकोश*, प्र. पूनम सिन्हा, समस्तीपुर, १९९५ ई. ।

डा. रमानन्द झा 'रमण', *मैथिली साहित्य ओ राजनीति*, अखियासल प्रकाशन, मधुबनी, १९९४ ई. ।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', *समकालीन नेपालीय मैथिली कथा मधुपर्क*-२०५० फागुन, प्र. गोरखापत्र संस्थान, काठमाडौं ।

डा. धीरेन्द्र (सं.) *नेपालक प्रतिनिधि मैथिली गल्प* प्र. जानकी पुस्तक भंडार, जनकपुर, २०३८ वि.सं. ।

धीरेन्द्र प्रेमर्षि, मैथिली साहित्यक विविध आयाम आ विकास प्रयास, *सयपत्री*-१, प्र. ने.रा.प्र.प्र., २०५२ ।

गोविन्दपुर-१, सिरहा
सम्प्रतिः पाटन, श्रीबहाल
५३६११४, ५२११५१

जन्मिँदै जनपक्षीय: नेपालको मैथिली कथा-साहित्य

नेपालमा साहित्यका अन्य विधाहरूसँगसँगै मैथिली भाषामा कथा पनि लेख्न थालिएको पाइन्छ। उसो त आधुनिक कालमा साहित्यकारहरू, विशेषत: कविता-लेखनमा केन्द्रित भएका पाइन्छन्। विश्वसाहित्यमै प्रभावशाली साबित भइरहेको विधा कथाको प्रभावबाट कविका रूपमा क्रियाशील साहित्यकारहरू पनि अछुतो रहन सकेनन्। फलत: कविहरूले पनि कथा लेख्न थाले। यो फाट्टफुट्ट लेखनबाट प्रारम्भ भएको नेपालको मैथिली कथा साहित्यले अहिले पनि चाहिँदो गति लिन सकेको छैन। यद्यपि साठी र सत्तरीको दशकमा नेपालमा परिमाणात्मक र गुणात्मक दुवै दृष्टिले मैथिली कथा विधाको स्थिति उल्लेखनीय थियो। असीको दशकसम्म पनि कथाको स्थिति निराशाजनक थिएन। तर भारतबाट प्रकाशित हुने *मिथिला मिहिर, पल्लव, देसकोस* लगायत अन्य केही उत्कृष्ट मैथिली पत्रिकाहरू निस्किन छोडेपछि नेपालमा लेखिने मैथिली कथाहरू पनि प्रभावित भए। मैथिली साहित्यको समग्र अवस्थालाई दृष्टिगत गरी भन्ने हो भने हाल नेपालमा मैथिली कथासाहित्यको स्थिति दयनीय छ।

नेपाली नागरिकद्वारा वा नेपाली भूमिमा लिखित पहिलो मैथिली कथा पं. सुन्दर झा 'शास्त्री' को 'अखनू बखाड़ी नै फुजलै' हो भन्ने कुरा उसो त प्रायजसो विद्वान् समालोचकहरूले स्वीकार गरेका छन्, तर मैथिली साहित्यका चर्चित समालोचक डा. रमानन्द झा 'रमण' ले चाहिँ नेपालको पहिलो कथाको रूपमा पं. वासुदेव ठाकुरको 'सप्तव्याधा'लाई अगाडि सार्नुभएको छ। मैथिली साहित्यमा पत्रपत्रिका प्रकाशनको स्थिति साह्रै दयनीय भएको र छापिएका सामग्रीहरूको पनि उचित व्यवस्थापन हुन नसकेको परिप्रेक्ष्यमा पं. वासुदेव ठाकुरको 'सप्तव्याधा' शीर्षक कथा कहिले, कुन पत्रिकामा छापिएको थियो भन्ने कुरा कति प्रयास गर्दा पनि यस लेखकले पत्ता लगाउन सकेन। हाल वासुदेव ठाकुर नामको कुनै व्यक्ति मैथिली साहित्यमा क्रियाशील रहेको पनि देखिँदैन। त्यसैले डा. रमणको दाबीलाई यथार्थ मान्ने कुनै आधार फेला पर्दैन। उसै पनि नेपालीय

मैथिली साहित्यका इतिहास-पुरुष डा. धीरेन्द्रका अनुसार पं. वासुदेव ठाकुरको 'सप्तव्याधा' कथा नभई धार्मिक आख्यान मात्र हो ।

भारतको पटनाबाट डा. मेघनप्रसादले प्रकाशित गराउनुभएको *मैथिली कथाकोश*ले समस्त मैथिली संसारका साथै नेपालका मैथिली कथाहरूबारे पनि यथेष्ट जानकारी दिएको छ। तर दुर्भाग्यको कुरा, लेखकीय सूचिमा पं. वासुदेव ठाकुरको 'सप्तव्याधा' र 'वीरांगना मैथिली' गरी दुई कथाको उल्लेख भए तापनि कथासूचीमा भने 'सप्तव्याधा' को विवरण छुट्न पुगेको रहेछ। वासुदेव ठाकुरको दुईमध्ये एक 'वीरांगना मैथिली' को विवरण उक्त पुस्तकमा दिइएको छ, जसअनुसार उक्त कथा ९ दिसम्बर १९६२ को *मिथिला मिहिर*मा छापिएको छ। जम्मा दुईवटा मात्र कथा लेखेका वासुदेव ठाकुरको पहिलो कथा पनि दोस्रोभन्दा एक-दुईवर्ष अघि मात्र छापिएको होला। किनकि दुई कथामात्र लेखेर सुस्ताएका ठाकुर निश्चय पनि प्रवृत्तिगत रूपमा कथाकार थिएनन्। उनी लहडमा आएर कथा लेख्ने र यस्तो लहड प्रायः एकपल्ट-दुईपल्ट, त्यो पनि कम समयको अन्तरमा आएर सकिन्छ। तसर्थ पं. वासुदेव ठाकुरको 'सप्तव्याधा' पं. सुन्दर झा 'शास्त्री' को १९५५ ई. मा प्रकाशित 'अखनू बखाड़ी नै फुजलै' भन्दा जेठो होला भनेर भन्न सकिन्न।

यसप्रकार नेपालका जेठा मैथिली कथाकारको श्रेय पनि नेपालका जेठा मैथिली पत्रकार सुन्दर झा 'शास्त्री'लाई नै जान्छ। पं. शास्त्रीको उल्लिखित कथा सन् १९५५ को नवम्वर-दिसम्बर अङ्कमा *वैदेही* पत्रिकामा छापिएको थियो। यस कथालाई समालोचकहरूले लोककथा भने तापनि यसमा समकालीन कथामा हुनुपर्ने गुणहरूको अभाव भने पटक्कै छैन। बरु यसलई जन-कथा भन्नु युक्तिसङ्गत हुन्छ होला। नेपालमा मैथिली कथा कतिसम्म सार्थक र सकारात्मक गोरेटोमा हिँडेको छ भन्ने कुरा नेपालको पहिलो मैथिली कथा नै पेटको समस्यासँग गाँसिएको र सर्वहारा-वर्गको पक्षमा आवाज उठाइरहेको छ भन्ने कुराबाट प्रमाणित हुन्छ। स्व. शास्त्री मूलतः कवि हुनुहुन्थ्यो। तथापि उहाँका अन्य तीनवटा कथाहरू पनि प्रकाशित छन्। यसमध्ये 'अपन एक आँखि, पड़ोसियाक दुनू आँखि' उहाँद्वारा नै प्रकाशित-सम्पादित पत्रिका *फूलपात* मा छापिएको छ भने 'गोनू झा आ वसुआ' आठ कक्षाको ऐच्छिक मैथिली-पाठ्यपुस्तकमा समाविष्ट छ। शास्त्रीको अन्तिम कथा भनिएको 'मानिक पड़ल कुवानिक हाथ' वस्तुतः उपन्यास हो, तर *फूलपात* मा प्रकाशित उक्त उपन्यास अंशलाई कथाकै रूपमा स्वीकार गरिएको छ। लोककथाको प्रवाहमा बगेका उहाँका सबैजसो कथाले वर्तमान समयको विकृतिहरूमा पनि कडा चोट प्रहार गरेको पाइन्छ। यी कथाहरू आधुनिक कथा-तत्त्वले परिपूर्ण पनि छन्।

नेपालमा मैथिली कथा सन् १९६० मा डा. धीरेन्द्र आफ्नो जन्मभूमि भारतको लोहनाबाट अध्यापनका लागि नेपाल आउनुभएपछि विशेष गतिशील भएको पाइन्छ। उसो त त्यसभन्दा अघिदेखि नेपालमा मैथिली साहित्यिक गतिविधिमा संलग्न पं. जीवनाथ झा र डा. लक्ष्मण शास्त्रीले पनि क्रमशः 'चौठचन्द्र' र 'मानवताक मूल्य' तथा 'कलुआ' र 'चूडा-दही' कथा छपाउनुभएको थियो। तर, उहाँहरूको सक्रियता काव्यतर्फ नै बढ्ता केन्द्रित रहेकोले नेपालको मैथिली कथालाई उहाँहरूले खासै योगदान दिन सक्नुभएन। यस्तै भारतवाट १९५१ ई. मा नेपाल आउनुभएका पं. मथुरानन्द चौधरी 'माथुर' को पनि त्यसै वर्ष 'शीला' कथा प्रकाशित भएको पाइन्छ, तर उक्त कथा सम्भवतः उहाँ नेपाल आउनुपूर्व नै लेखिएको हुन सक्ने प्रवल सम्भावनाको आधारमा त्यसलाई नेपालको पहिलो

कथाको कोटिमा राख्न सकिन्न । पं. माथुरको एउटा 'समाज' शीर्षक कथा पनि पछि आएर प्रकाशित भएको देखिन्छ । तर उहाँका कथा पूर्ववर्ती अन्य कथाकारहरूका कथा मैथिली साहित्यको मूलधारामा समाविष्ट हुन सकेका छैनन् ।

यता डा. धीरेन्द्रको कथा-लेखनमा पनि विशेष गति उहाँको नेपाल प्रवास अर्थात् १९६० ई. पछि नै आएको पाइन्छ । उसो त उहाँको पहिलो कथा 'कालिमा' सन् १९४९ मै *हितैसी* नामक हस्तलिखित पत्रिकामा छापिइसकेको थियो । यस्तै १९५३ ई. मा *मिथिला मिहिर* मा एक अर्को कथा 'सभ्यलोक' पनि छापिएको थियो । तर, उहाँ नेपाल आउनुभन्दा अगाडिको कथालाई नेपालको मैथिली कथा भन्नु युक्तिसङ्गत नहुने हुँदा कथाकारको रूपमा सुन्दर झा 'शास्त्री' भन्दा जेठा भए पनि डा. धीरेन्द्रलाई नेपालको जेठो मैथिली कथाकार भने भन्न मिल्दैन ।

तर नेपालमा मैथिली कथाको विकासमा सर्वाधिक योगदान डा. धीरेन्द्रको रहेको कुरालाई चाहिँ अस्वीकार गर्न सकिँदैन । यहाँ आएपछि उहाँले मैथिली साहित्यलाई सयवटाजति उत्कृष्ट कथाहरू दिनुभयो । यी कथाहरू उहाँका कथासङ्ग्रह *कुहेस आ किरण पझाइत घूरक आगि* र *शतरूपा आ मनु* मा पनि सङ्ग्रहित छन् । डा धीरेन्द्र नेपाल आउनुअघि नै उहाँले लेख्नुभएका कथाहरूको सँगालो १९९० ई. मा *नव-मन्दिर* शीर्षकमा स्व. भुवनेश्वर पाथेयले प्रकाशित गराउनुभएको थियो ।

वर्तमानमा नेपालको मैथिली कथालाई माथि पुऱ्याउने काममा क्रियाशील तत्कालीन युवाहरूलाई पनि डा. धीरेन्द्रले नै प्रोत्साहन र मार्गदर्शन दिनुभएको थियो भन्ने स्वीकारोक्ति सम्बन्धित कथाकारहरूकै रहेको छ । डा. धीरेन्द्र नेपाल आगमनपछि युवा साहित्यकारहरूलाई उत्प्रेरित गर्दै आफैंसमेत संलग्न भएर मैथिली कथालाई समृद्ध बनाउन थाल्नुभयो ।

देशको राजनीतिक परिवर्तनसँगै नेपालमा लेखिने मैथिली कथाहरूमा परिवर्तन आउने गरेको छ । स्त्री-पुरुष सम्बन्ध अभावग्रस्त जिन्दगी, सामाजिक रूढिवादिताबाट ग्रस्त दिनचर्या तथा मानवीय संवेदनका अन्य विविध पक्षमा केन्द्रित मैथिली कथामा सर्वहारा-वर्गको लागि विशेष सहानुभूति प्रायः सबैजसो कथाकारले देखाएको पाइन्छ । राजनीतिक पृष्ठभूमिमा नेपालमा थोरै मात्र मैथिली कथाहरू लेखिने गरेका छन् । भाषा, शैलीमा प्रायः सबै कथाकारको निजात्मकता छ, तर अधिकांश नेपालका मैथिली कथाकारहरूको चरम लक्ष्य भने शोषणरहित समाजतर्फ नै उन्मुख रहेको पाइन्छ ।

नेपालमा थोरै कथा लेखेर धेरै चर्चा पाउने कथाकार रामभद्र हुन् । उनका पुगनपुग एक दर्जन कथाहरू छापिएका होलान् । यिनैमध्ये 'सीता माने नोर', 'एकटा ब्रह्माण्ड आर' 'वेटीक बाप' आदि उत्कृष्ट कथाहरूका कारण डा. धीरेन्द्रले श्री रामभद्रलाई नेपालका सर्वश्रेष्ठ मैथिली कथाकारको उपाधि दिनुभएको छ, जुन सर्वमान्य पनि भएको छ ।

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' सङ्ख्यात्मक दृष्टिले डा. धीरेन्द्रपछि सबैभन्दा बढ्ता कथा लेख्ने नेपालका मैथिली कथाकार हुन् । *तोरासँगे जयबौ रे कुजबा* नामक उनको कथासङ्ग्रह मैथिली अकादमी, पटनाबाट प्रकाशित पनि छ । 'पाँक', 'बिरड़ो', 'इजोरिया रातुक सपना', 'असक्क', 'माटिक दरद' आदि उनका चर्चित कथाहरू हुन् । नेपालका नागरिकहरूमध्येबाट सर्वप्रथम मैथिली कथासङ्ग्रह प्रकाशित गराउने साहित्यकारको श्रेय पनि रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' लाई नै जान्छ ।

यसबाहेक आफ्नो स्वतन्त्र कथासङ्ग्रह प्रकाशित गराउने अर्का एक मात्र कथाकार

हुन् – डा. रेवतीरमण लाल। *माधव नहि अएला मधुपुरसँ* उनको प्रकाशित कथाकृति हो। 'बहुरा', 'अगराही', 'दरुपीवा', 'उलहन', 'दरारि', 'चतुर्थी' आदि कथाहरूले उनलाई मैथिली साहित्यमा विशेष परिचय दिलाएको छ।

चामत्कारिक कथा-शिल्प, संवेदनशील विषयवस्तु र उत्कृष्ट शब्द तथा वाक्य संयोजनद्वारा पाठकको मुटुसम्मै पुग्ने कथाकार हुन्– डा. राजेन्द्र विमल। 'एकटा धधकैत भविष्य', 'रामेछापक श्रवणकुमार', 'मयूरपंखी गीतक रक्त', 'शून्य आकाश', 'जूता' आदि डा. विमलका केही उल्लेखनीय कथाहरू हुन्। डा. विमलले थोरै कथा लेखे पनि कथा-साहित्यमा ती सबै कोसेढुङ्गा प्रमाणित भएका छन्।

अन्य विधामा विशेष दखल राखेर मैथिली साहित्यलाई राम्रा-राम्रा कथाहरू दिने साहित्यकारको रूपमा स्व. भुवनेश्वर पाथेयलाई लिन सकिन्छ। नयाँ बिम्ब, नयाँ शैलीले उनी मैथिली कविताको फाँटमा निकै सशक्त हस्ताक्षरका रूपमा परिचित थिए, तर 'अङ्कुर', 'जीवनवृत्त', 'खाली क्षितिज', 'अतीतक टुकडा सभ' आदि रचनाहरूले कथा विधामा पनि उनलाई राम्रो प्रतिष्ठा दिलाएको छ।

यस्तै कोटिका अर्का साहित्यकार हुन्– महेन्द्र मलंगिया। भन्ने नै हो भने उनी मात्र नाटककार हुन्। तर कहिलेकाहीं उनी कथा-कविता पनि लेख्ने गर्छन् र अन्य विधामा पनि मलंगियाको नाटककार व्यक्तित्व हावी रहेको स्पष्ट देखिन्छ। तथापि उनका 'धार', 'भूत', 'घाट' आदि कथाहरू राम्रा मानिन्छन्। मलंगियाको 'समुद्र-मन्थन' कथालाई त नेपालको उत्कृष्टतम मैथिली कथा भन्दा पनि अतिशयोक्ति नठहर्ला।

विराटनगरलाई आफ्नो कार्यक्षेत्र बनाएर साहित्य-सिर्जनामा लागेका रामनारायण सुधाकरले पनि मैथिली कथालाई अगाडि बढाउन मनग्गे योगदान पुऱ्याएका छन्। मानवीय संवेदनालाई सूक्ष्मतापूर्वक छोएर चसक्क चहऱ्याइदिने सुधाकरका 'खुट्टीमे टांगल व्रा', 'दीयरि', 'चान अशोथकित अछि', 'संधि', 'थकुचल मासुक बुट्टी' आदि कथाहरू निकै चर्चित छन्।

केही समयअघि कथा-लेखनमा निकै सक्रिय रहेका सुरेन्द्र लाभका 'खोभाड', 'हेराइत परिचय', '???', 'पेन्डुलम' आदि कथाहरूले मैथिली कथा-विधालाई उनीबाट निकै आशा जगाएको थियो, तर हाल उनी निस्क्रिय देखिन थालेका छन्। यस्तै हाल निस्क्रिय भएका अयोध्यानाथ चौधरीको पनि 'एकटा हेराएल सम्बोधन', 'प्रतिशोध', 'राति आ अजन्ताक ओ मूर्ति' आदि कथाहरूले गर्दा मैथिली कथा-संसारमा सम्मानित स्थान छ। केही समयअघिसम्म जीतेन्द्र जीत पनि खूबै उत्साहपूर्वक कथा लेखिरहेका थिए। तर 'कल्पनाशील', 'अपराध', 'प्रश्नचिह्न', 'मेट्रो' आदि विभिन्न भावभूमिका कथाहरू लेख्ने जीतेन्द्रको उत्साह हाल सेलाएजस्तो किन देखिएको हो भन्ने चाल पाउन सकिएको छैन। यसैगरी 'श्रीमतीजी', 'घोघापुल चौक', 'झगडा', 'देशक सुधार' जस्ता हास्यव्यङ्ग्य कथा लेख्ने विनोदचन्द्र झा पनि अहिले सुषुप्तावस्थामा बसेझैं लाग्दछन्।

मैथिली भाषाको विकासमा निमित्त सतत् चिन्तनशील स्व. योगेन्द्र शाह 'नेपाली' आफ्नो अभियानकै अङ्गको रूपमा भए पनि कथा लेख्थे। *घूसखोरी* शीर्षकबाट कथासङ्ग्रह प्रकाशित गर्ने घोषणा पनि उनले गरिसकेका थिए। *नेपालक प्रतिनिधि मैथिली गल्प* नामक कृतिको उनी प्रकाशक पनि थिए। नेपालीको निधनपश्चात् विभिन्न पत्रपत्रिकामा छरिएर रहेका उनका कथाहरूको सङ्ग्रह धीरेन्द्र प्रेमर्षिको सम्पादनमा प्रकाशित हुने तरखरमा छ।

कथा-लेखनमा नेपालवाट दुईजना मैथिलानी मात्र अगाडि आएका देखिन्छन्। ती हुन् मीनाक्षी ठाकुर र मीना कर्ण। तर यी दुई कथाकर्त्रीले पनि हाल लेखनवाट वीट मारिसकेकाले नेपालको मैथिली साहित्यमा महिला कथाकारको शून्यता नै छ भने पनि हुन्छ।

समग्र मैथिली संसारमा चर्चित कथाकारको रूपमा रहेका धूमकेतु र प्रदीप विहारीले पनि नेपालको मैथिली कथा-लेखनलाई केही गति प्रदान गरेका छन्। यी दुवै भारतीय कथाकार केही समय नेपाल बसेर पुनः भारत फर्किसकेका छन्। तर यिनीहरूले थुप्रै कथा नेपालमै लेखेका थिए र अहिले पनि यिनका धेरैजसो कथाहरू नेपाली पृष्ठभूमिमै आधारित हुन्छन्। यी दुवै कथाकारका *'अगुरबान एवं अन्य कथा* (धूमकेतु) र *औतीह कमला जयतहि कमला* र *खण्ड-खण्ड जिनगी* (प्रदीप विहारी) कथा एवं लघुकथाकृति प्रकाशित छन्। यसै श्रेणीका कथाकार डा. प्रफुल्लकुमार मौन पनि हुन्।

नेपालीका प्रतिष्ठित कथाकार मनु ब्राजाकीले पनि केही मैथिली कथा लेखेका छन् र ती चर्चित पनि भएका छन्। वर्तमानमा रमेश रञ्जनले युवा कथाकारहरूमध्ये वढी सक्रियता देखाइरहेका छन्। प्रो. राजेन्द्र किशोर, रामचन्द्र झा, श्यामसुन्दर शशि, ललन, नवीनचन्द्र कर्ण, सुजीतकुमार झाले पनि कथा-लघुकथा लेखेर यस विधालाई धेरथोर योगदान दिएका छन्। मैथिली कथा-लेखनमा यो लेखक पनि संलग्न रहँदै आएको छ। जन्मिँदै शोषित-पीडित वर्गको पक्षमा उभिएको मैथिली कथा-संसारको मूलधर्म अहिले पनि जन-कथाकै रहिआएको छ। वरिष्ठ कथाकारहरू डा. धीरेन्द्र, राजेन्द्र विमल, भ्रमरदेखि रामचन्द्र झा, रमेश रञ्जन, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, श्यामसुन्दर शशि आदि युवा पुस्ताका कथाकारहरूको मूल लेखन-प्रवृत्तिसमेत यसै दिशामा बगेको पाइन्छ।

केही यस्ता पनि कथाकारहरू छन्,जसका हालसम्म एउटादेखि तीनवटासम्म कथाहरू छापिएका छन्। बदरीनारायण वर्मा, उपाध्याय भूषण, लोकेश्वर व्यथित, डा. गङ्गाप्रसाद अकेला, ब्रजकिशोर ठाकुर, अरूणकुमार झा, नित्यानन्द मण्डल, अश्रु सिन्धुलीय, कुबेर घिमिरे, डा. चन्देश्वर साह, परमेश्वर कापड़ि, प्रदीपकुमार कोइराला, हिमांशु चौधरी आदिको कथा-प्रकाशन स्थितिले यही तथ्य दर्शाउँछ। यसबाहेकका पनि कतिपय कथाकारहरू सक्रिय छन्

नेपालबाट मैथिलीका राम्राराम्रा कथाहरूको रचना भए पनि पत्रपत्रिकाको अभाव र सङ्ग्रह प्रकाशनमा शिथिलताले गर्दा ती कथाहरू प्रकाशित हुन सकेका छैनन्। हालसम्म प्रकाशित दुई कथा सङ्कलन– डा. धीरेन्द्रको सम्पादनमा *नेपालक प्रतिनिधि मैथिली गल्प* र सुरेन्द्र लाभको सम्पादनमा *नेपालीय मैथिलीक उत्कृष्ट गल्प* ले नेपालको मैथिली कथाको प्रतिनिधित्व गर्न तथा उत्कृष्टता अँगाल्न सकेको छैन। *गंगासँ हिमालयधरि* शीर्षकको एक कथा-सङ्कलन पनि धीरेन्द्र प्रेमर्षिको सम्पादनमा प्रकाशित हुने तयारीमा छ। वर्तमान प्रकाशनको अवस्था सुधेको खण्डमा नेपालबाट लेखिने मैथिली कथाहरू पनि विश्वको कुनै समृद्ध साहित्यभन्दा तल हुने छैनन् भन्ने मेरो विश्वास छ।

अनुवादकः *धीरेन्द्र प्रेमर्षि*

चान असोथकित अछि

रा.ना. सुधाकर

बहिनदाइ आयल छलखिन त माया सिलौट पर किछु रगड़ि रहल छलीह ...

– "कथीक चटनी अछि ज्ञान-सुन्नरि ?"

– "कनैलक" ... माया मुड़ी उठोलनि, बहिनदाइ धड़ाक द' गट्टा पकड़ि लेलखिन, एक-दूटा चुड़ियो फुटि गेलनि ।

–"एहनो ज्ञान कोइ करैए ? ... कहू त ..." बहिनदाइ डोलक पानि सिलौट पर भुभुआ देलखिन चेहराक तमतमाहटिसँ मायाक अन्तर खौल रहल छलनि "बहिनदाइ यैह कहथु ने ... कोन सुख भेटल अइ पुरुषसँ ? साँझक-साँझ उपास रहलहुँ ... पेट जरल ... मोन जरल ... कयिले' ? ... सल नै छलैक त नै करैत बियाह, कि हमर बियाह नै होइत ? दुनियाँ मे एकटा येह पुरुख अछि कि आर ककरो घरवला छैक ? बियाह बेर मे जुआरि उठल रहैक धुआ मे ... दुनू भाय-बहिन के थतमारि क' रखनाहरि एकटा हमहीं भेटलियैन ... बहिनदाइ सब झूठ ... एतेकटा समाज छलैक ... कहुना पोसा जेतै ... हमरा त बेकारे फाँस मे देलक ... स्वार्थी लोक ... अपना सख लें ई हमर सब किछु ... बहिनदाइ हमर जुआनी ... जिनगी ... लोक-परलोक ... सब किछु भूजि देलक " । अड़बड़ ... मुँह मे जे अबैत गेल माया उगलैत गेली, बहिनदाइके कनी केहनदन लगलैन । हुनका जँ बुझल रहितैन जे मायाकें' कत सँ कोन पेंच ढील भ' गेल छैन त जरुरे ओ कथू ल'क' कसि दितथिन ... कसि दितथिन ओइ पेंच के जे फेर माया एहन बात अपना पुरुषके नहिं कहि सकितथि ।

–"चुप रहू" बहिनदाइ मायाक मुँह जाँति देलखिन– "एहनो बात कोइ बाजे... बताहि छी ? ... धिया-पुता आब सज्ञान भेल ... की करबै ? ... अहिना होइ छै कि ..."

शुशील बाबूक पहिल स्त्री मुइल भेलखिन त‌ऽ हुनक वयस छलैन करीब चालीस साल । पहिल स्त्री सँ दूटा सन्तान छलैन आ ओइ दुनूकें शुशील बाबू नहिं सम्हारि

पवितथि तैं ओ माया सँ दोसर बियाह केने छलाह। आ माया ... सब किछु सहियो क' दुनू भाय-बहिन आ घरके हेहरु नहिं होम' देलखिन। मुदा दुनू प्राणी मे पटरी कहियो नहिं बैसलनि। माया कहथिन 'इ' ... शुशील बाबू बुझैथ 'ओ' ... शुशील बाबू अइपार ... माया ओइ पार ... शुशील बाबूक पैर धरती पर ... मायाक मनोरथ आकाश लागल एकटा बिसपिपरी छल जे बेरा-बेरी दुनू के कटैत छल ... ओइ बिसपिपरीक विक्ख दुनूक शोणित मे समान रूपसँ बाहि रहल छल।

शुशील बाबूक नोंचब ... भोमरब ... स्पर्श आ बाद मे उपस्थित ... मायाके मोन मे भुम्हुर लहकि जाइत छल। वासनाक खेल ... क्षणिक खेल होइतहुँ ... जीवनक मुख्य खेल होइत छैक से शुशील बाबू बिसरि गेलाह ... कि सोचबे नहिं केलखिन ? एम्हर जँ-जँ उमेर ढरैत गेल ... शुशील बाबूकें हाफी के संख्या बढ़ैत रहल। माया लेखे ओ ओइ साँढ़ जँका छलाह जकर डाँड़ टुटि गेला पर देह-काठी मजबूत रहलो सन्ता बेकार होइत अछि ... निरर्थक ... नेराओल। माया जँ कखनो केबाड ओंगठ कु' बाँहि उपर उठलैत ... अँगैठीमोर लैत। मन्द-मन्द मुस्काइत शुशील बाबूकें पाँच मे लैत छलीह त ओ अँगैठीमोर ... ओ ब्लाउजक सीयन टूटब ... मृगनयनीक आकुलता हुनका ओइ नगिनियाँ जँका बुझाइ छलैन जे पीसनाहरेकँ बेर-बेर काट' दौड़ैत अछि ... आ शुशील बाबू तिलमिला क' रहि जाइत छलाह ... बौक ... बाहिर छुच्छ। आ तखन माया लुची जँका उडि क' कराक भ' जाइत छलीह – "हाथी जानक डाला आ दुर्बाच्छत लड जरुरी बुझाइ गेलनि बाबू सबकें ... मुदा वयस नहिँ ... छिया ..."

एम्हर साल भरि सँ शुशील बाबू गाम सँ जाय लागथि त, माया एके चीजक फरमाइस करथिन– एकटा सुतनाहरक सुतनाहर अइ द्वारे जे गाम मे चोरहोक हल्ला बरमहल रहिते छैक आ एसगर माउगि ... रहब ठीक नहिं ... शुशील बाबू गदगद् भ' गेलाह। इ कोन पैघ बात आओ गामेक एकटा अधबैसूकें सूतैले' ठीक क) देलखिन: मुदा कोनो ने कोनो बहन्ने सुतनाहर बदलैत रहलह मायाकें मोनक भुम्हुर ओहिना लहकैत रहल ... आ ओ व्याकुल होइत रहलीह। आ अब त माया अपने मन-माफिक एकटा सुतनाहर राखि नेने छलीह।

जइ दिन मनटुनमा के रखने रहथि ... ओही दिन सँ मायाक मुँहपर रहि-रहि क' सिनुरिया रंग छिटकैत रहलैन आ मनटुनमा कोइ आन त छल निहं; अपने दियाद रहैत। की भेलैक जे ओकरा घर मे ओकरा छोड़ि आर कोइ नहिं छलैक। ओ अपना घरमे सूतल कि मन्दिरमे आ कि ककरो करेज पर मनटुनमा लेखे एक दूनू साँझ भोजन ... शुशील बाबू बला फटल-परान ... खा क' एकटा बिड़ी ... एक टूक सुपारी ... आ अइसँ बेसी आब की करथिन माया ?

मुदा जइ दिन मनटुनमाकें राति क' अबै मे देरी होइत छलैक त माया के बिरौनी लगि जइत छलैन। ओ खन बेटा के पठबै छलखिन ... खन बेटी हाथे समाद ... आ मोन भेल त अपनो जा क' देख अबैत छलखिन आ जखन ओकरा घरमे लागल बाँसक फटक हुनकर मुँह ढुसि दैत छल त लोहछि क' माया आँगन घुमि अबैत छलीह आ कोनो धिया-पुताके धुनि-धानि क' मोनक कछमछी नुका लैत छलीह। मुदा कछमछी हेराइत नहिं छल जाधरि ओ मनटुनमा ठोरक गैंचल-गैंचल मुस्की नहिं देख लैत छलीह। मुस्कानक ओ उपलब्धि मायाकें मने दोसर ठाम नहि भेटैत छलैन। शुशील बाबू त' कहियो ... कथमपि नहिं द सकलखिन ओ आ ओहन मुसकान। बरु मनटुनमा के देखिते शुशील बाबूकें काया

मे भीतर-भीतर फुनगुनी लेस दैत छैन। ओ मायासँ कहबो केलखित जे 'मनटुनमा नीक आचार-विचार के नहिं अछि। मुदा 'असैक राखल त, टिकबे नहिं करैत अछि' मायाक जबान सुनि क' शुशील बाबू चुप्पी लाधि लेलनि। आओ स्पष्ट देखैत रहलाह जे मायाक आवेश मनटुनमा पर दिन-प्रति बढ़ैत गेल। आग्रह क' क खुआनाइ ... बलजोरी परसन देवाक खयलाक बाद एक टूक सुपारी देबे करब ... ओइ दि अपना पाँजरमे एकटा आर पिढ़ी लागल देखि क' हुनका आश्चर्य भेलैन ... "के बैसत ... ।"

–"नीचा मे छौड़ा मूतने छलैक ... मनटुना खेतै ... मायाक जवाब" शुशील बाबूकें ठंढा क' देलक मनटुनमासँ 'मनटूना' ... अयँ ... थारी मे सेहो दू रंगक साँठ ... बाप रे! शुशील बाबूक छाती दरकि गेल ओ पानि पीक' कर घोटलनि आ घर जाइत-जाइत ओ कहैत गेलखिन – "मनटुनमा काल्हिसँ दोसर सुतनाहर एतै ... अपन हिसाव भोरमे ल जैहें ...।" भरि राति माया उकछ-पुकछ करैत बिता देलैन ...शुशील बाबू किछु नहिं पुछलखिन। आ कि पुछथिन ? उमेर एतेक दगाबाज होइत अछि-से ओ बुझि गेलाह। आ मायाकें बिसबिसौनी पछाड़ि देलकैन त, ओ भोरे उठि क' कनैलक चटनी रगड़ि रहल छलीह। आँखिसँ दहो-बहो नोर झहरि रहल छलनि आ तखने बहिनदाइ आवि क' गट्टा ध नेने छलखिन।

–"नहिं बहिनदाइ ... एकरा हमराले' किएक चिन्ता होइत छैक ? हमरालें नहिं करोअ चिन्ता ... अपन जनमलहा सबकें आब अपना टांग मे बान्हो ... हमरो जे फुरत से करब ?"

–"केहन बेबुझ छी ज्ञान सुन्नरि ! अयँ पुरुख सुनत त की कहत, कहु त ...।"

–"कोन सुपत मे कहत ? ... ककरो तिल धारने छियैक ...।"

–"अच्छा अहाँ चुप रहू ... आब' दिऔन हुनका .... हम बुझा देबैन ... कहाँ गेल छथि।"

–"घरेमे छैन ! नीक जँका बुझा देथुन ... नै त अखन इ रोकि देलनि किने"

घरमें ... बीच घरमे दुनू हाथ माथ पर रखने शुशील बाबू चुक्की-माली बैसल छलाह। आँखि ढब-ढबा उठैत छलैन ... ठोर बिझुकि जाइत छलैन। माया एकटा कुशल गृहणी जँका हुनकर बच्चा आ घर 'डेब' देने छलखिन जरुर मुदा ... मुदा पासा एना पलटि जैत से कल्पना शुशील बाबू के कहियो ने छलैन।

दोसर दिन बहिनदाइ देखलखिन जे मनटुनमाक पैर मे शुशील बाबू बला चप्पल झलकि रहल छलै।

चन्द्रमा थङ्थिलिइएको छ

ठूल्दिदी आउँदा माया सिलौटोमा केही पिनिरहेकी थिइन् ...

– "के को अचार साँधेकी ए ज्ञान सुन्नरि[1] ?

– "कनेर[2] को ।" ... मायाले मुन्टो उठाइन्, ठूल्दिदीले च्याप्प हात समाई हालिन्, एक दुईवटा चुरा पनि फुटे ।

– "यस्तो बुद्धि पनि कसैले गर्छ ... भन त ... "

ठूल्दिदीले बाल्टीको पानी सिलौटोमा खन्याइदिइन् । अनुहारको आवेशले मायाको अन्तर उम्लिरहेको थियो – "ठूल्दिदी तपाईं भन्नुस् त ... कुन सुख पाउँ यस लोग्नेसँग , छाकका छाक भोकै बसें ... पेट भोको रह्यो ... मन भोको रह्यो ... किन ? ... हुति थिएन भने बिहा नगरे हुन्थ्यो, मेरो बिहे हुँदैनथ्यो कि क्या हो ? संसारमा यो मात्रै लोग्ने छ कि अरू पनि कसैको लोग्ने छ ? बिहाको बेला कुकुरे लागेको बैंसमा ... दुई भाइ-बहिनी स्याहार्ने एउटी मैं भेट्टिएँ ... ठूल्दिदी सबै भूठो ... त्यत्रो समाज थियो ... जसरी पनि पालिन्थे – मलाई त बेफ्वाँकमा पासोमा पारे ... स्वार्थीहरू ... आफ्नो सोखको लागि मेरो सबथोक ... ठूल्दिदी मेरो बैंस ... जिन्दगी ... लोक-परलोक ... सबै लुटे ।"– यस्तो-उस्तो ... दुनियाँ जहान जे मुखमा आयो माया फलाकिरहिन् । ठूल्दिदीलाई अलि कस्तो-कस्तो लाग्यो । मायाको कुन पेंच खुकुलो छ भन्ने कुरा उनले थाहा पाएकी भए जे गरेर भए पनि ठीक पार्दिने थिइन् ... दुरुस्त पार्दिने थिइन् त्यस पेंचलाई जसले गर्दा फेरि माया आफ्नो लोग्नेसँग यस्तो व्यवहार गर्न नसकुन् ।

– "चुप लाग ।" – ठूल्दिदीले मायाको मुख थुनिन् – "यस्तो कुरो पनि कसैले बोल्छ ... बौलाही भइछौ कि क्या हो , ... छोरा-छोरी अब बुझ्ने भए ... के गर्छौ र ... यस्तै हुन्छ ... ।"

सुशीलबाबूकी पहिली स्वास्नी खस्दा उनको उमेर करिब चालीस वर्षको थियो । पहिली स्वास्नीबाट दुइटा सन्तान थिए र ती दुवैलाई स्याहार्न सकेनन्, त्यसकारण उनले

---

[1] मैथिल सम्भ्रान्त परिवारमा वधुहरुलाई विभिन्न उपनामबाट बोलाइन्छ । जस्तै – ज्ञान सुन्नरि, फूलकुवँरि आदि ।

[2] एक प्रकारको फूल, जसको फल विषालु हुन्छ ।

मायासित अर्को बिहे गरेका थिए । र मायाले अनेक विधि सहेर पनि दुई भाइ-बहिनी र घरलाई बिचल्लीमा पर्न दिइनन् । तर दुई लोग्ने-स्वास्नीमा कहिल्यै मेल हुन सकेन। माया भन्थिन 'यो' ... सुशीलबाबू बुझ्थे 'त्यो' । सुशीलबाबू वारी ... माया पारी .... सुशीलबाबूको पाइला भुइँमा ... मायाको इच्छा आकाशमा । एउटा विषालु किटाणु थियो जसले आलो-पालो गरी दुवैलाई टोक्दथ्यो ... त्यस किटाणुको विष दुवैको रगत समान रूपमा बगिरहेको थियो ।

सुशीलबाबूको लुछ्नु ... चिथोर्नु ... स्पर्श र त्यसपछि उपस्थित ... मायाको मनमा भुङ्ग्रो दन्किन्थ्यो । वासनाको खेल ... क्षणिक खेल भएर पनि ... जीवनको मुख्य खेल हुन्छ भन्ने कुरा सुशीलबाबूले बिर्से ... वा सोचेनन् कि ? यता उमेर ढल्दै जाँदाको क्रमसँगै ... सुशीलबाबूको स्वाँ-स्वाँको सङ्ख्या बढ्दै गयो । मायाको लागि उनी त्यस्तो ढाड भाँच्चिएको साँढेझैं थिए जो जिउ डालले मोटो-घाटो भएपनि बेकार हुन्छ ... निरर्थक ... छाड़िएको । माया जुनबेला ढोका घचेटी बाहुला माथि उचाल्दै मादक रूपमा जीउ तन्काउँदै ... मन्द-मन्द मुस्काउँदै सुशील बाबूलाई अँगालो मार्थिन, त्यो आङ तन्काई ... बुलोजको त्यो सिलाई चुँडिनु ... मृगनयनीको आकुलता उनलाई त्यस नागिन (पोथी नाग) झैं लाग्दथ्यो जसले आफ्नै संरक्षकलाई पटकपटक डस्न खोज्दछ । ... र छटपटिएर हेरिरहन्थे सुशीलबाबू ... लाटो ... बहिरो ... रित्तो । र अनि माया फिलिंगो झैं उडेर अलगिन्थिन् –"हात्ती ज्यानको डालो र दूर्वाक्षत[1] खुबै जरुरी बुझिन्थ्यो ज्वानहरूलाई ... तर बैंस होइन ... छ्या ... "

यता एकवर्षदेखि सुशीलबाबू बाहिर जानलाग्दा मायाले एउटै मात्र फरमायस गरिन् – एउटा सुत्ने । सुत्ने यसकारण कि गाउँमा चोरको बिगबिगी सधैं रही नै रहन्छ र एउटी आइमाई ... बस्नु ठीक हुँदैन ... सुशीलबाबू गद्गद् भइहाले । यो कुन ठूलो कुरा थियो र उनले गाउँकै एकजना अधवैंसेलाई सुत्न ठीक पारिदिए । तर कुनै न कुनै निहुँमा सुत्ने फेरिइरह्यो । मायाको मनको भुङ्ग्रो सल्किई रह्यो ... र उनी व्याकुल भइरहिन् । र अब त मायाले आफ्नै माफिकको एउटा सुत्ने राखेकी थिइन् ।

जुन दिन मनटुनमालाई राखिन् – त्यस दिनदेखि मायाको अनुहारमा क्षणक्षण लाली थपिँदै गयो । र मनटुनमा कुनै परचक्री त थिएन, आफ्नै खलकको साइनोपर्ने रै'छ । के भयो र उसको परिवारमा ऊबाहेक अरू कोही थिएन । ऊ आफ्नो घरमा सुतोस् कि पाटीमा वा कसैको छातीमा, मनटुनमाको लागि बराबरै । दुवै छाक खाना ... सुशीलबाबूको जडाउरी ... खाइसकेपछि एउटा सिंगो बीडी ... एक टुक्रा सुपारी ... अब यो भन्दा बढी अरू के गर्न सक्थिन् मायाले ?

तर जुन दिन मनटुनमालाई बेलुकी आउन अबेला हुन्थ्यो मायालाई अत्यास लागिहाल्थ्यो । उनी कहिले छोरालाई पठाउँथिन् ... कहिले छोरीमार्फत खबर र मन लाग्यो भने आफू पनि खोजी आउँथिन र जतिबेला उसको घरमा लागेको बन्द भाटाको ढोका हेरी दिक्क मानी फर्किन्थिन्, छोरा-छोरीलाई ठटाएर आफ्नो मनको औडाहा लुकाउँथिन् । तर औडाहा मेटिँदैनथ्यो जबसम्म उनी मनटुनमाको ओठको मुसुमुसु मुस्कान हेर्दिनथिइन् । मुस्कानको त्यो उपलब्धि मायालाई अरू कतै भेटिँदैनथ्यो । सुशीलबाबूले त कहिल्यै ... कथ... दिन सकेनन्, त्यो र त्यस्तो मुस्कान बरु

[1] विवाहमा प्रयोग हुने हात्ती कोरिएको डालो तथा दूर्वाक्षत (दूबो र अछेता)

मनटुनमालाई हेर्नेबित्तिकै सुशीलबावूको हृदयमा भित्रभित्रै ज्वाला दन्किन थाल्दथ्यो। उनले मायालाई भनेका पनि थिए, 'मनटुनमा राम्रो चालचलनको मान्छे होइन' तर 'तपाईंले राखेको त बस्दै-बस्दैन' – मायाको जवाफ सुनेर सुशीलबावू चुप्प भए। र उनी प्रस्ट हेरिरहे, मायाको मायाँ मनटुनमाप्रति दिनैपिच्छे थपिँदैगयो। आग्रह गरी-गरी खुवाउनु जबर्जस्ती खाना थप्नु ... खाइसकेपछि एकटुक्र सुपारी दिनु ... त्यसदिन आफ्नो छेउमा एउटा अर्को पिर्का राखेको देखेर उनलाई आश्चर्य लाग्यो ... "को वस्छ ... ।

– "भुइँमा केटा-केटीले मुत्या' थिए .., मनटुनमाले खान्छ।" मायाको जवाफले सुशीलबावूलाई निरुत्तर गरायो। मनटुनमाबाट 'मनटुना' ... हँ! ... थालमा पनि दुई किसिमका परिकार ... हे दैव! सुशीलबावूको मुटु छिया-छिया भयो। उनले पानी खाएर गाँस निले र कोठातिर जाँदा-जाँदै भने – "मनटुनमा भोलिदेखि अर्को सुत्ने आउँछ ... भोलि विहान आफ्नो हिसाब लिएर जानू ... ।

रातभरि मायाले कोल्टो फेर्दै बिताइन् ... सुशीलबाबूले केही सोधेनन्। सोध्नु पनि के? वैंस कति कपटी हुन्छ भन्ने कुरा बुझे उनले। उता माया रातभरिको छटपटीले गर्दा विहानै उठी कनेरको अचार पिनिरहेकी थिइन् ... आँखाबाट बलिन्द्र धारा आँसु झरिरहेको थियो र त्यतिखेरै ठूल्दिदी आई हात समाएकी थिइन्।

–"नाइँ ठूल्दिदी, ... यसले मेरो लागि किन फिक्री गर्छ? मेरो लागि चिन्ता लिनुपर्दैन ... आफूले जन्माएकोहरूलाई राखोस् आफूसँग ... मलाई पनि जे मन लाग्छ त्यै गर्छु।"

– "कस्तो मूर्ख छौ ज्ञानसुन्नरि। लोग्नेले सुन्यो भने के भन्ला? भन त ... "

– "किन भन्ला? ... कसको कर्कलाबारी फाँडेकी छु?

– "भैगो! अब चुप लाग ... आउन देऊ उनलाई ... म सम्झाइदिन्छु ... कहाँ जानुभएको छ।"

– "घरमै छ। राम्ररी सम्झाइदिनुहोला– हैन भने अहिले तपाईंले रोक्नु भयो ..."

घरभित्र ... कोठाको माझमा दुवै हात टाउकोमा राखी सुशीलबाबू टुक्रुक्क वसेका थिए। आँखा आँसुले टल्बलाई हाल्थ्यो। ... ओठ थर्रर काम्थे। मायाले एउटी कुशल गृहणीझैं उनका सन्तानहरू र घरलाई सम्हालेकी थिइन् अवश्य तर ... तर दाउ यसरी पल्टिन्छ भन्ने कल्पना सुशीलबाबूले कहिल्यै गरेका थिएनन्।

भोलिपल्ट ठूल्दिदीले देखिन् मनटुनमाको गोडामा सुशीलबाबूको चप्पल टल्किरहेको छ।

अनुवादक : रोशन जनकपुरी

पाषाण-पुष्प

सुरेन्द्र लाभ

'टीटही जकाँ सौंसे औफिसकेँ करवनधारि टेकने रहबै ?' – टेलिफोन उठबिते पत्नीक स्वर सुनाई देलकन्हि ।

'बस निकललहुँ' - टेलिफोन रखैत ओ डेरा दिश डेग बढ़ौलन्हि ।

हुनका नोकरीकेँ आब तीस वर्ष होमए जा' रहल छन्हि आ' आयु पचपन वर्ष। रिटायर होबऽ मे मात्र पाँच वर्ष बाँकी छन्हि । अपन सम्पूर्ण नोकरी अवधिमे पहिलबेर पत्नी एकमाससँ साथ छथिन्ह । ओना विवाह त तहिए भेलन्हि जहिया ओ आइ.ए. मे पढैत छलाह । विवाहक बाद दू वर्ष धरि चुप रहलाह । मुदा जहिया बी. ए. मे पढ़ए बनारस गेलाह त' एक दिन गाममे आबि सत्याग्रह क' देलन्हि – 'हमरा बनारसमे भोजन भातमे बहुत दिक्कत होइत अछि । हम आब नई पढ़ब ।'

माय युव-पुत्रक आशयकेँ बुझि कनियाँकेँ साथ लगादेलखिन्ह । बनारसमे पढएबला विद्यार्थी सबमेसँ कनियाँकेँ संग राखिक' पढनिहार मात्र इएह वीर पुरुष छलाह । तैँ जे संगी साथीकेँ पता लगन्हि खूब चुटकी लन्हि । मुदा युवावस्थाक मदहोशीमे हिनकापर संगी साथीक व्यंगवाणक कोनहु असरे नहि पडैत छलैन्ह । करीब डेढ वर्षक बाद पत्नीकेँ गामपर राखि आयब हुनकर बाध्यता भ' गेलन्हि । कारण पत्नी गर्भवती छलखिन्ह । मुदा ओहि बेर जे पत्नीकेँ गाम राखि अएलन्हि तत्पश्चात् फेर जीनगी मे पत्नीकेँ साथ रखबाक संयोगे नहि भेटलन्हि ।

पहिल संतानक जन्मक बाद एक दिन पत्नीकेँ चिट्ठी लिखलखिन्ह – 'बेटी आब वर्ष दिनक भ' गेल, एहि बेर दशमी छुट्टीमे लेबए आबि रहल छी ।'

पत्नी दू टूक जवाब पठौलखिन्ह – 'बौआ बरोबरि विमार रहैत अछि। डाक्टर कहैत छैक पाँचवर्ष धरि एहिना होइत रहतैक । तैँ पाँच वर्ष धरि हम नहि आयब ।' ओ झमाकऽ खसलाह । मुदा सोचलन्हि एहि डाक्टर आ' दबाई विहीन पहाडी स्थानमे अनबो कोना करियौ ।

पाँच वर्ष धरि पत्नीपरसँ ध्यान हटा कार्यालयक काजपर केन्द्रित कयलन्हि । पाँच वर्पक बाद एक दिन चिट्ठी लिखलखिन्ह – 'आब बौआ स्वस्थ रहैत हएत । फगुआमे लेबऽ आयब ।'

चोट्टहि पत्नीक जबाब भेटलन्हि – "बाबूजीक हालति बहुत खराब छन्हि जल्दी आउ।"

दौडले गाम गेलाह। बाबूजीक अन्तिम साँस चलि रहल छलन्हि। बेटाकेँ देखिते बुलबुल जकाँ प्राण फुर्रसँ उड़ि गेलन्हि। कृयाकर्म समाप्त भेलाक बाद एक दिन एकान्तमे पत्नीसँ पुछलाखिन्ह – 'कि आब तऽ चलब ने ?'

–'केहन बच्चा जकाँ बात करैत छी ? अखने बाबूजी दुनियाँसँ गेलाहा आ' हम बुढ़ साउसकेँ छोड़ि अहाँसंगे चलि जाउ। लोक की कहत ?' पत्नीक जबाब पर ओ भौचक्क रहि गेलाह। कहिने पत्नी कहिया आ' कोना सेयान भऽ गेलखिन्ह – हुनका पते नहि चललन्हि। ओ चुपचाप गामसँ विदा भऽ गेलाह।

एहि ,बिच प्रत्येक छुट्टीमे ओ गाम जाइत रहलाह आ' प्रत्येक बेर मोन मे एकटा क्षीण आशा रहन्हि जे एहि बेर पत्नीकेँ अनबाक कोनो जोगार लागि जायत। मुदा गाम पर पत्नीक ओझराहटि, उत्तरदायित्व आ' काजक बोझ देखि सब बेरि खाली हाथ घुरथि रहलाह। पत्नीकेँ किछु कहबाक साहसो नहि भेलन्हि।

फेर एकदिन चिट्ठी लिखबाक साहस कयलन्हि – 'बाट तकैत-तकैत आँखि पथरा गेल ... की नहि आएब ?'

ओम्हरसँ जबाफ अएलन्हि– 'अहाँ दोसर सन्तानक बाप बनएबला छी।'

एहि पत्रपर अपन प्रतिकृया ओ ठीकसँ नहि व्यक्त कऽ पाबि रहल छलाह जे खुशी होउथ अथवा दुखी। किछु मासक बाद पुत्र प्राप्तिक खबरि सेहो भेटलन्हि। तथापि सन्तान होयबाक सूचना पर जे किंकर्तव्यविमूढ़ भेलाह आइयो ओ ओहि परिधिसँ बाहर नहि आबि सकलाह। फेर मोन मारि अपन कर्तव्य पथपर दृढ भ' आगू बढ़लाह – बढ़ैत रहलाह। हाड़ गलैत रहलन्हि।

गाम बिसराए लगलन्हि। फाइल मोन रहए लगलन्हि। गामपर यन्त्रवत प्रत्येक मास पाइ पठबैत रहलाह। केश कारीसँ उज्जर भ' गेलन्हि। पत्नीक चिट्ठी एक दिन भेटलन्हि – 'सेयान बेटीक बाप भ' क' एना निश्चिन्त कहियाधरि रहबैक ?' बेटीक विवाह सम्पन्न कएलन्हि। बेटीकेँ

दू मासक छुट्टी लए गाम गेलाह। विदावारी कयलाक बाद सुखायल ठाढ़िमे उगि आयल नव कोपर जकाँ हिनको मोन मे पुनः क्षीण आशा पल्लवित भ' गेलन्हि। पुछलखिन्ह – 'की आबो एहि जंजालसँ फुर्सति नहि भेल ?'

'बेटा एहिबेर मैट्रीक मे अछि। की ओकर भविष्य चौपट क' दियौ ?' कर्तव्यपरायण पत्नीक प्रतिप्रश्न पर ओ मौन साधि लेलन्हि।' चुपचाप गामसँ बिदा भ' गेलाह। पल्लवित होइत नविन कोपर पुनः एकबेर मुरझा गेलैक।

वर्षमे पहिने कमसँ कम दू बेर गाम जाइत छलाह। आब मात्र एकबेर दशमी छुट्टीमे गाम जाय लगलाह। एहि बिच माय सेहो स्वर्गिय भ' गेलखिन्ह। बेटा सेहो नीक नम्बरसँ आइ. एस्सी. पास क' क' प्लानसँ इन्जिनियरिङ पढए मद्रास चलि गेलन्हि। मुदा हिनकर मोन तेना ने मरि गेल रहन्हि जे आब धोखोसँ ने एक्कहु बेर लिखान्हि – 'आब चलि आउ'। कार्यालय हिनका घरोसँ बेसी प्रिय भऽ गेल छलन्हि। दिन-राति अपन काज आ' कार्यालय बाहेक हिनका किछु सुझिते ने छलन्हि।

पत्नी ओम्हर गामपर प्रतीक्षा मे बैसल छलखिन्ह जे आब चिट्ठी आओत तब चिट्ठी आओत। मुदा एम्हर ई पाथर बनल अपन काजमे डूबल रहलाह। हारिकऽ पत्नी एक

मास पूर्व बिना पूर्व सूचनाकें आबि धमकि गेलखिन्ह। हिनका लेल ने हर्ष ने विपाद्। सुखायल नदीक किन्हेर जकाँ पत्नीकें टुकुर-टुकुर देखैत रहि गेलाह। कर्तव्यपरायणता समयसँ पूर्व कोना मनुक्ख कें वृद्ध बनादैत छैक – से सोचैत रहलाह। कत' बनारसक ओ नवयौवना हँसैत-खीलखीलाइत-आ' कत' ई समयक मारलि मुस्कान वीहिन सुखायल-टटायल चेहरा।

'कि हमर आयब पसिन्न नहि पडल ?' पत्नीए मौन व्रत तोड़लखिन्ह।

'नहि, से बात नहि। आउ। ओम्हर भन्सा घर अछि।' ओ आंगूरसँ भीतर संकेत करैत कहलखिन्ह।

पत्नी मोनेमोन खौंझा गेलखिन्ह – 'जीनगीभरि हाथे त 'झरकएलहुँ- अहूठाम आबिक' सएह।' मुदा बिनु किछु बजने भानस घर जाय कमान सम्हारि लेलखिन्ह।

आई एक माससँ पत्नी साथ छथिन्ह। मुदा जकर प्रतीक्षामे आँखिक पोर खीया गेलन्हि ओकर साहचर्य भेटलोसन्ताँ ओ भावना, ओ प्रेम कहिने किएक बहार नहि भ'रहल छलन्हि, जकरा तहिया-तहियाक मोनक बाकसमे वर्षोसँ रखने छलाह। किछु औपचारिक शब्दक प्रयोगक अतिरिक्त दुनू पक्ष बिच कोनहु खास गप्प किछु ने होइत छलन्हि। कार्यालयसँ एक मोटा फाइल आनब हिनकर पुरान आदति छलन्हि – से अखनो छन्हिए। राति दश-एगारह बजे धरि फाइलमे मूडी गडओने रहताह, भोरे कखनो एहि हाकिम ओतए त' कखनो ओहि हाकिम ओतए आ' दिन भरि औफिसे। काल्हि राति पत्नी अकस्मात् हाथसँ फाइल छीनि लेलकन्हि – 'एक माससँ देखि रहल छी खाली फाइले सुझैत अछि कि आर किछु ?'

- 'की ?'
- एना गुमसुम कीयाक रहैत छी ?
- आदति भ' गेल अछि।
- हमर दोप ?
- अहाँ अपन कर्तव्य कएलहुँ। हमरो अपन कर्तव्य करए दीय। लाउ फाइल।
- फाइल दैत छी। मुदा शर्त इ जे काल्हि एकहुटा फाइल डेरा नहि आनब आ' औफिससँ सवेरे आबि घूमए चलब।
- शर्त मंजूर अछि।

ओएह शर्त अनुसार आई ओ औफिससँ सवेरे डेरा आबि रहल छलाह।

डेरा पहुँचलापर पत्नीपर नजरि पड़लन्हि। पत्नी लाल टुह-टुह बनारसी साडी पहिरि सोलहो शृंगार क' प्रतीक्षामे बैस छलखिन्ह। हिनका मूँहसँ अनायास निकलि गेलन्हि – 'बुढी घोडी लाल लगाम'

सुनिते पत्नी विगडि गेलखिन्ह – 'की हम बूढ भ' गेलहुँ ? हमरा उमेरक लोक शृंगार नहि करैत अछि ?'

'अहिना कहलहुँ चलू घुमाए' हिनकर मुद्रा कने खुशामदी छलन्हि। पत्नी मानि गेलखिन्ह।

दुनू गोटे घूमए निकललाह। मुदा नवयौवनाक रंगमे रङल पत्नीक व्यवहार हुनका किछु नीक नहि लागि रहल छलन्हि। फुदकि-फुदकि कए चलब, बात-बात पर हँसब हुनका पचि नइँ रहल छलन्हि। किछुए दूर आगू बढल छलाह कि पत्नी पाछूसँ आगू आबि सटिक' चलए लगलन्हि। हिनका ई बात पसिन्न नहि पडलन्हि— 'एना किएक सटिक'

चलैत छी ? हम आगू-आगू आ' अहाँ पाछू-पाछू चलू ।'

– 'विचीत्र लोक छी अहाँ ।' पत्नी तमसा गेलखिन्ह ।

– 'देखू एहि ठाम हमरा लोकनीक मर्यादा दैत अछि। अहूँ कें आब नाति-नातीन भेल ।'

– अहाँक मोन मे रौदी पड़ि गेल अछि'

– जे कहि सभक नजरि हमरे सबपर अछि। बेशर्मी हम वर्दास्त नहि करब ।

दुनू गोटेमे पुन: शान्ति सम्झौता भऽ गेलन्हि। बजारमे किछु छोट-मोट आवश्यक सामान किनैत ओ लोकनि एहिठामक प्रसिद्ध झरना देखए आगू बढ़लाह। मुदा मोन तीत भऽ गेल छलन्हि। एना पत्नी किएक नेनमति जकाँ करैत छलखिन्ह से बुझवामे नहि आबि रहल छलन्हि। जहिया युवावस्थामे बनारसमे संगे छलाह तहिया कतेको दिन गंगामे नावपर घूमबाक इच्छा होइन्ह। मुदा तहिया पत्नीकें लाज होइन्ह। गंगामे सैर करबाक बात मोने मे रहि गेल रहन्हि। मुदा आई एहि अवस्थामे एना चहकि-चहकि कए कीएक घूमि रहल छथि। बनारसमे संगे बजारो घूमऽ मे लाज होइन्ह। पत्नी कहथिन्ह – "अहाँ आगू-आगू चलू हम पाछू-पाछू चलब।" युवावस्थामे एहन भावना रखनिहारि पत्नीकें वयशक उत्तरार्धमें आबि कतऽ ओ लाज विलुप्त भऽ गेलन्हि।

झरना आबि गेल छलैक। बहुतराश जोडी एम्हर-ओम्हर बैसल झरनाक आनन्द लऽ रहल छल। दुनू गोटे एक कातमे बैसि गेलाह। पत्नी फेर सटिकए बैसैत अपन माथ हिनकर बाँहिपर रखबाक उपक्रम करए लगलखिन्ह। पुन: ओ अत्याधिक आक्रोशित भऽ गेलाह। शान्ति सम्झौता भंग भऽ गेल।

– 'की सब लाज शर्म उठाकऽ पीबि गेलहुँ ?'

– 'अहाँ केहन लोक छी ? ओहि बुढबा-बुढियाकें देखियौक तँ कोना सटिकऽ बैसल अछि। आ' ओम्हर देखियौक तऽ अहींक औफिसक ओ छौंड़ा अछि ने। कोनो कनीयाँ बाँहि मे बाँहि घुसीया क' बैसल छैक।' दुनू जोडी दिश पत्नी संकेत कएलखिन्ह।

तथापि हुनकर चीत्त शान्त नहि भेलैक – "ओ बुढवा-बुढिया एहिठामक बहुत पैघ लोक छैक, ओकरा केयो किछु ने कहतैक। मुदा अहाँक ई चालि काल्हि सौंसे बजारमे चर्चाक विषय भऽ जायत। आ' ओहि छौंडा-छौंडीक गप्प कहैत छी तऽ सुनू ओकरा सबकें कोन लाज, ओ लोकनि पति पत्नी नहि अछि, ओ छौंडी ओकर प्रेमिका छैक।"

ई सुनिते पत्नीक चीत्त गरम पानि जकाँ खौलए लगलन्हि।

– 'ओ रखैल संगे रंग-रभस करए तऽ किच्छु नहि। मुदा अहाँकें अपना पत्नीसँ प्रेम करबामे लाज होइत अछि ? धीक्कार अछि। एक माससँ देखि रहल छी अहाँ मनुक्ख नहि पाथर छी पाथर।'

पत्नी विदा भऽ गेलखिन्ह। आगू-आगू पत्नी पाछू-पाछू पति छलखिन्ह। भरि राति डेरामे मौन व्याप्त रहल। भोरे पत्नीकें अपन सामान सरियबैत देखि हिनका अनुमान लागि गेलन्हि जे ओ आई गाम धुरि रहल छथि। मुदा ओ नहि रोकि सकलखिन्ह आ' ने विदा हेतु स्वीकृति दऽ सकलखिन्ह। जायकाल पत्नी कहलकन्हि – 'जाहि जंजालक जंगलमे हम तीस वर्ष फिफियाइत रहलहुँ, ओतए स्वेच्छासँ निर्वासित नहि छलहुँ, अहींद्वारा देल गेल बनवास छल ओ।'

ओ किच्छु जबाब नहि द॑ सकलाह। पत्नी चलि गेलखिन्ह। ओ स्तब्ध भ' गेलाह। कार्यालय जायब बन्द क' देलन्हि। लोक अनसोहाँत लागलगलन्हि। भोजन भात बनौनाइ बन्द क॑ देलन्हि। कहियो उपास त॑ कहियो पाँवरोटीसँ काज चलबए लगलाह। मोन विक्षिप्त रहए लगलन्हि। सौंसे जीनगीकेँ उचित-अनुचितक तराजुपर भरि दिन पडल-पडल तौलए लगलाह। अड़ोसी-पड़ोसी, जान-पहचान सबसँ बाजब-भूकब बन्द भ॑ गेलैन्ह। मोनक उद्धीग्नता बढैत-बढैत क्रमश: बतहपनीक बाट पकड़ि लेलकन्हि। कार्यालयसँ मित्र लोकनि हाल-चाल पुछए अबन्हि त॑ तमसाकए जबाब देथिन्ह।

– 'अहाँ हम्मर हाल-चाल पुछए अएलहुँ आ कि हमर घरवालीकेँ देखए ? हमरा सब बात बुझल अछि, अहाँसब भरि दिन हमरे दुनू परानीक गप्प करैत रहैत छी। जाउ नहि करब ओहन औफिसमे काज।'

किछुए दिनमे सर्वत्र बात पसरि गेलैक – सुब्बा साहेब बताह भ॑ गेलाह। एक दिन सहकर्मी मित्र लोकनि विचार कएलन्हि –'एहन हालतिमे गामे पहुँचाएब उचित।' हिनकर मोटाचोटा बान्हल गेल। अपने तँ सुखिक॑ नरकंकाल भ॑ गेल छलाह। मित्रलोकनि बाँहि पकडि बाहर अनलकन्हि – 'चलू गाम चलैत छी'।

– 'अएँ! गाम! कोन गाम ? किनका लग ल॑ जाएब ?' भावशून्य आँखिसँ टुकूर-टुकूर मित्र सब दिश तकैत पुछलखिन्ह आ' हँसए लगलाह।

एकटा मित्रक मूँहसँ एतबे बहरएलैक – 'ओह ! एहि बताह मनुक्खकेँ भाभीजीक हाद सुपुर्द करैत काल हमरासभकं की दशा ह्एत।'

रा.रा.ब. क्याम्पस
जनकपुरधाम

पाषाण-पुष्प

"हुटिट्याउँले झैं कैलेसम्म पुरै अफिसको सगर थामी बस्नुहुन्छ ?"– टेलिफोन
उठाउने बित्तिकै श्रीमतीको स्वर सुनियो ।

"ल ! आई पुगें" – टेलिफोन राख्दै उनी डेरातर्फ लम्किए ।

उंनले जागिर खाएको अहिले तीस वर्ष हुन गई रहेको छ भने आयु पचपन्न वर्ष ।
रिटायर हुनलाई मात्र पाँच वर्ष बाँकी छ । आफ्नो सम्पूर्ण जागिर अवधिमा पहिलो पटक
श्रीमती एक महीनादेखि सँगै छिन् । त्यसो त बिहे त्यतिखेरै भयो जतिखेर उनी आई.ए.
मा अध्ययनरत् थिए । बिहेको दुईवर्ष सम्म चुपचाप बसे । तर बी.ए. पढ्न बनारस
गएपछि एकदिन गाउँ फर्की उनले सत्याग्रह गरे– "मलाई बनारसमा खानपीन गर्न धेरै
अप्ठ्यारो हुन्छ । म अब पढ्दिन ।"

आमाले युवापुत्रको मनसाय बुझी 'कनियाँ' (दुलही) लाई सँगै पठाइदिनु भयो ।
बनारसमा पढ्ने मात्र उनी नै वीर पुरुष थिए । त्यसैले थाहा पाउने सङ्गीसाथीले खूब
छेड़ हान्ने गर्थे । तर कुरकुरे बैंसको उन्मादमा उनीमाथि सङ्गी-साथीका व्यङ्गबाणहरूको
कुनै प्रभाव पर्दैनथ्यो । करिब साढ़े एक वर्षपछि श्रीमतीलाई गाउँ फर्काउनु उनको
बाध्यता हुन पुग्यो । कारण श्रीमती दुई जिउकी भएकी थिइन् तर त्यसपटक गाउँ पुऱ्याई
राख्ने संयोग उनले कहिल्यै भेट्टाएनन् ।

पहिलो सन्तानको जन्म भएपछि एकदिन श्रीमतीलाई चिठ्ठी लेखे – "छोरी अब
वर्षदिनकी भइन्, यसपटक दशैंमा लिन आउँदै छु ।"

श्रीमतीले दुई टुक्रा जवाफ पठाइन् – "नानी सधैं बिरामी रहन्छे । डाक्टरले
भन्छ– पाँच वर्षसम्म यस्तै भै रहने हो । त्यसैले पाँचवर्षसम्म आउँदिन ।" उनी बक्क
परे । सोचे, डाक्टर र औषधिविहीन यो पहाडमा ल्याउने पनि कसरी !

पाँचवर्षसम्म श्रीमतीबाट ध्यान हटाई कार्यालयको काम-काजमा उनले ध्यान
केन्द्रित गरे । पाँच वर्षपछि एकदिन चिठ्ठी लेखे– "अब त छोरी स्वस्थ होलिन् । 'फगुआ'

(फागु) मा लिन आउँदैछु ।"

चट्टै श्रीमतीको जवाफ आयो – "बाबूजी (बुवा) को अवस्था अति खराब छ। छिटै आउनुस् ।"

हत्तपत्त गाउँ गए। बुवाको अन्तिम स्वाँस चलिरहेको थियो। छोरालाई देख्नेबित्तिकै बुलबुल चरीझैं प्राणपखेरू उडिहाल्यो। क्रियाकर्म सकिएपछि एकदिन एकान्तमा श्रीमतीसँग उनले सोधे – "क्या हो, अब जाने होइन ?"

– "कस्तो केटाकेटीजस्तो कुरा गर्नुभएको ? अहिले भर्खर बाबूजी बित्नुभएको छ, र बूढी सासूलाई छाडी तपाईंसित जाऊँ ? दुनियाँले के भन्ला ? श्रीमतीको जवाफले उनी आश्चर्यचकित हुन पुगे। श्रीमती कहिलेदेखि र कसरी घर-धन्दा बुझ्ने भैसकेकी रहिछन्– उनले पत्तै पाएनछन्। लुरुलुरु गाउँबाट विदा भए ।

बीच-बीचमा प्रत्येक विदामा उनी गाउँ जाने गर्दथे र प्रत्येक पटक मनमा एउटा क्षीण आशा रहन्थ्यो – यसपाली चाहिँ श्रीमतीलाई ल्याउने उपाय पक्कै लाग्नेछ। तर गाउँमा श्रीमतीको झन्झट, उत्तरदायित्वको बोझ देखेर प्रत्येक पटक रित्तो हात फर्किने गर्दथे। श्रीमतीलाई केही भन्ने आँटै गर्न सकेनन् ।

फेरि एकदिन चिठ्ठी लेख्ने आँट गरे – "बाटो हेर्दा-हेर्दा आँखा थाके ... ... नआउने नै हो त ?"

उताबाट जवाफ आयो– "तपाईं दोस्रो सन्तानको बुवा बन्ने हुनुभयो ।"

यस पत्रमा आफ्नो प्रतिक्रिया उनी ठीकसँग व्यक्त गर्न सकिरहेका थिएनन् –खुशी होउन् अथवा दुखी । केही महीनापछि पुत्र प्राप्तिको खबर पनि उनले पाए। तथापि सन्तान हुने सूचनामा जसरी किंकर्तव्यविमूढ भए आजसम्म पनि त्यस परिधिबाट बाहिर निस्कन सकेनन् । फेरि पनि मन मारेर आफ्नो कर्तव्य-पथमा अघि बढे, बढ्दै गए। हाडहरू घोटिंदै गए ।

गाउँ बिर्सिन थाले उनी। फाइल सम्झनामा रहन थाल्यो। यन्त्रवत् प्रत्येक महीना गाउँमा पैसा पठाइरहे। कालो कपाल कपासझैं भयो। श्रीमतीको चिठ्ठी एकदिन भेट्टाए– "तरुणी छोरीको बुवा भई यसरी ढुक्क भै कहिले सम्म बस्ने हो ?"

दुई महीनाको विदा लिई गाउँ गए। छोरीको बिहा सम्पन्न गरे। विदावारी सकिसकेपछि सुकेको हाँगामा उम्रेको नयाँ कोपिलाझैं उनको मनमा पुनः झिनो आशा पलायो। सोधे – "के अब पनि यस जन्जालबाट फुर्सद भएको छैन ?"

"छोरा यो पाली एस.एल.सी. मा छ। के गरी उसको भविष्य बिगार्ने ?"– कर्तव्यपरायण श्रीमतीको प्रतिप्रश्नमा उनी मौन भए। चुपचाप गाउँबाट विदा भए। पलाएको नवीन कोपिला फेरि मुर्झायो ।

पहिला-पहिला वर्षमा दुईपटक गाउँ जाने गर्दथे। अब मात्र एकपटक दशैंमा गाउँ जान थाले। यसैबीच आमा पनि स्वर्गे भइन्। छोरो पनि राम्रो अङ्कले आई.एस्सी. पास गरी प्लानमा इन्जिनियरिङ पढ्न मद्रास गइहाल्यो। तर उनको चित्त यसरी मऱ्यो कि गल्तीले पनि लेखेनन् – "अब त आऊ।" कार्यालय उनको लागि घर भन्दा बढी प्रिय भैसकेको थियो। दिन-रात आफ्नो काम र कार्यालयबाहेक अरू केही देख्तैनथे उनी।

श्रीमती, उता गाउँमा पर्खी बसेकी थिइन्– अब आउँछ चिठ्ठी, अब चिठ्ठी आउँछ। तर यता यिनी ढुङ्गा भई आफ्नो काममा डुबिरहे। अन्ततोगत्वा एक महीना अघि बिना कुनै सूचना श्रीमती आइपुगिन्। यिनको लागि न कुनै हर्ष न विस्मात। सुकेको नदीको

किनाराभैं श्रीमतीलाई टुलुटुलु हेरिरहे। कर्तव्यपरायणता समय भन्दा पहिले नै कसरी मानिसलाई वृद्ध बनाउँदो रहेछ। यही सोचिरहे उनी। कहाँ बनारसकी ती नवयौवना– हाँस्दी-कल्कलाउँदी- र कहाँ यी समयले सताएकी मुस्कानविहीन सुकेको-मुर्झाएको अनुहार।

"म आएको मन परेन कि क्या हो ?" श्रीमतीले मौन व्रत तोडिन्।

"हैन, त्यस्तो केही छैन। आऊ। उतापट्टि भान्साकोठा छ।" उनले औंलाले भित्रपट्टी सङ्केत गर्दै भने।

श्रीमती भित्रभित्रै मुर्मुरिइन्– "जिन्दगीभरी त हात कालो गरें– यहाँ पनि त्यै।" तर केही नबोली भान्साकोठा गई कमान सम्हालिन्।

आज एक महीनादेखि श्रीमती सँगै छिन्। तर जसको प्रतीक्षामा आँखाका नानी थकित थिए त्यसको साहचर्य पाएर पनि त्यो भावना – त्यो प्रेम, भन्न सकिन्न, किन जागेन, जसलाई जतनसाथ मनको बाकसमा वर्षौंदेखि राखेका थिए। केही औपचारिक शब्दहरूको प्रयोगबाहेक दुवै पक्ष बीच कुनै खास कुराकानी हुँदैनथ्यो। कार्यालयबाट एक पोका फाइल बोकी आउनु उनको पुरानो बानी थियो– त्यो अहिले पनि छँदैछ। राती दश-एघार बजेसम्म फाइलहरूमा मुन्टो डुबाई बस्नु, बिहानै कहिले यस हाकिमकहाँ त कहिले त्यस हाकिमकहाँ र दिनभरि अफिसमै। हिजो बेलुका श्रीमतीले अकस्मात हातबाट फाइल थुतिहालिन्– "एक महीनादखि हेर्देछु, खाली फाइलै देखिन्छ कि अरू पनि केही ?"

– "के ?"

– "यसरी चुपचाप किन हुनुहुन्छ ?"

– "मेरो दोष ?"

– "तिमीले आफ्नो कर्तव्य गऱ्यौ। मलाई आफ्नो कर्तव्य गर्न देऊ। खै, फाइल देऊ।"

– "फाइल दिन्छु। तर शर्त के हो भने भोलि एउटा पनि फाइल डेरामा आउँदैन र अफिसबाट छिट्टै फर्की घुम्न जानुपर्छ।"

– "शर्त मन्जूर छ।"

यसै शर्तअनुसार आज उनी अफिसबाट डेरा फर्किंदै थिए।

डेरा पुगेपछि श्रीमतीमाथि दृष्टिपात गरे। श्रीमती सिन्दूरे रातो बनारसी साडी लगाई सोह्र सिङ्गार गरी उनलाई पर्खी बसेकी थिइन्। उनको मुखबाट अनायास निस्क्यो –

"बूढी घोडी, लाल लगाम।"

सुन्ने बित्तिकै श्रीमती तात्तिइन् – "के म बूढी भएँ ? मेरो उमेरकी आइमाईले सिँगार गर्दैनन् कि क्या हो ?"

"त्यसै भनेको थिएँ, जाउँ डुल्न।" उनको मुद्रा अलि मनाउने थियो। श्रीमती मानिहालिन्।

दुवैजना डुल्न निस्के। तर नवयौवनाको रङ्गमा रङ्गिएकी श्रीमतीको व्यवहार उनलाई मन परिरहेको थिएन। उफ्री-उफ्री हिँड्नु, स-सानो कुरामा पनि खित्का छाडी हाँस्नु उनलाई पचिरहेको थिएन। अलिकता पर के पुगेका थिए श्रीमती पछाडिबाट अघि आई टाँस्सिएर हिँड्न थालिन्। उनलाई मन परेन

– "यसरी के टाँस्सिएर हिँड्छयौ ? म अघि अघि हिँड्छु र तिमी पछि पछि

हिँड ।"

– "गज्जबको मानिस हुनुहुन्छ तपाईं ।" – श्रीमती झर्किइन् ।
– "हेर, यहाँ मलाई मानिसले ठूलो सम्मान गर्छन् । तिम्रो पनि अब नाति-नातिना भए ।"
– "तपाईंको मनमा खडेरी परिसकेको छ ।"
– "जेसुकै भन । सबैको आँखा हामीतिरै छ । निर्लज्जता म सहन सक्दिनँ ।"

दुवैजनामा फेरि शान्ति सम्झौता भयो । बजारमा केही सानातिना आवश्यक सामानहरू किनेपछि तिनीहरू यहाँको प्रसिद्ध झरना हेर्न अघि बढे । तर मिजास दिक्क भैसकेको थियो । श्रीमती यसरी किन केटाकेटीझैं गर्दै थिइन्, बुझ्नै पाइरहेका थिएनन् । युवावस्थामा, जतिखेर बनारसमा सँगै थिए त्यतिखेर अनेकौं दिन गङ्गामा नाउमा चढी घुम्ने इच्छा हुन्थ्यो । तर त्यतिबेला श्रीमतीले लाज मान्थिन् । गङ्गामा घुम्ने इच्छा मनमै रह्यो । तर आज यस अवस्थामा यसरी छिल्लिएर किन हिँडिरहेकी छिन् । बनारसमा बजारमा पनि सँगै घुम्न लाज मान्थिन् । श्रीमती भन्थिन् –"तपाईं अघिअघि हिँड्नुस्, म पछिपछि हिँड्छु । "युवावस्थामा यस्तो भावना राख्ने श्रीमतीलाई उमेरको उत्तरार्धमा आएर त्यो लाज कहाँ हरायो ?"

झरना आइपुग्यो । अनेक जोडीहरू यताउता बसी झरनाको आनन्द लिइरहेका थिए । दुवैजना एकातिर कुनामा गई बसे । श्रीमती फेरि टाँस्सिएर बस्दै आफ्नो मुन्टो उनको पाखुरामा राख्ने उपक्रम गर्न थालिन् । पुनः उनी अत्यधिक आक्रोशित हुन पुगे । शान्ति सम्झौता भङ्ग भयो ।

– "कस्तो मानिस तपाईं छ्या ? ऊ त्यो बूढा-बूढीलाई हेर्नुस् त, कसरी टाँस्सिई बसेका छन् । र उता हेर्नुस, तपाईंकै अफिसको केटो होइन र त्यो । कसरी उसको दुलही हातमा समाई बसेकी छिन् ।"

दुवै जोडीतर्फ श्रीमतीले सङ्केत गरिन् । तथापि उनको रिस शान्त भएन– "ती बूढा-बूढी यहाँको धेरै ठूला मानिस हुन्, तिनीहरूलाई कसैले केही भन्दैन । तर तिम्रो यो चाला भोलि सारा बजार भरी चर्चाको विषय बन्नेछ । र त्यो केटा-केटीको कुरो गर्छ्यौ भने त सुन, तिनीहरूलाई के को लाज, तिनीहरू लोग्ने-स्वास्नी होइनन् । त्यो केटी त्यसको प्रेमिका हुन् ।"

यति सुन्नेबित्तिकै श्रीमतीको रिस तातो पानीझैं उम्लिन थाल्यो– "त्यस रखौटेसँग रङ्ग-रस गर्दा त्यसलाई केही छैन । तर तपाईंलाई आफ्नी श्रीमतीसँग प्रेम गर्न लाज लाग्छ ? धिक्कार छ । एक महीनादेखि देख्दैछु, तपाईं मानिस होइन ढुङ्गा हुनुहुन्छ, ढुङ्गा ।"

श्रीमती हिँडिहालिन् । अघिअघि श्रीमती, पछिपछि श्रीमान् थिए । रातभरि डेरामा मौन व्याप्त रह्यो । बिहानै श्रीमतीलाई आफ्ना सामानहरू ठिक पारेको देखेर श्रीमती गाउँ फर्किरहेको कुरा उनले चाल पाइहाले । तर उनले न त रोक्न नै सके न त विदा हेतु स्वीकृति नै दिए । जाने बेला श्रीमतीले भनिन्– "जुन जन्जालको जङ्गलमा म तीस वर्षदेखि भौंतारिई रहें, त्यहाँ स्वेच्छाले निर्वासित थिइनँ । तपाईंद्वारा नै दिइएको वनवास थियो त्यो ।"

उनले कुनै जवाफ दिन सकेनन् । श्रीमती गइहालिन् । उनी स्तब्ध भए । कार्यालय जान बन्द गरिदिए उनले । मानिसहरू फाल्तु लाग्न थाले । खाना-साना पकाउन बन्द गरिदिए । कहिले उपवास त कहिले पाउरोटीले काम चलाउन थाले । दिमाग बौलाएझैं

रहन थाल्यो । सम्पूर्ण जिन्दगीलाई उचित-अनुचितको तराजुमा दिनभरि सुती-सुती जोख्न थाले । छर-छिमेकी, चिने-जानेकाहरूसँग बोलचालसमेत बन्द भयो । मानसिक उद्विग्नता बढ्दा-बढ्दै क्रमशः बौलट्टीपनको बाटो समात्न थाले । कार्यालयबाट मित्रहरू हाल समाचार सोध्न आउँदा झर्केर जवाफ दिने गर्थे– "तपाईं मेरो हालखबर सोध्न आउनु भएको हो कि मेरो श्रीमतीलाई हेर्न ? मलाई सबै कुरा थाहा छ, तपाईंहरू दिनभरि हामी दुईजनाको कुरा काट्नुहुन्छ । जानुस्, गर्दिन त्यस्तो अफिसमा काम ।"

केही दिन भित्रैमा चारैतिर कुरो फैलियो – सुब्बा साहेब बौलाउनु भयो । एकदिन सहकर्मी मित्रहरूले विचार गरे – "यस्तो अवस्थामा गाउँ पुऱ्याइदिनु नै ठिक्क ।" उनको लुगा-फाटो, पोका-पन्तरा बाँधियो । आफू त गलेर नरकङ्काल भैसकेका थिए । मित्रहरूले पाखुरा समाई बाहिर ल्याए– "हिँड्नोस्, गाउँ जाऊँ ।"

– "हँ ! गाउँ ! कुन गाउँ ?

"कसकहाँ लाने हो ?" भावशून्य आँखाले टुलुटुलु मित्रहरूतिर हेर्दै सोधे र गललल हाँस्न थाले ।

एकजना मित्रको मुखबाट यति मात्र निस्क्यो –"ओह ! यस बौलाहा मानिसलाई भाउजूको हातमा सुम्पिने बेला हाम्रो के दशा होला ।"

अनुवादक : रोशन जनकपुरी

शक्ति रूपेण संस्थिता

प्रदीप बिहारी

विश्वनाथ पंडाक मुइलाक बाद हुनक पुत्र सभ यजमान नहि सम्हारि सकल। छहोछित होइत यजमान ... दुबराइत आमदनी आ दुनू बेटाक असफलता विश्वनाथ पंडाक धर्मपत्नी रामदुलारी कें चोटाहि बना देने रहैक। मोनहि मोन फुफकारैत रहैत छलि ओ। होइक, कत ढुसि ली ... ककरा डसि ली ...

ओना विश्वनाथ पंडाक कमाइसँ सेहो सन्तुष्ट नहि रहैत छलि रामदुलारी। हुनकहुँ दिन राति खोभाटनि भेटैत छलनि। एतेकटा मन्दिर छैक। एतेक यजमानछनि। लाखो दर्शनिया रोज अबैत छैक। कहबैका छथि विश्वनाथ पंडा। तखन कमाइ एतबे ...। एहिसँ बेसी त छोटका टेल्ह सभ फूलक दोकान परसँ अनेरुआ दर्शनिया सभकें मड़ि क' कमा लैत अछि।

विश्वनाथ पंडा सोझ लोक छलाह। कहियो अपन यजमानकें ठकलनि नहि। कहियो बाट पर बौअयलाह नहि। जे दर्शनिया एक बेर हुनक भ' जाइत छल, से हुनके भ' क' रहैत छल। अपन मृदुल व्यवहार आ धर्मनिष्ठ विचार हुनका लोकप्रिय बना देने छलनि। आन-आन पंडा सभ जकाँ कमयलाह नहि, मुदा परिवारमे कहियो उपासो नहि रहलाह। कोनो खगता लेल कोम्हरो ताकहु नहि पड़लनि।

संयोग रहैक जे महन्तजी बड़ मानथिन विश्वनाथ पंडाकें। विश्वनाथे पंडाक ई सौभाग्य छलनि जे महन्तजी कहियो काल हुनका ओहिठाम जाथि। घण्टा दू घण्टा बिलमथि। ओना आन-आन पंडा सभ एतेक चढौआ विश्वनाथ नहि द' पाबथि महन्तजीकें। कत' सँ दितथि। ओतेक कमाइयें ने रहनि। भगवतीक दर्शन हेतु मन्दिरक भीतर मे ब्राह्मण भोजन, कुमारि भोजन, बटुक भोजनक नाम पर वा भगवतीक चरण स्पर्श करयबाक नाम पर पहिने दर्शनियाक जेबी हँसोथि मुट्ठी गरमयबाक बानि नहि छलनि विश्वनाथ पंडाक। श्रद्धासँ जे यजमान जतेक देलकनि सैह बेसी भ' जाइत छलनि।

पत्नीसँ कहियो पटलनि नहि विश्वनाथ पंडाकें। पटनु कोना ? रामदुलारी अजस्र आयक आकांक्षा नैहरेसँ ल' क' आयलि छलि, जकरा पूरा नहि क' पौलनि पंडा। रामदुलारी आन-आन पंडाक आय देखि हिलसैत रहैत छलि ... तलफैत रहैत छलि ... आ

विश्वनाथ सन्तोषं परम् सुखम् केर जन्मघूंटी पियबैत रहैत छलाह। कोना पटनु ?

अर्थलोलुपता चोटाहि बना देने रहैक रामदुलारीकें ओकर मोन कखनो थिर नहि रहैक पंडाजीसँ बतकुट्टनी कयलाक बाद ओ कोनो-ने-कोनो उपाय सोचैत रहैत छलि। एक दिन एकटा उपाय सुझलैक। ओ महन्तजीसँ भेंट क' आयलि।

दोसरे दिन विश्वनाथ पंडाक सेवा भगवतीक मूर्तिक कातमे बैसि क' दर्शनिया सभक प्रसाद चढ़यबाक हेतु निर्धारित भ' गेलनि। रामदुलारीक मोन मयूर नाचि उठलैक। आब ओहो दोसर पंडाइन सभकें नहि गुदानति। ओकरो वरकें भगवतीक गद्दी भेटि गेलै-ए। आठ घण्टाक ड्यूटी-भोरे छओ बजे पट खुजबाक समयसँ दू बजे धरि। ओना मन्दिरक पट तँ बारहे बजे बन्न भ' जाइत छैक। तकर बाद हिसाब-बारी होइत छैक। लेन-देन होइत छैक। दू तँ बाजिये जाइत छैक।

छओ घण्टा कम नहि छैक। सोचलकि रामदुलारी। ओकरा मन्दिरक भीतरिया स्थिति मोन पड़लैक। पितरिया जाफरीसँ घेरलि छथि भगवती। भीतर मूर्ति लग जयबाक लेल कने टा फाँक छैक। दर्शनियाँ निहुरि क' जाइ-ए। भगवतीक पूजा-अर्चना करैए। चरण-स्पर्श करैए। मुदा ई सौभागय ओकरे भेटैत छैक जे कमसँ कम एकावन टाका पहिने ओत बैसल पंडाकें दैत छैक। नहि तँ भीतर प्रवेश कोनहुना नहि। बाहरेसँ दर्शन करय। ओकर प्रसाद बाहरेसँ लुझि लेल जाइत छैक आ भगवतीक चरणमे सटाय दर्शनियाकें घुरा देल जाइत छैक। मात्र प्रसादक संग जे चढ़ौआ टाका रहैत छैक, सैह राखि लेल जाइत छैक।

रामदुलारी सहरजमीन छोड़' लागलि छलि। खने विश्वनाथ पंडा पर दया भाव आबैक। मेहनतियो कम नहि छैक। खूब छैक खटनी। तखने दू टा पाइयो छैक। रामदुलारीकें बुझयलैक जे ओ मन्दिरक मलिकाइन भ' भेल अछि ... मलिकाइने नहि, महन्ताइन सेहो ...। मन्दिरक एक-एक दृश्य ओकरा-सोझां नाच' लगलैक। भगवतीक दर्शनक बाद बाहरक दृश्य सभ। नारिकेर फोडबाक स्थान। सोचलनि जँ समय-साल ठीक-ठाक रहलैक, तँ महन्तजीकें कहि क' जेठकाकें नारिकेर फोडबाक ठाम ड्यूटी धरा देति ...। दोसर दिस खिड़की पर भगवतीक सम्मुख दीप जरयबाक ठाम ...। मोने मोन छोटकाक लेल ओ जगह सुरक्षित करयबाक बात निस्तुकी कयलनि। तखनहि मोन पड़लैक दानपेटी। मोन तुरुछि गेलैक। घौर जो ! ई तँ सरकारी दानपेटी छैक ... ढनढनाइते रहैत छैक। कोना भरौक ? दर्शनिया के भगवतीकें चढयलाक बाद नारिकेर फ़ोडबाक दक्षिणा, दीप जरयबाक दक्षिणा, पार्वती मन्दिरक चढौआ, महादेव मन्दिरक चढौआ, महावीर मन्दिरक चढौआ, काल-भैरव मन्दिरक चढौआ, हवन-कुण्डक चढौआ, तन्त्र साधना गृहक चढौआ, ढोल पिटनिहार आ दर्शनक हेतु लाइनमे ठाढ लोक सभकें बियनि होंकैत नेना सभकें दानसँ बंचतैक तखन ने एहि सरकारी दान- पेटीमें देतै। मने सरकार लिखि दौक जे पन्डा खभकें अर्थदान नहि करु, जे किछु दान करबाक होअय, से सरकारी दानपेटीमे दियौक, मुदा दर्शनिया अपन नेत-धरम नहि ने छोडि दैतक। दोसर गप्प इहो जे कलक्टर पेटसँ उगरैत, तखन ने सरकारी दान-पेटीमे जयतैक।

प्रत्येक मसान्तमे कलक्टरक सवारी महन्तजीक ओहिठाम अबैत छैक। कलक्टर साहेब सपरिवार दर्शनमे अबैत छथि। हिसाब-बारी होइत छैक आ ओही मे सँ किछु बेराओल जाइत छैक – सरकारी दानपेटीकलेल। सभटा बुझल छैक रामदुलारीकें। महन्तजीसँ हेम-छेमक कारणें ई भितरिया गप बुझ छैक ओकरा।

मुदा विश्वनाथ पंडा अपन नव सेवा हेतु तैयार नहि भेल रहथि। रामदुलारी चंडी भ' गेल छलि। जेठका बेटा दीनानाथ बाप दिससँ बाजल छल, मुदा मायक एक्कहि डांटसँ सकदम्म भ' गेल। छोटका रामनाथ मायक सँग दैत छल। पुतौहु एक्कहिटा छलैक। दीनानाथक पत्नी। एहि महाभारतमे ओकरा कल्ला अलगयबाक साथंस कत' सँ होइतैक ? दोसर गप्प ई जे ओकर बियाहक बर्खहु ने पुरल रहैक। नव कनियाँ। की बजैत ? जखन पतिये के कोनो सक्क नहि चलैत छैक तँ ओकर की ? ताहूमे बिनु लेन-देनक पुतौहु। गरीबहा घरक बेटी। सासु अनेरो हठोघडी अपनइन्होर बोलसँ उसीनैत रहैत छैक। ओकरा ससुरक पक्षमे रहलेसँ की ?

अन्ततः विश्वनाथ पंडाकें मान' पडलनि।

मुदा एक्कहि मासक बाद घरमे पुनः महाभारत शुरू भ' गेलैक। विश्वनाथ पंडाकें मास पुरलाक बादे ओहि सेवासँ हटा देल गेलनि। ओ असफल सिद्ध भेलाह। कोनो दर्शनियाक जेबी नहि हसोथलनि। मन्दिरक आमदनी घटि गेलैक। चिन्तित रह' लगलाह महन्तजी। कछमछाय लगलाह कलक्टर।

रामदुलारीक कोनो सक्क नहि चललैक। ओ पतिक गद्दी नहि बचा सकलि। कोनहु शर्त पर एतेक पैघ घाटा सहबाक लेल तैयार नहि भेलाह महन्तजी। आ रामदुलारीकें मोनमे बिक्खक गाछ जनमि गेलैक।

विश्वनाथ पंडा पुनः पहिलुक काजमे लागि गेलाह। एहि एक मासमे किछु यजमान बिलहि गेलनि। दीनानाथ बुतें किछु भ' नहि सकलैक। घरमे एक-सँ-एक घटना होभ' लगलैक। पंडाजीक मोन तुरुछि गेलनि। ओ आँगन जायब कम कर' लगलाह आ अन्ततः मन्दिरेक प्रांगणमे रह' लगलाह। मुदा मन्दिरोक प्रांगणमे बेसी दिन नहि रहि सकलाह। एकदिन भोरमे भगवतीक पट खुज'सँ पहिनहिं मन्दिरक बहरिया सिरहीक पाया पर मुइल देखलकनि लोक।

पतिक मृत्युक बाद किछुए दिन शोकमग्न समय बितौलकि रामदुलारी। पंडाकें मुइलाक बाद जतबो टाका अबैत छलैक, बन्न भ' गेलैक। परिवारक सोझां प्रश्नचिह्न ठाढ भ' गेलैक। छटपटाय लागलि रामदुलारी। ओकर मोन मन्दिरक छ गद्दी पर टांगल रहैक। दोसर किछु देखाइके नहि। दीनानाथ मन्दिर दिससँ टहलि आबय। किछु आनय मुदा ताहिसँ जोरनो नहि होइक। रामनाथ बापेक समयसँ बहसल छल। घुमकडीसँ पलखतिये ने भेटैक।

दीनानाथ रक्षा-सूत्र बान्हबाक मन्त्र सीख' लागल। मुदा एक मासक अथक प्रयासक बादो ओकरा बुतें मन्त्रक शुद्ध-शुद्ध उच्चारण कयल नहि भेलैक। रामदुलारीकें विश्वास भ' गेलैक जे दीनानाथ बुतें यजमान डेबल नहि होयतैक। कोनो दोसरे उपाय ताकल जाय।

बड़ सहज आ दयनीय ढेंगें महन्तजीसँ भेंट कयलकि। गंभीरतापूर्वक ओकर समस्या सुनलनि महन्तजी। कने काल चुप रहलाह। पुनः बजलाह, "मन्दिरक सेवा बला तृष्णा छोड़ि दहक। तोहर बेटा सभ ताहि योग्य नहि छह। एकटा बकलेल, दोसर हीरो।"

"तँ की क सकै छी हम सभ ?"

कोनो दोकान-दौरकि बात सोचह। फूल-माला, प्रसाद, लटगेना वा आने कथूक दोकान। बजलाह महन्तजी, दुनू सासु-पुतौहु घरमे बैसि क की करबह ? बहरिया काज बेटा सभ सेहो किछु-ने-किछु कैये देतह।

ओहि राति निन्न नहि भेलैक रामदुलारीकें। ठेकनाव लागलि वजारकें। महन्तजी जतेक वस्तुक गप्प कहलखिन, सभ कथुक दोकान तँ छैके। वैह सभ खोलने स्पर्द्धा होयतैक। आ कि तखनहिं एकटा विचार उचरलैक ओकरा मोनमे। किएक ने एकटा होटल खोलल जाय। होटल कम छैक। मेन रोड पर त्रिपाठी भोजनालाय। मन्दिर दिश उपरका भागमे मात्र एकटा मारवाड़ी भोजनालय छैक। होटल चलि सकैत छैक। ओ मानहिं मोन निस्तुकी कयलकि।

महन्तजीक सहयोगसँ मन्दिरक उपरके भाग दिश एकटा छोटछीन कोठरी मे होटल शुरुह भ' गेलैक – शारदा भोजनालाय। दीनानाथक पत्नी शारदाक नाम पर फुजलै होटल। दीनानाथकें प्रसन्नता भेलैक। मुदा शारदकें लगलैक जे ई होटल नहि, ओकरा लेल कोनो जाल बुनल गेलैक अछि। ओकर नैहरक लोक गरीब छैक। मुदा एहन नहि जे बेटी-पुतौहुसँ होटल चलबाबय। शुरु होमसँ पहिने ओकर मोन भेल रहैक जे विरोध करय, मुदा से साथंस नहि भेलैक। रामदुलारीक मुंहमे भीक देब केहन-केहन पुरुष बुतें नहि होइत छैक, शारदा की अछि ?

एक्कहिटा कोठरी भोजनालय। बहरिया भाग दिश एक कोनमे एकटा स्टैंड पर गैस चुल्हा। चुल्हाक चारुकात बासन सभ– भात, दालि, तीमन-तरकारी, भुजिया-अँचार बला। भीतरमे छोट-छोट तीनटा टेबुल आ बेंच लगाओल। देवाल पर टांगल गेल फ्रीज। आर बहुत रास वस्तु देवाले पर टांगल। रामदुलारी रोटी-भात बनाबय। गहिंकीक थारी सांठय। भावनात्मक सम्बोधनसँ मोहय गहिंकीकें। ककरो बेटा, तँ ककरो बेटी, तँ ककरो पुतौहु कहय। शारदा परसन दिअय। ऐंठि उठाबय। धोअय। आ एकटा कोनमे चुपचाप बैसि जाय। बैसलोपर ओकरा लेल काज राखल रहैक। आटा सानब। दालि फ्राइ करब। आदि ...

शारदा सोचय। बड नटकिया अछि बुढिया। कोना मोहि लैत छैक गहिंकीकें। जे एक छाक एहि होटलमे खा क' गेल, से फेर-फेर अबैत अछि। ओकरा सऽख भेलैक। एहिना बनौओ मोनसँ जँ एक बेर पुतौहु कहितैक, तँ सासुक लिलसा पूरा भ' जइतैक ओकर। रामदुलारी सासु नहि, राच्छसनी छैक। एक्कहुटा नोकर नहि रखलके भोजनालयमे। सभ वर्णक ऐंठिकुठि पुतोहुसँ उठबबैत छैक।

भोजनालय चल' लगलैक। प्रात: आठे बजेसँ शुरुह भ' जाइक। रातिक एगारह बजे धरि। शारदाक खटनीक तँ कोनो समये ने बान्हल रहैक। प्रात होइतहिं खटनी शुरुह। रातिमे एगारह बजे भोजनालय बन्न होइक, तँ धरैत-उसारैत बारह बाजि जाइक। तखन ओछाओन पर जाय शारदा। ओछाओनो पर चैन कहाँ भेटैक। भोजनालयमे माय नोचैक आ ओछाओन पर बेटा।

भोजनालय खोललाक बादेसँ पतिक मादे शारदाक मान्यता बदल' लागल छलैक। आन खन तँ गोबर गनेस दिनमे कखनो क' कोम्हरोसँ आबि भोजनालयमे देखि जाइक। बेसी काल मन्दिरे दिस ढहनाइत रहैछ। मुदा राति क' बड़ काबिल। सबेरे सूति रहैत छल। अधरतियामे जखन शारदाक सुतबाक बेर होइक तखन एक निन्न पूरा भ' जाइक दीनानाथक। आ शुरुह भ' जाइक एक भगाह लूटि। कोनो बाजक गफ्फामे पड़लि निरीह चिड़ै जकाँ निस्तेज शारदा कखन निसभेर भ' जाय, से ओकरो नहि बुझाइक।

भोरे उठला पर शारदा सोचय। पति-पत्नी माने राति क' संगे सुतबेटा होइत छैक की ?

रामदुलारीक स्थिति सुधर' लगलैक। जहिना-जहिना बैंकक पासबुक भरैत गेलैक, रामदुलारीक पुरान अर्थ – लिप्सा पुनः जगजियार होम' लगलैक। पुनः सौंसे देहमे विष सनसनाय लगलैक। ओकर मोन पुनः मन्दिर दिस घुंम' लगलैक। ओ सोचलकि। किछुकर'सँ पहिने दुनू बेटाक जोगाड धरा लेब आवश्यक। खने आभास भेलैक – दुनू नहि एक्कहिटा। मात्र दीनानाथक जोगाड। रामनाथक लेल तँ मन्दिरक गद्दी देख, लागलि छलि ओ।

महन्तजीसँ भेंट कयलकि। महन्तजीक व्यवहारमे एकटा अंतर देखलकि ओ। भोजनालयक फुजलाक बाद महन्तजी कने बेसी मोजर देब' लागल छलथिन। एकर कारण इहो भ' सकैत छलैकजे शारदा भोजनालयक बाद ओ जहिया कहियो महन्तजीसँ भेंट कयलकि, नीक सगुन आ चढौआ ल' क' गेलि। ओना ई गप्प फराक जे घुरती काल किछु बेसीए ल'क' आयलि – कोनो-ने-कोनो रूपें। घाटाक सौदा मंजूर नहि छैक रामदुलारीकें। आ महन्तजी सेहो घाटाक व्यवसाय नहि करैत छथि।

शारदा भोजनालाय दिस जे गली घुमैत छैक, ताहि कोने पर कने जगह खाली भेलैक आ ओत' फुजि गेलैक दीनानाथक ऑडियो कैसेटक दोकान। भक्तिपरक गीत ... फिल्मी धुन पर भगवतीक गीत-विभिन्न लोक भाषामे ... डिस्को भक्ति ... पॉप भक्ति ... रैप भक्ति ... गनगनाय लगलै दीननाथक दोकानमें।

रामनाथ मायका मोन छोट क' देलकै। ओ कोनहुना मन्दिरक काज करबा लेल तैयारे नहि भेल। ओ कहलकै मायकें जे दर्शनियाक गरदनि काट' ओ नहि जायत। ताहि पर रामदुलारी बुझौने छलि, "तोरा अनर्गल लगैत छौक। जँ कोनहुना ई काज बेजाय होइतैक तँ एतेक दर्शनिया अबितैक ? भगवती महामहिमामयी थिकीह। सभक कल्याण करैत छथि – दर्शनियोक आ पंडो सभक। हुनका एहि बात-व्यवस्थासँ की लेना-देना। ओ तँ भक्तक भावना देखैत छथिन।"

"तें पंडा सभकें सेहो दर्शनियाक भावना देखक चाही, जेबी नहि। पंडो तँ भगवान्क प्रतिनिधिये भेलैक ने। "रामनाथ बाजल, "हमरा बुतें ई ठकहरी बला काज नहि होयतौक। हम बिजनेस करबौक – फूल के हॉल सेल एत' एक्कहुटा नहि छैक। दोकानदार सभकें बनारससँ आन" पडैत छैक। खूब चलतै एत'।

रामदुलारी कने काल चुप भ' गेलि। अपन उद्देश्य फेर मलिन होत लगलैक रामनाथ एहि तरहें जुआ पटकि देतैक, से सोचनहुँ ने छलि ओ।

किछु दिनक मौन-मीमांसक बाद रामनाथक योजना नीक लगलैक रामदुलारीकें। हीरोपनी करैत-करैत एकटा नीक व्यवसाय सोचलक छौंडा। रामनाथक दक्षता पर कोनो सन्देह नहि रहैक। पडहर छैक छौंडा। चला लेतैक फूलक धंधा।

एम्हर शारदा तनाओग्रस्त रह' लागलि। भेलैक ई जे ओ माय बन' बाली भेलि। हदमदी जखन बोकरनाइमे बदलि गेलैक, तँ ओ रामदुलारीकें कहलकै जे आब किछु आराम कर' चाहै- ए। मोन अलसाइत छैक। मुदा रामदुलारी नहि मानलकि ओ बाजलि, "हमहूँ बच्चा जन्मेने छी। पहिले-दोसर माससँ कपड़कोंट नहि लागल रहय। बाप के ने जुड़य आ ... कीदन ...।

शारदा मोन मसोसि क' रहि गेलि। दीनानाथकें कहलकि। ओहो कहलकै जे मायकें कहब उचित। समय अयने माय ओकरा भोजनालयक काजसँ फरकति क' देति। तथापि साभंस जुटवैत-जुटवैत एक दिन दीनानाथ मायकें कलहकै जे शारदा कें

आराम, देलजाइक। ओकरा काजक लेल एकटा नोकर राखि लेल जाय। मुदा उतारामे रामदुलारी जेना ने डपटलकि जे दीनानाथक सिटी-पिट्टी गुम्म। ओ बाजलि, " एखनि कोन हडबडी छलै स'ख-मौजके। नओ मास पहिने आ बादमे बच्चाक बहन्ने ...। रामनाथक बियाहक बाद बाल-बच्चा जन्मबितय तँ नहि होइतै। एकटा दोसराति तँ होइतैक होटल ले'। नोकरेसँ भोजनालय चलतै, तँ एकटा हमरो सांती राखि ले। आब हमहूँ नहि सकै छी।"

दीनानाथ चुप्पे रहि गेल। शारदा भोजनालय पूर्ववत् चल' लगलैक। शारदा अपन देह घिसिआय-घिसिआय खटैत रहलि। ओ खिन्न रह' लागलि। सासुकें किछु कहि नहि पाबय। कखानो क' रोटीमें औंस' ले' घी बरकाब' काल मोनमे उपजैक जे तसला भरि घी कडका क' बुढयेक देह पर ढारि दी। आब्र ओकर परसन देवाक विधि बदल' लगलैक। गहिकी कम्मो मांगैक, तैयो ओ बेसीये क' ओगारि दैक। जे एकटा मेरचाइ मांगैक तकरा तीनटा दैक। रामदुलारी देखय आ बरसि पड़य पुतौहु पर। थोड़ेक काल गुम्हरैत बैसि जाय आ पुन: जोतनीमे लागि जाय शारदा।

फल ई भेलैक जे चारि मासक बाद आगत शिशु खून-पीउज भ' क' बाहार भ'गेलैक शारदाक गर्भसँ।

जहिना कानो नव काज शुरुह कर'सँ पहिने रामदुलारी महन्तजीसँ भेट करैत छलि, तहिना एहू बेर रामनाथक व्यवसायसँ पहिने ओ महन्तजीसँ भेट कए गेलि। एहि बेर खूब मोनसँ महन्तजीक लेल चढौआ सांठलकि।

रामनाथक दोकान खुलि गेलैक। रामनाथ अपन रोजगारमे लागि गेला। शारदा भोजनालयमे एम्हर प्रतिदिन किछु-ने-किछु झंझ-मंझ भ' जाइक। शारदा बरक' लागलि छलि। ओना किछु लोक इहो' कह लगलैक जे शारदाक मानसिक स्थिति असन्तुलित भ' गलै-ए। होम' ई लागल रहैक जे शारदाकें छोट-छोट बात पर तामस उठ' लागल रहैक। कखनो क' गहिंकी पर सेहोबरसि जाइक। जँ कोनो गहिंकी दू बेर-तीन बेर एक्कहिटा वस्तु परसन मांगैक तँ ओ बरसि जाय। पुरान गहिंकी सभकें अचरच होइक।

रामदुलारी चिन्तित रह' लागलि। ओकर चिन्तक कारण छलि शारदा। मौगी हाथसँ बहरा रहल छैक। कोनो बात लगा क' नहि रखैत छैक संगहि संग उन्टा दैत छैक। पुतैहुकें सैंताबाक उपाय ताक' लागलि ओ। चुप रहि जायब पराजय छलैक ओकरा लेल।

रामदुलारी चुप छलि। किछु सोचैत। आ कि मन्दिरक घण्टीक अवाज ओकरा कानमे पड़लैक। घण्टीक स्वर ओकरा तिलमिला देलकै। पड़ोसनी पंडाइन सभक धुआ नाच' लगलैक सोझाँमे। महन्तजीसँ भेंट करबाक नेयार कयलकि।

महन्तजीसँ भेंट कयलाक बाद दीनानाथकें फुसला रहलि छलि रामदुलारी, "बाउ रे! एकटा बढिया मौका छौ सोझाँ मे।"

"की ?"

मन्दिरक तन्त्र साधना-गृहमे एकटा योगिनी पंडाइन चाही- साधना गृहक गद्दीक इंचार्ज। रामदुलारी बाजलि, "हम चाहैत छी जे कनियाँकें ओहिमे रखा दियैक। नीक आमदनी छैक। सोचलहुँ – पहिने तोरेसँ विचारि ली।"

"मुदा शारदा बुतें कोना होयतैक ई काज ? "बाजल दीनानाथ, "ओकरा ने कोनो मन्त्र अबैत छैक आ ने तन्त्र। नहि, ओकरा नहि रखबही ओहि डाइनि-योगिन के

घानिमे।"
अचरज भेलैक रामदुलारीकें दीनानाथ पर। जीवनमे पहिल बेर दीनानाथ एतेक सम्हरल लगलैक ओकरा। मुदा ओ हारि मान' वाली नहि छलि, "ओत' रह' ले तन्त्र-मन्त्र किएक चाही ? कुर्सी सभटा सिखा दैत छै बाउ। मात्र दसखत कर' बाली मौगी बड़की बड़की कुर्सी सम्हारिलैत छै, तँ शारदा बुतें किएक ने होयतैक। होशियारि तँ छैके ने। मन्त्र-तन्त्र अपने सीखि जयतैक भगवतीक कृपासँ। "किछु थम्हैत पुन: बाजलि, "सोचही बाउ। भगवती टाका-पैसाक कमी तँ नहिये केने छथुन। मुदा "पावर" तँ नहि छौक। मन्दिर प्रशासनमे कतहु नहि छी हम सभ। तोहूँ बापक काज नहि सम्हारि सकले। हम सभ मूलत: पंडे ने छी। मजबूरीमे बनियाँक काज कयलहुँ ने। सभ वर्णक ऐंठि उठौलहुँ ने। जँ पुन: मन्दिरक काजमे परिवारसँ केओ लागि जाइ-ए तँ ...।"
मायक इहो गप्प जँचलैक दीनानाथकें। ओ कने काल चुप रहल आ पुन: बाजल, "तँ तोहीं किएक ने रहि जाइत छें। तों तँ शारदासँप नीक जकाँ सम्हारि सकैत छें।"
रामदुलारि सोचलकि। दीनानाथ चेष्टगर भ' रहल अछि। ओ बाजलि, "हम जँ रहि जायब, तँ होटल के चलौतौक ? शारदा बुतें चलाओल हेतैक। दस-तरहक लोक अबैत छैक– राति-विराति। जुआन पुतौहुकें एकसरिये होटल पर छोड़ि देब उचित लगैत छौक, तोरा ?"
मायक इहो गप्प जँचलैक दीनानाथकें। तथापि ओ हारि मान' बला नहि छल। बाजल, "शारदा जँ साधना-गृहक सेवामे रहति, तँ एकसरिये तोराबुतें चलतौ भोजनालय ?"
चट् द' बाजलि रामदुलारी, "होटल लेल एकटा नोकर राखि लेब।" पुन: किछु थम्हैत बाजलि, "ओना आइ धरि साधना-गृहमे स्त्रीगणकें सेवामे नहि लगाओल गेलैक अछि, मुदा महन्तजीक विशेष कृपासँ ईसंयोग आयल छौक बाउ ! हँसाथि ले। हम कतेक दिन बँचबौ आब। जेठ तँ तोहीं दुनू छें राज भोगबें।"
दीनानाथ आकृति चमकि उठलैक। मुदा, ओहो सभ प्रकारक शंकाक निवारण हेतु बैसल छल जेना। बाजल, "साधन-गृहमे बरोबरि घटना होइत रहैत छैक। पछिला बेर पुनीत खत्री एकटा साधिका संग अनर्गल काजमे पकडयलै, से ...।"
तेहने घटना सभकें रोक' ले' साधना-गृहमे महिलाके सेवामे लगयबाका बात सोचलनि अछि महन्तजी। महिलाकें राखबाक नाम पर किछु मुख्य पंडा सभ विरोध करैत छलनि, मुदा यैह बात कहि महन्तजी सभक मुँह बन्न क' देलखिन जे साधना-गृहक मुख्य हेतीह महिला। हुनक सहयोगी हेतनि पुरुष। "पुन: किछु थम्हैत बाजलि, चिन्ताक कोनो बात नहि बाउ। शारदाकें किछु नहि हेतैक। महन्तजी स्वयं ओकर अभिषेक करताह। ओकर देह बान्हि देथिन मन्त्रसँ। कुशो-कलेप नहि लगतैक शारदाकें। राज भोगति हमर पुतौहु-शारदा ... राज भोगबें तों ...। बस खाली शारदाकें मना ले।
दीनानाथ शारदाकें मनाब' मे लागि गेल। मुदा शारदा नाक पर माछी नहि बैस' दैक। शारदाकें ई काज कोनहुना पसिन नहि रहैक।
रामदुलारी गणित कर' लागलि। शारदा साधना-गृहक सेवामे लागि जायति। तकर बाद ओ रामनाथक बियाह क' देति।
पनरह दिन वीति गेलैक। शारदा नहि मानलकि। रामदुलारीक कछमछी बढ' लगलैक। ओ शारदाक संग-संग दीनानाथ पर सेहो दबाब देब' लागलि। दीनानाथ सेहो

शारदाकें फुसलयबा मे लिप्त रहल। कतेक रास किरिया-सप्पत चलैत रहलै। दीनानाथ बुझबैक जे शारदा ओत' मलिकाइन भ' क' रहति। जे चढौआ औतैक, तकर हिसाबक बाद शारदेक हाथमे औतैक। अपना अनुसारें जीबि सकैछ। होटलमे ऐंठि उठाब' सँ फरकति तँ भ' जायति। आ मायो आब कतेक दिन बँचतैक ओकरा सभक हिसाब-किताब लेब' ले'।

बुढिया एतेक जल्दी नहि मरि सकैछ, से शारदाकें विश्वास छलैक। ओ सोचय– चकेठगरि अछि मौगी। कतेकके खायत ... कतेकके बर्बाद करत, तखन ने मरत। ओकर मोन होइक – नैहर चलि जाय भागि क'। मुदा माय-बापक दयनीयता ओकरा रोकैत छलैक। नैहर जायति, तँ ओहो तँ भारे भ' जायति बाप-माय पर। ओ मोनो-मोन बाजय– परिस्थितिसँ कोना सकपंज अछि जे चाहियो क' माय-बापक कोनो मदति नहि क' पबैछ। जा धरि ई चंडालनी जीवैत रहतै, से भैयो नहि सकैत छैक।

आ एक दिन रामदुलारीक संग दीनानाथकें सेहो तखन छगुन्ताक संग प्रसन्नता भेलैक, जखन शारदाकें दुर्गा सप्तशतीक पोथी पढैत देखलक। रामदुलारीकें अभीष्ट ल'ग बुझाइ पडलैक। ओ दौगलि महन्तजीसँ भेंट कर'।

शारदा गंभीर रह' लागलि। ओ मात्र दुर्गा सप्तशतीक श्लोक सभ पढैत देखल जाय लागलि। दीनानाथकें प्रसन्नता होभ' लगलैक।

ओहिदिन शारदाक अभिषेकक मुहूर्त रहैक। मन्दिरक मुख्य-मुख्य पंडा सभ जुटल छलैक। तान्त्रिक सभ सेहो जुटल छल। दीनानाथ सेहो। आर बेसी लोककें ओत' अयबाक अनुमति नहि देने रहथिन महन्तजी।

लाल वस्त्रसँ आवेष्ठित शारदा आयलि। संगमे रामदुलारी छलि। शारदा सभसँ पहिले भगवतीक दर्शन कर' गेलि। ओ भगवतीक सोझाँ ध्यानं लगा क' बैसि गेलि। कने कालक बाद हिंचूकि-हिंचूकि कान' लागलि। किछुकाल कतैन रहलाक बाद चुप भेलि। मोनहि मोन भगवतीसँ माफी मांगलकि। मोन भेलैक जे भगवतीसँ पूछय – माय अहाँक कत्ता किएक ने फरकै-ए ? पुनः मोन भेलैक जे कनियो काल ले' भगवतीसँ कत्ता वमांगि लिअय। मुदा ...। ओ भगवतीक चरणमे अपन माथ झुकौलकि आ बहार भ' गेलि।

तन्त्र साधना-गृहक हवन-कुण्ड लग पूजाक आसन लागल रहैक। कहल जाइत छैक जे एहि हवन-कुण्डमे मात्र श्मसानक लकडी जराओल जाइत छैक। हवन-कुण्डक ताप आ धुआँसँ साधना-गृह चिराइन-चिराइन महकैत रहैक।

महन्तजी साधना-गृहमे अवतरित भेलाह। गरदनिमे मोट-मोट रुद्राक्ष आ स्फटिक हुनका आकर्षक आ भयाओन बनबैत छलनि।

रामदुलारी महन्तजीक अभिवादन कयलकि। शारदा बैसलि रहलि – आँखि मुनने। मोने-मोन भगवतीकें गोहराबैत।

महन्तजी कोनो मन्त्र पढि क' उन्टा सरिसो शारदाक चारुकात छिटलनि। दीनानाथ देखलक। आश्वस्त भेल। तकर बाद महन्तजी कने काल शारदाकें सर्वाङ्ग निहारलनि।

शारदा आँखि खोललकि। चारुकात नजरि खिड़लकि। रामदुलारीकें गुराड़ि क' देखलकि। महन्तजीकें देखलकि। हुनक नजरि अपन देह पर गड़ैत लगलैक। ओहो महन्तजी दिस गुराड़ि क' ताक' लागलि।

महन्तजी परिस्थिति बुझलनि। नजरि हटौलनि। रामदुलारीकें साधना-गृहसँ बहार होयबाक संकेत कयलनि। महन्तजी आ शारदाके छोड़ि आर सभ गोटेकें हंसोथि क' रामदुलारी साधना-गृहसँ बहार भ' गेलि। महन्तजी अपन गंभीर चालिसँ हवन-कुण्डक चारुकात प्रदक्षिण कयलनि आ केबाड़क जिंजिर भीतरसँ चढ़ा देलनि।

बाहर लोक सभक थहाथहि छल। तखनहिं ओड़हुल फूलक मुट्ठा लेने रामनाथ सेहो पहुँचल। कने कालक बाद शारदाक स्वर सुनि पड़लैक – "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाय विच्चे।" स्वर लयात्मक रहैक। स्वर नहूँ-नहूँ तीव्र होभ' लगलैक। रामदुलारीक आश्वस्तपूर्ण हाथ दीनानाथक कान्ह पर पड़लैक।

कनिये कालक बाद शारदाक स्वर मद्धिम भ' गेलैक आ किछु उठा-पटक केर ध्वनि आब' लगलैक। लगैक जेना केओ भागि रहल हो आ केओ खेहारि रहल होइक। उठा-पटकक ध्वनिक आरोह-अवरोह साफे बूझि पड़ैक बाहरसँ। रामदुलारी घोषण कयलकि, "लगै छै, साक्षात् भगवती सवार भ' गेलखिनहें शारदाका देह पर।" पुनः गोहरौलकि, " हे माय! रक्षा करु हमरा पुतौहुके ...।"

साँचे भगवती सवार भ' गेल रहथिन शारदाक देह पर। एकटा प्रबल वेगें साधनागृहक केबाड़क दुनू पट्टा दू दिस भ' गेलैक आ शारदा बाहर आयलि।

शारदाके देह पर मात्र लाल साया आ लाल ब्लाउज टा रहैक से केओ-केओ देखलकै।

लोक सभ देखलक जे शारदा हनहनाइत बाहर आयलि आ एक झपट्टा मारि रामुदुलारीक केश पकड़ि साधना-गृहमे पैसि गेलि।

जा जोक सभ भीतर अबय, रामदुलारी महन्तजीक संग हवन-कुण्डमे छटपटा रहल छलि।

बरौनी

शक्तिरूपेण संस्थिता

विश्वनाथ पण्डाको मृत्युपछि उनका छोराहरूले यजमानी सह्माल्न सकेनन्। छरिछितान हुँदो यजमान ... दुब्लाउँदो आम्दानी र दुवै छोराहरूको असफलताले विश्वनाथ पण्डाकी धर्मपत्नी रामदुलारीलाई घाइते झैं बनाइदिएको थियो। मनमनै उत्तेजित रहन्थी, कसलाई हानुँ ... कसलाई टोकुँ ...।

त्यसो त विश्वनाथ पण्डाको आम्दानीले पनि सन्तुष्ट रहन्नथी रामदुलारी। उनलाई पनि रात-दिन गुनासो पोख्ने गर्दथी। यति ठूलो मन्दिर छ। यतिका यजमान छन्। लाखौं दर्शनार्थी सधैं आउँछन्। नाम चलेका छन्– विश्वनाथ पण्डा। अनि आम्दानी यत्तिकै ...। यो भन्दा बढी त साना फुच्चेहरू पुलनिरको दोकान नजिकै अन्य दर्शनार्थीहरूलाई ठगेर कमाउने गर्दछन्।

विश्वनाथ पण्डा सोझा मानिस थिए। कहिल्यै आफ्ना यजमानहरूलाई ठगेनन्। कहिल्यै बाटामा भौंतारिएनन्। जुन दर्शनार्थी एकपटक उनीकहाँ आउँथ्यो, त्यो सधैं उनकै भइहाल्थ्यो। आफ्नो मृदुल व्यवहार र धर्मनिष्ठ विचारले उनलाई लोकप्रिय बनाइदिएको थियो। अन्य पण्डा झैं कमाएनन्, तर परिवारमा कहिल्यै भोको पनि बसेनन्। कुनै खाँचो टार्न अन्त पनि जानु परेन।

महन्तजीले विश्वनाथ पण्डालाई निकै मान्नु पनि एउटा संयोग नै थियो। महन्तजी कहिलेकाहीँ उनीकहाँ आउनु विश्वनाथ पण्डाकै सौभाग्य थियो। घण्टा-दुई घण्टा बस्दथे। त्यसो त अन्य पण्डाहरू जति 'चढौना' (भक्तहरूले देवतालाई अर्पण गरेको रकम) विश्वनाथ दिन सक्दैनथे महन्तजीलाई। कहाँबाट दिनु। त्यति आम्दानी नै थिएन। भगवतीको दर्शनको लागि मन्दिरभित्र ब्राह्मण-भोजन, कुमारी-भोजन, बटुक-भोजनको नाममा वा भगवतीको चरण-स्पर्श गराउने नाममा पहिले दर्शनार्थीहरूको गोजी छामेर मुठी न्यानो पार्ने बानी विश्वनाथ पण्डालाई थिएन। श्रद्धाले जेजति यजमानले दियो त्यै बढी हुन्थ्यो।

श्रीमतीसँग कहिल्यै ठ्याक बसेन विश्वनाथ पण्डाको। बसोस् पनि, कसरी ? रामदुलारी अजस्र आयको आकांक्षा माइतबाटै लिएर आएकी थिइन्, जसलाई पूरा गर्न

सकेनन् विश्वनाथ पण्डाले। रामदुलारी अरू पण्डाहरूको आय देखी लालायित हुन्थी, छट्पटिन्थी ... विश्वनाथ 'सन्तोषं परम् सुखम्' को पाठ पढाउने गर्दथे। कसरी ठ्याक बसोस् ?

अर्थ लोलुपताले घाइते बनाइदिएको थियो रामदुलारीलाई। मन कहिल्यै स्थिर रहेन। पण्डाजीसँग मुख लागेपछि कुनै न कुनै उपाय सोचिरहन्थी। एकदिन एउटा उपाय सोची र महन्तजीसँग भेटेर आई।

अर्को दिनदेखि विश्वनाथ पण्डाको सेवा भगवतीको मूर्तिको छेउमा बसी दर्शनार्थीहरूको प्रसाद चढाउनु निर्धारित भइहाल्यो। रामदुलारीको मनको मुजुर नाच्न थाल्यो। अब उसले पनि अरू पण्डाइन (पण्डाकी श्रीमती)हरूलाई टेर्ने छैन। उसको लोग्नेले भगवतीको गद्दी भेट्टाएको छ। आठ घण्टाको डिउटी– बिहानै छ बजे पट (ढोका) उघ्रिने बेलादेखि दुई बजेसम्म। त्यसो त मन्दिरको पट बाह्र बजे नै बन्द भइहाल्छ। त्यसपछि हर-हिसाब हुन्छ। लेन-देन हुन्छ। दुई त बजी नै हाल्छ।

६ घण्टा कम होइन। रामदुलारीले सोची। उसलाई मन्दिरको आन्तरिक स्थितिको सम्झना भयो। पित्तलको बारले घेरिएकी छिन् भगवती। भित्र मूर्तिसम्म पुग्ने सानो ठाउँ छोडिएको छ। दर्शनार्थीहरू निहुरेर भित्र पस्छन्। भगवतीको पूजा- अर्चना गर्दछन्। चरण-स्पर्श गर्दछन्। तर यो सौभाग्य त्यसैले पाउँछ जसले कम्तीमा एकाउन्न रुपियाँ त्यहाँ बसेको पण्डालाई दिन्छ। अन्यथा जे गरेपनि प्रवेश निषेध। बाहिरैबाट दर्शन गरोस्। उसले ल्याएको प्रसाद बाहिरै लुछिन्छ र भगवतीको चरण-स्पर्श गराई फर्काइने गरिन्छ। प्रसादसँग जुन चढौना रुपियाँ रहन्छ, त्यो मात्रै राखिने गरिन्छ।

रामदुलारीले भुईं छाड्न थालेकी थिई। कहिलेकाहीँ विश्वनाथ पण्डाको लागि दयाभाग जाग्थ्यो। मिहनेत पनि त कम छैन। परिश्रम पनि धेरै छ। अनि पो दुई-चार रुपियाँ आउँछ। रामदुलारीलाई लाग्यो ऊ मालिक्नी भएकी छे ... मालिक्नी मात्रै होइन, महन्थिनी पनि ...। मन्दिरको एकएक दृश्य आँखा अगाडि नाच्न थाल्यो। भगवतीको दर्शनपछि बाहिरका दृश्यहरू। नरिवल फुटाउने स्थान। सोची, समय अनुकूल रह्यो भने महन्तजीलाई भनेर जेठालाई नरिवल फुटाउने ठाउँमा डिउटी लगाइदिने। अर्कोतिर झ्यालमा भगवतीको सामुन्ने दीप बाल्ने ठाउँ ...। मनमनै कान्छाको लागि त्यो ठाउँ सुरक्षित गराउने निधो गरिन्। त्यतिखेरै सम्झना भयो– दानपेटी। चित्त अघोर भयो। हत्तेरी ...। रहोस् यो त सरकारी दानपेटी पो हो। ढ्वाङढ्वाङ बजि नै रहन्छ। कसरी भरियोस् ? दर्शनार्थीहरूले भगवतीलाई चढाएपछि नरिवल फुटालेको दक्षिणा, दीप बालेको दक्षिणा, पार्वती मन्दिरको चढौना, महादेव मन्दिरको चढौना, तन्त्र साधना गृहको चढौना, हवन-कुण्डको चढौना, महादेव मन्दिरको चढौना, तन्त्र साधना गृहको चढौना, हवन-कुण्डको चढौना, ढोल पिट्ने र दर्शनको लागि लाइनमा उभिएका मानिसहरूलाई पङ्खा हम्कने फुच्चेहरूलाई दान दिई सकेपछि बाँकी बचे पो यस सरकारी दानपेटीमा कसैले केही हालोस्। भलै सरकारले लेखिदिएको होस्– पण्डाहरूलाई अर्थदान न गर्नोस्, जेजति दान गर्नु छ, सरकारी दान पेटीमा हाल्नोस्', तर दर्शनार्थीहरूले आफ्नो धर्म त छाड्दैनन् नि ! अर्को कुरा यो पनि छ कि कलक्टर (प्रशासनिक अधिकारी)बाट बाँकी रहे यो सरकारी दानपेटीमा जान्छ।

प्रत्येक मसान्तमा कलक्टरको सवारी महन्तजीकहाँ हुने गर्दछ। कलक्टर साप सपरिवार दर्शनको लागि आउँदछन्। हर-हिसाब हुन्छ र त्यसबाट केही छाडिन्छ सरकारी

दानपेटीको लागि। सप्पै थाहा छ रामदुलारीलाई। महन्तजीसँग मेल-जोल भएको कारण यो भित्री कुरो थाहा छ उसलाई।

तर विश्वनाथ पण्डा आफ्नो नया सेवाको लागि तयार थिएनन्। रामदुलारी उग्रचण्डी भैहालिन्। जेठो छोरो दिनानाथ बाउको पक्ष लिई वोल्यो, तर आमाको एउटै झपारले चेतबाबा काशी भयो। कान्छा रामनाथ आमाको पक्षमा थियो। बुहारी एउटै थिइन् दीनानाथकी स्वास्नी। यस महाभारतमा मुख खोल्ने आँट उसलाई कहाँबाट हुन्थ्यो ? अर्को कुरो, उसको बिहा भएको वर्षदिन पनि भएको थिएन। नया दुलही। के बोल्नु ? जब पतिकै चल्दैन भने उसको के चल्नु ? त्यसमा पनि दाइजो विनाकी बुहारी। गरिवघरकी छोरी। सासुको हरघडी विनासित्तिको झर्को वोलीले ऊ भक-भक उम्लिरहन्छे। ससुरोके पक्षमा भएर पनि के ?

अन्ततः विश्वनाथ पण्डाले स्वीकार गर्नुपर्‍यो। तर एक महीनापछि नै घरमा पुनः महाभारत आरम्भ भैहाल्यो। विश्वनाथ पण्डालाई एक महीना पुग्नेवित्तिकै त्यस सेवाबाट हटाइयो। उनी असफल सिद्ध भए। कुनै पनि दर्शनार्थीको गोजी मार्न सकेनन्। मन्दिरको आम्दानी घट्यो। चिन्तित हुन थाले महन्तजी। छटपटाउन थाले कलक्टर।

रामदुलारीको कुनै दाउ काम लागेन। उसले पतिको गद्दी वचाउन सकिन। कुनै पनि सर्तमा यति ठूलो घाटा सहन तयार थिएनन् महन्तजी। र रामदुलारीको मनमा विषवृक्ष उम्रियो।

विश्वनाथ पण्डा फेरि पुरानै काममा लगाइए। यस एकमहीनामा केही यजमानहरू अर्केतिर गए। दीनानाथबाट केही हुन सकेन। घरमा 'एक-से-एक' घटना घट्न थाल्यो। पण्डाजीको मनमा विरक्ति पस्यो। उनी घर जान कम गरिदिए र अन्ततः मन्दिरकै प्राङ्गणमा बस्न थाले। तर मन्दिरको प्राङ्गणमा पनि धेरै दिन बस्न सकेनन्। एकदिन बिहानीपख भगवतीको पट् (ढोका) उघ्रिनुपूर्व मन्दिरको बाहिरी भरचाङमा मानिसहरूले उनलाई मृत अवस्थामा देखे।

पतिको मृत्युपछि केही दिन मात्रै शोकमग्न समय बिताई रामदुलारीले। पण्डाजीको मृत्युपछि जे-जति आम्दानी आउँथ्यो, त्यो पनि बन्द भयो। परिवारको अगाडि प्रश्नचिह्न उभियो। अरू केही देखिँदैनथ्यो। दीनानाथ मन्दिरतर्फ घुमी-फिरी आउँथ्यो। केही लिई आउँथ्यो, तर त्यो त हात्तीको मुखमा जीरा झैँ हुन्थ्यो। रामनाथ बाबुकै बेलादेखि बिग्रेको थियो। घुम-फिरबाट फुर्सद नै थिएन उसलाई।

दीनानाथ रक्षा-सूत्र बाँध्ने मन्त्र सिक्न थाल्यो। तर एक महीनाको अथक प्रयासपछि पनि ऊसँग मन्त्रको शुद्धशुद्ध उच्चारण हुँदैनथ्यो। रामदुलारीलाई विश्वास भयो, दीनानाथले यजमान सम्हाल्न सक्दैन। अरू कुनै उपाय खोज्नु पर्छ।

अति सहज र दयनीय किसिमले महन्तजीलाई भेटिन्। गम्भीरतापूवक उसको समस्या महन्तजीले सुने। केही बेर मौन रहे। फेरि बोले, "मन्दिरको सेवासम्बन्धी तृष्णा छोडिदेऊ। तिम्रा छोराहरू त्यसयोग्य छैनन्। एउटा लाटो, अर्को हीरो।"

"अनि के गर्न सक्छौं त हामी ?"

"कुनै पसल-ससल बारे विचार गर। फूलमाला, प्रसाद,परचून वा अरू केहीको पसल।" भने महन्तजीले, "दुई जना सासू-बुहारी घरमा बसी के गर्छौ ? बाहिरको काम-काज छोराहरूले पनि केही न केही गरिहाल्छन्।"

त्यो रात निद्रा लागेन रामदुलारीलाई। सोच्न थालिन् बजारको बारेमा। महन्तजी

जुनजुन वस्तुको बारेमा कुरा गर्थे, सबै थोकको दोकान त छँदैछ। तिनै वस्तुको पसल खोलेमा स्पर्द्धा हुनेछ। र त्यतिखेरै एउटा विचार मनमा आयो। किन न एउटा होटेल खोलौं। होटेल थोरै छ। मेन रोडमा त्रिपाठी भोजनालय। मन्दिरतर्फको माथिल्लो भागमा एउटा मात्रै मारवाडी भोजनालय छ। होटेल चल्न सक्छ। उसले मनमनै निधो गरी।

महन्तजीको सहयोगमा मन्दिरको माथिल्लो भागतर्फ एउटा सानो कोठामा होटेल शुरु भयो– शारदा भोंजनालय। दीनानाथकी श्रीमतीको नाममा होटेल खुल्यो। दीनानाथ खुशी भयो। तर शारदालाई लाग्यो यो होटेल होइन उसको लागि कुनै जाल बुनिएको छ। उसको माइती गरिब छन्। तर छोरी-बुहारीसँग होटेल चलाउन लगाउने खालका पनि होइनन्। शुरु हुनुभन्दा पहिले विरोध गर्ने उसको इच्छा थियो, तर आँट गर्न सकिन। रामदुलारीको अगाडि कस्ताकस्ता लोग्नेमान्छे त मुख खोल्न सक्दैनथे भने शारदाको के कुरा ?

एउटा मात्रै कोठामा भोजनालय। बाहिरी भागमा एकातिर कुनामा एउटा स्टैण्डमा ग्यास चुह्लो। चुह्लोको चारैतिर भाँडा-कुँडाहरू– भात, दाल, तरकारी, भुजिया, अचार आदिको। भित्रपट्टी साना-साना तीनवटा टेबुल र बेन्चहरू लगाएका। भित्तामा झुण्डचाइएको फ्रीज। र अन्य धेरै थोक भित्तामै झुण्डचाइएको। रामदुलारी रोटी-भात पकाउँथिन्। ग्राहकहरूको थाल लगाउँथिन्। भावनात्मक सम्बोधनले ग्राहकहरूलाई आकर्षित गर्दथिन्। कसैलाई छोरा, त कसैलाई छोरी, त कसैलाई बुहारी भन्थिन्। शारदा थपन दिन्थिन्। जूठो उठाउँथिन्। धुन्थिन्। र एउटा कुनामा चुपचाप बसिरहन्थिन्। बसे पनि उसको लागि काम रहन्थ्यो। पिठो मुछ्नु। दाल फ्राइ गर्नु। आदि ...।

शारदा सोच्दथिन्। खुबै नखरमाउली छे बुढी। के गरी मोहित पारिहाल्छे ग्राहकहरूलाई। जसले एक छाक यसहोटेलमा खान्छ, त्यो पटकपटक आइरहन्छ। उसलाई रहर जाग्यो। यसरी नै कृत्रिम भावले भएपनि यदि एकपटक 'बुहारी' भन्दिए उसको सासूको लालसा पूरा हुने थियो। रामदुलारी सासू होइन, राच्छेसनी छ राच्छेसनी। एउटा पनि नोकर राखिनन् भोजनालयमा। सप्पै जातको जूठो-पुरो बुहारीलाई गर्न लगाउँछे।

भोजनालय राम्ररी चल्न थाल्यो। बिहान आठ बजेदेखि शुरु भइहाल्थ्यो। बेलुकीको एघार बजेसम्म। शारदाको खटनीको कुनै समय नै तोकिएको थिएन। उज्यालो हुनेबित्तिकै डिउटी शुरु। बेलुकी एघार बजे भोजनालय बन्द हुन्थ्यो, तर भाँडा-कुँडा ठिक्क पार्दासम्म बाह्र बजिहाल्थ्यो। त्यसपछि ओछ्यानमा जान्थी शारदा। ओछ्यानमा पनि कहा फुर्सद पाउनु। भोजनालयमा आमाले लुछ्थी ओछ्यानमा छोरा।

भोजनालय आरम्भ भएपछि पतिको बारेमा शारदाको मान्यता परिवर्तन हुन थालेको थियो। अरू बेला त गोबरगनेस (लाटो)। दिउँसोतिर कुनै बेला कतैबाट भोजनालयमा आई हेरी फर्किन्छ। धेरैजसो मन्दिर वरिपरि नै डुलिरहन्छ। तर बेलुकीपख अति बुद्धिमान। छिटै सुतिहाल्छ। मध्यरातमा जतिखेर शारदाको सुत्ने बेला हुन्छ त्यतिन्जेलसम्म दीनानाथको पहिलो निद्रा पुग्छ। र आरम्भ हुन्छ एकतर्फी लुट। कुनै बाजको पञ्जामा परेकी निरीह चरी झैं निस्तेज शारदा कुन बेला ढल्छे उसले पनि थाहा पाउँदिन।

बिहान उठ्दा शारदाले सोच्दथिइन्, के पति-पत्नीको अर्थ सँगै सुत्नु मात्र हो त ? रामदुलारीको स्थिति सुधिन थाल्यो। जसो-जसो बैङ्कको पासबुक भरिँदै गयो,

रामदुलारीको पुरानो अर्थ-लिप्सा फेरि जाग्न थाल्यो । फेरि सम्पूर्ण शरीरमा विष गनगन गर्न थाल्यो । उसको सोचमा फेरि मन्दिर नाच्न थाल्यो । उसले सोची, केही गर्नुभन्दा पहिले दुइटै छोराहरूको व्यवस्था मिलाउनु जरुरी छ ।फेरिसोची – दुइटै होइन, एउटा । मात्र दीनानाथको व्यवस्था । रामनाथको लागि त मन्दिरको गद्दी ताकेकी छ उसले ।

महन्तजीसँग भेटी । महन्तजीको व्यवहारमा एउटा फरक पाई उसले भोजनालय खुलेपछि महन्तजी अलिकति बढी मान्न थालेका थिए । यसको कारण के हुन सक्थ्यो भने शारदा भोजनालय खुलेपछि महन्तजीसँग भेट गर्न जाँदा ऊ राम्रो 'सगुन र चढौना' लिई गई । यो बेग्लै कुरा हो फर्किने वेला ऊ केही बढ्ता लिएर नै फर्की कुनै-न-कुनै रूपमा । नोक्सानको व्यापार स्वीकार्य थिएन रामदुलारी र महन्तजी पनि नोक्सानको व्यापार गर्दैनथे ।

शारदा भोजनालयनिर, जहाँ घुम्ती छ, त्यहीँ कुनामा केही ठाउँ खाली गराइयो र त्यहीँ खुल्यो दीनानाथको अडियो क्यासेट पसल । भक्ति गीत ... फिल्मी धुनमा भगवती गीत विभिन्न लोकभाषा... डिस्को भक्ति ... पप भक्ति ... ऱ्याप भक्ति ... घन्किन थाल्यो दीनानाथको पसलमा ।

रामानाथले आमाको मन सानों पारिदियो । ऊ कुनै पनि हालतमा मन्दिरको काम गर्न तयारथिएन । उसले आमालाई भन्यो, ऊ दर्शनार्थीहरूलाई ठग्न जाँदैन । रामदुलारीले सम्झाएकी थिइन्"तिमीले नराम्रो काम ठानेको छौ । यो नराम्रो काम भए यत्तिका दर्शनार्थीहरू आउँथे ? भगवती महिमामयी छिन् । सबैको कल्याण गर्छिन् । दर्शनार्थीको पनि र पण्डाहरूको पनि उनलाई यस बात-व्यवस्थासँग के मतलब । उनी त भक्तको भावना हेर्छिन् ।"

"त्यसैले पण्डाहरूले पनि भक्तको भावना बुझ्नुपर्छ गोजी होइन । पण्डाहरू पनि त भगवान्कै प्रतिनिधि हुन् । "रामनाथले भन्यो– "मबाट यो ठग्ने काम हुँदैन । म बिजनेस गर्छु, फूलको होलसेल । यहाँ एउटा पनि छैन । पसलेहरूले बनारसबाट ल्याउनुपर्छ । राम्रो चल्छ यहाँ ।"

रामदुलारीले केहीछिन चुप लागिन् । उसलाई आफ्नो उद्देश्य फेरि मलिन भइरहेझैं लाग्यो रामनाथले यसरी कुरो फेर्छ, सोचेकी थिइन उसले ।

केही दिनको मौन-मिमांसापछि रामनाथको योजना राम्रो लाग्यो रामदुलारीलाई । हीरोपनी गर्दा-गर्दै राम्रो व्यवसाय सोचेको छ केटाले । रामनाथको दक्षतामा कुनै शङ्का थिएन । चलाख छ केटो । राम्रै चलाउनेछ फूलको व्यवसाय ।

यता शारदा तनावग्रस्त रहन थालिन् । कुरो के थियो भने ऊ दोजिया भएकी थिई । वाक्वाकी जब उल्टीमा बदलियो, अनि उसले रामदुलारीलाई भनी– ऊ अब केही आराम गर्न चाहन्छे । चित्त कस्तोकस्तो हुन्छ । तर रामदुलारीलाई केही प्रभाव परेन । उसले भनी "मैले पनि छोरा पाएकी छु । पहिलै-दोस्रै महीनादेखि कपडकोट लागेको थिएन । बाबुको छैन हुति र छोरी ... केके ।"

– शारदा मन मारेर बसिन् । दीनानाथलाई भनी । उसले पनि भन्यो– शारदालाई रामदुलारीले यसरी हकारिन् कि दीनानाथको सिट्टी-पिट्टी नै हरायो । उसले भनी "अहिल्यै कुन हतार थियो मोज-मज्जा गर्ने । अहिले नौ महीना र पछि बच्चाको निहुँमा ... । रामनाथको बिहेपछि बच्चा जन्माउनु हुँदैनथ्यो ? एकजना अर्की त हुन्थी होटेलमा । नोकरबाट नै होटल चल्छ भने मलाई पनि आराम देऊ । अब म पनि सक्दिनँ ।"

दीनानाथ चुप लाग्यो। शारदा भोजनालय पूर्ववत् चल्न थाल्यो। शारदा आफ्नो शरीर घिसारी-घिसारी काम-काज गरिरहिन्। ऊ खिन्न रहन थाली। सासूलाई केही भन्न सक्दिनथिई। कहिलेकाहीँ रोटीमा घिउ तताउने बेला तसलाभरि घिउ तताई बुढीको जिउमा खन्याईदिने मन हुन्थ्यो। अब ग्राहकहरूलाई थपन दिने विधि पनि बदलिन थाल्यो। ग्राहकले थोरै थपन मागेपनि बढी नै हालिदिन्थिन्। एउटा खोर्सानी माग्दा तीनवटा दिन्थिन्। रामदुलारीले हेर्नेबित्तिकै खनिइहाल्थी बुहारीमाथि। केही बेर ठस्किएर बसेपछि फेरि जोतिइहाल्थी शारदा।

परिणाम के भयो भने चार महीना पनि आगत शिर रगत-पीप बनी बाहिरियो शारदाको गर्भबाट।

जसरी कुनै नयाँ काम गर्नुभन्दा पहिले रामदुलारी महन्तजीसँग भेट्ने गर्थी त्यसैगरी यसपटक पनि रामनाथको व्यवसायभन्दा अगाडि ऊ महन्तजीसँग भेट्न गई। यसपटक मज्जासँग महन्तजीलाई 'चढौना' चढाई।

रामनाथको पसल खुल्यो। रामनाथ आफ्नो व्यवसायमा व्यस्त भयो।

यता शारदा भोजनालयमा प्रतिदिन केही-न-केही टन्टा पर्न थाल्यो। शारदा उम्लिन थालेकी थिई। कोही मानिसहरूले शारदाको मानसिक अवस्था असन्तुलित भएको कुरा पनि भन्न थाले। के हुन थाल्यो भने स-साना कुरामा पनि शारदालाई रिस उठ्ने गर्थ्यो। कहिलकाहीँ ग्राहकमाथि नै खनिन्थी। कुनै ग्राहकले एउटै थोक दुई-तीनपटक थप्न मागेमा ग्राहकलाई झपारिहाल्थी। पुराना ग्राहकहरूलाई अचम्म लाग्थ्यो।

रामदुलारी चिन्तित रहन थाली। उसको चिन्ताका थिई शारदा। यो आइमाई हातबाट फुत्किँदैछे। कुनै कुराको टेरपुच्छरै लाउँदिन। केही भन्यो कि फर्काइहाल्छे। बुहारीलाई तह लगाउने उपाय खोज्न थाली ऊ। चुपचाप बस्नु पराजय थियो उसको लागि।

रामदुलारी मौन थिई। केही सोच्दै कि मन्दिरको घण्टीको स्वर उसले सुनी। घण्टीको स्वरले उसमा डाहा पर्‍यो। छिमेकी पण्डाइनहरूको अनुहार नाच्न थाले उसका आँखा अगाडि। महन्तजीसँग भेट्ने निधो गरी।

महन्तजीसँग भेटेपछि दीनानाथलाई फुल्याउँदै थिई रामदुलारी "बाबु एउटा राम्रो अवसर छ।"

"के ?"

"मन्दिरको तन्त्र साधना-गृहमा एउटी योगिनी पण्डाइन चाहिएको छ– साधना गृहको गद्दी इञ्चार्ज।" रामदुलारीले भनी– "म चाहन्छु बुहारीलाई त्यसमा राखिदिउँ। राम्रो आम्दानी हुन्छ, सोचेँ पहिले तिमीसँग सल्लाह गरुँ।"

"तर शारदाबाट कसरी हुन्छ यो काम ?" दीनानाथले भन्यो– "न उसले कुनै मन्त्र थाहा पाएकी छे न तन्त्र। हुँदैन, उसलाई राख्नु हुँदैन त्यस बोक्सी-योगिनीको घानीमा।"

दीनानाथलाई हेरेर अचम्म लाग्यो रामदुलारीलाई। जीवनमा पहिलो पटक दीनानाथ यति बुद्धिमान लाग्यो उसलाई। तर ऊ हार खाने थिइन, "त्यहाँ बस्न तन्त्रमन्त्र किन चाहियो ? कुर्सीले सबै सिकाइदिन्छ बाबू। खालि दस्तखत गर्ने आइमाई त ठूल्ठूला कुर्सी सम्माल्छन् भने शारदासँग किन हुँदैन। जान्ने छँदैछे। भगवतीको कृपाले मन्त्र-तन्त्र आफैं सिकिहाल्छे।" केही पर्खेर फेरि भनी "सोच त बाबू। भगवतीले रूपैया-पैसाको कमी त गरेकी छैनन्। तर "पावर" त छैन नि ! मन्दिर प्रशासनमा कतैबाट छैनौं हामी।

तिमीले पनि बुवाको काम -काज सह्माल्न सकेनौ । हमी मूलतः पण्डा नै हौं । विवशतामा नै वैश्यको काम गरेका हौं । सबै वर्णको जूठो सफा गर्छौं । यदि पुनः मन्दिरको काममा परिवारको कुनैसदस्यनियुक्त भयो भने त ... ।

आमाको यो विचार राम्रो लाग्यो दीनानाथ । ऊ केही बेर मौन रह्यो अनि बोल्यो "त्यसो भए तपाईं नै किन बस्नु हुन्न ? तपाईं त शारदाभन्दा राम्ररी सह्माल्न सक्नुहुन्छ ।"

रामदुलारीले सोची– दीनानाथ बुझ्ने हुँदैछ । उसले भनी "म त बस्न सक्छु, तर होटेल कसले चलाउने ? शारदाबाट चल्छ ? रात-बेरात किसिम-किसिमका मानिसहरू आउँछन् । तरुणी बुहारीलाई एक्लै होटेलमा छाड्नु उचित लाग्छ र तिमीलाई ?

आमाको विचार पनि राम्रो लाग्यो दीनानाथ तर ऊ हार मान्ने खालको थिएन । भन्यो– "शारदा यदि साधनागृहमा बस्छे भने, तपाईं एक्लैले चलाउन सक्नुहुन्छ त भोजनालय ?"

झट्टै जवाफ दिई रामदुलारीले "होटेलको लागि एउटा नोकर राख्छु ।" फेरि केही पर्खेर भनी "त्यसो त आजसम्म साधनागृहमा आइमाईलाई सेवामा राखिएको छैन, तर महन्तजीको विशेष कृपाले यो मौका आएको हो बाबू । छोपिहाल । म अब कतिदिन बाँच्छु र । जेठो त तिमी दुवै छौ । राज गर्छौ राज ।

दीनानाथको अनुहार उज्यालो भयो । तर उसले पनि सबै किसिमका शङ्काहरू निवारण गर्ने निधो गरिसकेको थियो । बोल्यो" साधना-गृहमा पटक-पटक घटनाहरू भइरहन्छन् । पछिल्लो पटक पुनित खत्री एउटा साधिकासँग अनर्गल काममा समातिंएको थियो ... ।

"त्यस्तै घटनाहरू रोकथाम गर्न साधना-गृहमा महिलालाई सेवामा राख्ने निधो गरेका छन् महन्तजीले । महिलालाई राख्ने नाउँमा केही मुख्य पण्डाहरू विरोध गरिरहेका थिए, तर साधनागृहको प्रमुख महिला हुन्छिन् भनेर महन्तजीले सबैको मुखमा ताल्चा लगाइदिए । सँगै यो पनि भने उनको सहयोगी हुन्छ पुरुष ।" पुनः केही पर्खेर भनी "कुनै चिन्ता गर्नुपर्देन बाबू । शारदालाई केही हुँदैन । महन्तजीले आफै उसको अभिषेक गर्नु हुन्छ । मन्त्रले उसको शरीर बाँधिदिनुहुन्छ । रौं पनि भग्न हुँदैन शारदाको । राज गर्छिन् मेरी बुहारी शारदा ... । राज भोग गर्छौ तिमी ... । मात्रै शारदालाई राजी गर ।"

दीनानाथ शारदालाई फकाउन थाल्यो । तर शारदा नाकमा झिँगा बस्नै दिँदैनथी । शारदालाई यो काम कदापि मन परेको थिएन ।

रामदुलारी हिसाब गर्न थाली । शारदा साधना-गृहको सेवामा नियुक्त हुन्छे । त्यसपछि ऊ रामनाथको बिहे गर्छे ।

पन्ध्र दिन बित्यो शारदालाई स्वीकार्य भएन । रामदुलारीको छटपटी बढ्न थाल्यो । ऊ शारदा सँगसँगै दीनानाथमाथि पनि दवाब दिन थाली । दीनानाथ पनि शारदालाई फकाउन लिप्त रहन्थ्यो । अनेक विधि किरिया-कसम चलिरह्यो । दीनानाथ सम्झाउँथ्यो– शारदा त्यहाँ मालिक्नी भएर बस्छे । जो जति चढौना आउँछ, त्यसको हिसाब शारदाको हातमा हुन्छ । आफ्नै किसिमले बाँच्न सक्छे । होटेलको जुठो-पुरोबाट पनि फुर्सद त पाउँछे । र आमा पनि अब कति दिन बाँच्ने छिन् । हिसाब-किताब गर्नलाई ।

यति छिटो मर्दिन यो बूढी भन्ने कुराको विश्वास थियो शारदालाई । ऊ सोच्दथी– अजङ्गकीछे यो बूढी । कैयौं खान्छे ... कैयौंलाई बर्बाद पार्छे अनि मात्रै मर्छे । भागेर माइत

जाने उसको इच्छा हुन्थ्यो, तर आमा-बुबाको दयनीयता बाधा बनेको थियो। माइत गएमा आमा-बुवामाथि ऊ भार नै हुन्छे। ऊ मनमनै भन्थी– परिस्थितिमा ऊ यसरी बाँधिएकी छे कि चाहेर पनि आमा-बुवालाई कुनै मद्दत गर्न सकिरहेकी छैन। जबसम्म यो चण्डाल्नी जीवित रहन्छे, गर्न पनि सक्दिनन्।

र एकदिन रामदुलारी सँगसँगै दीनानाथलाई आश्चर्यमिश्रित प्रसन्नता भयो, जतिखेर शारदालाई दुर्गा सप्तशतीको पोथी पढिरहेकी देख्यो। रामदुलारीलाई अभीष्ट नजिकिएको भान भयो। ऊ महन्तजीसँग भेट्न कुदी।

शारदा गम्भीर रहन थाली। ऊ मात्र दुर्गा सप्तशतीको श्लोकहरू पढिरहेकी देखिन्थी। दीनानाथलाई प्रसन्नता हुन थाल्यो।

त्यस दिन शारदाको अभिषेकको मुहूर्त थियो। मन्दिरका मुख्यमुख्य पण्डाहरू जम्मा भएका थिए। तान्त्रिकहरू जम्मा भएका थिए। दीनानाथ पनि। अरू धेरै मानिसहरू त्यहाँ आउने अनुमति दिएका थिएनन् महन्तजीले।

रातो वस्त्रमा आवेष्ठित शारदा आई। रामदुलारी सँगै थिई। शारदा सबभन्दा पहिले भगवतीसँग माफी मागी। भगवतीसँग सोध्ने इच्छा भयो– "माता तपाईंको खड्ग किन चल्दैन ? पुनः भगवतीसँग केही वेरको लागि खड्ग माग्ने इच्छा भयो। तर ...। ऊ भगवतीको चरणमा टाउको निहुऱ्याइ बाहिर निस्की।

तन्त्र साधना गृहको हवन-कुण्ड नजिक पूजाको आसन ओछ्याइएको थियो। भनिन्छ यस हवन-कुण्डमा श्मसानको दाउरा-मात्र बालिन्छ। हवन-कुण्डको ताप र धुआँले साधना-गृहमा केही पोलेझैंको गन्ध भरिएको थियो।

महन्तजी साधना-गृहमा अवतरित भए। घाँटीमा ठूल्ठूला रुद्राक्ष र स्फटिक उनलाई आकर्षक र भयावह बनाइरहेका थिए। शारदा बसिरहिन्– आँखा चिम्लेर मनमनै भगवतीलाई गुहार्दै।

महन्तजीले कुनै मन्त्र पढेर उल्टो सर्स्यु (तन्त्रमन्त्रमा प्रयोग हुने सर्स्यु) शारदको चारैतिर छरे। दीनानाथले हेऱ्यो। आश्वस्त भयो। त्यसपछि महन्तजीले केही बेर शारदाको सर्वाङ्ग दृष्टिपात गरे।

शारदाले आँखा उघारिन्। चारैतर्फ हेरिन्। रामादुलारीलाई आँखा तरेर हेरिन्। महन्तजीलाई हेरिन्। उनको दृष्टि आफ्नो शरीरमा घोचिरहेझैं लाग्यो। उसले पनि महन्तजीलाई आँखा तरेर हेर्न थाली।

महन्तजीले परिस्थिति बुझे। दृष्टि हटाइहाले। रामदुलारीलाई साधना-गृहबाट बाहिरिन सङ्केत गरे। महन्तजी र शारदाबाहेक अरू सबैलाई बटुली रामदुलारी साधना-गृहबाट बाहिरिई। महन्तजी आफ्नो गम्भीर पाइलाले हवन-कुण्डको चारैतिर प्रदक्षिणा गर्न थाले। भित्रबाट ढोकाको आग्लो लगाइदिए।

बाहिर मानिसहरू थक्क-थक्क थिए। त्यतिबेलै 'ओरहुल फूल' (भगवती उपासनामा प्रयोग हुने घण्टी शारदाको स्वर सुनियो– "ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाय विच्चे।" स्वर लयात्मक थियो। स्वर बिस्तारैबिस्तारै तीव्र हुन थाल्यो। रामदुलारीले आश्वस्तपूर्ण हात दीनानाथको काँधमा राखिन्।

केही छिनपछि शारदाको स्वर मद्धिम भयो र केही उचाल्नु-पछार्नुको ध्वनि आउन थाल्यो। कोही भागिरहेको र लखेटीरहे झैं भान हुन्थ्यो। रामदुलारीले घोषणा गरी– "लाग्दछ, साक्षात भगवती प्रवेश गरेकी छिन् शारदाको शरीरमा।" पुनः गुहारी "हे माता !

रक्षा गर ... रक्षा गर मेरी वुहारीलाई ... ।

साँच्चै, भगवतीले प्रवेश गरेकी रहिछन् शारदाको शरीरमा । एउटा प्रवल वेगले साधनागृहको ढोकाको दुईभाग दुईतिर भयो र शारदा बाहिर आई ।

शारदाको शरीरमा मात्र रातो पेटीकोट र रातो ब्लाउज थियो भन्ने कुरा कसै-कसैले हेर्न पाए ।

मानिसहरूले देखे– शारदा हनहन गर्दै बाहिर आई र एक झम्टाइमा रामदुलारीलाई कपालमा तान्दै साधना-गृहभित्र पसिहाली ।

जतिबेला मानिसहरू भित्र आए, रामदुलारी महन्तजीसँगै हवन-कुण्ड़मा छटपटाइरहेकी थिई ।

रोशन जनकपुरी

आ बौधु बाजि उठल

रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

पात्र-स्थिति

१.	बौधु - (उमेर) ३५ वर्ष)	– चाहक दोकानदार ।
२.	पुरुप - १ (उमेर ४५ वर्ष)	– गामक प्रतिष्ठित व्यक्तित्व ।
३.	पुरुप - २ (उमेर ४५ वर्ष)	– गा.वि.स.क अध्यक्ष ।
४.	पुरुप - ३ (उमेर ४० वर्ष)	– गामक कुटिल व्यक्तित्व
५.	पुरुप - ४ (उमेर ५० वर्ष)	– गामक भलमानस व्यक्तित्व ।
६.	रूपचन्द (उमेर ३६ वर्ष)	– गामक कुटिल व्यक्तित्व ।
७.	छोटे (उमेर १० वर्ष)	– बौधुक बेटा ।
८.	महिला (उमेर ३० वर्ष)	– बौधुक पत्नी ।
९.	गोराइत (उमेर ४० वर्ष)	– गा.वि.स.क पिएन ।

दृश्य १

(गामक चौक। चौक पर एकटा चाहक दोकान। तीन कातसँ वेंचसभ धयल। दूटा खुरसी, कठघराक एकचारीक भितर राखल। बौधु भगत चाहक पानी गरम करैत। बेंच पर एक-दू गोटे चाहक चुस्की लैत। ताबत् पुरुष १ आ' पुरुष २ क प्रवेश।)

पुरुप १ : की रे बौधुआ ! चाह-ताह छौ कि ?

बौधु : जी मालिक ! बैसल जाआ ! **(बेरा-बेरी स भितर धयल खुरसी बाहर आनि लगा दैछ। दुनू चाह पीब' बला पीबिक' चलि जाइछ।)**

पुरुप २ : बौधु ! की छै गामके हाल-चाल ?

बौधु : **(केतलीसँ दूध ढारैत)** हजुर ! अपने गामक परधान छिऐ। सब बात बुझैते छिऐ। हम जनबै हजुर !

पुरुप १: तैयो तोरा दोकान पर त सब रंगके लोक अबैछौ ने। बजैत होतौ बात सब।

बौधु : मालिक, अइअ त समय काट' वला सभ रहै छै। ओकर बात पर धीआन देल जाए त' सब काम चौपट भ' जएतै।

(दुनूके चाह बढबैछ।)

पुरुप २ : **(चाह लैत)** ठीके कहै है गोधिंआँ। अहुँ धीआपुताबला बात पुछै छिऐ। रे

अइठाम त सब रंगके लोक अबै है। सबके बारेमे सब रंग बजै है। एना जे सबके बात ई कह' लगौ त एकर रोजी रोटी चलतै ?

बौधु : **(लजाइत सन)** ई त अपने सभके कृपा है सरकार !

(ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश)

पुरुष ३ : **(दुनूके देखैत)** एह, दुनू मालिक एक्केठाम !

पुरुष १ : की बात छौ। बड़ हकासल-पिआसल बुझाइछे।

पुरुष ३ : बाते ओएह है, हजुर। आइ कयक दिनसँ पछोड़ धएने छी। छौ-पाँच टुटबे ने करै है।

पुरुष १ : आब की टुटतो ? कहि देने छियौ। तोरा नै होतौ। पहिने भागेसरके कहल जा चुकल छै। ओकरा होतै।

पुरुष ३ : ई त अन्याय होतै। दिन-राति खटै छी हम। चुनाव होइ कि पंचैती। गाममें चीत भरै छी हम आ डिलरशीप लेब' बेरमें भागेसरके भेटतै ! की प्रधान जी ?

पुरुष २ : हम की कहियौ ? गोधिआँ जे कहतौ सेहे होतौ।

पुरुष ३ : त महाजन ! हमरा नहिएँ होतै।

पुरुष १ : तों बराबरि भोजके बेरमें कुम्हर रोपैत अएलेह। तोरा कहि देलियौ नै होतौ। मूड खराब नै कर। **(पुरुष २ सँ)** चलु गोधिआँ।

(दुनूक प्रस्थान)

पुरुष ३ : देखलही बौधु ! बड़का सबके ताल।

बौधु : हम की देखियौ।

पुरुष ३ : केनाक' हमरा निरैस देलक। अच्छा ठीक है। फेर अबै है चुनाव। हमरो नाम हरिश्चन्दर है।

अन्हार

दृश्य २

(बौधुक चाहक दोकान। भिनसरक समय। बाट ध' गौआसभ अपन-अपन काज करैत जाइत। चाह बनबैत बौधु। एकटा सात-आठ वर्षक बच्चा एम्हर-ओम्हरक सहयोग करैत।)

बौधु : **(बच्चासँ)** रे छोटे। देखही त' चिनी हौ कि नै ?

छोटे : **(अमूलके टीनबला डिब्बाके हथोडैत)** बाबू ! अखनु जोकर होतै।

बौधु : ठीक है। कनीक गिलास सबके नीक नाँहित धोले।
(छौंडा गिलाससभके गरम पानीसँ बगलमे धोअ' लगैत अछि। ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश। बेंचपर बैसि जाइत अछि।) **(पुरुष ३ सँ)** की हौ हरिश्चन्दर आइ भोरे भोर केना दोकान पर ?

पुरुष ३ : त कहने नै आब' ला। नै अएबौ।

बौधु : **(नेहोरा करैत)** राम, राम ! गहिंकी त भगवान् होइ है। भोरक पहिलका गहिंकी त आओर लक्षनमान !

पुरुष ३ : अच्छा बौधु ! बनाले तोहुँ । जकर हाथ कमजोर होइ-है, सब ओकरे पर लागल रहै है ।

बौधु : छोड़' भाइ । चाह बनवियौ ?

पुरुष ३ : ई बात तोरा शुरुएमें बुझ' नै चाही ?

बौधु : तोँ हमर पहिलके गहिंकी छा, से .... ।

पुरुष ३ : हाँ, हाँ बुझलियौ । ई चाह उधारी नै रहतै ।

(बौधु चाह छान' लागैछ । ओही बाटे जाइत पुरुष ४ के हाँक पाड़ि बजा लैछ पुरुष ३) हौ रामधन ! आवह, एक कप भऽ जाइ ।

पुरुष ४ : हौ, हमरा जल्दी हवे । प्रधान निकली जाएत ।

पुरुष ३ : हौ बुझिलियौ । अखनु तोरै पर ढरल हौ परधान । जे जेना दूहि ला ।

पुरुष ४ : **(बेंच पर बैसैत)** देखह हरिश्चन्दर । इहे त खुबी है अयोधी चौधरी में । "ने माधेके लेना ने उधोके देना ।" तैस आइ भरि गाममें सब मानै है ।

पुरुष ३ : **(बौधुसँ)** एकटा चाह आरो बना दही । **(पुरुष ४ सँ)** हँ, तो सब कैला नै कहवहो । हमरा सबके लेल त ... ।

पुरुष ४ : नै, ई हमरे बात नै । आइ गाममें एक्कोटा मुद्दा-मामिला अड्डा-अदालतमें है ?

पुरुष ३ : से त कम है ।

पुरुष ४ : गाममें शान्ति है, लोक अपन-अपन काम करैअ' । ई शान्ति, प्रेम ककरा खातिर छै ? इहे अजोधीके खातिर की ने ?

पुरुष ३ : भ' सकैए ।

पुरुष ४ : इहे तोहर गेंगिऐ रहै छह । हौ गाममें ओतेक विकास नहियों भेलै त ककरो हानियो त नहिए कैलकै । सबके समान दृष्टिसँ देखै है । की हौ बौधु ?

बौधु : **(गिलास बढबैत)** जी, अपने कहिते छिऐ त' ।

पुरुष ४ : देखिहो, अगिलो चुनावमे उहे होतै प्रधान ।

पुरुष ३ : आब हद भ' गेलो । हौ फेरु प्रधानके बात नै कर' । गाम प्रधान होब' बला स सुन्न नै भऽ गेल है ।

पुरुष ४ : **(कनेक रोषसँ)** देखह बौधु ! ई केहन आगि लगब' बला बात बजैअ' । हौ के है अयोधीके विरोधमे टिक' बला ।

पुरुष ३ : **(उठैत)** देखह रामधन । समय आब' दहक । देखबे करबहक की !

(दुनू कपक पाइ बौधुके दैत एक कात विदाह भऽ जाइछ । पुरुष ४ ओकरा जाइत एकटक देखैत रहैछ ।)

पुरुष ४ : बौधु ! हम ई की सुनै छी । एकटा कल्ला नै अलगै छलै । से लगैए ई कोनो अन्हेर करत ।

बौधु : भगवान् बचबथुन अइ गाम के ।

अन्हार

दृश्य ३

(बौधुक चाहक दोकान। अपरान्हक समय। छोटे आ' ओकर माय दोकानपर। महिलाक उमेर ३५-३६ वर्षसँ उपर नहि। नीक देहयष्टि। बाट ध' क' पुरुष ३ जाइत। दोकान पर बौधुके नहि देखि दोकान दिश सहटि जाइत अछि। ओकरा देखि महिला घोघ कने तानि लैछ।)

पुरुष ३ : **(बेंचके कनेक अपना दिश घिचैत)** की रे छोटे। बाप नै हौ ?

छोटे : बजार गेल है।

पुरुष ३ : कैला रै। ओकरा बुझल नै है गाममे बड़का पंचायत है। कय गामके पंच सब जुटतै। चाह त खुबे विकेतौ।

छोटे : ताहीला त चाहपती, चिनी लाब' गेल है। कनी खैनी, गुटका आ' बिस्कुट सिकरेट सेहो लौतै।

पुरुष ३ : एह, तब त अपनो फैदे है। चाहके संग-संग बिस्कुट। **(कनी बिलमि)** हँ, एकटा चाह बनाब' कही मायके।

(महिला चाह बनब' लगैछ। स्टोबमें हवा दैत काल बुझाइछै जेना तेल कम हो। छोटेके बजा क' किछु कहै छै। छोटे डिब्बा आ' पाइ ल' क' दोकान दिश जाइत अछि।)

(कनेक सहटि क') हे रघुनाथपुरीवाली। साउस मानै छह की ? कहाँदन राति वड़ झगड़ा कैलको। **(महिला किछु ने बजैछ। गिलास धोअैत रहैछ।)** नै, कुछो होअ' त बाज। आइए पंचैतीमे राखि देवै। बौधु शुद्ध बुद्धु हओ। किछु ने बजतो।

महिला : **(गर जाँति)** सब ठीके है।

पुरुष ३ : डरे कहै छह त निडर भ' क' कह'। हम ठाढ़ छियो किने। बुढियाके केस ध' क' पंचायतमें ल' अएवै।

महिला : बस करथुन। हमर घरके बात है। हमहीं सब समेट लेबै।

पुरुष ३ : सेहे। हम सब कथीला छिऐ। मौक पड़तै त तोरा खातिर देखल जएतै।

महिला : **(बेटा गेल बाट दिश ताकि)** मोचरुवा, मरि गेलै कत्त ?

पुरुष ३ : कैला धीआपुताके गारि पढ़ैत छहो। अबिते होतै की ? **(कनेक विलमि)** रघुनाथपुरवाली, हे कनीक सलाई दा त, बीड़ी धड़वै छी।

(महिला संकोच स आगां बढैत अछि आ' पुरुष ३ क हाथ में सलाई दैत छैक। पुरुष ३ सलाई ल' क' बीड़ी धरबैत अछि। आ सलाई दैत काल महिलाक हाथ दबा दैत छैक। महिला झटकिक' हाथ अलग क' लैत अछि।)

महिला : **(रोषसँ)** केकरो वहु-बेटीके एना नै करके चाही।

पुरुष ३ : गहिंकी सँगे एना रोपसँ बातो ने करके चाही कीने।

महिला : मार बढ़नी एहन गहिँकी के। अबै है छोटे के बाप त हम कहै छिऐ।

पुरुष ३ : जा, जा, बौधुआ हमरा की क' लेत। अड्डा-खाना हमही धांगी आ' दोसरमे चौक परक सार्वजनिक जमीनमें ई दोकान। एक्के इशारा पर उठि जएतौ।

(महिला कनेक डेराइत अछि। तावत् छोटे अबैछै। महिला तीन चारि चमेटा लगबै छै।)

महिला : जुअनढाहा, कत्त' मरि गेल छलेह' । जत' जाएत खेलमें लागि जाएत ।
छोटे : दोकान पर भीड़ रहै । हम अपने ल' लितिऐ । दीतै तब ने अबितिऐ ।

(स्टोबमें टीप लगा तेल ढारैछ । हबर-हबर हवा द' चाह बनबैछ । एम्हर पुरुष ३ बीड़ी सोटैत रहैछ । ताबत् गा.वि.स.क पिएन रीभ्फन मंडलक प्रवेश ।)

रीभ्फन : रघुनाथपुरवाली एक गिलास हमरो दा ।

(आ' दोसर बेंच पर बैसि जाइत अछि ।)

पुरुष ३ : हं, हं रीभ्फनाके बिस्कुटो दही रे छोटे । परधाने आ' एकरे त चलती है । जगहके भाड़ामें मङ्नीमें चाह बिस्कुट । की रे रीभ्फन ?
रीभ्फन : देखू हरिश्चन्दर जी ! हम सब अपन टेंटके पाइस चाह पीबै छी । खैराती नै ।
पुरुष ३ : तैयो, तोरा सबपर त रघुनाथपुरबाली मेहरवान छौहे – जतेक कचर ।

(पुरुष ३ उठैत अछि आ एक दिश विदा भऽ जाइछ ।)

रीभ्न : एह; केहन-केहन लोक है गाममें ।
महिला : सेहे दुखथुन । जे मनमे अबै है बजै है ।

(चाह बनाकऽ रीझनके दैत अछि ।)

कहाँदुन बजै है ई, जे आव दोसरके जीतैतै परधानमें । बाप रे, गामके भुजि देतै ।

रीभ्फन : **(चुस्की लैत)** रे, के कहैछौ रघुनाथपुरवाली ! जहिया तक परधान आ रामअसीस बाबू एक है, कोनो माइके लाल किछो नै क' सकतै ।

(चाह समाप्त करैत अछि । पाइ दैत छैक आ ओत' स विदा भऽ जाइत अछि । महिला आ' छोटे चाहक सामग्री सभ ठीक कर' लगैत अछि ।)

अन्हार

दृश्य ४

(बौधुक चाहक दोकान । दोकानमें गुटका, खैनीसभ टाँगल । टेबुल पर पाउरोटी । कठघरामे बिस्कुट, सिकरेट, बीडीसभ ताहियाक' धएल ।

भिनसर ८-९ क अमल ।किछु गोटे चाह पीबैत । ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश । एक नजरि दोकार पर दैत अछि । एक गोटेके बैसल देखि प्रसन्न भऽ ओम्हर सहटि जाइछ ।)

पुरुष ३ : अरे रूपचन भाइ । तोरा त भरिगाम खोजि लेलियौ, एत्त' छे ।
रूपचन्द : बड़ी काल भेल । चाहो पीली, हम जाइ छी ।
पुरुष ३ : नै, अन्हेर नै कर नै । तोरासँ बतिआएके है ।

(चारु भर चाकुआइत अछि । चाह पीब' बला उठि कऽ चलि जाइछ ।)

हँ, आब फैलस बतिआएब । **(बौधुसँ)** बौधु, कनीक करगर दू कप बना ।

(बौधु मुँह बिजुका चाह बनब' लगैछ ।)

त भाइ हम सब आब गाममें नै रहु।

रूपचन्द : की भेलौ से ?

पुरुष ३ : रे खाधिके डिलरशीप लेव चाहली – प्रधान नै देलक। सड़कमें माटि परला उपभोक्ता बनलै, तैमे नै रखलक। मासटरीमें एकगोटेके घुसिआब' चाहलिऐ नै भेल। आब हम सब खेतके दुवही चिवाउ।

रूपचन्द : ई त ठीके छै भाइ। जहिआसँ रामअसीस आ अयोधी मिललैअ, हमरा तोरा सनके गुंजाइश गाममे नै हौ।

पुरुष ३ : त हम हिम्मत हारि जाउ।

रूपचन्द : तोरा सन लोक हिम्मत केना हारत। लेकिन दुनू के ...।

पुरुष ४ : की दुनूके-दुनूके रटैछे। कोनो जोगाड त सोच पड़तै।

(ताबत् बौधु चाह दुनू के हाथमे दैत छैक।)

रूपचन्द : दुनू राम-सुग्रीवके मित्रता है बौआ। टस स मस नै होतौ।

पुरुष ३ : **(किछु सोचैत)** बात त कठिन छै। मुदा कलयुगमे राम-सुग्रीवके दोस्ती कतेक दिन ?

रूपचन्द : **(साश्चर्य)** माने ?

पुरुष ३ : माने साफ हौ। दुनूके वीच फाटो आन' पड़तौ। गंगा-जमुना अलग होतौ तबही काम वनतौ। की बौधु ?

बौधु : **(रोषसँ)** एह, हमरा कोनो मतलब हय। अहाँसब बड़कालोक वड़का वात।

पुरुष ३ : ई जमीन जे खैरातमे पौने छे– साँच बजिते छीन लेतौ ने।

बौधु : हमरा सबके बीचमे नै पारु, जे कर' के हो अपन करु। हम किछु कहै छी।

रूपचन्द : किछु कहबे त' जएबो करबे की ? खिआल रखिहे (पुरुष ३ स) त भाइ, की पलान हौ।

पुरुष ३ : अगिला चुनावमें सोच' पड़तौ।

(ताबत् रामअसीसक प्रवेश। ओकरा देखि दुनू कनेक सकपकाइत अछि। फेर ठीकसँ बैसि जाइछ। बौधु भित्तर स खुरसी निकालि बाहरमें लगा दैत छैक।)

बौधु : बैठल जाओ मालिक।

पुरुष ३ आ रूपचन्द : **(एक्केसँग)** परनाम मालिक।

पुरुष १ : परनाम ! की बात है हरिश्चन्दर। आइ बैठार जमल है।

पुरुष ३ : जी ओहिना। अहींके बारेमें सोचै छी हम सब।

पुरुष १ : हमरा बारेमें ?

रूपचन्द : जी, जहिआं कोनो काम नै रहै है, नीक बात फुराइअ' हमरा सबके।

पुरुष १ : तोरो सबके नीक बात फुराइ हौ ?

पुरुष ३ : एह, मालिक हमसब एतेक त अबूझ नै ने छी।

(रूपचन्दके इशारा करैछ। रूपचन्द जेबी स खैनी आ चून बहार क९ लगब लगैछ। ओम्हर बौधु चाह बना पुरुष १ के बढा दैत छैक।)

पुरुष १ : की सोचै छले ?

पुरुष ३ : इहे जे अइबेर अहींके परधानमे खड़ा होब' के चाही।

पुरुष १ : **(रोषसँ)** गलत बात छै। गोधिआं छैहे त हमरा बारेमे ई केना सोचि लेलही ?

रूपचन्द : अजोधीबाबू अइ बेर त भेबे कैलखिन्ह। दोसरबेर अपनेके द्य देथिन्ह त कोन अपराध भ्य जएतै।

पुरुष ३ : आ' अपन-परायके चिन्हुके मौका भेटै है।

पुरुष १ : नै, ई नै भ' सकै है। गोधिआं नीक जकाँ चलबै है। आ रायो सल्लाह त हमरे लै छै।

पुरुष ३ : आ भोटो त अहींके जाइहै किने! कतेक है अयोधीबाबूके। १५-२० घर, सय-डेढ सय भोट। हजार भोटस जिते है - के देहै भोट ?

रूपचन्द : आ' पाँचलाखके जे रूपैआ अबैहै – तैस अपन सहयोगीके पाल' के मौको त भेटै है।

पुरुष १ : रुपैयाँ त गामेके विकासमे जाइहै ने।

पुरुष ३ : लेकिन पाइ जाइ है अपन आदमीके हाथे। अजोधीबाबूके भाइ, भतिजा, सार बनल है ठीकदार, ओहे उपभोक्तामे ओहे इसकुलमे, ओहे बोरिंगमे आ' ओहे चाउर बाँटमे।

रूपचन्द : है एक्कोटा खांटी अपनेके आदमी ?

पुरुष १ : ओहो त हमरे आदमी है किने।

पुरुष ३ : इहे भलमनसाहतके त फैदा उठौने हैं अजोधीबाबू। काम अपन आ नाम अहाँके।

रूपचन्द : हमसब त अहींके कहने अजोधीबाबू ला खटैछी किने। कतौ रखलक हमरा सबके।

पुरुष १ : देख, ई फुटानीबला बात नै बाज। उ जे करै ठीके करै है।

पुरुष ३ : त बिलटाओल जाए अपन बाल-बच्चाके। अपन सहयोगी सबके। कैला हमहुँ सव सोचब ककरो लेल। **(रूपचन्दसँ)** चल रूपचन्द ! अइ गामके इहे रीति है। जकरा लेल कनैछी तकरा आँखिमें लोरे ने।

(दुनू उठैत अछि। ओम्हर बौधुक मुँह बनैत-बिगड़ैत छैक। मोनमें जेना कोनो बात औंना रहल होइ, बाज' नै चाहैअ। पुरुष १ सेहो उठैत अछि। जेबीसँ पाइ निकालि बौधुके दैत छैक आ' गुम्मसुम्म चल जाइत अछि। ओकरा जाइते पुरुष ३ आ रूपचन्द जोर स ठठाक' हँसि दैछ।)

अन्हार

दृश्य ५

(बौधुक चाहक दोकान। अपरान्ह ३-४ क समय। गा.वि.स. अध्यक्ष पुरुष २ क प्रवेश। बौधु हरबराक' खुरसी बहार करैछ। कान्ह पर धयल गामछासँ ओकरा पोछैत छैक आ कनेक आगाँ बढि अध्यक्षके बैसबाक इशारा करैछ। प्रमुख बैसैत छथि। बौधु स्टोबमे हवा भरैत अछि। केतली

चढा दैत छैक। छोटेके गिलास साफ करबाक लेल कहैत छैक।)

पुरुष २ : बौधु, केहन चलै छौ दोकान ?

बौधु : पेट भरैछी मालिक।

पुरुष २ : आइ तोरो दोकानके चर्चा उठल रहौ पंचैतीमे।

बौधु : **(हाथ बारैत)** जी ?

पुरुष २ : हँ, एक गोटे उठौने रहौ – ई जमीन तोरा किए देल गेल छौ से। **(बौधु चुप्प रहैत अछि। चाह बनब' लगैछ।)** सार कतेक कपटी लोक भ' गेलै आइकाल्हि।

बौधु : अपनेके आशामे छिऐ ने मालिक।

पुरुष २ : रे जा धरि हम छी, के छुतौ तोरा। देख लेबै हम। खाली आइ कनीक गोधिआँ नै रहै।

(ताबत् पुरुष ३ क प्रवेश।)

पुरुष ३ : **(पुरुष २ सँ)** परनाम मालिक !

पुरुष २ : की रे, आइ ककरा माथ हाथ देलही।

पुरुष ३ : जी केकरा देबै। **(कनेक बिलमि)** आइ त मुनरा साफ बाँचि गेल मालिक।

पुरुष २ : सेहे त। तोरे सबके चलती भ' गेलौ।

पुरुष ३ : जी ?

पुरुष २ : जेना ओ पबितराके पुतहुके हाथ-पात कैलकै हम एतेक सस्ता नै पट' दितिए।

(पुरुष ३ मात्र माथ डोलबैत अछि।)

कहु त चौरी-चांचर भरि गामके बौह-बेटी खेत-पथार जाइ है। एना हात-पात करतै।

पुरुष ३ : तैयो त ...।

पुरुष २ : सेहे त कहलियौ, बँचि गेलौ। गोधिआँ नै आयल रहे तैस। **(ताबत् चाह हाथमें दैछ बौधु।)**

पुरुष ३ : (चारुभर चकुआइत) मालिक आब गोधिआँ अएबो ने करत।

पुरुष २ : **(हाथ रोकि)** की माने ?

पुरुष ३ : मुनराके माथ पर ककर हाथ छै बूझल हय ?

पुरुष २ : **(किछु ने बुझल सन)** रे तों एना अर फेर कैला करैछ। साफ बता ने।

पुरुष ३ : मालिक, रामअसीस बाबू सेहो अगिला चुनावमे खड़ा होत। से आब ओ आदमी बनब' लागल है।

(पुरुष २, एक्के बेर चिहुँकि क' ठाढ भ' जाइछ। पुरुष ३ दिश एना क' देख लगैछ जेना ओ काँचे चिबा जाएत। पुरुष ३ सकपका जाइत अछि। फेर पुरुष २, आगाँ बढि रहल लगैछ।)

बौधु : **(हाथ जोड़ैत)** मालिक, थीर भ' क' बैसल जाओ ने। सब ठीक भ' जएतै।

पुरुष ३ : बैसियो मालिक। जे साँच बात रहे से कहि देली।

(पुरुष ३ जाए लगैत अछि।)

पुरुष २ : **(पुनः खुरसी पर बैसैत)** रे हरिश्चन्दर ! रे ई की बजले ?

पुरुष ३ : आँखि बइठे मालिक। रामअसीस मालिक आदमी बनब'मे लागि गेल है। गाममे एक कान दू कान भ' गेल है।

पुरुष २ : हम छिऐ त ओहे है किने।

पुरुष ३ : ई त' अहाँ बुझै छिऐ ने। ओहो बुझै तब ने।
पुरुष २ : उ नै बुझतै त हमरा लेल राति दिन एक क' दितै ?
पुरुष ३ : भ' सकैअ बुझने होय जे हमरे बले जितैअ गोधिआँ त हमहीं कैला नै ... ।
पुरुष २ : नै तों फोर' चाहै छे। इ नै भ' सकैछै।
पुरुष ३ : हम त देखलिऐ राति खतवे टोलमे घुमैत। हुनका दरबज्जा पर लोकके अबरजाही सेहो बैढ़ गेल है।

(पुरुष ३ गुम्म अछि। किछु सोचबाक मुद्रामे देखल जाइछ। ताबत् रूपचन्दक प्रवेश।)

हे देखियौ, रूपचन्द सेहो आवि गेला की रे रामअसीस मालिकके कोनो खबरि ?

रूपचन्द : मालिक ! हम त अखनु अपना आँखिसँ गधुलीमें मुनराके रामअसीस मालिकसँ कनफुसकी करैत देखलिऐ अ'।

(पुरुष २ उद्विग्नतासँ छटपटाइत, रहलब बन्द नै होइछ। ताबत् बौधु एकटा चाह ल' क फेर पुरुष २ के दैत छैक।)

बौधु : **(चाह बढबैत)** मालिक, शांत भेल जाओ। लेल जाओ चाह।

(पुरुष २ गुम्हारिक' बौधु पर तकैत अछि। ओ छोटे चाह ल' क' घूरि जाइछ। पुरुष २ तेजीसँ प्रस्थान क' जाइछ।)

पुरुष ३ : रूपचन्द। आइ बौधुके चाहसँ जी नै भरतै। चल भठी दिश।

(दुनूके हँसैत प्रस्थान। बौधु माथपर हाथ ध' ठामहि टूलपर बैसि जाइछ।)

अन्हार

दृश्य-६

(बौधुक दोकान। ७-८ बजे भिनसरक समय। बौधु चाहक दोकानके सरिअवैत। ताबत् पुरुष ४ क प्रवेश।)

पुरुष ४ : बौधु, आब अइ गाममे रहब मुश्किल भ' गेलौ।

(बौधु हाथ रोकि जिज्ञासासँ' देख लगैछ।)

जे कहियो नई सुनने रहिऐ से बात सब होब' लागल है।

बौधु : की भेलै काका।
पुरुष ४ : की होतै रे। अधकारी टोल आ चौधरी टोलमे कराम कराम भ' रहल है।

(बौधुके मुँह खुजले के खुजले रहि जाइत।)

अनर्थ भ' जएतै बौधु।

बौधु : रामअसीस मालिक आ अयोधी मालिक कत' है ?
पुरुष ४ : सेहे त' लोकके अचरज लगै है। अपन-अपन टोलके सम्हार' बला सब कत' है ?
बौधु : माने दुनू गोधिआं नै है ?

पुरुष ४ : रे रहौ कि नै रहौ । बिना दुनूके जानकारीके ई होतै ?
बौधु : आखिर आगि लगाइए देलकै चण्डलवा सभ ।
पुरुष ४ : के लगा देलकै रे !
बौधु : (जेना सम्हरि गेल हो) नै आखिर कोइ त'दुनू भर लगौने-बझौने होतै किने ।
पुरुष ४ : से हे । अन्हेर भ' गेलै आब । गाममे बेटी-पुतहु सुरक्षित नै रहत । खेत पथार लुटि लेतैं दिन देखारे । दुनूके फोरनिहार सेहे चाहैत होत ।
(बौधुसँ) ला, एकटा चाह ।

(बौधु चाह 'छान' लगैछ । मुदा ओकर ध्यान कतौ दूर छै । चाह टेबुल पर छिडिआए लगैछ । ई देखि ओकर बेटा छोटे टोकि दैछ ।)

छोटे : बाउ हौ ! चाह हेराइ छो ।
बौधु : (चेहाक) अएँ ! **(फेर सम्हरि क' चाह छानि पुरुष ४ के दैछ ।)** आब हमरा सब सनके के देखतै ?

(आ लूद द' स्टूल पर बैसि जाइछ । गुम्म सुम्म । जाधरि पुरुष ४ चाह पीबैछ ओ एक शब्द नै बजैछ । अनुहारक व्यथासँ ओकर पिड़ाके बूझल जा सकैछ । ओकर बेटा छोटे, बापक रूप देखि सकदम्म भेल एक कात बैसल अछि । पुरुष ४ चाह पीबि गिलास नीचाँ ध' दैछ । आ' जेबीसँ पाई निकालि बौधुके दैछ । बौधु यंत्रमानव जकाँ पाइ ल' टिनहा बक्सामे ध' पुनः यंत्रस्थ भ' जाइछ ।)

बौधु : (कनेक कालक बाद) रे छोटे ।
छोटे : जी !
बौधु : समट सभ । आइ दोकान बन्द रहतै ।

(छोटे किछु नहि बुझि कनेक काल जेना अकबक बन्द रहैछ ।)

सुनलही नै, दोकान बन्द रहतै । धर गिलास सभ ।

(आ अपनो स्टोबके बन्द क' दैछ । ताबत् महिला हाथमें डेकची भरि दूध लेने अबैछै । दोकानक अवस्था देखि ओ ठामहि ड्कची ल' ठाढ़ भ' जाइछ ।)

महिला : (कनेक काल स्थिति गमि) रे छोटे, की भेलौ रे ? **(छोटे किछु ने बजैछ ।)** मर, एना कैला केने है । सब चिज बुझाएल है ।
बौधु : (गंभीर होइत) आइ दोकान ने खुजतै) दूध लेने जाओ घरे ।
महिला : (दूधके कठघरामे रखैत) से कथीला ! की भेलैअ ? कोई कुछो कहलकैअ की ?
बौधु : नै, हमरा कोइ कुछो नै कहलक । ओहिना, आइ नै काम कर' के मन होइअ' ।
महिला : मर, धीयापुता की खएतै ?
बौधु : एकदिन ने कमएने धीयापुता मरि नै जएतै ।
महिला : दुत् मरो दुश्मनके धीयापुता । भोरे भोर एना कैला बजै है ?
बौधु : देख रघुनाथपुरवाली । आब हमरा सबके रोजी रोटी एत्त' नै चलतौ ।
महिला : अएँ, कैला ?
बौधु : सुनलही नै, चौधरी टोल आ' अधकारी टोलमे मारि बजर' बला है ।

महिला : गे दाई गे दाई ! मुंहफौंसा आगि लगौलक ।

बौधु : से हे त मुख बात है रघुनाथपुरवाली । हम जनै छिऐ, लेकिन ने बाजि सकै छिऐ ।

(महिला आश्चर्यसँ पति दिश तकैछ ।)

हँ छोटेके माए, हम जनै छिऐ अइ आगि लगब' बलाके ।लेकिन पेटके खातिर चुप छी ।

महिला : पेटसँ अइ बातके की मतलब ?

बौधु : मतलब है, खुब मतलब है । देखौ, अइअ' सब किसिमके लोक अबै है । रंग-बिरंगके बात बजै है । आ हम पेटके खातिर सब बातके घोटने रहै छी ।

(महिला चुप अछि । गौरसँ सुनैत रहैत अछि ।)

दोकान सार्वजनिक होइ है । कोनो बात बाजि दू त' कोइ नै आएत । कहत बात आउट करैअ' । इहे कहौ की करु हम ।

(बौधुके छटपटाहट देखि पत्नी सेहो विचलित भ' जाइछ ।)

महिला : यदि एकरा किछ बजने दुनू टोलमे मारि पीट रोकल जा सकै है । त' आब चुप नइँ रहौक ।

बौधु : माने, एकर बिचार है बाल-बच्चाके विलटा दू । पेट पर लात मारिदू ।

महिला : जै गाछक जरिएमे घून लागल जाइत हो, तकर फलके आशा क' क' की ?

बौधु : माने ?

महिला : जे अजोधी मालिक पर सान रहै, तकरे पर ई सब वार है त आब पेट पर ओहुना लात लगबे करतै ।

(बौधु उठि क' टहल लगैछ ।)

हम त कहै छिऐ, बात सल्ट' बला है त नइँ चुकौ ।

बौधु : **(विश्वासपूर्वक)** ठीक छै । देखल जएतै ।

अन्हार

दृश्य ७

(बौधुक चाहक दोकान । दोकान पर महिला आ' छोटे । सभचिज यथावत् । पुरुष ४ क प्रवेश ।)

पुरुष ४ : **(बौधुके हल्ला करैत)** बौधु, रे बौधु !

(महिला छोटेके इशारा करैछ ।)

छोटे : नै है बाउ !

पुरुष ४ : **(लग जा)** कत्त गेलौ ?

छोटे : बड़का मालिक ओत्त' !

पुरुष ४ : बाप रे, ई छौंड़ा आगिमें पाक' कैला गेलैअ' । कनिआँ, नै रोकलहो ?

महिला : ई नै जइते त आरो अन्हेर भऽ जइतै कका ।
पुरुष ४ : **(आश्चर्यसँ)** की बात रहै से ?
महिला : दुनू मालिकके बीचमे आगि लगव' बलाके नाम कह' गेलैअ' ।
पुरुष ४ : त सब छार-भार एकरे पर पड़तै ।
महिला : गामके इज्जत आ सुख-शान्तिसँ उपर हमरा सवके सुख नै है कका । गामे नइँ रहत त हमसब कत्त रहव !

(हिचुक' लागैछ ।)

पुरुष ४ : **(आँखि भरि जाइछ)** तों किए कने छह । जै गाममे वौधुसन वेटा आ तोरा सन पुतहु रहतै, गामके किछो नै होतै । आव हमरो विश्वास भ' गेल ।

(तावत् पुरुष ३ क प्रवेश । ठोढ़ पर कुटिल मुस्कान । ओकरा देखि महिला मुँह बिजुका लैछ ।)

पुरुष ३ : **(अपनेसँ एकटा बेंचके ससारि बैसैत)** की हो गेनाई ! टोलमे आगि लागल छा आ तों एम्हर मजा लैछ ।

(पुरुष ४ दाँत पीसि क' रहि जाइत अछि ।)

जैबा, छोड़एबहो झगड़ा । प्रधानके हनुमान छहो तों सब की ने !

पुरुष ४ : रे रावणो बेसी दिन नै बाँचिसकल ।
पुरुष ३ : तकरा लेल रामोके जनम' पड़तै किने हो **(ठठाकऽ हँसि दैछ)** । बेचारा गोधिआं **(छोटेसँ)** ला रे 'छोटे, एक कड़क चाह ।
पुरुष ४ : हँसिले, कहिओ तोरो सबपर जमाना हँसतौ ।
पुरुष ३ :ई जमाना हँस' लाइक रहतै तखन ने हँसत हो । (फेर ठहाका)

(तावत् हहायल-फुहायल रूपचन्दक प्रवेश ।)

रूपचन्द : भाइ, तोरे तकैत अबै छियौ । गजब भ' गेलौ ।
पुरुष ३ : की भेलै ?
रूपचन्द : बात उनटि गेलै । दुनू गोधिआँके हमरा सबके चालि बुझ' में आबि गेलै । झगड़ा शान्त भ' गेल है । आ' लोक सभ तोरा-हमरा तकैत एम्हरे आबि रहल हौ ।

(पुरुष ३ नर्भस भऽ जाइछ । उठिकऽ ठाढ़ भऽ जाइछ । अनुहार पर डर पसरल देखल जा सकैछ । कनेक काल अकमकाइत अछि, फेर एक दिश भाग' लगैछ ।)

महिला : चाह नै पीथिन ?

(दुनू भागि जाइछ । पुरुष ४ क हँसी ।)

अन्हारक सँग एकटा अन्तराल

पृष्ठभूमिमे मार सारके, वा जाइ हौ, पकड़ ! खल्ला घींचले !
अगिलेसबा सभ ! बाजत दिन भरि झूठ, नाम हरिश्चन्दर !
बाउ हौ, बाउ, छोड़ि दा हौ बाउ ! जे कैली से पैली !

(पुनः मंच पर प्रकाश । दृश्य पूर्ववत् । पुरुष ४ बैसल । चाहक चुस्की लैत । महिला, छोटेक अनुहार पर प्रसन्नता । तावत्

एक कातसँ रामअसीस आ' बौधु अबैछ। बौधु पुरुष ३ के पकड़ने रहैछ। दोसर दिशसँ अजोधी आ गोराइत अबैछ। गोराइत रूपचन्दके पकड़ने रहैछ। दुनू गोटे मंचक बीचमे आबि दोकानक बगलमे ठोंठ पकडि दुनू के धकेलि दैछ।)

बौधु : बोल सार ! ई खेल के कयने रहे !

पुरुष ३ : हम, हमहीं गाम भार' चाहै छली। दुनूके फोड़ चाहै छली। हमरा माफी देल जाओ प्रधानजी ! गलती भ' गेल।

गोराइत : आ' तोरा की होतै रूपचन !

रूपचन्द : दुहाइ माइ-बाप ! बचाओल जाए।

पुरुष २ : गोधिआं, आइ दण्डक निर्धारण अहाँ करबै। कहु की दण्ड देल जाए एहि दुनूं चण्डालके ?

पुरुष १ : नै गोधिआँ वास्तवमे दण्ड देबाक अधिकारी आइ बौधु हय। जँ बौधु आइ अपन मुँह नै खोलैत त गाममे अन्हेर भ' जइतै।

पुरुष २ : बौधु !

बौधु : मालिक।

पुरुष २ : बाज ! एहि सार सबके की कएल जाए ?

बौधु : छोट मुँह नम्हर बात। हम त अनकर ऐंठ धो क' गुजर कर' बला लोक छी मालिक। दण्ड देबके आँट कत्तसँ करबै।

पुरुष १ : लेकिन प्रधान कहै छौ। बल्कि सौंसे गाम तोरा सँग छौ बौधु। बाज निडर भऽ कऽ।

(बौधु गुम्म अछि। जेना किछु सोचिरहल हो। कनेक कालक बाद कल जोड़ि पुरुष २ क आगाँ ठाढ़ भ' जाइछ।)

बौधु : मालिक, जदि हमरा सन लोकके अपने सब एतेक इज्जत देलियैअ' त हमर दूटा बात मानि लेल जाओ।

पुरुष २ : बाज ने, की कह' चाहै छे ?

बौधु : सरकार ! एहि दुनू पापी के माफ क' दिऔ !

पुरुष १ आ पुरुष २ : **(दुनू एक्केबेर)** माफ !

बौधु : हँ, मालिक। आ दुनूके समितिके काममे सेहो लगा दियौ। पेट भरल रहतै त मनो स्वछ रहतै। इहे एकरा सबके दण्ड है।

(पुरुष ३ आ रूपचन्द आश्चर्यसँ भरल आँखिए बौधुके देखैत अछि।)

पुरुष २ : **(आँखि डबडबा)** बौधु, हमरा सबके ई गर्व नै होबाक चाही जे तोहुँ अही गामक सन्तान छे।

बौधु : **(भरल आँखिए)** मालिक ई त अपने बड़का लोकक बड़प्पन है। हम त चरणके धूल छिऐ सरकार।

(सभक आँखिमें प्रेम आ प्रसन्नताक नोर भरल छैक।)

अन्हार/पटाक्षेप

जनकपुरधाम
फोन नं. २०२६७

अनि बौधुको बक फुट्यो

पात्र स्थिति

१. बौधु –	(उमेर ३५ वर्ष) –	चिया पसले ।
२. पुरुष १ –	(उमेर ४५ वर्ष) –	गाउँको प्रतिष्ठित व्यक्तित्व ।
३. पुरुष २ –	(उमेर ४५ वर्ष) –	गा.वि.स.को अध्यक्ष ।
४. पुरुष ३ –	(उमेर ४० वर्ष) –	गाउँको कुटिल व्यक्तित्व ।
५. पुरुष ४ –	(उमेर ५० वर्ष) –	गाउँको भलाद्मी व्यक्तित्व ।
६. रूपचन्द –	(उमेर ३६ वर्ष) –	गाउँको कुटिल व्यक्तित्व ।
७. छोटे –	(उमेर १० वर्ष) –	बौधुको छोरा ।
८. महिला –	(उमेर ३० वर्ष) –	बौधुकी पत्नी ।
९. पाले –	(उमेर ४० वर्ष) –	गा.वि.स.को पिउन ।

दृश्य १

(गाउँको चोक । चोकनिर एउटा चियापसल । तीनतिरबाट बेन्चहरू राखिएको । बौधु भगत चियाको पानी तताउँदै । बेन्चमाथि एक-दुइजना चियाको चुस्की लिँदै । त्यत्तिकैमा पुरुष १ र पुरुष २ को प्रवेश ।)

पुरुष १ : क्या हो बौधु ! चिया-सिया छ कि ?

बौधु : छ हजुर ! बसौं न । **(पालैपालो भित्र राखिएको कुर्सी बाहिर राख्छ । दुइटै चिया खानेहरू खाएर हिंडिहाल्छन् ।)**

पुरुष २ : बौधु ! के छ गाउँको हालखबर ?

बौधु : **(केतलीबाट दूध खन्याउँदै)** हजुर आफैं गाउँको प्रधान हुनुहुन्छ । सबै कुरा त हजुरलाई थाहै छ । म के जान्दछु र, हजुर !

पुरुष १ : तैपनि तिम्रो पसलमा त सबैखाले मान्छेहरू आउँछन् नि ! गर्छन् होला नि कुराहरू ।

बौधु : हजुर, यहाँ त समय काट्नेहरू हुन्छन् । तिनका कुरामाथि ध्यान दिएँ भने सब काम चौपट भइहाल्छ ।

(दुवैलाई चिया दिन्छ)

पुरुष २ : **(चिया लिँदै)** ठीकै भन्छ मित । तपाईं पनि केटा-केटी कुरा सोध्नुहुन्छ । यहाँ त सबै किसिमका मान्छेहरू आउँछन् । थरि-थरिका कुरा गर्छन् । यसरी सबैको कुरा यसले गर्न थाल्यो भने यसको रोजी-रोटी चल्छ र ?

बौधु : (लाज मान्दै) यो त हजुरहरूकै कृपा हो ।

(त्यत्तिकैमा पुरुष ३ को प्रवेश ।)

पुरुष ३ : **(दुवैलाई हेर्दै)** अहो, हजुरहरू ! दुवैजना एक्कै ठाउँमा ।

पुरुष १ : कुरा के छ ? निकै आत्तिएका देखिन्छौ ?

पुरुष ३ : कुरा नै त्यस्तो छ हजुर ! आज कति दिनदेखि पछि लागेको छु । केही टुङ्गो लागिरहेको छैन ।

पुरुष १ : अब के टुङ्गो लाग्नु ? भन्दियाछु, तिमीलाई हुँदैन । पहिला भागेसरलाई भनेको हो, उसैलाई हुन्छ ।

पुरुष ३ : यो त अन्याय हुन्छ । दिनरात खट्छु म, चुनाव होस् कि पञ्चायत । अनि डिलरशिप लिने बेलामा भागेसर । कसो प्रधानजी ?

पुरुष २ : म के भनुँ , मित जे भन्छ त्यै हुन्छ ।

पुरुष २ : त्यसो भए महाजन । मलाई हुँदे हुँदैन ?

पुरुष १ : तिमी सधैं भोजको वेला कुभिण्डो रोप्ने गर्छौ । तिमीलाई भन्दिएँ, हुँदैन । मूड खराब न गर । (पुरुष २ सँग) जाउँ मित ।

(दुवैको प्रस्थान)

पुरुष ३ : हेर्‍यौ बौधु ! ठूला-बडाको ताल ?

बौधु : मैले के हेर्नु ?

पुरुष ३ : कसरी मलाई लत्याइदियो । अच्छा ठीक छ । फेरि आउँदैछ चुनाव । मेरो नाउँ पनि हरिश्चन्दर हो ।

अन्धकार

दृश्य २

(बौधुको चिया पसल । बिहानको समय । गाउँलेहरू आ-आफ्ना काम गरी बाटोमा जाँदै गरेको । बौधु चिया बनाउँदै । एउटा ७-८ वर्षको बच्चा यता-उता सहयोग गर्दै ।)

बौधु : **(बच्चासँग)** ए छोटे ! हेर् त चिनी छ कि छैन ?

छोटे : (अमूलको टिनको बट्टा छाम्दै) बुवा ! अहिलेलाई पुग्छ ।

बौधु : ठीक छ । गिलासहरू राम्ररी पखाल ।

(केटो छेउमा गिलासहरू तातो पानीले धुन थाल्छ । त्यतिकैमा पुरुष ३ को प्रवेश । बेञ्चमाथि बस्छ ।)

(पुरुष ३ सँग) क्याहो हरिश्चन्दर ? आज बिहानबिहानै कहाँबाट पसलमा ?

पुरुष ३ : त्यसो भए नआइज भन्न त । आउँदिन ।

बौधु : **(बिन्ती गर्दै)** राम, राम ! ग्राहक त भगवान् हुन्छ । त्यसमा पनि बिहानको पहिलो ग्राहक त झन लछ्रिनका ।

पुरुष ३ : अच्छा बौधु ! तिमी पनि सेटारो हान । "ओरालो लागेको मृगलाई बाछोले पनि

खेद्छ ।"

बौधु : छाड्नोस् । चिया पकाउँ ?

पुरुष ३ : यो कुरा तिमीले शुरुमै बुझ्नु पर्दैन ?

बौधु : तपाईं पहिलो ग्राहक हुनुहुन्छ । त्यसैले ... ।

पुरुष ३ : अँ, अँ, बुझें । यो चिया उधारो हुँदैन ।

(बौधु चिया छान्न थाल्छ । त्यहींबाट गइरहेको पुरुष ४ लाई पुरुष ३ ले कराएर बोलाउँछ ।)

ओ रामधन । आउनुस् एक कप जाओस् ।

पुरुष ४ : ए, मलाई हतार छ । प्रधान निस्किहाल्ला !

पुरुष ३ : अँ, बुझें । अहिले तपाईमाथि नै प्रधानको निगाह छ । जे जसरी दुहुन सके दुहुनू ।

पुरुष ४ : **(बेञ्चमाथि बस्दै)** हेर हरिश्चन्दर । यै त खूबी छ अयोधी चौधरीमा । न कसैको लिनु न कसैलाई दिनु । त्यसैले त आज गाउँभरमा सबैले मान्दछन् ।

पुरुष ३ : **(बौधुसँग)** ऐ, एक कप चिया अर्को पनि बनाऊ । **(पुरुष ४ सँग)** अँ तपाईंहरूलाई किन न भन्नु । हामीहरूको लागि त ... ।

पुरुष ४ : हैन, यो मेरै कुरा होइन । आज गाउँको एउटा पनि मुद्दा-मामिला अड्डा-अदालतमा छ र ?

पुरुष ३ : त्यो त थोरै छ ।

पुरुष ४ : गाउँमा शान्ति छ, मान्छेहरू आ-आफ्ना काम गर्दछन् । यो शान्ति, प्रेम कसका खातिर ? यै अयोधीकै खातिर नि ?

पुरुष ३ : हुन सक्छ ।

पुरुष ४ : यै तपाईं ढिपी गरिरहनु हुन्छ । अरे, गाउँमा त्यति विकास नभए पनि कसैको हानि पनि त गर्‍या छैन । सबैलाई समानदृष्टिले हेर्छ । कि कसो बौधु ?

बौधु : **(गिलास बढाउँदै)** हजुर आफैं त भन्दै हुनुहुन्छ ।

पुरुष ४ : हेर्नू, आउँदो चुनावमा उही हुनेछ प्रधान ।

पुरुष ३ : अब हद भइसक्यो । फेरि प्रधानको कुरा न गर्नू । गाउँ प्रधान हुनेहरूबाट रित्तो भइसकेको छैन ।

पुरुष ४ : **(अलि उत्तेजित भएर)** हेर बौधु ! यो कस्तो आगो लगाउने कुरा गर्दैछ । को छ र अयोधीको विरोधमा टिक्न सक्ने ?

पुरुष ३ : **(उठ्दै)** हेर रामधन, समय आउन देऊ । हेरिहाल्छौ नि ।

(दुवै कपको पैसा बौधुलाई दिंदै एकतिरबाट प्रस्थान । पुरुष ४ टुलटुलु हेरिरहन्छ ।)

पुरुष ४ : बौधु, म यो के सुनिरहेको छु ? कसैले बोल्ने आँटसम्म गर्न सकेका थिएनन् । लाग्छ, यसले कुनै उत्पात गर्ला ।

बौधु : ईश्वरले रक्षा गरून् यो गाउँको ।

अन्धकार

दृश्य ३

(बौधुको चिया पसल। अपराह्नको समय। पसलमा छोटे र उसको आमा। महिलाको उमेर ३५-३६ भन्दा बढी छैन। राम्रो जीउडाल।

बाटोमा पुरुष ३ जाँदै गरेको। पसलमा बौधुलाई नदेखेर पसलतिरै लहसिन्छ। उसलाई देखेर महिला सङ्कोचवश घुम्टो हाल्दै।)

पुरुष ३ : **(बेन्चलाई अलि आफूतिर तान्दै)** के रे छोटे ! बाउ छैन ?

छोटे : बजार गएको छ।

पुरुष ३ : किन र ? गाउँमा ठूलो पञ्चायत छ भन्ने उसलाई थाहा छैन ? गाउँका पञ्च-भलाद्मीहरू जम्मा हुँदैछन्। चिया त खुबै बिक्री हुन्छ नि।

छोटे : त्यसैले त चियापत्ती, चिनी लिन गएको छ। अलि खैनी, सूर्ति, गुटखा र विस्कुट, सिगरेट पनि ल्याउँछ।

पुरुष ३ : ए, त्यसो भए आफूलाई पनि फाइदै छ। चियासँगसँगै बिस्कुट। **(अलि पर्खेर)** अँ, एउटा चिया बनाउन भन् आमालाई।

(महिला चिया बनाउन थाल्छिन्। स्टोवमा हावा दिने बेला तेल कम भएको थाहा पाउँछिन्। छोटेलाई बोलाएर केही भन्छिन्। छोटे बट्टा र पैसा लिएर पसलतिर कुद्छ।)

(अलिक सरेर) ए, रघुनाथपुरबाली, सासूले माया गर्छिन् कि ? अँ के भन्छ, राति निकै झगडा गरिन् रे, हो त ? **(महिला केही बोल्दिनन्। गिलास धोइरहन्छिन्।)** हैन, केही छ भने भन्नु क्या ! आजै पञ्चायतमै कुरा चलाइदिन्छु। बौधु सोझो-लाटो छ, केही बोल्दैन।

महिला : **(सानो स्वरमा)** सब ठिकै छ।

पुरुष ३ : डराएर हो भने नडराई भन्नु, म छु नि। बुढीलाई चुल्ठो समाई पञ्चायतमा लग्छु।

महिला : भो, भो। हाम्रो घरको कुरा हो। हामी आफै निप्टचाउँछौं।

पुरुष ३ : त्यै त। हामी छौं नि। मौका पऱ्यो भने तिम्रो खातिर, ... देखाजाला।

महिला : **(छोरा गएको बाटोतिर हेर्दै)** कहाँ मरेछ।

पुरुष ३ : किन बच्चालाई सराप्छौ। आउँदै होला नि ? **(अलि पर्खेर)** रघुनाथपुरबाली, अलि सलाई दिनु। बिडी सल्काउँछु। **(महिला अलि अन्कनाउँछिन्।)**

पुरुष ३ : ल ! चौक-चौतारामा बस्दा लाज हटाउनै पर्छ। यसो गरे व्यापार चल्दैन।

(महिला लाज मान्दै अगाडि बढ्दछिन्। र पुरुष ३ को हातमा सलाई दिन्छिन्। पुरुष ३ सलाईले बिडी सल्काउँछ। सलाई फर्काउने बेला महिलाको हात थिचिदिन्छ। महिला झड्कारेर हात हटाउँछिन्।)

महिला : **(आवेशमा)** कसैको छोरी-बुहारीलाई यसो गर्नुहुँदैन।

पुरुष : ग्राहकसँग पनि त यसरी आवेशमा कुरा गर्नुहुँदैन।

महिला : कुचोले हान्दिनु यस्ता ग्राहकलाई । आउँदैछ छोटेको बुवा अनि म भनुँला ।.

पुरुष ३ : जाऊ, जाऊ । बौधेले के गर्ला र मलाई । अड्डा-अदालत धाउने मै । र अर्को कुरा चोकको सार्वजनिक जग्गामा छ यो पसल । एउटै इसारामा गइहाल्छ ।

(महिला अलि डराउँछिन् । त्यत्तिकैमा छोटे आउँछ । महिलाले तीन-चार थप्पड लगाउँछिन् छोटेलाई ।)

महिला : अल्छी-वज्या, कहाँ मरचाथिइस् ? जहाँ जान्छ खेलमै लागिहाल्छ ।

छोटे : पसलमा भीड थियो । म आफैं लिन्थेँ त ? दिएपछि न आउँथेँ ।

(महिला स्टोवमा सोली लगाएर तेल हाल्छिन् । छिटो-छिटो हावा दिएर चिया बनाउँछिन् । यता पुरुष ३ बिडीको सर्को तान्दै रहन्छ । त्यत्तिकैमा गा.वि.स.को पियन रीझन मण्डलको प्रवेश)

रीझन: रघुनाथपुरबाली एक गिलास चिया मलाई पनि दिनु ।

(र अर्को बेञ्चमा बस्छ ।)

पुरुष ३ : अँ, अँ, रीझनेलाई बिस्कुट दे ऐ छोटे । प्रधान र यसकै त चल्ती छ । जग्गाको भाडामा सित्तैमा चिया-बिस्कुट । कि कसो रीझने ?

रीझन : हेर्नुस् हरिश्चन्दरजी ! हामीहरू आफ्नो गोजीको पैसाले चिया खान्छौं । फोकटको हैन ।

पुरुष ३ : तैपनि, तिमीहरूमाथि त रघुनाथपुरबालीको दयामाया छ नै । जति पनि घिच्नु क्या ।

(पुरुष ३ उठ्छ र एकातिर हिंडिहाल्छ ।)

रीझन : हत्तेरिका, कस्ताकस्ता मान्छेहरू छन् गाउँमा ।

महिला : त्यै त, हेर्नुस् न । जे मन लाग्छ बोल्दोरहेछ ।

(चिया बनाएर रीझनलाई दिन्छिन्)

रीझन : भन्छन् कि अब अरूलाई जिताउने रे प्रधानमा **(चुस्की लिंदै)** बाफ रे भुटिहाल्छन् नि गाउँलाई । कसले भन्छ रघुनाथपुरबाली, जबसम्म प्रधानजी र रामअसीसबाबू एक हुनुहुन्छ कुनै माइका लालले केही गर्ने आँट गर्दैन ।

(चिया समाप्त गर्छ । पैसा दिएर त्यहाँबाट विदा भइहाल्छ । महिला र छोटे चियाको सामानहरू ठीक गर्न थाल्दछन् ।)

अन्धकार

दृश्य ४

(बौधुको चिया पसल। पसलमा गुट्खा, खैनीहरू झुण्ड्याइएको। टेबुलमाथि पाउरोटी। कठघरमा बिस्कुट, सिगरेट, बिडी र सूर्तिहरू चाङ लगाएर राखिएको।

बिहान ८-९ बजेको समय। केही मान्छे चिया पिउँदै। त्यतिकैमा पुरुष ३ को प्रवेश। पसलतिर एक दृष्टि दिन्छ। एकजनालाई बसेको देखेर खुसी भएर उतै लाग्छ।)

पुरुष ३ : ओहो, रूपचन्द भाइ ! तिमीलाई गाउँभरि खोजी सकें, यहाँ छौं।

रूपचन्द : निकै बेर भो। चिया पनि खाएँ। म जान्छु।

पुरुष ३ : होइन, बिजोग नगर न। तिमीसँग कुरा गर्नु छ।

(चारैतिर टाउको घुमाएर हेर्छ। चिया पिउनेहरू उठेर गइहाल्छन्।)

अँ, अब विस्तारले कुरा गरौंला। (बौधुसँग) बौधु, अलि लिकर कडा, दुई कप बनाऊ।

(बौधु ओठ लेप्प्याउँदै चिया पकाउन थाल्छ।)

त भाइ, हामीहरूले अब गाउँमा बस्नु हुँदैन।

रूपचन्द : किन, के भो ?

पुरुष ३ : मलको डिलरशिप लिन चाहें, प्रधानले दिएन। सडकमा माटो हाल्ने काममा उपभोक्ता बन्यो, त्यसमा पनि राखेन। एउटालाई शिक्षकमा घुसाउन चाहें, भएन। के, अब हामीहरू खेतको दूबो चपाऔं।

रूपचन्द : त्यो त ठीक छ दाइ। जहिलेदेखि रामअसीस र अयोधी मिलेका छन् हामी-तिमी जस्तोको गाउँमा गुन्जाइस छैन।

पुरुष ३ : के त, म हिम्मत हारिहालौं।

रूपचन्द : तपाईंजस्तो मान्छे कसरी हिम्मत हार्ने ? तर दुवैलाई ...

पुरुष ३ : के दुवैलाई – दुवैलाई धोक्छौ। कुनै उपाय त सोच्नैपर्छ।

(त्यतिकैमा बौधुले दुवैलाई चिया दिन्छ।)

रूपचन्द : दुवैमा राम-सुग्रीवको मित्रता छ, बाबू। अलिक पनि यताउति हुँदैन।

पुरुष ३ : **(केही सोच्दै)** कुरा त अप्ठ्यारो छ। तर कलियुगमा राम-सुग्रीवको मितेरी कति दिन ?

रूपचन्द : **(साश्चर्य)** मतलब ?

पुरुष ३ : मतलब प्रष्ट छ, दुवैको बीचमा फाटो ल्याउनुपर्छ। गङ्गा-यमुना अलग भए मात्र काम बन्ला। के बौधु ?

बौधु : **(आवेशमा)** उँह, मलाई के मतलब ? तपाईंहरू ठूलो मान्छे – ठूलो कुरा।

पुरुष ३ : यो जग्गा जुन फोकटमा पाएछौ। साँचो बोल्दा त खोसिहाल्छ नि !

बौधु : हामीहरूलाई यसमा न मुछ्नुस्। जे गर्नुछ आफ्नो गर्नुस्। म केही भन्छु ?

रूपचन्द : केही भन्यौ भने जान्छौ नि ! ख्याल राख्नु (पुरुष ३ सँग) त के प्लान छ दाइ ?
पुरुष ३ : आउँदो चुनावमा सोच्नुपर्ला ।

(त्यत्तिकैमा रामअसीसको प्रवेश । उसलाई देख्नासाथ दुइटै अलि सतर्क हुन्छन् । फेरि राम्ररी बस्छ । बौधु भित्रबाट कुर्सी निकालेर बाहिर राखिदिन्छ ।)

बौधु : बस्नुहोस् मालिक ।
पुरुष ३ र रूपचन्द : **(एकैसाथ)** नमस्ते हजुर ।
पुरुष १ : नमस्ते ! के कुरो हो हरिश्चन्दर । आज बैठक जमेको छ नि !
पुरुष ३ : हजुर यसै । तपाईंकै बारेमा सोच्दैछौं हामी ।
पुरुष १ : मेरो बारेमा ?
रूपचन्द : हजुर, जुनवेला कुनै काम हुँदैन, राम्रा कुराहरू सुझ्छन् हामीलाई ।
पुरुष १ : तिमीहरूलाई पनि राम्रो कुरा सुझ्छ ?
पुरुष ३ : उँह, हजुर हामी त्यति लाटो त छैनौं नि !

(रूपचन्दलाई ईसारा गर्छ । रूपचन्द खल्तीबाट खैनी र चुना झिकेर मल्न थाल्छ । उता बौधु चिया बनाएर पुरुष १ लाई दिन्छ ।)

पुरुष १ : के सोच्दैथ्यौ ?
पुरुष ३ : यै कि यसपाली प्रधानमा हजुर उठ्नुपर्ने ।
पुरुष १ : **(अलि आवेशमा)** नचाहिँदो कुरा । मित्त हुँदाहुँदै मेरो बारेमा कसरी सोच्यौ ?
रूपचन्द : अयोधीबाबू त यसपाली त भइहाल्नु भो नि ! अर्कोचोटि हजुरलाई नै दिएमा कुन अपराध भइहाल्ला र ।
पुरुष ३ : र आफन्त-पराइलाई चिन्न मौका पनि पाइन्छ ।
पुरुष १ : अहँ, यो हुन सक्दैन । मितले राम्रैसँग चलाइराख्नु भएको छ र राय-सल्लाह पनि त मसँगै गर्नुहुन्छ नि ।
पुरुष ३ : भोट पनि त हजुरकै जान्छ नि । कति छ अयोधीबाबूको । पन्ध्र-बीस धुरी, सय-डेढसय भोट । हजार भोटले जित्नुहुन्छ; कसले दिन्छ भोट ।
रूपचन्द : अनि पाँचलाख रुपियाँ जुन आउँछ – त्यसले आफ्नो सहयोगीलाई पाल्ने मौका पनि त पाउनुहुन्छ ।
पुरुष १ : रुपियाँ त गाउँकै विकासमा जान्छ नि !
पुरुष ३ : तर पैसा जान्छ आफ्नो मान्छेको हातबाट । अयोधीबाबूको भाइ, भतिजो, सालाहरू बनेका छन् ठेकेदार । तिनीहरू नै उपभोक्तामा, तिनीहरू नै स्कूलमा, तिनीहरू नै कुलोमा र तिनीहरू नै चामल बाँड्नमा ।
रूपचन्द : तपाईंको एउटा पनि खाँटी मान्छे छ र ?
पुरुष १ : तिनीहरू पनि त हाम्रै मान्छे हुन् नि ।
पुरुष ३ : यै भलाद्मीपनको फाइदा उठाउनु भएको छ अयोधीबाबूले । काम आफ्नो र नाम हजुरको ।
रूपचन्द : हामी त हजुरकै भनाइमा अयोधीबाबुको लागि खट्छौं नि । कतै राख्या छ र हामीलाई ।
पुरुष १ : हेर, यो फाटो हाल्ने कुरा नगर । उसले जे गर्छ त्यो ठीकै गर्छ ।

पुरुष ३ : त्यसो भए बिचल्लीमा पार्नुहोस् आफ्नो बाल-बच्चालाई। आफ्नो सहयोगीहरूलाई। किन हामीहरू पनि कसैको लागि सोच्ने। (रूपचन्दसँग) जाउँ रूपचन्द ! यो गाउँको यस्तै रीतिथिति हो। "बाबू-आमाको मन छोरा-छोरीमाथि, छोरा-छोरीको मन ढुङ्गा माथि।"

(दुवै उठ्छन्। उता बौधुको मनमा केही कुरा उम्लिरहेको जस्तो छ। अनुहार केही बोल्ला जस्तो गर्छ। तर बोल्न चाहँदैन। पुरुष १ पनि उठ्छ। खल्तीबाट पैसा झिकेर बौधुलाई दिन्छ र चुपचाप गइहाल्छ। जाने बित्तिकै रूपचन्द र पुरुष ३ जोरले खित्का छाडेर हाँस्छन्।)

अन्धकार

दृश्य ५

(बौधुको चिया पसल। अपराह्न ३-४ बजेको समय। गा.वि.स. अध्यक्ष पुरुष २ को प्रवेश। बौधु अलि हडबडाएर कुर्सी बाहिर निकाल्छ। काँधमा राखेको अँगोछाले त्यसलाई सफा गर्छ र अलि अघि सरेर अध्यक्षलाई बस्ने ईसारा गर्दछ। अध्यक्ष बस्दछ। बौधु स्टोवमा हावा भर्दछ र केतली चढाइदिन्छ। छोटेलाई गिलास सफा गर्न अह्राउँछ।)

पुरुष २ : बौधु, कस्तो चल्दैछ पसल ?

बौधु : जसो-तसो पेट भर्न पाएको छु हजुर।

पुरुष २ : पञ्चायतमा आज तिम्रो पसलको पनि चर्चा चलेको थियो।

बौधु : **(हात रोकेर)** हजुर !

पुरुष २ : अँ, एकजनाले कुरा चलाएको थियो – यो जग्गा तँलाई किन दिइएको हो।

(बौधु चुप लागेर चिया बनाउन थाल्छ।)

साला कति कपटी मान्छे भइसक्यो आजभोलि।

बौधु : तपाईंकै आशामा छु नि, मालिक।

पुरुष २ : जबसम्म म छु, कसले छुन सक्छ तिमीलाई, हेर्छु म पनि खालि आज मित थिएन।

(यत्तिकैमा पुरुष ३ को प्रवेश।)

पुरुष ३ : **(पुरुष २ सँग)** नमस्ते हजुर !

पुरुष २ : क्या हो, आज कसको टाउकोमा हात राख्यौ ?

पुरुष ३ : जी, कसलाई राख्नु। (अलि पर्खेर) आज त मुनरा साफ बाँचिहाल्यो मालिक।

पुरुष २ : त्यै त, तिमीहरूकै चल्ती भैहाल्यो।

पुरुष ३ : हजुर !

पुरुष २ : जसरी उसले पवितराको बुहारीलाई हात-पात गऱ्यो मैले त्यति सस्तोमा कहाँ

छिन्न दिन्थें र ।

(पुरुष ३ मात्र टाउको हल्लाउँछ ।)

भन त, बाहिर गाउँभरको छोरी-बुहारी खेतबारी जान्छन् । यसरी हात-पात गर्ने हो ?

पुरुष ३ : तैपनि त ... ।

पुरुष २ : त्यै त भनें । बाँचिहाल्यो, मित आएको थिएन त्यसैले । **(बौधुले चिया हातमा दिन्छ ।)**

पुरुष ३ : **(चारैतिर चियाउँदै)** हजुर, अब मित आउँदा पनि आउँदैन ।

पुरुष २ : **(हात रोकेर)** मतलब ?

पुरुष ३ : मुनराको टाउकोमा कसको हात छ, हजुरलाई थाहा छ ?

पुरुष २ : **(केही थाहा नभएजस्तो)** तिमी यसरी उल्टो-पुल्टो कुरा किन गर्छौ ? प्रष्ट भनन ।

पुरुष ३ : हजुर रामअसीसबाबू पनि आउँदो चुनावमा उठ्ने रे । त्यसैले अव ऊ आफ्नो मान्छे बनाउन लाग्नुभएको छ ।

(पुरुष २ एक्कैचोटि झस्केर उठ्छ । पुरुष ३ तिर काँचै चपाइहाल्ने जस्तो आँखाले हेर्छ । पुरुष ३ डराउँछ । फेरि, पुरुष २ डुल्न थाल्छ ।)

बौधु : **(हात जोडेर)** हजुर सन्चो भएर बस्नुहोस् न । सबै ठीक भैहाल्छ नि ।

पुरुष ३ : बस्नुहोस् हजुर ! जे साँचो कुरा थियो त्यो भनिहालें । **(पुरुष ३ जान थाल्छ ।)**

पुरुष २ : **(पुनः कुर्सीमा बस्दै)** ए हरिश्चन्दर ! तिमीले यो के भन्यौ ?

पुरुष ३ : आँखा अन्धो भइहालोस् हजुर । रामअसीसबाबू मान्छे बनाउनमा लागि पर्नुभएको छ । गाउँमा एक कान दुई कान मैदान भइसकेको छ ।

पुरुष २ : म भए उही त हो नि ?

पुरुष ३ : यो त हजुर बुझ्नुहुन्छ । उहाँले पनि बुझे पो त ।

पुरुष २ : उसले नबुझेको भए मेरो लागि दिन-रात एक गरिहाल्थ्यो ।

पुरुष ३ : हुन सक्छ बुझेको होला कि मित त मेरै भरमा जित्नुहुन्छ भने म नै कि होइन ... ।

पुरुष २ : तिमी भाँड्न चाहन्छौ । त्यसो हुन सक्दैन ।

पुरुष ३ : मैले त राति खतवे टोलमा घुम्दै गरेको देखें । उहाँको दलानमा मान्छेको ओहोर-दोहोर पनि बढेको छ ।

(पुरुष २ एकदम चुप छ । केही सोच्ने मुद्रामा देखिन्छ । त्यत्तिकैमा रूपचन्दको प्रवेश ।) ओहो, हेर्नुस् रूपचन्द पनि आइपुग्यो । ए रामअसीस मालिकको केही खबर छ ?)

रूपचन्द : हजुर ! मैले भर्खरै आफ्नो आँखाले मुनरालाई बगैंचामा रामअसीस मालिकसँग कानेखुशी गर्दै गरेको देखेको थिएँ ।

(पुरुष २ उद्विग्नताले छटपटिँदै । घुमफिर बन्द हुँदैन । यत्तिकैमा बौधुले एक गिलास चिया लिएर फेरि पुरुष २ लाई दिन खोज्छ ।)

बौधु : **(चिया बढाउँदै)** हजुर शान्त हुनुहोस् । चिया लिनुहोस् ।

(पुरुष २ आँखा तरेर बौधुलाई हेर्छ । त्यो झट्टै चिया लिएर फर्किहाल्छ । पुरुष २ वेगले प्रस्थान गर्छ ।)

पुरुष ३ : रूपचन, आज बौधुको चियाले धित मर्दैन । जाउँ भट्टीतिर ।

(दुवैको प्रस्थान । बौधु त्यहीं टाउकोमा हात राखेर टुलमा थचक्क बस्दछ ।)

अन्धकार

दृश्य ६

(बौधुको पसल । ७-८ बजे बिहानको समय । बौधु चिया पसललाई ठीक-ठाक पार्दै । त्यत्तिकैमा पुरुष ४ को प्रवेश ।)

पुरुष ४ : बौधु, अब यो गाउँमा बस्न अप्ठ्यारो भैसक्यो ।

(बौधु हात रोकेर जिज्ञासाले हेर्न थाल्छ ।)

कहिल्यै नसुनेका कुराहरू हुन थालेछन् ।

बौधु : के भयो र काका ?

पुरुष ४ : के हुन्छ । अधिकारी टोल र चौधरी टोलमा चर्का-चर्की भइरहेछ ।

(बौधुको मुख खुलेको खुल्यै रहन्छ ।)

अनर्थ भइहाल्छ बौधु ।

बौधु : रामअसीस मालिक र अयोधी मालिक कहाँ हुनुहुन्छ ?

पुरुष ४ : त्यै त मान्छेलाई अचम्म लाग्छ । आ-आफ्ना टोललाई सम्हाल्नेहरू कहाँ छन् ?

बौधु : मतलब, दुइटै मित छैनन् ।

पुरुष ४ : अरे रहोस् कि न रहोस् । के दुवैले थाहा नपाई यस्तो हुन्छ ?

बौधु : आखिरमा चण्डालहरूले आगो लगाई नै दिए ।

पुरुष ४ : कसले लाइदियो, हँ !

बौधु : **(सचेत हुन्छ)** होइन, आखिर कसैले त दुवैतिर उल्टोपाल्टो कुरा लाएको होला नि ।

पुरुष ४ : त्यै त । अत्याचार हुन थाल्यो । अब गाउँमा छोरी-बुहारी सुरक्षित रहँदैनन् । खेत-पात दिउँसै लुटिन्छन् । दुवैलाई फुटाउनेहरूले त्यै चाहेका होलान् । **(बौधुसँग)** ल्याऊ, एउटा चिया ।

(बौधु चिया छान्न थाल्छ । तर उसको ध्यान कतै टाढा छ । चिया टेबुलमाथि पोखिन थाल्छ । त्यो देखेर उसको छोरा छोटे बीचमै बोलाउँछ ।)

छोटे : ए बुवा ! चिया पोखिँदैछ ।

बौधु : **(जोरले झस्कँदै आश्चर्यले)** अँ ! **(फेरि सचेत भएर पुरुष ४ लाई चिया छानेर**

दिँदै) अव हामीजस्तालाई कसले हेर्छ ?

(थचक्क टुलमाथि बस्छ चुपचाप। पुरुष ४ चिया पिउँछ, ऊ एक शब्द बोल्दैन। अनुहारको व्यथाले उसको पीडालाई बुझ्न सकिन्छ। उसको छोरा छोटे, बुवाको रूप देखेर तर्सेर अवाक् भई एकातिर बसेको छ। पुरुष ४ चिया खाएर गिलास भुईंमा राख्छ। र खल्तीबाट पैसा झिकेर बौधुलाइ दिन्छ। बौधु यन्त्रमानवजस्तै पैसा लिन्छ र टिनको बक्सामा हालेर पुनः यंत्रस्थ हुन्छ।)

बौधु : **(एकछिन पछि)** ए छोटे !

छोटे : हजुर !

बौधु : थन्क्या सवै। आज पसल बन्द रहनेछ।

(छोटे केही कुरा नबुझेर एकछिन अकमकिएर उभिरहन्छ)

सुनिनस्, पसल बन्द रहन्छ। राख् गिलासहरू।

(र आफै पनि स्टोब बन्द गर्छ। यत्तिकैमा महिला हातमा डेक्चीभरि दूध लिएर आउँछिन्। पसलको अवस्था हेरेर ऊ त्यहीं डेक्ची लिएर उभिरहन्छिन्।)

महिला : (एकछिन स्थितिलाई गमेर) ए छोटे, के भयो हँ ?

(छोटे केही बोल्दैन)

एहे, यसो किन गर्नु भएको ?चुलो-सुलो सेलाएछ।

बौधु : (गम्भीर हुँदै) आज पसल खुल्दैन। दूध घरमै लग।

महिला : **(दूधलाई कठघरमा राख्दै)** किन ? के भयो ? कसैले केही भन्यो कि ?

बौधु : हैन, मलाई कसैले केही भनेको छैन। यसै, आज काम गर्न मन लागेन।

महिला : **(बेन्चमाथि बस्दै)** हैन ! केटाकेटी के खान्छन् भन्या ?

बौधु : एकदिन काम नगर्दैमा बच्चाहरू मर्दैनन्।

महिला : धत्, मरोस् शत्रुका बच्चाहरू। एकाबिहानै यसो किन बोल्नुहुन्छ ?

बौधु : हेर, रघुनाथपुरबाली ! अब यहाँ हामीहरूको रोजीरोटी चल्दैन।

महिला : हँ, किन ?

बौधु : सुनिनस्, चौधरी टोल र अधिकारी टोल बीच लडाई पर्नेवाला छ।

महिला : आम्मै, आम्मै ! कुन मुर्दाले आगो लाइदियो।

बौधु : त्यै त मुख्य कुरा हो रघुनाथपुरबाली। मलाई थाहा छ तर भन्न सक्दिनँ।

(महिला आश्चर्यले लोग्नेतिर हेर्छिन्)

अँ, छोटेकी आमा। मलाई थाहा छ यो आगो लाउने को हो, तर पेटको खातिर चुप लाग्या छु।

महिला : पेटसँग यो कुराको के सरोकार ?

बौधु : सरोकार छ, खुब सरोकार छ। हेर, यहाँ सबैखाले मान्छेहरू आउँछन्। विभिन्न किसिमका कुराहरू गर्छन्। र म पेटको खातिर सबै कुरालाई निल्दैरहन्छु।

(महिला चुप छिन्। ध्यान दिएर सुनिरहन्छिन्।)

पसल सार्वजनिक हुन्छ। केही बोलिदिउँ भने कोही आउँदैन। भन्छन् कुरा "आउट" गर्छ। तिमी नै भन के गरुँ म ?

(बौधुलाई छटपटिएको देखेर पत्नी पनि विचलित हुन्छिन् ।)

महिला : यदि हजुरले मुख खोल्दा दुवै टोलमा लडाई-झगडा रोक्न सकिन्छ भने अब चुप लाग्नु पनि त ठीक छैन।

बौधु : मतलब, तिम्रो विचार छ छोरा-छोरीलाई विचल्लीमा पारिदिऊँ ? पेटमा लात हानूँ ?

महिला : जुन रूखका जरामै धमिरा लाग्छ भने त्यसबाट फलको आशा गरेर के ?

बौधु : के मतलब ?

महिला : जुन अयोधी मालिकमाथि गौरव थियो, उहाँमाथि नै प्रहार भइरहेछ भने त्यसै पनि पेटमा लात हानिने नै भयो।

(बौधु उठेर डुल्न थाल्छ ।)

म त भन्छु। यदि हुन सक्छ भने कुरा मिलाउनुस्।

बौधु : (विश्वासपूर्वक) ठीक छ। देखा जाला।

अन्धकार

दृश्य ७

(बौधुको चिया पसल। पसलमा छोटे र महिला। सबैथोक यथावत्। पुरुष ४ को प्रवेश ।)

पुरुष ४ : **(बौधुलाई डाक्दै)** बौधु, ए बौधु !

(महिला छोटेलाई ईसारा गर्छे ।)

छोटे : बा छैन।

पुरुष ४ : **(नजिक गएर)** कहाँ गयो ?

छोटे : ठूलो मालिककहाँ।

पुरुष ४ : आम्मै, यो किन आगोमा डढ्न गएछ ? दुलही, रोकेनौ ?

महिला : वहाँ नगएको भए अझै उत्पात हुन्थ्यो काका।

पुरुष ४ : **(आश्चर्यले)** किन, के कुरा थियो र ?

महिला : दुवै मालिकको बीचमा आगो लगाउनेको पोल खोल्न जानुभएको छ।

पुरुष ४ : अनि त सबै अपजस यसै माथि पर्छ नि।

महिला : गाउँको इज्जत र सुख-शान्ति भन्दा ठूलो हाम्रो सुख छैन काका। गाउँ नै रहँदैन भने हामीहरू कहाँ रहन्छौं ? **(सुँकसुँकाउन थाल्छे)**

पुरुष ४ : **(आँखा आसुले भर्छ)** तिमी किन रुन्छौ ? जुन गाउँमा बौधुजस्तो छोरा र तिमीजस्ती बुहारी हुन्छन्, गाउँलाई केही हुँदैन। अब मलाई पनि विश्वास लाग्यो।

(त्यत्तिकैमा पुरुष ३ को प्रवेश। ओठमा कुटिल मुस्कान। उसलाई देखेर महिला मुख फर्काउँछिन्।)

पुरुष ३ : **(आफैँ एउटा बेन्च तानेर बस्दै)** के हो गेनाई। टोलमा आगो लागेको छ र तपाईं यता मजा लिँदै हुनुहुन्छ।

(पुरुष ४ दाह्रा किटेर चुप लाग्छ।)

जानुपर्ने नि। झगडा छुटाउनु मर्थ्यो। तपाईंहरू त प्रधानको हनुमान हुनुहुन्छ नि।

पुरुष ४ : रावण पनि धेरै दिन बाँच्न सकेन।

पुरुष ३ : त्यसको लागि त रामलाई पनि जन्मिनु पर्छ नि। (खित्का छाडेर हाँस्छ।) विचरा मित! **(छोटेसँग)** ल्याऊ रे छोटे, एक कप कडा चिया।

पुरुष ४ : हाँस, हाँस, कुनै दिन तिमीहरूमाथि पनि दुनियाँ हाँस्नेछ।

पुरुष ३ : यो दुनियाँ हाँस्न लायक रहने भए पो हाँस्नु!

(पुनः खित्का। यत्तिकैमा हस्याङ-फस्याङ गर्दै रूपचन्दको प्रवेश।)

रूपचन्द : दाइ, तपाईंलाई नै खोज्दै आउँदैछु। गजब भयो।

पुरुष ३ : के भयो ?

रूपचन्द : कुरा पल्टियो। दुइटै मितले हाम्रो चाल बुझेछ। झगडा शान्त भइसक्यो र मान्छेहरू तपाईं-मलाई खोज्दै यतै आउँदैछन्।

(पुरुष ३ नर्भस हुन्छ। उभिन्छ। अनुहार त्रसितजस्तो देखिन्छ। एकछिन अकमकाउँछ। फेरि एकातिर भाग्न थाल्छ।)

महिला : चिया लिनुहुन्न।

(दुवै भाग्छन्। पुरुष ४ को हाँसो।)

(अन्धकारसँगै एउटा अन्तराल)

पृष्ठभूमिमा गोद सालेलाई, ऊ त्यो जाँदैछ, समात्। छाला काढिदे; भँडुवाहरू; बोल्ने दिनभर झूठ नाम 'हरिश्चन्दर'।
आब्बै-आम्मै, छाडिदिनोस्। जे गरेँ त्यो पाएँ।

(पुनः मञ्चमा प्रकाश। दृश्य पूर्ववत्। पुरुष ४ बसेको। चियाको चुस्की लिँदै। महिला र छोटेको अनुहारमा प्रसन्नता। त्यतिकैमा रामअसीस र बौधु एकातिरबाट आउँछन्। बौधुले पुरुष ३ लाई समातेको छ। अर्कोतिरबाट अयोधी र पाले, रीझन मण्डल आउँछन्। पालेले रूपचन्दलाई समातेको छ। दुवैजना मञ्चको बीचमा आएर दुवैको कठालोमा समातेर पसलको छेउमा हुत्याइदिन्छन्।)

बौधु : भन् साले ! यो नाटक कसले गर्‍याथियो ।

पुरुष ३ : म .... म। म नै गाउँलाई भाँड्न चाहन्थे। दुवैजनालाई फुटाउन चाहन्थें। मलाई माफी दिनुस् प्रधानजी ! गल्ती भयो ।

पाले : अनि तिमीलाई के गरौं रूपचन्द ।

रूपचन्द : गुहार सरकार ! जोगाइदिनुहोस् ।

पुरुष २ : मित, आज दण्ड निर्धारण तपाईले गर्नुहुनेछ। भन्नुस्, के दण्ड दिने यी दुवै चण्डाललाई ।

पुरुष १ : हैन मित, वास्तवमा आज दण्ड दिने अधिकारी बौधु। यदि बौधुले आज आफ्नो मुख नखोलेको भए गाउँमा अनर्थ भइसक्थ्यो ।

पुरुष २ : बौधु !

बौधु : मालिक !

पुरुष १ : भन् यी सालाहरूलाई के गर्ने ?

बौधु : "सानो मान्छे ठूलो कुरा" हजुर। म अर्काको जुठो धोएर जीवन धान्ने मान्छे छु हजुर। दण्ड दिने आँट कहाँबाट आओस् ?

पुरुष १ : तर प्रधान भन्नुहुन्छ। बरु पुरै गाउँ तिम्रो साथ छ बौधु। नडराईकन भन।

(बौधु एकदम चुप छ। केही सोचिरहेको जस्तो। अलिकबेर पछि हात जोडेर पुरुष २ को सामुन्ने उभिन्छ ।)

बौधु : यदि मजस्तो मान्छेलाई यहाँहरूले यति इज्जत दिनुहुन्छ भने मेरो दुइटा कुरा मान्नुहोस् हजुर ।

पुरुष २ : भन न। के भन्न चाहन्छौ ?

बौधु : सरकार यी दुइटै पापीहरूलाई माफ गरिदिनुहोस् ।

पुरुष १ र २ : **(दुवै एकैचोटि)** माफ !

बौधु : हो, हजुर। अनि, दुइटैलाई समितिको काममा समेत लगाइदिनुहोस्। पेट भरे मन पनि स्वच्छ रहन्छ। यही यिनीहरूको दण्ड हो ।

(पुरुष ३ र रूपचन्द आश्चर्य चकित आँखाले बौधुलाई हेर्दछन् ।)

पुरुष २ : **(आँखामा आँसु भरेर)** बौधु, हामीलाई गर्व छ कि तिमी यो गाउँको सन्तान हौ ।

बौधु : **(आँसु भरिएको आँखाले)** हजुर, यो त तपाईजस्तो ठूलो मान्छेको बडप्पन हो। म त चरणको धूलो मात्र हुँ सरकार ।

(सबैको आँखामा प्रेम र प्रसन्नताको आँसु भरिएको छ ।)

अन्धकार/पटाक्षेप

अनुवादक : विनोद मिश्र

मलक्का यात्रा

रेवतीरमण लाल

मनोरम उद्यान

हमरा सभकें क्वालालंपुरमे लगभग पंद्रह दिन भ चुकल छल ! हमरा सभकें बुझल छल जे मलक्का मलेशियामे पड़ै छैक। ई अत्यन्त आकर्षक नगर अछि आ ऐतिहासिक नगर सेहो। हमरा लोकनि पढ़ने छलौं जे मलक्का प्रारंभमे समुद्री मार्गसँ होइत व्यापारक एकगोट प्रमुख केन्द्र रहल अछि। येकर नाम बड सुनने छलौं तएँ बड़ आकांक्षा छल जे एकबेर मलक्का जइतौं। क्वालालंपुरमे हम सब विचार कएलौं जे ओतए घुमि आएल जाए। दू दिनक कार्यक्रम बनओल गेल आ हमरा लोकनि एगारहो देशक मित्र लोकनि १३ अप्रैल १९९६ कें किछु स्थानीय मित्रलोकनिक संग एकगोटे एयरकंडीशन बस सँ भिनसर ८ बजे स्थानीय समय सँ मलक्काक हेतु प्रस्थान कएलौं।

मलक्का मलेशियाक तेरहगोट राज्यमे एक अछि, ओकर राजधानी मलक्का नगर छैक। मलक्का मलेशियाक पश्चिम किनारमे पडैं छैक। क्वालालंपुर सँ १४७ कि.मि. दूर अछि। एकर क्षेत्रफल ६५८ वर्ग कि.मि. छैक आ तीन जिलामें विभक्त अछि। शहरसँ बहरएलापर सडकपर ट्राफिक किछु कम भेल – सडक विशाल छल। सडकक दुनू कात बेसी जंगल बुझा रहल छल, किछु उँचगर पहाडी सभ सेहो छल – सभ हरियरी सँ भरल ! जंगलमे पामक जंगल छल त रबर गाछक जंगल। अधिकांश क्षेत्रमे पाम आ रबर रोपल गेल छलैक।

पहाडी क्षेत्र सडक दिस ढहल, झरल नहि बुझा रहल छल कारण वर्षामे पानिक निकासक वास्ते पक्की पनिवट क' देल गेल छलै। चमकैत सडक, जेना सडक तुरन्ते बनल होइ ! कतौ फुटल-फारल नहि। हमरासभक बस एहिठामक वेस चौडगर उत्तर-दक्षिण राजमार्गपर दौडैत हवासँ बात क' रहल छल। रौद अत्यन्त कडा छलै जेना देहकें झरकबैत होइ, मुदा हमरा लोकनि तकर मात्र अनुमान क' रहल छलौ।

भिनसरक नौ बजे पश्चात् तामन मिनी मलेशिया (Taman Mini Malaysia) आ तामन एशियन पहुँचलौं। भव्य रूपें सजाओल वाटिका ! एहि ठामक भाषामे तामन (Taman) क अर्थ होइछ वाटिका। एहिठाम रंग विरंगक फूल एवं हरियर-हरियर गाछ सभ सजाओल। ओना ई स्थान जंगली क्षेत्र छलैक। मिनी एशियन (Mini Asean) मे अपूर्व वाटिका लगाओल गेल अछि, एहिठाम एशियाक देशसभ मलेशिया, थाइलैण्ड, फिलीपिन्स, सिंगापुर, इण्डोनेशिया एवं ब्रुनोइ दारुसलामक प्रमुख सांस्कृतिक झलक देखबामे अबैछ। तहिना मिनी मलेशियामें एहिठामक निर्माणमे मलेशियाक तेरहो राज्यक सांस्कृतिक संपदाक दिग्दर्शन एक ठाम पाओल जाइछ। एहिठाम मलेशियाक विभिन्न प्रदेशक वास्तुकला, गृह निर्माण, हस्तकला आदिक धरोहर सभक परिचय प्राप्त कएल जा सकैछ। मलेशियाक प्रान्तसभ जेना पहांग, केलांग टांग, सेलंगोर,जोहोर, मलक्का आदि सभ प्रान्तक सांस्कृतिक परिचय फुट-फुट देलगेल अछि।

ई क्षेत्र बहुत दूर धरि पसरल अछि। मिनी मलेशियामें मलेशियाक लोकगीतक धुन सतत बजैत अछि आ प्रत्येक दिन दिनक १२ बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम होइत छैक। एहि हेतु फुटेभव्य मंच बनल छैक आ मंचक सामने दर्शकके वैसबाक हेतु सिमेन्टसँ खाढी बनल आ ओहि पर काठक पटहा फीट कएल। हमरा लोकनिकें दृश्यवलोकन करैत-करैत दिनक साढे एगारहक लगभग भ' चुकल छल-भूख-पियास जोर क' देने छल तएँ सांस्कृतिक कार्यक्रम हाथस छुटिगेल आ हमरा लोकनि भोजनक वास्ते ओहिठामसँ प्रस्थान क देलौं।

ओहिठाम सँ घुमैत काल एहिठाम सँ सटले किछु दूर पर Taman Buya Malaysia गोहिक पार्क मे पैसलौ। ई क्रोकोडाइल फार्म मलक्का शहरसँ बीस कि.मि. पडैछैक आ लगभग तीन हेक्टरमे परसल अछि। ई फार्म भव्यरूपसँ सजाओल गेल छैक आ एकदर्जन सँ वेसी खत्ताक निर्माण भेल अछि जाहिमे एकसय सँ वेसी गोहि, विभिन्न जातिक राखल गेल अछि। एहिठाम बाल-उद्यान सेहो अछि आ छुट्टीक दिनमे एहिठाम खूब भीड रहैछ। गोहिसभक रखवारसभद्वारा छुट्टीक दिनमे अनेक खेल रचाओल जाइछ जे धिया-पूतासभक हेतु अत्यन्त मनोहारी होइछ। एहि खेल सभमे मैजिक शो, घोड़सवारी, रेल यात्रा आदि सेहो संचालन होइछ। हमरा लोकनि छुट्टीकक दिन शनि दिन पहुँचल छलौं तएँ एहि सभक पूर्ण आनंद लेबक अवसर भेटल।

एहि पार्कक भ्रमण पश्चात् हमरा लोकनि भोजनवास्ते प्रस्थान कएलौं। हमरासभकें भोजनक व्यवस्था Malacca Paradise Village resort मे भेल छल। शहरक लगमे पहुँचितहि बाटमे आमक गाछ सभ देखलौ जे नमहर-नमहर घौरछा लागल फड़ल छल, एकर अतिरिक्त कटहरक गाछ, नीमक गाछ सेहो देखबामे आएल। संगहि रस्तेमे सेन्ट पीटर्स चर्च देखबामे आएल। ई चर्च मलेशियाक सभसँ पुरान चर्चमे सँ एक अछि। एकर निर्माण सन् १७१० ई. मे पुर्तगालीद्वारा भेल छल। ई पौर्वीय एवं पाश्चात्य वास्तुकलाक मिश्रण प्रदर्शित करैत अछि। मलेशियामे इएह एकगोट चर्च अछि जतए भगवानक आदमकद मूर्ति स्थापित कएल गेल अछि।

मलक्का पैरेडाइज भीलेज होटलमे प्रवेश करितहि मन प्रसन्न भ'गेल एकदम भव्य होटल। विभिन्न घरसभ एहिठामक पारंपरिक निर्माण कलाक प्रभाव द रहल छल आ आधुनिक सुविधा सभसँ संपन्न। हमरा लोकनिक हेतु सभ व्यवस्था भ' चुकल छल - अन्दर जा बफे लंच लेलौं। भोजन अति सुन्दर-अनेक प्रकारक व्यंजन सँ परिपूर्ण। भात,

माछ, मासु– मटन, बीफ। माछमे कुटिया, जुआएल–जुआएल इचा माछ, फल, मिठाई, स्थानीय तरकारी, पापड, मखन, हरियर सलाद आदि ततेक भेराइटी छल जकरा सभक नामोने बुझल छल। भरिमन भोजन कएलौं।

भोजनोपरान्त मलक्काक रेनेसाँ होटल दिस प्रस्थान कएलौ. जतए हमरासभकें रहबाक व्यवस्था छल। भोजन एवं वासक हेतु पहिनहि सँ व्यवस्था कएल गेल छल तएँ कतौ विलम्ब एवं आनकोनो समस्या नहि भ' रहल छल।

मलक्का रिनेसाँ होटलमे प्रवेश करितहि मन प्रसन्न भ'उठल। भव्य होटल, क्वालालंपुरक होटल पेटलिंग जया। Petaling Jaya क होटल Hilton जतए हमरा लोकनि रहि रहल छलौं, पाँचतारा होटल छल, ओहू स कए गुना नीक ई मलक्काक होटल बुझाएल। भाडा सेहो कम छलैक। अपन-अपन कोठलीक कुंजी लए दिनक अढाइवजे अपन-अपन कोठलीमे प्रवेश कएलौ। टी भी खोललौं त हिन्दी फिल्म 'आइना' चलिरहल छल। टी भी भव्य, रंगीन छल। बहुत दिनक पश्चात् अर्थात् मलेशियामे अएलाक बाद ई दोसर बेर हिन्दी फिल्म देखबाक अवसर भेटल छल। फिल्म भी चैनल स द' रहल छल।

इतिहाससँ साक्षात्कार

साँझ साढे सात बजे होटलक लौबीमे रात्रिभोज (dinner) क व्यवस्था छल। समयपर डिनर हौलमे पहुँचलौ आ भोजन कएलौं। बफे प्रथा। भोजनक भव्य व्यवस्था छल – अनेक तरहक प्रकार। भात, मासु, माछ, मिठाई, फल, माछक अनेक भेराइटी, मासुमे मुर्गा, मटन, वीफ, सुगरक मासु आदि सभ छल। भोजनोपरान्त रातुक नौ बजे हमरा लोकनि मलक्काक ऐतिहासिक स्थल बंदर हिलीर (Bandar Hilir) गेलौ। एहि स्थल पर प्रत्येक राति "लाइट एण्ड साउण्ड शो" आयोजित होइछ। एहिठाम प्रकाश एवं ध्वनिक तेहन प्रभावशाली व्यवस्था छैक जे प्रकाश एवं ध्वनिक माध्यम सँ मलक्काक प्रारंभिक इतिहाससँ स्वतंत्रता धरिक कथा देखाओल जाइछैक। अपने सामने प्रत्यक्ष घटना होएबाक आभास दैत छैक। एहिठाम इतिहास साकार भ' उठै छैक जखन कार्यक्रम प्रारंभ होइछैक। ई घटनासभ विशाल क्षेत्रमे देखल जाइछ। एहिठाम युद्धक भीषण कोलाहल सुनल जा सकैछ त तोपक तुमुल गडगडाहटि सेहो सुनल जा सकइ छ।

इतिहास

मलक्का १४०३ ई. मे एहिठाम परमेश्वरके अएलाक पश्चात् अपन इतिहास प्रारंभ करैछ। परमेश्वर सुमात्राक राजकुमार छलाह जे ओतए सँ भागिकए शरण पएबाक आकांक्षासँ एहिठाम उतरल छलाह। ओहि समयमे ई एकगोट माछ मारएवला सभक गाम छल। जतए ओ उतरलाह ओहिठाम एकगोट गाछ छलैक। जकरा मलक्का कहल जाइ छलैक। राजकुमार परमेश्वर एहिठाम प्रेरणा प्राप्त क' मलक्का गाछक नामसँ मलक्का नगर बसौलनि जे आगू जाकए मलक्का सलतनत बनल। ओ पश्चात् इस्लामधर्म ग्रहण कए अपन नाम सुलतान इशकन्दर शाह रखलनि।

सुलतानक वंश बढलनि आ आगू जा कए ओहि वंशमे राज्य-सत्ताक लोभक कारणे देआदी कलह प्रारंभ भ गेल। स्थिति बहुत कारुणिक भ उठल। मलक्का द्विपक महत्त्व बढैत गेलै। ई पूर्व आ पश्चिमक व्यापारक मुख्य केन्द्र बनिगेल। एहिठाम सोन, चानी,

चाह, सिल्क, हफिम, खैनी, सुगन्ध एवं मसालाक व्यापारक केन्द्र बनिगेल। मसालाका व्यापार त यूरोप एवं दक्षिण अमेरिकाधरिक व्यापारीसभकें आकर्षित कए लेलक। पुर्तगालक नजरि एकरा पर पड़लैक आ १५११ ई. मे पुर्तगाल एकरा अपन उपनिवेश बनाकए सुलतानकें मारि भगौलक। सुलतान एहिठाम सँ भागि जेहोरमे जा बैसलाह आ पुनः अपन सलतनत प्राप्त करबाक हेतु आधारक प्रयासमे लागि गेलाह, मुदा ओ कहियो सफल नहि भ' सकलाह।

पुर्तगाली शासनक पश्चात् १८१८ ई. मे मलक्का डचक अधिन आएल आ पुनः १८२६ ई. मे ई बृटिश इष्ट इण्डिया कंपनी अंतर्गत आएल जे १९५७ ई. मे मात्र स्वतंत्र भ' मलेशिया अंतर्गत एकगोट प्रान्त बनल।

लाइट एण्ड साउण्ड शो राति साढे दस बजे समाप्त भेल। समय केना गुजरिगेल से नहि बुझाएल। एहि 'शो' क हेतु दर्शक सभक वैसबाक हेतु तेहन व्यवस्था अछि जे सैकड़ों आदमी आरामा सँ बैस सकैछ आ देख सकैछ। ई शो विशाल खुला क्षेत्रमे पसरल अछि। 'शो' देखि हमरा लोकनि पुनः होटल आबि गेलौ।

संगीतक धुन पर चलैत रिक्सा

१४ अप्रील ९६ कें भिनसर दैनिक क्रियाक उपरान्त होटलक कैन्टीनमे जलपान कएलौं। जलपान कए बहरएलौं त होटलक लौंजमे अन्य देशक किछु मित्रलोकनिकें बाहर घुमए जएबाक हेतु तैयार बैसल देखलियनि, हमहु अपन देशक मित्रलोकनिकें पुछलियनि त ओ लोकनि बाहर जएबाक हेतु तैयार नहि भेलाह। हम एसगरे अपन कैमरा पखुरामे लटका होटलसँ बाहर अएलौं। समय भिनसरक लगभग नौ बजिरहल छल। रेनेसाँ होटलक पँजरादने बजार दिस चललौं। होटलक दोसर कात एक पाँतीसँ सड़कक कातेकाते सराई (Serai) अर्थात् पुरनका शैलीक छतवला नम्मा-नम्मा घर जाहिमे अनेक प्रकारक स्थानीय भोजन बनिरहल छलैक। घर चारुभरसँ खुजल – ओहिठाम भोजन बनैत आ लगेमें टेवुलकुर्सी पर लोक अपन मन अनुसार भोजन क' रहल। एहन होटलसभ वेसीकाल साँझ खन सँ देखल जाइछ जे बेसीराति धरि चलैत रहैत अछि। एहि होटल सभमें भीड़ सेहो रहैछैक। बजार एखनधरिबंदे छलैक– दस बजे बजार खुजै छैक। एहि क्षेत्रमें पैघ-पैघ होटलसभ अवस्थित अछि। सभमे एकस एक सुविधा। ओहीठाम एकगोट चौड़गर नहरिसन बहिरहल छलैक– ओकर किनारपर पुरान पारंपरिक घर सभ आ कतौ-कतौ आधुनिक घरसभ सेहो दृष्टिगोचर भ' रहल छल। एहिठामक वासीन्दामे वेसी चीनीमूलक लोक बुझाएल। होटल घुरलौं त होटलक मुँहपर सोलोमन आइलैण्डक मित्र रैनिक भेटलाह। हुनक आग्रहपर हम हुनका संगे पुनः घुमए बहरएलौं। तीन पहियावला रिक्सा भेटल। ओ बजार घुमक वास्ते प्रतिघंटाक भाडा १५।- रिंगीट (मलेशियन मुद्रा) कहलक। हमरा लोकनि किछु काल पैरे चललौं तखन एकगोट रिक्सा कएलौं। एहिठाम एहि रिक्साक नाम मोवाइल मैक्सी (Mobile Maxis's) छैक। ओ रिक्सा दस रिंगीटमे बजार घुमादेवाक हेतु तैयार भेल। ओहि रिक्सापर दूगोटे मात्र वैसबाक स्थान रहैछैक, हम दू गोटे छलौं, बैस रहलौं। रिक्सा चालकक उमेर लगभग साठी वर्षक छलैक हएत। मुदा रिक्सा चलाबक संगहि ओ रिक्सापर झुमए लागल जेना नाचि रहल हो। येकर कारण ई छलै जे ओकर सीटक पँजरामे कैसेट राखल छलै जे रिक्सा चलावएकाल ओ वजवैत रहैछछल। रिक्सावलाक सीट हमारा सभक दहिन भागमे

छलै। रिक्सा-चालक मधुर संगीतक लहिरिमे झूमैत मगन छल आ ओकरे संगे मगन छलहुँ हमहु दुनू गोटे। रिक्सावलाका पएर रिक्सापर नाचि रहल छलै आ रिक्सा सडकपर गुडकैत जा रहल छलै। बुझाइ छलै जेना रिक्सावलोंक संगीतक बलपर जुआनी घुरिआएल रहै। रौद बड कडा छलैक तैयो हमरा लोकनि संपूर्ण चाइनाटाउन घुमि अएलौं। बजार एखनधरि पूर्णरूपेण खुजि चुकल छलै। ई चाइनाटाउन छलै तएँ एहिठाम चीनीमूलक लोक सभसँ वेसी छलैक। सबतरि दोकानदारसँ ल वासीन्दाधरि चीनीलोक नजरि आबि रहल छल। दिनक १२ बजे हमरा सभक दिवाभोज (लंच) छल तएँ हम दुनू मित्र होटल घुरि अएलौं।

होटलक ओही लौंजमे लंचक व्यवस्था छल– बफे प्रथा– भोजनमे संचार ओहिना, अनेक प्रकारक व्यंजन। मनसँ भोजन कएलौं।

मंदिर-मस्जिदक अद्भुत संगम

दिनक डेढ बजे हमरा लोकनि ओहि मलक्का रेनेशाँ होटलसँ चेक आउट कएलौं आ हमरासभक संपूर्ण ग्रूप बससँ घुमए हेतु बहार भेलौं। बहरएलौं त किछु दूर पर मलक्का नदीपर नजरि पड़ल। ओ मलक्का शहर द' बहि रहल छल आ लोकक कहब छैक जे एहि नदीबाटे व्यापार सेहो होइ छलैक, ई प्रचीन नदीछल। आगू चीनी वासीन्दासभक क्षेत्रमे पहुँचलौं जतए चेंग हुन टेंग (Cheng Hoon Teng) मंदिर अथवा ग्रीन स्काइ मंदिर कही से छल ई मंदिर देशक सभसँ पुरान मंदिरमे सँ एक अछि। एकर निर्माण सन् १६४६ ई. में भेल छल आ एकर निर्माण सामग्री चीनसँ लाएल गेल छल। एहि मंदिरक काष्ठकला, चित्रकारी एवं वास्तुकला मनोहारी अछि।

एहि मंदिरमे चीनी लोकसभक भीड छल। मंदिरक बाहर द्वार लग धूप, अगरबत्ती, चढौना आदिक दोकानक संगहि किछु लोक ई सामग्रीसभ घुमि-घुमि बेचैत छल। भीखमंगासभ सेहो भीखमंगैत। मंदिरक तीनगोट द्वार आ तीनूद्वार पर दुनूकात कुकुरक मूर्ति। एककात मादा कुकुर त दोसरकात नर कुकुर। नर कुकुर वैसल हाथमे थैला (धन) धएने त मादा कुकुर बच्चा हाथमे धएने वैसल। चीनी धारणा अनुसार ई विकासक-कल्याणक प्रतीकक रूपमे मानल जाइछ।

मंदिरक प्राचीन रूप विदेशीद्वारा ध्वस्त क' देलगेल छल जकरा पश्चात् उद्धार कएल गेल अछि। मंदिरमे प्रवेश करितहि चीनी श्रद्धालु लोकनि झुकैत त करजोरि प्रणम करैत प्रवेश करैत छथि।

एहि मंदिरक पश्चात् किछुये दूर पर मस्जिद कंपोङ्ग क्लींग (Musjid Compung Kling) लग पहुँचलौं। ई मलेशियाक सभसँ पुरान मस्जिदमे सँ एक अछि। एकर निर्माणमे सुमात्राक वास्तुकलाक प्रभाव अछि। ई पूर्व-पश्चिमक वास्तुकलाक सुन्दर संयोगक उदाहरण अछि। ई पिरामीड आकारक पैगोडा शैलीक निर्माण अछि जकर छत चित्रित काष्ठक अछि।

एहिठामसँ एही कातमे किछु दूर पर एकगोट हिन्दू मंदिर कौम चेटी मलक्का (Kaum Chetty Malaka) छल। एकर निर्माण १७८१ ई. मे भेल छल। चेट्टी जाति दक्षिण भारत सँ येतए आएल छलाह। ओ लोकनि व्यापारी छलाह मुदा मुख्य रूपसँ ओ व्याजपर कर्ज देवक काज करैत छलाह। ओ जाति एखनो कर्ज देवक काज करै छथि किछु अंशमे। ई मंदिर हुनके सभक अछि। चीनी, मुसलमानी एवं हिन्दू मंदिर-मस्जिद

एकेठाम होबक कारण एहिठामक जातीय सौमनस्य अथवा धार्मिक सहिष्णुता मानल जाइछ जे एहिठाम रहलैक अछि।

एहि क्षेत्रक पश्चात् हमरा लोकनि सुप्रसिद्ध Baba Nyonya Heritage Museum पहुँचलौं ई एकगोट भव्य म्युजियम अछि। बाबा भेल पुरुष आ न्योन्या भेल महिला।

मलक्काक प्रारंभिक इतिहास ई बतबैछ जे प्रारंभमे चीनसँ सेहो लोकक वाढि आएल छल जे पहिने त व्यापार करैत छल मुदा पश्चात् एहीठाम वसिगेल। ओ सभ एहिठामक रीत-रेवाज एवं परंपराकें स्वीकार कए लेलक एहिमेसँ बाब आ न्योन्याक समूहक विकास भेल। ओ लोकनि मलय संस्कृति एवं मलय भाषाकें अंगीकार कए लेलक। ई म्युजियम गैरसरकारी अछि आ एहिठाम ओकरासभक कला प्रदर्शित कएलगेल अछि जकरा 'परानकन' सेहो कहल गेल अछि। हमरासभकें एकगोट सुन्दर चीनी महिलाद्वारा संपुर्ण म्युजियम देखाओल गेल। एहिठाम बहुत कलात्मक वस्तुसभ विक्रीक वास्ते सेहो राखल छल। एहि म्युजियमक द्वारपर तेल सँ जरैत लैम्प छल।

एहिठाम सँ आगाँ जा कए "वेलिया मलेशिया" (Belia Malaysia) मे प्रवेश कएलौं। ई एकगोट म्युजियम अछि जतए हस्तकला एवं स्थानीय पारंपरिक वस्तुसभ सजाओल छल। एकसँ एक आकर्षक वस्तुसभ छल जे विक्री सेहो भ' रहल छल।

ध्वंशावशेष

तत्पश्चात् हमरा लोकनि "मेरीटाइम म्युजियम" (Maritime Museum) देखए गेलौं। कहल जाइछ जे पुर्तगाली शासकसभ जखन डचद्वारा परास्त भगेल त अपना अधिनक अपार संपत्ति एकगोट जहार पर लादि समुद्र मार्गसँ भागि चलल। ओहि जहाजक नाम छल "फ्लोर डी ला मार" (Flor de la Mar)। ओ विशाल जहाज समुद्रमे समुद्री अन्हरक चपेटमे पडि डूबि गेल। ओहि परक सभ संपत्ति समुद्रक पेटमे हेरागेले जे कहियो ने भेटलै, ने जहाजे आ ने धने। आब इण्डोनेशियाक दावा सेहो छैक जे ओहि जहाजपर ओहि देशक धनसेहो छलैक। एहि मेरी टाइ म्युजियममे ओहि जहाजक विशाल प्रतिमूर्ति (Replica) बनाकए राखलगेल छैक जे दर्शनीय छैक।

एहि म्युजियम देखलाक बाद हमरा लोकनि ए फमोशा (A Famosa) अथवा फोर्ट डी सेन्टियागो (Fort de Santiago) पहुँचलौ। ई किला (Fort) पहाडी पर अछि। पुर्तगालीद्वारा निर्मित ई किलाक नाम A Famosa देलगेल छल जे डचसंगक युद्धमें ध्वस्त भ' गेल। ओकर द्वार मात्र बाँचल जे एखन धरि सुरक्षित अछि। ओहि किलामे कएगोट शीलापट सभ छैक जाहिपर ऐतिहासिक विवरण सभ खोधल छैक। द्वार सँ उपर गेलापर एकगोट विशाल गुफासन अछि जे ओहि किलाक एकगोट ध्वस्त भाग अछि। ओहि ठाम जाकए प्रेमी प्रेमिका सभक जोडीसभ फोटो खिचबैत आनंदक अनुभव करैत छथि। एहि किलाक निर्माण सन् १५११ ई. मे भेलछल। एकर सटले सुलतानक महल अछि। मलक्काक आक्रमणकारीसभ सुलतानक प्रत्येक कीर्तिकें ध्वस्त करैतगेल। महलक अवशेषधरि नहि बाँचल मुदा मलय लोककथाक आधारपर सुलतानक काठका महल निर्माण कएल गेल अछि जतए आब म्युजियम सेहो अछि। मलय लोककथा "सजरा मलेयु" (Sejarah Malayu) सुलतान शासकक वर्णन अछि। जाहिठाम ए फमोशा आ ई महल अछि ओकरा सेन्ट पीटर्स हिल कहल जाइछ। अही पहाडीपर नवनिर्मित मलक्का गाछ सेहो अछि।

अवशेषधरि नहि बाँचल मुदा मलय लोककथाक आधारपर सुलतानक काठका म्हल निर्माण कएल गेल अछि जतए आब म्युजियम सेहो अछि। मलय लोककथा "सजरा मलेयु" (Sejarah Malayu) सुलतान शासकक वर्णन अछि। जाहिठाम ए फमोशा आ ई महल अछि ओकरा सेन्ट पीटर्स हिल कहल जाइछ। अही पहाडीपर नवनिर्मित मलक्का गाछ सेहो अछि।

एहिठामसँ सटले मलक्का पोर्ट छैक जतए विशाल मलक्का खाडी लहरा रहल छैक। मलक्का पोर्टक आधुनिकीकरण भ' रहल छैक। समुद्रक किनारमें दूर-दूरधरि सुन्दर सजाओल बजार छैक जतए भ्रमण करैत असीम आनंदक अनुभूति होइछैक। एहिठाम समुद्री वस्तुसँ बनल अनेक सामग्री विकाइत छैक। एही समुद्रक कातमे एक गोट बैलगडी देखलौ। दूगोट बैलसँ चलएवला काठक दू पहियावला बैलगडी। गडीपर खढ़-पातक बीनल नावक आकारक-आगू-पाछूक दुनू छोर उठल छत सन छलै जे रौद-पानि सँ बचबैत छैक।

सन्ध्याकाल हमरा लोकनि मलक्कासँ प्रस्थान कएलौं। मन त मलक्का छोड़बाक नहि होइत छल मुदा से भेल नहिं। रातुक नौबजे बाटमे "साथे कजांग" पहुँचलौ। कजांगक ई साथे मलेशियामे अत्यन्त प्रसिद्ध। एहिठाम अनेक तरहक मासुक सेकुवा-काठीमे गाँथल भेटैछैक। दूर-दूरसँ लोक सपरिवार एहिठाम भोजन वास्ते अबैछ–विशेषकए साँझखन। ई एक-दोसरक संग भेंटघाँटक केन्द्र सेहो भ'जाइत छैक। मासुक विभिन्नताक कारणें हमरा मन नहि मानलक, किछु "चिकेन साथे" लेलौं; फलक रस, मुर्गीक सूप, खीराक काटल टुकड़ी लए कहुना चित्त बुझौलौं। तत्पश्चात् सवादस बजे हमरा लोकनि क्वालालंपुरक हिल्टन होटलमे पहुँचलौ।

जनकपुरधाम

मलक्का यात्रा

मनोरम उद्यान

हामीहरूलाई क्वालालम्पुरमा लगभग पन्ध्र दिन भइसकेको थियो। थाहा थियो हामीलाई मलक्का मलेशियामा पर्दछ। यो पनि थाहा थियो कि यो अत्यन्त आकर्षक र ऐतिहासिक नगर हो। हामीले पढ्या थियौं मलक्का प्रारम्भमा समुद्री मार्गका माध्यमले प्रमुख व्यापारिक केन्द्रको रूपमा रहेको थियो। यसको नाउँ सुनिएकाले बडो आकांक्षा थियो मलक्का जाने। क्वालालम्पुरमा हामीले विचार गर्‍यौं– त्यहाँसम्म घुमिहालौं भनेर। दुई दिने कार्यक्रम बनाइयो। एघारै देशका मित्रहरू १३ अप्रैल १९९६ मा केही स्थानीय मित्रहरूसहित एउटा एअरकण्डिशन बसद्वारा बिहान ८ बजे स्थानीय समयमा मलक्काको लागि प्रस्थान गर्‍यौं।

मलक्का मलेशियाको तेह्रवटा राज्यमध्ये एउटा हो। यसको राजधानी मलक्का नगर पर्दछ। मलक्का मलेशियाको पश्चिम किनारमा अवस्थित रहेको छ। यसको दूरी क्वालालम्पुरभन्दा १४७ कि.मी. पर रहेको छ। यसको कुल क्षेत्रफल ६५८ वर्ग कि.मी. रहेको छ भने यो राज्य तीन जिल्लामा विभक्त गरिएको छ। सडकभन्दा बाहिर गएपछि ट्राफिक चापमा कमी आयो। सडक विशाल थियो। सडकको दुवैतिर बहुत जङ्गल र अ-अग्लो पहाडी पनि देखिन्थ्यो। सर्वत्र हरियो-भरियो। जङ्गलमा पामको जङ्गल थियो र रबर रूखको जङ्गल पनि। अधिकांश क्षेत्रमा पाम र रबरका रूख रोपिएको थियो।

पहाडी क्षेत्रका सडकतिर पैह्रो जानु त कता हो कता सामान्य क्षति पनि देखिँदैनथ्यो त्यसको मुख्य कारण भने सडकको दुवैतिर पक्की पानी निस्कने नालीको व्यवस्था हुनु नै थियो। चिप्लो सडक तुरन्तै बनाइएको जस्तो। कतै पनि टुटफुट नभएको। हामीहरूको बस त्यहाँको अत्यन्तै चौडाइ भएको उत्तर-दक्षिण मार्गमा दगुर्दै हावासँग कुरा गरिरहेको थियो।

बिहान नौ बजे पश्चात् तामन मिनी मलेशिया (Taman Mini Malaysia) र तामन एशियन पुग्यौं। भव्यरूपमा सजाइएको पार्क (वाटिका)। यहाँको भाषामा तामन (Taman) को अर्थ वाट्रिका हुन्छ। यो ठाउँ रङ्-विरङ्गका फूल र हरियो रूखहरूले सजिएको थियो। हुन त यो स्थान जङ्गली क्षेत्र पर्दछ। मिनी एशियन (Mini Asean) मा

अपूर्व वाटिका लगाइएको थियो, यहाँ एशियाका मुलुकहरू मलेशिया, थाइलैण्ड, फिलिपिन्स, सिङ्गापुर, इण्डोनेशिया र ब्रुनोइ दारुसलामका प्रमुख सांस्कृतिक झलक देख्न सकिने रहेछ। त्यसैगरी मिनी मलेशियाको निर्माणमा मलेशियाको तेह्रवटै राज्यको सांस्कृतिक सम्पदाको दिग्दर्शन एकै ठाउँमा भेट्टाइन्छ। यहाँ मलेशियाको विभिन्न प्रदेशका वास्तुकला, गृहनिर्माण, हस्तकला, आदि धरोहरहरूको परिचय प्राप्त गर्न सकिन्छ। मलेशियाका प्रान्तहरूजस्तै पहांग, केलगि, टोग, सेलोगोर, जोहोर, मलक्का आदि सबै प्रान्तहरूको सांस्कृतिक परिचय अलग-अलग दिइएको छ।

यो क्षेत्र दूर-दूरसम्म फैलिएको छ। मिनी मलेशियामा मलेशियाको लोकगीत सधैं गुञ्जिरहेको हुन्छ र प्रत्येक दिन दिनको १२ बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम पनि हुने गरेको छ। यसका लागि अलग्गै भव्य मञ्च बनाइएको छ। मञ्चको ठिक्क सामुन्ने दर्शक वस्नलाई सिमेन्टले खाल्डो बनाएर त्यसमा काठको तख्ता फिट गरिएको छ। हामीहरूलाई दृश्यावलोकन गर्दा-गर्दै दिनको साढे एघारको लगभग भइसकेको थियो – भोक र तिर्खाबाट छट्पटिन थालेका थियौं त्यसैले सांस्कृतिक कार्यक्रम छोड्नु पऱ्यो। हामीहरू खाना खानको लागि त्यहाँबाट प्रस्थान गऱ्यौं।

त्यहाँबाट फर्किने बेलामा नजिकै केही पर टामन व्याआ मलेशिया (Taman Buaya Malaysia) को गोहीको पार्कमा पस्यौं। यो क्रोकोडाइल फार्म मलक्का शहर भन्दा बीस कि.मी. को दूरीमा पर्दछ र तीन हेक्टर भूमिमा फैलिएको छ। यो पार्क भव्यरूपमा सजाइएको छ र एक दर्जनभन्दा बढी खाल्डोहरूको निर्माण गरिएको छ जसमा एकसय भन्दा बढी विभिन्न जातिका गोही राखिएको छ। यहाँ बाल-उद्यान पनि छ र विदाको दिनमा खूब भीडभाड रहन्छ। गोहीहरूद्वारा यहाँका पालेहरूले विदाको दिनमा खेल रचाउँछन् जुन स-साना केटाकेटीहरूको लागि अत्यन्तै मनोरञ्जक हुन्छ। यी खेलहरूमा मैजिक शो, घोडसवारी, रेलयात्रा पनि सञ्चालन हुने गर्दछ। हामी विदाको दिन शनिवार पुगेका थियौं र त्यसैले यहाँको सम्पूर्ण आनन्द लिने अवसर प्राप्त गऱ्यौं।

यस पार्कको भ्रमणपछि हामी खाना खानको लागि प्रस्थान गऱ्यौं। हाम्रो भोजनको व्यवस्था Malacea Pradise Village Resort मा गरिएको थियो। शहरको नजिक पुग्दै बाटोमा आँपको रूखहरू देख्यौं। रूखमा झुप्पै-झुप्पा आँप फलेको थियो। यसका अतिरिक्त कटहलका रूख, नीमका रूख पनि देख्यौं। साथै बाटोमै सेन्ट पिटर्स चर्च पनि देखापऱ्यो। यो चर्च मलेशियाको सबभन्दा पुरानो चर्च मध्येको एक हो। यो पौरस्त्य र पाश्चात्य वास्तुकलाको मिश्रणलाई प्रदर्शित गर्दछ। आदमकद मूर्ति स्थापित गरिएको छ।

मलक्का पैरेडाइज भीलेज होटलमा प्रवेश गर्दै मन उत्फूल्ल भयो। भव्य होटल। विभिन्न घरहरू यहाँको पारम्परिक निर्माण कलाको प्रभाव दिइरहेको थियो भने आधुनिक सुविधाले सम्पन्न बनाइएको थियो। हाम्रो लागि सबै व्यवस्था भइसकेको थियो– भित्र गएर बफे लञ्च लियौं। भोजन सामग्री अति सुन्दर र अनेकौं प्रकारको व्यञ्जनले परिपूर्ण। भात, माछा, मासु- मटन, वीफ। माछाका टुक्रा, ठूल-ठूला इच्चा माछा, फल, मिठाई, स्थानीय तरकारी रहेको, पापड, मखन, हरियो सलाद आदि अत्यधिक परिकार रहेको थियो त्यसमा धेरैको नाउँ पनि थाहा थिएन। मनभरि खाना खायौं।

खानापश्चात् मलक्का रेनेसाँ होटलतिर प्रस्थान गऱ्यौं जहाँ हाम्रो रहने व्यवस्था गरिएको थियो। खाना र वासको लागि पहिले नै व्यवस्था गरिएको थियो। खाना र वासको लागि पहिला ने व्यवस्था गरिएको हुनाले कतै विलम्ब र अन्य कुनै समस्यासँग

जुभ्नु परेन ।

मलक्का रेनेसाँ होटलमा प्रवेश गर्दै प्रसन्नता झन् थपियो। भव्य होटल, क्वालालम्पुर होटल पेटलिंग जया (Pataling Jaya) को होटल हिल्टन (Hilton) जहाँ हामी रहिरहेका थियौं, पाँचतारा होटल थियो। त्यो भन्दा पनि कैयौं गुणा राम्रो यो मलक्काको होटलजस्तो लाग्यो ।

आ-आफ्नो कोठाको साँचो लिएर दिनको साढे दुईबजे आ-आफ्नो कोठातिर प्रस्थान गर्‍यौं। टी.भी. खोल्दा हिन्दी फिल्म 'आइना' चलिरहेको थियो। टी.भी. भव्य र रङ्गीन थियो। धेरै दिनपछि अर्थात् मलेशियामा आएपछि दोस्रो पटक हिन्दी फिल्म हेर्ने अवसर पाएँ। फिल्म चैनल भीबाट दिइरहेको थियो ।

इतिहाससँग साक्षात्कार

साँझ साढे सात बजे होटलको लौबीमा रात्रिभोज (Dinner) को व्यवस्था गरिएको थियो। समयमै डिनर हलमा पुगेर भोजन गर्‍यौं। बफे प्रथा। भोजनको भव्य व्यवस्था गरिएको थियो – अनेकौं परिकार। भात, मासु, माछा, मिठाई, फल। माछाको अनेकौं परिकार, मासुमा– कुखुरा, मटन, वीफ, सुँगुरको मासु आदि थियो। खानापश्चात् राति नौ बजे हामी मलक्काको ऐतिहासिक स्थल बन्दरहिलीर (Bandar Hilir) गयौं। यो ठाउँमा प्रत्येक राति "लाइट एण्ड साउण्ड शो" आयोजना हुने गर्दछ। यहाँ प्रकाश र ध्वनिको यस्तो प्रभावशाली व्यवस्था गरिएको छ जुन प्रकाश र ध्वनिको माध्यमले मलक्काको प्रारम्भिक इतिहासदेखि स्वतन्त्रतासम्मको कथा देखाइने गरिएको छ। आफू समक्षमै प्रत्यक्ष घटना घटित भइरहेको आभास दिन्छ। यहाँ त्यतिबेला इतिहास साकार स्वरूप ग्रहण गर्दछ जतिबेला कार्यक्रम आरम्भ हुन्छ।यी घटनाहरू विशाल क्षेत्रमा देखिने गरिएको छ। यहाँ युद्धको भिषण कोलाहल सुन्न सकिन्छ भने तोपको भयानक विष्फोटको आवाज पनि सुन्न सकिने रहेछ ।

इतिहास

मलक्का १४०३ ई मा यहाँ परमेश्वर आगमन गरेपछि इतिहासको आरम्भ गरेको हो। परमेश्वर सुमात्राका राजकुमार थिए जसले त्यहाँबाट पलायन गरेर शरण पाउने आकाङ्क्षाका साथ यहाँ ओर्लेका थिए। त्यसैताका यो एउटा माछा मार्नेहरूको गाउँ थियो। उनी जुन ठाउँमा ओर्ले त्यहाँ एउटा रूख थियो जसलाई 'मलक्का' भन्ने गरिन्थ्यो। राजकुमार परमेश्वरले त्यो ठाउँको प्रेरणा प्राप्त गरेर मलक्का रूखको नाउँमा मलक्का नगर स्थापना गरेपश्चात् त्यो ठाउँ मलक्का सल्तनत बन्यो। पछि उनी इश्लाम धर्म ग्रहण गरेर आफ्नो नाउँ सुल्तान इशकन्दर शाह राखे ।

सुल्तानको वंश वृद्धि भइरह्यो र अगाडि गएर राज्यसत्ताको लोभमा पारिवारिक तथा खलक कलह प्रारम्भ भयो। स्थिति अत्यन्तै कारुणिक हुन पुग्यो। मलक्का द्विपको महत्त्व बढ्दै गयो। यो पूर्व र पश्चिमको मुख्य व्यापारिक केन्द्रको रूपमा स्थापित भयो। यो सुन, चाँदी, चिया, सिल्क, अफिम, खैनी, सुगन्ध एवं मसला व्यापारको केन्द्र बन्न पुग्यो। मसलाको व्यापारले त युरोप एवं दक्षिण अमेरिकासम्मको व्यापारीलाई आकर्षित गर्‍यो। पुर्तगालीहरूको आँखा यस द्विपमाथि परेपछि १५११ ई. मा पुर्तगालले यसलाई आफ्नो उपनिवेश बनाएर सुल्तानलाई लखेट्यो। सुल्तान त्यहाँबाट भागेर जोहोरमा गई

बसे र पुन: आफ्नो सल्तनत प्राप्तिको लागि आधार बनाउने प्रयासमा लागिरहे, यद्यपि उनी कहिल्यै सफल हुन सकेनन् ।

पुर्तगाली शासनपश्चात् १८१८ ई. मा मलक्का डचको अधीनमा आयो र पुन: १८२६ ई. वृटिश इण्डिया कम्पनी अधीनस्थ हुन पुग्यो । जुन १९५७ ई.-मा स्वतन्त्र भई मलेशियाअन्तर्गत एउटा प्रान्तको रूपमा स्थापित भयो ।

लाइट एण्ड साउण्ड शो राती साढे दस बजे समाप्त भयो । समय कसरी वित्यो थाहा पाइएन । 'शो' हेर्नका लागि दर्शकहरूलाई बस्ने यस्तो व्यवस्था गरिएको छ जसले सयौं मान्छे आरामले बसेर हेर्न सक्दछन् । यो 'शो' विशाल खुल्ला क्षेत्रमा फैलिएको छ । 'शो' हेरेर पुन: हामी होटलमै फर्क्यौं ।

सङ्गीतको धुनमा गुडिरहेको रिक्सा

१४ अप्रिल ९६ को विहान दैनिक क्रिया उपरान्त होटलको कैन्टिनमा खाजा खाएँ । खाजा खाएर वाहिर निस्केपछि होटलको लौंजमा अन्य देशका केही मित्रहरू वाहिर घुम्नका लागि तयार भएर बसेको देखेर, मैले पनि आफ्नो मुलुकका मित्रहरूलाई सोध्दा बाहिर जान उहाँहरू तयार हुनु भएन । म एक्लै आफ्नो हातमा कैमरा झुण्डयाएर होटेलभन्दा बाहिर निस्के । समय विहानको लगभग नौ भइसकेको थियो । रेनासाँ होटलको सँग-सँगै गएको बाटो काट्दै बजारतिर लागें । होटलको पारिपट्टि सडकको पेटीमा पङ्क्तिबद्ध भएर सराइ (Serai) अर्थात् पुरानो शैलीको छतनुमा लामो-लामो घर जसमा अनेकौं प्रकारका स्थानीय खानेकुरां तयार पारिरहेको थियो । घर चारैतिरबाट खुल्ला- त्यही खानेकुरा तयार हुने गरेको र नजिकै टेबल कुर्सीमा बसेर मानिस इच्छाअनुसारका खानेकुरा खाँदै गरिरहेको थिए ।यस्ता होटलहरू अधिकांशत: साँझपखदेखि देखिन थालिन्छ र रात्री अबेरसम्म होटल खुल्ला हुन्छ । यस्ता होटेलमा भीड़ पनि बढी नै रहन्छ । बजार अहिलेसम्म बन्द नै थियो– दश बजे बजार खुल्ने गरेको छ । यस क्षेत्रमा ठूल-ठूला होटलहरू छन् । सबै सुविधायुक्त । त्यही एउटा फराकिलो नहर पनि बग्दछ । त्यसको किनारमा पुरानो पारम्परिक घरहरू, कतै-कतै आधुनिक घरहरू पनि देखिन्थ्यो । यहाँको बासिन्दा बढी चिनीमूलका थिए । होटल फर्किएपछि होटल अगाडि सोलोमन आइलैण्डका मित्र रैनिक भेटिनु भयो । उहाँकै आग्रहमा म पुन: घुम्नलाई बाहिरिए । तीन पाङ्ग्रा भएको रिक्सा भेट्यौं ! रिक्सा बजार घुम्नलाई प्रतिघण्टा भाडा १५।- रिगीट (मलेशियन मुद्रा) लिंदो रहेछ । हामी केही दूरीसम्म पैदल हिँड्यौं । त्यसपछि एउटा रिक्सा लियौं । यहाँ यस्ता रिक्साको नाउँ मोबाइल मेक्सी (Mobile Maxis) रहेको छ । रिक्सामा दुईजना मात्र बस्न सक्ने स्थान रहन्छ । हामी दुई जना थियौं, बस्यौं । रिक्सा चालकको उमेर लगभग ६० वर्ष थियो होला । तर रिक्सा चल्ने बित्तिकै उ हल्लिन थाल्यो । नाचिरहेको हो कि भन्ने हामीले अनुभव गर्‍यौं । यसै कारण भने रिक्साका सीटनजिकै कैसेट राखिएको थियो र रिक्सा चल्नेबित्तिकै कैसेट पनि बजाउने गर्दथ्यो । रिक्सा चालकको सीट हामीभन्दा दाहिनेतर्फ थियो । रिक्सा चालक मधुर सङ्गीतमा झुम्दै मग्न थियो र हामी पनि दुवैजना । रिक्सा चालकको खुट्टा पायडलमा नाचिरहेको थियो र रिक्सा सडकमा गुड्दै थियो । अनुभव भइरहेको थियो– सङ्गीतको शक्तिले यो बुढो रिक्साचालक पुन: तरुण भइसकेको छ । घाम अत्यधिक कडा थियो तैपनि हामी सम्पूर्ण चाइनाटाउन घुमेर फर्किसकेका थियौं । बजार पूर्णरूपमा खुलिसकेको थियो । यो चाइनाटाउन भएकाले

नै चिनी मूलका मान्छे बढी देखिन्थे। सबै ठाउँमा पसलेदेखि वासिन्दासम्म चिनी मान्छेहरू नै छरपस्टिएका थिए। दिनको १२ बजे हाम्रो दिवा भोज (लञ्च) भएकाले नै हामी दुवै मित्र होटेल फर्क्यौं।

होटलको त्यही लौजमा लञ्चको व्यवस्था थियो। बफे प्रथा– भोजनमा तिनै परिकारहरू, अनेकौं प्रकारका व्यञ्जन। मनभरि खानेकुरा खायौं।

मन्दिर-मस्जिदको अद्‌भुत सङ्गम

दिनको डेढ बजे हामी मलक्काको रेनेशाँ होटलबाट चेक आउट गऱ्यौं र हामी सम्पूर्ण ग्रूप बसबाट घुम्नलाई बाहिर निस्क्यौं। बाहिर निस्कँदा केही पर मलक्का नदी रहेछ। नदी शहर हुँदै बगिरहेका रहेछन्। त्यहाँको वासिन्दाहरूको भनाइ छ– पहिला ती नदीको बाटोबाट नै व्यापार हुने गर्दथ्यो। यो अत्यन्त प्राचीन नदी हो। अगाडि सचनी वासिन्दाहरूको क्षेत्रमा पुग्यौं जहाँ चेंग हुन टेंग (Cheng Hoon Teng) मन्दिर अथवा ग्रीक स्काई मन्दिर थियो। यो मन्दिर मुलुककै सबभन्दा पुरानो मन्दिरमध्येको एक हो। यसको निर्माण सन् १६४६ ई. मा भएको थियो र यसका निर्माण सामग्रीहरू चीनबाट ल्याइएको थियो। यस मन्दिरको काष्ठकला, चित्रकारी एवं वास्तुकला अत्यन्तै आकर्षक छ।

यस मन्दिरमा चिनीयाँहरूको भीड थियो। मन्दिरबाहिर मुख्यद्वारमा धूप, अगरबत्ती, प्रसादका सामग्रीहरूको पसल रहेको थियो भने यी सामग्री घुमी-घुमी बेच्नेहरू पनि देखिन्थे। मगन्तेहरू पनि मागिरहेका थिए। मन्दिरमा तीनवटा द्वार र तीनवटै द्वारमा दुवैतिर कुकुरको मूर्ति। एकातिर मादा कुकुर र अर्कोतिर नर कुकुर। नर कुकुर बसिरहेको अवस्थामा हातमा थैला (धन) राखिरहेको थियो भने मादा कुकुर बच्चा हातमा राखेर बसिरहेको। चिनियाँ धारणाअनुसार यसलाई विकास-कल्याणको प्रतीकको रूपमा मानिन्छ।

मन्दिरको प्राचीन रूप विदेशीद्वार ध्वस्त गरिसकिएको छ जसलाई पछि उद्धार गरिएको हो। मन्दिरमा प्रवेशसँगै चिनीयाँ श्रद्धालुहरू निहुरिएर करबद्ध प्रणाम गरी प्रवेश गर्ने गर्दछन्।

मन्दिरभन्दा अलि पर मस्जिद कंपोङ्ग क्लींग (Musjid Campund Kling) नजिक पुग्यौं। यो मलेशियाको पुरानो मस्जिदमध्येको एक हो। यसको निर्माणमा सुमात्राको वास्तुकलाको प्रभाव रहेको छ। यो पूर्व र पश्चिमको वास्तुकलाको सुन्दर संयोगको उदाहरण बन्न गएको छ। यो पिरामीड आकारको पैगोडा शैलीको निर्माण हो जसको छत चित्र अङ्कित काष्ठद्वारा बनाइएको छ।

यहाँबाट अलि पर केही दूरीमा एउटा हिन्दू मन्दिर (Kaun Chetty Malaka) कौम चेटी मलक्का रहेको छ। चेटी जाति दक्षिण भारतबाट यहाँ आएका थिए। उनीहरू व्यापारी थिए तर मुख्य रूपमा व्याजमा कर्जा दिने कार्य गर्दथे। ती जाति अहिले पनि कर्जे दिने कार्य गर्दछन्। केही अंशमा। यो उनीहरूकै हो। चिनी, मुसलमानी, एवं हिन्दू मन्दिर-मस्जिद एउटै ठाउँमा हुनुको मुख्य कारण यहाँको जातीय सौमनस्यता अथवा धार्मिक सहिष्णुता भनिन्छ– जुन यहाँ रहँदै आएको छ।

यस क्षेत्रका पश्चात् हामी बाषा न्यान्या हेरिटेज म्युजियम (Baba Nyonja Heritge Museum) पुग्यौं। यो एउटा भव्य म्युजियम हो। बाबा भनेको पुरुष र न्योन्या

महिला ।

मलक्काको प्रारम्भिक इतिहास बताइरहेको छ– शुरुमा चीनबाट मान्छेको बाढी नै आयो जो व्यापार कार्यमा लागेका थिए तर पछि उनीहरूले यही आफ्नो वासस्थान बनाए । उनीहरूले यहाँका रीत-रेवाज एवं परम्परालाई स्वीकार गरे । यहाँबाट बाबा र न्योन्याको समूहको विकास भयो । उनीहरूले मलय संस्कृति र मलय भाषालाई अङ्गीकार गरे । यो म्युजियम गैरसरकारी हो, जहाँ उनीहरूको कला प्रदर्शित गरिएको हुन्छ जसलाई ‘परानकन’ पनि भनिने गरिन्छ । हामीलाई एउटी सुन्दर चिनियाँ महिलाद्वारा सम्पूर्ण म्युजियम अवलोकन गराइयो । यहाँ धेरै कलात्मक वस्तुहरू विक्रीको लागि पनि राखिएको थियो । यस म्युजियमको द्वारमा तेलले बलिरहेको लैम्प राखिएको थियो ।

यहाँबाट अगाडि गएर “बेलिया मलेशिया” (Belia Maleayasia) मा प्रवेश गऱ्यौं । यो एउटा म्युजियम हो जहाँ हस्तकलाहरू एवं स्थानीय पारम्पारिक वस्तुहरू सजाइएको छ । त्यहाँ उत्कृष्ट वस्तुहरू थिए जुन विक्री पनि भइरहेको थिए ।

ध्वंशावशेष

त्यसपछि हामी “मेरीटाइम म्युजियम” (Maritime Museum) हेर्न गयौं । भनाइ छ जतिबेला पुर्तगाली शासकहरू पराजित भए उनीहरूले आफ्ना अधीनका अपार सम्पत्ति एउटा जहाजमा लादेर समुद्र मार्गबाट कुलेलम ठोके । त्यो जहाजको नाउँ “फ्लोर डी ला मार” (Flor de la Mar) थियो । जहाज समुद्रमा समुद्री चक्रवातमा परेर डुब्यो । जहाजमा लादिएको सम्पूर्ण सम्पत्ति पनि हरायो । त्यो भेटिएन । न त जहाज नै न त त्यसमा लादिएका सम्पत्ति नै । अब इण्डोनेशियाले दावा गर्न शुरु गरेको छ– त्यो जहाजमा हाम्रो देशको पनि सम्पत्ति थियो । मेरिटाइम म्युजियममा त्यो जहाजको विशाल प्रतिमूर्ति (Replica) राखिएको छ जुन अति नै दर्शनीय छ । यो म्युजिम हेरिसकेपछि हामी ए फामोशा (a Famosa) अथवा फोर्ट डी सेन्टियागो (Fort de Santiugo) पुग्यौं । यो किला (Fort) एउटा पहाडमा रहेको छ । पुर्तगालीहरूद्वारा निर्मित यस किल्लाको नाउँ ए फार्मोसा (A Formosa) दिइएको थियो । डचहरूसँगको युद्धमा किल्ला ध्वस्त भइसक्यो । यसको एउटा द्वार मात्र सुरक्षित रह्यो जुन अद्यावधि छ । किलामा कतिपय शिलापटहरू छन् जसमा ऐतिहासिक विवरणहरू कुँदिएको छ । द्वारभन्दा माथि गएपछि एउटा विशाल गुफा जस्तो छ जुन किल्लाको एउटा ध्वस्त भाग हो । त्यस ठाउँमा गएर प्रेमी-प्रेमिकाहरू फोटो खिचाइको आनन्द अनुभव गर्ने गर्छन् । किल्लाको निर्माण सन् १५११ ई. मा भएको थियो । किल्लासँग जोडिएर रहेको सुल्तानको महल पनि छ । मलक्का माथिका आक्रमणकारीहरू सुल्तानका सम्पूर्ण कीर्तिलाई ध्वस्त गर्दै गए । महलको अवशेषसमेत बाँच्न सकेन तर मलय लोककथाको आधारमा सुल्तानको काष्ठ महल निर्माण गरिएको छ । अहिले म्युजियम त्यहीं अवस्थित छ । मलय लोककथा “सजरा मलेयु” (Sejarah Malayu) सुल्तान शासकको वर्णन हो । जुन ठाउँमा उ फामोशा र यो महल छ त्यसलाई सेन्ट पीटर्स हिल भन्ने गरिएको छ । यस पहाडमा नव निर्मित मलक्का गाउँ पनि छ ।

यहाँबाट नजिकै मलक्का पोर्ट छ, जहाँ विशाल मलक्का खाडी लहराइरहेको हामी देख्छौं । मलक्का पोर्टको आधुनिकीकरण भइरहेको छ । समुद्र किनारमा टाढा-टाढासम्म सुन्दर सजाइएको बजार रहेछ जहाँ हामी भ्रमण गर्दा चरम आनन्दको अनुभूति प्राप्त

गरेका रहेछौं। यहाँ समुद्री वस्तुहरूबाट बनाइएका अनेकौं सामग्री विक्री हुने गर्दछन्। यहाँको समुद्री किनारमा हामी एउटा बैलगाडी हेर्ने दुईवटा गोरुद्वारा चल्ने काठको दुई पाङ्ग्रे गाडी। गाडी माथि खरपातले बुनिएको नाउ आकारको अगाडि-पछाडी माथि अग्लिएको छतजस्तै देखिने सम्भवत: घाम पानीबाट बचाउनलाई बनाइएको रहेछ।

साँझपख हामी मलक्काबाट प्रस्थान गऱ्यौं। इच्छा मलक्का छोड्ने भइरहेको थिएन। तर त्यो कहाँ सम्भव थियो र। रातीको नौ बजे बाटोमा पर्ने "साथे कर्जाग" पुग्यौं। कर्जागको साथे मलेशियामा अत्यन्त प्रसिद्ध छ। यहाँ अनेक किसिमका मासु सेकुवा-सिकीमा गाँथिएको भेटिन्छ। टाढा-टाढाबाट यहाँ मान्छेहरू खाना खान आउँछन्– खासगरी साँझ पख। यो एक-अर्कासँग भेट्ने केन्द्र पनि भइसकेको छ। मासुको विभिन्नताको कारणले खान मन मानेन, मैले चिकेनसँग केही लिएँ, फलको रस, कुखुराको सुप, काँक्रोको काटिएको टुक्रा। यसैबाट चित्त बुझाउनु पऱ्यो। त्यसपछि सवा दश बजे हामी क्वालालम्पुरको हिल्टन होटलमा पुग्यौं।

अनुवादक: रञ्जन

पुस्तक-परिचय

ए रेफरेन्स ग्रामर अफ मैथिली

(मैथिली सन्दर्भ व्याकरण)

लेखक: रामावतार यादव, *ए रेफरेन्स ग्रामर अफ मैथिली*, प्रकाशक: मुटो डी ग्रोइटर, बर्लिन, न्यूयोर्क, १९९६ ई., पृ.सं. ४००, मूल्य रु. ७५००/-

प्रस्तुतकर्ता: चन्देश्वर शाह

मैथिली व्याकरणक विभिन्न पक्षक विस्तारपूर्वक अध्ययन अंग्रेजी भाषामे प्रस्तुत कएल गेल ई पुस्तक मैथिली भाषाक व्याकरणक विविध पक्षक जानकारी लेबाक इच्छुक अंग्रेजी भाषा बुझनिहारसभकलेल बहुत उपयोगी अछि। ई पुस्तक अंग्रेजी भाषामे लिखल गेल मैथिलीक व्याकरण मात्र नहि अछि, एहि पुस्तकमे मैथिली व्याकरणक विविध पक्षपर सेहो अध्ययन प्रस्तुत कएल गेल अछि। कोनो भाषाक विधिवत अध्ययन हेतु जहिना ओहि भाषाक व्याकरण जानब आवश्यक होइत अछि तहिना ओहि भाषाक उत्पत्ति, व्यापकता आदि बुझब सेहो ओतबए आवश्यक होइत अछि। एहि पुस्तकमे मैथिली व्याकरणक पृष्ठभूमिक चर्चा करैत मैथिली भाषाक व्यापकता, भाषाक प्रयोग कयनिहार जनसंख्या, नेपाल आ भारतमे मैथिली भाषाक स्थिति आ मैथिली भाषाक अध्ययन केन्द्र आदि विषयसभक संगहि बोली आ भाषाका विवाद सम्बन्धमे सेहो उल्लेख कएल गेल अछि जे मैथिली भाषाक विषयमे अधिक बुझबाक जिज्ञासु व्यक्तिकलेल उपयोगी अछि।

कोनो वस्तुक चर्चाक विभिन्न दृष्टिकोण होइत अछि, व्याकरणक सम्बन्धमे सेहो ई बात लागू होइत अछि। प्रस्तुत पुस्तकमे मैथिली व्याकरणक अध्ययनक विभिन्न दृष्टिकोणक चर्चा कएल गेल अछि जे एहि पुस्तकक फुट आकर्षण अछि। एहि पुस्तकमे मैथिली व्याकरणकें रचनात्मक/वर्णनात्मक (Structural/descriptive) दृष्टिकोणसँ प्रस्तुत कएल गेल अछि जे मैथिली व्याकरणक सम्बन्धमे जिज्ञासु व्यक्तिक लेल बहुत उपयोगी अछि। एहि पुस्तकमे मैथिली उच्चारण आ वर्णमालाक विषयमे सेहो अध्ययन

प्रस्तुत कएल गेल अछि जे अंग्रेजी भाषा-भाषीकें मैथिली शब्दक उच्चारण करबाक लेल सहायक अछि। एहि पुस्तकमे व्याकरणक विभिन्न अङ्गक चर्चा करैत उदाहरणस्वरूप देल गेल मैथिली शब्द वा शब्दखण्डक शुद्ध उच्चारण सेहो देल गेल अछि जे पाठककें उच्चारणमे मदद करैत अछि। तहिना मैथिली शब्द वा शब्दखण्डसभक जे उदाहरण देल गेल अछि तकर अर्थ सेहो अंग्रेजीमे देल गेल अछि जकरा उपयोगी मानल जा सकैत अछि।

ई पुस्तक ९ अध्यायमे विभक्त अछि। पहिल अध्यायमे मैथिली व्याकरण-लेखन परम्पराक एक शताब्दी शीर्षक अन्तर्गत मैथिली व्याकरणक पृष्ठभूमिक चर्चा करैत मैथिली भाषाक विस्तार, स्थिति, अध्ययन केन्द्र आ स्तार आदि विषयक संगहि बोली आ भाषाक विवाद सम्बन्धमे सेहो उल्लेख कएल गेल अछि जे मैथिली भाषाक विषयमे अधिक बुझबाक जिज्ञासु व्यक्तिक लेल उपयोगी आ प्रमाण सेहो अछि। एहि अध्यायमे देल गेल मैथिली व्याकरणसम्बन्धी अध्ययनक विभिन्न दृष्टिकोणक व्याख्या एहि पुस्तकक एकटा फुट आकर्षण बनल अछि जे पाठककें आओर अधिक जिज्ञासु बनबैत अछि। दोसर अध्यायमे ध्वनि पद्धति आ वर्णमाला तथा लिपिक विषयमे चर्चा कएल गेल अछि। एहि शीर्षक अन्तर्गत वर्णमालाक स्वर, एकर प्रकार आ उच्चारण सम्बन्धमे विस्तृत व्याख्याक संगहि संयुक्त स्वर, व्यञ्जन, एकर विभिन्न लक्षण प्रयोग, उच्चारण आ लिपि आदिक गम्भिर अध्ययन प्रस्तुत कएल गेल अछि।

तेसर अध्यायमे संज्ञा ओ संज्ञापदक विशद् वर्णन अछि– जाहिमे लिङ्ग, वचन ओ कारक चिह्नक चर्चा अछि। तहिना, चारिम अध्यायमे सर्वनाम ओ एकर रूपावली प्रस्तुत कएल गेल अछि। पाँचम अध्यायमे विशेषण ओ विशेषण- जेकाँ प्रयुक्त होभएबला आन पदकोटिसभक वर्णन भेल अछि। एहि पुस्तकक सभसँ विशिष्ट योगदान अछि छठम अध्याय– जाहिमे मैथिली भाषाक जटिलतम आख्यातविचारक सविस्तार ओ सोदाहरण वर्णन भेल अछि। ई अध्याय कुल ७७ पृष्ठक अछि। सातम अध्यायमे मैथिली भाषाक क्रियाविशेषण, परसर्ग, विस्मयादिसूचका निपात ओ अन्य निपातसभक वर्णन भेलअछि। आठम अध्यायमे मैथिलीक वाक्य व्याकरण प्रस्तुत भेल अछि; विशेष रूपें, प्रमुख वाक्य-प्रकार ओ लघु वाक्य-प्रकारक चर्चा कएल गेल अछि। नवम अध्यायमे मैथिलीक सरल ओ जटिल वाक्यक व्याख्या ओ वर्णन वाक्यविचार तथा अर्थविचारक दृष्टिएँ प्रस्तुत भेल अछि। विशेष रूपें, एहि अध्यायमे अकरण, प्रेरणार्थक वाक्य, कर्मवाचक वाक्य, समुच्चयसूचक वाक्य ओ अन्य विभिन्न प्रकारक उपवाक्यसभक विस्तृत वर्णन भेल अछि। पुस्तकक अन्तमे विस्तृत सन्दर्भग्रन्थ सूची प्रस्तुत भेल अछि– जे मैथिली शोधार्थीकलेल अति उपादेय सिद्ध भ' सकैत अछि।

ई पुस्तक जहिना अंग्रेजी भाषा-भाषीकें मैथिली व्याकरण आ. मैथिली भाषाक विषयमे जानकारी दैत अछि तहिना मैथिली भाषा-भाषी जे सामान्य रूपसँ अंग्रेजी जनैत छथि हुनका लेल सेहो बहुत उपयोगी अछि। अन्तमे, एहि पुस्तकक माध्यमसँ अंग्रेजी भाषा-भाषी आ अंग्रेजी बुझनिहार अन्य भाषा-भाषी बीच मैथिली भाषा आ व्याकरणक प्रचार-प्रसारमे सहयोग होयबाक हमर विश्वास अछि।

ए रेफरेन्स ग्रामर अफ मैथिली

(मैथिली सन्दर्भ व्याकरण)

मैथिली व्याकरणको विभिन्न पक्षमा विस्तृत अध्ययन अङ्ग्रेजी भाषामा प्रस्तुत गरिएको यो पुस्तक मैथिली भाषाको व्याकरणको विविध पक्षको जानकारी लिने इच्छुक अङ्ग्रेजी भाषा जान्नेको लागि अति उपयोगी छ। यो पुस्तक अङ्ग्रेजी भाषामा लेखिएको मैथिलीको व्याकरण मात्र नभई, यस पुस्तकमा मैथिली व्याकरणको विविध पक्षको पनि अध्ययन प्रस्तुत गरिएको छ। कुनै भाषाको विधिवत् अध्ययनका लागि जसरी त्यस भाषाको व्याकरण जान्नु आवश्यक हुन्छ त्यस्तै त्यस भाषाको उत्पत्ति, व्यापकता आदि जान्नु पनि आवश्यक हुन्छ। यस पुस्तकमा मैथिली व्याकरणको पृष्ठभूमिको चर्चा गर्दै मैथिली भाषाको व्यापकता, भाषा प्रयोग गर्ने जनसङ्ख्या, नेपाल र भारतमा मैथिली भाषाको स्थिति र मैथिली भाषाको अध्ययन केन्द्र आदि विषयहरूका सँगै बोली र भाषाको विवाद सम्बन्धमा पनि उल्लेख गरिएको छ, जो मैथिली भाषाको विषयमा बढी जान्ने जिज्ञासुहरूका लागि उपयोगी हुन्छ।

कुनै वस्तुको चर्चाको विभिन्न दृष्टिकोण हुन्छ, व्याकरणको सम्बन्धमा पनि यो कुरा लागु हुन्छ। प्रस्तुत पुस्तकमा मैथिली व्याकरणको अध्ययनको विभिन्न दृष्टिकोणको चर्चा गरिएको छ, जो यस पुस्तकको छुट्टै आकर्षण हो। यस पुस्तकमा मैथिली व्याकरणलाई रचनात्मक/वर्णनात्मक (Structural/Descriptive) दृष्टिकोणले प्रस्तुत गरिएको छ, जो मैथिली व्याकरण सम्बन्धमा जिज्ञासु व्यक्तिहरूका लागि अति नै उपयोगी छ। यसपुस्तकमा मैथिली उच्चारण र वर्णमाला सम्बन्धमा पनि अध्ययन प्रस्तुत गरिएको छ जो अङ्ग्रेजी भाषा-भाषीहरूका लागि मैथिली शब्दको उच्चारण बुझ्न सहायक हुन्छ। यस पुस्तकमा व्याकरणका विभिन्न अङ्गहरूको चर्चा गर्दै उदाहरणस्वरूप दिइएका मैथिली शब्द वा शब्दखण्डको शुद्ध उच्चारण पनि दिइएको छ जो पाठकलाई उच्चारण गर्न मद्दत गर्दछ। त्यस्तै मैथिली शब्द वा शब्दखण्डहरूको उदाहरण दिइएको ठाउँमा त्यसको अर्थ पनि अङ्ग्रेजीमा दिइएको छ जसलाई उपयोगी मान्न सकिन्छ।

यो पुस्तक ९ अध्यायमा विभक्त रहेको छ। पहिलो अध्यायमा मैथिली व्याकरण-

लेखन परम्पपराको एक शताब्दी शीर्षकअन्तर्गत मैथिली व्याकरणको पृष्ठभूमिको चर्चा गर्दै मैथिली भाषाको विस्तार, स्थिति, अध्ययन केन्द्र र स्तर आदि विषयका साथै बोली र भाषाको विवाद सम्बन्धमा पनि उल्लेख गरिएको छ,जो मैथिली भाषाको विषयमा बढी जान्ने जिज्ञासुहरूका लागि उपयोगी र प्रमाण पनि रहेको छ। यस अध्यायमा दिइएको मैथिली व्याकरणसम्बन्धी अध्ययनको विभिन्न दृष्टिकोणको व्याख्या यस पुस्तकको छुट्टै आकर्षण बनेको छ, जो पाठकलाई अझ बढी जिज्ञासु बनाउँदछ। दोस्रो अध्यायमा ध्वनि पद्धति र वर्णमाला एवं लिपिको विषयमा चर्चा गरिएको छ। यस शीर्षकअन्तर्गत वर्णमालाको स्वर, यसका प्रकार र उच्चारण सम्बन्धमा विस्तृत व्याख्याका साथै संयुक्त स्वर, व्यन्जन, यसका विभिन्न लक्षण, प्रयोग, उच्चारण र लिपि आदिको गम्भीर अध्ययन प्रस्तुत गरिएको छ।

तेस्रो अध्यायमा संज्ञा र संज्ञापदको विशद् वर्णन गरिएको छ, जसमा लिङ्ग, वचन तथा कारक चिह्नहरूको चर्चा छ। त्यस्तै, चौथो अध्यायमा सर्वनाम र त्यसको रूपावली प्रस्तुत गरिएको छ। पाँचौं अध्यायमा विशेषण तथा विशेषणजस्तो प्रयोग हुन सक्ने पदकोटिहरूको वर्णन गरिएको छ। यस पुस्तकको विशिष्टतम योगदान हो छैठौं अध्याय, जसमा मैथिली भाषाका जटिलतम आख्यातविचारको सविस्तार सोदाहरण वर्णन भएको छ। यो अध्याय कुल ७७ पृष्ठको छ। सातौं अध्यायमा मैथिली भाषाको क्रियाविशेषण, परसर्ग, विस्मयादिसूचक निपात र अन्य निपातहरूको वर्णन-विश्लेषण गरिएको छ। आठौं अध्यायमा मैथिलीको वाक्य व्याकरण प्रस्तुत भएको छ। खास गरी, यस अध्यायमा मैथिलीको प्रमुख वाक्य-प्रकार तथा लघु वाक्य-प्रकारको चर्चा भएको छ। नवौं अध्यायमा मैथिलीको सरल र जटिल वाक्यहरूको वर्णन र व्याख्या, वाक्यविचार एवं अर्थविचारको दृष्टिले प्रस्तुत गरिएको छ। खास गरी यस अध्यायमा अकरण, प्रेरणार्थक वाक्य, कर्मवाचक वाक्य, समुच्चयसूचक वाक्य, तथा अन्य विभिन्न उपवाक्यहरूको विस्तृत वर्णन गरिएको छ। पुस्तकको अन्तमा, विस्तृत सन्दर्भग्रन्थ-सूची प्रस्तुत गरिएको छ– जुन मैथिली शोधार्थीहरूका लागि अति नै उपादेय सिद्ध हुनेछ।

यस पुस्तकले जसरी अङ्ग्रेजी भाषा-भाषीहरूलाई मैथिली व्याकरण र मैथिली भाषाको विषयमा जानकारी दिन्छ त्यसरी नै मैथिली भाषा-भाषीहरू जो सामान्य रूपले अङ्ग्रेजी जान्दछन्,-लाई पनि पर्याप्त जानकारी दिन्छ। अन्तमा यस पुस्तकको माध्यमले अङ्ग्रेजी भाषा-भाषी र अङ्ग्रेजी जान्ने अन्य भाषा-भाषी बीच मैथिली भाषा र व्याकरणको प्रचार-प्रसारमा सहयोग हुने मैले विश्वास लिएको छु।

अनुवादकः बन्देश्वर शाह

इस्यूज इन मैथिली सिन्ट्याक्स : एक सङ्ग्रहणीय पुस्तक

लेखक : योगेन्द्र यादव, *इस्यूज इन मैथिली सिन्ट्याक्स*, प्रकाशक : लिङ्कम युरोपा, म्युनिख जर्मनी, पृष्ठ सं. १३५+१३, मूल्य रु. ४८.०० अमेरिकन डलर।

प्रस्तुतकर्ता : धर्मेन्द्र विह्वल

मैथिली नेपालमे बाज' जाएबला दोसर प्रमुख भाषा अछि। एतबए नहि भारतक विहार प्रान्तक बहुत पैघ हिस्सामे सेहो मैथिली मातृभाषाक रूपमे बाजल जाइत अछि। नेपालमे मैथिलीभाषिक संख्या कूल जनसंख्याक करिब १२ प्रतिशत अछि। भाषा साहित्यक इतिहास अध्ययनक आधारमे ई बात निश्चितरूपेण कहल जा' सकैत अछि जे- मैथिली एक प्राचीन भाषा अछि। एतबएटा नहिं मैथिली सदा सर्वदासँ एक समुन्नत साहित्यिक परम्पराक निर्वाह करैत आबिरहल अछि। किंवा प्रतिनिधित्व करैत आबिरहल अछि। भाषिक दृष्टिकोणसँ अत्यन्त सम्पन्न मान' जाएबला मैथिलीक शास्त्रीय अध्ययन सेहो बहुत पहिनहिसँ होइत आबिरहल अछि। प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक डा. योगेन्द्र यादव अध्ययनक इएह परम्पराकेँ *इस्यूज इन मैथिली सिन्ट्याक्स* क माध्यमसँ निरन्तरता प्रदान करबाक एकटा सार्थक प्रयत्न कएलन्हि अछि।

इण्डो आर्य भाषा अन्तर्गत विहारी समूहक पूर्वीय उप-शाखाक रूपमे विभाजित मैथिली भाषाक विश्लेषण करब प्रस्तुत पुस्तकक मूल उद्देश्य अछि। मैथिली भाषाका संग दीर्घकालीन आ लिखित साहित्यक ऐतिहासिक परम्परा अछि। मैथिली नेपालक पूर्वी तराईमे अत्यधिक रूपमे प्रचलित अछि। ई भाषा नेपालक करिब १२ प्रतिशत जनताक अभिव्यक्तिकेँ प्रतिनिधित्व करैत अछि। एकर अतिरिक्त ई भाषा भारतक उत्तर-पूर्वी विहारक करिब दू-करोड दश लाखसँ अधिक जनताक मातृभाषा सेहो अछि। मैथिली भाषाक भाषिक धरातल अत्यन्त व्यापक आ विस्तृत हएबाक कारणे एकर अपरिहार्यताकेँ मनन् करैत विद्वान् लेखक डा. यादव प्रस्तुत पुस्तकक माध्यमसँ, एहि सम्बन्धमे दिशाबोध करबाक प्रयत्न कएलन्हि अछि। हुनक ई प्रयास भाषा-विज्ञानक अध्ययनक दृष्टिएँ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण प्रमाणित भेल अछि एहिमे दू-मत नहिं भ' सकैत अछि।

प्रस्तुत पुस्तकक अध्ययनसँ मैथिली वाक्यमे समाविष्ट भाषिक नियमसभक विश्लेषणक संगहि भाषिक संरचना आ ताहिमे निहीत जटिल तथ्यसभक सेहो परिचय प्राप्त कएल जा' सकैत अछि। पुस्तककेँ सात विभिन्न अध्यायमे विभाजित क'

अध्ययनकेँ पूर्णतः देबाक प्रयत्न कएल गेल अछि।

पहिल अध्यायमे सामान्यतया मैथिलीक भाषिक परिचय प्रस्तुत कएल गेल अछि आ दोसर अध्यायमे मैथिली भाषा अध्ययनक सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि औ भाषिक क्रान्तिक अवधारणासभक जानकारी देबाक संगहि शासनवंधन् (Government-Binding Theory) सिद्धान्त तथा अन्य प्रणाली बीचक अन्तरक्रिया प्रस्तुत कएल गेल अछि।

अध्याय तीनमे स्थानीय आ वाह्य 'टोपिकलाइजेशन' क सम्बन्धमे जानकारी देबाक संगहि भषिक आन्दोलनक विषयगत उठान एवं अतिरिक्त अवस्था प्रस्तुत कएलगेल अछि। चारिम अध्यायमे स्थानीय आ बाह्य 'टोपिकलाइजेशन' क बारेमे विस्तृत अध्ययन विश्लेषण प्रस्तुत अछि। भाषिक नियमसभक अवलोकनक क्रममे अवरक बंधन सिद्धान्तक सम्बन्धमे सेहो एहि अध्यायमे जानकारी उपलब्ध कराओल गेल अछि।

तहिना अध्याय पाँचमे उद्देश्यसँ उद्देश्यधरिक भाषिक नियमक सम्बन्धमे चर्चा कएलगेल अछि। एहिमे मैथिली भाषाक भाषिका नियम आ अंग्रेजी शैलीक भाषिका नियमबीच तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत कएल गेल अछि, छठम अध्यायमे मैथिली भाषामे प्रयोग होमएबला प्रश्नवाचक शब्दसभक बारेमे जानकारीदेबाक प्रयत्न कएल गेल अछि। विश्लेषण करबाकाल 'शासन-बन्धन्' सिद्धान्तकेँ प्रमुख आधार बनाओल गेल अछि।

अन्तमे, सातम्, अध्यायमे एहि अध्ययनसँ प्राप्त तथ्यसभक बारेमे समीक्षा करबाक संगहि मैथिली भाषाक भाषिक विश्लेषण करबाक क्रममे आगामी दिनसभमे होमएबला खोज, अनुसन्धान सभकलेल उपयोगी होमएबला सुझावसभक बारेमे पर्यन्त दिशाबोध करबाक प्रयत्न कएल गेल अछि।

एहि अध्ययनक क्रममे प्रभुक्त तथ्यसभ मैथिलीक उद्‌गम स्थल मानल जाएबला आ बहुसंख्यक मैथिलीभाषीसभ बसोवास कर'बला नेपालक सिरहा, सप्तरी, धनुषा, महोत्तरी, सर्लाही आदि जिल्लासभसँ संकलन कएल गेल अछि। एकर अतिरिक्त एहिमे भारत विहार प्रान्तमे बाज जाएबला मैथिली भाषाक तथ्यसभ सेहो समाविष्ट अछि।

एहि अध्ययमे इटालियन्, स्पेनिश, जापानी, स्वीडिश आ आधुनिक हेब्रु भाषाक भाषिक अवलोकनसभकेँ समेत समाविष्ट क' भाषिक सिद्धान्तमे देखल गेल जटिलतासभकेँ सुल्झएवाक हेतु उपयुक्त सुझावसभ सेहो प्रस्तुत कएल गेल अछि।

कूल सात अध्यायमे विभाजित प्रस्तुत पुस्तक मैथिलीभाषी लोकनिक अतिरिक्त भाषा-विज्ञानक अध्ययनमे रुचि रखनिहार सभक लेल महत्त्वपूर्ण टा नहि अपितु अनिवार्यरूपेण अध्ययन एवं संकलनक योग्य अछि। सामान्य शब्दमे कहल जाए तँ पुस्तक, मैथिलीक भाषागत शुद्धता कायम करबाक क्रममे, विशिष्ट महत्त्व निर्वाह करबाक क्षमता रखैत अछि। मुदा स्थानीय स्तरमे प्रायः अपर्याप्त रहल ई पुस्तक मैथिली भाषाप्रेमी एवं भाषाक अध्येतासभ चाहिक' सेहो सहज रूपसँ प्राप्त नहि क' सकैत छथि।

जर्मनीक म्युनिखस्थित लिङ्कम युरोपाद्वारा प्रकाशित एनहं पुस्तकक प्रकाश स्थानीय संस्करणमे हएब वाञ्छनीय अछि।

इस्यूज इन मैथिली सिन्ट्याक्स : एक सङ्ग्रहणीय पुस्तक

मैथिली नेपालमा बोलिने दोस्रो प्रमुख भाषा हो। यति मात्र होइन, भारत बिहार प्रान्तको धेरै ठूलो भागमा समेत मातृभाषाको रूपमा मैथिली भाषा बोलिन्छ। मैथिलीले नेपालको कूल जनसङ्ख्याको करिब १२ प्रतिशत भाग ओगटेको छ। भाषासाहित्यको इतिहास अध्ययनका आधारमा भन्नुपर्दा मैथिली एक प्राचीन भाषा हो भन्न सकिन्छ। यति मात्र होइन मैथिलीले सदा-सर्वदा एक समुन्नत साहित्यिक परम्पराको प्रतिनिधित्व गर्दै आएको पाउन सकिन्छ। भाषिक दृष्टिकोणले अत्यन्त सम्पन्न मानिने यो भाषाको अध्ययन पनि धेरै अगिदेखि नै प्रारम्भ भएको पाइन्छ। प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिका डा. योगेन्द्र यादवले अध्ययनको यही परम्परालाई *इस्यूज इन मैथिली सिन्ट्याक्स*का माध्यमले निरन्तरता दिने एउटा सार्थक प्रयत्न गर्नुभएको छ।

इण्डो-आर्यभाषाअन्तर्गत बिहारी समूहको पूर्वीय उपशाखाका रूपमा विभाजित मैथिली भाषाको विश्लेषण गर्नु नै प्रस्तुत पुस्तकको मूल उद्देश्य हो। मैथिली भाषासँग दीर्घकालीन र लिखित साहित्यको ऐतिहासिक परम्परा छ। मैथिली नेपालंको पूर्वी तराईमा अत्यधिक रूपमा प्रचलन छ। यसले नेपालको करिब १२ प्रतिशत जनताको अभिव्यक्तिलाई प्रतिनिधित्व गर्दछ। यसका साथै यो भाषा भारताको उत्तर पूर्वी बिहारको करिब दुई करोड दश लाख जनताको मातृभाषा पनि हो। मैथिली भाषाको भाषिक धरातल व्यापक र विस्तृत भएकाले यसको अपरिहार्यतालाई मनन गरी, विद्वान् लेखक डा. यादवले प्रस्तुत पुस्तकका माध्यमले यस सम्वन्धमा दिशाबोध गर्ने प्रयत्न गर्नुभएको छ। जुन भाषाविज्ञानको अध्ययनका दृष्टिकोणले अत्यन्तै महत्त्वपूर्ण साबित हुन पुगेको छ, भन्नु अस्वाभाविक हुँदैन।

प्रस्तुत पुस्तकको अध्ययनले मैथिली वाक्यमा समाविष्ट भाषिक नियमहरूको विश्लेषण गर्नुका साथै भाषिक संरचना र त्यसमा निहित जटिल तथ्यहरूको समेत परिचय दिनेछ। पुस्तकलाई सात विभिन्न अध्यायमा विभाजित गरी अध्ययनलाई पूर्णता दिने प्रयत्न गरिएको छ।

पहिलो अध्यायमा सामान्यतया मैथिलीको भाषिक परिचय प्रस्तुत गरिएको छ भने दोस्रो अध्यायमा मैथिली भाषा अध्ययनको सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि र भाषिक क्रान्तिका

अवधारणाहरूको ज्ञान दिइनुका साथै 'शासन-बन्धन' (Government-Binding Theory) सिद्धान्त तथा अन्य प्रणालीबीचको अन्तरक्रिया प्रस्तुत गरिएको छ।

त्यस्तै अध्याय तीनमा स्थानीय र वाह्य *'टोपिकलाइजेशन'* सम्बन्धी जानकारी दिइनुका साथै भाषिक आन्दोलनको विषयगत उठान र अतिरिक्त अवस्था प्रस्तुत गरिएको छ। चौथो अध्यायमा स्थानीय र वाह्य *'टोपिकलाइजेशन'* का बारेमा विस्तृत विश्लेषण गरिएको छ। भाषिक नियमहरूको अवलोकनका क्रममा अवरको बन्धन सिद्धान्तका सम्बन्धमा समेत जानकारी दिइएको छ।

यसैगरी अध्याय पाँचमा उद्देश्यदेखि उद्देश्यसम्मको भाषिक नियमका बारेमा चर्चा गरिएको छ। यसमा मैथिली भाषाको भाषिक नियम र अङ्ग्रेजी शैलीको भाषिक नियमबीच तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत गरिएको छ। छैठौं अध्यायमा मैथिली भाषामा प्रयोग हुने प्रश्नवाचक शब्दहरूका बारेमा जानकारी दिन खोजिएको छ। यसरी विश्लेषण गर्दा 'शासन-बन्धन' सिद्धान्तलाई प्रमुख आधार मानिएको छ।

अन्त्यमा अध्याय सातमा यस अध्ययनबाट प्राप्त तथ्यहरूका बारेमा समीक्षा गरिनुका साथै मैथिली भाषाको भाषिक विश्लेषण गर्ने क्रममा आगामी दिनमा हुने खोज, अनुसन्धानहरूलाई उपयोगी हुने सुझावहरूका बारेमा पनि दिशाबोध गर्ने प्रयत्न गरिएको छ।

यसमा प्रयुक्त तथ्यहरू मैथिली भाषाको उद्गम स्थल मानिएको र बहुसङ्ख्यक मैथिली भाषीहरू बसोवास गर्ने नेपालको सिराहा, सप्तरी, धनुषा, महोत्तरी सर्लाही आदि जिल्लाबाट सङ्कलन गरिएका हुन्। यसका अतिरिक्त यसमा भारतको बिहार प्रान्तमा बोलिने मैथिली भाषाको तथ्य पनि समावेश गरिएका छन्।

यसमा इटालेली, स्पेनिश, जापानी स्वीडिश र आधुनिक हेब्रु भाषाका भाषिक अवलोकनहरूलाई समेत समाविष्ट गरी भाषिक सिद्धान्तमा देखापरेका जटिलतालाई सुल्झाउन उपयुक्त सुझावहरूसमेत प्रस्तुत गरिएका छन्।

जम्मा सातवटा अध्याय रहेको प्रस्तुत पुस्तक मैथिली भाषीका साथै भाषा विज्ञानको अध्ययन रुचि राख्ने जोसुकैका लागि पनि महत्त्वपूर्ण मात्र होइन अनिवार्य रूपले अध्ययन एवं सङ्कलनयोग्य छ– यसमा कुनै दुईमत हुन सक्दैन। पुस्तकलाई सरसरती हेर्दा यसले मैथिली भाषाको भाषागत शुद्धतामा कायापलट नै गर्न सक्ने विश्वास गर्न सकिन्छ। तर, स्थानीय रूपमा अपर्याप्त प्रायः रहेको यो पुस्तक मैथिली भाषाप्रेमी तथा भाषाका अध्येताहरूले चाहेर पनि सहज रूपमा अध्ययन गर्न सक्ने स्थिति छैन। पुस्तकको अपर्याप्तता यसको मूल कारण हो।

जर्मनीको म्यूनिखस्थित लिङ्कम युरोपा (प्रकाशन)ले प्रकाशित गरेको यो पुस्तकको प्रकाशन स्थानीय संस्करणमा हुनु वाञ्छनीय छ, जसले गर्दा इच्छुक भाषाप्रेमी तथा अध्ययनकर्ताले पुस्तकको सहज प्राप्ति गर्न सकून्।

अनुवादक : धर्मेन्द्र विह्वल

नेपाल राजकीय प्रज्ञा-प्रतिष्ठानबाट

नियमित रूपमा प्रकाशित हुने

समकालीन साहित्य

कविता

प्रज्ञा

तथा

JOURNAL OF NEPALESE STUDIES

पढ्ने गर्नुभएको छ ?

अवश्य पढ्नुहोस् ।

पुस्तक बिक्री कक्ष

ने. रा. प्र. प्र.

कमलादी